ननु प्रयोगपरिणामो व्यवविषएव ततः क एषां विशेष ? सत्य किन्तु प्रयोगपरिणतेषु विस्रसा सत्यपि नविवक्षितेति ॥ वीससापरिणयति ॥ स्वभावपरिणताः अथ पयोगपरिणयाणमित्यादिना ग्रन्थेन नवभि दण्डकैः प्रयोगपरिणतपुद्गला निरूपयति तत्र चैकेन्द्रियादिसर्वार्थसिद्धदेवान्त

पओगपरिणया मीसपरिणया वीससापरिणयाय । पओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा प०, तंजहा—एगिंदियपओगपरिणया बेइंदियपओगपरिणया जाव पंचिंदियपओगपरिणया य । एगिंदियपओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—

पुद्गलाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । त्रिविधाः पुद्गलाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—प्रयोगपरिणताश्च मिश्रकपरिणताश्च विस्रसापरिणताश्च । प्रयोगपरिणता भदन्त । पुद्गलाः कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—एकेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् पञ्चेन्द्रि

करो मशेरादिक भावेपरिणत १ मीसपरिणयति प्रयोग भन विसना कम परिणम्मी त मिश्रपरिणत तथा या भावप्रयोगपरिणाम नवा मुक्ता भन विस्रसारे प्रभावान्तरे पहलाया एतावता कोऽरचित कर्मशरूप ते मिश्रपरिणत अथवा भौदारिकादि वर्गणारूप पुद्गलविस्रसायें भोपत्राप्या एना ओ प्रयोगकरो एकेन्द्रियादिशरीरते परिणामे पहुचाया ते पणि मिश्रपरिणत कहिवा २ तथा भीससा स्वभाव तेणे परिणत ते विस्रसापरिणत ३ हिव पयोगपरिणयाणमित्यादि एकेन्द्रो सर्वज्ञकरो प्रयोगपुद्गलनें निरूपे तिहां एकेन्द्रियादि सर्वार्थ सिद्ध देवपर्यन्त ओघभेद विशेषितप्रयोगप रिणतपद्गला पहिलादण्डकते कहेछे—पओगपरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प । प्रयोगपरिणत हे भगवन् पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प त । हे गौतम । पांचभेदे कह्या ते कहेछे—एगिंदियपओगपरिणयाय बेइंदियपओगपरिणयाय । एकेन्द्री प्रयोगपरिणत १ वली बेइन्द्रीप्रयोगपरि णत २ इम तेइन्द्रीप्रयोगपरिणत ३ । चउरिन्द्रीप्रयोगपरिणत ४ । जाव पंचिंदियपओगपरिणया ५ । यावत् पंचेन्द्रीप्रयोगप र णत । एगिंदियपओगपरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प । एकेन्द्री प्रयोगपरिणत हे भगवन् । पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प त । हे गौतम ! पांचभेदे कह्या ते कहेछे—

पुढविक्काइयएगिंदियपओगपरिणया जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया। पुढविकाइयएगिंदियप ओगपरिणयाणं भंते! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमपुढविकाइय एगिंदियपओगपरिणया य बादरपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया य आउकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि

प्रयोगपरिणताश्च। एकेन्द्रियप्रयोगपरिणता भ०। पुद्गलाः कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौ०। पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्र योगपरिणता याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता भ०। पुद्गलाः कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौ। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता बादरपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। अप्कायिकैकेन्द्रियप्रयोगप रिणता अप्येवमेव एवं द्विको भेदो याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। अनेकविधा प्रज्ञ

पउविधा। एकेन्द्रियपयोगपरिणमा जाव वनस्पतिकाय एकेंद्रियप्रयोगपरिणमा। पृथिवीकायिक एकेंद्री प्रयोगपरिणत १ इम अपकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत २ तेउकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत ३ वाउकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत ४ यावत् वनस्पतीकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत एतस्याम्से कहवा। पटविकाइयएगिंदियपयोगपरिणयाकतिप्रकारना कहिवा पं। पृथिवीकायिक एकेंद्रीय प्रयोगपरिणत हे भगवन्! पहम केतलेभदे कह्या इतिप्र श्न उत्तर। गोयमादुविहा प न। हे गौतम! बेभेद कह्या ते कहेछे—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणयाय। सूक्ष्म के समस्त पवनायाम्यगछो ते स ख्मपृथिवीकायिक एकेंद्रियप्रयोगपरिणत प्रथम। बादरपढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणयाय। बादर ते जे समस्त अवरायोग्य ते बादर पृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत। आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एवंचेव। अपकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत पनिइमज सूक्ष्मबादर भेदेकरी बेप्रकारे जा णवा। एवंदुयभेदोजावयणस्सइकाइया। इम पृथिवीकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणतनेविषे जिम सूक्ष्मबादर बिभेदकरी द्विकपरिणामकोधा तिम तेउका

प्याप्तापर्याप्तैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता वाच्या इत्यर्थः ॥ एवदुयओत्ति ॥ पृथिव्यप्कायप्रयोगपरिणतेष्वपि द्विको द्विपरिमाणो द्विपदोया भेदः सूक्ष्मबाद रविशेषकृत स्ससकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणतादिषु वाच्य इत्यर्थः ॥ अणेगविहत्ति ॥ पुलाककृमिकादिभेदत्वा द्वीन्द्रियाणा मीन्द्रियप्रयोगपरिण ता अप्यनेकविधा कुन्थुपिपीलिकादिभेदत्वा तेषा चतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अप्यनेकविधाएव मक्षिकामशकादिभेदत्वा तथा मेतदवसूचय त्वा

एव चेव। एयदुयओ जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया। बेइंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! अणगविहा पण्णत्ता, एव तेइंदियपओगपरिणया चउरिंदियपओगपरिणयावि। पंचिंदियपओगपरिणयाण भंते! पुच्छा गोयमा! चउव्विहा पण्णत्ता, तजहा—नेरइयपंचिंदियपओगपरिणया तिरिक्खपंचिंदियपओगपरिणया एव मणुस्सदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय। नेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा!

त्ता। एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। पञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां भ०। पृच्छा गौ०। चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—नैरयिकपञ्चे न्द्रियप्रयोगपरिणता तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एव मनुष्यदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। नैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृ

य बाजजाव वनस्पतिकायिकनेविषे पणि बिबपरिणाम जोवो। बेइंद्रियप्रयोगप रणतानीपृच्छा। बेइन्द्री प्रयोगपरिणत पुद्गल हेभगवन् केतलेभेदे छ त्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अनेकविधा छे। कृमीतंम। पमाक समिपादिक बेइन्द्रीनाभेद अनेकछे तेमाटे अनेकभेदकह्या। एवतेइंद्रियचउरिंद्रिय परिणयावि। इम तेइन्द्री प्रयोग परिणत पणि कुथु पिपीलिकादि भेदेकरी अनेकभेदेकरी कह्या इम चउरिन्द्री पणि मक्षिकादि भेदेकरी अनेकभेद क ह्या। पंचिंदियपओगपरिणयाणपुच्छा। पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणतना हे भगवन् इत्यादि प्रश्नजोवा उत्तर। गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा। ए पातना चारभेद कह्या ते कहेछे—नेरइयपंचिंदियपओगपरिणया। नारकी पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत। तिरिक्खजोणियएवमणुस्सदेवपंचिंदियपओगपरिण या। तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत इम मनुष्य पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत देव पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत ए चारभेद जाणवा। नेरइयपंचिंदिय प

सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाय जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाय। तिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! तिविहा प०, तं०—जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया खहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। जलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुवि

च्छा गौ०। सप्तविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् अधः सप्तमपृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताय। तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां

पाओगपरिणयाणपुच्छा। नारकी पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सत्तविहा प त । हेगौतम। सातभेदे कह्या ते कहेछे—रयणप्पभापुढवि नेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाय। रत्नप्रभापृथिवी नारकी पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत एम शर्कराप्रभादिक पणि कहवो। आवअहेसत्तमापुढविनेरइयपओगपरिणयाय। एम यावत् नीचे सातमी तमतमा पृथिवी नारकी प्रयोगपरिणत लगे कहवा। तिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाणपुच्छा। तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत पाठल हेभगवन्! केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिविहा प तं । हेगौतम! त्रणभेदे कह्या तेकहेछे—जलयरप चंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। जलचर मत्स्यप्रमुख ते पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत १ थलुन। थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणया। थलचर ते गायप्रमुख चौपद ते पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत २। खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। खचर ते हंसादिक ते पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत ३ ए तीनभेद कह्या। जलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाण पुच्छा। जलचरमत्स्यादिक पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत पुद्गल हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा प त । हेगौतम बेभेदे

हा प०, त०—सम्मुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय गब्भवक्कंतियजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। थलयरतिरिक्खपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा प०, त०—चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया गब्भवक्कंतियथलयरतिरिक्खजोणियपंचि

पृच्छा गौ०। द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सम्मूर्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः, परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सम्मूर्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरतिर्यग्योनिकप

कह्या ते कहेछे—समुच्छिमजलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणत १। गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणया। गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणत २। थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाणपुच्छा। हे भगवन् थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणतना प्रश्नकेटला उत्तर। गोयमा दुविहा पं० त०। हे गौतम बे भेदे कह्या ते कहेछे—चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणत १। परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। परिसर्प थलचर पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणत २। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाणपुच्छा। चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्रयोगपरिणतना प्रश्नकेटला उत्तर। गोयमा दुविहा पं० त०। हे गौतम! बे भेदे कह्या ते कहेछे।

दियपओगपरिणयाय। एव एएण अभिलावेण परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय भुयपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा प०, तं० सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। एवं भुयपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयात्ति। एवं

पञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। एवं एतेन अभिलापेन परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—उरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता भुजपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। उरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। एवं भुजपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। एवमेव खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। मनुष्यपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौतम! द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सम्मूर्च्छिममनुष्यप

सम्मूर्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिकप्रयोगपरिणत। सम्मूर्छिमखचर पंचेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत १। गर्भजखचरतिर्यञ्च पंचेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिकप्रयोगपरिणत। गर्भजखचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत २। इसप्रकार अभिलाप से परिसर्प दुविहा प त । इस प्रकार आलापक से परिसर्प के दो भेद कहे हैं वे कहते हैं—उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प। उरपरिसर्प छाती से चलते हैं १ और भुजपरिसर्प भुजाओं से चलते हैं इसलिये दो भेद २। उरपरिसर्पा पंचिंदियतिरिक्खा दुविहा प त । उरपरिसर्प पंचेन्द्रियतिर्यञ्च के दो भेद कहे हैं वे कहते हैं—सम्मूर्छिम और गर्भव्युत्क्रान्तिक। सम्मूर्छिम उरपरिसर्प १ गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प २ ये दो भेद। एवंभुयपरिसर्पा एवं खचरा। इस भुजपरिसर्प और सम्मूर्छिम गर्भ

खहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । मणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । देवपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवंजाव वेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया । भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असुरकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणया जावथणियकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिण

पञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च । देवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ० ! चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–भवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवं यावद् वैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः । भवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता प्र० । कतिविधा प्रज्ञप्ता गौ० ! दशविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–असुरकुमारदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् स्तनितकुमारदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च ।

न ग्रहभेदे कहवा । इम खेचर पंचि भेद कहवा । मनुष्यपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा । मनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत पुद्गल हे भगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहा प० त० । हे गौतम बेभेदे कह्या ते कहेछे—संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । संमूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत । गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत ए बेभेद कह्या । देवपंचिंदियपओगपरिणयाणंपुच्छा । देवपंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत हे भगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउव्विहा प० त० । हेगौतम च्यारभेदे कह्या ते कहेछे । भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणयाएवंजाववेमाणियदेवपओगपरिणया । भवनपती देवपंचेंद्रिय वाणव्यंतर ज्योतिषी देव ३ एम वैमानिक देवपंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत ४ । भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणंपुच्छा । भवनपती देवपंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत पुद्गल हे भगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । दसविहा पण्णत्ता तंजहा । हेगौतम दशभेदे कह्या ते कहेछे—असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । असुरकुमार आदिदेइ यावत् स्तनितकुमार प

या। एवं एएणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरदेवपंचिंदियपओगपरिणया पिसायदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव गंधव्वदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय। जोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया पंचविहा प०, तंजहा चंदविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया जाव ताराविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया। वेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोववन्नवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया कप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया। कप्पोववन्नगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया दुवालस

एवं एतेन अभिलापेन अष्टविधा वानव्यन्तरदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः पिशाचदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावत् गन्धर्वदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। ज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा चन्द्रविमान ज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावत् ताराविमान ज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। वैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः कल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—

परिणत जे भ कहवा। एवं एणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरा पिसाया जाव गंधव्वा। इम एह पाठनो अर्थ आठ प्रकारे वाणव्यन्तर पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किंनर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गन्धर्व ८ ए आठभेद जाणवा। जो तिसियापंचविहा पण्णत्ता तंजहा। ज्योतिषीदेव पांचभेद कह्या ते कहै छै—चंद्रविमान ज्योतिषीपयोगपरिणया। चन्द्रविमान ज्योतिषी देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत। जाव ताराविमान ज्योतिषीदेव पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत। चंद्रमा १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ ताराविमान ज्योतिषीदेव पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत। वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा। वैमानिकदेव दोय भेदे कह्या ते कहै छै—कल्पोपपन्नक कल्पातीतवैमानिक। कल्प ते बारे देवलोक तिहां ऊपना १ तेहथी ऊपर ते कल्पातीत कहिये २। कल्पोववन्नगदुवालसविहा पण्णत्ता। कल्पे ऊपना तेह बारभेदे कह्या ते कहै छै—सोहम्मकप्पोववन्नग वेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणयाय। सौधर्म

विहा पण्णत्ता, तंजहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवं जाव अच्चुयकप्पोवग
वेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। कप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा प०, तंजहा
गेवेज्जगकप्पातीयदेवपंचिंदियपओगपरिणया अणुत्तरोववाइयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। गेवेज्जग
कप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया णवविहा पण्णत्ता, तंजहा—हेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणिय
देवपंचिंदियपओगपरिणया जाव उवरिमगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। अणुत्तरोव

कोपगकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवं यावत् अच्युतकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। कल्पातीतवैमानि
कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवै
मानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता नवविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—अधस्तनग्रैवेयककल्पातीत
वैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् उपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानि

कल्पोपपन्न वैमानिक पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत। एवं यावत् अच्युतकल्पोपपन्न वैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणत। इस यावत् अच्युत कल्पोपपन्न वैमानि
क देव पञ्चे० प्रयोगपरिणत। कप्पातीयगा दुविहा प० त०। कल्पातीत वैमानिक देव के दो भेद कहे हैं वे ये हैं—ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेव प्रयोगपरिणत,
ग्रैवेयक कल्पातीतवैमानिकदेव प्रयोगपरिणत। अनुत्तरोपपातिक। अनुत्तरोपपातिकदेव प्रयोगपरिणत। गेवेज्जगकप्पातीयगा णवविहा प० त०। ग्रैवेय
क कल्पातीत के नव भेद कहा है वे ये हैं—हेट्ठिमगेविज्जगकप्पातीयग प्रयोगपरिणत। यहां हेट्ठिमा निम्ना, उवरिमा ते ऊपर के ग्रैवेयक कल्पातीतदेव प्रयोग
परिणत। जावउवरिम२ गेविज्जगकप्पातीय प्रयोगपरिणत। इस यावत् उपरिमा निम्ना उपरिमा ग्रैवेयक कल्पातीत देव प्रयोगपरिणत एवं ८।
अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया पंचविहा प०। अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेन्द्रियप्रयो

ह ॥ पयतेहदीत्यादि ॥ सुहुमपुढविकाइयेत्यादि ॥ समाप्यसिद्धदेयात पयाप्तकापर्याप्तकविशेषको द्वितीयो दण्डक स्तत्र ॥ एगेंदियेत्यादि ॥ एकेकस्मि न्निकाय सूक्ष्मबादरभेदा द्विविधा पुद्गला वाच्या सोच प्रत्येक पर्याप्तकापर्याप्तकभेदा एवम् द्विविधा वाच्या इत्यर्थः ॥ सेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि॥

वाउयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता, गोयमा ! पंचविहा प०, तं०—विजयअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव सव्वठसिद्ध अणुत्तरोव वाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया ॥ १ ॥ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता, दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—केइ अपज्जत्तगपढमं भणंति पच्छापज्जत्तग। पज्जत्तगं

कदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता भ० ! पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ० ! पंचविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानि कदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता । सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियप्रयोग परिणता भ० ! पुद्गलाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—कोई अपर्याप्तकपृथ्वीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता प्रथम प

मपरिणत हेभगवन् पुद्गल कतनेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प तं । हेगोतम पांचभेदे कह्या ते कहैछे—विजयअणुत्तरोववाइय आ पपरिणता । विजय अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत इस वैजत २ जयंत ३ अपराजित ४ कहवा । जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदिय जावपरिणयाय । यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत ए पांचभेद जांणवा ए पहिला दंडक कह्या । सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाणंभंते पोग्गलाकइविहा प । सूक्ष्मपृथिवीकायिक प्रयोगपरिणत इत्यादि सर्वार्थसिद्ध देवपर्यंत पर्याप्ता अपर्याप्तानो विशेषबीजो दंडक कहैछे—सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत हेभगवन् पुद्गल कतनेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर गोयमा ! दुविहा प तं । हेगोतम बेभेदे कह्या ते कहैछे—केइअपज्जत्तगपढमभणंति । कोई केटलाएक अपर्याप्ता पहिलां कहैछे—पच्छापज्ज

हुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया। बादरपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव, एवं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया एक्केक्का दुविहा सुहुमाय बादराय पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा। बेइंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगबेइंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगबेइंदियपओगपरिणयाय, एवं तेइंदियपओगपरि

णता यथा स्पर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणतामिति पर्याप्तकपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च । बादरपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एवमेव यावत् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता एकैके द्विविधाः सूक्ष्मा बादरा च पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च भणितव्या । द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ० । द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—पर्याप्तकद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता । एवं त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा

गम। पहेले पर्याप्तक कहेछे—ए आपनाकारे भावना। पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणयाय। पर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवी एकेन्द्री प्रयोगपरिणत प्रथमो १। अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणयाय। अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत २। बादरपुढविकाइयावि एवंचेव। जिम सूक्ष्म पृथिवीकायिकना बेभेद कह्या तिम बादरपृथिवीकायिकना बेभेद इमज कहवा। एवं जाव वणस्सइकाइयएक्केक्का दुविहा सुहुमाय बादराय पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा। इम यावत् वनस्पतीकायिक पर्यन्त बेबे भेदे सूक्ष्म तथा बादरकह्या ते पर्याप्त तथा अपर्याप्तना ए बेबे भेदे करी चार एकेन्द्रियनादि समस्तो पर्यन्त कहवा। बेइंदियपओगपरिणयाणंपुच्छा। बेइन्द्री प्रयोगपरिणतनी प्रश्न गौ उत्तर। गोयमा दुविहा प त । बेगोतम बेभेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगबेइंदियपओगपरिणयाय। पर्याप्त बेइन्द्रीप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तगबेइंदियपओगपरिणयाय। अपर्याप्त बेइन्द्रीप्रयोगपरिणत ए बेभेद भावना। एवं तेइंदियावि एवं चउरिंदियावि। इम तेइन्द्री पणि इम चउरिन्द्री पणि पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए बेबे भेदे कहवा।

औदारिकादिशरीरविशेषस्य तृतीयो दण्डकः स्वयम् ॥ ॐदारलिपतेयाकम्मसरीरपञ्जगपरिणयति ॥ औदारिकतैजसकार्मणशरीराणां च प्रयोग सौम परिणता येते तथा पृथिव्यादीना हि एतत्त्र शरीरत्रय भवती तिकृत्वा तत्प्रयोगपरिणताएव तेभवन्ति बादरपर्याप्तकवायूनां त्वाहारकवर्जशरीर एतत्त्रय भवती तिकृत्वात् ॥ मवरजेपज्जत्तत्यादि ॥ एव ॥ गब्भवक्कतियावि ॥ अपज्जत्तागिति ॥ वैक्रियाहारकशरीराभावा द्गर्भव्युत्क्रान्तिका अप्य पर्याप्तका मनुष्या त्रिशरीरा एवेत्यथः ॥ अपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥ इन्द्रियविशेषस्य चतुर्थो दण्डकः ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥

णयावि, एव चउरिंदियपओगपरिणयावि। रयणप्पभापुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगरयणप्पभापुढवि णेरइयपंचिंदियपओगपरिणया एवं जाव अहेसत्तमपुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणया। सम्मुच्छिमजलय रतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिमज

गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–पर्याप्तकरत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता च। एवं यावत् सप्तमपृथिवीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणताः। सम्मूर्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ०। द्विविधाः

पञ्चपदार्थविचारस्य प पुनः। रत्नप्रभा पृथिवी नारकौ पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत हे भगवन् पञ्चसम्मतत्रयसदस्य। इतिप्रश्न उत्तर। गायमा दुविहा प त। इ मातम च म मद अहा ते कहेइ—पज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपरिणयाय। पर्याप्तक रत्नप्रभापृथिवी नारको पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत। अपज्जत्तगाय परिणयाय। अपर्याप्तक रत्नप्रभा पृथिवी नारक पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत इति प्रकारद्वय पत्रिवक्षका। एव जाव अहेसत्तमा। एवं यावत् नीचे सातमी पृथिवीमध्ये वेदितव्या। सम्मूर्छिमजलचरतिरिक्खपृच्छा। सम्मूर्छिम जलचर तिर्यग्योनि प्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा पं त। हे गौतम। द्विप्रकार भेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्तक सम्मूर्छिम जलचर पंचेंद्री तिर्यंच १ तथा अपर्याप्तक सम्मूर्छिम जलचर पंचेंद्री तिर्यंच २। एव

ग्गयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवंगब्भवक्कंतियजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव । एवंगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवं जाव सम्मुच्छिमखहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि गब्भवक्कंतियखहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एक्केक्के पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा । सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियप

ज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एवमेव एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवं यावत् सम्मूर्च्छिमखचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकखचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एकैकः पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च भणितव्याः । सम्मूर्च्छिममनुष्यपञ्चेन्द्रि

नभचर तिर्यंच । इन सबके जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद कहना । सम्मूर्च्छिम जलचर गर्भज जलचर ए दो भेद । सम्मूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक भेद से दो भेद कहना । एवं अभव्य ... । इस प्रकार चतुष्पद के पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए दो भेद करके कहना । एवं ग्रहस्थ सम्मूर्च्छिम खेचर गर्भज खेचर तिर्यंच । इस प्रकार सम्मूर्च्छिम खेचर गर्भज खेचर २ पर्याप्तक अपर्याप्तक ए दो भेद करके कहना । एक एक पर्याप्तक अपर्याप्तक भाणियव्वा । ए एकेक पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ भेद करके सम्मूर्च्छिम तथा गर्भज ये दो भेद जानना । सम्मूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय प्रयोग पृच्छा । सम्मूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत अनेक सम्मूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय प्रयोग परिणत कहे । गौतम दुविहा पण्णत्ता अपर्याप्तकादि । हे गौतम ! भ भरे

त्तगपरिणया अपज्जत्तगसम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाय। गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिण याण पुच्छा गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया अप ज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाय। असुरकुमारभवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणं पु च्छा गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगअसुरकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगअसुर कुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय। एवं जाव पज्जत्तगथणियकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणया अपज्ज

र्याप्तकपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–पर्याप्तका अपर्याप्तका अपि। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरिणतानां पृ च्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरि णता। असुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–पर्याप्तकासुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रिय प्रयोगपरिणता अपर्याप्तकासुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणताश्च। एवं यावत् स्तनितकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता।

बाको अपर्याप्तक ए रुपे परिणम्यां छे। गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत संबंधी प्रश्न। गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोग परिणत को प्रश्न बाधा उत्तर। गोयमा दुविहा प ० त ०। हे गौतम! बेहभेदे कह्या ते कहे छे—पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय। पर्याप्तक गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत १। अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियपंचिंदियपओगपरिणयाय। अपर्याप्तक गर्भजमनुष्य पंचेंद्री प्रयोगपरिणत २। असुरकुमारभवणवासीदेव पंचेंदियपओ गपरिणयाणं पुच्छा। असुरकुमार भवनवासीदेव पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणतनो प्रश्नबाधा उत्तर। गोयमा दुविहा प ० तंजहा। हे गौतम! बेहभेदे कह्या ते कहे छे—पज्जत्तगअसुरकुमारदेव अपज्जत्तगअसुरकुमारदेव पंचेंदियपओगपरिणयाय। पर्याप्तक असुरकुमारदेव अपर्याप्तक असुरकुमारदेव पंचेंद्रियप्रयोगपरिणत। एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तग अपज्जत्तगाय। एम यावत् स्तनितकुमारपर्यन्त पर्याप्तक अपर्याप्तक ए बहु भेदे करी दश अ

ग्गगाणियकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवं एएणं अभिलावेणं दुपएणं भेएणं पिसायाय जावगंध
व्वदेवपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवंपज्जत्तापज्जत्तगचंदजोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव पज्जत्ता
पज्जत्तगताराविमानदेवपंचिंदियपओगपरिणयावि । पज्जत्तगसोहम्मकप्पोवगगदेवपंचिंदियपओगपरिणया
अपज्जत्तगसोहम्मकप्पोवगगदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवं जाव पज्जत्तापज्जत्तगअच्चुयकप्पोवगगदेव
पंचिंदियपओगपरिणयावि । पज्जत्तगापज्जत्तगहेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीयदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव
पज्जत्तापज्जत्तगउवरिमउवरिमगेवेज्जकप्पातीयदेवपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवंचेव पज्जत्तापज्जत्तगविज

पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च एवमेतेनाभिलापेन द्विकभेदेन पिशाचदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावद् गन्धर्वदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् ताराविमानज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः सौधर्मकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावद् अच्युतकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवं अधस्तनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावद् उपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवं विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावद् अपराजितानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रि

मारादिक कहवा। एवंएएणंअभिलावेणं दुपएणं भेएणं पिसायाय जाव गंधव्वा। इम इणे आलावकरी बहुवचन भेदकरी पाठ व्यन्तरना जे पिशाचादि ८ अष्टव्यपर्यन्त तेह पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ भेदेकरी कहवा। जाव तारा विमाणा। इम चन्द्रादि तारा विमान पर्यन्त ज्योतिषी पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए कहवा। सोहम्मकप्पाव जावअच्चुआ। सौधर्मादि अच्युतपर्यन्त देवपर्याप्तक भेदेकरी कहवा, अपर्याप्तक भेदेकरी कहवा। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीय। इम नीचला त्रिकना नीचला ग्रैवेयक कल्पातीतदेव। जाव उवरिम उवरिमगेवेज्जग। यावत् उपरला त्रिकना उपरिला ग्रैवेयक ए पर्याप्तक अपर्याप्तक बेहुभेदे कहवा। विजयअणुत्तरा जाव अपराजिय। विजयअनुत्तरोपपातिक यावत् अपराजित अनुत्तरोपपातिक ए पणि हा

यअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव पज्जत्तापज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय ॥ २ ॥ जे अपज्जत्तगसुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया ते ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, जे पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयएगिंदियप्पओगपरिणया ते ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया एवं जाव पज्जत्तगचउरिंदियप्पओगपरिणया । नवरं, जे पज्जत्त

यप्रयोगपरिणता अपि। एवं यावत् सिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता ॥२॥ ये अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता ते औदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता ये पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता ते औदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता । एवं यावत् पर्याप्तकचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता नवरं ये पर्याप्तकबादरवायुकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता ते औदारिकवै

यभेद कहना । अनुत्तरविमानकल्पातीतप्रयोगपरिणत पुद्गल । सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत अनुत्तरोपपातिकदेव प्रयोगपरिणत के भी इसी प्रकार कहना । (असमा दुवि हा प त । इमांतम । बैसे भेद कहना ते कहते—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरा पयोगपरिणया । पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत अनुत्तरोपपातिकदेव प्रयोगपरिणत । अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध जाव देवपंचिंदियपओगपरिणयावि । अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत अनुत्तरोपपातिक देवपंचेंद्री प्रयोगपरिणत ए बीजा दंडक २ । अपज्जत्तासुहुमपुढविएगिंदियपओगपरिणया ते ओरालिय तेयाकम्मा सरीरप्पओगपरिणया । जे अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत इत्यादि औदारिकादि शरीरविशेषणे करी पोताद्रव्यक कहवा, जे अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय ते औदारिक तैजस कार्मणशरीरको जे प्रयोग तिणेकरी परिणत जिका तथा पृथिव्यादिकने एहीज तीनशरीर हुवे इस करीने प्रयोगपरिणत जाणवा, जे पज्जत्तासुहुम जाव पओगपरिणया । जे पर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत । ते ओरालिय तेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया । ते औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत हुवे । एवंजावचउरिंदियापज्जत्ता । इम यावत् चउरिंद्री प पर्याप्त लगे कहवा बे बे भेद । नवरपज्जत्ता बाद

गयादरयाउकाइयएगिदियप्पओगपरिणया ते ओरालियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, सेसतचेव, जे अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, एवं पज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणयावि, एवं जाव अहेसत्तमापज्जत्तगसत्तमापुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मसरीरप्पओगपरिणया। जे अपज्जत्तगसमुच्छिमजलयरपंचिंदियप्पओगपरिणया ते ओरालियतेयाकम्मसरीरप्पओगपरिणया, एवं जे पज्जत्तगसमुच्छिमजलयरपंचि

क्रियकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणताः शेषं तथैव। ये अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतास्ते वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवं पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। एवं यावद् अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतास्ते वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता ये अपर्याप्तकसम्मूर्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतास्ते औदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवं

स्कायएकेन्द्रिय प्र० परि०। इसीप्रकार से जो पर्याप्त वायुकायिक एकेन्द्रिय प्र० परि० हैं वे तेजस कार्मण शरीर के अतिरिक्त यहां औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण शरीर प्र० परिणत कहे हैं। शेष सब पूर्ववत्। वे औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण ए शरीर प्र० परिणत हुवे। अपर्याप्तक सप्त पृथ्वी तिमत्र अधमा के अपर्याप्त रत्नप्रभापृथ्वी नैरयिक पंचेन्द्रिय प्रयोग परिणत। जो अप० रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक पंचेन्द्रिय प्र० परि०। वैक्रिय तैजस कार्मण शरीर प्रयोग परिणत। वे वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोग परिणत हुवे। एवं पर्याप्तका भी ऐसा जाव यावत् सातमी। इस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी से वैक्रिय तैजस कार्मण प्र० परि० इस यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी तक वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्र० परि० जानना। जो अपर्याप्तक सम्मूर्छिम जलचर जाव परिणत। जो अप० सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्र० परिणत। ते औदारिक तैजस कार्मण शरीर जाव परिणत। एवं पर्याप्तका भी। ते औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्र० परिणत हुवे इस प्रकार सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक प्र० परि० ते औदारिक तैजस कार्मण प्र० परि०

ंदियप्पओगपरिणया त ओरालियतेयाकम्मसरीरप्पओगपरिणया । एवचेव अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियप्पओगपरिणयावि, पज्जत्तगगब्भवक्कंतियावि एवचेव, नवरं, सरीरगाणिचत्तारि जहा बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण । एवं जहा जलचरेसु चत्तारिआलावगा भणिया तहा चउप्पयउरपरिसप्पभुयपरिसप्पखहयरेसुवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा । जे समुच्छिममणुस्सपंचिंदियप्पओगपरिणया त ओरालियतेया

य पर्याप्तकसम्मूर्छिमजलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता स औदारिक तैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवमेव अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एवमेव नवर शरीराणि चत्वारि यथा बादर वायुकायिकाना पर्याप्तकाना । एव यथा जलचरेषु चत्वार आलापका भणिता तथा चतुष्पदोर परिसर्पभुजपरिसर्पखचरेष्वपि चत्वार आलापका भणितव्याः । य सम्मूर्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता स औदारिक तैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एव गर्भ व्युत्क्रान्तिका अपि पर्याप्तकाअपर्याप्त

कहना । गर्भव्युत्क्रान्तिक अपर्याप्तका एवमेव । गर्भज पर्याप्त जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इस कहना तीनशरीर औदारिक तैजस कार्मण कहना । पर्याप्तगा पंचेन्द्रिय । पर्याप्त परिणत इसका कहना । चवरशरीराणि वैक्रियाणि जहा बादरवाउकाइयाणपज्जत्तगाण । उत्कृष्टविषय शरीर चार जिम बादरवाउकाइक पर्याप्त जे कहा तिम पर्याप्त पचि पर्याप्त जे औदारिकवैक्रिय तैजसकार्मण ए चार कहना । एवजलचरेसु चत्तारिआलावगाभाणियव्वा । इम जिम जलचर एतलिये सम्मूर्छिम पर्याप्त अप इम गर्भज पर्याप्त अप ए चारकह्या । एवचउप्पयउरपरिसप्पभुयपरिसप्पखहयरेसवि चत्तारिआलावगाभाणियव्वा । इम चतुष्पद उरपरिसर्प भुजपरिसर्प खचरपंचेन्द्रिये पणि चार आलावा सम्मूर्छिम पर्याप्त १ अप २ गर्भ पर्याप्त ३ अप ४ ए चार आलावा कहवा । जे सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय प परिणया । जे सम्मूर्छिम मनुष्यपंचेन्द्रिय प्रयोग परिणत । तेओरालियतेयाकम्मासरीरकायपरिणया । ते औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत हुवे । एवगब्भवक्कंतियावि अपज्जत्तगा पज्जत्तगावि एवचेव । इम गर्भजमनुष्य पणि अप जे तीन औदारिक तैजस

कम्मगसरीरप्पओगपरिणया, एवं गब्भवक्कंतियावि। अपज्जत्तगपज्जत्तगावि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि, जे अपज्जत्ता असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियपओगपरिणया जहा नेरइयपंचिंदियपओगपरिणया तहेव एवं पज्जत्तगावि एवं दुपएणं भेएणं जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियपओगपरिणया। एवं पिसायदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव गंधव्वदेवपंचिंदियपओगपरिणया। चंदविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव ताराविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवं सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। एवं हेट्ठिमगेवे

कायपि एवमेव नवरं शरीरकाणि पञ्च वक्तव्यानि। ये अपर्याप्तका असुरकुमारभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यथा नैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः तथैव एवं पर्याप्तका अपि एवं द्विकभेदेन यावत् स्तनितकुमारभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। एवं पिशाचदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावद् गन्धर्वदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। चन्द्रविमानज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावत् ताराविमानज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः। एवं सौधर्मकल्पोपपन्नवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावद् अच्युतकल्पोपपन्नवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोग

कार्मणशरीरकहवा ए पणि इमहीज कहवा। नवरमशरीरमांपांचभांजिवा। एतलाविशेष शरीर पांच पर्या ज कहवा। जे अपज्जत्तगा असुरकुमार भवनवासि जहानेरइया तहेव एवपज्जत्तगावि। ए अप असुरकुमार भवनपतादेव जिम नारकीकह्या तिम एह कहवा वैक्रिय तैजस कार्मण ए तीन शरीर कहवा इम ए पणि तीनशरीरवंत कहवा। एवदुपएणं भेएणं जावथणियकुमारा। इम ए अप २ भेदकरी वैक्रिय तैजस कार्मणशरीरवंत थणितकुमार पर्यंत कहवा। एवपिसाया जाव गंधव्वा। इम पिसाच थाकिवेद गन्धर्वपर्यन्त आठ व्यन्तर पणि कहवा। चंदा जावताराविमाणा। इम चन्द्रादि ताराविमान पर्यन्त ज्योतिषी पणि कहवा। सोहम्मकप्पा जावअच्चुओ। यावत् सौधर्मथाकिदेव अच्युत तीनशरीर कहवा। हे

उागकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जत्तगपरिणया जाव उवरिम गेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियप ज्जत्तगपरिणया । एवं विजयअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जत्तगपरिणया जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जत्तगपरिणया एक्केक्केणं अपज्जत्तया णाणियव्वा । जाव जेयपज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जत्तगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मासरीरपज्जत्तगप रिणया दण्डं ॥ ३ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपज्जत्तगपरिणया ते फासिंदियपज्जत्तगपरिणया । जे

परिणता । एवं अपर्याप्तकग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् उपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगप रिणता एवं विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपं चन्द्रियप्रयोगपरिणता एकैक द्विक भेदा भणितव्या यावत् ये च पर्याप्तका सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरि णता स वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता दण्डक ॥ ३ ॥ ये अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता स स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरि

हिन २ गेवज्जा जाव उवरिम २ यवेज्जा । पहिला पवपक पाविदेह नवमा ग्रैवेयकपर्यंत पवि वैक्रिय तैजस कामण समाते भाणावा कहवा । विजय थ नराववारवा । विजयादि अनुत्तरपपातिक कहवा । आवमअइमिद्ध अनुत्तरावआदवा । यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिकदेव एतनामगे कहवा । एकेकेत्रभेदाभाणिवजा । एकेक्यामवे प अप २ डायभेद तीनशरीर कहवा । जाव ज अपज्जत्तासव्वइसिद्धअणुत्तरोववाइया । यावत् शब्दे जे अप सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरापपातिकर्प देव प्र परिणत । जे पज्जत्ता सव्वइसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव परिणया । तथा जे प सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पंचेन्द्रियदेव प्र परिणत । तेवेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पभाय प दण्डग ३ । ते वैक्रिय तैजस कामणशरीर प्र परिणत ए तीजादण्डक कहवा । जे अपज्ज त्ता सुहुमपुढविकाइय एगिंदियपयोगपरिणया । जे अप सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय प्र प इत्यादि ते इन्द्रिय विभागवेकरी चोथा दण्डक कहेछे, जे

पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपओगपरिणया एवचेव । जे अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइयएगिंदियपओगपरिणया एवचेव एवपज्जत्तगावि एवचउक्कएणं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया । जे अपज्जत्ताबेइंदियपओगपरिणया ते जिब्भिंदियफासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्ताबेइंदियपओगपरिणया एवचेव एवजाव चउरिंदियपओगपरिणया नवरं, एक्केक्कं इंदियवड्ढेयव्वं । जे अपज्जत्तारयणप्पभापुढविनेरइयपंचि

ताः य पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव । पर्याप्तकाअपि । एव चतुष्कभेदेन यावत् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताः । ये अपर्याप्तद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते जिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणताः । पर्याप्तद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव । एवंयावच्चतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता नवरं एकैक मिन्द्रियं वर्धयितव्यम् । ये अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते श्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता । एव पर्याप्तकाअपि

पप सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय प्र परिणत । त फासिंदियपयोगपरिणया । ते स्पर्शनेन्द्री प्र परिणत । जे पज्जत्तासुहुमपढविकाइय एवचेव । जे पग सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि इमज एतले स्पर्शनेन्द्री प्र परिणत जोअवे । जे अपज्जत्ताबादरपढविकाइयाएवचेव । जे अप बादर पृथिवीका यिक ते पणि इमज एतले स्पर्शनेन्द्री प्र परिणत । एवंपज्जत्तगावि । इम बादर पर्या पणि स्पर्शनेन्द्री प्र परिणत । ते जिब्भिंदिय फासिंदिय पयोग प रिणया । ते जिह्वेन्द्री स्पर्शनेन्द्री ए बे इन्द्री प्रयोगपरिणत हवे, इम जे पर्या बेइन्द्री प्रयोगपरिणत पणि इमज एतले रसनेन्द्री स्पर्शनेन्द्री ए बेइन्द्री प्रयो गपरिणत कहवा । एवंजावचउरिंदिया । इम यावत् चउरिन्द्री लगे कहवा । नवरंएक्केक्कं इंदिय वड्ढेयव्वं । एतलाविशेष एकेक इन्द्रिय वधारवा ते इ म तेइन्द्रीने घ्राणेन्द्रीने रसनेन्द्रीने ए तीन कहवा चउरिन्द्रीने तीन वली तेहीज चउरिन्द्री वधे । जे अपज्जत्तारयणप्पभापढविनेरइयपयोगपरिणया । जिके अप रत्नप्रभापृथिवी नारकी पंचेन्द्री प्रयोगपरिणत । तेसोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय पयोगपरिणया । ते श्रोत्रेन्द्री चक्षु

दियपज्जगपरिणया त सोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियपओगपरिणया । एवपज्जत्तगावि दियपज्जगपरिणया । तिरिक्खजोणियपचिंदियपओगपरिणया मणुस्सपचिंदियपओगपरिणया देवपचिंदियपओ एवमज्जत्ताणियद्धा । तिरिक्खजोणियपचिंदियपओगपरिणया मणुस्सपचिंदियपओगपरिणया देवपचिंदियपओ गपरिणया जाय सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियपओगपरिणया ॥ ४ ॥ जे अपज्ज गपरिणया जाय सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियपओगपरिणया ते फासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्ता सासुहुमपुढवियिकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया तेफासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्ता सुहुमपुढवियिकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया एवचेव अपज्जत्तबादरपुढवियिकाइयएगिंदि

मर्थमवितव्या। । तिर्यग्योनिकपचेंद्रियप्रयोगपरिणता मनुष्यपचेंद्रियप्रयोगपरिणता देवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपा तिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता। ॥ ४ ॥ येऽपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता ते स्प र्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता । अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता (स) एवचैव । अपर्याप्तकबादरपृथिवी

रिन्द्री घ नेत्री रसनेन्द्री स्पर्शनेन्द्री प्रयोगपरिणत हुवे । एवपर्याप्तगावि एवसर्वभाणिवव्या । एम पर्वा पचि यावेंद्रियादि स्पर्शेन्द्रीपर्यन्त प्रयोगपरिण त कहवा एम सातेइ नरकपृथिवीनेविषे कहवा । तिरिक्खजोणियमनुष्यदेवा । एम भवनादि तिर्यचयोनिक मनुष्यदेव पचेंद्री परिणत कहवा । याव तेपर्याप्त अनुत्तरसिद्धपर्याप्तगाववाइयाओववपरिणया । यावत् जे पर्या सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पचेंद्री देवप्रयोगपरिणतछे । तेसाइंदियचक्खुदिय ओयपरिणया ४ । ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत कहवा, ए चोथाउद्देशक कहवा ४ । जे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथि वायएगिंदिया ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया ते फासिंदियपओगपरिणया । तथा जे अप सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादिक ओदारिकादि शरीरनेविषे स्पर्शनादि इन्द्रियभेदकरी पचमा उद्देशक कहवा तेकहेछे—जे अप सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय ओदारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोग परिणत त । फासिंदियपओग परिणया । तेस्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत । स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत हुवे । अपर्याप्तासइनएवचेव । जे पर्या सूक्ष्मपृथिवीका

औदारिकादिशरीरस्पर्शादीन्द्रियविशेषश्च पञ्चमः ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥ वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानविशेषश्च षष्ठ एष औदारिकादिशरीर

पज्जत्तालियतयाकम्मासरीरपओगपरिणया एवचेव एयपज्जत्तगावि एव एएणं अभिलावेण जस्सजइ इंदियाणि सरीराणिय ताणितहा गयव्वाणि जाव जे अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदिय वेउव्वियतेयाकम्मासरीरपयोगपरिणया तेसोइंदिय घाणिंदिय चक्खिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियपओगपरिणया ॥ ५ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढवीकाइयएगिंदियपओगपरिणया तेवण्णओ कालवण्णपरिणया णीलवण्णप

कायिकैकेन्द्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवचैव । अपर्याप्तकाअपि । एव एतेनाभिलापेनयस्य यावन्ति इन्द्रियाणिशरीराणिच तानिभणितव्यानि । यावत् य अपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रिय वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स श्रो त्रेन्द्रियचक्षुर्घ्राणरसस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता ॥ ५ ॥ अपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता स वर्णतः कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिण

यिक त पनि एमन जइवा । बादरपपज्जत्ताएवचेव । जे बादर अप ते पनि एमज कहवा । एवपज्जत्तगावि । एम बादर पर्या पनि कहवा । एव गपर्मपभिमावेभजमबरइ हिंवानि सरीराणि तताणि भाणिअव्वा । एम एवं पामावेकरी जेहने जेतला इन्द्रियहवे तथा जेतला शरीरहुवे ते विचा राने इन्द्रिय तथा शरीरकरी भाभावा कहवा । जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअनुत्तरोववाइया । यावत् जे पर्या सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक । कल्पातीतदेव पंचिंदिय वउव्विय तेयाकम्मासरीरपयोगपरिणया । वैमानिकदेव पचेंद्रिय वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत । तेसोइंदिय चक्खिंदिय जाव फा सिंदिय पयोगपरिणया ५ । ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणतपणे पंचमादण्डक कहवा । जेअपज्जत्तासुहुमपुढ विकाइयएगिंदियपयोगपरिणया । जे अप सूक्ष्मपृथिवीकाय इत्यादि, ते वर्ण गन्ध रस स्पर्श संस्थान विशेषेकरी छट्ठा दण्डक कहवो जे अप सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोग परिणत छे । ते वर्णथी कालवर्ण परिणामि नीलवर्णिय हालिद्दवर्णिय । ते वर्णथी कालवर्णनीलवर्ण २ हालिद्द

रिणया लोहियवणपरिणया हालिद्दवणपरिणया सुक्किल्लवणपरिणया , गधओसुब्भिगधपरिणया दुब्भिगधप रिणयावि, रसओतित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणयावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणयावि महु ररसपरिणयावि , फासओकक्खडफासपरिणयावि जाव लुक्खफासपरिणयावि , संठाणओपरिमंडलसंठाणपरिण यावि वट्टतस चउरस आयतसंठाणपरिणयावि । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव जहाणुपुव्वीए णयव्वं जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओ

ता मार्गितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि यावत् रूक्षस्पर्श परिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वर्तुलत्र्यस्रचतुरस्रायतसंस्थानपरिणता अपि। येपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रिय प्रयोगपरिणता (अ) एवचैव। अथ यथानुपूर्व्या मतव्य यावत् ये पर्याप्तका सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरि

णत २ हारिद्रवर्ण ४ शुक्लवर्ण ५ परिणत पणिवुवे। गधओ सुब्भिगध दुब्भिगध परिणयावि। गन्धथको, सुगन्ध १ दुर्गन्ध २ परिणत पणिवुव। रसथा तित्तरस कडुरस कसायरस अंबिलरस महुररस परिणयावि। रसथको, तिक्तरस १ कटुकरस २ कषायरस ३ आम्लरस ४ मधुररस ५ परिणत प णिवुवे। फासथा कक्खडफास जाव लुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथको, कर्कशस्पर्श यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पणिवुवे। संठाणथा परिमंडलसंठाण परि णयावि। संस्थानथको परिमंडल पणिवुवे इम तस चउरस आयतसंठाणपरिणयावि वाटलासस्थान। चउरसत्र्यस्र ४ आयतसंस्थान पणि स्ये ५। जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया एव। जे पर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकायिक ते पणि इमहीज कहवा। एवचेवाणपुव्वीए णेयव्व। इम यथानुपूर्वीनि म अनुक्रम पुर्वोक्त तिम जाणवा। जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववा य जाव परिणया। यावत् जे पर्याप्ता सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पंचेंद्रिय

वर्णादिशायविशेषव महम इन्द्रियपर्याप्तिविशेषवो दृष्टा शरीरग्निप्रपर्याप्तिविशेषवो भवमइति अतएवाह एते नव दण्डका मिश्रपरिणते

गपरिणया तेवण्णं कालवण्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि ॥ ६ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढवि काइय एगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया तेवण्णंकालवण्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया एवचेव । एव जहा णुपुव्वीए जस्स जइसरीराणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपओगपरिया तेवण्णं कालवण्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि ॥ ७ ॥ जे अ

नता स्त यतस कालवर्णपरिणतामपि याव दायतसस्थानपरिणतामपि ॥ ६ ॥ यअपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्त यवतःकालवर्णपरिणता याव दायतसस्थानपरिणतामपि य अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवमेव । एव यथानुपूर्व्या मतव्यानि यस्य यायति शरीराणि याव दपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते यवत कालवर्णपरिणतामपि याव दायतसस्थानपरिणतामपि ॥ ७ ॥ ये अपर्याप्तकसूक्ष्मप

न्न प्रयोगपरिणत । ते वर्णथी कालवर्णपरिणयावि । तेवर्णथी कालवर्ण परिणत । जाव आयतसठाणपरिणयावि ६ । यावत् आयतसस्थान परिणत पनि ए कह्या वखड कह्या । जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मासरीरपओग परिणया । जे अप सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक इत्यादि एम सर्व अग्र सस्थानविशेषकरी सातमा दण्डक कहे छे—जे अप सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक तैजस कार्मण शरीर प्रयोगपरिणत । ते वर्णथी कालवर्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि । ते वर्णथकी कालवर्ण परिणत पणिहुवे इम वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कह्या यावत् आयतसस्थान परिणत पणिहुवे ८ । जे पज्जत्तासुहुमपुढविएवचेव । जे पर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि एव जाणवा इम

पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया तेवणओ कालवन्नपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि । अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया एवंचेव एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइ इंदियाणि तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया तेवण्णओ कालवन्नपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि ॥ ८ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदिय ओरालियतेयाकम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया

र्यिवीकायिकैकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता से वर्णतः कालवर्णपरिणता याव दायतसंस्थानपरिणता अपि य पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता (सो) एवमेव एवं यथानुपूर्व्या यस्य यावन्ती इन्द्रियाणि तस्य तानि तावन्ति भणितव्यानि याव ये पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियश्रोत्रेन्द्रियपावत्स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्त वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसंस्थानपरिणता अपि ॥ ८ ॥ य अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि याव दायतसंस्थानपरिणता अपि ।

भोज वक्तव्या । पवमकायपर्याप्तविषयम । इस ययानुपूर्व्या ययानुक्रम भावना । अमुमक्तशरीराणि याव ये पञ्चता सर्वार्थसिद्धमनुत्तरावबोधक देवपञ्चेन्द्रिय पयौवन तैजसकार्मणशरीरा याव परिणता । अत्र मे अनसा शरीराणि तेतमा वक्तव्या, यावत् जे पर्या सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक देवपञ्चेन्द्रिय वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत । ते वर्णपरिणतापरिणतावि । ते वर्णतो, कालवर्ण परिणत यथिकुवे । याव आयतसंठाणपरिणयावि । याव त् आयत संस्थान परिणत यथिकुवे ए सातमा दण्डक कथा ० तथा । जे अपज्जत्तासुहुमपढविकाइय एगिन्दिय फासिंदिय पयोगपरिणया । जे अप सत्सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादि इन्द्रिय धर्मे वर्ण गन्ध रस स्पर्श संस्थानविशेषकरी आठमा दण्डक कहीये—जे अप सू पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय स्पर्शनेन्द्रिय प्रयोगपरिणत छै । ते वर्णतो कालवर्ण परिणयावि । ते वर्णतो कालवर्ण परिणत । याव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान

तेयगाओ कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेया कम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया एवं चेव, एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइ सरीराणि इंदियाणि य तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियकम्मासरी

पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवं यथानुपूर्व्या यस्य यावन्ति शरीराणीन्द्रियाणि च तस्य तानि भणितव्यानि यावद् ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरश्रोत्रेन्द्रिय यावत्स्प

परिणत भवितुं । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायस्य एवमेव । व पर्या सू पृथिवीकायिक अपि इत्यक्षरार्था । एवमनुपूर्व्या । इति यथानुपूर्व्या । जस्स शरीराणि इंदियाणि य तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि । येषां यावन्ति शरीराणि सन्ति पृथिवीषु तेषां तावन्ति शरीराणि वक्तव्यानि । जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठ सिद्धअणुत्तर जाव देवपंचिंदिय आ इति । यावत् ये पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पञ्चेन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय । जावफासिंदिय पओग परि णता । यावत् स्पर्शेन्द्रिय प्रयोगपरिणत । ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि । ते वर्णतः, कालवर्ण परिणत भवितव्ये, इति वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ वक्तव्या । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत भवितुं इति ए आठमाशतक का ८ का भाग सू पृथिवीकायिक इत्या दि, शरीर इन्द्रिय वर्णादि भेदों से भवना एकक कहने—जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्माफासिंदिय पओगपरिणयावि । जे अप सू पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक तैजस कार्मण शरीरस्पर्शेन्द्रिय प्रयोगपरिणत । ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि । ते वर्णतो कालवर्ण परिणत भवितव्ये इस वर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ वक्तव्या । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत भवितुं एतत्सम्बन्धी वक्तव्यं । जे पज्ज त्ता सुहुमपुढविकाइय एवमेव । जे पर्या सू पृथिवीकायिक ते अपि इत्यक्षरार्था पूर्वोक्त प्रकारे । जहाणुपुव्वीए । इति यथानुपूर्व्या यथाक्रमे । जस्स जइसरीराणि इंदियाणि य । यस्य यावन्ति शरीराणि इन्द्रियाणि । तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि । तेषां तत्सम्बन्धी विचारोऽत्र वक्तव्या । जाव जे पज्ज

मप्येतएव नव दण्डकाइति मथ विस्रसापरिणतपुद्गला चिन्तयति ॥ विस्ससापरिणयाणमित्यादि ॥ एवमहापसवणागति ॥ तथैव मिद सूत्र-र्भ

रसोइन्दिय जाव फासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणयावि एए नवदंडगा ॥ ९ ॥ मीसापरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिंदियमीसापरिणया, एगिंदियमीसापरिणयाणं भंते ! पोग्गला

न्द्रियप्रयोगपरिणता से वर्णतः कालवर्णपरिणता यावदायतसंस्थानपरिणतामपि एत नवदण्डकाः ॥ ९ ॥ मिश्रपरिणता भदन्त ! पुद्गलाः कति विधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—एकेन्द्रियमिश्रपरिणता यावत्पञ्चेन्द्रियमिश्रपरिणताः । एकेन्द्रियमिश्रपरिणता भदन्त ! पु

नामकईसिद्धपब्भरावभारय देव पंचिंदिय वउव्विय तेयाकम्मासोइंदिय । यावत् जे पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पंचेन्द्रिय वैक्रिय तेजसकार्मणशरीर श्रोत्रेन्द्रियादि । जाव फासिंदियपओगपरिणया । यावत् स्पर्शेन्द्रिय प्रयोगपरिणत है । ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि । ते वर्णथ को कालवर्ण परिणत पणिदरा जाव आयतसंठाण परिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत भणिये । एए नवदंडगा ९ । ए नवमी दंडक कह्या । प्र मम दंडक समुच्चय समुच्चय २ प अप १ समुच्चयपर्याप्त अपर्याप्त शरीर ३ समुच्चय प अप इन्द्रिय ४ समुच्चय प अप शरीरइन्द्रिय ५ समुच्चय पर्याप्त अप वर्णादिसहित ६ समुच्चय प अप शरीर वर्णादिसहित ७ समुच्चय प अप इन्द्रिय वर्णादिसहित ८ समुच्चय प० अप शरीर इन्द्रिय वर्णादिसहित ए नव दंडक कह्या ते जाणवा । मीसापरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा पं । मिश्र परिणतनेविषे पणि पहीला नवदंडक जाणवा मिश्रपरिणत जुअमपम् । पहम जेतले प्रकारे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा पं त । हे गौतम पांचभेदे कह्या ते कहे छे—एगिंदियमीसा प० जाव पंचिंदियमीसा परिणया । एकेंद्रिय मिश्रपरिणत यावत् पंचेंद्री मिश्रपरिणत । एगिन्दियमीसापरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प । एकेंद्री मिश्रपरिणत हे भगवन् ! पहम कतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमाएवजहापओगपरिणएहि नव दंडगा भणिया । हे गौतम ! इम जिम प्रयोगपरिण?

कइविहा पन्नत्ता ? एवं जहा पओगपरिणएहिं नवदंडगा भणिया एवं मीसापरिणएहिवि नवदंडगा भाणि यव्वा तहेव सव्वनिरवसेसं, नवरं अभिलावो मीसापरिणया भाणियव्वो, सेसंतचेव जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसि द्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसंठाणपरिणया । वीससापरिणयाणं भंते ! पोग्गलाकइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया

द्गलाः कतिविधाः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! एवं यथा प्रयोगपरिणतैर्नव दण्डका भणिता एवं मिश्रपरिणतैरपि नवदण्डका तथैव सर्व निरवशेष नवरमभिलापो मिश्रपरिणता भणितव्यः । शेष तथैव यावद् ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावदायतसंस्थानसंस्थिताश्च पि ॥ विस्रसापरिणता पुद्गलाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—वर्णपरिणता गन्धपरिणता रसपरिण

शरो नव दण्डका । एवमीसापरिणएहिवि नव दण्डगा भाणियव्वा । इम मिश्रपरिणतैः शरीरे पवि नवदण्डक भणितव्या वक्तव्या । तथैवसर्वनिरवशे स । तिमश्रोत्र सगमाश समग्र पर्वं वक्तव्या । नवरमभिलापोमीसापरिणया भाणियव्वा सेसतचेव । एतत्संविशेष किन्तु प्रयोगपरिणत एकवो मन्द कस्तो तिर्हा पामाने मिश्रपरिणत एकवोमन्द वक्तव्या शेष तिमत्र वक्तव्या । जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसंठाण ८ । यावत् ये प र्याप्तमित्र भमत्तरोपपातिश यावत् आयतसंस्थान परिणत पविवते ए पवि नवदण्डक वक्तव्या ८ विवे विस्रसा पुद्गलमतें चितवेछे—वीससापरिणयाणं भंतेवाश्वमा कइविहा पं । विस्रसा परिणत हे भगवन् ! पद्गल केतलभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प त । हे गौतम । पांचभेदे कह्या ते कहेछे—वण्णपरिणया १ । वर्ण परिणत । गंध प २ । गन्धपरिणत । रस प ३ । रस परिणत । फास प ४ । स्पर्श परिणत । संठाण प ५ । संस्थान परिणत । जे वण्ण प । जे वर्ण परिणत । ते पंचविहा प तं । ते पांचभेदे कह्या ते कहेछे—कालवण्ण प । कालवर्ण परिणत १ । जाव सुक्किलवण्ण प । इम नील लोहित हालिद्र शुक्लवर्ण परिणत । जे गंध प० ते दुविहा प तं । जे गन्ध परिणत ते बेभेदे कह्या ते कहेछे—सुर

रसपरिणया त पञ्चविहा पन्नत्ता तं०—तित्तरसपरिणया जाव कडुयकसायअंबिलमहुररसपरिणया जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पन्नत्ता तंजहा—कक्खडफासपरिणया जाव मउयगरुयलहुयसीयउसिणनिद्धलुक्खफासपरिणयाय इत्यादि यथैक पुद्गलद्रव्य माश्रित्य परिणाम चिन्तयन्नाह ॥ एगेव

जेफासपरिणया ते पञ्चविहा पन्नत्ता, तंजहा—कालवण्णपरिणया जाव सुक्किल्लवण्णपरिणया जे गंधपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुगंधपरिणया दुग्गंधपरिणयावि एवं जहा पन्नवणापए तहेव निरवसेसं जाव संठाणओ आयतसंठाणपरिणया वन्नओ कालवण्णपरिणयावि जाव लुक्खफासपरिणयावि । एगेभंते ! दव्वे किंपयोगपरिणए मीसापरिणए वीससापरिणए ? गोयमा ! पयोगपरिणए वा मीसापरिणए वा वीससाप

ता रसपरिणता संस्थानपरिणता। वर्णपरिणता सा पंचविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—कालवर्णपरिणता यावत् शुक्लवर्णपरिणता। गंधपरिणता साद्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—सुगंधपरिणता दुर्गंधपरिणताअपि । एवं यथा प्रज्ञापनाया तथैव निरवशेष । यावत् संस्थानत आयत संस्थानपरिणता ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि यावद्रूक्षस्पर्शपरिणताअपि ॥ एक भदन्त । द्रव्य किं प्रयोगपरिणत मिश्रपरिणत विस्रसा

भिमध दुरभिगन्ध परिणताबि । समन्तदुगन्ध परिणत पश्चिदे । पन्नवणापदस्याए तथैव निरवसेस । इमविम पदप्रभानेदिये तिम निरवशेष सम ता तद्यथा तिर्क दस सूत्रे —ज रसपरिणत। ते पंचविधा प० त , तित्तरस प एव कटुरस कसायरस अविलरस मधुररस परिणता, ज फास प ते पड बधा प त , कर्कशफास प एव मउय गरुय लहुय सीय उसिण णिद्ध लुक्खफास परिणता इत्यादि। आयतसंठाण आयतसंठणया प० । सा तु संस्थानतो आयतसंस्थान परिणत । ते वर्णमातृकावर्णपरिणतापि । त यथा, कालवर्ण परिणत यमि । लक्षस्पर्श परिणतापि । यावत् क ऋपमम य यमि आंकथा द्विदे एव पदस्त द्रव्यमते प्रायोगे परिणामपत पिनवचे—एगभते दव्वे पयोग परिणए मीसा य वीससा परिणए। एक भगवन् ! द्रव्य कि प्रयोग परिणत मिश्र परिणत २ अथवा वीस्रसा परिणत त्रुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पयोगपरिणएवा । हे गौतम । प्रयोग प

त्यादि ॥ सचमणप्पओगपरिणतेति ॥ मनस्तया परिणत मित्यर्थः ॥ वयप्पओगपरिणएत्ति ॥ भाषाद्रव्य काययोगेन गृहीत्वा वाग्योगेन निसृज्यमान वाकप्रयोगपरिणत मित्युच्यते ॥ कायपओगपरिणएत्ति ॥ औदारिकादिकाययोगेन गृहीत मौदारिकादिवर्गणाद्रव्य मौदारिकादिकायतया परिणत कायप्रयोगपरिणत मित्युच्यते ॥ सच्चमणत्यादि ॥ सद्भूतार्थचिन्तननिबन्धनस्य मनसः प्रयोगः सत्यमनःप्रयोग उच्यते एवमन्येपि नवरं मृषा असद्भूता

रिणएवा । जइ पओगपरिणए किं मणपओगपरिणए वइपओगपरिणए कायपओगपरिणए ? गोयमा ! मणप्पओगपरिणएवा वयपओगपरिणएवा कायप्पओगपरिणएवा । जइ मणप्पओगपरिणए किं सच्चमणप्पओगपरिणए मोसमणप्पओगपरिणए सच्चामोसमणप्पओगपरिणए असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ? गोयमा ! सच्चमणप्पओग

परिणत ? गौतम ! प्रयोगपरिणतवा मिश्रपरिणतवा विस्रसापरिणतवा । यदि प्रयोगपरिणतं किं मनःप्रयोगपरिणत वचःप्रयोगपरिणत कायप्रयोगपरिणत ? गौतम ! मनःप्रयोगपरिणतवा वच प्रयोगपरिणतवा कायप्रयोगपरिणतवा । यदि मनःप्रयोगपरिणत किं सत्यमन प्रयोगप

हवे पवना । मोसा परिणवा वायवा परि णवा । मिस प हुवे विसमा प हुव । कायपयोग परिणए । जे पयोग प । मनपयोग प वइपयोग प कायपयोग परिणए । मन मन प परिणतपणे कहिये पवना भाषा द्रव्य काययोगे ग्रहीने वाग्योगेकरी मोकलवानो वचनप्रयोग परिणत कहो ॥ २ औदारिकादिकयोगे करी औदारिकादि वर्गणा द्रव्य औदारिकादि कायपणेकरी परिणम्या ते कायप्रयोग परिणत कहिये ३ इति प्रश्न उत्तर । गोयमा मनपयोगपरिणवा । हे गौतम ! मनप्रयोगपरिणत हवे १ । वइपयोगपरिणवा । वचनप्रयोगपरिणत हुवे २ । कायपयोगपरिणवा । कायप्रयोगपरिणत हुवे ३ । जइ मनपयोग परिणव । जो मनप्रयोगपरिणत हवे । किं सच्चमनप्पयोगपरिणव । किं सत्य मनप्रयोग साचो पदार्थ चिन्तवन निबंध्यो जेणे मन तेहना प्रयोग तणे परिणम्या ते सत्य मन प्रयोगपरिणत कहिये १ । मोसमनप्पयोगपरिणव । असत्य मन तेहना निबंधनकहिये मनप्रयोग तेणे परिणम्या ते असत्य मन प्रयोगपरिणत २ । सच्चामोसमनप्पयोगपरिणए असच्चामोसमनप्पयोगपरिणए । साचू पणे मृषा तेणे मि

थः सत्यमृषा मिश्रो यथा पञ्चसु दारकेषु जातेषु दशदारका जाता इति असत्यमृषा सत्यमृषास्वरूप मतिक्रान्तो यथा देवीत्यादि ॥ आरम्भ इत्या

दि ॥ आरम्भो जीवोपघात स्तद्विषयं सत्य मारम्भसत्य तद्विषयो यो मन प्रयोग स्तेन परिणत मन तथा एव मुत्तरत्रापि नवरं समारम्भो जीवा

नुपघात ॥ मारंभति ॥ संरम्भो वधसङ्कल्प: समारम्भस्तु परितापकरति ॥ औरालिएत्यादि ॥ औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कन्धरूपत्वनो पचीयमान

परिणएया मोसमणप्पओगपरिणएवा सच्चामोसमणप्पओगपरिणएवा असच्चामोसमणप्पओगपरिणएवा । जइ सच्चमणप्पओगपरिणए किंआरंभसच्चमणप्पओगपरिणए अणारंभसच्चमणप्पओगपरिणए सारंभसच्चमणप्पओगप

रिणत मृषामनःप्रयोगपरिणत सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत असत्यमृषामन प्रयोगपरिणत ? गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणतंवा मृषामन प्रयोग परिणतवा सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतवा असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतवा । यदि सत्यमन प्रयोगपरिणत किं आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिण त अनारम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणत सारम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणत असारम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणतं समारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणतं असमारम्भ

न.ते मनाप्रय। कहिये जिम नावा पांच बालकजातां दश बालक जाया इम कहिये सत्यमृषास्वरूपने अतिकम्या ते असत्यामृषा यथा देवि इतिमग्र। मासमृ मणप्पओगपरिणएवा । हे गौतम ! सत्य मनप्रयोग परिणतहुवे १ । मोसमणप्पयोग परिणएवा । असत्य मनप्रयोगपरिणतहुवे २ । सच्चामो समणप्पयोगपरिणएवा । मिश्र मनप्रयोग परिणतहुवे ३ । असच्चामोसमणप्पयोग परिणएवा । असत्यामृषामनप्रयोगपरिणतहुवे ४ । जइसच्चमणप्पयो ग परिणए तेकिंआरंभसच्चमणप्पयोगपरिणए । जो सत्यमन प्रयोगपरिणतहुवे तो स्यू आरम्भ कहिये जीवघात तद्विषय सत्य ते आरम्भ सत्य तद्विषय जे मनप्रयोग तिणे परिणत जे ते आरम्भ सत्य मनप्रयोग परिणत १ । अणारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए । जीवघात नहीं ते विषय जे सत्य ते विषय जेमन प्रयोग तिणेपरिणत अनारम्भसत्यमनप्रयोगपरिणत २ । सारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए । सारम्भ कहिये वध संकल्प ते विषय जे सत्य ते विषय मनप्र योग परिणत ३ । असारंभ सच्चमणप्पयोग परिणए । वध संकल्परहित जे ते विषय जे सत्य ते विषय मनप्रयोगपरिणत ४ । समारंभसच्चमणप्पयोगपरि

स्यात् काय औदारिकशरीरकाय तस्य यः प्रयोग औदारिकशरीरस्य वा य कायप्रयोग सतया प्रथम पर्याप्तकस्यैव वदितव्य तोम यत्परिणत

रिणए असारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए समारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए ? गोयमा ! आरम्भसच्चमणप्पओगपरिणए वा जाव असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए वा । जइ मोसमणप्पओगपरिणए किं आरम्भमोसमणप्पओगपरिणए वा एवं जहा सच्चेण तहा मोसेणवि एवं असच्चामोसमणप्पओगेणवि । जइ वइप्पओगपरिणए किं सच्चवइप्पओगपरिणए मोसवइप्पओगपरिणए ? एवं जहा मणप्पओगपरिणए तहा वइप्पओ

सत्यमन प्रयोगपरिणत ? गौ० । आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणतवा याव दसमारम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणतवा । यदि मृषामन प्रयोगपरिणत किं आरम्भमृषामनःप्रयोगपरिणत एवं यथा सत्यम तथा मृषापि एव सत्यमृषापि । एव असत्यमृषामनःप्रयोगेणापि । यदि वच प्रयोगपरिणतं किं सत्यवच प्रयोगपरिणत मृषावच प्रयोगपरिणत एव यथा मनःप्रयोगपरिणत तथा वच प्रयोगपरिणतेपि याव दसमारम्भवचःप्रयोगपरिण

भए असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए । परितापविषय ना सत्य मनप्रयोग परिणत ५ परितापरहित तेविषय जे सत्य मनप्रयोग परिणत हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आरम्भसच्चमणप्पओगपरिणए वा । हे गौतम । आरम्भ सत्य मनप्रयोगपरिणत १ । जाव असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए वा । इम याव त् असमारम्भ सत्यमनप्रयोग तेवे परिणत हुवे ६ । जइ मोसमणप्पओगपरिणए । जो मृषा मनप्रयोग तवे परिणत हुवे । किं आरम्भमोसमणप्पओगप रिणए । तो स्यूं आरम्भ मृषा मनप्रयोगपरिणत । एवं जहा सच्चेण तहा मोसेणवि । इम जिम सत्यसघाते छ बोल कह्या तिम असत्यसघाते पणि छ बोल कहवा । एवं असच्चामोसमणवि । इम मिश्रमन ते पणि छ बोल कहवा । एवं असच्चामोसमणप्पओगणवि । इम असत्या मृषामनप्रयोगसघाते पणि छ बोल कहवा । जइ वइप्पओगपरिणए । जो वचनप्रयोग परिणत हुवे । किं सच्चवइप्पओगपरिणए । तो स्यूं सत्यवचन प्रयोग परिणत हुवे १ । मोसवइप्पओग परिणए । मृषा वचनप्रयोग परिणत हुवे । एवं जहा मणप्पओगपरिणए । इम जिम मनप्रयोग परिणतनो आलापो कह्यो । तहा वइप्पओगपरिणएवि ।

ततया । तेरालियमिस्सासरीरकायपओगपरिणए इति । औदारिक मुत्पत्तिकाल असपूर्ण सत् मिश्रं कार्मणेनेति औदारिकमिश्र तदेवी दारिक मिश्रक तदेव शरीर औदारिकमिश्रकशरीर तदेव काय तस्य यः प्रयोग औदारिकमिश्रकशरीरस्य या यः कायप्रयोगः स औदारिकमिश्रकाय शरीरकायप्रयोग तेन परिणत यत्त तथा अथ पुनरौदारिकमिश्रकशरीरकायप्रयोगो पर्याप्तकस्यैव वदितव्या यत आह—औदारिकस्य आहारकम शरीरो । तेनपरंमीसेणं जावसरीरस्सनिप्पत्ता ॥ १ ॥ एव साथ इकामक्षे औदारिकशरीरस्य मिश्रतास्याति माश्रित्य तस्य प्रधानत्वात् यदा पुन

गपरिणएवि जाव असमारंभवइप्पओगपरिणएवा । जइ कायप्पओगपरिणए किंउरालियसरीरकायप्पओगपरिण ए उरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरि

त । यदि कायप्रयोगपरिणत किं औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत वक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत ?

तिम वचनप्रयोग परिणतना पनि यावाना कहवा । जावयसमारंभवइप्पओग परिणएवा जइकायप्पओगपरिणए किंउरालियसरीरकायप्पओगपरि णए । यावत् असमारंभ वचनप्रयोगपरिणत सवकहवा, कायप्रयोग परिणत ता शूं औदारिकशरीरनोज पंचस्कंधरूपपण उपचीयमान पणाथी काय तेहना ज प्रयोग अथवा औदारिकशरीरनो जे कायप्रयोग ते पर्याप्तने अथवा तेणे जे परिणम्या ते औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । उ रालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । औदारिक उत्पत्तिकालनेविषे असपूर्णथका कार्मणसघाते मिश्र ते औदारिकमिश्र कहिये ते तथाव शरीर त औदारिकाय तेहना जे प्रयोग अथवा औदारिकमिश्र शरीरना ज कायप्रयोग तिणे ज परिणम्या ते ए अपर्याप्तान अथवा आहच—औएणकम्मएण आ हारई अणंतरजावा । तेनपरंमीसेण जावसरीरस्सनिप्पत्ता । १ । इम पहिला, कार्मण सघाते औदारिकशरीरनो मिश्रता उत्पत्तिमाश्रयीने तेहना प्र धानपणाथकी जिवारे वली औदारिकशरीरनो धणी वैक्रिय लब्धिवंत मनुष्य पंचेंद्रिय तिर्यंच अथवा पर्याप्त बादरवाउकायिक वैक्रियशरीर प्रते

रौदारिकशरीरी वैक्रियलब्धिसम्पन्नो मनुष्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक पर्याप्तबादरवायुकायिको वा वैक्रियं करोति तदौ दारिककाययोग एव वर्त्त मानः प्रदेशा न्विक्षिप्य वैक्रियशरीरयोग्यान् पुद्गला नुपादाय यावत् वैक्रियशरीरपर्याप्त्या न पर्याप्तिं गच्छति ताव द्वैक्रिय औदारिकशरीरस्य मि श्रता आरम्भकत्वेन तस्य प्रधानत्वा दुत आहारकेणौ औदारिकशरीरस्य मिश्रता वक्तव्येति ॥ वक्रियसरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह वैक्रियश रीरकायप्रयोगो वैक्रियपर्याप्तकस्येति ॥ वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगो देवनारकेषू त्पद्यमानस्या प र्याप्तकस्य मिश्रता च वैक्रियशरीरस्य कार्मणेनैव लब्धिवैक्रियपरित्यागे त्वौदारिकग्रहणाभिमुखस्य औदारिकोपादानाय प्रवृत्ते वैक्रियप्रधानत्वा दौ दारिकेणापि वैक्रियस्य मिश्रतेति ॥ आहारगसरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इहा हारकशरीरकायप्रयोग आहारकशरीरनिर्वृत्तौ सत्यां तदानीं

णए आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए आहारगमीसासरीरकायप्पओगपरिणए कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए

मौ० । औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणततया यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणततया । य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेन्द्रियौदा

बरे तिवारे औदारिक काययोगमें तिमे वर्त्तमानथका प्रदेश विस्तरी वैक्रियशरीरयोग्य पुद्गललेई, ज्यांलगे वैक्रियशरीर पर्याप्ति पर्याप्ता नथाय त्यांलगे वैक्रियशरीर स्यूं औदारिकनो मिश्रता कहवी प्रारम्भकने तेप्रधानपणा ते कारणथकी इम आहारकशरीर स्यूं पणि औदारिकनो मिश्रता कहवी । वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणए वैक्रियमीसासरीर कायप्पओगपरिणए । इहां वैक्रियशरीर कायप्रयोग वैक्रियपर्याप्तकने हुवे ३ तथा वैक्रियनो मिश्रता प ण्या देव नारकी उत्पत्तिकालनेविषे अपर्याप्तावस्थायें ज्यांसमे वैक्रियशरीर पूरानथया हुवे त्यांसगे कार्मण स्यूं वैक्रियनो मिश्रता कहवो तथा वैक्रिय ल ब्धिवन्त वैक्रिय करी पछे औदारिक ग्रहणकरता ज्यांसमे वैक्रिय सर्वथा छांड्यो नहुवे त्यांसमे औदारिकनो मिश्रता कहवी ४ । आहारकशरीरकाय आ हारकमीसासरीरकाय । ए आहारकशरीर नीपजावानेअर्थे तिवारे तेहीज प्रधानपणाथकी ५ जिवारें आहारक मटिनवंत आहारकशरीर कर्त्तने कायकरी रच्यो औदारिकने तिवारे आहारकना प्रधानपणाथकी ज्यांसमे आहारक सर्वथा छांड्यो न हुवे त्यांसमे औदारिक स्यूं मिश्रता कहवी ६ ।

तस्यैव प्रधानत्वात् ॥ आहारगमीश्रसरीरकायप्पओगपरिणएति ॥ इहा हारकमिश्रकशरीरकायप्रयोग आहारकस्यौ दारिकेण मिश्रताया साच आ हारकत्याग मौदारिकग्रहणाभिमुखस्य मतयुक्तभवति यदा हारकसरीरीभूत्वा कृतकार्यः पुन रप्यौदारिक गृह्णाति तदा हारकस्य प्रधानत्वा दौ दारिकप्रवेशप्रति व्यापारभावा नपरित्यजति याव त्सर्वथैवा हारक ताव दौदारिकेण सह मिश्रतति ननु न ततन सर्वथा मुक्तं पूर्वनिवर्त्तित ति त्त्येव तत्कथं गृह्णाति ? सत्य तिष्ठति ततथा प्यौदारिकशरीरापादानार्थं प्रवृत्तवति गृह्णात्यये त्युच्यतइति ॥ कम्मासरीरकायप्पओगपरिणएति ॥ इह कार्मणशरीरकायप्रयोगो विपद्दे समुद्घातगतस्य केवलिन स्तृतीयचतुर्थपञ्चमसमयेषु भवति यतक्त–कार्मणशरीरयोगी चतुर्थके पञ्चमतृतीयवर्ति ॥

१ गोयमा । उरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा जाव कम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा । जइ उरालियसरी रकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए एवं जाव पंचिंदियउरालियजावपरिणए १ गोयमा । एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा बेइंदिय जाव परिणएवा पंचिंदिय जाव परिण

रिकशरीरकायप्रयोगपरिणत एवं यावत् स्पर्शेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । एकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतया श्री

कर्मासरीरकायप्पओगपरिणए । कार्मणशरीर विग्रहगतो वा यथा द्यारोहणे तो वमे तथा चकल समुद्घाते चाणे पोय यचमे समयजेबिपै कृते ० । गोयमा ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा । हे गौतम । औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा । आथकम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा । यावत् कार्म णशरीर कायप्रयोग परिणत । जइ ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । जो औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत । किं एगिंदिय ओरालियसरीरकायप्प ओगपरिणए । तो स्यूं एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । एवं जाव पंचिंदिय ओरालियसरीर कायपरिण० । इम यावत् पंचेन्द्रिय औदारि कशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा । हे गौतम । एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्र योग परिणत अथवा । बेइंदियजाव परिणएवा जाव पंचिंदिय कायपरिणएवा । बेइन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इम तेइन्द्री चौरिन्द्री

एव प्रज्ञापनाटीकानुसारे औदारिकशरीरकायप्रयोगादीनां व्याख्याशतकटीकानुसारतः पुनर्मिश्रकायप्रयोगाणां भेदमौदारिकमिश्र औदारिकमेवापरिपूर्णो मिश्र उच्यते यथा गुडमिश्रं दधि नगुडतया नापि दधितया व्यपदिश्यते तद्वाभ्यां मपरिपूर्णत्वा देव मौदारिकं मिश्र कार्मणेन मौदारिकतया नापि कार्मणतया व्यपदेष्टुं शक्य मपरिपूर्णत्वादिति तस्यौ दारिकमिश्रव्यपदेशः एवं वैक्रियाहारकमिश्रावपीति सयर ॥ आयरयाउकायमहत्यादि ॥ यदौ दारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रतीत्यालापकोपीत तथौ दारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणतो

एया । जइ एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणएवा जाव वण स्सइकाइयएगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए ? गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदियजावप्पओगपरिणएवा जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजावपरिणएवा । जइपुढविक्काइयएगिंदियउरालियसरीरजावपरिणए किंसुहु

न्द्रिय (प्रभृति) यावत् पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । यद्येकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं किं पृथ्वीकायिकैकेन्द्रिय (प्रभृति) यावत् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत यावत् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतंवा । यदि पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं किं सूक्ष्मपृथ्वीकायिकै

यावत् पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जावपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । जो एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किं पुढविक्काइयएगिंदियजावपरिणए । जो पृथ्वी काय एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इस प्रकार तेउकाय वाउकाय । जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । यावत् वनस्पतीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुढविक्काइयएगिंदियपओग जाव परिणएवा । हे गौतम । पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जाववणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । यावत् वनस्पतीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइपुढविक्काइयएगिंदियओरा

मपुढविकाइय जाव परिणए बादरपुढविकाइयएगिंदियजावपरिणए ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा बादरपुढविकाइय जाव परिणएवा । जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किंपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयजावपरिणए अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयजावपरिणए ? गोयमा ! पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणएवा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणएवा एवं बादरावि एवं जाववणस्सइका

केंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं बादरपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० ! सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं बादरपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतंवा । यदिसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं पर्याप्तकसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत

निषमगोरजाव परिणए । जो पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किंमहमपढविकाइय जाव परिणए । ता क्या सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा । बादरपुढविकाइय एगिंदिय जावपरिणए । बादर पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा । हे गौतम ! सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । बादरपुढविकाइय जावपरिणएवा । बादर पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइसुहुमपुढविकाइ य जाव परिणएवा । जो सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किंपज्जत्तासुहुमपुढवि जावपरिणए । तो क्या पर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा । अपज्जत्तासुहुमपुढवी जाव परिणए । अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जावपरिणएवा । हे गौतम पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयजावपरिणएवा ।

इयाण चउक्कभेदो बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाण दुयओभेदो पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। जइ पंचिंदियओरालियकायप्पओगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गोयमा । तिरिक्खजोणिय जाव परिणएवा मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणएवा । जइ तिरिक्ख

पा ? गौ० । पर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वी (प्रभृति) याव त्परिणतवा अपर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वी (प्रभृति) याव त्परिणतवा । एव बादरपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत अपि । एव याव द्वनस्पतिकायिकाना चतुष्कभेदो । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाणा द्विको भेद पर्याप्तको अपर्याप्तकश्चेति । यदि पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं तिर्यग्योनिकपंचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत मनुष्यपंचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । तिर्यग्योनिकपंचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा मनुष्यपंचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा ।

पदर्थ । सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । एव बादरवि । इस बादरमा पणि भेद कहवा । एमज्ञावनस्पतिकाय पर्यंत सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । एव बादरावि । इस बादरना पणि भेद कहवा । बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रियाने दुय भेदा । पज्जत्तगा अपज्जत्तगा । इस यावत् वनस्पतीकायमने सूक्ष्म १ बादर २ पर्याप्त ३ अपर्याप्त ४ ए चार भेद कहवा । बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रियाने दुय भेदा । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ जइ पंचिंदिय ओरालिय जावपरिणए । जो प तिरिक्खजोणिय पंचिंद्रिय औदारिक शरीर कायप्रयोग परिणत । किंतिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए मणुस्सपंचिंदियजाव परिणए । जो पंचेंद्रिय औदारिक शरीर कायप्रयोगपरिणत हुवा नारक १ देव २ ए न पू तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत । गोयमा तिरिक्खजोणिय जावपरिणएवा । हे गौतम । तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय औदारिक शरीर कायप्रयोग परिणत । मणुस्सपंचिंदियजावपरिणए । मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइतिरिक्खजोणियजावपरिणए । जो तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किं जलचरतिरिक्खजोणिय जावपरिणए जलचर थलचर खेचर एवमचउभेदा जावखहचरा

जोणिय जाव परिणए कि जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए थलचर खहयरजावपरिणए ? एव चउक्को भेदो जाव खहयराण । जइमणुस्सपंचिदिय जाव परिणए कि सम्मुच्छिममणुस्सपंचिदिय जाव परिणए गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ? गोयमा ! दोसुवि । जइगब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किंपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय जाव परिणए अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? गोयमा ! पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजाव

यदि तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं किं जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं ? एवं चतुष्कभेदो यावत्खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं । यदिमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं, किं सम्मूर्च्छिममनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं, गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं ? गौ० । द्वयोरपि । यदिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं किं पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं अपर्याप्त

चउरिन्द्रियपञ्चेन्द्रिय जावपरिणए । ते स् जलचर तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा स्थलचर तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा खचर तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत ए तीनेका सम्मूर्च्छिम १ गर्भज २ पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ४ एम चारभेद कहवा यावत् खचर पर्यंतना सब चारभेदकहवा, जो मनुष्य पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर का प्रयोगपरिणत । कि समुच्छिममणुस्सपंचिदियजावपरिणए । ते स् सम्मूर्च्छिम मनुष्य पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा । गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए या दोमांहि । गर्भज मनुष्य पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम ! बेउमेंथिये पणि । जइगब्भवक्कंतिय मणुस्सजावपरिणए । जो गर्भजमनुष्य पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इहां सम्मूर्च्छिम मनुष्य न पूछ्यो जमाटे सम्मूर्च्छिममनुष्य प

परिणया अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजावपरिणया । जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए बेइंदियजावपरिणए जाव पंचिंदियओरालियजावपरिणए ? गोयमा ! एगिंदियओरालियजावपरिणए एवं जहा ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा

कगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतं ? गौ० ! पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिक (प्रभृति) यावत्परिणत अपर्याप्तकगर्भव्यु त्क्रान्तिक (प्रभृति) यावत्परिणत । यद्यौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत द्वीन्द्रि यौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत याव त्पचेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौतम ! एकेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोगपरिणतं एव यथौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत आलापको भणित स्तथौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत स्यालापकोभणितव्य ।

पर्योमाशौबहु । । विपर्याप्त गर्भवक्रांतिय जाव परिणए अपर्याप्तगर्भवक्रांतिय जाव परिणए । ता ए एवा मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर काय प्रयोगपरिणत अथवा एप गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पज्जत्तगब्भवक्रांतिय जाव परिणएवा । हेगौतम । पर्या० गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा । अपर्याप्त गर्भवक्रांतिय जाव परिणएवा । अप गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत किंवे औदारिकमिश्रविस्तवेहे—जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । जो औदारिकमिश्रशरीर काय प्रयोगपरिणत । कि एगिंदिय ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । ता ए एकेन्द्रिय औदारिकमिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । बेइंदिय जाव परि णए । बाइन्द्री औदारिक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । जावपंचिंदिय ओरालिय जाव परिणए । इम यावत् शब्दें तेइन्द्री चौरिन्द्री पंचेंद्री औदारि कशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगिंदियओरालिय । हेगौतम । एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत । एवं जहा ओरालि यसरीरकाय पओगपरिणएणं आलावगो भणिओ । इम जिम औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत आलावा कह्या । तहा ओरालियमीसासरीरकाय

हरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएवि छालावगोजाणियव्वो । नवरं बादरआउकाइयगब्भवक्कतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय गब्भवक्कतियमणुस्साणय एएसिपज्जत्तापज्जत्तगाण सेसाण अपज्जत्तगाण । जइवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायपरिणए पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ? गो० ! एगिंदियजावपरिणएवा पंचिंदियजावपरिणएवा । जइ एगिंदियजावपरिणए किंवाउकाइयएगिंदिय जाव

नवर बादरवायुकायिकगर्भव्युत्क्रान्तिकपंचेंद्रियतिर्यग्गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणामेतषां पर्याप्तापर्याप्तकानां शेषाणामपर्याप्तकानाम् । यदि वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेंद्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत याव स्पर्शेंद्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौतम ! एकें द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा याव स्पर्शेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । य एकेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत किं वा

प्पयोगपरिण०वर्तिपाठाभाविमा । तिम औदारिक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणतना पणि आलावा कहवा । नवर०बादरवाउकायगर्भवक्रांति य पंचेंद्रिय तिरिकखोनिक गर्भव्रक्रांतिकमनुष्य एएसिपज्जत्ता अपज्जत्तगाण सेसाण अपज्जत्तगाण । एतलो विशेष तिहां सगलाई सूक्ष्म विशेषकहि वाकिं पर्यां पण विशेष कह्या, इहां तो बादरवाउकायिक गर्भजपंचेंद्रियतिर्यंच मनुष्य पर्यां पण विशेष कहवा वाचता वा पण विशेष में बोलवा ते कारणें बादरवाउकायादिकने पर्यां पणस्थाने विषे वैक्रिय आरंभपणो औदारिकमिश्रशरीर कायप्रयाग पामीये ते माटे पण० जव स्थानेविषे हुवे । जइवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए । जो वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत । किं०एगिंदिय वेउव्वियसरीर जाव परिणए । तो स्युं एकें द्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा । पंचिंदियवेउव्वियसरीरजावपरिणए । पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत इहां त्रिकसंयोगी तोम न कहवा तेहमे वैक्रियशरीर नथी तेमाटे । गोयमा एगिंदियजावपरिणएवा पंचिंदिय जावपरिणए । हे गौतम ! एकेंद्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत । जइएगिंदिय जाव परिणएवा । जो एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत ।

पि वाच्यो मवर मय विशेष मात्र सर्वेपि सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय पर्याप्तापर्याप्तविशेषका अभीता स्तत्तु बादरवायुकायिका गर्भजपञ्चेन्द्रियतिर्यं मनुष्याद पर्याप्तकाऽपर्याप्तकविशेषका वक्तव्या। शेषा एवपर्याप्तकविशेषकाएव यतो बादरवायुकायिकादीना पर्याप्तकावस्थायामपि वैक्रिया रम्भत औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगो लभ्यते शेषाणां पुनरपर्याप्तकावस्थायामेवेति ॥ अवगाहनासंठाणंति ॥ प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे प र तत्र वेव सिं सूत्र-जइ वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए किंसुहुमवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए बायरवाउकाइयएगिंदियपज्ज

परिणए अहवा अवाउकाइयएगिंदियजायपरिणए? गोयमा! वाउकाइयएगिंदियजायपरिणए नोअवाउकाइयजायपरिणए एव एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणासंठाणेवेउव्वियसरीरंभणियं तहा इहभाणियव्वं जाव

युकायिकैकेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) यावत्परिणत अथवा अवायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत? गौतम! वायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत नो अवायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत। एवमेतेनाभिलापेन यथा अवगाहनासंस्थाने वैक्रियशरीर भणित तथेहापि भणितव्यम्। यावत्पर्याप्तस र्वार्थसिद्धानुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध (प्रभृति) यावत्परिणतवा। प

जिवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणवा। ता स्यू वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत। अथवा अवाउकाइयएगिंदिय जावपरिणए। अथवा वायुकाय सबी ते अवाउकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए। हेगौतम! वाउकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। नोअवाउकाइय जाव परिणए। नही अवायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणासंठाणे वेउव्वियसरीरभणियं तहा इहविभाणियव्वं। इम इण भालावेकरी जिम पन्नवणाने इकवीसमें पदे अवगाहना संस्थान वैक्रियशरीर कह्यो तिम इहां पणि कहिवा ते इम, अवाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए, किंसुहुमवाउकाइयएगिंदिय जावपरि णए, बादरवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए गोयमा नो सुहुम जावपरिणए इत्यादिक। जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीय वेमाणि

पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणएवा अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयजावपरिणए। जइ वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किंएगिंदियमीसासरीरजाव परिणए जाव पंचिंदियमीसासरीरजावपरिणए एवंजहावेउव्विय तहा वेउव्वियमीसगंपि, णवरं देवनेरइयाणं अपज्जत्तगाणं सेसाणं पज्जत्तगाणं तहेव जाव नोपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए

दि वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेन्द्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत याव पञ्चेन्द्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणतं ? एवं यथा वैक्रियं तथा वैक्रियमिश्रशरीरमपि नवरं देवनैरयिकाणां अपर्याप्तकानां शेषाणां पर्याप्तकानां तथैव याव अपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावत्परिणत अपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत । यदि आहारकशरीर

देवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए। यावत् पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धजावपरिणएवा। अप सर्वार्थसिद्ध यावत् प्रयोगपरिणत। जइवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए। जो वैक्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। किंएगिंदियमीसासरीरजावपरिणए। तो शुं एकेंद्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। पंचिंदियमीसासरीर जावपरिणए। पंचेंद्री मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। एवंजहावेउव्विय तहावेउव्वियमीसगंपि। एम जिम वैक्रियशरीरनो अधिकार कह्यो तिम वैक्रिय मिश्रशरीरनो पणि अधिकार कहवो। णवरंदेवनेरइयाणंअपज्जत्तगाणं सेसाणंपज्जत्तगाणं २। एतलोविशेष देव नारकीने अपर्याप्तावस्थायें वैक्रियमिश्रपणे बोलावे य शेषाअवस्थायें वैक्रियमिश्र हुवे। तहेवजावनोपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो जाव परिणए। तिमज यावत् नही पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए। अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिकदेव पंचेंद्रिय वैक्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। जइआहारगसरीर कायप्पओगपरिणए। जो आहारकशरीर कायप्रयोगपरि

गपरिणए ? गोयमा ! मोसुहुम कायपरिणए बायर जाव परिणए इत्यादीति ॥ एवजहाओगाहणसठाणेत्ति ॥ तत्रचेय मिदं सूत्र–गोयमा ! नीमम

अपज्जत्तासखठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपाचेंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए। जइ आहारगसरीर कायप्पओगपरिणए किमणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए अमणुस्साहारगजावपरिणए एवजहा ओगाहण सठाणे जावइड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तासखेज्जवासाउयजावपरिणए नोअणड्ढिपत्त जाव परिणए जइआहारगमीसासरीरकायप्पओगपरि० किमणुस्सआहारगमीसासरीरजायपरि० एवजहा आहारगतहेवमी

कायप्रयोगपरिणतं किं मनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत अमनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एवं यथा अवगाहनासस्थाने याव ऋ द्धिप्राप्तप्रमत्तसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसख्येयवर्षायुष (प्रभृति) यावत्परिणत । नोर्ऋद्धिप्राप्तप्रमत्तसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसख्येयवर्षायुष (प्रभृति) यावत्प रिणत । यद्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत किं मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एवं यथा हारक तथैव मिश्रकमपि निरवशेषं

त । किमणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए । ता मं मनुष्य आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत । अमनुष्याहारग जाव परिणए । मनुष्यको अ ऊरा ममनुष्य ते आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत । एवजहाओगाहणसठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउय जावपरिण ए। इम जिम अवगाहनाने संस्थानपदे तिहां सूत्र ,गोयमा ! अमणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए, इत्यादिक यावत् ऋद्धि प्राप्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त सख्यात वर्षायु यावत् आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत पणि । अणइड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउय जाव परिण ए । नथी ऋद्धि प्राप्त जिका प्रमत्त सयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायुष यावत् आहारकशरीर प्रयोगपरिणत । जइआहारगमीसासरीरकायप्प ओगपरिणए किमणुस्साहारगमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । जो आहारक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे । तो स्युं मनुष्य आहारक मिश्र शरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे । एवजहाआहारगतहेवमोसंपिनिरवसेसं भाणियव्वं । इम जिम आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत सबंध कह्या तिम

मुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए मणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए इत्यादि ॥ एवमपज्जत्तगाहारगसंठाणेसुमिस्सगजोत्ति ॥ कषाय भेदा—बेइंदि

सगावि निरवसेस नाणियब्बं । जइ कम्मासरीरकायप्पओगप० किं एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगप० जाव पंचि दियकम्मासरीरजावपरिणए ? गो० ! एगिंदियकम्मासरीर जाव परिणए एवं जहा ओगाहणसंठाणेकम्मगस्स भेदो तहेव इहावि जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयजावपरिणएवा । जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए वयमीसापरिण

तिक (प्रभृति) यावत्परिणतवा ॥ ० ॥ यदि मिश्रपरिणत किं मनोमिश्रपरिणत वचोमिश्रपरिणत कायमिश्रपरिणत ? गौतम ! मनोमिश्रप गौतम ! एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणतं एवं यथा अवगाहनासंस्थाने कार्मणस्य भेद उक्तस्तथेहापि यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपा भणितव्यं । यदि कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत यावत् पञ्चेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणतं ?

द्रव्य आहारक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत यदि समस्त कहवो । कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए । जो कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे । किं एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए । तो स्यूं एकेन्द्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत इम बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री । जाव पंचिंदियकम्मासरी र कायपरिणए । यावत् पंचेंद्री कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत इति प्रश्न उत्तर । गोयमा एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए । हे गौतम ! एकेन्द्रिय का र्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत । एवं जहा ओगाहणसंठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इहावि । इम जिम अवगाहना संस्थाननेविषे कार्मणना भेद कह्या तिमज इहां पणि कहवा ते इम । बेइंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए वा । एवं तेइंद्री चउरिंद्री इत्यादि । जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव पंचिंदियक म्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा । यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव यावत् पंचेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत । अपज्ज त्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणएवा । अपर्याप्ता सर्व सिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पंचेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत । ज

कायमीसापरिणए ? गोयमा ! मणमीसापरिणएवा वयमीसापरिणएवा कायमीसापरिणएवा । जइ मणमीसापरिणएवा किसच्चमणमीसापरिणएवा मोसमणमीसापरिणएवा जहा पओगपरिणए तहा मीसापरिणएवि भाणियव्व निरवसेसं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरमीसापरिणएवा अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणएवा । जइ वीससापरिणए किंवण्णपरिणए

रिणतंवा वचोमिश्रपरिणतंवा कायमिश्रपरिणतंवा । यदि मनोमिश्रपरिणतं किं सत्यमनोमिश्रपरिणतं मृषामनोमिश्रपरिणतं ? यथा प्रयोगपरिणतं तथा मिश्रपरिणतमपि भणितव्यं निरवशेषं यावत् पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावद्देवपञ्चेन्द्रियकार्मणशरीरमिश्रपरिणतं अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावत्कार्मणमिश्रपरिणतं । यदि विस्रसापरिणतं किं वर्णपरिणतं गन्धपरिणतं र

समोसापरिणए । भा मिश्रशरीर परिणत । ष्ठिंमणमीसापरिणए । ता एवं मनोमिश्र परिणत । वयमीसापरिणए कायमीसा प । वचनमिश्र परिणत कायमिश्र परिणत इतिप्रश्न उत्तर । मायमा मणमीसा परिणएवा वयमीसा परिणएवा कायमीसा परिणएवा । हेगौतम । मनोमिश्रपरिणत वचना वच नमिश्र परिणत कायमिश्र परिणत । जइमणमीसापरिणएवा । जो मनोमिश्र परिणत । किंसच्चमणमीसापरिणएवा । ता एवं सत्य मनोमिश्र परिणत पवरा । मोसमणमीसापरिणएवा । मिथ्या मनोमिश्र परिणत इत्यादि । जहा पओगपरिणए तहामीसापरिणएविभाणियव्व । जिम प्रयोगपरिणत नो अधिकारकह्या तिम मिश्रपरिणतनो पणि अधिकार कहवो । निरवसेस । समस्त कहवो । जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय । यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक । जाव देव पंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणएवा । यावत् देव पंचेंद्रिय कार्मणशरीर अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध मिश्रपरिणत । पज्जत्ता जावकम्मामीसापरिणएवा । अपर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् कार्मणशरीर मिश्रपरिणत । जइवीससापरिणए । जो विस्रसा प रिणत । किंवण्ण प गंध प रस प० फास प० संठाण परिणए । ता एवं वर्णपरिणतहुवे गन्ध परिणतहुवे रस परिणत स्पर्शपरिणत संस्थानपरिणत र

गंधपरिणए रसपरिणए फासपरिणए संठाणपरिणए ? गोयमा ! वण्णपरिणएवा जाव संठाणपरिणएवा । जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए नीलवण्ण जाव सुक्किल्लवण्णपरिणए ? गोयमा ! कालवण्णपरिणएवा जाव सुक्किल्लवण्णपरिणएवा । जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए दुब्भिगंधपरिणए ? गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणएवा, दुब्भिगंधपरिणएवा । जइ रसपरिणए किंतित्तरसपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! तित्तरसपरिणए जाव

वर्णपरिणत गन्धपरिणत रसपरिणत स्पर्शपरिणत संस्थानपरिणत ? गौतम ! वर्णपरिणत यावत् संस्थानपरिणत । यदि वर्णपरिणत किं कालवर्णपरिणत यावत् शुक्लवर्णपरिणत ? गौतम ! कालवर्णपरिणतवा यावच्छुक्लवर्णपरिणत । यदि गंधपरिणत किंसुरभिगंधपरिणत दुरभिगंधपरिणत ? गौतम ! सुरभिगंधपरिणतवा दुरभिगंधपरिणतवा । यदि रसपरिणत किं तिक्तरसपरिणत (इत्यादि) पृच्छा ? गौतम ! तिक्तरसपरिणतवा यावन्म धुररसपरिणतवा । यदि स्पर्शपरिणत किं कर्कशस्पर्शपरिणत यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत ? गौतम ! कर्कशस्पर्शपरिणतवा यावद्रूक्षस्पर्शपरिणतवा ।

तिप्रश्न उत्तर । गोयमा । वर्णपरिणएवा । हेगौतम ! वर्णपरिणतहवे । जावसंठाणपरिणए । यावत् संस्थानपरिणत । जइवण्ण प किंकालवण्ण प नीलवण्ण प्रत्य सुक्किलवण्ण परिणएवा । जो वर्ण परिणत हवे कालवर्ण परिणत नीलवर्ण परिणत यावत् शुक्लवर्ण परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । कालवण्णपरिणएवा । हेगौतम । कालवर्ण परिणत । जावसुक्किल्लवण्णपरिणएवा । यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । जइगंधपरिणए । जो गन्ध परिणतहुवे । किंसुब्भिगंध परिणए । तो स्यूं सुरभिगंध परिणत हुवे । दुब्भिगंधपरिणएवा । अथवा दुरभिगंध परिणतहवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुब्भिगंधपरिणएवा । हेगौतम । सुरभिगंध परिणत । दुब्भिगंध परिणएवा । दुरभिगंध परिणत हुवे । जइरस परिणए । जो रस परिणतहुवे । किं तित्तरसपरिणए पुच्छा । तो स्यूं तिक्तरस परिणत इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा तित्तरसपरिणएवा । हेगौतम । तिक्तरसपरिणत । जावमहुररसपरिणएवा । यावत् मधुररस परिणत । जइफासपरिणए । जो स्पर्श परिणत । किंकक्खडफासपरिणए । तो स्यूं कर्कशस्पर्श परिणत । जावलुक्खफासपरिणए । यावत् रूक्षस्पर्श परिणत

पञ्चमाद्याशरीरकायप्रयुपपरिणयवा मय तेइन्दियचउरिंदियइत्यादिरिति अथ पृथ्वीद्वय चिन्तयन्नाह ॥ दोभन्तइत्यादि ॥ तत्र प्रयोगपरिणतादिपव
पपे गमास्ते यथा विस्रसया द्विकयागपि प्रथमव त्येव पद् एव मनःप्रयोगादिष्वपि सत्यमनःप्रयोगपरिणतादीनितु चत्वारि पदानि तत्र कल्ये

मउररसपरिणएवा । जइफासपरिणए किंकक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ? गोयमा ! कक्खड
फासपरिणएवा जाव लुक्खफासपरिणएवा । जइ संठाणपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिण
ए जाव आययसंठाणपरिणएवा । दो भंते ! दव्वा किंपओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया ? गो
यमा ! पओगपरिणयावा मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा, अहवा एगेपओगपरिणए एगेमीसापरिणए

यदि सस्थानपरिणत (इत्यादि) पृच्छा ? गौतम । परिमण्डलसस्थानपरिणतवा याव दायतसस्थानपरिणतवा । हेभदत । द्रव्ये कि प्रयोगपरि
णत मिश्रपरिणते विस्रसापरिणते ? गौतम । प्रयोगपरिणतवा मिश्रपरिणतेवा विस्रसापरिणतवा अथवा एक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरि

। तिमप्रश्न उत्तर । गोयमा कक्खडफासपरिणएवा । हेगौतम । कर्कश स्पर्श परिणत । जावलुक्खफास परिणएवा । यावत् रूक्षस्पर्श परिणत । जइसंठाण
परिणएपुच्छा । संस्थान प रणतना प्रश्ननोभी उत्तर । गोयमा परिमंडलसंठाणपरिणएवा जाव आयतसंठाण । हे गौतम । परिमंडल संस्थान परि
णत यावत् आयतसंस्थान परिणत एक द्रव्य आश्री अधिकारकह्या हामते इत्यादि द्रव्यो प्रयोगपरिणतादिपद तीनमेविपे एक पदे तीन विकल्प छ
वे द्विकसंयोगमेविपे पणि तीन वीज विकल्पथाय, इम मनप्रयोगादि पद तीनमेविषे पणि छ भगाथवे, सत्यमन प्रयोगपरिणतादिक चारिपद तेहमे
एकत्व विकल्प द्विकसंयोगमेविपे ताहे इम भणवाइ छ, हिवे दाय द्रव्य चितवेछे । दोभंतेदव्वाकिंपओगपरिणया । दोय हे भगवन् द्रव्य स्युं प्रयोगपरिणत,
मीसापरिणया वीससापरिणया । मिश्र परिणत विस्रसा परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पओगपरिणयावा । हेगौतम प्रयोगपरिणत १ । मीसाप
रिणयावा । मिश्रपरिणत २ । वीससापरिणयावा । अथवा विस्रसा परिणत ३ । अहवाएगेपओगपरिणए । अथवा एक प्रयोगपरिणत । एगेमीसापरिण

चत्वार' द्विकयोगेषु षट् एव सर्वेपि दश भारम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणतादीनिव षट्पदानि तथैकत्वे षट् द्विकयोगेतु पञ्चदश सर्वेप्येकविंशतिः

अहवा एगेपओगपरिणए एगेवीससापरिणए अहवा एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए । जइ पओगपरिणया किंमणप्पओगपरिणया वयप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणया ? गोयमा ! मणप्पओगपरिणयावा वयप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणयावा । अहवा एगेमणप्पओगपरिणए एगेवयप्पओगपरिणए, अहवा एगेमणप्पओगपरिणए एगेकायप्पओगपरिणए, अहवा एगेवयप्पओगपरिणए एगेकायप्पओगपरिणए । जइ मणप्पओग

णत अथवैकं प्रयोगपरिणत मेकं विस्रसापरिणत अथवैकं मिश्रपरिणत मेकं विस्रसापरिणत । यदि प्रयोगपरिणते किं मनःप्रयोगपरिणते वचःप्रयोगपरिणते कायप्रयोगपरिणते ? गौतम ! मन प्रयोगपरिणतेवा वचःप्रयोगपरिणतेवा कायप्रयोगपरिणतेवा । अथवैक मनःप्रयोगपरिणत मेकं वचःप्रयोगपरिणत अथवैक मनःप्रयोगपरिणत मेकं कायप्रयोगपरिणत अथवैक वचःप्रयोगपरिणत मेकं कायप्रयोगपरिणत । यदि म

ए । मिश्रपरिणत ४ । अहवेगेपओगपरिणए । अथवा एक प्रयोगपरिणत । एगेवीससापरिणए । एक विस्रसापरिणत ५ । अहवेगेमीसापरिणए । अथवा एक मिश्रपरिणत । एगेवीससा परिणए । एक विस्रसा परिणत ६ । जइ पओगपरिणया । जो प्रयोगपरिणत । किंमणप्पओगपरिणया वइप्पओगपरिण वा । ए० मनप्रयोगपरिणत वचनप्रयोगपरिणत । कायप्पओगपरिणया । कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणप्पओगपरिणयावा । के मन मनयोग परिणत १ । वइप्पओगपरिणयावा । वचन प्रयोगपरिणत २ । कायप्पओगपरिणयावा । कायप्रयोगपरिणत ३ । अहवेगेमणप्पओगपरिण ए । अथवा एक मनप्रयोगपरिणत । एगेवइप्पओगपरिणए ४ । एकवचन प्रयोगपरिणत । अहवेगेमणप्पओगपरिणए । अथवा एक मनप्रयोग परिणत । एगेकायप्पओगपरिणए ५ । एक कायप्रयोग परिणत । अहवेगेवइप्पओगपरिणए । अथवा एकवचन प्रयोग परिणत । एगेकायप्पओगपरिणए ६ । एक कायप्रयोग परिणत । जइ मणप्पओगपरिणया । जो मनप्रयोगपरिणत । किंसच्चमणप्पओगपरिणया । तो स्यू सत्यमनप्रयोगपरिणत । असच्चमणप्प

सूत्रेण सत्यमनोयावन्नसत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतमित्यादि भेद द्विकयोगे प्रथमस्य जम्बूको दर्शित अपरां सदन्यपदसमया यातिदेशेन पुन दशमतोक्त एवद
प्रवगमयमित्यादि, मृष मेतेन गमका स्वसत्यमन प्रयोगादिपदप्रदर्शितेन द्विकसंयोगेन मेतव्यं समस्त सूत्रद्वयसूत्रं द्विकसंयोगस्य वैकल्पविकल्पा

परिणया किं सच्चमणप्पओगपरिणया किं असच्चमणप्पओगपरिणया किं सच्चमोसमणप्पओगपरिणया किं असच्चामोसमणप्पओगपरिणया ? गोयमा ! सच्चमणप्पओगपरिणयावा जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिणयावा अहवा एगेसच्चमणप्पओगपरिणए एगेमोसमणप्पओगपरिणए , अहवा एगेसच्चमणप्पओगपरिणए एगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए , अहवेगेसच्चमणप्पओगपरिणए एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवेगेमो

न प्रयोगपरिणते किं सत्यमनःप्रयोगपरिणतं असत्यमनःप्रयोगपरिणतं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतं असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतं ? गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणतं वा यावदसत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतं । अथवैकं सत्यमनःप्रयोगपरिणतं मेकं मृषामनःप्रयोगपरिणतं अथवैकं सत्यमनःप्रयोगपरिणतं मेकं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतं अथवैकं सत्यमनःप्रयोगपरिणतं मेकं असत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतं अथवैकं मृषामनःप्रयोगप

योगपरिणया । उत्तर सत्य मनप्रयोगपरिणत । असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया । सत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत । असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया । असत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सच्चमणप्पयोगपरिणया । हे गौतम सत्यमनप्रयोगपरिणत । जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया । यावत् असत्यामृषा मनप्रयोग परिणत । अहवेगेसच्चमणप्पयोगपरिणए । अथवा एक सत्य मनप्रयोग परिणत । एगेमोसमणप्पयोगपरिणए । एक मृषामन प्रयोगपरिणत । अहवेगेसच्चमणप्पयोगपरिणए । अथवा एक सत्यमन प्रयोगपरिणत । एगसच्चामोसमणप्पयोगपरिणए । एक सत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत । अहवेगेसच्चमणप्पयोगपरिणए । अथवा एक सत्यमन प्रयोगपरिणत । एगेअसच्चामोसमणप्पयोगपरिणए । एक असत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत । अहवेगेमोसमणप्पयोगपरिणए । अथवा एक मृषामन प्रयोगपरिणत । एगेसच्चामोसमणप्पयोगपरिणए । एक सत्यामृषामन प्रयोगपरि

मिश्रानपूर्वकत्ता हेतुत्वविकल्पं चेतिवृत्य तत्र सत्यारंभासत्यमन प्रयोगादिपदसमूहे याषन्तो द्विकसंयोगा उत्तिष्ठन्त सर्वे ते तत्र प्रक्षितव्या सत्र

समणप्पओगपरिणए एगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए , अहवेगेमोसमणप्पओगपरिणए एगेअसच्चामोसमण समणप्पओगपरिणए, अहवेगेसच्चमोसमणप्पओगपरिणए एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए ॥ १० ॥ जइ सच्चम प्पओगपरिणए, किं आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणया ? गोयमा ! आ रंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा, अहवेगेआरंभसच्चमणप्पओगपरिणए

रिणत मृषा सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत अथवैकः मृषामनःप्रयोगपरिणत अन्यमसत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत अथवैक सत्यमृषामन प्रयोगपरि णत अन्यमसत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत । यदि सत्यमन प्रयोगपरिणत किमारंभसत्यमन प्रयोगपरिणत यावत् असमारंभसत्यमन प्रयोगपरिणत गौतम ! आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणतेवा यावत् असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत अथवैकआरंभसत्यमन प्रयोगपरिणत अन्य अनारंभसत्यमनः

णत । अहवेगेसामसमणप्पओगपरिणए । अथवा एक मृषामन प्रयोगपरिणत । एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए । १ एक असत्यामृषामन प्रयोगपरिणत। अहवेगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए । अथवा एक सत्यामृषामन प्रयोगपरिणत । एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ६ । एक असत्यामृषामन प्रयोगप रिणत । आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया । क्या सत्यमन प्रयोगपरिणत । किंआरंभसच्चमणप्पओगपरिणया जाव असमारंभसच्चमण पओगपरिणया । १ आरंभ सत्यमनप्रयोगपरिणत १ अनारंभ सत्यमन प्रयोगपरिणत २ संरंभसत्यमनप्रयोग परिणत ३ असंरंभसत्यमन प्रयोगपरिणत ४ समारंभ सत्यमन प्रयो गपरिणत ५ असमारंभ सत्यमन प्रयोगपरिणत ६ । एवा आरंभ सत्यमन प्रयोगपरिणतादिक छ पदों तेहनेविषे एकरो छ भगा द्विकसंयोगनेविषे प नरे इम सगमार उपयोगसजे । गोयमा आरंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा । हे गौतम आरंभ सत्यमनप्रयोगपरिणत । जाव असमारंभसच्चमणप्पओगप रिणयावा । यावत् असमारंभ सत्यमनप्रयोग परिणत । अहवेगेआरंभसच्चमणप्पओगपरिणए । अथवा एक आरंभ सत्यमनप्रयोग परिणत । एगेअणार

वारम्भमन्यमम प्रयोगादिषु प्रदर्शितास्य' धारम्भादिपदपद्कविशेषितषु पुनरित्यमेव त्रिषु मृषामन प्रयोगादिषु चतुर्षु सत्यमृषामनप्रयोगादिषु प्रत्येक मकारे पद्पमृविकल्पा द्विकसयोगतु पंचदशो स्येव प्रत्येकमेव सर्वेषु प्येकविंशति रौदारिकशरीरकायप्रयोगादिषुतु सप्तसुपदे येकत्वे सप्त द्विकयोग स्यैकविंशति रित्येव मष्टाविंशति रित्येव मकस्त्रियादिपृथिव्यादिपदप्रभृतिभिः पूर्वोक्तक्रमे औदारिकादिकायप्रयोगपरिणतद्रव्यद्वय प्र पञ्चमीय विपद्रूप पायदित्याह ॥ जायसव्वठसिद्धगत्ति ॥ एतदेव-अह सव्वठसिद्धमणुत्तरोववाइयकप्पातीयगवेमाणियदेवपंचिंदियकम्मासरीरकाय प्पओगपरिणया किं पज्जत्तासव्वठसिद्ध जायपरिणया अपज्जत्तासव्वठसिद्ध जावपरिणया ? गोयमा ! पज्जत्ता सव्वठसिद्ध जायपरिणयावा अपज्ज

एगेश्वागारनरजुमणप्पञ्जगपरिणया , एव एएणगमएणदुयसजोगोनेयव्वो सव्वेसजोगा जत्थ जत्तिया उठति त जाणियव्वा जाव सव्वठसिद्धगत्ति । जइ मीसापरिणया किमण मीसापरिणया ? एव मीसापरिणयात्ति ।

प्रयोगपरिणतया यय मेतम गमकेन द्विकसयोगेन भसथ्या सर्वे सयोगा यत्र यावन्त उत्पद्यन्ते तत्र ते भणितव्या याव स्त्वार्थसिद्धाइति । य दि मिश्रपरिणते कि मनोमिश्रपरिणते ? एव मिश्रपरिणते अपि । यदि विस्रसापरिणते किं वर्णपरिणते गन्धपरिणते ? एव विस्रसापरिण

भमयमनपयोगपरिणया एवंएय गमएयंदुवसआए पेयव्व सव्वेसजोगा । एव यथारभ सत्यमनप्रयोग परिणत० द्विकसयोगीना पवित्रोदोऽभामो रेणाथ्या गेयतो ते पञ्चपदसंभवतो भतिदेशेवरो वमो देशकते कार्य दम द्वे समवरो भारम्भसत्यमन प्रयोगादि पद देशाथ्या ते द्विकसयोगे आदया ममप्न दूष्यवषूय द्विकसयोगेऽविकल्पाभिधानपूर्वकपातदवो एवमविकल्पे वक्तव्या तिर्य्यो विर्यो भारम्भसत्यमन प्रयोगादिपदसमूहलेविषे । अतकार सार्थसिद्धाविमानदेवमागतभ्यात । जेतम्ना द्विकसयोगे भांगा उपयेते ते सगवा तिर्य्यो वक्तव्या यावत् सर्वार्थसिद्धगतदेववैमानिक आपया । जइ मीसापरिणया। का मित्र परिणत । किमणमीसापरिणया एवमीसापरिणयावि जइवीमसापरिणया किंवणपरिणया । तो पर्व मनामित्र परिणत इम मित्र परिणत पवि वक्तव्या यो विस्रसा परिणत तो पूर्व वर्णपरिणत । वंधपरिणयाएवमीसापरिणयावि जावमइवाएमेसमवउरससंठाणपरिणए एमे

ता मधुरगन्धु वायपरिणयाता अह यगे पज्जता सत्तठसिद्धायपरिणए एगे गयणसासमुठसिद्धायपरिणएति ॥ एयवीससापरिणयायिति ॥ ययमिति प्रयोगपरिणतद्रव्यद्वय स्यत्यवविकल्पे द्विकसयोगेव विस्रसापरिणतेऽपि द्रव्य वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानपु पञ्चादिप्रदपु वाच्य किंपदुर यावदित्याह ॥ आयमवर्णगइत्यादि ॥ अथ पञ्चभदसस्थानस्य दशामा द्विकसयोगाना दशमवति अथ द्रव्यत्रय चिन्तयन्नाह ॥ तिन्नीत्यादि ॥ इह प्रयोगपरिणतादिपदत्रये एकस्य प्रयोगविकल्पा द्विकसयोगतु पद् अथ माश्रस्यैकत्वे द्वयो क्रमश द्वित्वे द्वौ तथा प्रथमस्य द्वित्वे प्रायया क्रमशे कत्य भवेद्वौ तथा द्वितीयस्यै कत्वे तृतीयस्य द्वित्वे अन्य तथा द्वितीयस्य द्वित्व तृतीयस्य चैकत्वे ऽन्य इत्येवपद् त्रिकयोगे त्वेक एवत्येवसर्व

जइ वीससापरिणया किं वण्णपरिणया गंधपरिणया १ एयवीससापरिणयावि जाव अहवा एगे चउरंस ठाणपरिणए एगे आययसंठाणपरिणएवा। तिण्णि भंते ! दव्वा किं पओगपरिणया मीसापरिणया वीससाप रिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया, अहवा एगे पओगपरिणए दोमीसाप रिणया १ अहवेगे पओगपरिणए दो वीससापरिणया २ अहवा दोपओगपरिणया एगे मीसापरिणए ३

तथापि यावं इत्येक समचतुरस्रसंस्थानपरिणत सन्न आयतसंस्थानपरिणतया । त्रीणि भदन्त ! द्रव्याणि किं प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणता नि विस्रसापरिणतानि ? गौतम ! प्रयोगपरिणतानिवा मिश्रपरिणतानिवा विस्रसापरिणतानिवा अथवैक प्रयोगपरिणत द्वेमिश्रपरिणते

पञ्चसंस्थानपरिणएवा । अथ परिणत इम प्रयोगपरिणतद्रव्यद्वयमोपरे प्रत्येकविकल्पे तथाद्विकसयोगेकरो विस्रसापरिणतपवि द्रव्यमविपे वर्णगन्धरस स्पर्शसंस्थानपदादिभेदेनैविपे वक्तव्या वेत्याहगे इम च यावत् पदवमेत्यादि । एव पञ्चसंस्थानमा द्विकसयोगो दशभेदत्वे तेषमाद्य दशमो भागोक्ते, च वेतोमद्रव्यचिंतयताऽऽदवे । तिण्णिदव्वाणिपयोगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया गा पओगपरिणयावा । तीन भदन्त द्रव्याणि प्रयोग प रिणतानि भवन्ति मिश्र परिणतानि अथवा विस्रसा परिणतानि इतिमध्य भेगावम प्रयोग परिणतानि १ । मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा । मिश्र प

दश मव मन प्रयोगाग्नियप्रयेपि प्रतएवाद ॥ एवमह्लामयोगोरत्यादि ॥ सत्यमन प्रयोगादीनितु चत्वारि पदानी स्यत मकत्वे चत्वारी द्विकसयो

अहवा दोपत्तंगपरिणया एगे वीससापरिणए ४ अहवा एगे मीसापरिणए दो वीससापरिणया ५ अहवा दो मीसापरिणया एगेवीससापरिए ६ अहवा एगे पत्तंगपरिणए एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए। जइ पत्तंगपरिणया कि मणप्पत्तंगपरिणया वयप्पत्तंगपरिणया कायप्पत्तंगपरिणया ? गोयमा ! मणप्पत्तंग परिणयावि एव एक्कासजोगो दुयसजोगो तियसजोगोय भाणियव्वो । जइ मणप्पत्तंगपरिणया कि सच्चम

अथवैक प्रयोगपरिणतं द्विविस्रसापरिणते अथवा द्वेप्रयोगपरिणते एकमिश्रप्रयोगपरिणत अथवा द्वेप्रयोगपरिणते एक विस्रसाप्रयोगपरिणतं अथवैक मिश्रपरिणत द्विविस्रसापरिणत अथवा द्वेमिश्रपरिणते एक विस्रसापरिणतं अथवैकं प्रयोगपरिणत मेक मिश्रपरिणत मेक विस्रसा परिणतं । यदि प्रयोगपरिणतानि किं मन प्रयोगपरिणतानि वचःप्रयोगपरिणतानि कायप्रयोगपरिणतानि ? गौतम ! मन प्रयोगपरिणतानि वा एव मेकसयोगो द्विकसंयोग त्रिकसयोगो भवितव्य । यदि मन प्रयोगपरिणतानि किं सत्यमन प्रयोगपरिणतानि ४ ? गौतम ! सत्यमन

रिणतके विस्रसा परिणतके १। अथवेगेपयोगपरिणए दोमीसापरिणया अथवेगेपयोगपरिणए दोवीससापरिणया २ । अथवा एक प्रयोग परिणत द्वे द्वावमिश्र परिणत अथवा एक प्रयोग परिणत द्वौय विस्रसा परिणत । अथवादोपयोगपरिणया एगेमीसापरिणए ३ अथवादोपयोगपरिणया अथवा द्वायप्रयोग परिणत एक मिश्र परिणत अथवा द्वीयप्रयोग परिणत । एगेवीससापरिणए ४ अथवाएगेमीसापरिणए दोवीससापरिणया ५ अथ वादोमीसापरिणया । एक विस्रसा परिणत अथवा एक मिश्र परिणत द्वावविस्रसा परिणत अथवा द्वावमिश्र परिणत । एगेवीससापरिणया ६ अ थवाएगेपयोगपरिणए एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए ७। एक विस्रसा परिणत अथवा एक प्रयोग परिणत एक मिश्र परिणत एक विस्रसा प रिणत । जइपयोगपरिणया किमणपयोगपरिणया । यो प्रयोगपरिणत पुद्गल मनप्रयोगपरिणत । वइप्पयोगपरिणया कायप्पयोगपरिणया

नेन द्वादश कप मात्रमे कस्पन शेषावां प्रयाका क्रमेणा नेकत्वेन प्रयो लब्धाः पुन रन्धे प्रप माद्यस्या मेकस्येन शेषाया क्रमेणैव कत्येन तथा द्वि तीयस्पै कत्येन शेषयाः क्रमया मेकस्येन द्वौ पुनर्द्वितीयस्या नकत्यन शेषयोः क्रमेणैव कत्वेन द्वावेव तृतीयचतुर्थयो रकत्यामेकत्वान्या मेकः पुन रिपयय मैव इत्यवं द्वादश, त्रिकयोगेतु चत्वार इत्यवं मर्वेपि विंशतिरिति सूत्रस्तु क्वचित् दुपदर्शय शेषानतिदिशत आह ॥ एवदुयासयोगोइत्या दि ॥ इत्यवितदैयमि ॥ अत्रापि द्रव्यप्रयाधिकारे तथैव वाच्य सूत्र यथा द्रव्यद्व्याधिकार तत्र समय ममोयाक्कायनेदसो य प्रयोगपरिणामो मिम

णप्पनुगपरिणया ? गो० ! सच्चमणप्पनुगपरिणया जाव असच्चामोसमणप्पनुगपरिणयावा अहवा एगेसच्चम णप्पनुगपरिणए दो मोसमणप्पनुगपरिणया एवं दुयसयोगो तियसजोगोय जाणियव्वो एत्यवितहेव जाव अहवा एगे तसंसठाणपरिणए एगेचउरससठाणपरिणए एगे आययसंठाणपरिणएवा । चत्तारि भंते ! दव्वावि प

प्रयोगपरिणतामि याव दमत्यमृषामनःप्रयोगपरिणतानि अथवैक सत्यमनःप्रयोगपरिणतं द्वे मृषामनःप्रयोगपरिणते एवं द्विकसयोग त्रिकसं

योगपयाम परिणत कायप्रयाम परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा मणप्पयोगपरिणयावा एवएवासवाणो । हेगोतम । ए तोम प्रयामपरिणत द्वये इत्या दि इम मनयनामादिपद तीमनेविपे पणि इयमांगा अथवा एतमामाटेश बोइवे—एवएकामजामादुयासओगो तियामओगो भाणियव्वा। इम तीनभांगा एक्कंगाम कभगा द्विकमयामे एकभंगो त्रिकसंयामे इम सवमिलि इयमांगा हुवे ते वाचवा। अरमयप्पयागपरिणया विससमअप्पयोगपरिणया ४। श्री मन प्रयामपरिणत भाम्हं हे भगवन्! मयमम प्रयोगपरिणत इत्यादि ४ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सचमणप्पयोगपरिणयावा जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरि णयावा। हेगोतम! मत्यमन प्रयागादि चारपदके एतमामाटे एकमयोगे चारिभांगाहुवे तथा द्विकसयोगे चारेभांगाहुवे तेविम पहिमामे एकवचने। कर्ता प्रप तीमने पनुक्रमे पनेकपचेकरी भांगा तीनहुवे ३ वमी पहिमामें पनेकपचेकरी मेय तीनमेविपे एकेक पनेकरी तीनभांगाहुवे ६ तथा बीजाप दने एकने त्रेवने पनुक्रमे पनेकपचेकरी शायभांगा हुवे एवं ८ वसी बीजापदने पनेकपचेकरी शेपपदने पनुक्रमे एकपचेकरी दायभांगा। मकवाप्रम

तापरिणामो वर्णादिभेदतय विस्रसापरिणाम उक्त सहरापि वाच्य इतिभावः किंमर्त्त सस्मूत्र माष्यमित्याह ॥ आवेत्यादि ॥ इहच परिमण्ड लादीनि पञ्चपदानि तषु चैकत्वे पञ्चविकल्पाः द्विकसंयोगेत विंशति तत्र माद्यस्यै कत्वे अपायां च क्रमशा नेकत्वे तथा माद्यस्या नेकत्वे भो पार्वा तुक्रमेणै वैकत्वे ऽष्टौ एव द्वितीयस्यै कत्वे धनकत्वेन ह्मपययस्य चानकत्वे एकत्वेन षट् तथा तृतीयस्यै कत्वे नेकत्वेन द्वयो चानेकत्वे एक त्वेन चत्वारः तथा चतुर्थस्यै कत्वे ऽनेकत्वेन पञ्चमस्यचा नेकत्वे एकत्वेन द्वा वित्यव सर्वेपि विंशति त्रिकयोगतु दश तत्र चाद्यया एगे तससे ठाणेत्यादिना त्रिकयोगाना दशमो दर्शितइति अथ द्रव्यचतुष्क मार्मित्याह ॥ चत्तारिभतइत्यादि ॥ इहच प्रयोगपरिणतादिभ्य एकस्य त्रयो द्वि

ङगपरिणया? गोयमा! पञगपरिणयावा मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा अहवा एगे पओगपरिणए ति

योगय भावितव्यः । अत्रापि तथैव यावदेक त्र्यस्रसंस्थानपरिणत एक चतुरस्रसंस्थानपरिणत एक आयतसंस्थानपरिणत । चत्वारि भदन्त ! द्रव्याणि किं प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विस्रसापरिणतानि ? गौतम ! प्रयोगपरिणतानिवा मिश्रपरिणतानिवा विस्रसापरिणतानि

समचरसठाणपरिणए द्रामासमचउरंसपयोगपरिणया एवंश्यासआमोतिवासआयाम आणिअव्या । एव तथा चौआपदने एकपदे चौआपदन अनेकपदे क री एव ११ अनो चौआपदनं अनेकपदे चौआपदने एकपदेकरो एव एव १२ एम मारेभांगा त्रिकसयागे आंणवा त्रिकसयागे चार एम समचार चौस भांगाहने ते सूत्रनेविषे कोएक देखाडाने ग्रंथमते भतिदेशयो कहे—एव ग्यामवागा इत्यादि । अथवि तेउआ एगे समठाणपरिणए । हवापथि द्रव्य गौतमा अधिकारनेविषे तिमजेम कहवा सूत्र जिम द्रव्यअधिकारनेविषे कह्या तिम मन वचन कायप्रनेदवी के प्रयोगपरिणाम १ मिश्रपरिणाम २ वर्णादिभेदकरी विस्रसापरिणामकह्या ते इहां पणिकहवा इतिभाव यावत् एक त्र्यसस्थानपरिणत । एमेचउरंससठाणपरिणए । एक चउरंससंस्थान परिणत । एगे आयतसठाणपरिणए । एक आयतसंस्थानपरिणत । चत्तारिभंतेदव्वा किंपओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया । चार हेभगव न ! द्रव्य प्रयोगपरिणतहुवे मिश्रपरिणतहुवे विस्रसापरिणतहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पओगपरिणयावा मीसापरिणयावा २ वीससापरिण

कयागतु नव कप मायस्ये कस्य द्वयोद क्रमेय त्रित्वे द्वौ तयो द्यस्य द्वित्वे द्वयोरपि क्रमयैव द्वित्वे त्र्यौ द्वौ तथा द्यस्य त्रित्वे द्वयो स क्रमेयै क त्वे म्यौ द्वौ तथा द्वितीयस्यै कत्वे ऽन्यस्य त्रित्व तथा द्वयोरपि द्वित्वे तथा द्वितीयस्य त्रित्वे ऽन्यस्य चैकत्वे प्रयोग्य प्रत्येप सर्वेपि नव प्रयपोगेतु

पियि मीसापरिणया श्रहवा एगे पत्तगपरिणए तिन्नि वीससापरिणया श्रहवा दोपत्तगपरिणया दोमीसा परिणया श्रहवा दो पत्तगपरिणया दोवीससापरिणया श्रहवा तिन्नि पत्तगपरिणया एगे मीसापरिणए श्रह वा तिन्नि पत्तगपरिणया एगे वीससापरिणए श्रहवा एगे मीसापरिणए तिन्नि वीससापरिणया श्रहवा दो

वा श्रथवा प्रयोगपरिणत त्रीणि मिश्रपरिणतानि श्रथवैक प्रयोगपरिणत त्रीणि विस्रसापरिणतानि श्रथवा द्वेप्रयोगपरिणते द्वे मिश्रपरिणते श्रथवा द्वे प्रयागपरिणते द्वे विस्रसापरिणत श्रथवा त्रीणिप्रयोगपरिणतानि एक मिश्रपरिणत श्रथवा त्रीणिप्रयोगपरिणतानि एक विस्रसा परिणत श्रथवैक मिश्रपरिणत त्रीणिविस्रसापरिणतानि श्रथवा द्वे मिश्रपरिणते द्वे विस्रसापरिणते श्रथवा त्रीणि मिश्रपरिणतानि एक वि

भाषा । केमोतम । द्रव्य प्रयोगपरिणतादि तोनमेंथी एकपणे तोनभांगा ते दखाडेछे—प्रयोगपरिणमाया, चारेइ प्रयोगपरिणतहुवे । श्रथवा चारेइ मिश्रपरिणतहुवे श्रथवा चारेइ विस्रसापरिणतहुवे द्विकसंयोगे नवभांगाकहे ते किम पहिलाने एकपणे त्रण दोयने भवतमे तोनपणे दाय भांगाहुवे २ तथा पहिलाने त्रिण येप बेने अनुक्रमे त्रिण बोला रायभांगाकहे ३ तथा पहिलाने तोनपणे त्रिण दायपदने अनुक्रमे एकपणे दाय भांगा एव ४ तथा बोजापदने एकपणे तोजापदने तोनपणे सातभांगा तथा बोजापदने द्विसे श्रोजापदने पणिहिसे पाउभांगो ८ तथा बीजा पदने तीनपणे बोजापदने एकपणे ए नवमांगा ९ ए सव नवभांगाहुवे ते देखाडेछे—प्रयोगपरिणतहुवे श्रथवा मिश्रपरिणतहुवे विस्रसापरिणत हुवे । श्रथवेगपयोगपरिणए तिन्निमोसापरिणया १ । श्रथवा एक प्रयागपरिणतहुवे तीन मिश्रपरिणतहुवे १ । श्रथवेगेपयोगपरिणए तिन्निवीससा परिणया २ । श्रथवा एक प्रयोगपरिणतहुवे तीन विस्रसापरिणतहुवे २ । श्रहवादोपयोगपरिणया दायमीसापरिणया ३ । श्रथवा दाय प्रयोगपरिणत

प्रथम व प्रथमोत्येवं सर्वेपि पम्मवर्षेति अर्थ पर्थम परिवया कि मवपर्येमेत्यादिना योकयेयं द्रव्यचतुष्प्रकरण मुपसहित तत्र पूर्वोक्तानुसारेण संख्या

मीसापरिणया दोवीससापरिणया अहवा तिन्नि मीसापरिणया एगे वीससापरिणए अहवा एगेपओगपरिणए एगमीसापरिणए दोवीससापरिणया अहवा एगे पओगपरिणए दोमीसापरिणया एगेवीससापरिणए अहवा

ससापरिवर्त अथवैक प्रयोगपरिवर्त एक मिश्रपरिवत द्वे विस्रसापरिवते अथवैकं प्रयोगपरिवत द्वे मिश्रपरिवते एक विस्रसापरिवत अ थया द्वेप्रयोगपरिवते एक मिश्रपरिवत एक विस्रसापरिवर्त । यदि प्रयोगपरिवतानि किमन प्रयोगपरिवतानि वचःप्रयोगपरिवतानि वा

हुए दाय मिश्रपरिवतहुवे १। अथवादोपपोमपरिवया दावीससापरिवया ४। अथवा दाय प्रयोगपरिवत दाय विस्रसापरिवतहुवे ४। अथवातिन्नि पयोगपरिवए एगेमीसापरिवया ५। अथवा तीन प्रयोगपरिवतहुवे एक मिश्रपरिवतहुवे ५। अथवातिन्निपयोगपरिवए एगेवीससापरिवया ६। अथवा तीनप्रयोगपरिवतहुवे एक विस्रसापरिवतहुवे ६। अथवेगेमीसापरिवया तिन्निवीससापरिवया ७। अथवा एक मिश्रपरिवतहुवे तीन विस्रसा परिवतहुवे ७। अथवादोमीसापरिवया दोवीससापरिवया ८। अथवा दोयमिश्रपरिवतहुवे दोय विस्रसापरिवतहुवे ८। अथवातिन्निमीसापरिवया एगे वीससापरिवया ९। अथवा तीनमिश्र परिवतहुवे एक विस्रसा परिवतहुवे ९। अथवाएगेपयोगपरिवए। तीनसंयोगे तीनशोल भांगाहुवे अथवा एक प्रयोगपरिवत हुवे। एगेमीसापरिवया दोवीससापरिवया १। एकमिश्र परिवतहुवे दोय विस्रसापरिवतहुवे १। अथवाएगेपयोगपरिवए दोमी सापरिवया। अथवा एक प्रयोगपरिवत दो मिश्रपरिवतहुवे। एगेवीससापरिवया २। एक विस्रसा परिवत हुवे २। अथवादोपयोगपरिवया। अथवा दोयप्रयोगपरिवतहुवे। एगेमीसापरिवए एगेवीससापरिवए ३। एकमिश्रपरिवतहुवे एक विस्रसापरिवतहुवे ३ एसर्वे १५ भांगाथया। जइप पयोगपरिवया किमणप्पयोगपरिवया वइप्पयोगपरिवया कायप्पयोगपरिवया। इत्यादिकेवारो उक्त जेमद्रव्य चारनो प्रकरण कह्यो, ते पूर्वोक्तानुसारे संख्यान सूत्रवत्त भागभणवा पेत समस्तकहवा जो प्रयोगपरिवत वो तो मनप्रयोगपरिवतहुवे अथवा वचनप्रयोगपरिवतहुवे अथवा कायप्रयोगपरि

ममूराम मुच्छितमूक्तापेत ममस्त मध्येय मिति अथ पञ्चादित्रव्यप्रकरणा न्यतिदेशतो दर्शयन्नाह ॥ एवंएएवमित्यादि ॥ एवंसा त्रिसापः–पञ्च न्नते। दव्वा किपओगपरिणया ? ३ गोयमा। पओगपरिणयावा १ अहवा एगे पओगपरिणए चत्तारि मीसापरिणया इत्यादि रिहन्च द्विकसंयोगे विकल्पा द्वादश कर्थ ? एक चत्वारिच १ द्वे त्रीणिच २ त्रीणि द्वेच ३ चत्वा एकश्चे त्यच चत्वारो विकल्पा द्रव्यपञ्चक माश्रित्यैकत्र द्विकसंयोग पदत्रयस्य त्रयो द्विकसंयोगा स्तच चतुर्भि गुणिता द्वादशाति, त्रिकयोगेतु षट् कथं ? त्रीण्ये क मेक च १ एक त्री ण्येकच २ एकमेक त्रीणिच ३ द्वे द्वे एकच ४ द्व एक द्वेच ५ एकं द्वे द्वेच स्यर्व

दोपओगपरिणया एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए । जइ पओगपरिणए किं मणप्पओगपरिणए एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस सखेज्जाअसंखेज्जाअणंता दव्वा भाणियव्वा दुयासंजोएणं तियासंजोएणं जाव

ममयोगपरिणतानि ? एव मेतेन क्रमेण पञ्च षट् याव द्दश संख्येया न्यसंख्या न्यनन्तानि द्रव्याणि भणितव्यानि द्विकसंयोगेन त्रिकसंयोगेन

चतुष्क। हिवे पचादि द्रव्य प्रतें अतिदेशवक्तो कहीये—एवंएएणंकमेणं पंच छ सात दससखज्ज।असंतायदव्वाभाणियव्वादुयासंजोएणं। एएणमित्यादि एमर्थ अनयमेंकरीने पांच छ सात यावत् दस संख्यात असंख्यात अनन्ताद्रव्य जाणवा, भाभावा इसकहना—पचभेदव्याभिपओगपरिणया। १ गोयमा पओगपरिणयावा १ अहवाएगेपओगपरिणए चत्तारिमीसापरिणया इत्यादि, इहां द्विकसंयोगे विकल्प बारेंछवे तेविम, एगपओगपरिणए च तारिमीसापरिणया १ दोपओगपरिणया तिन्निमीसापरिणया २ तिन्निपओगपरिणया दोमीसापरिणया ३ चत्तारिपओगपरिणया एगेमीसापरिणए ४ इन चार पदाभ पने बीससासंयोगे भांगाछवे एव ८ भांगा तथा चारभांगामीसा पने विस्रसासंयोगे एव १२ इम द्विकसंयोगे बारेभांगाजाण तथा तीन भवाने पनामाभाग ते किम तीन एकएक १ एक तीन एक २ एक एक तीन ३ दोय दोय एक ४ दोय एक दोय ५ एक दोय दोय ६ इम छ भांगाजाय जाव दससजोएणंति, इहां यावत् शब्दथकी चतुष्क पंचकादि संयोग कहवा। तिहां द्रव्यपचकमो पदयोगे सत्यमनप्रयोगादि चारपदभेदविपे बिक चतुष्क संयोगहुवे तिहां द्विकसंयोगे चउवीस ते किम, चारपदना छ द्विकसंयोगो तिहां एकेकविषे पूर्वोक्तअनुक्रमे चार विकल्प हुवे चारगुणा

पट ॥ जाव दससंजोयकति ॥ अत्र यावत्करणा चतुष्कादिसंयोगाः सूचिता तत्र चतुष्पदकापेक्षया तत्समनःप्रयोगादिषु चतुर्षु पदेषु द्विकत्रिकचतुष्क संयोगा भवन्ति तत्र द्विकसंयोगा चतुर्विंशति कथं? चतुर्णां पदानां षट् द्विकसंयोगा तत्र चैकैकस्मिन् पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो विकल्पा यस्मात् ष गुणित चतुर्विंशतिरिति त्रिकसंयोगानामपि चतुर्विंशति कथं? चतुर्णां पदानां त्रिकसंयोगा चत्वार एकैकस्मिन्न पूर्वोक्तक्रमेण षड्विकल्पा चतुर्णाम षड्गुणित चतुर्विंशति रिति चतुष्कसंयोगेतु चत्वारः कथं? आदौ द्वे त्रिपु चैकैकं १ तथा द्वितीयस्थाने द्वे शेषेपु चैकैक २ तथा तृतीयस्थाने द्वे

ठससजोएण धारससजोएण उयउजिऊण अत्यजद्दयासंजोगा तसद्दे जाणियव्वा एए पुण जहा नवमसए पवेसणए जणिहामि तहा उयजुंजिऊण जाणियव्वा, जाव च्यसंखेज्जा च्यणंता एव चेव नवर, एक पद

याव द्वादशसंयोगेनंशो अपुक्त मत्र यावन्त संयोगा उत्तिष्ठन्ते ते सर्वे जनितव्या एतेपुन यथा नवमशतके प्रवेशनके जाणिष्यामि तथोपयुज्य जणितव्यानि याव दशमत्या अनन्तानि। एवमेव नवर मेकं पद मभ्यधिक यावदसंख्यातानि परिमाणसंख्यातानि याव दनन्ता

बना छ चौक चउवास थाय त्रिकसंयोगे पणि चउवीस तेकिम चारपदने त्रिकसंयोग चार एककनविषे पूर्वोक्त अनुक्रमकरी छ विकल्प चारने छगुणा चाषी चउवीसथाय चतुष्कसंयोगनविषे चार ते किम पहिलाठाय पदे तीननविषे एकएक १ तथाबीजेस्थानकेबेबे २ शेषनेविषे एक एक तथा त्रीजस्था नक बे शेषनेविषे एकएक १ तथा चौथेस्थानके बेबेपनेविषे एकएक ४ इमचार हवे तथा पर्वोद्वियादि पचपदनेविषे भिन्न भिन्न चतुष्क पद कमयावतवे विशे द्विकसंयोगे चालीसमाया हवे ते किम पांचपदना दश द्विकसंयोगीछुवे एकेक द्विकसंयोगनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमे चारविकल्पहवे, तिवारे दशने चार संघाते गुण्यां चालीसहोय तथा त्रिकसंयोगे साठभांगाहवे ते किम पांचपदना दश त्रिकसंयोगहवे एकेक त्रिकसंयोगनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमेकरी छ विकल्प तिवारे दशनेछगुणा चौथा साठहवे चारसंयोगे वीसभांगा हुवे तेकिम पांचपदने चारसंयोगे पांचविकल्प एकेकनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमेकरी चा रभांगाहुवे तिवारे पांचने चारसंघाते गुणतांथका वीसथाय पचसंयोगे एकबीसभांगाहुवे इम षट्कादिसंयोग भणितव्या अनन्ताविशेष षट्संयोगनेविषे

क्षेपेषु पंचैव ५ तथा चतुर्थे ३ क्षेपेषु चैकैक मित्येव चत्वार इति एकेन्द्रियादिषु पञ्चसु पदेषु द्विकत्रिकचतुष्कपञ्चकसंयोगा भवन्ति तत्र द्विक संयोगा चत्वारिंशत् कथं? पञ्चानां पदानां दशद्विकसंयोगा एकैकस्मिंश्च द्विकसंयोगे पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो विकल्पा दशानां च चतुर्भि र्गुणने चत्वा रिंशदिति त्रिकसंयोगास्तु षष्टिः कथं? पञ्चानां पदानां दशत्रिकसंयोगा एकैकस्मिंश्च त्रिकसंयोगे पूर्वोक्तक्रमेण षड्विकल्पा दशानां च षड्भि र्गुणने ष ष्टिरिति चतुष्कसंयोगास्तु विंशति: कथं? पञ्चानां पदानां चतुष्कसंयोगे पञ्चविकल्पा एकैकस्मिंश्च पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो भङ्गाः पञ्चानां च चतुर्भि र्गुणने विंशति रिति पञ्चकसंयोग स्त्वेक एवेति एवं पृथ्व्यादिसंयोगा अपि वाच्या नवरं पृथ्वीसंयोग आरम्भसत्यमनःप्रयोगादिपदा न्याश्रित्य सप्तक्ष

अम्हाहिय जाव अहवा अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया जाव अणंता आययसंठाणपरिणया एएसिणं

न्यायतसंस्थानपरिणतानि भवन्ति । पुद्गलानां प्रयोगपरिणतानां मिश्रपरिणतानां विस्रसापरिणतानां कतरेभ्यः कतरेभ्यो यावत् हि

पारम्भ सत्यमनप्रयोगादिक पद पारयोगे अथवा सप्तकसंयोगे ओदारिकादि कायप्रयोगभेदे भायोगे अथवा षट्कसंयोगे तो अन्तरमा भेदभो अथवा अष्टकसंयोगे तो नवग्रैवेयक भेदको अथवा दशकसंयोगे तो दश भवनपतीभेद भायोगे वैक्रियशरीर कायप्रयोग अपेक्षायें अथवा इग्यारमा संयोग तो सनत्कुमारे अथवा पूर्वोक्तपदनेविषे तेरमा अमभागको बारमयोग तो कल्पोपपन्नदेव भरभागको वैक्रियशरीर कायप्रयोग अपेक्षायें शेष प रवा। एएणं भंते! अट्ठमए पंचमए भविस्सामि तहाविहो विवक्षा भागितव्यः जाव असंख्या अणंता एवमेव । एएणं इत्यादि, ए रमो विम भवमा शतकमें तवोसमे उद्देशे गतेयनामे अणगारकृत गतिभेवन विचारनेविषे कहसे कोतसाएव तेहनें अनुसारे द्रव्यअपागेकरी तिमथकवा असंख्या त अनन्त नारकादिकमनापय त सूत्र इहां ते विशेषपणे ते कहेछे—सर्वतास्त्वादि, एसोय भासावायो देखावता कहेछे—सबरएअपदअभ्यन्तर का अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया जाव सर्वताआयतसंठाणपरिणया । एतस्माविशेष तिहां असंख्याताकोय अथवा इहां एक पद अनन्तानां अधिका अथवा यावत् अनन्तपरिमंडल संस्थानपरिणत यावत् अनन्ता आयतसंस्थान परिणत, हिवे एहना अल्प बहुत्व चिन्तवता कहेछे—एएसिणंभंतेपाभ्मका

याम रत्योदारिकादिकायप्रयोग माश्रित्य षट्कसंयोगस्तु व्यन्तरभेदा न्नवकसंयोगस्तु ग्रैवेयकदेवभेदान् दशकसंयोगस्तु भवनपतिभेदा नाश्रित्य वैकि यशरीरकायप्रयोगपदप्रमा समवसेय एकादशसंयोगस्तु सूत्रे नोक्त पूर्वोक्तपदेषु तस्या सम्भवात् द्वादशसंयोगस्तु कल्पोपपन्न देवभेदा नाश्रित्य वैकि यशरीरकायप्रयोगापत्तये वति ॥ पयसयपृत्ति ॥ भवमसतसत्कदतीयोद्दशके गाङ्गेयाभिधानानगारकृतनरकादिगतिप्रवेशनविचारे कियन्ति तदनुसारे न द्रव्याणि याच्यामी त्याह ॥ जायपमएउमत्ति ॥ पसङ्ख्यातानारकादिवक्तव्यतायघटि तत्सूत्र पठतु यो विस्तर समाह ॥ मर्वताहत्यादि ॥ ए तदया निसापती दमपसाह ॥ जायपवतस्यादि ॥ पर्ये तेपामवा रूपवतुरस्वभिन्तपसाह ॥ एएसिंवमित्यादि सव्वत्योवापोग्गलापवोगपरिणपति ॥ कायादिरूपतया जीवपुद्गलसम्बन्धकालस्य स्तोकत्वात् ॥ मीसपरिणयाअणतगुणत्ति ॥ कायादिप्रयोगपरिणतभ्य सकाशा न्मिश्रकपरिणता अनन्त गुणा यतः प्रयोगकृत माकार मपरित्यजन्तो विस्रसया च परिणामान्तर मुपागता मुक्तकलेवराद्यवयवरूपा स्ते नन्ता विस्रसापरिणतास्तुभ्यो

न । पोग्गलाण पओगपरिणयाण मीसापरिणयाण वीससापरिणयाणय कयरे कयरे हितो जाव विसेसाहि याया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पओगपरिणया मीसापरिणया अणंतगुणा वीससापरिणया अणंतगु

प्रयाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पुद्गला प्रयोगपरिणता मिश्रपरिणता अनन्तगुणा विस्रसापरिणता अनन्तगुणा तदेव भदन्त भवन्त !

न पयागप रणताप मोसापरिणयाने वीससापरिणयानव कयरे २ हिता जावविसेसाहियाया । एहने हेभगवन् ! पुद्गले प्रयागपरिणतने विस्रसाप रिणतने कवो कुण २ थको थोडाछे घणाछे बराबरछे विशेषाधिकछे इतिप्रश्न उत्तर । गायमा सर्वत्थाबापाग्गलापयागपरिणया । हेगौतम ! स र्वथोडा पुद्गलप्रयोगपरिणत कायादिकपणेंकरी जीवपद्गलसम्बन्ध कालना थोडपणोछे तेमाटे तेथको । मोसापरिणयाअणंतगणा मोससापरिणया प्रणगणा । मिश्रपरिणत अनन्तगुणाछे कायादिप्रयोगपरिणत थकी मिश्रपरिणत अनन्तगणा तेमाटे प्रयागकृतआकारमते अणतजतो विस्रसायक रा वे परिणामान्तरमते पाम्या मुक्तकलेवरादि अवयवरूप ते अनन्ताछे तेथकी विस्रसापरिणत अनन्तगुणा परमाण्वादिकजीव ग्रहणमायोग्यना अनन्त

व्यनन्तगुणाः परमाण्वादीनां औदयिकप्रायोग्यावा मप्यनन्तानन्तत्वादिति ॥ इतिअष्टमशतेप्रथमः ॥ १ ॥ प्रथमे पुद्गलपरिणाम उक्तो द्वितीयेतु तथा शीविषद्वारेणो च्यत इत्येव सम्बन्धस्या स्यादिसूत्र कइइत्यादि ॥ आसीविसत्ति ॥ आशीविषा दंष्ट्राविषाः ॥ जाइआसीविसत्ति ॥ जात्या जन्मना आशीविषा जात्याशीविषाः ॥ कम्मआसीविसत्ति ॥ कर्मणा क्रियया शापादिनोपघातकरणेना शीविषाः कर्मा शीविषा अत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च कर्माशीविषाः यथासकाश्व एतेहि तपश्चरणानुष्ठानतो ऽन्यतोवा ; गुणतः खल्वाशीविषा भवन्ति शा

णा सेवं भंते भंतेत्ति॥ अठम सयस्स पढमो उद्देसोसम्मत्तो ८ ॥ १ ॥ कइविहाणं भंते ! आसीविसा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता , तंजहा—जाइआसीविसाय कम्मआसीविसाय जाइआसीविसाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता , तंजहा—विच्छुयजाइआसी

पति ॥ इत्यष्टमशतकस्यप्रथमउद्देसकः ॥ १ ॥ कतिप्रकार । आशीविषाःप्रज्ञप्ताः ? गौतम । द्विविधा आशीविषाःप्र ज्ञप्ता तद्यथा—जात्याशीविषाश्च कर्माशीविषाश्च । जात्याशीविषा भदन्त । कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । चतुर्विधाप्रज्ञप्ता तद्यथा—वृश्चिक जा

पर्यमाटे। मअभतेभंतेभि। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हकह्य ते मसाचे परमागही। पडमसयश्यपढमयोउहेसासमत्ता। ० पाठमाशतकना पहिला उद्देशो पर्यो सम्पा ८ ॥ १ ॥ पहिले उद्देशे पद्गलपरिणाम पभिवारवक्षा बीजे उद्देशे आशीविष कहिकरो कहैछे—कइविहतेआसीवि सा पन्नत्ता। केतला हेभगवन्। आशीविष कहिये आशीविष कहिये दाढाविष कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा आसीविसा प त । हेगो तम। बेभेद आशीविष कह्या त कहेछे—जातिआसीविसाय कम्मआसीविसाय। जेहनो दाढाविषै जन्मथकी विषहुवे, ते जाति आशीविष कहिये १ कमकिया तिर्यंचरो शापादिक उपघात करवेकरी आशीविष दाढाविष ते कर्माशीविष कहिये, तिहां पर्याप्त तिर्यंच मनुष्य कर्माशीविष पर्यासाजोग हुवे ए तपचरण अनुष्ठानथको अथवा अनेरागुणथको निश्चे आशीविषहुवे ते शरापम देवेकरोस विषाये एह आशीविष लब्धिनास्वभावथको सहस्त्रार

पमदानेमैव व्यापादयन्तीत्यर्थं एतेषा चाशीविषलब्धिस्वभावा स्वहस्रारान्तदेवेषेवो त्पद्यन्ते देवा स्थेतएव ये देवत्वे नोत्पन्ना स्ते ऽपर्याप्तकायस्था या मनुभूतभावतया कर्माशीविषाइति उक्तं च शास्त्रार्थोन्नदस्वादिभाष्यकारेण–आशीदाढातम्मय महाविसासीयिसादुविहजेया । तेकम्मजाइभेएण णेगइविहविगप्पा ॥ १ ॥ केवइएत्ति ॥ कियान् ॥ विसएत्ति ॥ गोचरो विषस्येति गम्य ॥ अद्धभरहप्पमाणमेत्तंति ॥ अर्द्धभरतस्य यत्प्रमाणं सा तिरेकत्रिपञ्चाधिकपंचशतयोजनलक्षणं तदेव मात्रा प्रमाणं यस्याः तथा तां ॥ बोंदिंति ॥ तनुं ॥ विसेणंति ॥ विषेण स्वकीयाशीप्रभवेण करणभूतेन

विसे मंडुक्कजाइआसीविसे उरगजाइआसीविसे मणुस्सजाइआसीविसे । विच्छुयजाइआसीविसस्सणं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पभूणं विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विस

त्याशीविषा मण्डूकजात्याशीविष उरगजात्याशीविषो मनुष्यजात्याशीविषः । वृश्चिकजात्याशीविषस्य भदन्त ! कियान् विषयः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! प्रभुर्वृश्चिको जात्याशीविषो अर्द्धभरतप्रमाणमात्रां बोन्दिं विषेण विषपरिणतां विकसितां कर्त्तुं विषय सविषायत्तायां मार्येव सपत्याऽकापुर्वाकुर्वन्ति

पयत्तदयमविष शोअउपचे देवतायत्ति एतस्मात्सद्भाव देवपदे च्यवना ते अपर्याप्त अवस्थायां अनुभूत भावपर्येवरो कर्माशीविष कहिये अपर्याप्तावस्थामे पूर्वभाव संस्कार जथो ते सबो कर्माशीविष कहिये । जातिआसीविसा णंभंते कइविहा प । जातिआशीविष हेभगवन् ! केतलाप्रकारना कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउव्विहा प तं । हेगौतम ! चारभेद कह्या ते कहेछे—विच्छुयजातिआसीविसे मंडुक्कजातिआसीविसे उरगजातिआसी विसे मणुस्सजातिआसीविसे । विच्छूजातिआशीविष १ मंडूकजातिआशीविष २ सर्पजातिआशीविष ३ मनुष्यजातिआशीविष ४ । विच्छूयजातिआ सोविसस्सणंभंते केवइएविसए प । विच्छूजातिआशीविषना व कारविकारे, हेभगवन् ! केतलोएक विषयकहिये विषना गोचर कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पभूणविच्छूयजातिआसीविसे । हेगौतम ! समर्थ च व्यक्ताविकारे, विच्छूजातिआशीविष । अद्धभरहप्पमाणमेत्तंबोंदिविसेणविसपरिगयवि सट्टमाणपकरेत्तएविसए । आधाभरतना जे प्रमाण बेसे त्रेसठि योजन साधिकसमय तेटोज मात्रा प्रमाण जेहनी एहवी बोंदि तनुप्रते स्वकीय आशीय

॥ विसपरिगयत्ति ॥ विषं तावश्चतस्या ग्रिर्देशस्य विषतां परिगता प्राप्ता विषपरिगता उतस्तां चतएव ॥ विसदृमाणत्ति ॥ विकसन्ती विदल नी ॥ करत्तएत्ति ॥ कर्तुं ॥ विसएणत्ति ॥ गोचरोसौ मथवा ; स तस्य वृदिबस ॥ विसठ्यायएत्ति ॥ विषमेवा र्थो विषार्थः तस्द्भाव स्तता तस्या विषायतायाः विषत्वस्य तस्यांवा ॥ नोचेवत्ति ॥ नैवस्यथ ॥ सपत्तीएत्ति ॥ सपत्त्या एवंविधवोन्दिसम्प्राप्तिद्वारेण ॥ करिसुत्ति ॥ प्रकार्षु र्युविधा इतिगम्यते इहचै कथचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो पृथिकाशीविषाणा बहुत्वज्ञापनार्थं मव कुर्वंति करिष्यन्तीत्यपि त्रिकालनिर्देश यामीयां प्रकाशि

परिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए एयप्पइए विसए नोचेवण सपत्तीए करिसुया करतिंया करिस्संतिया । मण्डुक्क जाइआसीविसपुच्छा गोयमा ! पभूण मण्डुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त बोंदि विसेणविसपरिगय मस तचेय जाय करिस्संतिया । एय उरगजाइआसीविसस्सवि नयर, जम्बुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेण

या करिष्यन्तिया । मण्डूकजात्याशीविषपृच्छा ? गौतम ! प्रभु मण्डूकजात्याशीविषो भरतप्रमाणमात्रा बोंदि विषेणविषपरिगता शर्ष तचैव यावत्करिष्यन्तिया । एव मुरगजात्याशीविषस्यापि । नवर जम्बूद्वीपप्रमाणमात्रा बोंदि विषेण विषपरिगतां शेषं तचैव याव करिष्यन्ति

भवसरयभूतेबरो विजम्वांग्रतं प्रात ते प्रतें विषामूतबरया विषयगोचरस्य । सेविसद्वमाणपायेवर्षसपत्तोए करिसुया करेंतिया करिस्संतिया । न्यि त योद्धा विप पतमोभूमिसते वापेद्दे पविमत्तो नियं च शाम्भावकारे, समवायकरोने मतीतकाले योर्धगयो वर्तेवैनद्रो पारपे पविमत्तो । मण्डूका तिचामोविषपना । मण्डूकजाति चाशीविषसो हेमभवन् । केतसावय विषमा गाचरकत्ता इतिमन्न उत्तर । गायमा पभूर्णमण्डुकजाइयासीविसभरहप्प माणमेत्तबोंदिंविसेणविसपरिगय सेसतंचेव जावकरिस्संतिया । हे गौतम ! समय मण्डूकजाति चाशीविष इच्छाविष भरतक्षेत्र प्रमाण ५२६ योजन तोमकता मवच तेषोच मात्राप्रमाण शरीरोत्रं विष तिर्वेबिये करोने विषपरिणमावनाग विषयगोचरत्वे यावता सव पृथ्वीपरे कदवा यावत् पानामिकाम करिष्ये नवो । एवउरगजातिचाशोविसम्मपि । इम सपजाति चाशीविषमा पविचहृषा । नवर जम्बूद्वीपप्रमाणमेत्तबोंदिंविसेणं विसप

विसपरिगयं सेस तचेव जाव करिस्संतिया । मणुस्सजाइआसीविसस्सवि एवचेव नवरं, समयखेत्तप्पमाणमेत्त बोंदि विसेण विसपरिगय सेस तंचेव जाव करिस्संतिया । जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे मणुस्सकम्मआसीविसे देवकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे तिरिक्खजोणियकम्मासीविसेवि मणुस्सकम्मासीविसे देवकम्मासीविसेवि । जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?

वा । मनुष्यजात्याशीविषस्या प्येवमव नवरं समयक्षेत्रप्रमाणमात्रां बोंदिं विषेण विषपरिगतां शेष तथैव याव त्करिष्यन्ति । यदि कर्माशीविषः किं नैरयिककर्माशीविषः तिर्यग्योनिककर्माशीविषो मनुष्यकर्माशीविषो देवकर्माशीविषः ? गौतम ! नोनैरयिककर्माशीविषः तिर्यग्योनिककर्माशीविषोपि मनुष्यकर्माशीविषोपि देवकर्माशीविषोपि । यदि तिर्यग्योनिककर्माशीविषः किं मेकेंद्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो याव त्पंच

रियंं । एतकोविसेण जबूदोप समाणमात्र सयरोरगा वे विस तिवें करोमे पूविनो विपमय करें । सेसतचेव जावकरिस्सतिया । चावसी सव तिमहोन कइया जावत् भामामित्राचे करवें मयो । मणुष्यजातिपासोविसप्रवि एवचेव । ममयखेति पामोविपनो पवि मन्न तथा उत्तर इमक कवया । नवरं समयखेतपमाणमेत्तबोंदिविसेणविसपरिगयं सेसतंचेव जावकरिस्सति । एतकोविसप समुयखेत्तप्रमाण सयरीरगो विप मापादि प्रदानमवच तिवें करोमे उपपातकरवा समय वावतासप तिमन पूठिवोपरे कवया यावत् भामामिकासे करवेंमवो एतसासगेकइनो कवी गोतम पूछे—कम्मयासोविसेकिंनेरइयकम्मयासोविसे । नो कम किवायेंकरो पायोविषवुवे ता य नारको कर्मायोविषत्व । तिरिक्खजोणियकम्मयासोविसे । विव पशामिक कर्मायोविषत्वे पवया । मणुस्सकम्मयासोविसे । मनव कर्मायोविषत्वे पवया । देवकम्मयासोविसे । देवकर्मायोविषत्वे इतिप्रश्नउत्तर । गोयमा नो नेरइयकम्मयासोविसे । हे गोतम । नारको कर्मायोविष नहुवे । तिरिक्खजोणियकम्मयासोविसेवि । तिरयचयोनिक कर्मायोविष

कत्वमाप्नोतीत्यर्थः ॥ समयक्षेत्तरति ॥ समयक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्र ॥ एवमाहारकशरीरस्यापीत्युक्तेति ॥ यथा वैक्रियं नवता जीवभेदो भणित तथेहापि भा

गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिय कम्मासीविसे जाव नोचउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । जइ पंचिंदियजाव कम्मासीविसे किं सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेओ जाव

न्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषः ? गौतम ! नो एकेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो यावत् नो चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषः । यदि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषः किं संमूर्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्य

चि हुवे । मनुष्यकम्मासीविसे देवकम्मासीविसेवि । मनुष्य पणि कर्माशीविष हुवे वेव पणि कर्माशीविष हुवे तथा सहिवना समाधवको म हस्रारपर्यन्त देवमेंविषे उपजे तेहीज देवपणे उपना तिणे पर्याप्तावस्थामेविषे पनुपूर्व भावपणे कर्माशीविष कहिवे । जइतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । जो तिर्य चयोनिक कर्माशीविष हुवे तो स्यूं एकेन्द्री तिर्यं चयोनिक कर्माशीविष हुवे इम वेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री । जावपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे एतावन्मेवकर्षा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नोएगिंदिय तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । हेगौतम एकेन्द्रीतिर्यंचयोनिक कर्माशीविष न हुवे । जाव चउरिंदिय तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । इम यावत्शब्दे वेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष नहुवे एतावता इमकह्यो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे वली गौतम पूछे—जइपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । जो पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे । किंसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । ता स्यूं संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे । गब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । गर्भज पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे इतिप्रश्न उत्तर । एवंजहावेउव्वियसरीरस्सभेदो जावपज्जत्ता संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।

र्यो माषित्यपः सवायं-गोयमा ! नोसंमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जइ गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे असंखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे नोअसंखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे जइ संखेज्जजावकम्मासीविसे किं पज्जत्तसंखेज्जजावकम्मासीविसे अपज्जत्तसंखेज्जजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! शेष सिस्वितमवासे एतयोक्त मस्यभागो मवानातीति ग्राम्यपि कथि एमायस्नूनि कथंचि

पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियकम्मभूमियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे। जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं सम्मुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो सम्मुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे एव जहा वेउ

र्योनिककर्माशीविष एवं यथा वैक्रियशरीरस्य भेदो यावत् पर्याप्तासंख्येयवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिक (मनुष्य) यावत्कर्माशीविषः। यदि मनुष्यकर्माशीविषः किं संमूर्छिममनुष्यकर्माशीविषो गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यकर्माशीविषः ? गौतम ! नोसंमूर्छिममनुष्यकर्माशीविषः गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यकर्मा

एवे प्रकारे जेम वैक्रियशरीर वखते जीवनाभेद कह्या, तेम इहां पण कहेवा ते आ प्रमाणे, हे गौतम असंमूर्छिमपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिककर्माशीविष, गर्भव्युत्क्रान्तिकपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिककर्माशीविष, यावत् गर्भव्युत्क्रान्तिकपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिककर्माशीविष, किंतु असंख्यवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिककर्माशीविष, असंख्येयवर्षायुष्कयावत्कर्माशीविष नथी, संख्येयवर्षायुष्कयावत्कर्माशीविष, अपर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्कयावत्कर्माशीविष नथी, पर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्कयावत्कर्माशीविष पण होय छे पर्याप्तसंख्येयजावकर्माशीविष, अपर्याप्तसंख्येयजावकर्माशीविषे, इतिप्रश्न उत्तरमे गौतम बावता सूत्रमां ते लिख्याचवे पर्याप्त संख्यातवर्ष आउखावाला गर्भज कर्मभूमिजपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिककर्माशीविष हुए पणि । नोअपर्याप्तासंख्येयजावकर्माशीविषे । मनुष्य अपर्याप्त संख्यातवर्ष आउखावाला गर्भज कर्मभूमिजपंचेंद्रियतिर्यंच कर्माशीविषहुवे यद्गौतम पूछे—जइमणुस्सकम्मासीविसे,

व्वियसरीर जाय पज्जत्तासखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे नो अपज्जत्तजावकम्मा सीविसे। जइ देवकम्मासीविसे किं भवणवासीदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मासीविसे? गोयमा! भवणवासीदेवकम्मासीविसेवि वाणमंतरदेवजोइसियवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि। जइ भवणवासीदेवक म्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारजावकम्मासीविसे? गोयमा!

शीविष एवं यथा वैक्रियशरीरं याव त्पर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिकगर्भव्युत्क्रांतिकमनुष्यकर्माशीविषः नोअपर्याप्तसंख्येय (प्रभृति) यावत्क र्माशीविषः। यदि देवकर्माशीविषः किं भवनवासिदेवकर्माशीविषो याव द्वैमानिकदेवकर्माशीविषः? गौतम! भवनवासिदेवकर्माशीविषोऽपि वानव्यंतरदेवज्योतिष्कदेववैमानिकदेवकर्माशीविषोऽपि। यदि भवनवासिदेवकर्माशीविषः किमसुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषो याव त्स्त

वा मनुष्य कर्माशीविष थाय। तिर्यंचपंचेंद्रियमनुष्यकर्माशीविषे। तो शुं समूर्छिम मनुष्य कर्माशीविष हुवे अथवा। गर्भजतिर्यंचमनुष्यकर्माशीविषे। अथवा कर्माशीविषहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोसंमूर्छिममनुष्यकर्माशीविषे। हे गौतम मनुष्य कर्माशीविष नहुवे। गर्भजतिर्यंचमनुष्यकर्माशीविषे। गर्भजमनुष्य कर्माशीविष। एवंजहा वेउव्वियसरीर। इम जिम वैक्रियशरीर कह्या तिम इहां पणि कहवा, पर्याप्ताभणी कहवा ते कहेछे—यावत पज्जत्तासंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे। यावत् पर्याप्त संख्यात वर्षायुष कर्मभूमिक गर्भजमनुष्य कर्माशीविष हुवे। नोअपज्ज त्ता जाव कम्मासीविसे। पणि नही अपर्याप्ता संख्यातवर्षायुष कर्मभूमिक गर्भजमनुष्य कर्माशीविष हुवे। जइदेवकम्मासीविसे। जो देव कर्माशीविष हुवे तो। किंभवणवासीदेवकम्मासीविसे जाववेमाणियदेवकम्मासीविसे। स्युं भवनपतीदेव कर्माशीविषहुवे अथवा वानव्यंतरदेवकर्माशीविषहुवे अथवा ज्योतिषीदेवकर्माशीविषहुवे अथवा वैमानिकदेवकर्माशीविष हुवे एतलासगे यावत् शब्दथकी कहवो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा भवणवासी देवकम्मासीविसेवि। हे गौतम! भवनपतीदेव कर्माशीविष पणिहुवे। वाणमंतरदेव जोइसियदेव। वानव्यंतरदेव पणि कर्माशीविष वे ज्योतिषीदेव

असुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे जावथणियकुमारजायकम्मासीविसे। जइ असुरकुमारजायकम्मासीविसे किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे किं अपज्जत्ताअसुरकुमारजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! नोपज्जत्ताअसुरकुमारजायकम्मासीविसे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीजावकम्मासीविसे एव थणियकुमाराण। जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किंपिसायवाणमंतरदेवकम्मासीविसे एव सव्वेसिं अपज्जत्तगाण

नितकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविषः ? गौतम ! असुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषोऽपि एवं यावत् स्तनितकुमारदेवकर्माशीविषोऽपि। पर्याप्तासुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविषः किं पर्याप्तासुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषो पर्याप्तासुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविषः ? गौतम ! नोपर्याप्तासुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविषो पर्याप्तासुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविष एव यावत् स्तनितकुमार (प्रभृति) या

पनि कर्मासीविषहुवे। वैमानिकदेवकर्मासीविसेकि। वैमानिकदेव पनि कर्मासीविषहुवे। भवनवासीदेवकर्मासीविसे। जो भवनपतीदेव कर्मासीविष हुवे ता। किंअसुरकुमारभवनवासीदेवकर्मासीविसे। असुरकुमारदेवकर्मासीविषहुवे। नागकुमारजावकर्मासीविसे। इम यावत् नाम सुपर्ण विद्युत अग्नि द्वीप उदधि वाय स्तनितकुमारदेवकर्मासीविषहुवे एतलावगे वडचा इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असुरकुमारभवनवासीदेवकर्मासीविसे वि। हेगौतम ! असुरकुमारदेव पनि कर्मासीविषहुवे। एवं नागकुमार। इम यावत् स्तनितकुमारदेवपर्यन्त दशेई भवनपतीनिकायदेवा कर्मासीविष हुवे। जइअसुरकुमार जावकर्मासीविसे। जो असुरकुमार आदिदेई यावत् स्तनितकुमार देवपर्यन्त दशेई कर्मासीविष हुवे। किंपज्जत्ताअसुरकुमारभवनवासीदेवकर्मासीविसे। ता स्यू पर्याप्त असुरकुमार भवनपतीदेव कर्मासीविष हुवे अथवा। अपज्जत्ताअसुरकुमार जाव कर्मासीविसे। अपर्याप्त असुरकुमार भवनपतीदेव कर्मासीविष हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोपज्जत्ता असुरकुमार जावकर्मासीविसे। हेगौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनपतीदेव कर्मासीविष नहुवे। अपज्जत्ताअसुरकुमारभवनवासीदेवकर्मासीविसे। अने अपर्याप्त असुरकुमारभवनपतीदेवकर्मासी

जोइसियाण सव्वेसि अपज्जत्तगाण । जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे नोकप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे । जइ कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किंसोहम्मकप्पोवगजायकम्मासीविसे जाव

वरकर्माशीविषः । यदि वानव्यन्तरदेवकर्माशीविषः किं पिशाचवानव्यन्तरदेवकर्माशीविष एवं सर्वेषां मपर्याप्तकानां ज्योतिष्काणां सर्वेषां मपर्याप्तकानाम् । यदि वैमानिकदेवकर्माशीविषः किं कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवकर्माशीविषः कल्पातीतवैमानिकदेवकर्माशीविषः ? गौतम ! कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवकर्माशीविषो नोकल्पातीतवैमानिकदेवकर्माशीविषः । यदि कल्पोपपन्नवैमानिकदेवकर्माशीविषः किं सौधर्मकल्पोपपन्नक

जियडूत । एवआवबविबवतारात्त । दम यावत् स्तनितकुमारपनगत भपर्याप्ता कर्माशीविष हवे पत्रासा कमाशीविष नहवे एमकपत्रा । जद्वाणमन्तरदेवकम्मासीविसे । जा वाणमन्तरदेव कर्माशीविषहवे ता । किं पिसायवाणमन्तर । एष पिशाच वानव्यन्तरदेव कमाशीविषहवे यावत् गन्धवर्गो वरुणो , एवमसेसिमपज्जत्तमाणं । दम एवमे भपर्याप्तान कर्माशीविषथा कहवा पर्याप्तान मकहवा । जाइसियाणसव्वेसि अपज्जत्तगाणं जइवेमाणियदेवकम्मासीविसे । दम ज्योतिषी पचह चन्द्रादिकने प्रति भपर्याप्ताने कर्माशीविषपणो कहगो पचि पर्याप्ताने निषेधकरवा जो वैमानिकदेव कमाशीविष हवे ता । किंकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । एष कल्पनविषे उपना ते देव कमाशीविषहवे कल्प कहिये इन्द्रादिकना आचार व्यवहार । कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासोविसे । कल्पातीत तिहां उपना वैमानिकदेव कर्माशीविष हवे कल्पातीत कहिये इन्द्रादिकना आचारतो निवर्त्या से इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । हेगौतम कल्पात्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषहवे पचि । नोकप्पातीयगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । कल्पातीतनेविषे उपना ते वैमानिकदेव कर्माशीविष नहवे । जइकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । जो कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हवे । किं सोहम्मकप्पोवगजायकम्मासीविसे जावसहस्सारकप्पोवगकम्मासीविसे । एष सौधर्म कल्पोत्पन्नदेव कर्माशीविषहवे इम यावत् अष्टमो इशान सनत्कुमार

अनुपकप्पोवगजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि नोआणयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नोअच्चुयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे। जइ सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किंपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगजावकम्मासीविसे अपज्जत्तासोहम्मजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! नोपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मा

वैमानिककल्पकर्माशीविषा यावद् अच्युतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः ? गौतम ! सौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषोपि यावत् सहस्रारकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषोपि नोआनतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो यावत् नोऽच्युतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः । यदि सौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः किं पर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो पर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः ? गौतम ! नोपर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो ऽपर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः एवं यावत् नोपर्याप्तसहस्रारक

मारे‍‍ग्य यह गौतम यह सहस्रार पर्यन्त प्राणत पारण पर्यन्त देव कर्माशीविषयुक्त इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीवि मदि । हे गौतम । सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषयुक्त होय । आनसहस्रारकल्पावमवैमानिकदेवकर्माशीविषेवि मामाकल्पावमसार, रहत् सहस्रारमामे पाठया देवलाक ते सने कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष परिकले रम कदया पामत कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष नहवे। आनतकल्पावमवैमानिक। इम प्राणत पारण पर्यन्त ए पचि कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष नहुवे। जइसाहम्मकल्पोपगवेमाणियदेव कम्मासीविसे। जो सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे तो। किंपज्जत्तासोहम्मकल्पोवगपज्जत्तामाणम। पर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे अथवा अपर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोपज्जत्तासोहम्मकल्पोव गजावदेवकम्मासीविसे। हे गौतम। पर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषयुक्त नही। अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेव

न जानातीति दर्शयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ स्थानानि वस्तूनि गुणपर्यायाश्रितत्वात् छद्मस्थ इह अवध्याद्यतिशयविकलो गृह्यते अन्यथा अमूर्त्तत्वेन च धर्मास्तिकायादीन् अजानन्नपि परमाण्वादि जानात्येवासौ मूर्त्तत्वात् तस्य समस्तमूर्त्तविषयत्वात् अवधिविशेषस्य अत एवाह सर्वभावेन सुक्तं ततश्च तस्य पंचि स्वात्मवत् अनन्तपर्यायतया न जानातीति तत्र केवल एव इति तत्राणियमो अर्थः स्या घटादीनां सुबहूनां सर्वाना सकवलिना सर्वप र्यायतया जातु अशक्यत्वात् सर्वभावेन साक्षात्कारेण चक्षु प्रत्यक्षेणेति हृदय श्रुतज्ञानादिना त्वसाक्षात्कारेण जानात्यपि ॥ जीवमशरीरप्रतिब

सीविसे अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे एव जाव नोपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणि यदेवकम्मासीविसे अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे। दसठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेण नजाण इ नपासइ तंजहा—धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीव असरीरपडिबद्ध परमाणुपोग्गल

कल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो अपर्याप्तसहस्रारकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषः। दश स्थानानि छद्मस्थः सर्वभावेन नजानाति नपश्यति तद्यथा-धर्मास्तिकायं अधर्मास्तिकायं आकाशास्तिकायं जीवं अशरीरप्रतिबद्धं परमाणुपुद्गलं शब्दं गन्धं वातं अयं जिनो भविष्यति

कर्माशीविषे। पर्याप्तक सातमा कल्पोपग वैमानिकदेवकर्माशीविष हवे एमजावत् अपर्याप्तसहस्रारकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषे। इम इहां नवमो आठो यावत् पर्याप्त सहस्रार कल्पोपग वैमानिकदेवकर्माशीविष मडवे। अपर्याप्तसहस्रारकल्पोपगजावकर्माशीविषे। पणि अपर्याप्तक सहस्रार कल्पोपगवैमानिकदेव कर्माशीविष नथी ए पूर्वे कह्यु छ तेह ते पर्याप्तो मर्यादे अपर्याप्तो पणि कारणक छद्मस्थ मति अवधि नजाणे ते दे खाडता कहे—छमठाणानेछद्मस्थसर्वभावेन नजाणे नपासे। दश स्थानकप्रते छद्मस्थसर्वभावेकरी नजाणे नदेखे स्थान वस्तु वस्तुगुणपर्यायाश्रित पर्यायको तेहभणी छद्मस्थ इहां अवध्यादि अतिशय विकल कहवा, अन्यथा अमूर्त्तपणेकरी धर्मास्तिकायादिकप्रते अजाणतोथको पणि परमाण्वादिक मूर्त्तादि देखे एह तेहभणी मूर्त्तपदार्थको पणे समस्त मूर्त्तविषयपदार्थको अवधिविशेषपणे। ते धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आगासत्थिकाय। ते कहे

द्वति ॥ द्दविगुण मिट्ठु मित्यथः ॥ परमाणुपोग्गलेति ॥ परमाणु श्चासौ पुद्गलश्चेति उपलक्षणमेत तेन द्व्यणुकादिकमपि काय कलामासीति प यमिति मत्यतः कोपि प्राणी जिनो वीतरागो भविष्यति नवा भविष्यतीति नवम श्रय मित्यादिश दशम तद्व्यतिरेकमाह ॥ एयाणीत्यादि ॥ सद्भावभावकृत्ति ॥ सद्भावेन साक्षात्कारेण जानाति कवलज्ञानमेति द्दय जानातीत्युक्त मतोज्ञानसूत्र तत्रच ॥ आभिणिबोहियनाणेति ॥

सद् गंध वात श्रय जिणे भविस्सइ नवा भविस्सइ श्रय सव्वदुक्खाण श्रंत करिस्सइ नोवा करिस्सइ एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे श्ररहा जिण केवली सब्भावेण जाणइ पासइ त धम्मत्थिकाय जाव करिस्सइ नयाकरिस्सइ । कइविहेण भंते ! नाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे नाणे पन्नत्ते, तंजहा—श्राभिणि

श्रयं सर्वदुःखाना मत्तं करिष्यति नोवा करिष्यति एतानि चैव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽर्हञ्जिनः केवली सद्भावेन जानाति पश्यति तद्यथा—धर्मा स्तिकाय यावत् करिष्यति नोवा करिष्यति। कतिविधं भदन्त ! ज्ञान प्रज्ञप्त ? गौतम ! पंचविध ज्ञान प्रज्ञप्त तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानं

हे—धर्मास्तिकायप्रते १ अधर्मास्तिकायप्रते २ आकाशास्तिकायप्रते ३। जीवमशरीरपडिबद्ध परमाणुपामने। एह विमुक्त जीवप्रते सिद्धप्रते द्रव्य ४ एह भगवापवाय नवाव उपवनवनो ईयवाति पवि नवाथि ५। सहगंध वात भय विषेभविस्सइ नवाभविस्सइ। शब्द ६ गंध ७ वात ८ ए नवांपि ए मध्यम काइएक प्राणीजीव जिन वीतरागदुर्से अथवा नही हस्ये ए वात नवांपि ९। भवसर्वदुःखानतकरिस्सइ नावाकरिस्सइ। ए प्रमुख कारए कमाणो सवदुःखना अंतकरसे अथवा नहीकरसे १ ए दशठाना स्वरूप साक्षात्कार छद्मस्थजीवो नवांपि सदेसे जाणवो विपरीत कहेछे—एया णिचेवउप्पन्नानदसणधरे अरहाजिणेकेवलीसब्भावेणजाणइपासइ। एवप्रते निये अपना ज्ञानदर्शनना धरणहार परिहत जिन राग द्वेषरहित क्ष ग्मा सद्भावे साक्षात्कार कवलज्ञानेकरी प्रत्यक्ष जाणे देखे। त धम्मत्थिकाय जाव करिस्सति नावाकरिस्सति। ते कहेछे—धर्मास्तिकायप्रते इत्यादि यावत् सवदुःखना अंतकरसे अथवा नहीकरसे एतलाक्षगे दशठाणा कहवा ते केवलीजाणे जाणे एहवं कहुंते ज्ञानपणो ज्ञानना भुवे तेमा

मर्यादिसुतो विषयस्वरूपस्य क्षिपतो ऽसम्यक्पस्य द्वोधः सवेदन मतिनियोधः सएव आपिकमत्ययोमादाना दाभिनिबोधिक मति प्रोयतेवा

मनमेति ज्ञान माभिनिबोधिकच तज्ज्ञानं चेत्याभिनिबोधिकज्ञान मिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तो बोधइति ॥ सुयनाणत्ति ॥ श्रूयत तदिति श्रुत शब्द

सएव ज्ञान भावश्रुतकारणत्वात् कारणे कार्योपचारा श्रुतज्ञान श्रुता द्वा शब्दात् ज्ञान श्रुतज्ञान मिन्द्रियमनोनि मत्त श्रुतग्रन्थानुसारी बोधइति ॥

ओहिणाणेत्ति ॥ अवधीयत अधोधो विस्तृतं वस्तु परिच्छिद्यते अनेन त्यवधिः सएव ज्ञान अवधिना वा मर्यादया मूर्तद्रव्याण्येव जानाति नेतरा

णीति व्यवस्थया ज्ञान मवधिज्ञान ॥ मणपज्जवनाणेत्ति ॥ मनसो मनःसामान्येनाद्रव्याणां पर्ययः परिच्छेदो मन पर्ययः सएव ज्ञान मनःपर्ययज्ञानं

मन पर्यायाणां वा तदवस्थाविशेषाणां ज्ञान मनः पर्यायज्ञान ॥ केवलनाणेत्ति ॥ केवल मेक मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शुद्धं वा आवरणमलकल

वोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे। सेकिंतं आभिणिबोहियनाणे? २ चउव्विहे प०,

मतिज्ञान अवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान, केवलज्ञान। अथ किं तदाभिनिबोधिकज्ञान? आभिनिबोधिकज्ञान चतुर्विध प्रज्ञप्त तद्यथा—अवग्रह

टे ज्ञानसूत्र कह्यो—आरिहंत भगवंते पांचे प्रकारे ज्ञान परूपिया ते आभिनिबोधिकज्ञाने सुयनाणे । ओतले भेदे भगवंत ज्ञान पांच भाख्याचेतिवे

ते नाम कहीये रतिमय केवलम पांचमेद ज्ञान कह्या ते कहेछे—प्रथमे अभिमुख अविपरीत रूपपणाथकी संवेदन ते आभिनिबोध कहीये अभिनिबो

धकहीये आभिनिबोधिक आवीने ते ज्ञान अभिनिबोधिक ते ज्ञान ते इन्द्रिय अनिन्द्रिय निमित्तबोध इत्यर्थ, सुयनाणत्ति श्रुतज्ञान सांभलीये ते श्रुत

कहतां शब्द तेहीज ज्ञान ते श्रुतज्ञान अथवा श्रुतथकी जे ज्ञान ते श्रुतज्ञान इन्द्रियमनोनिमित्त श्रुतग्रन्थानुसारी बोधरूप २ । ओहिनाणे मण

पज्जवनाणे केवलनाणे । अवधि को के नीचे नीचे विस्तारवंत वस्तु परिच्छेद इहे करी ते अवधि तेहीज ज्ञान अथवा अवधि मर्यादा तिणे करी मूर्तद्र

व्यते जाणे बीजाप्रते नजाणे अवस्थाये ज्ञान ते अवधिज्ञान ३ मनना अपर्याय मन द्रव्यनो विपर्याय तेहनो जाणवा तेमन पर्याय ज्ञान अथवा मन

पर्याय वस्तुना विपर्यनो जाणवा तेमन पर्याय ज्ञान ४ केवल एक मत्यादि ज्ञान निरपेक्षपणा थको अथवा शुद्ध आवरण मलकलंकरहित यथार्थ

कुराद्दिलत्वा रमकनं या तरमयमतयैया अपतदावरसामावत सपूर्वात्पत्ते भसाधारणता। अनन्यसदृशत्वा वमनंवा ध्येया ममत्वात् ययाव ग्यितानपनूतमयह्नाविनावस्नायावभासीति भावना तव त उमानयति ववसत्तानं ॥ उग्गहोत्ति ॥ सामान्यामस्याशेपविशेषनिरपेक्षस्या नि र्देश्यस्वरूपादेः भयहति प्रयमतो प्रहणं परिच्छेदन मवग्रह ॥ ईहत्ति ॥ सदयविशेषालोचन मीहा ॥ भवाउत्ति ॥ प्रक्रान्तार्थविनिश्चयो अवा य ॥ धारणत्ति ॥ अवगतार्थविशयधरणं धारणा ॥ एवजहेत्यादि ॥ एव मुक्तक्रमेण यथा राजप्रश्नकृते द्वितीयोपाङ्गे ज्ञानाना भेदो भणित स्तथै वात्रापि भणितव्यः सचैव-सकित उग्गह २ दुविहे पन्नत्ते तंजहा-अत्थोग्गहय वंजणोग्गहय इत्यादिरिति मत्र वाचनान्तर मुतज्ञानाधिकार यथा नन्द्या मकुमकृपण त्यजिपाय जाव भविया अभविया तत्तासिद्धा असिद्धापत्युक्त तस्या यमथ मुतज्ञानसूत्रायसाने किल मन्द्या मुतज्ञानविषय एवोय त दर्शितर्तं-दुपमिदुवाससमं नविपिक्तए अणंता भावा अणंता अभावा जाव अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अ

तंजहा—उग्गहो इहा अवाय धारणा एवं जहा रायप्पसेणीए जो नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव

इहा यायो धारणा एवं यथा राजप्रश्नीय ज्ञानाना भेद तथै वहापि भणितव्यो याव रत्नमाह केवलज्ञान ॥ भवान भदन्त! कतिविध प्रज्ञप्तं?

भो गेतम ते केवलज्ञान ५। सेकिं त आभिनिबोधिकज्ञाने २ चउव्विहे पं तं उग्गहेईहा अवायधारणा। हवैम् ते आभिनिबोधिक ज्ञान इतिप्रश्न उत्तर आभिनिबोधिकज्ञान च्यारभेदे कह्यो ते कहै—सामान्यपणौ अर्थ अवग्रहज्ञान १ तत्तापछी विशेष धारावा विचारवानो २ अवाय पछी विशेष निश्चय करवा ३ अवगत अर्थ विशेषे धारवू वीसरे नहीं ४ जिमवार कानें सांभलूं तिवारे अर्थात् पद १ एवोहम् शब्द तिवारे ४ ना २ पछे शब्दनं निश्चयजीधो पणमुक्ता मं शब्दे तिवारे अवायकहीये ३ ते शब्दधारी राखीयें घणा कालीयें धारीराखीयें ते धारणा कहीये ४। एवमकाराएपभेद अवग्रहादि भेदानिषद्विशेषोभाणियव्वा आगमेतवेकमाले एम इणे अनुक्रमे करो जिम रायपसेणी बीआउपांगमें विषे पञ्चज्ञान ना भेदकह्या तिम इहां पणि कहवा ते सूत्र इमहै। सेकिंतं उग्गहे उग्गहेदुविहे पन्नत्ते तंजहा अत्थोग्गहे १ वंजणोग्गहे २ इत्यादि ग्रन्थान्तरमें कह्या

बता यसिद्धा पन्नते त्यस्य सूत्रस्य या संग्रहगाथा २ नावममाकाहेऊ मविउजारकमकारयाजीवा ॥ श्रजीवजवियजविया ततोसिद्धापसिद्धाय ॥१॥ इत्येवरूपा तस्या। एवक मिद मतदन्त श्रुतज्ञानसूत्र मिज्ञाप्येयमिति ज्ञानविषयय स्वज्ञानमिति तत्सूत्र तत्रच ॥ अन्नाणेति ॥ नञः कुत्सार्थ त्वा त्कुत्सित ज्ञान मज्ञान कुत्सितत्वच मिथ्यात्वसवलितत्या तुक्तच-अविसेसियामइचिय सम्मद्दिठिस्सतामइन्नाणं ॥ मइमन्नाणमिच्छ दिठिस्स सुयपिएमव ॥ १ ॥ विभंगनाणेत्ति ॥ विरुद्धा भङ्गा वस्तुविकल्पा यस्मि तद्विभङ्ग तच तज्ज्ञानच अथवा विरूपो भङ्गो ऽवधिभेदो विभङ्गः सचा सौ ज्ञानचति विभङ्गज्ञान मिदच कुत्सा विभङ्गशब्देनैव गमितेति मज्ञानशब्दो ममाधिप्रापितः ॥ अत्योग्गहेयत्ति ॥ अर्थ्यत इत्यर्थः तस्या अवग्रहो

सेत्त केवलनाणे । अण्णाणेण भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तजहा—मइअन्नाणे सुय अण्णाणे विभंगनाण । सेकित मतिअन्नाणे ? २ चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा—उग्गहे जाव धारणा । सेकित

गौतम! त्रिविधं प्रज्ञप्त तद्यथा-मत्यज्ञानं श्रुताज्ञान विभङ्गज्ञानं अथ किं तन्मत्यज्ञान ? मत्यज्ञान चतुर्विधं प्रज्ञप्त तद्यथा-अवग्रहो यावद्धा रणा। अथ कोसाववग्रहः ? अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्त तद्यथा-अर्थावग्रहो व्यञ्जनावग्रहश्च एवं यथैवाभिनिबोधिकज्ञान तथैव नवर् मेकाधिकवर्ज्य

त कहेछ—ते कइवज्ञान कह्योर्य एतलाममें कहवा ज्ञानकथी विपरीत अज्ञान तेमाटें अज्ञानमन कहेछे—अज्ञानेभंतेकइविहेप ना तिविहेपं त० । अज्ञान ए वाक्यान्तरे, हेभगवन् ! कतलभेदे कह्या ? इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम ! तीनभेदे कह्या ते कहेछे—मइअन्नाण सुयअन्नाणे विभंगनाणे। सेकितमइ अन्नाण २ चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा। कुत्सित न विशिष्टज्ञान ते अज्ञान कुत्सित ते मिथ्यात्व सवलितपणा थकी उक्तच—अविसेसियामइचिय सम्मद्दिट्ठि सम्मामइनाण। मइअन्नाणमिच्छदिट्ठिस्सअविण्णेव ॥ १ ॥ मति अज्ञान ते इसकोय १ वलिवं श्रुत त श्रुत अज्ञान २ विरुद्धवस्तु विकल्पछे जेहनेविषे ते विभंगज्ञान अथवा विरूपभंग अवधिभेद ते विभंग तेहीज ज्ञान ते विभंगज्ञान ३ हिवे प्रभु ते मतिअज्ञान ? मतिअज्ञान चारभेदे कह्यो ते कहे छे—उग्गहे जाव धारणा, सेकित उग्गहे २ दुविहे पन्नत्ते तंजहा। अवग्रह १ ईहा २ अपाय ३ धारणा ४ एहना अर्थ पूर्वेकिया तिमज जाणवा, हिवे एह

पावग्रहः सकलविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यार्थग्रहण मेकसामायिक मितिभावार्थः ॥ वजणोग्गहेयत्ति ॥ व्यज्यते ऽनेनार्थः प्रदीपेनेव घटइति व्यञ्जनं तथा पकरणेन्द्रिय शब्दादिपरिणतद्रव्यसङ्घातोवा ततश्च व्यञ्जनेनो पकरणेन्द्रियेण व्यञ्जनानां वा शब्दादिपरिणतद्रव्याणां मवग्रहो व्यञ्जनाव ग्रह यथा चांवग्रहस्य सुलक्षत्वा स्सकलेन्द्रियाव्यापकत्वाच प्रथम मुपन्यास ॥ एव मेवेत्यादि ॥ यथैवा भिनिबोधिकज्ञान मधीत तथैव म त्यज्ञान मप्यध्येय तथैव-सचित-अत्थोग्गहे २ छव्विहे पण्णत्ते तंजहा-सोइंदियअत्थोग्गहे चिक्खिंदियअत्थोग्गहे घाणिंदियअत्थोग्गहे फासिंदिय अत्थोग्गहे इत्यादि ॥ पवहविशेष समाह-मयर एगट्ठियवज्जति ॥ इहाभिनियोधिकज्ञाने ॥ ओगिण्हणया अवधारणया सवणया अवलंबणया मेहे

उग्गहे २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—अत्थोग्गहेय वंजणोग्गहेय एवं जहेव आभिणिबोहियनाणं तहेव णवर, एगट्ठियवज्जा जाव नोइंदियधारणा सेत्तं धारणा ? सेत्तं मइअन्नाणे। सेकिंतं सुयअन्नाणे ? जइमं अन्नाणिएहिं

पाय स्रोइन्द्रियधारणा समाप्ता सा धारणा समाप्ता तन्मत्यज्ञानं । अथ किंतच्छुताज्ञानं ? श्रुताज्ञानं यदेतद् ज्ञानिभिं मिथ्यादृष्टिभि यथा नास्तिके

त पायव ? बहुमरेखमा तवेहे—पताम्बरेव धवमाभरेव एवमेव पाभिनिबोधिकज्ञाने। पाप इन्द्रियेंवरो से भवधं ते भवीवप सकलविशेष निरपेक्ष मय यहण एकसमय इतिभावाव तथा प्रगटवत्यै इवेंकरो पव जिम प्रदीपेंकरो घट त मकम तेउपकरणेन्द्रिय भवता शब्दादि परिणतद्रव्य मघाते तिवारपञो व्यञ्जनकहिये उपकरणेन्द्रिय तिषेंकरो भवता व्यञ्जनकहिये शब्दादि परिणतद्रव्यना जे ग्रहण ते व्यञ्जनावग्रह कहिये ते मन प ने नेत्रविना चारइन्द्रियमाते हवे २ इहां पहलापहमा सकलपणावको भवधा समर्वेंइन्द्रियान व्यापकपणावको पहिला उपन्यासबोधी इम जिम नि पे पाभिनिबोधिकज्ञान कह्या। तहेवमवरएगट्ठियवज्ज। तिमहीज मतिअज्ञान कहवा। सचितअत्थावग्गह २ छव्विहे पण्णत्तेतंजहा सोइंदियअत्थोग्गहे १ चक्खिंदियअत्थोग्गहे २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिभिंदियअत्थोग्गहे ४ इत्यादि जे इहां विशेषछे ते कहेछे—पतलोविशेष एगट्ठियवज्जति, भा भिनिबोधिकज्ञानने विषे उगिण्हणया १ अवधारणया २ सवणया ३ अवलंबणया ४ मेहाइत्य पण २ एकार्थिक एवमवादिकना कह्या ते मतिअज्ञान

त्यादीति ॥ पश्चपश्चैकाधिका भवप्रकारीना मधीतामि मत्यग्रामेसु मता न्यप्येयानीतिभाव ॥ जाव गोवंदियधारगत्ति ॥ इद मत्यपदं यावदि स्यपः ॥ जंदम भमावियरियिति ॥ यदिद मघामिफे निघामे सम्राग्पमानजावा दृपनवदयीत्तवद्वा॰ सम्यग्दृष्टयो व्यमामिका॰ माध्यन्त मतमाह–मिथ्या दृष्टिजि॰ ॥ मदामदिरति ॥ मंय मत स्सूत्र ॥ सम्मदपुद्दिमदयिगप्पिय तभारक रामायकामित्यादि ॥ सम्राववभेवेवुद्धि मवायधारवेष मतिः स्वच्छदन स्वाभिमायव तस्यत सवभमवीतार्थानुसारमतरक बुद्धिमतिभ्यां विकल्पितं स्वच्छदबुद्धिमतिविकल्पित स्वबुद्धिकल्पनाशिल्पिनिमितमि त्यथा ॥ पत्तारियवेयत्ति ॥ साम ऋक् यज रथर्वा वसि ॥ सगोवगत्ति ॥ षडाङ्गानि शिक्षादीनि पडुपाङ्गानिष तद्याख्यानरूपाणि ॥ गामस ठियत्ति ॥ ग्रामास्यमत्या ग्रामाकार मव मन्याम्यपि मवर ॥ वासवठियत्ति ॥ भारताविवर्षाकार ॥ यासदरसंठियत्ति ॥ हिमवदादिवर्षधरप

मिच्छादिठ्ठिएहि जहा नदिए जाव चत्तारिय वेदा सगोवगा सेत्त सुयअन्नाणे। सेकित विभंगनाणे ? २ सु

याव चत्वारो वदाः सांगोपाङ्गा समाप्तम्मुताज्ञाम ॥ मय किंत द्विभङ्गज्ञान ? विभङ्गज्ञान मनकविधं प्रज्ञप्तं तद्यथा–ग्रामसंस्थितं नगरसंस्थितं

मेरिपे न काना रति पत्राविव मतिमानमेत्र जिये कूवे रतिभाव चेतनामने कहयो ते कहमोपद कहिंछे—मावमार्दिमधारणा मेसभारणा सततम प्रमाणे २। गामत् मारगिहूयधारणा ए गम्भगे कहयो पतमे ते धारणा कही ते मति मम्रास पणिकहा। ते एक् सुतमग्नान, सुतमग्नाम। पामेपपा विणहिं मिच्छादिठ्ठीएहि मवामहिर। आमवतारिवेदासंगावमा। ते एह पम्मानो ० मिथ्यादृहि० जिम मन्दीसूत्रमेंविषे कह्यु तिहां ए सूत्रके सपक्षेस सु हिमारगिगयिर्व तजहा मारहं रामायणं रति तिहां मवपह रहा बुद्धिकल्पिये मवायधारणा एमतिकल्पिये मवम प्रयोतपण पनुसार बिना पोतानी बद्धि मतिकरी विकल्पित स्वच्छन्द बुद्धि मतिविकल्पित कहिवे भवबुद्धिकल्पना शिल्पनिमित एवम वागरा ए पारवेद ऋक् १ यजु २ साम ३ पथर्व ४ एम शिक्षादिक ६ उपांग तेहनो व्याख्यानरूप। सेत्तमयपन्नाणे। ते एह सुतपमान कह्या। सेकितंविभंगनाणे २ पर्येपविहेपघ्ततमना। जिये, गु ते विभमप्रान रतिमय विभमप्रान पनेकमकारे कह्या ते कहिंछे—गामसंठिए नगरसंठिए। गामने सस्थाने आकारे, नगरने आकारे। जाव

यताकारं ॥ हयसंठिएत्ति ॥ अश्वाकार ॥ पसयत्ति ॥ पसयसंठिए ॥ तत्र पसय आटव्यो द्विखुर चतुष्पदविशेष एवम नानाविधसंस्थितमिति अ
नन्तर ज्ञाना न्यज्ञानानि चोक्ता न्यज्ञानिनोऽज्ञानिनश्च निरूपयन्नाह ॥ जीवाणमते इत्यादि ॥ इह नारकाधिकार एेमाधीतेनियमात्तिज्ञानी

णेगविहे प०, तंजहा—गामसंठिए नगरसंठिए जाव संनिवेससंठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रुक्खसंठिए थूभसंठिए हयसंठिए गयसंठिए नरसंठिए किंनरसंठिए किंपुरिससंठिए महोरगसंठिए गंधव्वसंठिए उसभसंठिए पसुपसयविहगवानरणाणासंठाणसंठिए प० । जीवाणं भंते !

ग्रामसंनिवेशसंस्थित द्वीपसंस्थित समुद्रसंस्थित वर्षसंस्थित वर्षधरसंस्थित पर्वतसंस्थित वृक्षसंस्थित स्तूपसंस्थित हयसंस्थित गजसंस्थित नरसंस्थित किन्नरसंस्थित किंपुरुषसंस्थितं महोरगसंस्थित गन्धर्वसंस्थित वृषभसंस्थित पशुपसयविहगवानरनानाकारसंस्थितं प्रज्ञप्त । जीवा भदन्त ! किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः ? गौतम ! जीवा ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि येज्ञानिन स्तेकेचन द्विज्ञानिनः केचन त्रिज्ञानिनः केचन चतुर्ज्ञा

संनिवेससंठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए । यावत् संनिवेशस्य संस्थानेषु एतत्संस्थानक्वा द्वीपस्य संस्थाने समुद्रस्य संस्थाने भरतादिक्षेत्रस्य संस्था
ने । वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रुक्खसंठिए । हिमवन्त प्रादिर्हो पर्वतस्य संस्थाने पर्वतसंस्थाने वृक्षस्य संस्थाने । थूभसंठिए हयसंठिए गयसंठिए नरसं
ठिए । स्तूपसंस्थाने अश्वस्य संस्थाने हस्तिनःसंस्थाने मनुष्यस्य संस्थाने । किंनरसंठिए किंपुरिससंठिए महोरगसंठिए गंधव्वसंठिए उसभसंठिए । व्यन्तरदेव
विशेषस्य संस्थाने किंपुरुषनाम व्यन्तरदेवविशेषस्य संस्थाने व्यन्तरदेवविशेषस्य संस्थाने गन्धर्वदेवविशेष संस्थाने वृषभस्य संस्थाने । पसु पसय विहग वा
नर नानासंठाणसंठिए पन्नत्ते । पशोः संस्थाने पसयस्य संस्थाने पक्षिणः संस्थाने वानरस्य संस्थाने एवं विभंगज्ञान नानाविध संस्थाने संस्थितकथा पूर्वे
ज्ञान तथा अज्ञान कथा किं ज्ञानी तथा अज्ञानी कथ्यते—जीवाणंभंतेकिंनाणी अन्नाणी । जीव च भगवन् किंसकारे प्रेमप्रधम् ! एवं ज्ञानी अथवा अज्ञा
नी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाणाणीवि अन्नाणीवि । हेगौतम जीवज्ञानी पणिक्षे अज्ञानी पणिक्षे । जेणाणी ते अत्थेगइयादुन्नाणी । जे ज्ञानीयुवे

ति सम्यग्दृष्टिनारकाणां प्रथमस्य भवविज्ञानं भवतीति कृत्वा ते नियमा त्रिज्ञानिन ॥ केषाञ्चित्तो अत्थेगइया दुअन्नाणीति, कथमुच्यते यत्

किन्नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! जीवा नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी अत्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउनाणी अत्थेगइया एगनाणी । जे दुयनाणी ते आभिणिबोहियनाणीय सुयनाणी य । जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी अहवा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी । जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी । जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी । जे दुअन्नाणी

निनः केचन एकज्ञानिनः ये द्विज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च ये त्रिज्ञानिन स्त आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनश्च अथवा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिनश्च ये चतुर्ज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिनश्च ये एकज्ञानिन स्ते नियमात् केवलज्ञानिनः ॥ येऽज्ञानिन स्ते केचन द्व्यज्ञानिनः केचन त्र्यज्ञानिनः ये द्व्यज्ञानिन स्ते

ते केतलाएक दोय ज्ञानवन्तछे । अत्थेगइया तिनाणी । केतलाएक तीन ज्ञानवन्त छे । अत्थेगइया चउनाणी । केतलाएक चार ज्ञानवन्त छे । अत्थेगइया एगनाणी । केतलाएक एक ज्ञानवन्त छे । जे दुनाणी ते आभिनिबोहिय नाणी सुयनाणीय । जे दोय ज्ञानवन्त ते मतिज्ञानवन्त अने श्रुतज्ञानवन्त ए बेज्ञानवन्त छे । जे तिनाणी ते आभिनिबोहिय नाणी सुयनाणी ओहिनाणी । जे तीन ज्ञानवन्त ते मतिज्ञान १ श्रुतज्ञानवन्त २ अवधिज्ञानवन्त ३ ए तीन सहित छे । अहवा आभिनिबोहियनाणी सुयनाणी । अथवा आभिनिबोधिकज्ञान कहिये मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ । मनपज्जवनाणी मनपर्यवज्ञानवन्त ए तीन ज्ञानवन्त छे । जे चउनाणी ते आभिनिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मनपज्जवनाणी । ते चार ज्ञानवन्त मतिज्ञानवन्त १ श्रुतज्ञानवन्त २ अवधिज्ञानवन्त ३ मनपर्यवज्ञानवन्त ४ । जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी । जे एक ज्ञानवन्त छे ते निश्चे केवल

तिम संतो ये नारकेषू स्पद्यन्ते तेषां मपर्याप्तकावस्थायां विभङ्गाभावा दाद्यमेवा ज्ञानद्वय मिति ते द्वयज्ञानिन यस्तु मिथ्यादृष्टिसंज्ञिभ्य उत्पद्यन्ते

ते मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय, जे तिअन्नाणी तेमइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगणाणी। णेरइयाणं भंते! किंणाणी अन्नाणी? गोयमा! णाणीवि अन्नाणीवि जे णाणी ते नियमा तिणाणी तंजहा—आभिणिबो हियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी। जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी एवं तिन्नि

मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनः ये त्र्यज्ञानिन स्ते मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनः। नैरयिका भदन्त! किंज्ञानिनो ऽज्ञानिनः? गौतम! ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि ये ज्ञानिन स्ते नियमा त्रिज्ञानिन स्तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानिनो श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनो ये ऽज्ञानिन स्त

ज्ञानवन्तहुवे। जे पर्याप्तो ते पर्वभरमाहुपर्याप्तो अपर्वगरयातिपर्याप्तो। जे अज्ञानवन्त हुवे, ते केतलाएक दोय अज्ञानसहितहवे केतलाएक तीन अ ज्ञानसहितहवे। ज दुपर्याप्तो तेमरपर्याप्तोय मपपर्याप्तोय। तिहां ज दोय अज्ञानवन्त तेमतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ए बे सहितहवे। जेतिपर्याप्तो ते मरपर्याप्तोय सुपपर्याप्तोय विभंगपर्याप्तोय। जे तीन अज्ञान सहितहवे ते मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ ए तीन अज्ञानसहितहवे। नेरइया णमंते किंणाणी अन्नाणी। नारको ने श्रीमहावीरे हेभगवन्! ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीवि अन्नाणीवि। हेगौतम ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे। जणाणी ते नियमा तिणाणी तंजहा। जे ज्ञानी ते निश्चे तीनज्ञान सहितहुवे, ते किम सम्यग्दृष्टी नारकोने भवप्र त्यय अवधिज्ञानके इसकारणे नियमसूं तीनज्ञानहाय ते कहेछे—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ए तीन जाणवा। जे अन्नाणी तेअत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी एवं तिन्नि भयणाए। जे अज्ञानीहुवे ते केतलाएक दोय अज्ञानसहितहुवे तथा केतलाएक तीन अज्ञानसहित हवे ते किम अमंज्ञीया जे नारकोमेविषे उपजे तेहाने अपर्याप्त अवस्थायें विभंगज्ञानना अभावथको पहिलाज दोय अज्ञानहुवे तेमाटे तथा जे मिथ्यात्वी संज्ञीयाथको उपजे तेहाने भवप्रत्यय विभंगज्ञानहुवे तेमाटे तीन अज्ञानसहितहुवे एहीज निगमकरता कहेछे—इम तीन अज्ञान भजनायें

तेषां मवमत्ययो विजङ्गो जवतीति ते भज्ञानिन एतदेव निगमय आह ॥ एवंतिविभङ्गायावि भपकाशत्ति ॥ बेइंदियाणमित्यादि ॥ द्वीन्द्रियाः के चि ज्ञानिनोपि सासादनसम्यग्दृष्टिभावमा पर्याप्तकावस्थाया भवन्तीत्यत उच्यते ॥ नाणीविअन्नाणीविति ॥ अनन्तर जीवादिषु पञ्चसतिपदेषु

अन्नाणाई नयणाए। असुरकुमाराण नंत ! किं नाणी अन्नाणी ? जहेव णेरइया तहेव तिन्नि णाणाणि नियमा तिन्नि अन्नाणाणि नयणाए एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाण नंते ! किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नोनाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी मतिअन्नाणी सुयअन्नाणी य एवं जाव वणस्सइकाइया

कवल अज्ञानिन केवल अज्ञानिन। एवं त्रीणि अज्ञानानि भजनया। असुरकुमारा भदन्त। किं ज्ञानिनो अज्ञानिनो ? यथैव नैरयिका तथैव त्रीणि ज्ञानानि नियमा त्रीण्यज्ञानानि भजनया। एवं यावत् स्तनितकुमारा। पृथ्वीकायिका भदन्त ! किं ज्ञानिनो अज्ञानिनः ? गौतम ! नोज्ञानिनो अज्ञानिनो नियमा द्व्यज्ञानिनो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिन एवं यावत् वनस्पतिकायिकाः ॥ द्वीन्द्रियाणां पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानि

कहवा। असुरकुमारानमतर्किनाणी भनाणी। असुरकुमार हेभगवन् ! स्यूं ज्ञानी तथा अज्ञानी छे इतिप्रश्न उत्तर। जनेनेरइया तसतिम नाणा पि नियमा। जिम नारकीकह्या तिमहीज तीनज्ञान नियमाय मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा केतलाएकने बे अज्ञान केतलाएकने ती न अज्ञान हुय। तिन्निअन्नाणाणि भयणाए। तीन अज्ञान भजनायेहुय। एवंजावथणियकुमाराण। इम यावत् स्तनितकुमारपर्यन्त इमहीज कहवा। पुढविकाइयाणंभंते किंनाणी अन्नाणी। पृथिवीकायिक हेभगवन् ! स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा नोनाणी अन्नाणी। हे गौ तम ! ज्ञानीनहुवे अज्ञानीहुवे। नियमादुअन्नाणी। निश्चे दोय अज्ञानीहुवे। मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय एवजावणस्सइकाइया। मतिअज्ञानी १ श्रु तअज्ञानी दोय अज्ञानसहितहुवे इम यावत् वनस्पतीकायलगे बे अज्ञानी कहवा। बेइंदियाणपुच्छा। बेइन्द्री हेभगवन् ! ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नाणीवि अन्नाणीवि। हेगौतम ! ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानीपणिहुवे। जेनाणी तेनियमादुनाणी तंजहा। जेज्ञानी ते निश्चे दो

बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि । जे णाणी ते नियमा दुण्णाणी तंजहा—आभिणिबोहिय णाणीय सुयणाणीय । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी तंजहा—मइअण्णाणीय सुयअण्णाणीय, एवं तेइंदि यचउरिंदियावि । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, जे णाणी ते अत्थे गइया दुनाणी अत्थेगइया तिणाणी एवं तिण्णिणाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए । मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंचणाणाइं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए । वाणमंतरा जहा नेरइया, जोइसियवेमाणियाणं तिण्णि

नो ज्ञानिनोऽपि । ये ज्ञानिनस्ते नियमात् द्विज्ञानिनः तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानिनश्च श्रुतज्ञानिनश्च ये अज्ञानिनस्ते नियमात् द्व्यज्ञानिनः तद्यथा—मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च । एवं त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाणाम् । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनोऽप्यज्ञानिनः । ये ज्ञानिनस्ते अस्त्येकके द्विज्ञानिनः अस्त्येकके त्रिज्ञानिनः । एवं त्रीणि ज्ञानानि त्रीणि अज्ञानानि भजनया । मनुष्या यथा जीवास्तथैव पञ्चज्ञानानि त्रीणि अज्ञानानि भजनया । वानव्यन्तरा यथा नैरयिकाः । ज्योतिष्कवैमानिकानां त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि नियमात् । सिद्धानां भदन्त ! पृ

ज्ञानसहित होवे ते कहे—आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी । मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ ए बेसहित होवे । अज्ञानी ते नियमा दुअज्ञानी त । जे अज्ञानी होवे ते निश्चे दोय अज्ञानी होवे ते कहे—मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी । मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ए बे अज्ञानवन्त होवे । एम ते इंद्रिय चउरिंद्रियावि । एम तेइन्द्रि चउरिन्द्रि पणि बेज्ञान बे अज्ञानसहित होवे । पंचिंद्रियतिरिक्खजोणियानी पृच्छा । पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक ज्ञानी होवे अथवा अज्ञानी होवे इतिप्र उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हे गौतम ! ज्ञानी पणि होवे अज्ञानी पणि होवे । जे णाणी ते अत्थेगइया दुणाणी । जे ज्ञानी होवे ते केतला एक दोयज्ञानी होवे । अत्थेगइया तिणाणी । केतलाएक तीनज्ञानी होवे । एवं तिण्णि णाणाणि । एम तीनज्ञान । तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए । तीन अज्ञान भज नाये करवा । मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंचणाणाइं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए । मनुष्य जिम जीवनि समुच्चये जीवकह्या तिम कहवा तेहीज देखाडे

मान्यऽज्ञानिम चिंतिता अयतान्येव गतीन्द्रियकायादिद्वारेषु चिंतयन्नाह ॥ निरयगइयाणमित्यादि ॥ गत्यादिद्वाराणि चैतानि ॥ गइइंदियकाए सुहुमपज्जत्तभवत्थय । भवसिद्धियसन्नी लद्धीउवओगजोगेय १ लेसाकसायवेए आहारनाणगोयरकाले । अंतरअप्पाबहुयं च पज्जवा चेददाराइं ॥ २ ॥ तत्र निरय गतिं गमनं यस्य ते निरयगतिका सया त्रिविध सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयो वा ज्ञानिना ऽज्ञानिनोवा ये पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यान्यो म

णाणाइं तिन्निअन्नाणाइं नियमा । सिद्धाण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी नियमा एगणाणी केवलनाणी । निरयगइयाण भंते ! जीवा किंणाणी अन्नाणी ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि तिन्नि

न्वा ? गौतम ! ज्ञानिनो नोऽज्ञानिनः नियमा देकज्ञानिनः केवलज्ञानिन । निरयगतिका भदन्त ! जीवा किंज्ञानिनो ऽज्ञानिन । गौतम !

पांच ज्ञान मतिज्ञान पामिइं तथा मतिअज्ञान पामिइं तीन अज्ञान भजनायेंहुवे । वाणमंतराजवावैरता जोइसियवेमाणियाणं तिन्निणाणा तिन्निअन्नाणाइं नियमा । वाणव्यंतर जिम नारकीना तिमकहवा ज्योतिषी अने वैमानिक एहने तीनज्ञान मति १ श्रुत २ अवधि ए नियेंहुवे तथा तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ एह तीन अज्ञान नियम हुवे एहनेविषे असन्नी न उपजे तेमाटे । सिद्धापुंभंतेपुच्छा । सिद्ध हे भगवन् ! ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणी णो अणाणी । हेगौतम ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी न हुवे । नियमाएगणाणी के वलनाणी । नियें एकज्ञानीहुवे केवलज्ञानसहित हुवे, अनन्तरे जीवादिक छवीसपदनेविषे तेहिज समुच्चयजीवपद १ तथा चउवीसदंडक २४ पद तथा सिद्ध एवं २६ पदनेविषे ज्ञानी तथा अज्ञानी चिंतव्या हिवे ते ज्ञाने तथा अज्ञानेकरी गतिइन्द्रिय कायादिद्वारनेविषे चिंतवता कहेछे—निरयग इयाणभंतेजीवा किंणाणीअन्नाणी । निरयगइयाणवादि तिहां पहिला गत्यादिकद्वार कहेछे—गइइ दियकाए सुहमेपज्जत्तभवत्थेय । भवसिद्धिय सन्नी लद्धोउवओगजोगेय ॥ १ ॥ लेसाकसायवेय आहारनाणगोयरेकाले । अंतरअप्पाबहुयं पज्जवाचेददाराइं ॥ २ ॥ तिहां निरयगइया नरकनेविषे गतिजाइवे गमनछेजेहना ते निरयगति कहिये, तेहने इहां सम्यग्दृष्टी तथा मिथ्यादृष्टी ज्ञानी तथा अज्ञानी जे पंचेंद्रियतिर्यंच तथा मनुष्यको

रक उत्पत्तुकामा भतरगतौ वर्तते तेनिरयगतिका विग्रहिता एत रमयोअसत्या द्वतिग्रहवस्येति ॥ तिन्निनाणाइनियमत्ति ॥ यथावे नवमत्यय स्वेनां तरगतावपि नावात् ॥ तिन्निअन्नाणाइभयणाएत्ति ॥ असञ्ज्ञिनो नरकेगच्छतां द्वे अज्ञाने अपर्याप्तकत्वे विभंगस्या भावा स्सञ्ज्ञिनातु मिथ्या दृष्टानां त्रीण्यज्ञानानि प्रथमत्वपविभङ्गस्य सद्भावा इत त्रीण्यज्ञानानि भजनयत्युच्यत इति ॥ तिरियगइयाइति ॥ तिर्यक्षु गतिं गमनं यषां ते ति र्यग्गतिका स्तथा तदपान्तरालवर्तिना ॥ दोनाणत्ति ॥ सम्यग्दृष्टयो ह्यवधिज्ञानेप्रतिपतितएव तिर्यक्षु गच्छन्ति तेन तेषां द्वे एव ज्ञाने ॥ दोअन्नाणे

णाणाइं नियमा तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तिरियगइयाणं भंते । जीवा किंनाणी अन्नाणी ? दोणाणा

ज्ञानिनां ज्ञानानिनापि त्रीणि ज्ञानानि नियमात् । त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तिर्यग्गतिका भदन्त । जीवाः किंज्ञानिनो ऽज्ञानिन । गौतम।

नरकगतिमेविषे अन्तरगतिने पने अन्तरगतिनविषे वत्त छे ते निरयगतिकविग्रहार्ये ग्रहण अत्रावको गतिमां वक्रकोथी ते निरयगतिक ब वा ख भवारे हेभगवन् ! सुं ज्ञानीहोय अथवा अज्ञानीहोय इतिप्रश्न उत्तर गोयमा ज्ञानीपण अज्ञानीपण तिहांज्ञानी नियमा । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे ज्ञानी पणिहोय तिहांज्ञानी नियमा, तीनज्ञान नियमेहुवे अवधिमे भवप्रत्ययपणे करीने अन्तरगतिमेविषे तेहना भावथकी । तिहांअ ज्ञानी भजनाए तिरियगइयाणभंतेजीवाकिंनाणी अन्नाणी । असज्ञीयाने नरके जाताने दोयअज्ञान अपर्याप्तपणे विभंगना अभावथकी तथा सञ्ज्ञी मि थ्यादृष्टिने तीन अज्ञानहुवे भवप्रत्यय विभंगज्ञानना सद्भावथकी एतलामाटे तीनअज्ञान भजनाये विकल्पकरी कहवा, तिर्यञ्चनेविषे गमनछे जेहना ते तिर्यग्गति कहिये ते विग्रहगतिमां हेभगवन् ! जीव सुं ज्ञानीहोय अथवा अज्ञानीहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोयज्ञान दोयअज्ञान नियमा अ भवप्रत्ययमते जीवा किंनाणी अन्नाणी । हे गौतम । सम्यग्दृष्टी अवधिज्ञान पतितथका तिर्यञ्चनेविषे उपजे तिर्यञ्चरी तेहने बेहोजज्ञानहुवे दोयअज्ञा नाइ मिथ्यादृष्टी पणि विभंगज्ञानप्रतिपतितथका तिर्यञ्चनेविषे जाय तिर्यञ्चरी तेहने पणि बेहोज अज्ञानहुवे तेमाटे नियमकरी मनुष्यगतिमेविषे गमनछे जेहना तेमनुष्यगति कहिये ते मनुष्यगतिक ब मानामकारे, हेभगवन् ! जीव सुं ज्ञानी अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोयाया दो

त्ति ॥ मिथ्यादृष्टयोपि विभङ्गज्ञाने प्रतिपतितएव तिर्यक्षु गच्छति तेन तेषां द्वे अज्ञाने इति ॥ मणुस्सगइयाणमित्यादि ॥ तिन्निनाणाइंभयणाएत्ति ॥ मनुष्यगतौहि गच्छति केचिज्ज्ञानिनो ऽवधिनासहैव गच्छति तीर्थकरवत् केचित्तु तद्विमुच्यति तथा श्रीजिवा द्वेया ज्ञाने स्यातामिति, मेयुन रथा मिनो मनुष्यगता वुत्पत्तुकामा सया प्रतिपतितएव विभङ्गे तत्रोत्पत्ति स्या दित्यत उक्त ॥ दोअन्नाणाइंनियमत्ति । देवगइयाणजहानिरयगइयत्ति ॥ देवगतौ ये ज्ञानिनो यातुकामा स्तेषां मवधि भवप्रत्ययो देवायुः प्रथमसमयएवो त्पद्यते ऽत स्तेषां नारकाणा मिवोच्यते ॥ तिन्निनाणाइंनियम त्ति ॥ येत्वज्ञानिनः से ऽसंज्ञिभ्य उत्पद्यमाना द्व्यज्ञानिनो पर्याप्तकत्वे विभङ्गस्या भावा त्संज्ञिभ्य उत्पद्यमानास्तु त्र्यज्ञानिनो भवप्रत्ययविभङ्गस्य

दोअन्नाणा नियमा । मणुस्सगइयाण भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी तिन्निणाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं नियमा । देवगतिया जहा निरयगतिया । सिद्धगइयाण भंते ? जहासिद्धा । सइंदियाण भंते ! जीवा किंनाणी

द्वेज्ञाने द्वअज्ञान नियमात् । मनुष्यगतिका भदन्त ! जीवाः किंज्ञानिनो ज्ञानिनः ? गौतम ! त्रीणिज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञाने नियमात् । दे

वगतिका निरयगतिकानी परेजाणवा ॥ सिद्धगतिका भदन्त सिद्धनीपरें जाणवा । ॥ हे गौतम ! तीन ज्ञान भजनायेंकरी तेविम मनुष्यगतिनेविषे आतावका केटलाएक ज्ञानी अवधिज्ञानसहित जताजाय तीर्थंकर नीपरे तिवारे तीनज्ञानकहा तथा केटलाएक अवधिज्ञानसहित नें जाय तिवारे तेहने बेज्ञानहुवे तेमाटे भजनाकही तथा जे अज्ञानी मनुष्य गतिनेविषे उपजवावाला छे तेहने विभंगज्ञान नी पर्याय तिहां उत्पत्तिहुवे तेमाटेबेअज्ञान नियमथकीहुवे, देवगतिनेविषे जे जीव आववावाला छे ते ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिभ्रन्थ नारकीनी जिम नारकीकह्या तिमकह्या तेजिम देवगतिनेविषे जेज्ञानी आववावाला छे तेहना अवधिनेभवप्रत्ययथको जीव आउखाने पहिलेसमयनेविषेज उपजे एतलामाटे तेहने नारकीनीपरें कह्या छे ते तीनज्ञान नियमथकीहुवे तथा जे अज्ञानी असंज्ञीथको उपजतावका बे अज्ञानीकह्याछे ते अपर्याप्ता अ वस्थानेविषे विभंगना अभावथको अने संज्ञीथको उपजतावका तीनअज्ञानवन्तहुवे भवप्रत्ययना विभंगना सद्भावथको एतलामाटे तेहने नारकीनीपरें क

मन्नाया दत्त म्नेषा नारकाणा मिथो ष्यते ॥ तिन्निमज्ञानाइमपवादति ॥ सिद्धिगत्यावमित्यादि ॥ यथा सिद्धा केवलज्ञानिनम्प एव सिद्धिगति का चपि वाच्या इतिनाय यद्यपिच सिद्धाना सिद्धिगतिकाना चा न्तरगत्यमाधा अविशयास्ति तथापीह गतिद्वारबलायातत्वा त्ते दर्शिता एवं द्वारान्तरेऽपि परस्परान्तनावपि तत्तद्विशपापेक्षया पर्यालोचत्य प्रावनीयमिति अथ न्द्रियद्वारे ॥ सइदियेत्यादि ॥ सेन्द्रिया इन्द्रियोपयोगवन्तः तत्र ज्ञानिना ऽज्ञानिनश्च तत्र ज्ञानिना चत्वारि ज्ञानानि भजनया स्यात् द्वे स्यात् त्रीणि स्यात् चत्वारि केवलज्ञानन्तु नास्ति तेषा अतीन्द्रियज्ञानत्वा तस्य अज्ञानिनाय ज्ञानाना साम्यपक्षया उपयोगापक्षयातु सर्वेषा मकदे कमव ज्ञान अज्ञानिनान्तु त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव स्यात् द्वे स्यात् त्रीणीति॥

अन्नाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं नयणाए। एगिंदियाणं भंते ! जीवा किं नाणी २

यगतिका यथा निरयगतिका । सिद्धगतिकाना भदत ? यथा सिद्धाः । सन्द्रिया भदत ! जीवा किं ज्ञानिनो ज्ञानिन ? गौतम! चत्वारि ज्ञा नानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । एकेन्द्रिया भदत ! जीवा किं ज्ञानिनो ज्ञानिन ? यथा पृथिवीकायिका । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया

हिवे। तिन्निअन्नाणाइं भयणाएत्ति । सिद्धिगइयाणभंते कहासिद्धा । सिद्धिगइयाणमित्यादि, जिम सिद्ध केवलज्ञानीकह्या तिम सिद्धगतिया, पणि केवलज्ञा नी कहवा इतिभाव यद्यपि सिद्धने अने सिद्धगतिकने अन्तरमति अभावथको कोइ विशेषथको तथापि इहां गतिद्वार समायात पणाथको ते देखाया इम द्वारान्तरनेविषे पणि परस्पर अंतर्भावे पणि ते तेविशेष अपेक्षायें पुनरुक्तपणो जाणवा नथी, हिवे इन्द्रियद्वार वोलोकहेछे—सइंदियाणभंते जीवा किंनाणी अनाणी । सइन्द्रिय कहिये इन्द्री उपयोगवन्त तें हेभगवन्! जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवें इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चत्तारिणाणाइ । हेगौतम । च्यारज्ञान भजनायेंहुवे तेजिम कदाचित् दोय कदाचित् तीन कदाचित् च्यार ज्ञानहुवे तेहने केवलज्ञान नहवे केवलने अतिन्द्रियपणाथको मत्यादिकभाव ज्ञानभाव अभिनो अपेक्षायें जाणवा तथा उपयोगअपेक्षायें समकालें एकदा एकहीज ज्ञानहुवे अज्ञानीता। तिन्निअन्नाणाइं भयणाए। तीनअज्ञान भजनायें हुवे किवारें दोय किवारें तीन इति। एगिंदियाणभंते जीवाकिंनाणी अनाणी अज्ञानपुछिवाइया। एकेंद्री हेभगवन्! जीव स्यू

कहापुढविकाइयत्ति ॥ एकेन्द्रिया मिथ्यादृष्टित्वा दद्यानिन स्तेष द्याज्ञानाव्ये स्यय ॥ बेइंदियेत्यादि ॥ एषा द्वेज्ञाने सासादन स्तेपू स्पष्टत इति कत्वा सासादन भावस्तत्‌ः पळावसिकामानो अतो द्वज्ञाने तेपु लभ्येते इति ॥ अणिंदियत्ति ॥ कवलिन कायद्वारे ॥ सकाइयाणमित्यादि ॥ सह काये औदारिकादिना शरीरेण पृथिव्यादिषट्‌कायान्यतरकवा कायन ये त सकाया सएव सकायिका स्तप केवलिना पि स्युरिति सकायिकाना

? जहा पुढविकाइया, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण दोणाणा दोअन्नाणा नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया । अणिंदियाण भंते! जीवा किंनाणी २ ? जहा सिद्धा । सकाइयाण भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी

वां हु अज्ञान नियमात् । पञ्चेन्द्रिया यथा सेन्द्रियाः । अनिन्द्रिया भदंत ! जीवाः किं ज्ञानिन ? यथा सिद्धाः । सकायिका भदंत ! जीवाः

ज्ञानीछुवे अथवा अज्ञानीछुवे इतिप्रश्न उत्तर जिम पृथिवीकायिक कह्या तिमकहवा एकेंद्रीय मिथ्यादृष्टि पणावतो अज्ञानवंतछुवे ते पणि बेइंद्री इत्य च । बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाण दोणाणा दोअन्नाणानियमा । एहाने बेज्ञानछुवे सासादन सम्यक्त्ववंत एहानेविषे अपर्याप्त पणे सासाद न गुणठाणो छ पामवो तो २६ एतलामाटेबेज्ञान तेहनेविषे पामीयें तथा बेज्ञान ते नियमाथी हवे । पंचिंदियाजहासइंदिया । पंचेंद्री जिम सइंद्री कह्या तिम चारज्ञान तीन अज्ञान भजनायें कहवा । अणिंदियाणंभंतेजीवा किंणाणी जहासिद्धा सकाइयाणभंते जीवाकिंणाणी अन्नाणी । अ निंद्रिय ते केवली ते हेभगवन् ! जीव स्यूं ज्ञानीछुवे अथवा अज्ञानीछुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! जिम सिद्ध केवलज्ञानीकह्या तिम अनिंद्रिय पणिक हवा । जिव कोना कायदार कहेछे—औदारिकादिकशरीर ते काय कहिय तेणे सहित ते सकायिक अथवा पृथिव्यादिक सकाय तेमाहे एककाय कोई करी सहित ते सकायिक कहिये ते हेभगवन् ! स्यूं ज्ञानीछुवे अथवा अज्ञानीछुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । हेगौतम ! केवली पणि सकायिक कहिये तेमाटे सकायिक सम्यग्दृष्टीने पंचज्ञानछुवे, मिथ्यादृष्टीने तीन अज्ञान भजनायेंछुवे तेमाटेएम पंचणाणाइं इत्यादि । पुढविकाइया जावंवणस्सइकाइया । पृथिवीकायिक १ अप्कायिक २ तेजकायिक ३ वायुकायिक ४ वनस्पतीकायिक ५ ए पचना अज्ञकोधी

सम्यग्दृष्टीनां पञ्चज्ञानानि मिथ्यादृष्टीनां तु त्रीणि अज्ञानानि भजनया स्युरिति ॥ सकायिकाश्चेति ॥ नास्तिकाय उक्तलक्षणो येषां ते सकायाः त एव का यिकाः सिद्धाः सूक्ष्मद्वारं ॥ अथ पृथ्वीकायादीनि ॥ अज्ञानिनः सूक्ष्मा मिथ्यादृष्टित्वा दित्यर्थ ॥ अथ सकायिकाः ॥ बादराः सकायिकानपि भजनी

? गा० ! पञ्च नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, नोनाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी त०—मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय । तसकाइया जहा सकाइया । अकाइयाणं भंते! जीवा किंनाणी२ ? जहा सिद्धा। सुहुमाणं भंते! जीवा किंनाणी२ ? जहा पुढविकाइया। बादराणं भंते ! जीवा कि

किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? गौतम ! पञ्च ज्ञानानि त्री अज्ञानानि भजनया । पृथिवीकायिका यावत् वनस्पतिकायिका नोज्ञानिनो ज्ञानिना नि यमात् द्व्यज्ञानिन तद्यथा—मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च । त्रसकायिका यथा सकायिका । अकायिका भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनो ऽज्ञानि नः ? यथा सिद्धाः । सूक्ष्मा भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनः ? यथा पृथिवीकायिकाः । बादरा भदन्त ! जीवा किं ज्ञानिनः ? यथा सकायिका ।

तिहां उत्तर पांच ज्ञानी अज्ञानी विषमात्रपणाओ तेजक । ए ज्ञानी नहुवे जमाट साधारण सम्यक्त्व पदि पञ्चज्ञानविये अपयोगथी तेमाटे ज्ञानविये भा पम लिये इणवज्ञान सहितहवे ते कहेछे—मत्यज्ञानीअमपञ्चज्ञानीय । मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी ए बेअज्ञानयतहवे । तसकायाजसकायना । सकायिक जिम सकायिकजना तिम पञ्चज्ञान तीनअज्ञान भजनायें इहां पणिकहवा । अकाइयाणभंते जीवाकिनाणी अन्नाणी ४ । नकाये का यउत्पन्नपणा जेहने ते अकायिक जिवमना पउडमेगुणठाणे यागर्भे ते अजना सिद्ध इत्यर्थ, ते केवलज्ञान ! सूं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर जिम केवलज्ञानी कह्या तिम ए पणिकहवा जिवे सूक्ष्मद्वार कहेछे—सुहुमाणभंते जीवाकिनाणी अन्नाणी पुढविकाइयावं । सूक्ष्म केवलज्ञान, जीव स्यूं ज्ञा नी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जिम पृथ्वीकायिकना एतले ज्ञानी नहुवे पणे नियमे दोयअज्ञानीहुवे मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी ! बादराणभंतजीवाकिनाणी अन्नाणीया । बादर केवलज्ञान ! जीव स्यूं ज्ञानी ? अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! जिम सकायिक । बामुष्

ति कृत्वा त मत्यादिकव तृजनया पन्चज्ञानिन स्यज्ञानिमव याच्या इति पर्याप्तकद्वारे ॥ जद्दासकाइयाति ॥ पर्याप्तका केवलिनोपि स्युरिति ते मत्यादिकव स्पूर्वोक्तप्रकारेव वाच्याः पर्याप्तकद्वारएव चतुर्विंशतिदण्डके पर्याप्तकनारकाणां ॥ तिन्नियमणाणानियमात्ति ॥ अपर्याप्तकानामेवा संज्ञि नारकाणां विभङ्गाभावइति पर्याप्तकावस्थायां तेषां सद्भावमयमेवति ॥ एयजायचउरिंदियत्ति ॥ द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका ज्ञानिन

नाणी२ ? जहा सकाइया। नोसुहुमा नोबादरा णं भंते! जीवा ? जहा सिद्धा । पज्जत्ताणं भंते! जीवा किंणाणी२ ? जहा सकाइया। पज्जत्ताणं भंते! नेरइया किंणाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया एवं जाव चउरिंदिया। पज्जत्ताणं भंते !

नासूक्ष्मा नोबादरा भदंत ! ? यथासिद्धाः । पर्याप्ता भदंत ! जीवा ? यथा सकायिका । पर्याप्ता भदंत ! नैरयिकाः किं ज्ञानिनः ? त्रीणि ज्ञा नानि त्री ण्यज्ञानानि नियमा यथा नैरयिका एव याव स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिका यथा एकेन्द्रिया एव याव चतुरिन्द्रिया । प

नोबादरा हे भगवंते जीवा । नहीं सूक्ष्म नहीं बादर ते सिद्ध ते हे भगवन् ! ज्ञानी तथा अज्ञानी ए इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम ! जिम सिद्ध केवलज्ञा नी कह्या तिम ए पणि कहवा जिवे पर्याप्तद्वारकहे छे—पज्जत्ताणभंते जीवा सकाइया । पर्याप्ता हे भगवन् ! जीव ज्ञानी अथवा अज्ञानी छे इतिप्र श्न उत्तर जिम सकायिकने पांच ज्ञान तीनअज्ञान भजनायें कह्या तिम इहां पणि कहवा जेमाटे पर्याप्ता जीवछे पणि छे पर्याप्तद्वारने विषे केवल ज्ञानी म इहा कहे छे—पज्जत्ताणभंते नेरइयाकिंणाणी तिन्निणाणा तिन्निअन्नाणा नियमा । पर्याप्ता हे भगवन् नारकी ए ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर हे गौतम तीनज्ञान तीनअज्ञान नियमथकी हुवे अपर्याप्ताने होज असंज्ञी नारकीने विभंगज्ञाननो अभावछे, पणि पर्याप्तपणाने विषे ते तो न अज्ञानहुवे तथा । जहानेरइया एव जावथणियकुमारा। जिम नारकीकह्या तिम असुरकुमार आदिदेइ स्तनितकुमारपर्यंत पर्याप्तने तीनज्ञान तो न अज्ञान नियमेकहवा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया एव जाव चउरिंदिया । पृथिवीकायिक पर्याप्ता जिम एकेंद्रीकह्या तिमकहवा इम यावत् चउ

पृथत्त्वमः ॥ पज्जत्ताव भंते ! पचिंदियतिरिक्खेत्यादि ॥ पर्याप्तकपञ्चेन्द्रियतिरिया मयपि विजङ्ग्रोश केषाचित् स्या स्वपाचि त्युम मंति श्री

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किंणाणी २ ? तिण्णिणाणा तिण्णिअण्णाणा भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया । अपज्जत्ताणं भंते ! जीवा किंणाणी २ ? तिण्णिणाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । अपज्जत्ताणं भंते ! नेरइया किंणाणी २ ? तिण्णि नाणा नियमा तिण्णिअण्णाणा भयणाए

प्ताप्ता भदत ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका कि ज्ञानिनः २ ? त्रीणि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । मनुष्या यथा सकायिकाः । वानव्यन्तरज्यो तिष्कवैमानिका यथा नैरयिकाः । अपर्याप्ता भदत ! जीवा किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? त्रीणिज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । अपर्याप्ता भ दत ! नैरयिकाः कि ज्ञानिनः २ ? त्रीणि ज्ञानानि नियमात् त्री ण्यज्ञानानि भजनया एव यावत् स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिका याव द्

रिन्द्री तार अथवा जे विकलेंद्री पर्याप्ता अपज्ञानपद जे जवे सासादन सम्यक्त्व अभावथको तेमाट एकेंद्रीनीपरे कह्या । पज्जत्ताणभंतेपचिंदियति रिक्खजोणिया किंणाणी अण्णाणी । पर्याप्ता हेभगवन् पचेंद्रीतिर्यचयोनिया न्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम पर्याप्ता पचेंद्रिय तिर्यचने अवधि अथवा विभंग कादाचित हुवे तेमाटे तीनज्ञान तीनअज्ञान अथवा बेज्ञान बेअज्ञान तदनेहुवे मनष्य जिम सकायिककह्या तिम कहवा एतले पचज्ञान तीनअज्ञान भजनाये हुय । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहानेरइया । वानव्यंतर ज्योतिषी वेमानिक ए तीन जिम ना रकी कह्या पूर्वे तिमकहवा एतले तीनज्ञान तीनअज्ञान नियमे कहवा । अपज्जत्ताणंभंतेजीवाकिणाणी अण्णाणी । अपर्याप्ता हेभगवन् जीव न्यू ज्ञानी वे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । तिण्णिणाणाइं तिण्णिअण्णाणाइंभयणाए । तीनज्ञान तीनअज्ञान भजनाये विकल्पहुवे । अपज्जत्ताणभंत नेरइयाकिंणाणी अण्णाणी । अपर्याप्ता हेभगवन् नारकी न्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । तिण्णिणाणाइंनियमा तिण्णिअण्णाणाइंभयणाए । इयातम तीनज्ञानता नियमेहुवे अन तीन अज्ञान भजनायें विकल्पेंहुवे ते असंज्ञीथको ऊपजता ते अपर्याप्ताने विभंगना अभावथको बे अज्ञानहुवे, त

त्रि ज्ञानानि स्यादज्ञानानि वा द्वे वा ज्ञाने अज्ञाने वा तेषां स्यातामिति ॥ बेइंदियाणं दोनाणेत्यादि ॥ अपर्याप्तकद्वीन्द्रियादीनां केषांचित् स्वासादन सम्यग्दर्शनस्य सद्भावात् द्वे ज्ञाने केषांचित् तुन तस्या असद्भावात् द्वे एवा ज्ञाने अपर्याप्तकमनुष्याणां पुनः सम्यग्दृशां अवधिभावे त्रीणि ज्ञानानि यथा

एवं जाव थणियकुमारा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया। बेइंदियाणं पुच्छा ? दोणाणा दोअन्नाणा नियमा एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं। अपज्जत्तगा णं भंते ! मणुस्सा किंनाणी२ ? तिन्नि

वनस्पतिकायिका यथा एकेन्द्रियाः । द्वीन्द्रियाणां पृच्छा ? द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने नियमात् । एवं यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । अपर्याप्ता भ

वा अज्ञानी जाणवा तिहां तीन अज्ञानहुवे एम भजना जाणवी एम यावत् स्तनितकुमारपर्यंत कहवा नारकीनीपरे तीनज्ञाननियमें तीनअज्ञान भज नाइंहुवे । पृथ्वीकाइया जावत वनस्पतिकाइया एकेन्द्रिया। पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतीकायिकपर्यंत पूर्वे जिम एकेंद्री कह्या तिम ए परिवकहवा एतले ज्ञानीनहीं एतले अज्ञान नियमेहुवे। बेइंदियाणपुच्छा दो णाणा दोअण्णाणा णियमा । बेइन्द्रीना प्रश्नबोधा उत्तर अपर्याप्ता बिगलेंद्रीनेविषे वा इणनें सासादन सम्यग्दर्शनना सद्भावथकी बेज्ञानहुवे तेहना असद्भावथकी दोयअज्ञानहुवे तेमाटे नियम इसोकह्यु। एवंजावपंचिंदियतिरिक्खजोणि याणं। एम यावत् पचेंद्री तिर्यंचनो कहवा, अपर्याप्तानेविषे बेज्ञान बेअज्ञान नियमेहुवे। अपज्जत्ताणंभंते मणुस्सा किंणाणी अण्णाणी तिण्णिणाणाइं भ यणाए दोअण्णाणाइं णियमा। अपर्याप्ता हेभगवन् मनुष्य स्युंज्ञानी ? अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम तीनज्ञानभजनाइंहुवे तेजिम अप र्याप्तकमनुष्यनें सम्यक्तीने अवधिना भावथकी तीनज्ञानहुवे जिम तीर्थंकरने अने अवधिने अभावे ता बेज्ञानहुवे तेमाटे भजनाथकी मिथ्यात्वीने बेयो अ अज्ञानहुवे मनुष्यने अपर्याप्तपणे विभंगना अभावथकी । वाणमंतराजहाणेरइया अपज्जत्तगा । वाणव्यंतर अपर्याप्ताने नारकीनीपरे तीनज्ञान बे अज्ञान तथा तीन अज्ञानभजना कहवा, व्यंतरनेविषे पणि असंज्ञीथकी उपजतावकाने अपर्याप्ताने विभंगना अभावथकी बेअज्ञान शेषने अवधिना तथा विभंगनाभावथकी तीनअज्ञानहुवे तेमाटे नारकीनीपरे कह्या । जोइसियवेमाणियाणं तिण्णिणाणा तिण्णिअण्णाणा णियमा । जोइसिएत्यादि, ज्योति

तीथकरावो तन्मावेन देयाने मिथ्यात्वात् द्वेएवा ज्ञाने विभङ्गस्वा पर्याप्तकत्वे तेषां समावा दसएवोक्त ॥ सिन्निनाणाइंजयणाएदोअन्नाणाइंनि यमत्ति ॥ वाणमंतरेत्यादि ॥ व्यंतरा अपर्याप्तका नारका इव त्रिज्ञाना द्व्यज्ञाना स्यज्ञानावा वाच्या स्तेषु असंज्ञिभ्य उत्पद्यमानानां अपर्याप्तका नां विभङ्गाभावा त्येषाचांना यदे विभङ्गस्यचा भावात् ॥ जोइसियेत्यादि ॥ एतेषुहि संज्ञिभ्यएवो त्पद्यन्ते तेषाचा पर्याप्तकत्वेपि भवप्रत्ययस्या व धे विभङ्गस्य वा सद्भावा त्त्रीणि ज्ञाना न्यज्ञानानिवा ; स्युरिति ॥ नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगत्ति ॥ सिद्धा, भवस्यद्वारे ॥ निरयभवत्थाणमित्यादि ॥ निरयभवे तिष्ठन्तीति निरयभवस्था प्राप्तोत्पत्तिस्थाना स्तेच यथा निरयगतिका स्त्रिज्ञाना द्व्यज्ञाना स्यज्ञाना श्चोक्ता स्तथावाच्या इति भवद्वारे ॥ भ

नाणाइं जयणाए दोअन्नाणाइं नियमा । वाणमंतरा जहा नेरइया अपज्जत्तगा जोइसियवेमाणियाणं तिन्निना णा तिन्नि अन्नाणा नियमा । नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ जहासिद्धा । निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी १ जहा निरयगइया । तिरियभवत्थाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? तिन्नि

दत ! मनुष्याः किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? त्रीणि ज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञाने नियमात् । वानव्यन्तरा यथा नैरयिका अपर्याप्ता । ज्योतिष्कवैमा निकानां त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि नियमात् । नोपर्याप्ता नाअपर्याप्ता भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? यथा सिद्धाः । निरयभ

वो वैमानिकनेविषे संज्ञीनाथकीज उपजे तेहने अपर्याप्तअवस्थायें पण भवप्रत्यय अवधिना अथवा विभंगनो अवश्य भावछे तेमाटे त्रीणज्ञान अथवा त्रीण अज्ञाननीयमे तेमाटेकह्यं । नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगाअभते जीवाकिंनाणी अन्नाणी जहासिद्धा । नथी पर्याप्ता नथी अपर्याप्ता ते सिद्धजाणवा ते हभगवन् जीव स्युं ज्ञानी अज्ञानीछे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिमसिद्धजाणवा तिम एपणि कहवा एतलेएक केवलज्ञानपणे कहवा ७ । हिवे भवद्वार कहेछे—निरयभवत्थाअभते जीवाकिंनाणी अन्नाणी जहा निरयगइया । नरक भवनेविषे रहे ते नरक भवस्थ कहिये पाम्या उत्पत्तिस्थान ते हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीछे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिम नरकगतिक त्रीणज्ञानवन्त नियमेत्रीणअज्ञानभज्य भजनायें तिम एपणि क

ज्ञानआश्रयाति ॥ भवसिद्धिका केवलिनोपीति ते सकायिकवत् ज्ञानया पञ्चज्ञाना लभ्या यत्र सम्यक्त्व समतिपन्ना लाव ज्ञानमेव भ्यवानाम आच्याव

णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। मणुस्सभवत्था जहा सकाइया। देवभवत्थाणं भंते! जहा निरयभवत्था, अभवत्था? जहा सिद्धा। भवसिद्धियाणं भंते! जीवा किंनाणी? जहा सकाइया। अभवसिद्धियाणं पुच्छा

वस्था भदन्त! जीवाः किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः? यथा निरयगतिका। तिर्यग्भवस्था भदन्त! जीवाः किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः? द्वीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। मनुष्यभवस्था यथा सकायिकाः। देवभवस्था यथा निरयभवस्थाः। अभवस्था यथा सिद्धाः। भवसिद्धिका भदन्त!

थया। तिरियभवत्थाणभंते जीवाकिंनाणीअन्नाणी तिन्निनाणाइ तिन्निअन्नाणाइं भयणाए। तिर्यचभवस्थ हेभगवन् जीव सूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीछे ए प्रश्न उत्तर हेगौतम ज्ञानज्ञान पामीपरे भजनायेंकरी हुवे तीनअज्ञान पणि भजनायेंकरी अथवा केतलाएकने मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ ए तीनहवे। मनुस्सभवत्थाजहासकाइया। मनुष्यभवस्थ जिम सकायिकना तिमकहवा एतले पञ्चज्ञान तीनअज्ञान भजनायें हुवे। देवभवत्थाजहानिरयभवत्था अभवत्थाजहासिद्धा ८। देवभवस्थ जिम नरकभवस्थवाला तिमकहवा, एतले तीन ज्ञानवन्त तथा बे अज्ञानवन्त तथा तीन अज्ञानवन्त हुवे अभवस्थ ते सिद्धजीवपरे कहवा भवनेविषे नरह्या तिमाटे तेहने एक केवलज्ञान कहवा, हिव अनुवार कहेछे—भवसिद्धि याणभंते जीवाकिंनाणी जहा सकाइया। भवसिद्धिक हेभगवन् जीव सूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीछुवे इतिप्रश्न उत्तर भवसिद्धिक जीवने पणि कायिये सकाइ सकायिकनीपरे भजनायें पञ्चज्ञान कहवा, तथा कालगे सम्यक्त्व लपाम्या तेहने भजनायें तीनअज्ञान कहवा। अभवसिद्धियाणपुच्छा गोयमा नोनाणी अन्नाणी तिन्निअन्नाणाइभयणाए। अभव्यना प्रश्ननोथा उत्तर हेगौतम! अभवसिद्धियाकहिये अभव्य तेहने तीन अज्ञानछोत भजनायेंकरी तेह न मदन मिथ्यादृष्टि पणाथको एतलामाटे ज्ञान नथी ज्ञानरूपे अज्ञानीजहुवे तीनअज्ञानभजनायेंहुय। नोभवसिद्धिय नोअभवसिद्धियजीवा जहासिद्धा ८। नथी भवसिद्धिक नथी अभवसिद्धिक ते सिद्धजीव जहा सिद्धनापरेजहवा एतले सिद्धमाएगनाणी केवलनाणी। हिवे संज्ञीद्वार कहेछे—सन्नी

ति भव्यसिद्धिकाना त्वज्ञानत्रयं भजनया स्या त्सदा मिथ्यादृष्टित्वा दीपा मत उक्त ॥ नोभाजीवमाणोस्यादीति ॥ संज्ञिद्वारे ॥ असञ्ज्ञिइन्दियत्ति ॥ ज्ञानानि चत्वारि भजनया अज्ञानानित्र त्रीणि तथैवस्यथ ॥ असञ्ज्ञीअज्ञामेइंदियत्ति ॥ अपर्याप्तकावस्थायां ज्ञानद्वयमपि सासादनतया स्यात् प र्याप्तकावस्थाया त्वज्ञानद्वय मव त्यथः संज्ञिद्वार सविपनेदाम् दप्रयन्ताइ ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ तत्र लब्धि रात्मनो ज्ञानादिगुणानां तत्तत्क र्मक्षयादितो लाभ साथ दशविधा तत्र ज्ञानस्य विशेषबोधस्य पञ्चप्रकारस्य तथाविधज्ञानावरणक्षयक्षयोपशमात्त्या लब्धि र्ज्ञानलब्धि रेव मन्य

? गोयमा। नोणाणी अण्णाणी तिण्णिअण्णाणाइं भयणाए। नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धियाणं जीवा जहा सिद्धा। सण्णीणपुच्छा जहा सइंदिया, असण्णी जहा बेइंदिया, नोसण्णी नोअसण्णी जहा सिद्धा॥ कइविहाणं भंते! लद्धी प० गोयमा! दसविहा लद्धी प०, तंजहा—नाणलद्धी १ दंसणलद्धी २ चरित्तलद्धी ३ चरि

जीवाः किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? यथा सकायिकाः। अभवसिद्धिकाना पृच्छा ? गौतम! नाज्ञानिनो अज्ञानिन स्त्रीण्य ज्ञानानि भजनया। नो भवसिद्धिका नोअभवसिद्धिका जीवा यथा सिद्धाः। संज्ञिना पृच्छा ? यथा सेन्द्रियाः। असंज्ञिनो यथा द्वीन्द्रियाः। नोसंज्ञिनो असंज्ञिनो य था सिद्धाः। कतिविधा भदन्त! लब्धि प्रज्ञप्ता ? गौतम! दशविधा लब्धिः प्रज्ञप्ता तद्यथा—ज्ञानलब्धि दर्शनलब्धिः चारित्रलब्धि चा

नपरज्ञा अज्ञानइंद्रिया ममनोअवधिइंद्रिया। सम्यो भगवन् इत्यादि प्रश्नजीवा उत्तर जिम सइन्द्रियकह्या तिम चारज्ञान तीन अज्ञानभजनाइं च इवा असंज्ञी जिम बेइन्द्रीकह्या तिमकहवा अपर्याप्तक अवस्थामेविषे ज्ञान २ पणि सासादनपणेइज पर्याप्तक अवस्थाई ता अज्ञानहोयतोज हुवे। वा मनो नाअसन्नी जहासिद्धा १ । नहीसज्ञी नहीअसज्ञी ते जिम सिद्धनिअधिकारे पछे तीनअज्ञानी कह्या तिमकहवा हिवे लब्धिभेद देखाडता कहेछे—क इविहाणभंते लद्धी प । केतलाभेदे भगवन् लब्धिलब्धी लब्धिकहिये आत्माने ज्ञानादिगुणना ते ते कर्मना क्षयथकी लाभ ता लब्धिकहिये इतिप्रश्न उ त्तर। गोयमा दसविहालद्धी प त । हे गौतम दशभेदे लब्धि कहिये ते कहेछे—ज्ञानलब्धी दर्शनलब्धी। ज्ञानविशेषावबोध ते पञ्चप्रकारे तथाविध ज्ञा

प्राधि मयर्दर्शन कविरूप धात्मन परिणाम चरित्र चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमोपशमजो जीवपरिणाम तथा चरित्रच तदचरित्रचेति चरित्रा चरित्रं संयमासंयम तथा प्रत्याख्यानावरणक्षयोपशमजो जीवपरिणामः दानादिलब्धयस्तु पञ्चप्रकारान्तरायक्षयक्षयोपशमसम्भवा इदम सम्झोजन मन्नमादीना भागः पौनःपुन्यन चोपजोजन मुपभागः स च वस्त्रभवनादे र्दानादीनितु प्रसिद्धानीति तथा इन्द्रियाणा स्पर्शनादीनां मतिज्ञानावरण क्षयोपशमसम्भूतानां मनोन्द्रियादिजातिनामकर्मोदयनियमितक्रमाणां पर्याप्तकनामकर्मोदिसामर्थ्यसिद्धानां द्रव्यभावरूपाणां लब्धि रासम इती

त्ताचरित्तलद्धी ४ दाणलद्धी ५ लाभलद्धी ६ भोगलद्धी ७ उवभोगलद्धी ८ वीरियलद्धी ९ इंदियलद्धी १०। णाणलद्धीण भंते! कतिविहा प० ? गो०! पंचविहा प०, तं०—आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवलनाण लद्धी। अन्नाणलद्धीण भंते! कइविहा प० ? गोयमा! तिविहा प०, तंजहा—मइअन्नाणलद्धी सुयअ

रित्राचारित्रलब्धिः दानलब्धिः लाभलब्धिः भोगलब्धिः उपभोगलब्धिः वीर्यलब्धिः इन्द्रियलब्धिः। ज्ञानलब्धि भदन्त! कतिविधा प्र ज्ञप्ता ? गौतम! पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि यावत् केवलज्ञानलब्धि। अज्ञानलब्धि भदन्त! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ

नावरण क्षयोपशमथकी थाय ते ज्ञानलब्धि इम बोलखाना पचिवजा, १ वलिक्ष्य आत्मपरिणाम ते दर्शनसामान्यावबोध तेहनी लब्धि २। चरित्र थको चरित्राचरित्रथको दानथको लाभथको भोगथको उवभोगथको वीरियलब्धि इंद्रियथको। चारित्रमोहनीय क्षयोपशमथको उपनो जीवपरिणाम ३ मउमा संयम पच्चख्याण कषाय क्षयोपशमथको उपनो जीवपरिणाम ४ पांचप्रकार अन्तराय क्षयक्षयोपशमथको उपनो ते लब्धि ५ लाभान्तराय क्षयक्षयोपशमथको उपनो ते लब्धि ६ एकवार जे भोगवीये ते भोग अशनादि तेहनीलब्धि ७ वार २ जे भोगवीये ते वस्त्र भवनादि तेहनीलब्धि ८ वीर्य क्षमानिगति तहनी लब्धि ८ इन्द्रियस्पर्शनादि तेहनी मतिज्ञानावरण क्षयोपशम समूत तेहनीलब्धि ते १। ज्ञानलब्धि भगवंतजी कितने प्रकार कही छै? भगवन् गौतम स्वामीनो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहा पं तं०। हे गौतम पांचभेदे कही ते कहे छे—आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि जाव केवल

ज्ञिपमवि: मय घामसाप विपर्यस्तरूपाऽज्ञानलाेप रित्यज्ञानलब्धिमिरूपणायाह ॥ चलारलद्धीत्यादि ॥ सम्मर्द्दंसणेत्यादि ॥ दय सम्यग्दर्शन मि
थ्यात्वमाहनीयकर्माणुवेदना १ पशम २ क्षय ३ क्षयोपशम ४ समुत्थ आत्मपरिणाम मिथ्यादर्शन मशुद्धमिथ्यात्वदलिकोदयसमुत्थो जीवपरिणामः
सम्यग्मिथ्यादर्शनं] अर्द्धविशुद्धमिथ्यात्वदलिकोदयसमुत्थ आत्मपरिणामरूप ॥ सामाइयचरित्तलद्धित्ति ॥ सामायिकं सावद्ययोगविरतिरूपं एतदेव च
रित्र सामायिकचरित्र तस्य लब्धिः सामायिकचरित्रलब्धिः सामायिकचरित्र च द्विधा इत्वर यावत्कथिकं च तत्रा ल्पकाल मित्वर तच्च भरतैरावतेषु

णाणलद्धी विभंगणाणलद्धी। दंसणलद्धीण भंते! कतिविहा प० ? गोयमा! तिविहा—सम्मद्दंसणलद्धी मि
च्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी। चरित्तलद्धीण भंते! कइविहा प० ? गोयमा! पंचविहा पन्नत्ता।

तम। त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—मत्यज्ञानलब्धिः श्रुताज्ञानलब्धि विभंगज्ञानलब्धि। दर्शनलब्धि भदन्त! कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौतम! त्रिवि
धा प्रज्ञप्ता तद्यथा—सम्यग्दर्शनलब्धि मिथ्यादर्शनलब्धिः सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिः। चारित्रलब्धि कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौतम! पञ्चविधा

णलब्धी। मतिज्ञानलब्धि १ श्रुतज्ञानलब्धि २ अवधिज्ञानलब्धि ३ मनपर्यवज्ञानलब्धि ४ केवलज्ञानलब्धि ५। अज्ञानलब्धिभंते कतिविहा प०। अज्ञान
लब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिविहा प० त०। हेगौतम तीनभेदे कही ते कहेछे—मइअन्नाणलद्धी सुयअन्नाणलद्धी विभंग
णाणलद्धी ३। मतिअज्ञानलब्धि १ श्रुतअज्ञानलब्धि २ विभंगज्ञानलब्धि ३। दंसणलद्धीणंभंते कइविहा प०। दर्शनलब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही इति
प्रश्न उत्तर। गोयमा तिविहा प० त०। हेगौतम तीनभेदे कही ते कहेछे—सम्मदंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी। मिथ्यात्वमोहनीय
कर्म अनुदय उपशम तेहथी ऊपनो आत्मपरिणाम ते समकितदर्शन १ अशुद्धमिथ्यात्व दलना उदयथकी ऊपनो जीव परिणाम मिथ्यादर्शन २ अर्द्ध शु
द्ध दलना उदयथकी जे ऊपनो आत्मपरिणाम ते ३ इत्यादिक लब्धि ते। चरित्तलद्धीणंभंतेकइविहा प०। चारित्रलब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही
इति प्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहा प० त०। हेगौतम पांचभेदेकही ते कहेछे—सामाइयचरित्तलद्धी। सावद्ययोग विरतिरूप पहीलु चरित्र ते सा

प्रथमपश्चिमतीर्थंकरतीर्थयोया मारोपितव्रतस्य शिष्यकस्य प्रवर्ति यावत्कथिकत्वं यावज्जीविक तथ मध्यमद्वाविंशतिकतीर्थकरतीर्थान्तर्गतसाधूनां भवविदेहतीर्थकृतां च साधूनां सामायिकं यावज्जीविकमेव तेषां मुपस्थापनाया अभावात् नन्वित्वरस्यापि यावज्जीवतया प्रतिज्ञाया तस्यैव चोपस्थापनाया परित्यागात् कथं न प्रतिज्ञालोपः ? अत्रोच्य त प्रतिज्ञामात्रा सर्वस्य सामान्यतः सावद्ययोगनिवृत्तिरूपत्वा वस्थितस्य शुद्धतरतापादनेन सम्ज्ञामात्रभेदमापादितं ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्रलब्धि ति ॥ छेद प्राक्तनपर्यायस्य व्यवच्छेदस्तेन युक्तमुपस्थापनीय साधा वारोपणीय त छेदोपस्थापनीय पूर्वपर्यायच्छेदेन महाव्रतानामारोपण मित्य र्थः तच्च सातिचार मनतिचारं च तत्रा नतिचारं यदित्वरसामायिकस्य शिष्यकस्या रोप्यते तीर्थान्तरसंक्रान्तौ वा यथा पार्श्वनाथतीर्थाद् वर्द्धमानस्वा मितीर्थ संक्रामतः पञ्चयामधर्मप्रतिपत्तौ सातिचारम्‌ तु मूलगुणघातिनो य द्व्रतारोपणं तच तच्चारित्रं छेदोपस्थापनीयचारित्र तस्य लब्धि छेदोपस्था

तजहा—सामाइयचरित्तलद्धी छेदोवठावणियलद्धी परिहारविसुद्धि चरित्तलद्धी सुहुमसंपरायचरित्तलद्धी अह

तद्यथा तद्यथा—सामायिकचारित्रलब्धि छेदोपस्थापनिकचारित्रलब्धिः परिहारविशुद्धिचारित्रलब्धिः सूक्ष्मसंपरायचारित्रलब्धि यथा ख्या

मायिकचारित्र तेहनो लब्धि तेहना बेप्रकार इत्वर १ यावत्कथिक २ तिहां पहेलाछेल्ला तीर्थंकरवारे इत्वरकथिक १ ते भरत ऐरवतक्षेत्रनेविषे पहिला छेहला तीर्थंकरनेवारे प्रमाद्यकालनावत निमन्त्रनेविषे यावत्कथिक ते यावज्जीव ते बिचला २२ तीर्थंकर तथा महाविदेहतीर्थंकर तीर्थ पामता साधुने लो गवा तेहने उपस्थापना प्रमाणयको । छेदोपस्थापनिकचारित्रलद्धी परिहारविशुद्धिचारित्तलद्धी । पूर्वसंयमनो व्यवच्छेद कोवानीया जे उपस्थापनीय सा धर्मे धारावनोय ते पूर्व पर्याय छेदकरी महाव्रतना आरोपण इत्यर्थ तेहना दोयभेद सातिचार १ निरतिचार २ तिहां निरतिचार ते इत्वरसामायि कनाशिष्यने पाग्योमे पथवा तीर्थान्तर संक्रातिनेविषे जिम पार्श्वनाथ तीर्थंकरथी वर्द्धमानस्वामी तीर्थमें संक्रमतांमधर्म पंचयामधर्म मातिवनाडुवे सातिचार ते मूलघातीने जे व्रतना आरोपण करवा ते चरित्र ते छेदोपस्थापनीय चरित्र तहनीलब्धि ते छेदोपस्थापनीय चरित्र लब्धि, परिहार कहि ये तपविशेष तेहथकी विशुद्धता यामान् निरमलपणुं छे जेहनेविषे ते परिहारविशुद्धिक कहिये ते रूप जे चरित्र ते परिहारविशुद्धिचरित्र तेहना

नीयचारित्रमिति ॥ परिहारविशुद्धिचारित्रमिदं तु ॥ परिहार तपोविशेष तेन विशुद्धि यस्मिन् स परिहारविशुद्धिक शेष तथैव एतच्च द्विविधं निर्विशमानकं निर्विष्टकायिकं च तत्र निर्विशमानका तदासेवका तदव्यतिरेका तदपि निर्विशमानकं आसेवितविवक्षितचारित्रकाया स निर्विष्टकाया सएव निर्विष्टकायिका तदव्यतिरेका तदपि निर्विष्टकायिकमिति इह च नवको गणो भवति तत्र चत्वारः परिहारिका भवंति अपरेतु तद्वैयावृत्त्यकरा चत्वारस्त्वनुपरिहारिका एकस्तु कल्पस्थितो वाचनाचार्यो गुरुभूतश्चेत्यर्थः एतेषाञ्च निर्विशमानकानामयं परिहारः – परिहारियाणउतवो जहन्नमज्झोतहयउक्कोसो । सीउण्हवासकाले भणिओधीरेहिंपत्तेयं ॥ १ ॥ तत्थजहन्नोगिम्हे चउत्थछट्ठंतुहोइमज्झिमओ । अट्ठमभिहउक्कोसो एत्तोसिसिरेपवक्खामि ॥ २ ॥ सिसिरेउजहन्नाई छट्ठाइदसमचरममार्होति । वासासुअट्ठमाइ बारसपज्जतईमेइ ॥ ३ ॥ पारणगेआयाम पञ्चसुगहदोसुभिग्गहोभिक्खे । कप्पट्ठियापइदिण करेंतिएमेवआयामं ॥ ४ ॥ इह सप्त त्वेषणासु मध्ये आद्ययो रग्रहस्तय पञ्चसु पुन ग्रह तत्रा प्यन्यतरया भक्त मेकतरयाच पानक मित्यय द्वयो रभिग्रह इत्यागमव्यवहृति–एवंछमासतवं चरिउपरिहारगाअणुचरंति । अणुचरगपरिहारिय पयट्ठिआजावछम्मासा ॥ ५ ॥ कप्पट्ठिओविएवं छम्मासतवंकरेइसेसाउ । अणुपरिहारिगभावं वयंतिकप्पट्ठियत्तं च ॥ ६ ॥ एवंसोअट्ठारस मासपमाणोउवण्णिओकप्पो । संखेवओविसेसो सुत्ताउच्चेवनायव्वो ॥ ७ ॥ कप्पसमत्तीइतयं जिणकप्पंवाउवेंतिगच्छंवा । पडिवज्जमाणगापुण जिणस्सग सेपवज्जंति ॥ ८ ॥ तित्थयरसमीवासे वगस्सपासेवनोयअन्नस्स । एएसिंजंचरणं परिहारविसुद्धिगंतंतु ॥ ९ ॥ अन्येषु व्याख्यात परिहारतो मा

सचि ते परिहारविशुद्ध चारित्र कहिये एहना आदरनहारा नो जिनेश्वर समीपे अथवा जेणे ते तपकरता हुवे तेहनेपासे अंगीकार करिये तेमांहि एक गुरु चार तपनाकरनहार चार तेहना अनुचर प्रतीचारक ए नवजण कहिये ए नवजणांनिपो गणमांहि रही उपसर्ग परीसह सहिवाछे मास अढारनु ग तेहना तपकरवाने तेहनाकरे पछे गच्छमांहि आवे अथवा वली तेहीज तप आचीर्णकरे एहने परिहारविशुद्धिचारित्रकहिये ए वली अनुपरि चार सिद्धांते विशेषस्वरूप जाणवु ते टीका थकी जाणवा ४ । सूक्ष्मसंपराय । सूक्ष्मकहिये किट्टीभूतलोभ तिहां संपराय कहिये कषाय तेह

मित्रवत्सुसपादितप करति य तस्य परिहारिकचारित्रलब्धि भवतीति इदम्न परिहारतपो यथा स्या तथो च्यते—नवमस्ततइयवस्तु जघन्यतो मित्रवतुसपादितप करति य तस्य परिहारिकचारित्रलब्धि भवतीति इदम्न परिहारतपो यथा स्या तथो च्यते—नवमस्ततइयवस्तु जघन्यतो
मजवमादसठं । सुतस्यनिगदापुच रत्नाद्यतयोरयवमात्र ॥ १ ॥ नवमम यस्य जघन्यतो नयमपूर्वं तृतीयवस्तु याव त्कृवति उत्कृष्टतस्तु दश पूर्वाणि
न्यूनानि सूत्रार्थतो भवन्ति द्रव्यादृप याजिमहा रत्नावस्था विच तप तस्य परिहारतपो दीयते तद्यानेच निरुपसर्गार्थ कायोत्सर्गो विधीयत शुभ
च मनत्रावी तत्प्रतिपत्तिः, तथा गुरु त्त ब्रूते यथार्ह तव वाचनाचार्यो ऽयम्न गीतार्थः साधुः सहाय स तोपसाध्वोपि वाच्या यथा—एततवपत्रि
पञ्जर मक्तिविभासवत्समायभासवद् । भतवचितगस्त्रा वाधातभनकायवो ॥ १ ॥ तथा कथ मह मासापाविरहितः स स्तपः करिष्यामी त्यव
विभ्यत तस्य भयापहारा कार्ये कल्पस्थितच तस्यै तत्करोति—किरकम्मचपकिम्बर परिखपत्रिपुच्छपपिसदद । सोवियगुरुमुपचिठइ छदसमविपु
भिरगुफाइ ॥ १ ॥ एष परिहामत्यास्याम प्रति पृच्छा स्यालापक ततो सौ यदा ग्लानीभूतः समुत्थामादि स्वय कर्तु नशक्नोति तदा जघ स्युत्थाना
दि कतु मिच्छामि ततो नुपरिहारिक सूजीक यय तदभिप्रेतं समस्तमपि करोति चाइच—उठ्ठ्नासिसीयखा भिक्खा हिभडमडगपेहे । कुवियपि
यवंधवस्सव करइइयरोवितुसिणीठ ॥ १ ॥ तपश्च तस्य ग्रीष्मशिशिरवर्षासु जघन्यादिभवेन चतुर्थादिद्वादशान्त पूर्वोक्तमेवेति ॥ सुक्ष्मसपरायच

सा केन्नवे कहनेविपेते सूक्ष्मसम्परायकहिच ते कपचारित तेहनो लब्धि ते सूक्ष्मसम्परायचारित्रलब्धि चाहिये केतलो दशमारत्नीच दशमे गुण ठाणे चया
करे तिहां कोधमान मायानाउदय सथवा मिथ्यात्वे पने प्रतिसूक्ष्मलोभनो उदयरूपे परिणाम सवा वतताहुवे तेहने सूक्ष्मसम्पराय चारित्रलब्धि
कहिये एहना बवि दायभेद विशुद्ध्यमानक १ सक्लिश्यमानक २ तत्र विशुद्ध्यमानक क्षपकश्रेणी उपशमश्रेणी ऊपरचढत्य ना हुवे, सक्लिश्यमानक ते उ
पशमश्रेणीवालो पडतसमालने हुवे २ ॥ । यथाख्यातचारित्रलब्धि । यथाख्यातचारित्रलब्धि, यथा सर्वे प्रकारे कहुहे जे कषायरहित ते चरित्र तेहनु जे स्या
तपणि ते यथाख्यातचरित्र तेहनो लब्धि ते यथाख्यातचारित्रलब्धि एहना पणि दोयभेद उपशम १ क्षपक २ भरथको सर्वथा मोहनीयकर्म उपश
मावे चयवा क्षेपवे उपशान्तमोह अथवा क्षीणमोहगुणठाणे यथाख्यातचारित्रलब्धि हुवे तेम मुनि नि कषायचारित्र हुवे क्षपकश्रेणी अथवा यथाख्या

रितमद्भिति ॥ सपरैति सचार मति रिति सम्परायो कषायाः सूक्ष्मा लोभांशावशेषरूपा सम्परायो यत्र तत् सूक्ष्मसम्पराय छीय तथैव एतदपि द्विधा विशुध्यमानक संक्लिश्यमानकञ्च तत्र विशुध्यमानक क्षपकोपशमकश्रेणिद्वय मारोहतो भवति संक्लिश्यमानक तूपशमश्रेणीतः प्रच्यवमानस्ये ति ॥ यथाख्यातचारित्रलब्धिरिति ॥ यथा येन प्रकारेण ख्यात मभिहित मकषायतया त्वथ तथैव यत्तत् यथाख्यात तदपि द्विविध उपशमकक्षपक भेदात् ... एव चरित्राचरित्रलब्धी ॥ सागारेति ॥ मूलगुणोत्तरगुणादीनां तद्भेदानां मविवक्षया द्वितीयकषायक्षयोपशमलभ्य परिणाममात्रस्यैव विवक्षया चरित्राचरित्रलब्धे रेकाकारत्व मवसेय मेव दानलब्ध्यादीना मप्येकाकारत्व भेदानां मविवक्षणात् ॥ बालवीर्यस

स्कायलद्धी । चरित्ताचरित्तलद्धीण भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! एगागारा प० एव जाव उवओगलद्धी एगागारा । वीरियलद्धीण भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प०, तंजहा—बालवीरियलद्धी पंडि

तचारित्रलब्धिः । चारित्राचारित्रलब्धि र्भदन्त ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! एकाकारा प्रज्ञप्ता । एव यावत् उपयोगलब्धि रेकाकारा । वीर्य लब्धि र्भदन्त ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा बालवीर्यलब्धि पण्डितवीर्यलब्धि बालपण्डितवीर्यलब्धिः । इन्द्रियलब्धि

तचारित्र बाबो पूछे चतर्दश ... उपशान्तमोह ... सयोगी केवली अयोगी केवली ए ४ गुणठाणे होवे। चरित्ताचरित्तलद्धी भंते कि का प भा एगागारा प । चरित्राचरित्रलब्धि हे भगवन् । कतलेभेदे कही इति प्रश्न उत्तर हे गौतम । मूलगुण उत्तरगुणभेद अविवक्षापणो थोडा यथा बना ... परिणाममात्रना विवक्षपणो चरित्राचरित्र लब्धिनो एकाकार कहेवा । एवं जावत् उपयोगलब्धि एकाकार कही । इम जावत् दानादि लब्धि पांचेइ उपयोग लब्धिये एकाकारपणो कहवो भेदना अविवक्षपणाथी एकरूप माटे । वीरियलद्धीणभंते कइविहा प । वीर्यलब्धि भगवन् कइ प्रकारे हे भगवन् । केतलभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा प तं । हे गौतम । तीनभेदे कही ते कहेछे—बालवीरियलद्धी पण्डियवीरियलद्धी बालपण्डियवीरियलद्धी । असयत तेहना वीर्यलब्धि प्रथम असयम वीर्यलब्धि प्रवर्त्ति निवर्त्तनभूत तेहनी जे लब्धि चारित्रमोहनीयना क्षयपशमथी थया ।

हीत्यादि ॥ यासस्या सयतस्य यहीव मसपमयोमपु प्रवृत्तिनिबन्धनभूत तस्य या लब्धि चारित्रमोहोदया द्वीयान्तरायक्षयोपशमाच सालमा एव मितरेष्वपि यथायाग वाच्य नवर परिहतः सयतो चासपविततस्तु सयतासयत ॥ सरसमलद्वियाकति ॥ तस्य ज्ञानस्य चसविषका चसविषमन्तो ज्ञानलब्धिरहिता इत्यथ ॥ चाभिनिबोधियनाणत्यादि॥ चाभिनिबोधिकज्ञानलब्धिकाना चत्वारि ज्ञानानि भजनया केवलिनो ना स्त्याभिनियोधि

यश्रीरियलद्धी यालपंडियश्रीरियलद्धी । इंदियलद्धीण भंते ! कतियिहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प० तं०— सोइंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी । णाणलद्धियाण भंते ! जीया किंणाणी श्रणाणी ? गोयमा ! णाणी नोश्रणाणी श्रत्येगइया दुणाणी एव पंच नाणाइं भयणाए । तस्स श्रलद्धियाण भंते ! जीत्रा किंणाणी

भदन्त ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् स्पर्शेन्द्रियलब्धि । ज्ञानलब्धिका भदन्त ! जीवा किंज्ञानिनो ज्ञानिनः ? गौतम ! ज्ञानिनो नोज्ञानिन केचन द्विज्ञानिन एव पञ्च ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिका भदन्त ! जीवाः किंज्ञा

वीर्यान्तराय क्षयोपशम सञ्जो ते बालवीर्यलब्धि १ इस वीचा पणि यथायाये चाहचा एतत्माविमेव पण्डितवीर्ये सयतो बालपण्डितवीर्ये सयता॥ यती १ । इ न्द्रियलब्धिभदन्ते कतिविधा प । इन्द्रियलब्धि हेभगवन् ! कतिभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर । गायमा पंचविधा प त । हेगौतम! पाँचभेदे कही त कहेछे—सा इंद्रियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी । श्रोत्रेन्द्रियलब्धि १ इस यावत् स्पर्शनेन्द्रियलब्धि लगे कहवी एतले चक्षुरिन्द्रियलब्धि घ्राणेन्द्रियलब्धि १ रसनेन्द्रियलब्धि ४ स्पर्शनेन्द्रियलब्धि ५ । णाणलद्धियाणभंते किंणाणी श्रणाणी । ज्ञानलब्धिवंत हेभगवन् ! जीव शुं ज्ञानीहुवे श्रथवा श्रज्ञानीहुवे इ तिप्रश्न उत्तर । गा णाणी नोश्रणाणी । हेगौतम ! ज्ञानीहुवे पणि श्रज्ञानी नहुवे । श्रत्येगइया दुणाणी । केतलाएक दोयज्ञानवंतहुवे । एवपंचणाणाइं भयणा ए । इस केतलाएक तीनज्ञानी केतला चारज्ञानी केतलापांचज्ञानीहुवे । तस्सश्रलद्धियाणभंतेजीवा किंणाणी श्रणाणी । ज्ञानलब्धिरहित जीव शुं ज्ञानी हुवे श्र ज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गायमा णोणाणी श्रणाणी । हेगौतम! ज्ञानी नहुवे एतावता श्रज्ञानीहुवे । श्रत्येगइया दुश्रणाणी । केतलाएक दोयश्रज्ञानीहुवे !

कज्ञानमिति मतिज्ञानस्य तविकासु ये ज्ञानिन स्ते केवलिन स्ते वेकज्ञानिनएव ये स्वज्ञानिन स्ते भज्ञानद्वयवन्तो ऽज्ञानत्रयवन्तो वा एव

अण्णाणी ? गोयमा ! नोणाणी अण्णाणी अत्थेगइया दुअण्णाणी तिन्नि अण्णाणाइं भयणाए । आभिणिबोहिय नाणलद्धियाण भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणी नोअण्णाणी अत्थेगइया दुणाणी च त्तारिणाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाण भंते ! जीवा किंणाणी२ ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, जेणाणी ते नियमा एगणाणी केवलणाणी, जे अण्णाणी ते अत्थेगइया दुअण्णाणी तिन्नि अण्णाणाइं भय

निना ज्ञानिनः ? गौतम ! नोज्ञानिनो ऽज्ञानिनः कश्चन द्व्यज्ञानिन स्त्रीण्य ज्ञानानि भजनया । आभिनिबोधिकज्ञानलब्धिका भदन्त ! जीवाः किंज्ञानिना ज्ञानिनः ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिनः केचन द्विज्ञानिन श्चत्वारि ज्ञानानि भजनया । तस्य अलब्धिका भदन्त ! जीवाः किंज्ञानिनो ज्ञानिनः ? गौतम ! ज्ञानिना अज्ञानिनोपि; ये ज्ञानिन स्ते नियमा एकज्ञानिन केवलज्ञानिनः ये ऽज्ञानिन स्ते कश्चन द्व्यज्ञा

निनि यज्ञानाइ भयणाए । तीनअज्ञानभजनासेतव । आभिनिबोधिकज्ञानलब्धियांभते जीवाकिंज्ञानी अज्ञानी । आभिनिबोधिकलब्धिये मतिज्ञानलब्धि वन्त ज्ञानमकारे हेभगवन् ! जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ज्ञानी नोअज्ञानी हेगौतम ! ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी न हुवे । अत्थेगइया दुज्ञानी । कनकाएक बज्ञानवन्तहुवे । चत्तारिज्ञानाइं भयणाए । कितलाएक तीनज्ञानवन्त कितलाएक च्यार ज्ञानवन्तहुवे, इम च्यारज्ञान भजनायेंकरी केवलने मतिज्ञान नहो । तस्सअलद्धियाणंभंते जीवाकिंणाणी अज्ञानी ! एतले मतिज्ञान लब्धिरहित ते ज्ञानप्रकारे हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तरे । गोयमा णाणीवि अन्नाणीवि । हेगौतम ! ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे । जणाणी तेनियमाएगणाणी केवलणाणी । जे ज्ञानी ते नियमे एकज्ञानवन्तकेवल हुवे ते केवलज्ञानलब्धिवन्तकेवल मतिज्ञान अमलिक हुवे । जे अज्ञानी ते अत्थेगइया दुअणाणी । ते अज्ञानी ते कितलाएक बे अज्ञानवन्त हुवे कितलाएक तीन अज्ञानवन्त हुवे । तिन्निअज्ञानाइंभयणाए । इम तीन अज्ञानभजनायें कहवा । एवसुयणा

सुतेपि ॥ ओहिणाणलद्धीत्यादि ॥ अवधिज्ञानलब्धिका स्त्रिज्ञानिनः केवलमन पर्यायसद्भावे चतुर्ज्ञानिनो वा केवलमत्राभावात्, अवधिज्ञानस्यालब्धिकास्तु

णाए । एवं सुयणाणलद्धियावि । तस्स अलद्धियावि जहा आभिणिबोहियणाणस्स लद्धिया । ओहिणाणलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी अत्थेगइया तिणाणी अत्थेगइया चउणाणी , जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी , जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी

निम त्रीण्यज्ञानानिभजनया । एवं श्रुतज्ञानलब्धिकाअपि । तस्या अलब्धिकापि यथा आभिनिबोधिकज्ञानस्य लब्धिका । अवधिज्ञानलब्धिकानां पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिनः । केचन त्रिज्ञानिनः केचन चतुर्ज्ञानिनः , ये त्रिज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनः ये चतुर्ज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो अवधिज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिनः । तस्या अलब्धिकानां प

जनाइयावि । एम मतिज्ञानलब्धिया आपरे श्रुतज्ञानलब्धिया पणिकहवा । तस्सअलद्धियावि । श्रुतज्ञान लब्धिरहित पणि । आभिनिबोहियणाणलद्धि या । जिम मतिज्ञान लब्धिरहितकह्या तिम कहवा ज्ञानीहुवे तो एक केवलज्ञानी हुवे केवलज्ञानमेंविषे श्रुतज्ञाननो अभावपणो जो अज्ञानीहुवे तीन अज्ञान भजनायें हुवे । आहिणाणलद्धियाणं पुच्छा । अवधिज्ञानलब्धिक हेभगवन् ! ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णाणी णो अणाणी । हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । अत्थेगइयातिणाणी अत्थेगइयाचउणाणी । केतलाएक तीनज्ञानीहुवे केतलाएक चारज्ञाननो अ णीहुवे । जेतिणाणी त आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी । जे तीनज्ञाननो धणी ते मतिज्ञानवन्त श्रुतज्ञानवन्त अवधिज्ञानवन्त ए तीनज्ञा नवन्तहुवे । जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी । जे चार ज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानवन्तहुवे १ श्रुतज्ञानव न्त २ अवधिज्ञानवन्त ३ मनपर्यवज्ञानवन्त ४ ते चार ज्ञानवन्त हुवे । तस्सअलद्धियाणंपुच्छा । ते अवधिज्ञान लब्धिरहितनो प्रश्नजीवो उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम ! ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे जे ज्ञानीहुवे ते केतलाएक मति १ श्रुत २ ए बेज्ञानवन्तहुवे, तथा मतिश्रुत २ मन

ये ज्ञानिन स्ते द्विज्ञाना मतिश्रुतज्ञानवात् त्रिज्ञानावा मतिश्रुतमन पर्यायज्ञानवात् एकज्ञानावा केवलज्ञानवात् ये त्वज्ञानिन स्ते द्व्यज्ञाना मत्यज्ञानश्रुताज्ञानवात् त्र्यज्ञानावा त्र्यस्यापि ज्ञानात् ॥ मनःपर्यवेत्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञानलब्धिका ज्ञानिना श्रवधिकेवलज्ञानवात् चतुर्ज्ञानावा केवलस्यैव ज्ञानवात् मनःपर्यवज्ञानस्य लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्ते द्विज्ञाना आभिनिबोधिकज्ञानवात् त्रिज्ञानावा आभिनिबोधिकज्ञानावा केवलज्ञानावा केवलस्यै

मणपज्जवणाणी। तस्स अलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, केवलिणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। मणपज्जवणाणलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअण्णाणी अत्थेगइया तिणाणी अत्थेगइया चउणाणी, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी,

च्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो ऽप्यज्ञानिनोऽपि। अवधिज्ञानवर्ज्जानि चत्वारि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया। मनःपर्यवज्ञानलब्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिन। केचन त्रिज्ञानिन केचन चतुर्ज्ञानिनः ये त्रिज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिना मनःपर्यव

पवन ? ना भाजवो तीनज्ञानवन्त हुवे तथा केवलज्ञानना भाजवो एक केवलज्ञानवन्तहुवे तेमाट अवधिज्ञानवर्ज्जी चारज्ञान भजनायें कहवा त्रण अज्ञान पिण भजनायें कहवा। मनःपर्यव ज्ञानलब्धियांनपुच्छा। मनःपर्यव ज्ञानलब्धिकना प्रश्नकीधा उत्तर। गोयमा ज्ञानी अज्ञानी। हे गौतम। ज्ञानीहुवे पिण अज्ञानी नहुवे। कतलेकएकतिज्ञानी कतलेकएकचउज्ञानी। केतलाएक तीनज्ञानवन्तहुवे केतलाएक चारज्ञानवन्त हुवे। जे तिज्ञानी ते आभिनिवोहियज्ञानी सुयज्ञानी मनपज्जवज्ञानी। जे तीनज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी मनपर्यवज्ञानी एवं तीन ज्ञानवन्त हुवे। जे चउज्ञानी ते आभिनिवोहियज्ञानी सुयज्ञानी ओहिज्ञानी मनपज्जवज्ञानी। जे चारज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानवन्त श्रुतज्ञानवन्त अवधिज्ञानवन्त मनपर्यवज्ञानवन्त एम चारज्ञानवन्त कहवा एक केवलज्ञानना अभाव। तस्सअलद्धियाणपुच्छा। मनपर्यवज्ञान केवलीनथी ते मनपर्यव ज्ञान अलद्धिया तेहना प्रश्नकीधा उत्तर। गोयमा ज्ञानीवि अज्ञानीवि। हे गौतम! ज्ञानी पिणहुवे अज्ञानी पिणहुवे अज्ञानीहुवे तेहने। अवधिज्ञान

यमाय त ये स्वज्ञानिन स ध्यामा माद्याज्ञानद्वयजावात् मत्याज्ञाया । यज्ञानद्वयस्य पि भावात् ॥ केवलनाणेत्यादि ॥ केवलज्ञानलब्धिका एव ज्ञानिन सन्त केवलज्ञानिन एव केवलज्ञानस्या लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन सपा माद्य ज्ञानद्वय तत्रय मतिश्रुतमन पर्यायज्ञानानिवा । केवलज्ञानय

ज चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणा सुयणाणी ओहिनाणी मणपज्जवणाणी । तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा । णाणीवि अण्णाणीवि मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारिनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । केवलनाणलद्धियाण भंते ! जीवा किंणाणी२ ? गोयमा ! णाणी नोअण्णाणी नियमा एगणाणी केवलणाणी तस्स अलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि केवलणाणवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्निअन्ना

ज्ञानिनः ये चतुर्ज्ञानिन स आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो अवधिज्ञानिनो मन पर्यवज्ञानिन । तस्या लब्धिकामा पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो अज्ञानिनोपि । मनःपर्यवज्ञानवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । केवलज्ञानलब्धिका भदन्त ! जीवा किं ज्ञानिनो अज्ञानिनः ? गौतम ! ज्ञानिनो नाज्ञानिनः । नियमा एकज्ञानिनः केवलज्ञानिनः । तस्या लब्धिकामा पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो अज्ञानि

पज्जवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । मनपर्यवज्ञान वर्जीने चारज्ञान भजनायें कहवा तथा तेम कहताकहता मति श्रुत ए बेज्ञान हुवे तथा मति श्रुत अवधिज्ञानना ३ मानयी तीनज्ञाना च । तथा केवलज्ञानना भावथको एकज्ञानहवे इम च्यारज्ञान तथा तीन अज्ञानभजनायेंकहवा । केवलनाणलद्धिया भंते जीवा किंणाणी अण्णाणी गोयमा णाणी णोअण्णाणी । केवलज्ञानलब्धिक हेभगवन् ! जीव स्यु ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इति प्रश्न उत्तर हेगौतम ! ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । नियमाएगणाणी केवलणाणी । निश्चें एकज्ञानीहुवे केवलज्ञानवंत हुवे । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । ते केवलज्ञानरहितना प्रश्नबोधा उत्तर । गोयमा णाणीवि अण्णाणीवि । हेगौतम ! ज्ञानी पणि हुवे अज्ञानी पणिहुवे जे ज्ञानी हुवे तेहनें । केवलणा णवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । केवलज्ञानवर्जीने च्यारज्ञान तथा तीनअज्ञान भजनायें विकल्पेंकरी कहवा । अणाणलद्धियाण

ज्ञानि चत्वारि या ज्ञानानि भजन्ति ये त्वज्ञानिनस्ते त्रीणि अज्ञानानि भजनयेत्येवं भजनाशब्दार्थ इति ॥ मणपज्जवलद्धियाणमित्यादि ॥ म नःपर्यवज्ञानलब्धिका ज्ञानिन एव तेषां च त्रीणि ज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञानाद्वितीया ज्ञानानामीत्यर्थ । तदलब्धिकास्तु ज्ञानिनोऽज्ञानिनश्च ज्ञानिनां पञ्च ज्ञानानि भजनया पूर्वोपदर्शितया वाच्यानि ॥ अज्ञानिनामित्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञानलब्धिकानां चीज्ञानानि भजनयाऽज्ञानानि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानलब्धिकानामपि तानि तथैव तथा अज्ञानालब्धिकानां पञ्चज्ञानानि भजनया ज्ञानि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानलब्धिकानामपि पञ्च ज्ञानानि भजनयैव वाच्यानीति ॥

णाइं भयणाए। अण्णाणलद्धियाणं भंते! पुच्छा? गोयमा! नोणाणी अण्णाणी तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धियाणं भंते! गो०! णाणी नो अण्णाणी पंचनाणाइं भयणाए जहा अण्णाणस्स लद्धिया अलद्धिया भाणिया एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। विभंगणाणलद्धियाणं तिण्णि

नानि। केवलज्ञानवर्ज्यानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीणि चाज्ञानानि भजनया। अज्ञानलब्धिकानां प्रश्ने। पृच्छा? गौतम! नोज्ञानिनोऽज्ञानिनः त्रीण्यज्ञानानि भजनया। तस्या अलब्धिकानां प्रश्ने। पृच्छा? गौतम! ज्ञानिनो नोऽज्ञानिनः पञ्च ज्ञानानि भजनया। यथा अज्ञानस्य लब्धिकालब्धिकाः प्ररूपिता एवं मत्यज्ञानस्य श्रुताज्ञानस्य लब्धिका प्ररूपितव्या। विभङ्गज्ञानलब्धिकानां त्रीणि अज्ञानानि नियमात्। तस्या अलब्धिकानां प

भजनाए। अ भगवन् ते अज्ञान तेहनी लब्धि छे जेहने ते अज्ञानलब्धिक तेहना प्रश्नबोधा उत्तर। गोयमा नाणी नो अन्नाणी। हे गौतम! ज्ञानी नहीं अज्ञानी हुवे पूर्वोक्तपरे। तिण्णि अन्नाणाई भयणाए। तीन अज्ञान भजनाइं करवा। तस्स अलद्धियाणं भंते पुच्छा। ते अज्ञान लब्धिरहित तेह हे भग वन्। इत्यादि प्रश्नबोधा उत्तर। गोयमा नाणी नो अन्नाणी। हे गौतम ज्ञानी होय पणि अज्ञानी नहीं तेहने पूर्वकह्या तिम। पंचनाणाई भयणाए। पंच ज्ञान भजनाइं हुवे। अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स लद्धिया भाणियव्वा। जिम अज्ञानलब्धिकने तीन अज्ञान भजनाइं कह्या, तिम मतिअज्ञानलब्धिकने पणि तीन अज्ञान भजनाइं कहवा तथा अज्ञानलब्धिरहितने पञ्चज्ञान भजनाइं कह्या एम मतिअ

यिनंगत्यादि ॥ विभङ्गज्ञानलब्धिकानां तु त्रीण्यज्ञानानि नियमा तदलब्धिकानां ज्ञानिनां पञ्चज्ञानानि भजनया अज्ञानिनाञ्च द्वे अज्ञाने नियमा
दिति ॥ दंसणलद्धीत्यादि ॥ दर्शनलब्धिकाः सद्दर्शनमात्रलब्धिकाः तस्य सम्यग्दर्शनवन्तो ज्ञानिन सादितरे त्वज्ञानिन तत्र ज्ञानिनां पञ्च
ज्ञानानि भजनया अज्ञानिनां त्रीण्यज्ञानानि भजनयैवति ॥ तस्स अलद्धियानत्थित्ति ॥ तस्य दर्शनस्य या अलब्धि सो न सम्भवति सर्वजीवानां दर्शनमा

सुयाणाइं नियमा। तस्स अलद्धियाणं पंचणाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं नियमा। दंसणलद्धियाणं भंते ! जीवा किं णाणी२ ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि पंचणाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धियाणं भंते ! जीवा किं णाणी२ ? गो० ! तस्स अलद्धिया नत्थि। सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंचनाणाइं भ

ज्ञानानि भजनया। द्वे अज्ञाने नियमात्। दर्शनलब्धिका भदन्त ! जीवा किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः ? गौतम ! ज्ञानिनो ऽप्यज्ञानिनोऽपि पंच ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। तस्या अलब्धिका भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम ! तस्या अलब्धिका न सन्ति। सम्यग्दर्शन

ज्ञान श्रुतअज्ञान रहितने पंच पचज्ञानभजनाये जाणवा। विभंगनाणलद्धियाण तिण्णिअन्नाणाइं नियमा। विभंगज्ञानलब्धिवंतने तीनअज्ञान नियमेहवे। तस्स अलद्धियाण पंचनाणाइं भयणाए। ते विभंगज्ञानलब्धिरहितने पंचज्ञानभजनाये जिनका नका तथा। दोअन्नाणाइं नियमा। दोयअज्ञान नियम
थको हवे। दंसण लद्धियाणं भंते जीवा किं नाणी अन्नाणी। दर्शनलब्धिवंत दर्शनवालामां ते हे भगवन्! जीव ते ज्ञानी थका अज्ञानी हवे इति
प्रश्न उत्तर। गोयमा नाणीवि अन्नाणीवि। हे गौतम! ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे जे सम्यक् दर्शनवन्त हवे तेहने। पंचनाणाइं तिन्निअन्ना
णाइं भयणाए। पंचज्ञान भजनाये हवे तथा मिथ्यादर्शनवंतने तीन अज्ञानभजनाये हवे। तस्स अलद्धियाणं भंते जीवा किं नाणी अन्नाणी। ते दर्शनथी जी
वन पामिया ते हे भगवन्! जीव ते ज्ञानी थका अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तस्स अलद्धिया नत्थि। हे गौतम ते दर्शनलब्धिरहित कोइ नथी सर्व
जीवने दर्शनमात्र पामियावाथी। सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए। सम्यग्दर्शन लब्धिवंत एतले सम्यग्दृष्टीने पचज्ञानभजनायेहुवे। तस्स अलद्

शम्या मिथ्यादिति ॥ सम्यग्दर्शनलद्धियाणंति ॥ सम्यग्दृष्टीनां ॥ तस्सअलद्धियाणमित्यादि ॥ तस्या लब्धिकानां सम्यग्दर्शन स्या सद्धिमता मिथ्याद्
ष्टीनां मिश्रदृष्टीनां च भी स्वज्ञानानि भजनया यतो मिश्रदृष्टीनां सम्यग्ज्ञाममेव तात्त्विकसद्बोधाद्तुल्या न्निग्रस्यसि ॥ मिच्छा दंसणलद्धियाणंति ॥
मिथ्यादृष्टीनां ॥ तस्सअलद्धियाणमित्यादि ॥ तस्या लब्धिकानां मिथ्यादर्शनस्या मध्यमता सम्यग्दृष्टीनां मिश्रदृष्टीनाथ क्रमथ पञ्चज्ञानानि त्रीण्य

यणाए, तस्स अलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, मिच्छादंसणलद्धियाण भंते ! पुच्छा ? गो० ! नाणा
णी अण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, तस्सअलद्धियाण भंते किं णाणी अण्णाणी ? गो० ! नाणीवि
अण्णाणीवि, पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । सम्मामिच्छादंसणलद्धिया अलद्धियाय जहा मिच्छा

त्यकानां पञ्च ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकानां त्री स्वज्ञानानि भजनया । मिथ्यादर्शनलब्धिकानां त्री स्वज्ञानानि भजनया । तस्या स
ल्पिकानां पञ्च ज्ञानानि वा स्वज्ञानानि भजनया । सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिका अलब्धिकाश्च यथा मिथ्यादर्शनलब्धिका अलब्धिकाश्च तथैव भणित

ट्टियाण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एतले मिथ्यादृष्टी तथा मिश्रदृष्टी तेहने तीन अज्ञान भजनायें हवे तेमाटे मिश्रदृष्टीने पणि अज्ञानबहुल हुवे मिथ्या
न तास्तिक सद्भावना यदेतदुपचारिका । मिच्छादंसणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । मिथ्यादृष्टीने तीन अज्ञान भजनायें विकल्पकरी हुवे । तस्यअ
लद्धियाण पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । तेहना अलब्धिया एतले सम्यग्दृष्टीने तथा मिश्रदृष्टीने पंचज्ञान तीन अज्ञान अनुक्रमे भजनायें हुवे एतावता
सम्यग्दृष्टीने पंचज्ञान भजनायें हवे तथा मिश्रदृष्टीने तीन अज्ञान भजनायें हवे । सम्मामिच्छादंसण लद्धिया अलद्धियाय जहा मिच्छादंसणलद्धिया
अलद्धियाय तहेव भाणियव्वं । मिश्रदृष्टीलब्धिक तथा अलब्धिक जिम मिथ्यादर्शनलब्धिक अलब्धिक कह्या तिमज कहवा तिहां मिथ्यादर्शनलब्धिकमे तो
न अज्ञान भजनायें कह्या तिम मिश्रदृष्टीलब्धिकने पणि तीन अज्ञान भजनायें कहवा, तथा मिश्रदृष्टीअलब्धिकने पंचज्ञान तीन अज्ञान भजनायें कह्या
तिम मिश्रदृष्टीअलब्धिक ते सम्यग्दृष्टी तथा मिथ्यादृष्टी जीवना तिहां सम्यग्दृष्टीने पंचज्ञान भजनायें हुवे अने मिथ्यादृष्टीने तीन अज्ञान भजनायें अ

ज्ञानानि भजनयेति ॥ चरित्तलद्धियावसित्यादि ॥ चरित्रलब्धिका ज्ञानिन एव तथाच पञ्चज्ञानानि भजनया यत केवल्यपि चारित्री चरित्र लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन तेषां मनःपर्यवज्ञानवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया भवन्ति कथं मनःपर्यवे चाद्य ज्ञानद्वय तत्त्रयवा सिद्धस्तेन केवल लब्धि सिद्धानामपि चरित्रलब्धिशून्यत्वा यत ते नो चरित्रिणो नो अचरित्रिण इति ये त्वज्ञानिन तेषां त्रीण्यज्ञानानि भजनया ॥ सामाइयत्या

दंसणलद्धिया अलद्धियाय तहेव जाणियव्वा । चरित्तलद्धियाणं भंते ! जाव किंनाणी२ ? गोयमा ! पंचनाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारिनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । सामाइयचरित्तलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धि

व्या । चरित्रलब्धिका भदन्त ! यावत् किंज्ञानिनो२ ? गौतम ! पञ्च ज्ञानानि भजनया । तस्या अलब्धिकानां मनःपर्यवज्ञानवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । सामायिकचरित्रलब्धिका भ० ! जीवाः किंज्ञानिनो अज्ञा० ? गौतम ! चत्वारि ज्ञानानि भजनया । तस्या

इया । चरित्तलद्धियाभन्ते जीवा किंनाणी अन्नाणी । चरित्रलब्धिक हे भगवन् ! जीव स्युं ज्ञानी हुवे अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा पंच नाणाइं भयणाए । हे गौतम पंचज्ञान भजनाये हुवे केमके केवली पिण चरित्रवंत छै तस्सअलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारिनाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । तेचारित्र अलब्धिक जे ज्ञानी हुवे तेहने मनःपर्यवज्ञान वर्जीने च्यारज्ञान भजनाये हुवे तेहिज असंयतपणे पडिवज्यां ज्ञान दोय तथा तीनज्ञान तथा सिद्धपणे केवलज्ञान हुवे सिद्धने पिण चारित्रलब्धिना शून्यपणावशी केमके ते सिद्ध ना चरित्री ना अचरित्री इति तथा जे अज्ञानी ते हने तीन अज्ञान भजनाये हुवे । सामाइयचरित्तलद्धियाभन्ते जीवा किंनाणी अन्नाणी । सामायिकचारित्रलब्धिक हे भगवन् जीव स्युं ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा चत्तारिनाणाइं भयणाए । हे गौतम सामायिकचारित्रलब्धिक ज्ञानी जो हुवे तेहने केवलज्ञान वर्जीने च्यारज्ञान भजनाये हुवे । तस्सअलद्धियाणं पंचनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । सामायिकचारित्र अलब्धिक ज्ञानी जो हुवे तेहने पंचज्ञान भजनाये हुवे छेदोपस्थापनीया

ं ॥ सामायिकचरित्रलब्धिकाज्ञानिन ये तेषाञ्च केवलज्ञानवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया, सामायिकचरित्रालब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्तेषां पञ्च ज्ञानानि भजनया छेदोपस्थापनीयादिज्ञावत सिद्धभावभवा। येत्वज्ञानिन स्तेषां त्रीण्यज्ञानानि भजनया एव छेदोपस्थापनीयादिष्वपि याव्य एव*याव ॥ यतमित्यादि ॥ तत्र छेदोपस्थापनीयादिचरित्रलब्धयो ज्ञानिनएव तेषां चाद्यानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया तदलब्धया यथाख्यात चरित्रलब्धय ये ज्ञानिन स्तेषां पञ्च ज्ञानानि भजनया ये त्वज्ञानिन स्तेषा मज्ञानत्रय भजनयैव, यथाख्यातचरित्रलब्धिकानामु विशेषो स्त्य त स्तद्धिमाथाए ॥ मवरमपज्जावेत्यादि ॥ सामायिकादिचरित्रचतुष्टयलब्धिमतां छद्मस्थत्वेन चत्वार्यैव ज्ञानानि भजनया यथाख्यातचरित्रलब्धि

याण पंच नाणाइं तिण्णि य अन्नाणाइं भयणाए। एवं जहा समाइयचरित्तलद्धिया अलद्धियाय नाणिया एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धिया अलद्धियाय नाणियव्वा नवरं, अहक्खायचरित्तलद्धियाणं पंच नाणाइं

मत्पिकानां पञ्च ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया अथ यथा सामायिकचरित्रलब्धिका अलब्धिकाश्च भणिता एव याव यथाख्यातचरित्र लब्धिका अलब्धिकाश्च भणितव्या, नवरं यथाख्यातचरित्रलब्धिकाना पञ्चज्ञानानि भजनया। चरित्राचरित्रलब्धिका भदन्त! जीवाः किंज्ञा

दि भावेकरी तथा सिद्धभावेकरी तथा जे पाम्यो तहने तीन अज्ञानभजनायें हुवे। एवं जिमसामायिकचरित्तलद्धिया अलद्धियाभणिया। इम जिम सा मायिकमांहि कह्यो तिम छेदोपस्थापनीयादिकनेविषे पणिकहवा, तिहां छेदोपस्थापनीयादिचरित्रलब्धिक ज्ञानवन्तज हुवे तेहने प हिला च्यारज्ञानभजनायें हुवे तथा छेदोपस्थापनीयचरित्र अप्रमलब्धिक। एवंजाव अहक्खायचरित्तलद्धियाअलद्धियाअभाणियव्वा। तथा यथाख्यातचरि त्रअलब्धिकने च्यार ज्ञानभजनायें कहवा तथा जे अज्ञानवन्त तेहने तीनअज्ञानभजनाये कहवा तथा यथाख्यातचरित्र लब्धिकनेविषे विशेषछे ते देखा डेछे—नवरं अहक्खायचरित्तलद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए। एतलाविशेष सामायिकादि ४ चारित्र लब्धिवन्तने छद्मस्थपणेकरी च्यार ज्ञानभजनायें हुवे पण यथाख्यातचरित्रलब्धिवन्तने छद्मस्थ, तथाकेवलीकरी पंचज्ञानभजनायें हुवे। चरित्ताचरित्तलद्धियाणंभंते जीवाकिंनाणी अन्नाणी। चरित्ताच

षमतां चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनलब्धिमतां भजनया भवतीति नयां तथैव ता व्यज्ञानीति ॥ चरित्ताचरित्तेत्यादि ॥ तस्सअलद्धियत्ति ॥ चरित्राचरित्रस्या-
लब्धिकाः श्रावका इत्यर्थः तेन ये ज्ञानिनस्तेषां पञ्च ज्ञानानि भजनया ये त्वज्ञानिनस्तेषां त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव ॥ दाणलद्धियाणमित्यादि ॥ दानान्तरा-
यक्षयक्षयोपशमाद्धि दानं दातव्ये सति यैर्लब्धं दानलब्धय स्ते च ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च तत्र च ज्ञानिनस्तेषां पञ्च ज्ञानानि भजनया केवलज्ञानिना-
मपि दानलब्धियुक्तत्वात् ये त्वज्ञानिनस्तेषां त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव दानस्या लब्धिकास्तु सिद्धाः सा च दानान्तरायक्षयेपि दातव्याभावात् स्वकृत्य

भयणाए । चरित्ताचरित्तलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? गोयमा ! नाणी नोअन्नाणी, अत्थेगइया दुनाणी अत्थेगइया तिनाणी, जे दुनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय। जे तिन्नाणी ते आभिणि बोहियनाणीय सुयनाणी ओहिनाणीय। तस्सअलद्धियाणं पंचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए। दाणलद्धिया

णिणं भ० ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअ० कश्चन द्विज्ञानिनः कश्चन त्रिज्ञानिनः । ये द्विज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च। ये त्रिज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो अवधिज्ञानिनश्च । तस्या लब्धिकानां पंच ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । दानलब्धि

चिवर्णविरत तं श्रावक ते हे भगवन् जीव स्युं ज्ञानीहवे अथवा अज्ञानीहवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नाणी नो अन्नाणी हे गोतम ज्ञानीहवे पणि अज्ञानी नहवे । अत्थेगइयाबेनाणी अत्थेगइयातिनाणी । केतलाएक दोयज्ञानीहुवे केतलाएक तीनज्ञानी हुवे । बेदुनाणी ते आभिणिबोहियनाणीय सुयणाणीय । जे दोयज्ञानीहुवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी इम बेज्ञानीहुवे । जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणीय सुयनाणीय ओहिनाणीय । जे तीनज्ञानी हवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी ३ इम तीनज्ञानीहुवे । तस्सअलद्धियाणं पंचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइंभयणाए । ते श्रावकपणो अनेरा जे ते ज्ञानी तेहने पंचज्ञानभजनायें अने अने अज्ञानी तेहने तीन अज्ञानभजनायें हुवे । दाणलद्धियाणं पंचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइंभयणाए । दानान्तराय क्षय तथा क्षयोपशमथकी दान देवानेविषे लब्धि छे जेहने ते दानलब्धिया कहिये, तज्ञानी पणि हुवे तिहां जे ज्ञानीहुवे तेहने पंचज्ञानभजनायें हुवे

दानामत्वा द्दानप्रयोजनाभावात् दानान्तरायक्षयः उक्ता लोके नियमा त्केवलज्ञानिनइति लाभभोगोपभोगवीर्यलब्धीः सेतरा भतिदिशन्नाह ॥ एवमि त्यादि ॥ इदमत्र तत्त्वम् सिद्धानामेवो व्याख्येया इवसेयाः ननु दानाद्यन्तरायक्षया त्केवलिनः दानादयः सर्वप्रकारेण कस्मा न भवन्तीति ? उच्यते प्रयोजनाभावात् कृतकृत्यादि ते भगवन्त इति ॥ बालवीरियलद्धियाणमित्यादि ॥ बालवीर्यलब्धयो ऽसंयता स्तेषाञ्च ज्ञानिना श्रीणि ज्ञाना न्यज्ञानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया जवन्ति तदलब्धिका स्तु संयताः संयतासंयताश्च तत्र ज्ञानिमएव तेषाञ्च पञ्चज्ञानानि भजनया ॥ पण्डियवीरिये

ण पचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइ भयणाए । तस्सअलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! नाणी नोअन्नाणी नियमा एग नाणी केवलनाणी एवं जाव वीरियलद्धिया अलद्धिया नाणियव्वा । बालवीरियलद्धियाण तिन्नि नाणाइं तिन्नि

ज्ञाना पञ्च ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकानां पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो नोअज्ञानिनो नियमा देकज्ञानिन केवलज्ञानिनः । एव यावद्वीर्यलब्धिका अलब्धिकाश्च भणितव्याः । बालवीर्यलब्धिकानां त्रीणिज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना पञ्चज्ञानानि

केवलज्ञानम पनि दानलब्धि युक्तिमत्वाको तथा ते भव न तेजने तोन पञ्चाननञ्जनायेंदवे । तत्स्यलब्धिमात्रपुच्छा । ते दानना अलब्धिक ते सिद्ध तेहना दानान्तरायने क्षये पनि ज्ञातव्यमा अभावथको अथवा दानप्रयोजन अभावथको दानअलब्धिक कह्या ते भगवन् । ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इतिप्र श्नार । गोयमा ज्ञानी ना अज्ञानी नियमा एकज्ञानी केवलज्ञानी । हे गौतम । ज्ञानी हुवे पनि अज्ञानी नहवे ते नियमथकी एकज्ञानी केवलज्ञानी हुवे । एवजावदीरियलद्धिया अलद्धियासाथिजव्वा । इम लाभ भोग उपभोग वीर्यलब्धिमते तथा अलब्धिमते कहवा एव अलब्धि तेसि दाने ज पूर्वोक्त व्याख्यारो कहवा इहां कारण सूक्ष्म लाभादिक अन्तरायना क्षयथको केवलीने लाभादिक सर्वप्रकारेकरी निराकारथको नहुवे ते दाने इमज्ञानिये प्रयोजनना अभावथको कृतकृत्य ते भगवन्त इति । बालवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । बालवीर्यलब्धिक ते असंयती अविरति तेह ज्ञानीने तीन ज्ञानभजनायेंहुवे अज्ञानीने तीन अज्ञानभजनायें हुवे । तस्सअलद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए । तेहना अलब्धि

त्यादौ ॥ तस्सथलद्धियावति ॥ असयतानां सयतासयतानां सिद्धानाञ्चेत्यर्थः तत्रा सयताना माद्य ज्ञानत्रय मज्ञानत्रयञ्च भजनया सयतासय तानान्तु ज्ञानत्रयं भजनयैव भवति, सिद्धानान्तु केवलज्ञानमेव मनःपर्यायज्ञानन्तु पण्डितवीर्यलब्धिवतामेवेति नान्यथा मत उक्तं ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ सिद्धानांच पण्डितवीर्यलब्धिकत्वं पण्डितवीर्यवाच्ये प्रत्युपेक्षणाद्यनुष्ठान प्रवृत्त्यभावात् ॥ बालपण्डियेत्यादौ ॥ तस्सथलद्धियावति ॥ पञ्चायकाया

अण्णाणाई भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंचनाणाइं भयणाए । पंडियवीरियलद्धियाणं पंचनाणाइं भय णाए । तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अण्णाणाइं तिण्णिय भयणाए । बालपंडियवीरिय लद्धियाणं तिण्णि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंचनाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । इंदियलद्धि

भजनया । पण्डितवीर्यलब्धिकानां पञ्चज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकानां मनःपर्यववर्जानिज्ञानानि त्र्यज्ञानानि त्रीणिभजनया । बालपण्डित वीर्यलब्धिकानां त्रीणि ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकानां पञ्च ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । इन्द्रियलब्धिका भदन्त । जीवाः किं

ब ते सवतो तथा असंयतासंयतोपण्डिते ते ज्ञानीकोअछुवे तहने पचज्ञान भजनाये कहवा । पंडियवीरियलद्धियानं पूछवावात् भजवाए । पण्डितवीर्यलब्धि रहित ते असंयती ते ज्ञानीकोवलि हुवे तेहने पंचज्ञानभजनायेकरी कहवा । तस्सपमलद्धियाण मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं तिण्णिअन्नाणाणि भयणाए । ते असंयतासंयत तथा सिद्ध तेहनो असंयतीने पहिला तीनज्ञान तथा तीनअज्ञानभजनायें कहवा, तथा संयतासंयतने पहिला तीनज्ञा नभजनायें हुवे तथा सिद्धने तो एक केवलज्ञानज होअछुवे तेमाटे मनपर्यवज्ञानवर्जीने च्यारज्ञानभजनायें कहवा, एमे तीनअज्ञान पणि भजनायें वि कल्पेकहवा । बालपंडियवीरियलद्धियाणं तिण्णिनाणाइं भयणाए । बालपण्डित वीर्यलब्धिवंत ते श्रावक ते ज्ञानवंत होअछुवे तेमाटे तीन ज्ञानभजना यें कहवो । तस्सअलद्धियाणं पंचनाणाइं तिण्णिअन्नाणाइं भयणाए । ते एहलब्धिवंतने एतावता अंत्यायवीने ज्ञानीने पंचज्ञानभजनायें हुवे तीनअज्ञानभ जनायें हुवे । इंदियलद्धियाणंभंते जीवा किंनाणी अन्नाणी । इन्द्रियलब्धिक हेभगवन् । जीव स्युं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा च

मित्यय ॥ इंदियलद्धियाक्मित्यादि ॥ इन्द्रियलब्धिका ये ज्ञानिन स्तेषां चत्वारि ज्ञानानि भजनया केवलं तु नास्ति तेषां केवलिना मिन्द्रियोप योगाभावात् यैरज्ञानिन स्तेषामज्ञानद्वय भजनयैवेति इन्द्रियालब्धिकाः पुन केवलिनएवे त्येकमेव तयों ज्ञानमिति॥ सोइंदियत्यादि ॥ श्रोत्रेन्द्रि यलब्धय इन्द्रियलब्धिका इव वाच्या स्तत्र ये ज्ञानिन स्ते अकेवलित्वा दाद्यज्ञानचतुष्टयवन्तो भजनया भवन्ति अज्ञानिनस्तु भजनया अज्ञाना द्यो न्द्रियालब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्ते आद्यद्विज्ञानिन स्ते चापर्याप्तकाः सासादनसम्यग्दृष्टिनो विकलेन्द्रियाः एकज्ञानिनो वा केवलज्ञानिन स्तेऽपि

याण भंत! जीवा किंनाणी अन्नाणी? गोयमा! चत्तारि नाणाइं तिन्निय अन्नाणाइं भयणाए। तस्स अलं द्धियाण पुच्छा? गोयमा! नाणी नोअन्नाणी नियमा एगनाणी केवलनाणी। सोइंदियलद्धियाण जहा इंदिय लद्धिया, तस्स अलद्धियाण पुच्छा? गोयमा! नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते अत्थेगइया दुनाणी, अत्थेगइ

ज्ञानिनो अज्ञानिन ? गौतम! चत्वारि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया। तस्या लब्धिकाना पृच्छा? गौतम! ज्ञानिनो नोअज्ञानिनो नि यमा एकज्ञानिनः केवलज्ञानिनः। श्रोत्रेन्द्रियलब्धिका यथे न्द्रियलब्धिका। तस्या लब्धिकाना पृच्छा? गौतम! ज्ञानिनो ऽप्यज्ञानिनोऽपि।

तारिज्ञान तिनिअज्ञान भजनाए। हेगौतम! ज्ञानीने केवलज्ञानवर्जीने चारज्ञानभजनायें कहवा केवलीने इन्द्रियउपयोगना अभावथकी अज्ञा नीने तीनअज्ञानभजनायें हवे। तद्अलब्धिआनो पृच्छा। इन्द्रिय लब्धिरहितना प्रश्नकोधा उत्तर। गोयमा नाणी पण अज्ञानी नियमा एगनाणी केवल नाणी। हेगौतम! ज्ञानीपुणे पणि अज्ञानीनही तेहने नियमथकी एकज्ञान केवलज्ञानहवे। सोइंदियलद्धिया जहा इंदियलद्धिया। श्रोत्रेन्द्रियलब्ध क इन्द्रियलब्धिवालो परे कहवा ज्ञानीने केवलज्ञानवर्जीने चारज्ञान भजनायें हुवे अज्ञानीने तीनअज्ञान भजनायें हुवे। तस्सअलद्धियाणपुच्छा। श्रो त्रेंद्री लब्धिरहितना प्रश्नकीधा उत्तर। गोयमा नाणावि अनाणीवि। हेगौतम! ज्ञानी पणिहवे अज्ञानी पणिहवे। जेनाणी ते अत्थेगइयादुनाणी। अज्ञानी त वारतोएक अज्ञानवंत हुवे। अत्थेगइयाएगनाणी। केतलाएक एकज्ञानवंतहुवे। जे दुनाणी ते आभिनिबोधियनाणी सुयनाणी। ज

श्रोत्रेन्द्रियलब्धिका इन्द्रियोपयोगाभावात् ये त्वज्ञानिन स्ते पुनराद्यमज्ञानद्वयमवतरन्ति ॥ चक्खिंदियेत्यादि ॥ अयमर्थो यथा श्रोत्रेन्द्रियलब्धिमतां चत्वारि ज्ञानानि भजनया त्रीणि अज्ञानानि भजनयैव तदलब्धिकानाम् तु ज्ञान द्वेधा ज्ञाने एकच ज्ञान मुक्त, मैव चक्षुरिन्द्रियलब्धिकाना प्राक्
इन्द्रियलब्धिकानो तदलब्धिकमाव वाच्यं तत्र चक्षुरिन्द्रियलब्धिका घ्राणेन्द्रियलब्धिकाश्च ये पञ्चेन्द्रिया स्तेषां केवलवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीणि अज्ञानानि भजनया येतु विकलेन्द्रिया चक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियलब्धिका स्तेषां सासादनसम्यग्दर्शनभावे आद्यं ज्ञानद्वय तदभावे त्वाद्यमेवा
ज्ञानद्वय चक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियालब्धिकास्तु यथायोगं विकलेन्द्रियाः केवलिनश्च तत्र त्रिन्द्रियादीना सासादनभावे आद्यज्ञानद्वयस्तस्य तदभावे

या एगनाणी, जे दुनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी, जे एगनाणी ते केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी तं०—मतिअन्नाणी सुयअन्नाणी । चक्खिंदियघाणिंदियलद्धियाण अलद्धियाणय जहेव सो

ये ज्ञानिन स्ते कथम द्विज्ञानिनः कथ मेकज्ञानिनः य द्विज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनः य एकज्ञानिन स्ते केवलज्ञानि नः । ये ऽज्ञानिन स्ते नियमाद्यज्ञानिन स्तद्यथा–मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनः । चक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियलब्धिका अलब्धिका यथैव श्रोत्रेन्द्रियल

केवलज्ञान न पयोगका सासादन सम्यक्त्वी विकलेन्द्रिय तेहने मतिज्ञान श्रुतज्ञान बेज्ञानबन्तहने । जेएकज्ञानी ते केवलज्ञानी । जे एकज्ञानवन्त ते केवली ते श्रोत्रेन्द्रिय उपयोगना अभावथी । अ ज्ञानी ते नियमा दुअज्ञानी तथा । जे अज्ञानी ते नियमवन्तो बेअज्ञानवन्त थये ते देखाडेछे —मत अज्ञानी सुयअज्ञानी । मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी ए बे सहितछे । चक्षुइन्द्रिय घ्राणिन्द्रिय सहितछे । चक्षुइन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय सहित तथा लब्धिवन्त ते जिम श्रोत्रेन्द्रियलब्धि अलब्धि कह्या तिमकहवा एतले केवलज्ञान वर्जीने चारज्ञान तीनअज्ञान ए चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रियलब्धिवन्ते भजनाये विकल्पे करी जाणवा । अलब्धियावन्त अवेनसाद दिखावलिया अलब्धियावं । तथा ज चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय अलब्धिवन्त ते यथायोगे तइन्द्रिय बेइन्द्रिय एकेन्द्रिय केवली हुवे तिहां बेइन्द्री तेइन्द्रीने सासादनभावे पहिला बेज्ञान हुवे तेहने अभाव बेअज्ञान हुवे एकेन्द्रीने पहिला अज्ञानहुवे केवलीने एक केवल

माद्दावामूद्दमन जेअमिनी त्येई बवनत्रामिति ॥ त्रिन्निरिमेत्यादी ॥ तरमपमद्दीमति ॥ त्रिहुालछिवज्जिता स्तेव फेवलिन मकेन्द्रियाधे मनवार • मान ऊेमादि ॥ बणामिन ने नियमा रकमछानिम पमण्णांमिन स्ते नियमा द्याणानिम, मकेन्द्रियाणां मामादननावतापि मम्यग्द मवन्ना बावान विन्नुमावाद्दनि ॥ कानिदियत्यादि ॥ स्पशमिन्द्रियलब्धिका बवमछामवजमामचतुष्कमो भजमया तयैवा ज्ञानत्रयवमो

इन्दियलद्धियाअलद्धिया । जिब्भिंदियलद्धियाणं चत्तारि नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । तस्सअलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि अण्णाणीवि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी केवलनाणी, जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी तंजहा—मइअण्णाणीय सुयअण्णाणीय । फासिंदियलद्धियाय अलद्धियाय जहा इंदियलद्धिया

त्रिया चमत्विवाय । त्रिजिन्द्रियलब्धिकामा चत्वारिज्ञानामि त्री पयज्ञानामि भजनया । तस्मा लब्धिकामा पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो प्यज्ञा विनोऽपि य ज्ञानिन ते नियमा एकज्ञानिन केवलज्ञानिनः ये पज्ञानिन स्त नियमा ज्ञज्ञानिन तद्यथा-मत्यज्ञानिनस् श्रुताज्ञानिनय । स्पर्शेन्द्रियलब्धिका चलब्धिकाय यथेन्द्रियलब्धिका चलब्धिकाय । साकारोपयुक्ता जीवाः किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम । पञ्च ज्ञानानि

[illegible]

वा स्पर्शनेन्द्रियालब्धिकास्तु केवलिमएव इन्द्रियलब्ध्यसंभिन्नमनोऽप्येवंविधाएवेत्यत उक्तं ॥ अनाहारियेत्यादि ॥ उपयोगद्वारे ॥ सागारोवउत्ते त्यादि ॥ आकारो विकल्प स्तेन सह यो बोधः स साकारो विशेषग्राहको बोधस्तत्र तस्मिन्नुपयुक्ता आत्मवेदका ये ते साकारोपयुक्ता स्तेच ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च तत्र ज्ञानिनां पञ्चज्ञानानि भजनया स्याद् द्वे स्यात्त्रीणि स्याच्चत्वारि स्यादेकं यत्र स्याद् द्वे इत्यादि सुगमं तत्र केवलमात्र मङ्गीकृत्य उपयोगापेक्षया त्वेकदैक मेव ज्ञानं मज्ञानंवाऽतिः अज्ञानिनान्तु त्रीण्यज्ञानानि भजनयैवेति अथ साकारोपयोगतद्भेदमाह ॥ आभिणीत्यादि ॥

आगारोवउत्ताणं भंते ! जीवा किं णाणी अण्णाणी ? पंच नाणाइं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। आभिणिबोहियणाणसागारोवउत्ताणं भंते ? चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं सुयनाणसागारोवउत्तावि। ओहि

त्री स्यज्ञानानि भजनया। आभिनिबोधिकज्ञानसाकारोपयुक्ता भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः ? चत्वारि ज्ञानानि भजनया। एवं श्रुतज्ञानसाकारोपयुक्ताअपि। अवधिज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा अवधिज्ञानलब्धिकाः। मनःपर्यवज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञान

वें करवा तथा स्पर्शनेंद्रियमतिधिज ते वीतमोहावकुव तत्रमें एक केवलज्ञान होयकुवे इतिभाव ए सविधारयद्वा ११ बिष उपयोगद्वार कहैछे—सागारोव उत्ताभंत जीवाकिंनाणी अन्नाणी। साकारोपयोगवन्त हेभगवन्! जीव सूं ज्ञानीहवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचपाचाइति विषयाहार भैयणाए। हेगोतम! जे ज्ञानीहवे तेहने पंचज्ञानभजनायें हुवे केतलाएकने बेज्ञानहवे केतलाएकने तीनज्ञानहुवे केतलाएकने चारज्ञानहुवे केतलाएक ने एक ज्ञानहवे हिवे साकारोपयोगभेद अपेक्षायें कहैछे—आभिणिबोहियणाणसागारोवउत्ताणंभंते जीवाकिंनाणी अन्नाणी। मतिज्ञान साकारोपयोग न्तभगवन्! जीव सूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चत्तारिणाणाइं भयणाए। हेगोतम! मतिज्ञानसाकारोपयोगवन्त जीवनेहवे तिहां चारज्ञानभजनायें हुवे। एवंसुयणाणसागारोवउत्तावि। इम श्रुतज्ञानसाकारोपयोगवन्त पणिकहवा। ओहिणाणसागारोवउत्ताजहा ओहिणाणलद्धिया। अवधिज्ञान साकारोपयुक्त जिम अवधिज्ञानलब्धिक पूर्वेंकह्या तिमकहवा। मणपज्जवणाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवणाणलद्धिया। मनपर्यवज्ञान

ष्टिज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा अवधिज्ञानलब्धिकाः प्रागुक्ताः स्यात्रिज्ञानिनो मतिश्रुतावधियोगात् स्याच्चतुर्ज्ञानिनो
रिज्ञानसाकारेत्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानलब्धिकाः प्रागुक्ताः स्यात्रि
मतिश्रुतावधिमनःपर्यययोगात् तथावाच्याः ॥ मनःपज्जवेत्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानलब्धिकाः प्रागुक्ताः स्यात्रि
ज्ञानिनो मतिश्रुतमनःपर्यययोगात् स्याच्चतुर्ज्ञानिनः केवलज्ञानयोगात् तथावाच्या इति ॥ मत्यागारोवउत्तावमित्यादि ॥ मत्यज्ञानसाकारो यत्र
ज्ञानिनो मतिश्रुतमनःपर्यययोगा स्याच्चतुर्ज्ञानिनः केवलज्ञानयोगा तथावाच्या इति ॥ ज्ञानिनां सत्यपेक्षया पञ्च ज्ञानानि भजनया अज्ञानि
तदनाकार दर्शन तथो पयुक्ता स्वसमवेत्का य ते तथा तेष ज्ञानिनो अज्ञानिनश्च तत्र ज्ञानिनां सत्यपेक्षया पञ्च ज्ञानानि भजनया अज्ञानि

णाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धिया ।
केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया । मइ अन्नाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।
एवं सुयअन्नाणसागारोवउत्तावि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा । अनागारोवउ

लब्धिकाः । केवलज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा केवलज्ञानलब्धिकाः । मत्यज्ञानसाकारोपयुक्तानां त्रीण्यज्ञानानि भजनया । एवंश्रुताज्ञानसाका
रोपयुक्ता अपि । विभङ्गज्ञानसाकारोपयुक्तानां त्रीण्यज्ञानानि नियमात् । अनाकारोपयुक्ता भदन्त । जीवाः किं ज्ञानिनो अज्ञानिनः ? गौतम । पञ्च ज्ञा

साकारोपयोगवन्त ते जिम पांचमे समपय ज्ञानलब्धिवन्त कह्या तिम इहां पणि कहवा । केवलज्ञानसाकारोवउत्ता कह्या केवलज्ञानलब्धिया । केवलज्ञान
साका रोपयोगवन्त जिम केवलज्ञानलब्धिक पूर्वे कह्या तिम कहवा । मतिअज्ञानसागारोवउत्ताण तिन्निअज्ञान भयणाए । मतिअज्ञान साकारोपयोगवन्तने
तीन अज्ञानभजनाये विकल्पेकरी कहवा । एवंसुयअन्नाणसागारोवउत्तावि विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिन्निअन्नाणाइं नियमा । इम श्रुतअज्ञान सा
कारोपयुक्तने पणि तीन अज्ञानभजनाये कहवा विभंगज्ञान साकारोपयोगवन्तने तीन अज्ञान नियमेकरीने हवे । अनागारोवउत्ताणंभंते जीवाणं किं नाणी अ
न्नाणी । अनाकारोपयोगवन्त हे भगवन् । जीव स्युं ज्ञानीहवे अथवा अज्ञानीहवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । हे गौ
तम । जे ज्ञानीहवे तेहने पांचज्ञान भजनाये हवे जे अज्ञानी तेहने तीनअज्ञान भजनायेंहवे । एवंचक्खुदंसण अचक्खुदंसण अनागारोवउत्तावि । एवमि

मान्यानि त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव ॥ एवमित्यादि ॥ यथा अनाकारोपयुक्ता ज्ञानिनोऽज्ञानिनश्चोक्ता एवं चक्षुर्दर्शनाद्युपयुक्ता अपि ॥ नवरंति ॥ विशेषः पुनरयं चक्षुरचक्षुर्दर्शनोपयुक्ताः केवलिनो न भवन्तीति तेषां चत्वारि ज्ञानानि भजनयेति योगद्वार ॥ सयोगीत्यादि ॥ अवधिदर्शनेति ॥

ताणं भंते ! जीवा किं नाणी२ ? पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं चक्खुदंसणअचक्खुदंसण अणागारोवउत्तावि, नवरं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगइया तिनाणी अत्थेगइया चउनाणी, जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी ? जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी

मानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । चक्षुर्दर्शना चक्षुर्दर्शनानाकारोपयुक्ता अपि नवरं चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । अवधिदर्शनाना-नाकारोपयुक्तानां पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनोऽप्यज्ञानिनोऽपि । ये ज्ञानिनस्ते केचन त्रिज्ञानिनः केचन चतुर्ज्ञानिनः । यस्त्रिज्ञानिनस्ते आभिनिबोधि-कज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनः । ये चतुर्ज्ञानिनस्ते आभिनिबोधिकज्ञानिनो यावन्मनःपर्यवज्ञानिनः । येऽज्ञानिनस्ते नियमा त्र्यज्ञानिनः तद्य-

साकार जिम अनाकारउपयुक्त ज्ञानी अज्ञानी कह्या तिम चक्षुदर्शनादिकउपयुक्त पिण कहवा । नवरं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एतलो विशेष चक्षुदर्शनउपयुक्त केवली नहीं तिवारे तेहने च्यार ज्ञान तीन अज्ञान भजनाइं करी कहवा । ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा । अवधिदर्शन अ-नाकारउपयोगवंत हे भगवन् ! जीव स्युं ज्ञानी हुवे अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा नाणीवि अन्नाणीवि । हे गौतम ! ज्ञानी पिण हुवे अज्ञा-नी पिण हुवे । जेनाणी ते अत्थेगइया तिनाणी । जे ज्ञानी हुवे ते केतलाएक तीन ज्ञानवंत हुवे । अत्थेगइया चउनाणी । केतलाएक च्यार ज्ञानवंत हुवे । जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी । ते मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए तीन ज्ञानवंत हुवे । जे चउनाणी ते आभिणिबोहि-यनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे च्यार ज्ञानवंत हुवे तेहने मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान ए च्यारज्ञानवंत हुवे । अन्नाणी ते नियमा

प्रागुक्ते कायद्वारे यथा सकायिका भजनया पञ्चज्ञाना त्र्यज्ञाना वोक्ता तथा सयोगादयोऽपि वाच्या एव मनोयोगादयोपि केवलिनोपि समोयो गादीना नाया यथा मिथ्यादृशो मनोयोगादिमता सज्ञानत्रयभावाद ॥ अयोगीकशासिद्ध इति ॥ अयोगिन केवलज्ञानैकज्ञानिमत्यथ लेश्या

जे अणाणी ते नियमा तिअणाणी तं०—मइअणाणी सुयअणाणी विभंगनाणी । केवलदंसणअणा गारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया । सजोगीणं भंते ! जीवा किं णाणी ? जहा सकाइया, एवं मणजोगी वयजोगीवि कायजोगीवि अजोगी जहा सिद्धा । सलेस्साणं भंते ? जहा सकाइया । किण्हलेसाणं भंते ? जहा सकाइया

या मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिनः । केवलदर्शनानाकारोपयुक्ता यथा केवलज्ञानलब्धिका । सयोगिनो भदन्त ! जीवाः किं ज्ञानि नो ऽज्ञानिनः ? गौतम ! यथा सकायिकाः । एव मनोयोगिनोपि वचोयोगिनोपि काययोगिनोपि । अयोगिनो यथा सिद्धा । सलेश्या भदन्त !

तिअज्ञानी तजवा । जे अज्ञानी ते नियमे तीन अज्ञानवंत हुवे ते कहै छै—मतिअज्ञानी सुयअज्ञानी विभंगज्ञानी । मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानी । केवलदर्शनअणागारोवउत्ताजहा केवलज्ञानलद्धिया १२ । केवलदर्शन अणाकारोपयोगवंत हे भगवन् ! जीव स्यूं ज्ञानी छै अथवा अज्ञानी छै इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम जिम केवलज्ञानलब्धिया एक केवलज्ञानी कह्या तिम ए पणि कहवा, हिवे सयोगीद्वार कहै छै—सयोगीभंते जीवा किंणा ना जहा सकाइया । सयोगी हे भगवन् ! जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम । जिम सकायिकने पञ्चज्ञान तीन अज्ञानभज नायें कह्या तिम सयोगी पणि कहवा असमाट केवलीने पणि । एवमणजोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगी जहासिद्धा १९ । मनोयोगादिकना भावथी तेमाटे इम वचनयोगी पणि काययोगी पणि जिम सिद्ध एक केवलज्ञानवंत हुवे तिम अयोगी पणि एक केवलज्ञानवंत कहवा हिवे लेश्याद्वार कहै छै—सलेसाणभंते जहासकाइया । सलेशी हे भगवन् इत्यादिप्रश्न गौतम उत्तर जिम सकायिकने पञ्चज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह्या तिम सलेशी न पणि कहवा केवलीने पणि शुक्ललेश्या सम्भवकरी सलेश्यपणायकी । कण्हलेस्साणभंते जहासकाइया सइंदिया । कृष्णलेशी इत्यादि प्रश्न कृष्णलेशी

द्वारे ॥ अहासकाइयत्ति ॥ सलेश्या: सकायिकवद् भजनया पञ्चज्ञाना न्यज्ञानाश्च वाच्या:, केवलिनोऽपि शुक्ललेश्यासम्भवेन सलेश्यत्वात् ॥ कषाये द्वारे ॥ अहासइंदियत्ति ॥ कृष्णलेश्या चतुर्ज्ञानिन न्यज्ञानिनश्च भजनयेत्यर्थ: ॥ सुक्कलेसा जहा सलेसत्ति ॥ पञ्चज्ञानिनो भजनया न्यज्ञानिनश्चेत्य॰ इत्यादौ अहासइंदियत्ति ॥ कृष्णलेश्या चतुर्ज्ञानिन न्यज्ञानिनश्च भजनयेत्यर्थ: ॥ भजनया केवलवर्जचतुर्ज्ञानिन न्यज्ञानिनश्चेत्यर्थ: ॥ अलेसा जहा सिद्धत्ति ॥ एकज्ञानिन इत्यर्थ: कषायद्वारे ॥ सकसाइया जहा सइंदियत्ति ॥ भजनया केवलवर्जचतुर्ज्ञानिन न्यज्ञानिनश्चेत्यर्थ: ॥ अकसाइयाणमित्यादि ॥ अकषायिणां पञ्चज्ञानानि भजनया कथ मुच्यते छद्मस्थो वीतराग केवली वा कषाय? तत्र छद्मस्थवीतरागस्या द्य ज्ञान चतुष्क भजनया भवति केवलिनस्तु पञ्चममिति वेदद्वारे ॥ जहा सइंदियत्ति ॥ सवेदका सेन्द्रियवद् भजनया केवलवर्जचतुर्ज्ञानिन न्यज्ञानिनश्च

सइंदिया एवं जाव पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा। अलेस्सा? जहा सिद्धा। सकसाइयाणं भंते! जहा सइं दिया एवं जाव लोहकसाइयाणं। अकसाइयाणं भंते! किं णाणी२? पंच नाणाइं भयणाए। सवेदगाणं भंते!

यथा सकायिका:। कृष्णलेश्या भदन्त! यथा सकायिका सेन्द्रिया। एवं यावत्पद्मलेश्या:। शुक्ललेश्या यथा सलेश्या:। अलेश्या यथा सिद्धा:। सकषायिनो भदन्त! यथा सेन्द्रिया:। एवं यावल्लोभकषायिन:। अकषायिनो भदन्त? पञ्चज्ञानानि भजनया। सवेदका भदन्त? यथा सेन्द्रिया:।

जिम सकायिक सइंद्रिय कह्या तिम कहवा एतले च्यार ज्ञान तीन अज्ञानभजना॰ए। एवं यावत्पद्मलेश्या सुक्कलेश्या अकषायलेश्या। इम नील कापोत तेजो यावत् पद्मलेश्यालगे कहवा शुक्ललेश्यो सलेशीनी परे कहवा तेहने पांचज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कहवा। अलेशीआ जहा सिद्धा १५। अलेश्यो सिद्धनी परे कहवा एक केवलज्ञानवंत इत्यर्थ हिवे कषायद्वार कहेछे—सकसाइयाणमंते जहासइंदिया एवं जाव लोहकसाइया अकसाइयाणमंते पंचनाणा इं भयणाए। सकषायी जिम सइंद्रीकह्या तिम केवलज्ञानवर्जी च्यार अज्ञानभजनायें कहवा इम यावत् लोभकषायिने कहवो अकषायीनो भजनो धा उत्तर छद्मस्थ वीतराग तथा केवली ए अकषाइ कहिये तिहां छद्मस्थ वीतरागने च्यार ज्ञानभजनायें हुवे केवलीने पांचमा केवलज्ञानहुवे इत्यर्थ, हि वे वेदद्वार कहेछे—सवेदगाणमंते जहासइंदिया। सवेदगा भदन्तोधा जिम सइंद्रीकह्या तिम केवलज्ञानवर्जी ने च्यारज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह

वाच्याः ॥ सवेदगा जहासकसाइयत्ति ॥ सवेदका सकषायिवद् ज्ञानया चत्वारो वाच्या यतो ऽनिवृत्तियादरादयो ऽवेदका भवन्ति तेषु छद्मस्थानां चत्वारि ज्ञानानि भजनया केवलिनान्तु पञ्चममिति आहारकद्वारे ॥ आहारगत्यादि ॥ सकषाया भजनया चतुर्ज्ञाना उक्तास्तथा योत्वा आहारका अप्येव नव नवरं आहारकाणां केवलमप्यस्ति केवलिन आहारकत्वादपीति ॥ अनाहारगाणमित्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञान आहारकाणामेवा यं पु

जहा सकषाइया । एव इत्यिवेदगावि एव पुरिसवेदगावि नपुंसगवेदगावि एव अवेदगा जहा अकसाइया । आहारगाणं भंते ! जीवा ? जहा सकसाइया नवरं, केवलनाणपि । अणाहारगाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अन्नाणाइं तिन्नि भयणाए । आभिणिबोहियनाणस्सणं भंते ! केवइए विसए

एव स्त्रीवेदकाअपि । एव पुरुषवेदकाअपि । एव नपुंसकवेदकाअपि । अवेदका यथा अकषायिन । आहारका भदन्त ! जीवाः ? यथा सक षायिणो नवरं केवल ज्ञानमपि । अनाहारका भदन्त ! जीवाः किंज्ञानिनः २? मनःपर्यवज्ञानवर्जानि ज्ञानानि अज्ञानानित्र त्रीणिभजनया ।

स । एवइत्थिवेयगावि । इम स्त्री वेदसहित पणि कहवा । एवपुरिसवेयगावि । इम पुरुष वेदसहित पणि कहवो। एवनपुंसगवेयगावि । इम नपुंसक वेद सहित पणि कहवा । अवेदगाजहाअकसाइया । अवेदक जिम अकषायी कह्या तिम कहवा एतले पंचज्ञान भजनायें हवे जेमाटे अनिवृत्त बादरादि अवे दक हवे तिहां छद्मस्थने चार ज्ञान भजनायें केवलीने एकज्ञान हवे, हिवे आहारक द्वार कहे—आहारगाणंभंते जीवासकसाइया नवरं केवलनाण पि । आहारकजीवनो प्रश्नोत्तर जिम सकषायीने चारज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह्या तिम पणि कहवा एतलोविशेष केवलीने पणि आहारक पणांथी केवलज्ञान पणि इहां कहवो । अणाहारगाणंभंते जीवाकिंनाणी अणपज्जवनाणवज्जाइ । अनाहारक केहवा जीव प्र० ज्ञानी अथवा अज्ञानी ? तेहना उत्तर मनपर्यवज्ञान आहारकनेज हुए तेमाटे मनपर्यवज्ञान वर्जी तथा पहिला तीनज्ञान तीनअज्ञान विग्रहगतिने विषे तथा केवलज्ञान केवलिसमुद्घात तथा सेलेसी तथा सिद्धावस्था एतलेठामे हुवे तिहां अनाहारक पणिहुवे तेमाटे मनपर्यवज्ञान वर्जी ज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह

म प्रानग्रय मप्रामग्रयंच विग्रहे केवलस्य केवलिनः समुद्घातशीलेशीसिद्धावस्था स्वनाहारकत्वामपि स्था दसठक्त ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ श्रय प्रानयो नरद्वारे ॥ केवइयत्ति ॥ किंपरिमाणः ॥ विसयत्ति ॥ गाथरो भाश्मो च इतिगवत् तत्र प्रथमपरिमाकत सावद्वार ॥ सेइत्यादि ॥ स ग्राभिनियोधि कज्ञानविषय स्तद्वा भिनिबोधिकज्ञान समासतः संक्षेपतः प्रभेदाभा भेद ग्रथा मात्ज्ञोवेनेत्यथ चतुर्विध चतुर्विधवा द्रव्यतो द्रव्याणि धर्मास्तिकायादी न्याश्रित्य क्षेत्रता द्रव्याधारं क्षेत्र माकाशमात्रंवा ; क्षेत्रमाश्रित्य कालतो ऽद्धां द्रव्यपर्यायावस्थितिवा समाश्रित्य भावत औदयिकादिभावान् द्र व्यपर्यायांवा ; पर्यायान् समाश्रित्य ॥ दव्वओणंति ॥ द्रव्य माश्रित्या भिनिबोधिकज्ञानविषयद्रव्यंवा श्रित्य यदाभिनिवोधिकज्ञान तत्र ॥ आएसेणंति ॥ आदेश प्रकारः सामान्यविशेषरूप स्तत्र देशेनो घतो द्रव्यमात्रतया नतु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेतिभावः अथवा देशन श्रुतपरिकल्पिततया सर्व

प० १ गोयमा ! सेसमासत्त चउव्विहे प०, तजहा—दव्वउ १ खेत्तउ २ कालउ ३ भावउ ४। दव्वउण आभिणि बोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तउण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वखेत्त जाणइ

आभिनिबोधिकज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषयः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! स समासतः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतश्च । द्रव्य तआभिनिबोधिकज्ञानी आदेशेन सर्वद्रव्याणि जानाति पश्यति । क्षेत्रतआभिनिबोधिकज्ञानी आदेशेन सर्वक्षेत्र जानाति पश्यति । एव

भा १०, हिव ज्ञानगोचर द्वार कहै छै—आभिनिबोधिकज्ञानस्य भगवंत केतलुं विषय प ग। सेसमासतो। मतिज्ञानना च भगवंत केतलो विषय प ग। सेसमासतो । मतिज्ञानमा च याममासंधारे, हे भगवन् केतला वि पय क्ष्य परिमाण विषय घण घरणयन्नि इसवे कहे इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम । तेहमतें भेदपरिमाणको परिसा कहै छै—सेत्त्यादि ते आभिनिबोधि कज्ञान विषय अथवा आभिनिबोधिकज्ञान संक्षेपथी प्रभेदेविषे प्रकारेकरीने इसवे । चतुर्विध प त दव्वथी खेत्तथी कालथी भावथी द्रव्यना च आभिनिबोधिकज्ञानी । भावभेदे ते कहै छै—द्रव्यथी द्रव्य जे धर्मास्तिकायादिक तें प्रतें आश्रयीने क्षेत्रथी द्रव्याधार अथवा क्षेत्रमात्रप्रत्याश्रयीने कालथी अद्धामतें अथवा द्रव्यपर्याय अवस्थितमतें आश्रयीने औदयिकादिकभावप्रतें अथवा द्रव्यनापर्यायप्रतें आश्रयीने । दव्वओणंति, द्रव्यआश्रयीने आ

द्रव्यादि पञ्चास्तिकायादीनि जाना स्यावायपारम्यापेक्षया ऽवबुध्यते यामस्या वायधारणारूपत्वात् ॥ पासइत्ति ॥ पश्यति अवग्रहेहापेक्षया ऽवबु ध्यत अवग्रहेहयो दर्शनत्वा दाहचनाभकारः—नाणमवायधिइठ दंसणमिठअवोग्गहेहाओ तहतत्तरुइसम्म रोइज्जइजेणतंनाण ॥ १ ॥ तथा जसाम ग्राणधर्म दंसणमपविसेसियमायगत्ति ॥ अवग्रहेहेच सामान्यावग्रहरूप अवायधारणेच विशेषग्रहणस्वभावइति मत्याष्टाविंशतिभेद माभिनिबोधि कज्ञान मुच्यते यदाह–आभिणिबोहियनाणे अठावीसंभवंति पयडीउत्ति ॥ इहच व्याख्याने श्रोत्रादिभेदेन षड्भेदतया अवायधारणयो द्वादशविध मतिज्ञान माप्त तथा श्रोत्रादिभेदेनैव षड्भेदतया अवग्रहेहयो व्यञ्जनावग्रहस्यच चतुर्विधतया षोडशविध चक्षुरादिवर्जाममितिप्राप्तमिति कथ न विरोध ? सत्य मेतत् कि त्वविवक्षितत्वान्मतिज्ञानचक्षुरादिवर्जानयो नैवं मतिज्ञान मष्टाविंशतिधोच्यत इति पूज्या व्याचक्षत इति ॥ खेतत्ति ॥ क्षेत्र माश्रित्य श्रुतज्ञानविषयक्षेत्रवा क्षेत्रं यदा श्रुतोपलब्धिज्ञान तच ॥ आदेसेणत्ति ॥ ओघतः श्रुतपरिकर्मितमत्या ॥ सव्वखेत्तत्ति ॥

पासइ, एव कालउ भावउवि । सुयनाणस्सण भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेसमासउ चउ

कालतो भावतोपि । श्रुतज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषयःप्रज्ञप्तः ? गौतम ! स समासत चतुर्विधः प्रज्ञप्त सद्यथा–द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावत ।

अभिनिबोधिकज्ञानविषय द्रव्यते भाषावीने जे आभिनिबोधिकज्ञान तिहा । आदेसेणमदव्वाइ जाणइ पासइ । आदेशकहिये प्रकार सामान्यविशेष रूप तिहा सामान्यकहिये आघवो सामान्यप्रकारे द्रव्यमात्रपरी जाणे पणि ते मांहिला सर्वविशेष अपेक्षाये नजाणे आदेशकहिये श्रुतपरिकर्मितपणे स द्रव्य धर्मास्तिकायादिक । जाणइ । जाणे अवायधारणा अपेक्षाये अवबोध रूपे ज्ञानने अवायधारणारूप पणामाटे पासइ देखे अपेक्षाये अवग्रहईहा अवग्रह ईहाने दर्शनपणाथको गाहाभाचकार—नाणमवायधिइया दंसणमिट्ठउग्गहेहाया । तहतत्तरुइसम्म रोइज्जइजेणतंनाण । १ । तथा जसा मायमवच दंसणमेवविसेसियंनाण । अवग्रह ईहा सामान्यार्थ ग्रहणरूपछे अवायधारणा विशेष ग्रहणसमाछे इति । खेतपाउत्ति क्षेत्राश्रयीने आ भिनिबोधिकविषयने विषे यथा क्षेत्रआश्रयी आभिनिबोधिकज्ञान तिहा आदेसेणति, आघवो यथा श्रुतपरिकर्मितपणे करी अवग्रहरूप जाणे

लोकालोकरूप एव कालतो भावत येति भाष्य भाष्यकार—आयसोतिपगारी ठपादेसेवकप्पदव्वाणं पम्मत्थिकाययाइ आवश्वनठसम्भावेण ॥ १ ॥ रातंसोगालोर्ग कालसवद्धुमवत्तिविहपि । पचोदयाइए मामेवमेयमेवय ॥ २ ॥ भायसोत्तिवसुत सुठयमहेसुतस्समहमाय । पसरवतलखावचमा विसाविसुत्तायुसारवति ॥ ३ ॥ इदंचसूत्र नन्या मिहेवप वाचनान्तरे ॥ नपासइति ॥ पाठान्तरवा पीत मेवच नन्दिटीकाकता व्याख्यातं आदेशः प्रकाराः सच सामान्यतो विशेषतय तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन सवद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशेषतोपि यथा धर्मास्तिकायो ध र्मास्तिकायस्य देश इत्यादि न पश्यति सर्वान् धर्मास्तिकायादीन् शब्दादीस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यती त्यपीति ॥ उवउत्तोत्ति ॥ श्रावसुतोप युक्तो नानुपयुक्तः सर्वि भाजिपामा दजिघेयप्रतिपत्तिसमर्था भवतीति विशयच मुपात सवद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशषतो मग च्यति श्रुतज्ञानस्य तत्स्वरूपत्वात पश्यतिच श्रुतानुवर्तिना मानसेना चक्षुदर्शनेन सवद्रव्याणि चाभिलाप्यान्यय जानाति पश्यतिवा जिनवधापू

विहे पण्णत्ते, तंजहा—दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ । दव्वउणं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ ।

द्रव्यत श्रुतज्ञानी उपयुक्त स्सर्वद्रव्याणि जानाति पश्यति । एवं क्षेत्रत कालतोपि । भावत श्रुतज्ञानी उपयुक्तः सर्वभावं जानाति पश्यति । श्रवधि

केह इम भावनको भवावदो यदि मतिज्ञाननाविषय कहयो श्रतज्ञानमो हेभगवन् ! केतलाविषयकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेसमासपोचउवि हे पं तं । हेगोतम ! ते श्रुतज्ञान संक्षेपथको चारभेदेकह्या ते कहेछे—द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी । द्रव्यथकीयेने क्षेत्रथकीयेने कालथकीयेने भावथकीयेने । द्रव्यथकीयेने श्रतज्ञानी उपयुक्त सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ तत्वज्ञानथकी कालथकी भावथकीपणसुयवाली । तिहां द्रव्यथकीयेने श्रुतज्ञानवं त भावश्रुत उपयुक्त कहिये उपयोगसहित सर्वो श्रनुपयुक्तसहित पभिधानथकी प्रभिधेय प्रतिपत्ति समर्थछे, तेमाटे विशेषथ काल सवद्रव्य धर्मास्ति कायादिकने जाणे विशेषथी मवश्यमवश्यने श्रुतज्ञानना तेहना स्वरूपथकी देखे श्रुतानुवर्ति मन चक्षुदर्शनेकरी ते सव द्रव्य जाणे देखे जे श्रभिप्र इम पूर्वपराद श्रुतकेवलीकहे ते धर्म इम पूर्वथकी पहिला भवनावे जाणे देखे इम क्षेत्रादिकनेविषे पणि मावर्ष भावथकी श्रुतज्ञानी । उवउत्तेसव्वभा

यपरादि श्रुतकवली तदारतस्तु मभना सापुन म्पतिविसेषतो मासव्येत्ति पदे पुनः पश्यती त्यवे दमुक्त–ननु पश्यतीति कर्थ कथम्वन सकलमोच रद्यानापोमा ? इत्रोच्यते प्रज्ञापनाया श्रुतज्ञानपश्यत्तायाः प्रतिपादितस्या दमुत्तरविमानादीना चालेस्यकरचा त्स्वथा चादृष्टस्य सस्यकरचा मु पपत्ते देव क्षेत्रादिष्वपि ज्ञातनीयमिति मन्यतु मपासइत्ति पठन्तीति ननु "जाव्व्रय सुपनाची पवठत्ते सव्वभावे जाणइ" इति पदुक्त मिह तत् "सु एपरितन पज्जवासद्वृति" मनेन सह कथ न विरुध्यते ? उच्यत इह सूत्र सवपाडवन पञ्चौदयिकादयो भावा गृह्यन्ते तांश्च सर्वान् जानाति वा मा त्यथवा मद्य प्यभिलाप्यानां भावाना मनन्तभागएव श्रुतनिबद्ध सतापि प्रसङ्गानुप्रसङ्गत सर्वे ऽभिलाप्याः श्रुतविषया उच्यन्ते यत स तपचया सवज्ञावान् जानाती त्युक्त मनभिलाप्यभावापेक्षयात्तु "सुएपरितम पज्जवासद्व" इत्युक्त मिति मविरोधः ॥ सहुठपमित्यादि ॥ कपोषि चामी रूपिद्रव्याणि पुद्गलद्रव्याणीत्यथ सानिच जघन्यता नन्तानि तैजसभाषाद्रव्याणा मपान्तरालवर्तीनि यत उक्त "तयाभासादव्वाण अतरा ए

एय खेत्तओवि कालओवि, ज्ञावओण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ पासइ। ओहिनाणस्सण भंते! केवइए विसए पन्नत्ते? गोयमा! सेसमासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ ओहिना

णानस्य भदन्त! कियान्विषयः प्रज्ञप्तः? गौतम! स समासतश्चतुर्विध प्रज्ञप्त सद्यथा–द्रव्यत क्षेत्रतः कालता भावतः। द्रव्यतावधिज्ञानी

वे जाणइ पासइ। उपयोगवाळो सर्वभाव जाणे देखे। भ्राशिक्षानकथमते येवहए विसए प । मवधिज्ञानना हेभगवन्! केटलोविषय कह्या? इतिप्रश्न उ त्तर गायमा सेससामचा चउव्विहे प त । हेगौतम! ते अवधिज्ञान सक्षपथको चारेभेदे कह्या ते देखाडवे—द्रव्यथो क्षेत्रथी कालथो भावथी ज्ञव चाव पाशिवाभो रूपोदव्वाई जाणइ पासइ। द्रव्यथको क्षेत्रथको कालथको भावथको, द्रव्यथको अवधिज्ञानी रूपोद्रव्यने आपि देखे इहां का–झ पू क्षम परिणावमन पण ज्ञान देखवा पूर्वकालमन इम जनक्रमथी तेमाटे इहां ते जनकमथाहा परिणामाथ इसा जिसवया तेहने इमकहिये इहां अ वधिज्ञानाधिकारथको प्रथ मयत्ती कइपात पण पहिला आपवि, एहवा बहुं अवधिज्ञानना ता अवधिज्ञान तथा विभगज्ञानने साधारणपणेकरी अ

त्यसदृशपद्दयतीति, उत्कृष्टतस्तु सर्वाण्यपि बादरसूक्ष्मभेदभिन्नानि जानाति विशेषाकारेण ज्ञानत्वात्तस्य पश्यति सामान्याकारेण ऽवधिज्ञानिनो ऽवधि दर्शनस्य बद्यमाणात् नन्वा दौदर्शनं ततो ज्ञान मिति क्रम सत्किमर्थ मेन परित्यज्य प्रथम जानाती त्युक्त ? अत्राच्यते इहा वधिज्ञानादि कारा स्माद्याध्ययनाधमादौ जानातीत्युक्त मवधिदर्शनस्य स्वयंविविधसाधारणत्वना प्रधानत्या स्पष्टा त्पश्यती त्युक्त अथवा सर्वाएव ल ब्धयः साकारोपयोगोपयुक्तस्यो त्पद्यन्ते लब्धि श्चावधिज्ञानमिति साकारोपयोगोपयुक्तस्या वधिज्ञानलब्धि र्जायत इत्येतस्या र्थस्य प्रापनार्थं साका रोपयोगाभिधायकं जानातीति प्रथम मुक्तं ततः क्रमशो पयोगप्रवृत्तः पश्यतीति ॥ अवधिदर्शनि ॥ एवत्र तत्रदं सूत्र—रवखेत्र तो णं ओहिणाणी जहन्ने ण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं जाणइ पासइ इत्यादि व्याख्या पुनरयं क्षेत्रतो ऽवधिज्ञानी जघन्यना गुलस्यासंख्येयभाग मुत्कृष्टतो ऽसंख्या त्यलोके क्षेत्र मपेक्ष्य लोकप्रमाणानि खण्डानि जानाति पश्यति कालतो ऽवधिज्ञानी जघन्यना वलिकाया असंख्येय भाग मुत्कृष्टतो ऽसंख्या उत्सर्पिण्य

णी ऊसप्पिणीओ जाणइ पासइ, जहा नंदीए जाव भावओ। मणपज्जवनाणस्स णं भंते! केवइए विसए प०,

वसर्पिण्याश्च जानाति पश्यति। यथा नन्दिस्त्रयावद्भावतः। मनःपर्यवज्ञानस्य भदन्त! कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम! स समासतश्चतुर्वि

अवधिज्ञानवालो पासइ इत्या पदेका अथवा समसोळो मतिसाकारोपयुक्तने उपजे लब्धि स अवधिज्ञान तेमाटे साकारोपयुक्तने अवधिज्ञानलब्धि उपजे ए१३। पबने अनाकारोपयोगे साकारोपयोगाभिधान आदि एतसामाटे पहिले वस्तु तिवार पूठे अनुक्रमे उपयोगप्रवृत्तिवन्तो पासइ एतला कथो द्रव्यथकी अवधिज्ञानी रूपीद्रव्य ते पुद्गलद्रव्य ते मते आदि एथे ते जघन्यथकी अनन्ता तैजस भाषाद्रव्यने विचालेरतें ते वद्ध—तेयाभासादव्वान्तर रापत्तमभइ पट्टिवति, उत्कृष्टो सर्वबादर सूक्ष्मभेद भिन्नर्ते आदि विशेष आकारकरी ज्ञानथकी तेहने देखे पछि सामान्यकरी अवधिज्ञानीने अवधि दर्शना अवग्रहभावथकी। अवधिज्ञानीप्रति। क्षेत्रथकी सूत्रनेविषेतु तिमकहयो तिहां इम सूत्रे—खेत्तओणंओहिणाणी जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्ज भागं जाणइ पासइ, इत्यादि क्षेत्रथकी अवधिज्ञानी जघन्यथकी अंगुलना असंख्यातमाभाग आदि इत्यो उत्कृष्टथकी अलोकनविषे गतिअपेक्षाभे असंख्या

ऽप्यमिवी रतीता पनागताय जामाति पश्यति सद्गतरूपिद्रव्यापगमात्, मथ किपद्दूरं याव दिव मदीमूत्रं याप्य मित्याव ॥ आवस्रायद्वीत्ति ॥ प्रावाधिकारं याव दित्यर्थः मवैव-मावता ऽवधिज्ञानी अपम्येना मन्ताम् जावा नाधारद्रव्यानन्तास्या ज्ञामाति पश्यति मतु प्रतिद्रव्यमिति, उ त्कृष्टतो प्यनमाम्भावात् जामाति पश्यतिम, तपि मोत्कृष्टपदिनः सपपर्यायाका ममन्तभागइति ॥ उज्जुमइति ॥ मनम मति सर्वेदन मित्यथः ग्राही सामान्यग्राहिणी मति मजुमिति घटो ऽमेन चिन्तित इत्यध्यवसायनियन्धना मनोद्रव्यपरिच्छित्ति रित्यथः, मथवा। ऋज्वी मति यस्या सा ऋजुमति साहानव गृह्यते ॥ मणतेति ॥ ममन्तामपरिमितान् ॥ मणतपएसिपत्ति ॥ मनन्तपरमाण्वात्मकान् ॥ पहामदीएत्ति ॥ तत्र चेदं सूत्र

१ गोयमा से समासओ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४। दव्वओणं उजुमई अणंते अणतपएसिए जहा नंदीए

पामप्रत स्मापया-द्रव्यतः क्षत्रतः कालतो भावतः। द्रव्यत ऋजुमत्यनन्त मनन्तमदेशिकं यथा नन्दिकेयाख्यायतः। केवलज्ञानस्य भदन्त! कि

तामाव प्रमानपसम ते मतें जाणे देखे, कालथकी पवधिज्ञानी अवमे पावलिकाना पसंख्यातमाभाग जाणे देख, उत्कृष्टथकी पसंख्येय सर्पिणी पव मर्पिणी पतीत पनागत जाणे देखे तेहने पनन्तम रूपोद्रव्य मयगमथकी, दिवे क्षेत्रकालने इहां मन्दासूत्र वाचवा ते कहेछे—जावभावपत्ति, भाव पधिकारमने वाचवा ते इम भावथकी पवधिज्ञानी जघन्यथकी पनन्ताभाव मर्ते पाधारद्रव्य पनन्तापर्यायथको जाणे देखे पचि द्रव्यमर्ते नजावद् नपास र जत्कृष्टथकी पनन्तामावमर्ते जाणे देखे ते पचि उत्कृष्टपदे जे सवपर्याय तेहने पनन्तमे भागे। मणपज्जवणाणम्भणभते केवइए विसए प । ममपयत्र सामना हेभगवन्! केतलाविषयथकी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओ चउव्विहे पं तं । हेगौतम! ते संक्षेपथकी चारभेदेकरी ते कहेछे—द व्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी दव्वओणंउज्जुमई अणंते अणतपएसिए जहानंदीए। द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी तेमांहे द्रव्यथकी ऋजुमति मनन ते मति सर्वेदन सिमाय घडोचिन्तवियो सामान्यग्राहिणी जेमति ते ऋजुमति घडो इवें पुरुषे चिन्तव्यो इसो पध्यवसाय निवन्धन मनो द्रव्य परिच्छित्ति इत्यथ, पथवा ऋज्वीमतिछे जेहने ते ऋजुमतितदन्त जोम पश्चिमे पणतेत्ति, पनन्तकहियें पपरिमित तेहमर्ते तथा पनन्तपरमाणुआ

मर्व-गंधे जाव्द पासइत्ति तत्र स्कंधान् विशिष्टैकपरिणामपरिणतान् संज्ञिभिः पर्याप्तकैः प्राणिभिः रद्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्तिभिः मनस्त्वेन प रिणामितानित्यर्थः ॥ जाणइत्ति ॥ मन पर्यायज्ञानावरणक्षयोपशमस्य पटस्था स्साक्षात्कारेण विशेषमूर्तिपरिच्छेदा ज्ञानाती त्युच्यते तदालो कितं पुन रय पटादिमथ मनःपर्यायज्ञानस्याध्यक्षतो नजानाति किंतु तत्परिणामान्यथानुपपत्त्या ऽतः पश्यतीत्युच्यते उक्तच भाष्यकारेण— जाणइ बज्झाणुमाणाउत्ति, इत्य चैत मुक्तीकर्तस्य यतो मूर्तद्रव्यालम्बन मयद् मनार मूर्तमपि धर्मास्तिकायादिक मन्येरन् नच स दनेन साक्षा त्कर्तुं शक्यत तथा चतुर्विषय चतुर्दशनादिदशम मुक्त मतो जिज्ञासम्थन मयेद मघसय तत्र दक्षमसमवा स्पश्यतीत्यपि मयुक्तं एकप्रमात्रपरतया तद्ममारजानित्या योपन्यस्त मित्यम मतिविसरत्व "तचेवउविउलमइ अब्भहियतराए वितिमिरतराए विसुद्धतराए जाणइ पासइ, तानय स्क न्धान् विपुला विशेषग्राहिणी मति विपुलमति घटो ऽनेन चिन्तितः सच सौवर्णः पाटलिपुत्रको ऽद्यतनो महा नित्याद्यध्यवसायहेतुभूता मना द्रव्यावग्राहि त्यर्थः विपुला मति यस्यासौ विपुलमति सद्गामया ऽधिकतरकाम् अर्धतृतीयाङ्गुलाधिकतया बहुतरान् द्रव्यायतया वर्णादिभिः वितिमिरतरा दया तिमिरम विगतान्धकारा इव ये ते वितिमिरतरा स्तएव वितिमिरतरका स्तान् अतएव विशुद्धतरकाम् विस्पष्टतरकाम्

अवधर्म जिम मन्दोभूतनेविषे तात ते मूल संघे जावद पासइत्ति, तिहां स्कन्ध ते विशिष्ट एक परिणामपरिणत संज्ञीपर्याप्तामाणी अढाई द्वीपसमुद्र म ध्यवर्त्ती तिणे मनपणेकरी परिणमाव्या तेहप्रते जाणे मनपर्यव ज्ञानावरणक्षयोपशमना पटपणाथको इहां देखवानो वर्णमा विशेष टीकाथी जाण ।। ते चउविउलमइ पभभहियतराए वितिमिरतराए विसुद्धतराए जाणइ पासइ, एहनोयय तेहीज स्कन्धप्रते विपुलग्राहिणीमति ते विपुलमति जि णे घट चिन्तव्यो ते सुवर्णमा पाडलिपुरमा नीपना भाजनोमाढो इत्यादिक अध्यवसाय हेतुभूत मनोद्रव्य ग्रहिसि भणया विपुलविस्तीर्ण म ति जेहनी ते विपुलमति तेहसहीज भाव, ऋजुमतिहइ अढीअंगुलपेलायें अधिकतरपणा द्रव्याव पर्यवकरी विर, वितिमिरकरी विगत, कहिये गया अन्ध कारनारे जिहां तेहथी एतलामाटेज विसुद्ध, वितिमिरगट एहवा मतें जाणे देखे तथा खतमाणऋजुमइ अहेजावइमीमत्थपभाणपुढवीए, उवरि

आमाति पश्यतिग तथा " सेतहं उज्जुमइ भवे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अन्तोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भा वे जाणइ पासइ, तत्र क्षेत्रत ऋजुमति रधः अधस्तात् याव दमुष्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या उपरिमाधस्त्यान् क्षुल्लकप्रतरान् ताव त्तिर्यग्लोकगतान् जाना त्याभाति पश्यतीति याग अत्र च क्षुल्लकाभिधाना तिर्यग्लोकमध्या दधो याव दधोलोकग्रामा स्तावि ताव दमुष्या रत्नप्रभाया उपरिमा क्षुल्लकप्र तरा क्षुल्लकाश्च तथा अधोलोकप्रतरापेक्षया ते ऽपि च यत्ता दधोलोकग्रामान् याव ते ऽपसृता क्षुल्लकप्रतरा अत्र यावत् ज्योतिषस्य ज्योति श्चक्रस्योपरितनं "तिरियं जाव अंतो मणुस्सखेत्तंति" तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रस्या तं याव दित्यत्र सर्वेय विभागत आह "अड्ढाइज्जेसुत्यादि" तथा "त चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरागं विउलतराग विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइत्ति" तत्र । तच्चेवत्ति । तदे वेयाधि कारस्य प्राधान्या त्तदेव मनःसञ्ज्ञिसमन्वितजीवाधारं क्षेत्र मभिधीयते तथा त्वधिकतर मायामविष्कम्भावाश्रित्य विपुलतरं बाहल्य माश्रित्य

मतिज्ञानवाळा नीचे रत्नप्रभाना उपरितन नीचेना क्षुल्लक प्रतरो सुधी, ऊर्ध्व ज्योतिषचक्रना उपरितल सुधी, तिर्यग् मनुष्यक्षेत्रमां अढी द्वीप समुद्रोमां पन्नरस कर्मभूमिमां, छप्पन्न अंतरद्वीपोमां संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ता जीवोना मनोगत भावने जाणे देखे, तिहां क्षेत्रथकी ऋजुमति नीचे आ रत्नप्रभापृथ्वीने उपर नीचे क्षुल्लक प्रतर लगी जाणे अहीं प्रतर पदार्थ विचारतां तिहां क्षुल्लक नामे तिर्यग्लोक मध्यवर्ती नीचे जाणे ए वाणव्यन्तरो अधोलोकनी प्रतरनी अपेक्षाए जाणवा तेथकी नीचे अधोलोकग्रामपर्यन्त यावत् ते नीचेना सर्व क्षुल्लक प्रतरो उपर यावत् ज्योतिषचक्रना उपरितल तथा तिरछा यावत् मनुष्यक्षेत्रना पर्यन्तभागने एम सर्व विभागथी कहे छे—अढाइज्जेसुत्यादि, तथा तेने विपुलमति अढी अंगुल अधिकतराग विपुलतरागं विशुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणे देखे तिहां । तंचेवत्ति एटले क्षेत्राधिकारना प्राधान्यपणाथी तेहीज मनःसंज्ञि समन्वित जीवाधार क्षेत्रमां वर्ते तिहां अढार्यंगुलना अधिका तिहां अधिकतर ते आयामविष्कम्भ आश्री

विशद्धतरमं निम्मलतरं वितिमिरतरकत् तिमिरकल्पतदावरणस्य विशिष्टतरक्षयोपशमसद्भावादिति तथा–कालसुवण्णउजुमई अइमेवं पलिउवमस्स असंखज्जइभागं उक्कोसेणं वि पलिउवमस्स असंखज्जइभागं जाणइ पासइ अतीय मणागयं च तथव विउलमइ विपुलतराग वितिमिरतराग जा णइ पासइ, किंच नन्दीसूत्र मिदा ध्यय मित्याह ॥ जावभावतोति ॥ भावसूत्र यावदित्यर्थः तथैव–भावओ णं उजुमइ अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तथव विउलमइ विपुलतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ॥ केवलणाणस्सेत्यादि ॥ एवं जावभावओत्ति ॥ एवं सुत्तन्यायेन जाव भावत इत्यादि सूत्र तावत् केवलविषयाविधायि नन्दीसूत्र मिदा ध्यय मित्यर्थे तत्रैव–खेत्तओ णं केवलणाणी सव्वं खेत्तं जा णइ पासइ इह धर्मास्तिकायादिसर्वद्रव्यग्रहणेना काशद्रव्यस्य ग्रहणेपि च पुनस्तदाग्रहणं तस्य क्षेत्रत्वेन रूढत्वा दिति ॥ कालओ णं केवलणाणी

जाव भावओ । केवलनाणस्स णं भंते ! केवइए विसए प० ? गोयमा ! से समासओ चउव्विहे प०, तंजहा

ग्रन्थिविषय प्रज्ञप्तः ? गौतम ! स समासतश्चतुर्विधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा–द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः । द्रव्यतः केवलज्ञानी सर्वद्रव्याणि जानाति

यदीति तथा विपुलतर ते बाह्यभावयोग विशुद्धतर ते मति निर्मल वितिमिरतर ते तिमिरसदृशो तदावरणस्य विशिष्टतर क्षयोपशम सद्भावस्यभा भावे देशे, तथा । कालमाणअइज्जेसु दीवसमुद्देसु असंखेज्जइभाग अइक्कमे वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग जाणइपासइ, अणागयमणागयं च, तथैव विउल मइ, विमलतरागं वितिमिरतराग जाणइपासइ । एवं सुत्तं देशान्तरणे नन्दीसूत्र इत्यादिना ते यथैव–भावभावओ । ओसगे भावसूत्रे तत्रैव ज हा ते इम भावओ णं उजुमई अणंते भावे जाणइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तथव विपुलमइ विमलतरागे वितिमिरतराग जाणइ पासइ । केव लणाणस्स णं भंते केवइए विसए प । केवलज्ञानस्य भगवन् ! कियान् विषयः कियद्ग्राह्य उत्तर । गोयमा से समासओ चउव्विहे पं ते दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । हे गौतम ! ते केवलज्ञान संक्षेप चारे भेदे कह्या ते देखाडेछे—द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी । द्रव्यथकी केवल णाणी सव्वदव्वाइं जाणइपासइ । तिहां द्रव्यथकी केवलज्ञानी सर्वद्रव्यनाजाणे देखे इम । क्षेत्रथकी, केवलज्ञानी सर्वक्षेत्रजाणइपासइ कालथकी केवल

मनु काल आवइ पासइ जावइतं केवली मइ माबे जावइ पासइ ॥ मइयणावस्सेत्यादि ॥ मइयणाणपरिगयाइति ॥ मत्यज्ञानेन मिथ्यादर्शनस वलितना वग्रहादिरूपो त्पत्तिरूपादिमात्र परिगतानि विपर्यीकृतानि द्रव्याणि यानि तानि तथा आना त्यवायादिना पश्य त्यवग्रहादिना यावत्कर णा दिदं द्रव्य-खत्तउन मइयणाणी मइयणाणपरिगयं खेत्तं जाणइ पासइ कालउण मइयणाणी मइयणाणपरिगयं कालं जाणइ पासइत्ति ॥ सु

दव्वउ ८। दव्वउण केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावउ। मइअन्नाणस्सणं भंते! केवइए विसए प० ? गोयमा ! चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वउ ४। दव्वउण मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयाइं दव्वा इं जाणइ पासइ, एवं जाव भावउ। मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगए भावे जाणइ पासइ। सुयअन्नाणस्स

पश्यति। एवं यावद्भावत। मत्यज्ञानस्य भदन्त। कियान्विषयः प्रज्ञप्त ? गौतम। स समासतश्चतुर्विधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा-द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावतः। द्रव्यतोमत्यज्ञानी मत्यज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि जानाति पश्यति। एवं यावद्भावतो मत्यज्ञानी मत्यज्ञानपरिगतं भाव जानाति प

णाणामत्तंआभाआणइपासइ, भावओण केवलणाणीसव्वभावेजाणइपासइ इत्यादि मन्दासूत्रवत्तो वक्तव्य। मइयणाणस्सणभंते केवइएविसए प । मति ज्ञानस्य भदन्त! केवत्तारि, हेभगवन्! केतक्षाविषय कथ्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओ चउव्विहे प त। हेगौतम! मतिज्ञानस्य संक्षेपतो चा रभेदे कथा त'जहै—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। द्रव्यपात्रयोगे क्षेत्रपात्रयोगे कालप्रयोगे भावपात्रयोगे। तत्रपावमइयणाणी मइयणाण परिगयाइं दव्वाइं जाणइपासइ। द्रव्यतो मतिज्ञानी मिथ्यादर्शनसवलित अवग्रहादिना तथा औत्पातिक्यादि बुद्धिकरी परिगतानि विपर्योकृत न द्रव्य तत्समसे अवायादिके करी जाण अवग्रहादिकहरी देखै। एवजावभावओ मइयणाणीमइयणाणपरिगएभावे जाणइ पासइ। इम यावत् शब्द थी एह कहवा खेत्तओणमइयणाणीमइयणाणपरिगयं खेत्तजाणइपासइ कालओणमइयणाणीमइयणाणपरिगयं कालजाणइपासइ तथा भावथको मतिज्ञानीमतिज्ञानपरिगतभाव जाणे देखै। सुयणाणस्सणंभंतेकेवइएविसए पं। श्रुतज्ञानस्य कथाक्षासत्तारि, हेभगवन् केतला विषयगोचर कह्या

पयाणान्त्वादि ॥ सुयअन्नाणपरिगयाइंति ॥ श्रुताज्ञानेन मिथ्यादृष्टिपरिगृहीतेन सम्यक्श्रुतेन लौकिकश्रुतेन कुप्रावचनिकश्रुतनया यानि परिगता नि विपर्यीकृतानि तथा ॥ आघवइति ॥ आग्राहयति प्रज्ञापयतिवा आख्यापयतिवा प्रत्यापयतीत्यर्थः प्रज्ञापयति भेदत कथयति प्ररूपय ति उपपत्तितः कथयति यानन्तार पुन रिद मपिच मयलायते-दर्शय निर्दर्शय उपदंसइत्ति ॥ तत्रच दर्शय स्वपमासाश्रस साधु यथा गौ स्तथा गवय इत्यादि निदर्शयति हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन उपदर्शय त्युपनयनिगमनाभ्या मतान्तरदर्शनेनवे ति ॥ दव्वओणं विभंगणाणीत्यादि ॥

ण भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेसमासओ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४ । दव्वओणं सुयअ ण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ, एवं खेत्तओ कालओ, भावओणं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ तंचेव । विभंगनाणस्सणं भंते ! केवइए विसए प० ? गोयमा ! से स

यति । श्रुताज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषयः प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासत चतुर्विधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावत । द्रव्यत श्रुताज्ञानी श्रुताज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि आग्राहयति प्रज्ञापयति प्ररूपयति । एवं क्षेत्रतः कालतो भावतः श्रुताज्ञानी श्रुताज्ञानपरिगतं भाव माग्राहयति तथैव । विभङ्गज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषयः प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासत चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रत कालतो

इवतिय प्रश्न। गोयमा समासथी चउविह प तंजहा । हे गौतम ! ते श्रुतअज्ञान संक्षेपथकी चार भेदे कह्या ते देखाडे छे—द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भा वथी । द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथकी भावथकी । दव्वओणसुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइ दव्वाइ आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ । द्रव्यथकी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञान मिथ्यादृष्टि परिग्रहीत सम्यक्श्रुत तिणेंकरी अथवा लौकिकश्रुत कुप्रावचनिकश्रुत तिणेंकरी जे परिगत विषयीकृतद्रव्य ते प्रते विस्तारे भेदथ की कहे उत्पत्तिथी कहे। एवंजेणया कालथा भावथाथ सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगएभावे आघवेइ तथेव। इम क्षेत्रथकी श्रुतअज्ञान परिगतक्षेत्र प्रते कहे कालथकी श्रुतअज्ञान परिगतकालप्रते कहे भावथकी श्रुतअज्ञानपरिगत भावप्रते कहे इम सर्व तिमजकहवा पण्णवेइपरूवेइ सहवा। विभ

भावइति ॥ विभङ्गज्ञानम ॥ पासइति ॥ अवधिदर्शनमिति अथ आसङ्गारे ॥ साइएइत्यादि ॥ इह यः केवली द्वितीयस्तु मत्यादिमान् तत्राद्यस्य मात्यपर्यवसितानि ज्ञानतएव कालप्रतीयत इति द्वितीयस्यैव तं जघन्यतरभेद सुपदर्शयितु मिद माह ॥ तत्थणं जे से साइए इत्यादि ॥ तत्र ॥

मामओ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४। दव्वओणं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओणं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ पासइ। नाणिणं भंते! नाणीत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! नाणी दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—साइए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए,

भावतः। द्रव्यतो विभङ्गज्ञानी विभङ्गज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि जानाति पश्यति। एवं यावद् भावतो विभङ्गज्ञान्यपि विभङ्गज्ञानपरिगत भाव जानाति पश्यति। ज्ञानी भदन्त! ज्ञानीति कालतः कियच्चिरं भवति? गौतम! ज्ञानी द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—सादिकोवा अपर्यवसित। सादिकोवा सपर्यवसितः। तत्र यः स सादिकः सपर्यवसितः स जघन्येनान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षेण षट्षष्टिसागरोपमाणि सातिरेकाणि। आभिनि

गनाणस्सणंभंते केवइएविसए पण्णत्ते। विभंगज्ञानना हेभगवन् केटलाविषय कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओचउव्विहे प त। हेगौतम ते संक्षेपथकी चारभेदे कह्या ते कहेछे—द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी। द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी। द्रव्यथकी विभंगज्ञानी विभंगज्ञा नपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ पासइ। द्रव्यथकी विभंगज्ञानी विभंग परिगत द्रव्य जाणे देखे। एवजावभावओविभंगणाणीवि विभंगणाणपरि गयभावे जाणइ। इम यावत्मध्ये क्षेत्रथकी विभंगज्ञान परिगतक्षेत्र जाणे देखे कालथकी विभंगज्ञानपरिगत कालथकी देखे भावथकी विभंगज्ञा नपरिगतभाव जाणे देखे, हिवे कालद्वार कहेछे—णाणीणं भंते णाणित्तिकालओकेवच्चिरंहोइ। ज्ञानी हेभगवन् ज्ञानसहितपणा कालथकी केतलोकाल निरन्तर इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीदुविहे प तंजहा। हेगौतम ज्ञानी दोयभेदे कह्या ते कहेछे—साइएवाअपज्जवसिए साइएवासपज्जवसि ए। तिहां एक आदिसहित अने अन्तरहित बीजा तिहां एक आदिसहित अने अन्तसहित। तत्थणंजेसेसाइए सपज्जवसिए सेजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

जघन्येनमतोमुहूर्त्तमिति ॥ भाद्य छामद्वय माश्रित्यो त्वं तस्यैव जघन्यतो मभुहूर्त्तमात्रत्वात् तथा ॥ उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं साइरेगाइंति ॥
यदुक्तं तदाद्य छामद्वय माश्रित्य तस्य उत्कर्षेणे तावत्येव स्थितिः सा चैव भवति–दोवारविजयाइसु गयस्सतिण्णिअच्चुए अहवताइं । अइरेगनरभवि
य नाणाजीवाणसव्वद्धति ॥ १ ॥ आभिणिबोहियेत्यादि सूत्रमात्र एव चैतत् द्रष्टव्यं–आभिणिबोहियणाणीणं भंते । आभिणिबोहियनाणित्ति का
लओ केवचिरं होइत्ति ॥ एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी त्यादि प्रथमपदे एव मित्यमन्तरोक्तेन आभिणिबोहियेत्यादिना सूत्रक्रमेण मान्याभि
निबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञान्यवधिज्ञानिमनःपर्यवज्ञानिकेवलज्ञान्यज्ञानिमत्यज्ञानिश्रुताज्ञानिविभङ्गज्ञानिनां ॥ सचिट्ठणत्ति ॥ भवस्थितिकालो यथा का

तत्थण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं साइरेगाइं । आ
भिणिबोहियनाणीणं भंते ! एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी मइअन्नाणी सुय

यथिकज्ञानी भदंत ! एवं ज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी यावत्केवलज्ञानी अज्ञानी मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी विभङ्गज्ञानी एतया भदन्त प्रथ

[illegible]सागरोपमाणि सातिरेकाणि । तिहां जी सादि सपर्यवसित तो जघन्यथको अंतमुहूर्त्त ए परिणाम [illegible] तिहने जघन्यथको य
[illegible] तथा उत्कृष्टथको साधिक छासठ सागरोपम परिणाम [illegible] उत्कृष्टथको साधिक सागरोपम छासठ स्थि
तिछे, ते इमकर [illegible] [illegible] । अइरेगनरभविय नाणाजीवाणसव्वद्धति ॥ १ ॥ [illegible] विमानआश्री अथवा
[illegible] तिवारे छासठ सागरोपमछे भने मनुष्यना भवनाआश्री अधिका ए एकजीव आश्रयीकहु अनेकजीव आश्रयी सब
काल जाणवा । आभिनिबोधिकनाणी भंते एव नाणी आभिनिबोधिकनाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी०
सि [illegible] [illegible] । ए इम [illegible] , आभिनिबोधिकनाणीण भंते आभिनिबोधिकनाणित्तिकालथकी केतलोकाल रहे इति
प्रश्न उत्तर ए एव इम अनन्तरे कह्या आभिनिबोधिकादि, सूत्रक्रम करी ज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केव

यस्थितौ प्रज्ञापनाया मष्टादशे पदे निहित तथा वाच्य तत्र ज्ञानिनां पूर्व मुक्तएवा वस्थितिकाल मत्र पूर्व मुक्तस्या प्यतिदेशतः पुन प्रकर्म तत्कमप्ररूपपतितस्या द्विपबशेयं भाभिनिबोधिकज्ञान्याविद्वमस्यतु जघन्यती उत्तर्मुहूर्त मुत्कृष्टतस्तु सातिरेकाणि षट्षष्टिसागरोपमाणि मवधिज्ञा निना मध्यमं मवरं जघन्यतो विशषः सचाय "इंहिवाकी तदसमं एक समयं, कथ ? यदा विभङ्गज्ञानी सम्यक्त्व प्रतिपद्यते तत्प्रथमसमयएव वि भङ्ग मवधिज्ञान भवति तदनन्तरमेव तत् प्रतिपतति तदा एक समय मवधि भवती त्युच्यते—मनपज्जवनाणीण भंते । पुच्छा ? गोयमा । ज हण्णेणं एक्क समय उक्कोसेणं दसूणा पुव्वकोडी कथ ? अपतस्य प्रमत्तगुणस्थाने वर्तमानस्य मन पर्यायज्ञान मुत्पन्न तत उत्पत्तिसमयसमनन्तरमेव विन ष्ट मत्यय मप्र समयं तथा चरणकाल उत्कृष्टो देशोना पूर्वकोटी तत्प्रतिपत्तिसमनन्तरमेव यदा मनःपर्यवज्ञान मुत्पन्न मायज्जीवा मुवृत्त तदा भवति मनःपर्यायस्या त्कृष्टतो दशोना पूर्वकोटीति केवलनाणीणपुच्छा ? गोयमा । साइए अपज्जवसिए अन्नाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणीण पु

श्रणाणी विन्नगनाणी एएसिण श्रठरसवि सञ्चिठणा जहा कायठिइए श्रतर सद्ब जहा जीवाभिगमे श्रु

स्थिति यथा कायस्थितौ अनन्तरं सर्व यथा जीवाभिगमे । अल्पबहुत्वानि त्रीणि यथा बहुवक्तव्यतया किय तो भदंत ! आभिनिबोधिक

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी विभंगज्ञानीति, ए पचज्ञान तीनअज्ञान ए आठने पर्यवसितकाल ,जहाकायठिइए ए जिम कायस्थिति पन्नवणा पठारमा पदमे विषे कह्या तिमकहवो तिहां ज्ञानीने पूर्वकह्या इ ज पर्यवसितकाल अ पूर्वकह्यानेज पतिदेशकवो मवी कह्या ते एकप्रकारे पन्नामाटे एहवा आंकवा आभिनिबोधिकज्ञान पाति कायता जघन्यथको पन्तमुहूर्त उत्कृष्टथको साधिक छासठ सागरोपम पवधिज्ञानीने पनि इम नवर जघन्यथकी विशेष,आदिज्ञानी एकसमय तेजिम किवारे विभंगज्ञानी समकित पडिवजे ते पडिवजमये तीज विभंगने भवधिज्ञानहवे ते पनन्त रे वीज समये तिवारे एकसमय पवधिज्ञानहवे, मनपज्जवनाणीणभंते पुच्छा गोयमा जघन्यएकसमयं उक्कोसेणंदेसूणापुव्वकोडी, तेजिम संयमने पप मत्तगुणस्थानविषे वर्तमानने मनपर्यायज्ञान उपना पछे उत्पत्तिसमय पनन्तरेमरया इम एकसमयथुये तथा चारित्रकाल उत्कृष्टो देशोन पूर्वकोटिने

च्छा ? गोयमा ! अणाई सपज्जवसिए (भव्यानां) १ अणाईएया अपज्जवसिए (अ
व्याना) २ साईएया सपज्जवसिए [प्रतिपतितसम्यग्दृष्टीनां ३] तत्थ णं जे से साईए सपज्जवसिए से जहन्नेण अंतोमुहुत्तं ॥ सम्यक्त्व प्रतिपतितस्य
अन्तर्मुहूर्तोपरि सम्यक्प्रतिपत्तौ ॥ उक्कोसेण अणंतकालं अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ सम्यक्त्वाद्
च्यवनरूपत्वादि प्रमत्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणी इतिवाच्य पुनः प्राप्तसम्यग्दर्शनस्याति-विमग्गणाणीणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कसमयं, तस्य
तिसमयानन्तरमेव प्रतिपाते "उक्कोसेणं तत्तीसं सागरोवमाइं देसूणपुव्वकोडी अब्भहियाइं" देशोना पूर्वकोटिं विभगितया मनुष्येषु जीवित्वा अप
तिष्ठानादा युत्पद्यस्वेति ॥ १७ ॥ अंतरद्दारे "अंतरं सव्व जहा जीवाभिगमेति" पश्चानां ज्ञानानां त्रयाणां चाज्ञानानां अन्तरं सव यथा जीवाभिग
म तथा वाच्य तथैव-आभिणिबोहियणाणस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अणंतकालं जाव अ

ते पडिवाइ अणंतरेण तिवारे अवधिज्ञान अवने ते पाछो लहे तो तिवारे हुवे अवधिज्ञाननो उत्कृष्टो देशोन पूर्वकोटि इति ४ अज्ञानीनो
प्रश्न गोयमा सादिसपज्जवसिय पाछिमिलित अण अंतरवितके, अज्ञानीमज्ञानी सपज्जवसीयपुच्छा गोयमा अज्ञानी मतिअज्ञानीय सुयअ
ज्ञानीयतिविहे पं त अणाइएअपज्जवसिए अनादि अनंत एभागा अभवने हुवे १ अणाईएवासपज्जवसिए, अनादि सांतभांगा भव्यने हुवे २ साइ
एवासपज्जवसिए आदिसांत ए भव्यने पडिवाइआश्री भांगावे ,तत्थणंजेसेसाइएसपज्जवसिए सेजहन्नेणअंतोमुहुत्त, ते जिम सम्यक्त्वथी पड्या अंतर्मुहूर्त
उपरि वली समकित पडिवज्जे तेहने अपेक्षयाथी अंतर्मुहूर्तहुवे ,उक्कोसेणअणंतकालं अणंताउस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेतओ अवड्ढपोग्गलपरिय
ट्टं देसूणं ते जिम सम्यक्त्वथी भ्रष्ट अनन्तसादिअनेक्रिये अनन्तो उस्सप्पिणी अवसप्पिणी रहीने वली सम्यक्त्वज्ञान तेहनेहुवे ,विभगनाणीपुच्छा गोय
मा जहन्नेणं एक्कसमयं समय अनन्तरेण प्रतिपातथया ,उक्कोसेणंतेत्तीसंसागरोवमाइं देसूणाइंपुव्वकोडी अब्भहियाइं, तेत्तीस सागरोपम देसून पूर्वकोडी अ
धिक तेजिमदेसून पूर्वकोटि विभंगपणे मनुष्ययोनि अप्रतिष्ठान पाथिडे मे नरकावासानेविषे ऊपनाने हुवे। हिवे अन्तरद्वार कहेछे—अतरसव्वजहाजीवा

वाद पोग्गलपरियट्टं देसूणं सुयनाणिअोहिनाणिमणपज्जवनाणीणं एवंचेव ॥ केवलनाणिस्स पुच्छा ? गोयमा ! नत्थि अंतरं । मइअन्नाणिस्स सुय अन्नाणिस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं विभंगनाणिस्स पुच्छा गोयमा । जहन्नेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालोत्ति ॥ १८ ॥ अप्पबहुयद्दारं ॥ अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए त्ति ॥ अल्पबहुत्वानि त्रीणि ज्ञानिनां परस्प रया ज्ञानिनां अज्ञानिनां यथा अल्पबहुत्ववक्तव्यतायां प्रज्ञापनासंबंधिन्यां समभिहितानि तथा व्याख्यानीति तानिचैवं-एएसिणं भंते । जी वाणं आभिणिबोहियनाणीणं ५ कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिना णी असंखेज्जगुणा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केवलनाणी अणंतगुणा इत्यादि एएसिणं भंते । जीवाणं मइअन्ना णीणं ३ कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवितुल्ला अणंतगुणा इतितृतीय एएसि

भिममी । पोचमागमा तीनअज्ञानमा पन्तरसर्व जिम जीवाभिगम उपांगनेविषे कह्या तिम कहवा ते इम ,आभिणिबोहियनाणस्सणंभंतेअंतरंकालओकेव चिरंहोइ गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंअणंतंकालं जावअवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं एवसुय आहिनाण मणपज्जवनाणोय एवंचेव केवलनाण पजवस्स गोयमा नत्थिअंतरं मइअन्नाणिस्स पुच्छा ? गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंछावट्ठिसागरोवमाइं विभंगनाणस्सपुच्छा ? गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालोत्ति । हिवे अल्प बहुत्व द्वारकहेछे—अप्पाबहुगाणितिन्नि जहाबहुवत्तव्वयाएत्ति, अल्प बहुत्व तीनेइ ज्ञानीनो १ अ ज्ञानीना २ ज्ञा ।। गे अज्ञानीनिश्रना ३ जिम बहुवक्तव्यपदे पन्नवणानेविषे कह्या तिम इहां कहवा, ते इम ,एएसिणंभंते जीवाणंआभिणिबोहियनाणीणं ५ कयरे २ जावविसेसाहियावा उत्तर गोयमा सव्वत्थोवाजीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखेज्जगुणा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवितुल्ला विसेसाहियावा केवलनाणी य अणंतगुणा ए पहिला १ एएसिणंभंतेमइअन्नाणीणं ३ कयरे २ जावविसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवाविभंगनाणी मइ अन्नाणी सुयअन्नाणी दोवितुल्लाअणंतगुणा ए बीजा २ एएसिणंभंतेआभिणिबोहियनाणीणं ५ मइअन्नाणीणं ३ कयरे अप्पावा ४ उत्तर गोयमा सव्व

५

यं मते । जीवाय भाजिबिबोहियनाणीयं ५ मइयनाणीय ३ कथरे २ हितो जाय विसेसाहियावा ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी
ओहिनाणीअसखेज्जगुणा आभिनिबोहियनाणी सुयनाणी य दोविपतुल्ला विसेसाहिया विभंगनाणीअसंखेज्जगुणा केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी
अणंतगुणा मइअन्नाणीसुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणत्ति, तत्र ज्ञानिसूत्रे स्तोका मन पर्यायज्ञानिनो यस्मादृद्धिमासादिसंयतस्यैव तद्भव त्यवधि
ज्ञानिनस्तु नरकस्वपि गतिपु सन्तीति तभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्चान्योन्यतुल्या अवधिज्ञानिभ्यस्तु विशेषाधिकाः
यत स्ते अवधिज्ञानिनोपि मनःपर्यायज्ञानिनोपि अवधिमनःपर्यायज्ञानिनोपि अवध्यादिरहितामपि पञ्चेन्द्रियाभवन्ति सास्वादनसम्यग्दर्शनस
द्भावे विकलेन्द्रिया अपिच मतिश्रुतज्ञानिनो लभ्यन्त इति केवलज्ञानिनस्तु अनन्तगुणा सिद्धानां सर्वज्ञानिभ्यो ऽनन्तगुणत्वात् दज्ञानिसूत्रतु विभङ्ग
ज्ञानिनः स्तोका यस्मात्पञ्चेन्द्रियाएव ते भवन्ति मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिन एकेन्द्रिया अपीति तत्र तत्र स ऽनन्तगुणा परस्परतश्च तुल्याः त

त्यथा मनपज्जवनाणी आभिनाणी असंखेज्जगणा आभिनिबोहियनाणी सुयनाणी दोवितुल्ला विसेसाहियावा विभंगनाणी असंखेज्जगणा केव
लनाणीअनंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवितुल्ला अनंतगणा । हिवे ए तीन अल्प बहुत्वना अर्थ लिखियेछै—तिहां ज्ञानीसूत्रनेविषे सर्वथी
थोडा मनपर्यवज्ञानी जेमाटे ऋद्धि प्राप्तसंयतनेंज होयछे १ तथी अवधिज्ञानी चारेगतिमेंपिणछे ते माटे तेहथी असंख्यातगुणा २ तथी आभिनिबो
धिकज्ञानी श्रुतज्ञानी मांहोमांहि तुल्यसरीषाछे अने अवधिज्ञानीथकी विशेषाधिकछे जेमाटे ते अवधिज्ञानी पणि मनपर्यायज्ञानी पणि अवधिमनप
र्यवज्ञानी पणि अवध्यादिरहित पणि पंचेंद्रियछे सास्वादन सम्यग्दर्शन सद्भावें विकलेन्द्रिय पणि मतिश्रुतज्ञानी हुवे ते माटे विशेषाधिकछे ३ तेहथी
केवलज्ञानी अनंतगुणा सर्वज्ञानीथकी सिद्ध अनंतगणा माटे ४ अज्ञानीसूत्रनेविषे विभंगज्ञानी थोडा जेमाटे विभंगज्ञानी पंचेन्द्रियहीजहुवे, १ म
तिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी मांहोमांहि तुल्यसरीषाछे अने तेहथी अनंतगणा जेमाटे मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी एकेन्द्रिय पणिछेव २ मिश्रसूत्रनेविषे सर्व
थी थोडा मनपर्यवज्ञानी ऋद्धिप्राप्तसंयतनेज हुवे तेमाटे १ तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा चारगतिमंपिणछे तेमाटे २ तेहथी मतिज्ञानी श्रुत

या मिश्रसूत्रे सोक्ता मन पर्यायज्ञानिनः अवधिज्ञानिनस्तुतेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च मोन्य तुल्या मात्तनेन्यत्र वि शेषाधिका इत्युक्ति पूर्वोक्तैव आभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञानिभ्यो विभङ्गज्ञानिनो ऽसङ्ख्येयगुणा कथ ? उच्यते यतः सम्यग्दृष्टिभ्य सुरनारकभ्यो मिथ्यादृष्टय से असङ्ख्येयगुणा उक्ता सेन विभङ्गज्ञानिन आभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञानिभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणाः केवलज्ञानिनस्तु विभङ्गज्ञानिभ्या ऽनन्त गुणाः सिद्धाना मकनिन्द्रियवर्जजीवभ्यो ऽनन्तत्वात् मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च मोन्य तुल्या अथपर्यवद्वार ॥ केवइयाइत्यादि ॥ आभिनिबोधिकज्ञा नस्य पयवा विशेषधर्मा आभिनिबोधिकज्ञानपयवा स्तेच द्विविधा स्वपरपर्यायभेदात् तत्र य ऽवग्रहादयो मतिविशेषाः क्षयोपशमवैचित्र्या ते स्वपर्याया स्ताचानन्ताः कथ ? एकैसा दवग्रहाद रन्योवग्रहादि रनन्तभागवृद्धा विशुद्धो न्य रसङ्ख्येयभागवृद्धा ऽपरः सङ्ख्येयभागवृद्धा अन्यतरः सङ्ख्ये

प्पायङ्गाणि तिन्नि जहा यज्जवसवियाए। केवइयाण भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवा प० ? गोयमा !

ज्ञानस्य पयवा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अनन्ता आभिनिबोधिकज्ञानस्य पयवाः प्रज्ञप्ताः । कियन्तो भदन्त ! श्रुतज्ञानस्य पयवाः प्रज्ञप्ताः ? एवमे

ज्ञानी निर्विशेषित घने मोहामाहि केवलरोपा विकलङ्ग्नेन्द्रिये पञ्चिन्द्रिय तेमाटे ४ तेहथी विभङ्गज्ञानी असङ्ख्यातगुणा ते किम जेमाटे सम्यग्द ष्टिदेवता नारकीयकी मिथ्यादृष्टी असङ्ख्यातगुणाछे तेमाटे ५ तेहथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा एकेन्द्रीवर्जीने सर्वजीवथकी सिद्ध अनन्ताछे तेमाटे ६ तेह थी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी मांहोमांहि सरीखा घने केवलज्ञानीथकी अनन्तगुणा वनस्पतीनेविषे मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान हुवे, ते वनस्पतीना जीवा सिद्धथकी अनन्तगणाछे तेमाटे ८। हिवे पर्यायद्वार कहेछे—केतलाभगवंत आभिनिबोधिकज्ञानपर्यव प० भो अनन्ताआभिनिबोधिकज्ञानपर्यव। प। इत्यादि, केतला हेभगवन् ! मतिज्ञाननापर्यायविशेष अनन्ता इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! अनन्ता मतिज्ञाननापर्यायछे तेकिम ते पर्यायना बे भेद स्वपर्याय १ परपर्याय २ भेदथको तिहां ते अवग्रहादिक मतिविशेष क्षयोपशम विचित्रपणाथकी ते स्वपर्यायकहिये ते अनन्ता तेकिम एक अव ग्रहादिकथको अन्य अवग्रहादि अनन्तभाग अधिकी विशुद्धि तथा अन्य असंख्यातभागअधि तथा अपरएकसंख्यातभाग अधि तथा अन्यतर असंख

पगुणवृद्या तदन्यी सङ्ख्येयगुणवृद्या ऽपरस्यानन्तगुणवृद्धेति एवञ्च सङ्ख्यातस्य सङ्ख्यातभेदत्वा दसङ्ख्यातस्यचा सङ्ख्यातभेदत्वा दनन्तस्यचा ननन्तभेदत्वा दनन्ताविशेषा भवन्ति अथवा तज्ज्ञेयस्या नन्तत्वा दनतिशेयञ्च तस्यभिद्यमानत्वात् अथवा मतिज्ञान मविभागपरिच्छेदैर्बुद्धा छिद्यमान मनन्तसङ्ख्यतीत्येव ममन्ता स्तत्पर्याया स्तथा ये पदार्थान्तरपर्याया स्ते तस्य परपर्याया स्तेच स्वपर्यायेभ्यो नन्तगुणाः परेषा ममन्तगुणत्वा दिति। ननु यदि ते परपर्याया स्तदा तस्येति न व्यपदेष्टुं युक्त परसम्बन्धित्वा दथ तस्य ते तदा न परपर्यायास्ते व्यपदेष्टव्याः स्वसम्बन्धित्वा ? दित्यत्रोच्यते यस्मात्तासम्बन्धा स्त तस्मा तथा परपर्यायव्यपदेशो यस्माद्य ते परित्यज्यमानत्वेन तथा स्वपर्यायाणा स्वपर्याया एत दित्येव विशेषकहेतुत्वेनच तस्मि सुपयुज्यन्ते तस्मा त्तस्य पयवा इति व्यपदिश्यन्त यथा धनमन्यसम्बन्धमपि धन स्वधन मुपयुज्यमानत्वा दिति भाष्य–जइतेपरपज्जाया नतस्स अहतस्सनपरपज्जाया [भाषायमाह] जतंमिअसदड्ढा तोपरपज्जायववएसो। चायसपज्जायविसे सणाइणातस्सउवउज्जति ॥ १ ॥ सधणमिवासव्वं हवतितोपज्जवातस्सत्ति ॥ अवइयाण भंते सुयनाणेत्यादौ ॥ एवचेवत्ति ॥ अनन्ताश्रुतज्ञानपर्यायाः प्रज्ञप्ता इत्यर्थ स्तेच स्वपर्यायाः परपर्यायाश्च तत्र स्वपर्याया ये श्रुतज्ञानस्य स्वगता अक्षरश्रुतादयो भेदा स्ते चानन्ताः क्षयोपशमवैचित्र्यविषयानन्त्याभ्या श्रुतानुसारिणां बोधाना मनन्तत्वा

अणंता आभिणिबोहियनाणपज्जवा प० । केवइयाण भंते ! सुयनाणपज्जवा प० एवचेव । एव जाव के

तणव हवि तवा तवय सर्वविनागण हवि तथा पपर अनन्तगुण हवि इम सङ्ख्याताना सङ्ख्यात भेदपर्यायवो असङ्ख्याताना असङ्ख्यात भेदपर्यायवो अनन्ताना अनन्तभेदपर्यायवो अनन्ता विशेषपणे अथवा तेहना ज्ञेयना अनन्तपर्यायवो प्रतिभेद तेहना भिद्यमानपणो अथवा मतिज्ञानना अविभाग पनि केवरो बुद्धिवडेपतांयका अनन्तापणडपवे तेमाटे अनन्ता तेहना पर्यायकह्या तथा जे पदार्थ मतिज्ञान परिछिन्न घटादिवस्तुना व्यतिरेकजे घटादि ते पदार्थान्तरपर्याय तेहना परपर्याय कहिये, ते स्वपर्यायथको अनन्तगुणाछे परने अनन्तगुण पर्यायथको। केवइयाणभंते सुयनाणपज्जवा प एवचेव जाव केवलनाण। कामा केमनत्! श्रुतज्ञाननापर्याय कह्या इत्यादिकनेविषे। एवचेवत्ति। इमहीज अनन्ता श्रुतज्ञाननापर्याय कह्या इहवत स्वपर्याय परप

धिविज्ञानपरिच्छेदसामर्थ्यात् परपर्याया स्वपर्यायाः सर्वभावानां प्रतीता एव अथवा श्रुतग्रन्थानुसारिज्ञानं श्रुतज्ञानं श्रुतग्रन्था अक्षरात्मको उप राधिका आरामीनि तथा यैकैक अक्षरं यथायोग उदात्तानुदात्तस्वरितभेदात् सानुनासिकनिरनुनासिकभेदात् अल्पप्रयत्नमहाप्रयत्नभेदादिविध संयुक्तासंयुक्तसंयोगभेदात् द्व्यादिसंयोगभेदात् अभिधेयसामर्थ्यात् भिद्यमानं अनन्तभेदं भवति तेन तस्य स्वपर्यायाः परपर्यायाश्चान्ये अनन्ता एव एवञ्च अनन्तपर्यायं तत् आह च—एक्कक्कमक्खरं पुण सपरपज्जायभेयओ भिन्नं । तदणंतदव्वपज्जाय परासिमाणमुवणेयं ॥ १ ॥ जेसिंगरकयलोसे सव्वसरिसंठ पयपज्जयमारो । ततस्सतसपज्जाया समापरपज्जयातस्सत्ति ॥ २ ॥ एवमक्षरात्मकस्येमा स्वपर्यायोपेतत्वा दनन्ता श्रुतज्ञानस्य पर्याया इति ॥ एव मावत्ति ॥ केवइया दिद दृश्यं—केवइया णं भंते ! ओहिणाणपज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ओहिणाणपज्जवा पण्णत्ता । केवइया णं भंते ! मणपज्ज वणाणपज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता मणपज्जवणाणपज्जवा पण्णत्ता । केवइया णं भंते ! केवलणाणपज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता केवल णाणपज्जवा पण्णत्ति, तत्रावधिज्ञानस्य स्वपर्याया ये अवधिज्ञानभेदा भवप्रत्ययक्षयोपशमिकभेदा नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवरूपत्वा रस्वामिभेदा दसङ्ख्यात

श्रीमन्तो भे तिहां सर्वाक्षरसंयोगमा अगतपरस्तुताथिकभेदथको त पनन्ताज्ञे यथापगम संबन्धविषय पनन्तकरो श्रुत।मसारीवाथमा पनन्तप र्यायात पथवा परिमाणथकी पनन्तपर्यायथको तथा परपर्याय पथ पनन्ता सर्वभावना प्रतीतथोजछे पथवा श्रुतग्रन्थानसारीज्ञान ते श्रुतज्ञान श्रु गृहते पक्षरात्मक पक्षर ते पकारादिक तेहमा एकेक पक्षर यथायोग उदात्त पनुदात्त स्वरितभेदथको तथा सानुनासिक निरनुनासिक भेदथको तथा पल्पप्रयत्न महाप्रयत्न भेदादिकेकरी संयुक्त संयोगसंयुक्तभेदथको तथा द्व्यादिसंयोगथको भामने पनन्तपर्यायभिद्यमान पनन्ता भेद हुए तेह२ना स्वपर्यायकहिये परपर्याय ते थोडा पनन्तानीज इम ते श्रुतज्ञानना पनन्तपर्याय पाहच—एक्केक्कमक्खरं पुण सपरपज्जायभेयओ भिन्नं । तदणंतदव्वपज्जाय परासिमाणमुवणेयं । १ । जेसिमरकयलोसे सव्वसरिसाइपयपज्जयारो तेतस्सपज्जाया सेमापरपज्जयातस्स । २ । इम पक्षरात्मकपणे क रो पक्षरपर्यायेथी पर्यायथी पनन्ता श्रुतज्ञानना पर्याय इम जावत् शब्दथी ए वचन ,केवइयाणं भंते ओहिणाणपज्जवा गोयमा अणंता । तिहां पव

दतद्विषयमूर्तद्रव्यत्वेनाल्पत्वेऽपि दनन्तानन्तद्विषयद्रव्यपर्यायभेदा दविभागपलिच्छेदाश्च तेनैव मनन्ता इति, मन पर्यायज्ञानस्य केवलज्ञानस्य च स्वपर्याया य स्याद्यादिभेदेनस्वगताविवक्षया स्तोका मत्ता अनन्तद्रव्यपर्यायपरिच्छेदापेक्षया अविभागपलिच्छेदापेक्षयावेति एवमत्यज्ञानादित्रय मनन्तपर्यायस्य सूत्र मिति (ग्रं० ८०००) अथ पर्यवाणा मवाल्पबहुत्वनिरूपणायाह ॥ एएसिणमित्यादि॥ तत्र स्वपर्यायापेक्षया चैषा मल्पबहुत्वमवसेय स्वपरप र्यायापेक्षया सर्वेषां तुल्यपर्यायत्वा दिति तत्र सर्वस्तोका मन पर्यायज्ञानपर्याया तस्य मनोमात्रविषयत्वा तेभ्यो ऽवधिज्ञानपर्याया अनन्तगु णा मनःपर्यायज्ञानापेक्षया अवधिज्ञानस्य द्रव्यपर्यायतो ऽनन्तगुणविषयत्वात् तेभ्यः श्रुतज्ञानपर्याया अनन्तगुणा स्तत तस्य रूप्यरूपिद्रव्यविषयत्वे

वलनाणस्स। एव मइअन्नाणस्स, सुयअन्नाणस्सय । केवइयाण भंते ! विभंगनाणपज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता विभंगनाणपज्जवा प० । एएसिण भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जयाण सुयनाणपज्जयाण ओहिना

व याव त्केवलज्ञानस्य । एवं मत्यज्ञानस्य श्रुताज्ञानस्य च । कियन्तो भदन्त ! विभङ्गज्ञानस्य पर्यवा प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ता विभङ्गज्ञान स्य पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । एतेषा भदन्त ! आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणां श्रुतज्ञानपर्यवाणा मवधिज्ञानपर्यवाणां मनःपर्यवज्ञानपर्यवाणा केवलज्ञा

धिज्ञानना सपर्याय ते मवधिज्ञाननामेद भवप्रत्यय क्षयोपशमभेदवको नारक तिर्यंच देव मनुष्यरूपपर्यावको स्वामिभेदवको असंख्यातभेद तद्विषयभू त क्षेत्रकाल भेदवको अनन्तभेद तद्विषय द्रव्यपर्याय भेदवको अथवा अविभागपलिच्छेदवको ते अनंता मनपर्यवज्ञानना पर्याय तथा केवलज्ञानना स्वपर्याय नाम स्याद्यादि भदेंकरी स्वगतविशेष ते अनंता अनन्त द्रव्यपर्याय परिच्छेद अपेक्षायें अथवा अविभाग पलिच्छेदअपेक्षायें। एवंमइअन्नाणस्स सुयअन्ना णस्स। इम मतिअज्ञानना श्रुतअज्ञानना अनंतापर्याय कह्या। केवइयाणंभंतेविभंगनाणपज्जवा प । केतला हेभगवन् । विभंगज्ञानना पर्यवकह्या इति प्रश्न उत्तर। गोयमा अणंताविभंगनाणपज्जवा प०। हेगौतम ! अनंता विभंगज्ञानना पर्यायकह्या, हिवे पर्याय अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणंभंते आभि णिबोहियनाणपज्जवाणं। एएसिणमित्यादि, ए एहने पं वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायने तथा। सुयनाणपज्जवाणं। श्रुतज्ञान

ना मत्तगुणविषयत्वात् ततो प्याभिनिबोधिकज्ञानपर्याया अनन्तगुणा स्तत स्तस्या भिलाप्यानभिलाप्यद्रव्यादिविषयत्वेना नन्तगुणविषयत्वात् ततः केवलज्ञानपर्याया अनन्तगुणाः सर्वद्रव्यपर्यायविषयत्वा त्तस्येति। एव मक्षरसूत्र प्यल्पबहुत्वकारणं सूत्रानुसारताज्ञनीय मिमसूत्रेतु टीका मनःप र्यवज्ञानपर्यवा इह्योपपत्तिः प्राग्व तेभ्यो विभङ्गज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः मन पर्यायज्ञानापेक्षया विभङ्गस्य बहुतमविषयत्वा तथाहि विभङ्गज्ञान मूर्द्धोध उपरिमग्रैवेयकादारभ्य सप्तमपृथिव्यन्तोक्षेत्र तिर्यगसङ्ख्यातद्वीपसमुद्ररूपे क्षेत्रे यानि रूपिद्रव्याणि तानि कानिचि ज्जानाति कांश्चित्पर्या

णपज्जवाण मणपज्जवनाणपज्जवाण केवलनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाय विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणनाणपज्जवा ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा , आभिणिबोहियना

नपर्यवाणाञ्च कतरे कतर याव द्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानपर्यवा अवधिज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः श्रुतज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः केवलज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त ! मत्यज्ञानपर्यवाणा श्रुताज्ञानपर्यवाणां

पर्याय तथा। आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणाञ्च। अवधिज्ञान पर्यायने तथा। मनःपर्यवज्ञान पर्यायने ४ तथा। केवलनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जावविसेसाहियावा। केवलज्ञान पर्यायने ५ अपुनरवें कुणकुणकयो थोडाछुवे घणाछुवे सरीखाछुवे विशेषाधिकछे ? इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा स व्वत्थोवा मनपज्जव नाणपज्जवा ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा २। हेगौतम ! इहां पाताना पर्यायनी अपेक्षायें अल्प वस्तु थोडा पणि पर्यायनी अपे क्षायें सगलाने तुच्छपणासाटे थोडा तिहां सर्वथी थोडा मनपर्यवज्ञानना पर्याय तेहने मनोमात्र विषयपणांथकी तेहथी अवधिज्ञानना पर्याय अनन्त गुणा मनपर्यवज्ञान अपेक्षायें अवधिज्ञानने द्रव्यपर्यायथकी अनंतगुण विषयमाटें २ तेहथी। सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा ३ श्रुतज्ञानपर्याय अनंतगुणा एहने रूपीअरूपी द्रव्य विषयपणेंकरी अनंतगुण विषयपणामाटे ३ तेहथी। आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा ४। आभिनिबोधिकज्ञान पर्याय अ नन्तगुणा एहनेकथा अकथा द्रव्यादिविषयपणेंकरी अनन्तगुण विषयपणामाटे ४ तेहथी। केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ५। केवलज्ञानपर्याय अन

र्यास त्. ——नापयया अनन्तगुणा मीति, तेभ्यो ऽवधिज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा अवधेः सकलरूपिद्रव्यसंतिद्रव्यासङ्ख्यातपर्यायावि
षयत्वेन विभङ्गापेक्षया ऽनन्तगुणविषयत्वात् तेभ्योऽपि श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः श्रुताज्ञानस्य श्रुतज्ञानवदोघादेशेन समस्तमूर्तामूर्तद्रव्यस
र्वपर्यायविषयत्वेना वधिज्ञानापेक्षया ऽनन्तगुणविषयत्वा, तेभ्यः श्रुतज्ञानपर्यवा विशेषाधिकाः कयां चि श्रुताज्ञानाविषयीकृतपर्यायाणा विषयी

णपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा। एएसिणं भंते ! मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणविभ
गनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा सुयअन्ना
णपज्जवा अणंतगुणा, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, एएसिणं भंते आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव

विभङ्गज्ञानपर्यवाणां कतरे कतरे यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका विभङ्गज्ञानपर्यवा श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा मत्यज्ञानपर्यवा
अनन्तगुणा । एतेषां भदन्त ! आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणां याव त्केवलज्ञानपर्यवाणां मत्यज्ञानपर्यवाणां श्रुताज्ञानपर्यवाणां विभङ्गज्ञानपर्य

नतगुणा मनःपर्यवज्ञानपर्याय विषयपणामाटे १, हिवे तीनअज्ञानना पर्यायना अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणंभंते मइअन्नाणपज्जवाणं। ए एहने हेभगवन् । म
तिअज्ञान पर्यायने। सुयअन्नाणपज्जवाणंविभंगनाणपज्जवाणय कयरकयरे जावविसेसाहियावा। श्रुतअज्ञानपर्यायने विभंगज्ञानपर्यायने परपुन कुणकु
णथको जाव शब्द थकी तुल्य बराबरहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा। हेगौतम
सर्वथी थोडा विभंगज्ञानना पर्याय अवधिज्ञान सातमोपृथिवीलगे जाणे तेहभणी तेहथी श्रुतअज्ञानना पर्याय अनन्तगुणा एहनो भावना भिन्न भरपूर्व क
रवी तेहथी। मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा। मतिअज्ञानना पर्याय अनन्तगुणा एहनी भावना पनि भिन्न अक्षर कहवा, हिवे मिश्रसूत्रना पर्यायना
अल्पबहुत्व कहेछे—एएसिणंभंतेआभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं। एहने हेभगवन्। मतिज्ञानपर्यायने १ श्रुतज्ञान पर्यायने २ अ
वधिज्ञानपर्यायने ३ मनपर्यवज्ञानपर्यायने ४ केवलज्ञानपर्यायने ५ तथा। मइअन्नाणपज्जवाणं। मतिअज्ञानपर्यायने ६। सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगना

करवा यनो ज्ञानत्वेन रुपायमाणं न तेभ्यो पि मत्यज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा यतः श्रुतज्ञान मभिलाप्यवस्तुविषयमय मत्यज्ञानन्तु तदनन्तगुणान भिलाप्यवस्तुविषय मपीति ततोपि मतिज्ञानपर्यवा विशेषाधिकाः कथं चिदपि मत्यज्ञानाविषयीकृतभावानां विषयीकरणा त द्वि मत्यज्ञानापे

केवलणाणपज्जवाण मइअन्नाणपज्जवाण सुयअन्नाणपज्जवाण विभंगनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाव

विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणनाणपज्जवा विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा

अणंतगुणा, सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवाविसेसाहिया, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा,

कतरे यावद्विशेषाधिकावा? गौतम! सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानपर्यवा विभङ्गज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा अवधिज्ञानपर्यवा अनन्तगु श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः श्रुतज्ञानपर्यवा विशेषाधिकाश्च मत्यज्ञानपर्यवा अनन्तगुणाः आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवा विशेषाधिका केव

विषावा। श्रुतअज्ञान पर्यायने ७ विभंगज्ञानपर्यायने ८ ए मांहामांहि कुणकुणथकी थोडाछे घणाछे बराबरछे ? मायमा सर्वथाथोडामनःपर्यवज्ञानपर्यवा। हेगौतम! सर्वथी थोडा मनपर्याय ज्ञानपर्याय एहनो उपपत्ति पूर्वलीपरे माटे तेहथी। विभंगज्ञानपज्जवा अणंतगुणा। विभंगज्ञानपर्याय अनंतगुणा विभंगज्ञान नीचा नवमा ग्रैवेयक सुधी नां देवतेथे थोडाएनीमातो दीपसमुद्रने विषे केहने ते केवलाएक माने केतलाएक तेहमांपर्यायमाने ते मनपर्यायज्ञान विष न विषावपज्जवा अणंतगुणा। अवधिज्ञाननापर्याय अनन्तगुणा अवधिने सकल रूपीद्रव्य मतिद्रव्य असंख्यातपर्याय वि षयमाटे विषयपणाथकी तेहथी। सुयनाणपज्जवाअणंतगुणा। श्रुतज्ञानपर्याय अनन्तगुणा श्रुतअज्ञानने श्रुतज्ञानथी द्रव्य सर्वपर्याय विषयपणे करी अवधिज्ञान अपेक्षायें अनन्तगुण विषयपणामाटे तेहथी। सुयनाणपज्जवाविसेसाहिया। विशेषाधिक केतलाएकने श्रुतअज्ञान अविषयीकृत पर्यायने प्रगटकरे तेमाटे ज्ञानपणेकरी अधिक माने तेहथी। मइअन्नाण

सया स्फटतर सिति, ततोपि केवलज्ञानपर्यया अनन्तगुणाः सर्वाद्गताविना समस्तद्रव्यपर्यायाणा मनन्यसाधारणावभासेना वनासतादिति ॥ इत्य ष्टमशतद्वितीयः ॥ २ ॥ अनन्तर मामिनिबोधिकादिक ज्ञानं पयवतः प्ररूपितं तनच पृथादयो ऽपाप्रायत्त ऽत तृतीयोद्देशके प्र रुविशेषा माह ॥ कइस्यादि ॥ सखेज्जजीवियासि ॥ सङ्ख्याता जीवा यषु सन्ति ते सङ्ख्यातजीविकाः, एव मन्यदपि पदद्वय ॥ अणंपणतवाएत्ति ॥ यथा

आभिणिबोहियनाणपज्जया विसेसाहिया, केवलनाणपज्जया अणतगुणा, सेव भंत भंतत्ति ॥ अठमसयस्स बीज उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ २ ॥ कइविहाण भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहारु क्खा पण्णत्ता, तजहा—सखेज्जजीविया असखेज्जजीविया अणतजीविया, सेकित सखेज्जजीविया ? गोय

ज्ञानपर्यया अनन्तगुणा इदेवं भदन्तभदन्त । इति ॥ इत्यष्टमस्यद्वितीयउद्देशस्समाप्तः ॥ २ ॥ कतिविधा भदन्त । वृक्षाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । त्रिविधा वृक्षाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सङ्ख्यजीविका असङ्ख्यजीविका अनन्तजीविकाः । अथ किन्ते सङ्ख्यजीविकाः ? सख्यजी

पज्जवा पर्यवगुणा। मतिज्ञान पर्याय अनन्तगुणा श्रुतज्ञानकर्मा मणुविबे पणि सर्वे तेहवी । आभिनिबोधिकज्ञानपज्जवा विसेसाहियावा। मतिज्ञानप र्याय जिणपाविज भाहवे पणि मतिज्ञान विषयबोधनथी एहवा भेभाव तेहने विषयी करपणथी मतिज्ञानगोचरभावे सटता छे तेहथी केवलज्ञान पर्याय अनन्तगुणा सर्वकालभावी समस्तद्रव्यपर्याय तेहने भावे सवज्ञान केवलज्ञानमाहे समाणा। सेवभते २ ति । तहत्ति हे भगवन्! तुम कहो ते सव सत्य छे पज्यवानही । अट्ठमसयस्सविश्वा उद्देशसमत्त ८। आठमाशतकना बीजाउद्देशा पूर्णसमत्तो ८ ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे मतिज्ञानादि पर्याय क ह्या तिर्यंचरोहवाविक मवजाणे एतलामाटे आजउद्देशे हवविशेष कहे—कतिविहाणभंतेरुक्खा प । केतले भेदे हेभगवन् ! रुखकह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोय मा तिविहारुक्खा पं त । हेगौतम ! तीनभेदे रुखकह्या ते कहे—सखज्जजीविया असखज्जजीविया अणतजीविया । सख्याताजीव जेहनेविषे ते सख्यात जीविक कहिए, असख्यातजीव जेहनेविषे छे ते असंख्यात जीविक कहिये, अनंतजीव जेहने विषे छे ते अनंतजीविक कहिये। १ सेकिंतसखेज्जजीवि

प्रज्ञापनायां तथा चेद सूत्र मध्ये तत्र चैव मेतत् "ताले तमाले तक्कलि तेतलिशालेय सालकमाले। सरलेआवइकयर कदलितइचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ प्रज्ञापनायां तथा चेद मूत्र मध्ये तत्र चैव मेतत् पूयफलीखज्जूरी बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जयावणेतहप्पगारेत्ति, यथा प्यन्ये तथाप्रकारा वृक्षविशेषा मूपकर्णादिमृनश्च लवणकपरोपवोहुवे पूयफलीखज्जूरी बोधव्वानालिएरीय ॥ बहूनि बीजानि फलमध्ये लगनद्धातजीविकारति प्रथमः ॥ एगट्ठियायत्ति ॥ एक मस्थिक फलमध्ये बीजं यथा ते एकास्थिकाः ॥ बहुबीयगायत्ति ॥

मा ! सखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—ताले तमाले तक्कलि तेतलि जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी जेयावन्ने तहप्पगारा, सेत्त संखेज्जजीविया। सेकित असंखेज्जजीविया? असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तजहा—एगट्ठिया बहुट्ठियाय। सेकित एगट्ठिया? एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा

विका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—तालतमालतक्कलितेतलि यथा प्रज्ञापनाया यावन्नालिकरी येचान्ये तथाप्रकाराः समासाः संख्येयजीविकाः। अथ किन्ते असंख्येयजीविकाः? गौतम! असंख्येयजीविका द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—एकास्थिकाश्च बहुस्थिकाश्च। अथ किन्ते एकास्थिकाः।

का २। मथ [illegible] गौतम। संख्यातजीविक। अनेकविधा प्र त अनेकप्रकारिका ते कथ्यंते, ताले तमाले तक्कलि तेतलि यथा पण्णवणाए जाव नालिएरी। ताल तमाल तक्कलि तेतलि [illegible] तिम कथा, ते सूत्र इम—तालेतमालेतक्कलि तेतलिसा लेयसालकमाले। सरलेआवइकेयर कदलितइचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ [illegible]। पूयफलीखज्जूरी बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तसंखेज्जजीविया। जे एवा अनेरा एवि तथा प्रकारना वृक्षा [illegible] ते संख्यातजीवि कहियें। सेकितअसंखेज्जजीविया २ दुविहा प त। किसे [illegible] असंख्यातजीविक इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम। असंख्यातजीविक बेभेदे कह्या ते कहेछे—एगट्ठियायबहुबीयगाय। एक अस्थिक एकमुठली जे फलमाहे हुवे ते एकास्थिक बहुबीज जेह फलमाहि हुवे ते बहु बीजक। सेकितएगट्ठिया २ अणेगविहा प त०। किसे किमा एकास्थिक इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम। एकास्थिक अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—[illegible] बहुबीयया सेत्तबहुबीयगा

यथा न यहुवीअका यमकास्थिका॥ अमापयवबायपति॥ यथा मज्ञापनाख्ये प्रज्ञापनाप्रथमपदे तथा त्रेद सूत्र मध्यम तवैवं-निर्मबअनुकोसं यसालयकाअपांसुसमूया॥ समरमोयसमालुय बउसपसासकरअय॥१॥ इत्यादि, तथा॥ सेकिंतं बहुवीया बहुवीयगा अणेगविहा पन्नत्ता तं अज्ञा-अत्थियतिदुकविठ अयालगमाउलिगविम्रय॥ आमलगफणसदाडिम आसोवत्थंमरवअय॥१॥ इत्यादि अन्तिमं पुन रिदयूत्तं मत्र "एएसिं मूलाविं असंखज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि पत्तापत्तयजीविया पुप्फाअणेगजीविया फलाबहुवीयगति, एतदन्त वेद या

नियअजसु एव अहा पणअणापए जाय फला वङ्कअीयगा सेतयङ्कअीयगा, सेत्त असस्खेज्ज जीविया। सेकित अणतजीविया अणतजीविया अणेगविहा पणत्ता, तजहा—आलुए मूलुए सिंगबेरे एव जहासत्तमसए

वाः ? एकास्थिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–निम्बाम्रजम्बु एव यथा प्रज्ञापनापदे यावत्फला बहुबीजकाः समाप्ता बहुबीजकाः॥ समाप्ता असङ्ख्येयजीविकाः॥ अथ किन्ते अनन्तजीविकाः ? अनन्तजीविका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा–आलुको मूलकः श्रृङ्गवेरक एव यथा सप्तमशते

सेत्तअसंखेज्जजीविया। मौर मंत्र यद् इम किम पत्रवणाति पढिमपदे कथा ते सूत्र इम—निम्बअम्बुजासव सालअङ्कोलपीलुसलूया। सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय॥१॥ इत्यादि, तथा, सेकितबहुबीयगा? अणेगविहा प त—अत्थियतिदुयकविट्ठे अम्बाडगमाउलिंगबिल्ले य। आमलगफणसदाडिम आसोत्थउम्बरवडेय॥२॥ इत्यादि, इहां यावत् शब्द ए सूत्र—एएसिमूलाविय असंखेज्जजीविया कंदाविय खंधाविय सालाविय पवालाविय॥२॥ पत्तापत्तेयजीविया पुप्फाअणेगजीवियाफलाबहुबीयगति, एतलासुगी एसूत्र देखाड्यो—सेतबहुबीयगा एतले बहुबीज कह्या एतले असंख्यात जीवकह्या। सेकिंतंअणतजीविया? अणेगविहा प तं। किसे किहा ते अनन्तजीविक इतिप्रश्न उत्तर केहीतस। अनन्तजीविक अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—आलुए मूलए सिंगबेरे एवंजहासत्तमसए। आलुक मूलक आदुवेर इम जिम सातमा शतकनेविषे कह्यो। आवमोचकहे मुसंढीपेवासेतव्य मारा। यावत् मौसाय मुसठी एवत अनन्तपाद अमो च अनेरा तथा प्रकारना अय विगेप बतलानी। सेत्तअणतजीविया। ते एतले अनन्तजीविक न

त्यमिति दक्षभायाइ ॥ आवेत्यादि ॥ अथ जीवाधिकारा दिदमाह ॥ अहेत्यादि ॥ कुम्मेति ॥ कूर्मः कच्छप ॥ कुम्मावलियत्ति ॥ कूर्मावलिका क च्छपपङ्क्तिः ॥ गोहत्ति ॥ गोधासरीसृपविशेषः ॥ जेअंतरत्ति ॥ यान्यन्तरालानि ॥ तअंतरेति ॥ ता न्यन्तराणि ॥ कलियवर्णत्ति ॥ क्षुद्रकाष्ठरूपच ॥ आमुसमाणेवत्ति ॥ आस्पृशन् इषत्स्पृशन्नित्यथ ॥ समुसमाणेवत्ति ॥ सस्यक स्पृशन्नित्यथः ॥ आलिहमाणेवत्ति ॥ आलिखन् इष त्सकृद्वा कर्ष म् ॥ विलिहमाणेवत्ति ॥ विलिखन् नितरां अनकशोवा ॥ अयम् ॥ आच्छिदमाणेवत्ति ॥ इष त्सकृद्वा छिन्दन् ॥ विच्छिदमाणेवत्ति ॥ नितरां

जाव सीउण्हे सुहदी जेयायस्से तहप्पगारा । सेत्त अणतजीविया ॥ अहन्नंते ! कुमे कुम्मावलिया गोहा गोहावलिया गोणा गोणावलिया मणुस्से मणुस्सावलिया महिसे महिसावलिया एएसिण भंते ! दुहाया तिहाया सखेजहाया छिण्णाण जे अंतरा तेविणं तेहिं जीवपएसेहिं फुडा ? हंता फुडा । पुरिसेण भंते ! अंतरा हत्थेणवा पाएणवा अंगुलियाएवा सलागाएणवा कठेणवा कलिंचेणवा आमुसमाणेवा समुसमाणेवा आलिह

यावच्छीतोष्णे मुसुण्ढी यथान्ये तथाप्रकारा स्समास्ता अनन्तजीविकाः ॥ अथ भदन्त ! कूर्म कूर्मावलिका गोधा गोधावलिका गौ गवावलिका मनुष्यो मनुष्यावलिका महिषो महिषावलिका एतेषां भदन्त ! द्विधावा त्रिधावा सख्येयधावा छिन्नाना यान्यन्तराणि तान्यपि तै र्जीवप्रदेशैः स्पृष्टानि ? हन्त स्पृष्टानि । पुरुषो भदन्त ! तान्यन्तराणि हस्तेनवा पादेनवा अङ्गुलिकयावा शलाकयावा काष्ठेनवा कलिञ्चेनवा ऽऽमृशन्वा

हा जिवे जीवना भविकारवीज ए कहेछे—भगवंतकुम्मेकुम्मावलिया । हिवे हेभगवन् ! काछवा काछवानी पंक्ति । गोहा गोहावलिया गाया गाया वलिया मनुस्से मनुस्सावलिया महिस महिसावलिया । सरीसृपविशेष गोधानीपंक्ति सर्पविशेष गायनीपंक्तिविशेष मनष्य मनुष्यनी पंक्ति महिष म हिषनी पंक्ति । एएसिणदुहाया तिहाया सखेजहाया । एहने डावखण्डकीधां तीनखण्ड सख्याताखण्ड । छिन्नाय जे अंतराणि ते तेहिं जीवपएसे हिं फडा हंताफुडा । इहांने कूबरे २ जीवाने जे अन्तरालिबाले मध्यभागे खपड २ मतें जोडछे तेपणि ते आत्मासबारे, तेवें जीव प्रदेशबारी स्पर्शे

मसकद्दा। विम्मन् ॥ ममोऊदमावति ॥ समुपदश्म् ॥ मोयापंयति ॥ इय द्वाभ्यां ॥ यायाऽयति ॥ व्यायाथा प्रकशपीकां कूर्मादिजीवाधिकारा स
दुर्ल्पत्तितैयस्वरममप्रमादे परमापरमविभागदशनाभाव ॥ चरममित्यादि ॥ तत्र ॥ इमायं भंते । रयणप्पभा पुढवी किंचरिमा अचरिमत्ति ॥
यप कथ म्परमापरमपरिज्ञाने ? स्यग्रोच्यते चरमत्वम प्राप्तवयमत्वति आपचिकम्ब चरमत्वं यदुक्त मन्यद्रव्यापेक्षया इदं चरम द्रव्यमिति यथा

माणेया ग्रिलिहमाणेया श्रायरेणवा तिरक्केण सत्यजाएण श्राच्छिदमाणेया यिच्छिदमाणेया श्रगणिका एणं समाऊहमाणे तेसि जीवपएसाण किंचि श्रावाहया वियाहंना उप्पायइ छयिच्छेदंवा करेइ ? णोइणठेसमठे नोखलु तत्थ सत्यक्रमइ । कइण भंते । पुढवीउ पणत्ताउ ? गोयमा ! श्रठपुढवीउ पणत्ताउ , तजहा—

पतृणन्वा लिखन्वा विलिखन्वा न्यतरणवा तीक्ष्णम शस्त्रजातेना च्छिन्दन्वा विच्छिन्दन्वा ऽग्निकायेन समुपदहन् तेषां जीवप्रदेशाना किञ्चि दावाधांवा व्याबाधांवो त्पादयति छविच्छेदंवा करोति ? नायमर्थो, नखलु तत्र शस्त्र क्रमते ॥ कति भदन्त । पृथिव्यः प्रज्ञप्ता ? गौतम !

मोक्षानाथि प्रदशाभ्या इतिपत्र उत्तर हो परम्पा । परिसेषंमो पतरछत्तेचवा पादेचरा । पुरुष य वाक्यासकारे, हेभगवन् ! ते चतरमध्य मामपते छावेकरो पगेकरो । मगुन्मिमाएवा ममामाएत्ता कहेवा चलिवेपवा । मगुणोe करो सत्ताका करोमे काटेकरो चलिय गाणाथाह । मामु ममाणश ममममावेवा चालिकमावेवा विलिकमावेवा । वाडामा फरसे चत्तो परसे वाडासा एकवारे पावयें पणोवारवार पावयें । मन्नवरेचवा ति कार्ने मयक्कपर्थ । अन्तर काष्ठमा जिवे तिवे तीक्ष्ण प्रस्त्रजातें करो । मावित्तदमावेवा विविक्तदमावेवा । वाडासा मथवा एकवार छेदता थका स मस्तपणे पथवा वारवार छेदवोचवा । ममक्षिकाय समाउहमाणे । धम्मिकायेंकरी बालतावका । तसिजीवपएसाण किंचिविभावाइवा वियाहवा । तेह जीव पतिदेसने किंचित थोडासो पीडाकृते पणोपीडा भया । उप्पायइ छविच्छेदनाकरेइ । उपजावे चोजरो चामडो अथ गातिमा छेदकरे । नोइ णट्टेसम्मट्टे । ए अथ समवनदो नथी निवे तिहां यस सत्रसे ममपविकारवचो उत्पतिमवमे रयणभारियाम चरिम अचरिम

पूर्वशरीरापेक्षया चरम शरीरमिति तथा अचरमनाम प्रान्तं मध्यवर्ति आपेक्षिकमचरमत्वं यदुक्त मन्यद्रव्यापेक्षया इदमचरम द्रव्य यथा न्यशरीरापेक्षया मध्यशरीर मिति इहस्थाने प्रज्ञापनासूत्रं पर वाच्य मेतदेवा इ ॥ चरमेत्यादि ॥ तत्र पदद्वयं दर्शितमेव शेषंतु दृश्यते ॥ च रिमाइ अचरिमाइ चरिमंतपएसा अचरिमंतपएसा ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभापुढवी नोचरिमा नोअचरिमा नोचरिमाइं नोअचरिमाइं नोच रिमंतपएसा नोअचरिमंतपएसा नियमा अचरिमंचरिमाणिय चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय इत्यादि, तत्र किंचरिमा अचरिमा इत्येकवच नातः प्रश्न चरिमाइंअचरिमाइं इति बहुवचनान्तः प्रश्नः चरिमंतपएसा अचरिमंतपएसत्ति चरमाश्चेवा न्तवर्तित्वा दन्ताश्चरमान्ता तेषां प्रदे शा इतिसमासः तथा अचरममेवा न्तो विभागो ऽचरमांत स्तस्य प्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाः ॥ गोयमा ! नोचरिमा नोअचरिमा ॥ चरमत्वं ह्येतद्

रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिंपब्भारा ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी किंचरिमा अचरिमा ? चरि

अष्टौ पृथिव्य प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—रत्नप्रभा याव दधः सप्तमा इष त्प्राग्भारा ॥ इयं भदन्त ! रत्नप्रभा पृथवी किं चरमाचरमा ? चरमपदमिद

विभाग एवाठवाने कहेछे—आठभते पुढवीओ पन्नताओ गोयमा अट्ठपुढवीओ पन्नताओ तं रयणप्पभा जाव इसिप्पभारा । केटली हे स्वामीजी रे, हेभगवन् ! पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! आठ पृथिवीओ ते कहेछे—रत्नप्रभा इत्यादि, यावत् नीचे सातमी ईषत्प्राग्भारा ए आठ पृथि वी कही ते कहेछे—इमाणभंते रयणप्पभापुढवी किंचरिमा अचरिमा । तिहां आरत्नप्रभा पृथिवी, स्युं किंयो अचरिमाचरिम परिभाषा इहां कहेछे, चरिम कहिये प्रान्त छेहडेवर्त्ते ते आपेक्षिक चरिमपणाछे जिमकांइ अन्यद्रव्यनी अपेक्षायें ए चरिमद्रव्य यथा पूर्वशरीर अपेक्षायें चरिमशरीर इत्यर्थ, तथा अचरिम कहिये अप्रान्तछेहडे नहीं एतले मध्यवर्ती आपेक्षिक अथवा अचरिमपणो वतुर्ल—अन्यद्रव्यनी अपेक्षायें ए अचरिमद्रव्य यथा अन्यश रीर अपेक्षायें मध्यशरीर इंहि स्थानके पन्नवणा उपमापद आज्ञो एछीज कहेछे—तिहां वेपद तो देखाड्या शेष येव देखाडेछे—चरिमाइं अच रिमाइं । चरिमपदविस्तरेर्स भाविमं । चरिमंतपएसा अचरिमंतपएसा गोयमा । इमाणरयणप्पभापुढवी, नोचरिमा नोअचरिमा नोचरिमाइं नोअच

पत्तिर्थ चरमाचीयस्या नाथात्त कथं चरमात्तयिष्यति अचरमस्य मध्यवेत्तयैव भवति तत कथ मन्यस्या येत्यस्या भावे अचरमस्य भयति यदिचि र बप्रनाया मध्य ऽस्या पृथिवी स्या तदा तस्या चरमस्य पुन्यते यथास्ति चा तम्मा अचरमासी तथा यदि तस्या याद्मलो न्या पृथिवी स्या तदा तस्या अचरमस्य पुन्यत मथास्ति मा तस्मा न्नाचरमासा विति यर्यंच वाक्यार्थो ऽत्र किमियं रत्नप्रभापृथिवी उत मध्यमति, तदेत चित्तयमपि यथा भमभवति तथात्त अचमाचरिमाइ माअचरिमाइति॥ कथ यदा तस्या चरमध्यपदेशोपि नास्ति तदा चरमाचीति कथ भविष्यति एव मच रमात्त्वपि तथा॥ मोचरिमतपएसा मोअचरिमतपएसत्ति॥ अत्रापि चरमत्वस्या चरमत्वस्या भावा तत्प्रदेशरूपमाया अध्यमाव यथेत्यत उक्त माचर मामप्रदेशा माअचरमान्तप्रदेशा रत्नप्रभाति किंतर्हि नियमान्नियमन अचरमच चरमाणिच एतदुक्तमवति अथप्रयत्नेय केवलजम्बुद्वाप्या मजयति अवयवावयविरूपत्वा बस्तुस्वरूपदर्शयतावेत्या द्याघोक्तनिबचनविपर्येयति तथाहि रत्नप्रभा ताव दनेन प्रकारेण व्यवस्थिता इति विनयजनानुग्रहा य मित्यत्र न्यायमाश्वर्य॰ पृथ्वमयस्थितायां यानि प्रान्तेषु व्यवस्थितानि तद्व्यवसितखण्डखण्डानि तानि तयाविषविशिष्टैकपरिणामयुक्तत्वा चरमा

रिमाइ माचरिमंतपएसा माअचरिमतपएसा नियमाअचरिमाणिय चरिमाणिय चरिमतपएसाय अचरिमतपएसाय इत्यादि, तिहां चरिमा अच रिमा ए एकवचनागत प्रश्न जांबवा चरिमाइ अचरिमाइ एबहुवचनागत प्रश्नजाणवा, चरिमतपएसा अचरिमतपएसा तिमहीज अन्तर्वर्त्तिपत्ताथको पर्यवरिमान्त तेहना प्रदेश एहवा समासकीज तथा अचरिमहीज अन्तर्वर्त्तिमे विभाग ते अचरिमान्त तेहना प्रदेश ते अचरिमप्रदेश कहिये इति प्रश्न न्याय पत्र उत्तर हे गौतम! माचरिमा माअचरिमा चरिमपणु तेहने आपेक्षिकपणे अचरिमपणु पणि अपेक्षाविभक्षुवे तिवारे किम अन्य अपेक्षानिषमा वे अचरिमपणमद, जा निषे रत्नप्रभाप्रमिवाते अन्यपृथिवी हातोता तेहने चरिमपणो संभवे तमाटे ए चरिमपणो तथा जा रत्नप्रभापृथिवीने वाहिर गणो बीजी पृथिवी हातोता तेहने अचरिमपदु मध्य तिहा तो मध्ये इहां ए वाक्यार्थ एह् भारत्नप्रभापृथिवी पश्चिम अथवा मध्यम इति तिवारे वेस प हि न संभवे तिमबहु माचरिमाइ माअचरिमा.ति तेहिम जा तेहने चरिम व्यपदेश पणिनथी ता चरिमाणीति एहवा किमहुवे इम अचरिमाणि

वि यत्पुन मध्ये महत् रत्नप्रभाकाशान्तेरालव तदपि तथाविधपरिणामयुक्तत्वा द्विचरम तदुभयसमुदायरूपायेव गन्यथा तदभावप्रसङ्गात् प्रदेशाप रिकल्पनायातु चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाश्च कथ मे बाह्यखण्डप्रदेशा से चरमान्तप्रदेशा यच मध्यखण्डप्रदेशा से अचरमान्तप्रदेशा इति चनन वैकान्तदुभयनिरासप्रधानम निवचनमूक्ता अवयवावयविरूप चरित्यस्माद् तथाच सदामेदप्रति एव शर्करादिष्वपि च पि यदुर तद्वाच्य

मपदनिरयसेस जाणियद्व, जाव वेमाणियाण भंते ! फासचरिमेण किंचरिमा अचरिमा ? गोयमा !

तथा नावरिमा एवमा नावचरिमान्तपदर्शन्त इहांपवि चरिमपवाना तथा अचरिमपवाना प्रभावका तेहना प्रदेशनो अप्पमामा प्रभावतीक एत नामाटक नावरिमान्तप्रदेशा नावचरिमान्तप्रदेशा रत्नप्रभा इति ताव ? नियमथको अथवा नियमकरी अचरिमाचिव चरिमाचिव, एतलेपमाताव पत्रमें या रत्नप्रभापृथिवी केवल अद्भुतवो नथवे अवयव अवयवीरूप पनावको असङ्ख्यप्रदेश अवगाहपनावको जिनवचन उत्तर ते विषय वीजवे ते देखाडवे—या रत्नप्रभापृथिवी इवेंप्रकारे रहीवे ते विषयवत मनुष्य अनुपजे पर्वे विशेषवो लिखिवते ज्ञापनावो आलेख्या, इवेंप्रकारे रहो रत्नप्र भापृथिवी तेहने विषेज केवलानेविषे रहा तदध्यासित क्षेत्रखण्ड तेह तथाविध विशिष्ट एक परमाण सुक्ष्मपनावको चरमाचि कहिये ते वली वि चाल माटा रत्नप्रभा आकाश क्षेत्रखण्ड ते पणि तत शिव परमाण सुक्ष्मपनावको अचरिमाचिवविषे ते उभय समुदायरूप या रत्नप्रभा पृथिवीके अन्य या तेहना प्रभाव प्रमाणको प्रदेश अप्पनाविषे तो चरिमान्त प्रदेशाव अचरिमान्तप्रदेशाव एकवाकविषे तेहिज व बाह्य खण्डप्रदेश ते चरमान्तप्रदेश वली ते मध्यखण्डप्रदेश ते अचरमान्तप्रदेश कहिये इवेंप्रकारे एकान्त कुनयनिरास एकान्तवादी ते दुर्नय तेहना टालवो ते प्रधान उत्तर सूत्रकरो म वयव अवयवीरूप समुदाये इसाकडा ते केवलविषे भेद अभेदकड इस शर्कराप्रभादिक पृथिवीनेविषे पणिकहवो, किंवे वैमानिक ए कहवा ते कहे छे—आ वनमानिकाभंते फासचरिमेण किंचरिमा अचरिमा गोयमा चरिमावि अचरिमावि। यावत् वैमानिक देवगणम्। अथ चरिमेकरो स्यू चरिमछे या अ चरिमछे इतिप्रश्न उत्तर गौतम। चरिमावि अचरिमावि। जे वैमानिक भवसत्तव प्रथम मनोपासे वली तिहां चवणपणेकरी तेहने मुक्तिगमनथको

मित्याह ॥ भावेत्यादि ॥ य वैमानिकभवसम्भवं स्पर्शनं मलस्पन्त पुन सत्रा मुत्पादेन मुक्तिगमना ते वैमानिका स्पर्शचरमेव चरमा येतु त पुन स स्पस्ते त त्वचरमा। ॥ इत्यष्टमशत तृतीय ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके वैमानिका उक्ता सोच क्रियावन्त इति चतुर्थोद्देशक ता क्रिया उच्यते तमच ॥ रायगिह इत्यादिसूत्र ॥ एवक्रिरियापयति ॥ एव मेतेन क्रमेण क्रियापद प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितम तदेव—पाउसिया पारियाव किया पाणाइवायकिरिया इत्यादि अन्तिम पुनरिद सूत्र मप्र—एपासिणं भंते । भारंभियाच परिग्गहियाच अपचक्खाणियाच मायावत्तियाच

चरिमावि अचरिमावि सेव भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसए तइउ उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ३ ॥
रायगिहे जाव एवमयासी कइण भंते ! किरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचकिरिया प०, तंजहा—काइया

यत्रैव भवितव्य । यावद्वैमानिका भदन्त ! स्पर्शचरमेव चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अपि अचरमा अपि तदेव भदन्तभदन्त ॥ इत्यष्टम शते तृतीयोद्देश स्समाप्तः ॥ ३ ॥ राजगृहे यावदेव मवादीत्—कति भदन्त ! क्रियाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्च क्रियाः प्र

त वैमानिक स्पर्श चरिमेकरी चरिमकहिये, अने जे वैमानिक भवचवन अयन नथी पामशे ते तो अचरिम कहिये। सेवभंते २ त्ति। तवत्ति हेभगव न्। तम्ह कह्युं ते सत्यछे अमचवागशो। अष्टमसयस्स तइया उद्देसासम्मत्तो ८। ए आठमाशतकना त्रीजाउद्देशा अर्थकह्यो कह्यो ॥ ३ ॥ पाछिल उद्देशाने अंते वैमानिक कह्या ते क्रियावंतछे तेमाटे चोथाउद्देशे क्रियाअधिकार कहेछे—रायगिहे जावएववयासी कइणभंते किरियाओ प । राजगृहनगरने विषे यावत् गौतमस्वामी भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वांदी नमस्कारकरी इमकहै केतली हेभगवम् ! क्रियाकही इतिप्रश्न उत्तर ! गोयमा पंचकिरियाओ पं त० काइया अहिगरणिया एवकिरियापदंणिरवसेस भाणियव्वं। हेगौतम ! पांचप्रकारनी क्रिया कही ते कहेछे—काया ये कीधे ते कायिकीक्रिया १ अधिकरणे खडगमादिकें कीधे ते अधिकरणकीक्रिया २ इम अनुक्रमे क्रियापद पन्नवणानेविषे बावीसमो निरवशेष स मस्तकहवा ते इम पाओसिया ३ पारियावणिया ४ पाणाइवायकिरिया ५ इत्यादि, वली इहां सूत्रकहवा, एयासिणंभंते आरंभियाए १ परिग्गहिया

मिच्छादंसणवत्तियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ मिच्छादसणवत्तियाओ (मिथ्यादृशा मेव तद्भावात्) अपच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ (मिथ्यादृशा मविरतसम्यग्दृशाञ्च तासा भावात्) परिग्गहियाओ विसेसाहियाओ (पूर्वो क्तानां देशविरतानाञ्च तासा भावात्) आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ (प्रागुक्तानां प्रमत्तसयतानाञ्च तासा भावात्) मायावत्तियाओ विसेसाहियाओ पूर्वोक्तानां मप्रमत्तसयतानाञ्च तद्भावादिति एतदर्थमेव वाच्य मिति दर्शय न्नाह ॥ आवत्थादि ॥ इहगाथे-मिच्छापच्चक्खाणे परिग्गहारंभमायकिरियाओ॥कमसोमिच्छमविरय मीसपमत्तप्पमत्ताणं॥१॥ मिच्छत्तवत्तियाओ मिच्छद्दिट्ठीचयतोयोवा॥ सेसाकयकोकोवम्हरासीत

च्छाहिगराणिया एव किरियापदं निरवसेसं नाणियव्वं जाव मायावत्तियाओ विसेसाहियाओ सेव भंते भंतेत्ति ॥

इहा सप्पया-काइयी आहिगरणकी एवं क्रियापद ज्ञातव्य निरवशेष याव मायाप्रत्ययिक्यो विशेषाधिका सदेव भदन्तभवदुक्त इति भ गवान्गौतमो याव द्विहरति ॥ इत्यष्टमशत चतुर्थोद्देश स्समाप्त ८ ॥ ४ ॥ राजगहे नगरे याव देव मवादी-आजीविका भद

न॰ अपच्चक्खाणेवं २ मायावत्तियाणं ४ मिच्छादसणवत्तियाणय ५ कयरे ० अप्पावा ४ गोयमा सव्वत्थोवामिच्छादंसणवत्तियाभो किरियाभो, मिथ्या दृष्टीनेज तेहनाभावथको-२ अपच्चक्खाणकिरियाभो विसेसाहियाभो मिथ्यादृष्टीने तथा अविरतीसम्यग्दृष्टीने तेहनाभावथको २ परिग्गहियाभो विसेसा हियाभो मिच्छादृष्टीने तथा अविरतसम्यग्दृष्टीने तथा देशविरतीने तेहना भावथका २ आरंभियाभो किरियाभो विसेसाहियाभो, पूर्वोक्त तीमने त था प्रमत्तसयतीने तेहना भावथको ४ एतलासर्गे अर्थमा ते देखाडता कहेछे—मायमायावत्तियाभो विसेसाहियाभो। पूर्वोक्त चारने तथा अप्रमत्तसय ताने तेहना भाव थको इहां बेगाथा कहेछे—मिच्छापच्चक्खाणे परिग्गहारंभमायकिरियाभो। कमसोमिच्छाअविरय मीसपमत्तप्पमत्ताण॥१॥ मिच्छत्तव त्तियाभो मिच्छद्दिट्ठीचयतोवाभो। सेसाउणकेका बट्ठहरासीतमामवियत्ति॥२॥ सेवभंते २ त्ति भगवगौतमे जाव विहरइ। तहत्ति हेभगवन् तमेज छ ते सव सत्यछे अम्हा मही इसा भगवत गौतम कही यावत् विचरे। अष्टमसतकचउत्थाउद्देसासमत्ता ८। ए आठमां सतकना चोथाउद्देशा अथथको

उपदिशति ॥ २ ॥ इत्यष्टमशते चतुर्थोद्देशकः ॥ ४ ॥ क्रियाधिकारात् पञ्चमोद्देशके परिग्रहादिक्रियाविषयं विचारं दर्शय न्ना ह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ गौतमो भगवन्त मेव मवादीत्–आजीविका गोशालकशिष्या भदन्त ! स्थविरा निर्ग्रन्थान् भगवत एव वक्ष्यमाणप्रकार म वादिषु यत्र ते तान् प्रत्यवादिषु तं गौतम स्वयमेव पृच्छ न्नाह ॥ समणोवासगस्सणमित्यादि ॥ सामाइयकडस्सत्ति ॥ कृतसामायिकस्य प्रतिप न्नाद्यशिक्षाव्रतस्य श्रमणोपाश्रयेऽपि श्रावकः सामायिकं प्रायः प्रतिपद्यत इत्यत उक्तं श्रमणोपाश्रय आसीनस्यति ॥ केइत्ति ॥ कश्चित्पुरुषः ॥ भंड ति ॥ वस्त्रादिकं वस्तु पृच्छति साधूपाश्रयवर्तिना ॥ अवहरेज्जत्ति ॥ अपहरेत् ॥ सत्ति ॥ स श्रमणोपासकः ॥ तंभंडंति ॥ तदपहृतं भांडं ॥ अणुग

अठमसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ४ ॥ रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी आजीवि याणं भंते ! थेरे भगवंते एवं वयासी समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवासए अत्थमाणस्स

न्त ! स्थविरा निर्ग्रन्था नेवमवादिषु-श्रमणोपासकस्य भदन्त ! कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य कोइ भंडमपहरे स्स तदुपायक म

कशी ॥ ४ ॥ क्रियाधिकारथकी पांचमेउद्देशे परिग्रह क्रियाविषय विचार देखाडता कहेछे—रायगिहेनयरे जाव एवंवयासी आ जीविकाभत थेरेभगवंते एववयासी समणोवासगस्सणंभंते। राजगृहनगरनेविषे यावत् इमकहे आजीविकाना शिष्य स्थविरसाध समीपे श्रावकनी अपेक्षा यें पूछ्या ते श्रीगौतमस्वामीये श्रीमहावीर प्रते पूछ्या तिहांलगे जिहांलगे यावत्ना पदस्थापना भोगा १०४ प्रश्न पर्यं प्राप्ति इमकहे पृच्छा मोया सागं श्रावक मधुने पछा श्रमणोपासक आश्रया ते देखाडेछे—श्रमणोपासकना भ आत्मार्थकारे, हेभगवन् । सामाइयकडस्ससमणोवासए अत्थमाण स्थविरभडपत्रनेरेख्या । कृतसामायिकनो एतले पडिवाज्याप्रतसामायिकरूप ते आदर्यां छे जेणे तेहना ,समणोवासएत्ति, श्रमण साधुना उपाश्रयनवि पे जेमाटे सामायिक श्रावकउपाश्रयनेविषेज सामायिक पडिवज्जे एतलामाटेश्रम श्रमणोपाश्रयनेविषे बैठाथे तेहना केइत्ति, कोइक पुरुष भडत्ति, व स्त्रादि वस्तु वरता श्रावक उपाश्रयनो अपहरे तेजाय इमव । अवभतेत भड अवहरेसमाव। ते व आत्माकारे, हेभगवन् श्रमणोपासक तेह अपहरयां

सेममावति ॥ सामायिकपरिसमाप्त्यनन्तरं गवेषयन् ॥ सयभंति ॥ स्वकीयंभावंत ॥ परायगति ॥ परकीय वा पृच्छतो ययमभिप्रायः स्वसम्बन्धि त्वा तत्स्वकीयं सामायिकप्रतिपत्तौच परिग्रहस्य प्रत्याख्यातत्वा दस्वकीय मत प्रश्नः प्रश्नोत्तरं ॥ सभंसि ॥ स्वभावं ॥ तद्दिति ॥ तै र्यविवक्षितै पथा क्षयोपशमं गृहीतै रित्यर्थ ॥ सीलत्यादि ॥ तत्र शीलव्रता न्यणुव्रतानि गुणा गुणव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः प्रत्याख्यानं नमस्का रसहितादि पौषधोपवास पर्वदिनोपवसन तस्य एवा इह्रो ऽत सौः इह च शीलव्रतादीना ग्रहणेपि सावद्ययोगविरत्यविरमणशब्दोपात्तया प्रयो

केइभंते समणोवासगस्स सामाइयकडस्स समणोवसए अच्छमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा सेणं भंते! तं भंडं अणुगवेसमाण किं सयं भंडं अणुगवेसइ परायगं भंडं अणुगवेसइ? गोयमा! सयं भंडं अणुगवेसइ नोपरायगं भंडं अणुगवेसइ। तस्सणं भंते! तेहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं से भंडे अभंडे भवइ? हंता भवइ। सेकेण रखाइणं अट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सयं भंडं

गुणवपणम् किं स्वकं भाण्डं मनुगवेषयति परकीयं भाण्डं मनुगवेषयति? गौ०। स्वकं भाण्डं मनुगवेषयति न परकीयं भाण्डं मनुगवेषयति। तस्य भदन्त। तैः शीलव्रतगुणविरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासैः स्वभाण्डमभाण्डंभवति? हन्त भवति। प्रश्न केन पुन रर्थेन भदन्त। एवं मुच्यते

भाडवमुमते सामायिक पूरावना अनन्तरे भववता आवताववा। किसवंभडेमवममवेमद परायमंभडमणुमवेसद। अं स्वकीयभांड भाषपोभांड गवेषे आवे अथवा पारकाभांड गवेषे आवे इहां पूछवकारनो अभिप्राय स्वकीय ते कहिये जे समयनो इम परं सामायिक पडिवज्यां परिग्रहना पचक्खाण भणी पापणो नहवे एतलामाटे प्रश्नको उत्तर। मावमा समभंडमणुमवेसद नापरायमभंडमणुगवेसद। हेगौतम! मावक पापणो भांडवमु सामायिक पूरा थइ गवेषे पराकाभांड गवेषेनही तिहां ए कारण जे ममत्वभाव छेदाणोनथी अने सामायिकभावथकी गवेषणा अयुक्त तिवे कारणे पमभवेषे इसमाडूं। तस्यणंभंतेहि सीलव्वयवेरमणपवक्खाणपोसहोववासेहि सभंडे अभंडे भवइ हंताभवइ। तेहने ए पाम्मानकारे हेभगवन् ते विवक्षित करीने शिल पत्ताणमम अणुव्रत तिवेकरीने शीलव्रतव्रिके अणुव्रत गुणव्रत रागादिकविरती नवकारसी पारसीसहित पर्वदिनेविषे पापणसहित उपवासअतिथिक

त्र तस्याएव परिग्रहतामिमित्तत्वेन प्रायतस्या सावद्यताप्रवर्त्तकतुल्या वृत्तिः ॥ तेनमे ममत्वं भवति ॥ तदपसृतत्वात् ममाकर्म न त्यसध्यवसाय स्यात् ॥ एकत्विति ॥ अथ कम ॥ सावद्यति ॥ पुन ॥ घडेसति ॥ अर्थेन वस्तुना ॥ एवमवदति ॥ एवभूता मन परिणामो भवति ॥ नोमेहिरण्ण त्यादि ॥ हिरण्यादिपरिग्रहस्य त्रिविध त्रिविधेन प्रत्याख्यातत्वात् उक्तानुक्तार्थसंग्रहकाव ॥ नोमेइत्यादि ॥ धन गणिमादि गवादिवा कन क प्रतीत रत्नानि कर्कतनादीनि मणय चन्द्रकान्तादयो मौक्तिकानि शङ्खाय प्रतीताः शिलाः प्रवालानि विद्रुमाणि अथवा शिला मुक्ताशिलाद्याः रक्तरत्नानि पद्मरागादीनि तत एषां द्वन्द्वः तता विपुलानि धनादीन्यादिर्यस्य त तथा ॥ सतत्ति ॥ विद्यमान ॥ सारत्ति ॥ प्रधान ॥ सावएज्ज

अणुगवेसड नोपरायगं जंड अणुगवेसइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ णोमे हिरण्णे णोमे सुवण्णे नोमेकंसे नोमदूसे विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादीए संतसारसावएज्जे ममत्तभावे पुण

स्वक जावत मनुगवेषयति न परकीयं भावक मनुगवेषयति ? गौ० ! तस्यैवं भवति नमेहिरण्यं नमेसुवर्णं नमे कांस्यं नमे दूष्य विपुलधनकम

रो इयो गोमसताविकाव्रतके पवि सावद्यपरविरतिकारो विरमणगत उपात्तपरेकरो मयाजम तकनेज परिग्रहके अपारम्भरुपको निमित्तपरेकरो मांडने धमांडपको भवनहेतुपणो करो स भडे धभडे मवतित्ति, ते अपडरा भांड धमांडवे इतिम्र उत्तर श्रीगौतमसुवे । सेकय वा वं घङेभते ए बयार । बिसय प्रसिद्धे बिरमणे वेनमवन् । रमअम । ममहअणुगवेस । भापथामाड भमगवये। भापरामममड अणुगवेसइ । नहो परावामाड धमुगवेष करा हिरम्म इत्यादि, हिरण्यादि परिग्रहने हिविध त्रिविधपणे पचखाणभणी नहोमाहरा सवप नहो मोहरा कांस्य । पामेदूसे । नहो माहरा दूष्यव स्त्र उत्त धनप्रधत मपहरो कहेहे—धनविपुल धन कनक रत्नमणि मोतिय संख सिल प्रवाल रत्न रयणमादीए संतसारसावद्य ममत्तभावे । घोमि आदि, रम मयमादिक अथवा गवादिक कनकमणिक रत्नकर्कतनादिक मोती शंख दक्षिणावर्त्त ए बेउ प्रसिद्ध शिला प्रवाल विद्रुम अथवा शिला स्फटि

ति ॥ स्यापतर्य एव मागम्य पदपवन्य कमधारयो अथ यदि तद्गावक ममावर्तं नयति तदा अय स्वकीयं तद्वेषयती त्यात्क्रमाह ॥ ममतीत्या दि ॥ परिग्रहादिविषये मनोवाक्कायाना करणकारणे नम प्रत्याख्यात ममत्वभाव पुन हिरण्यादिविषय ममतापरित्यागः पुनरपरिज्ञातो

से अपरिणाए भवइ सेतेणट्ठेण ? गोयमा ! एय वुच्चइ सयस्स भंडं अणुगवेसइ नोपरायगस्स भंडं अणुगवेसइ ।
समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स केइ जायं चरेज्जा । से णं भंते ! किं
जायं चरइ अजायं चरइ ? गोयमा ! जायं चरइ नो अजायं चरइ । तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वयगुणवे

करणमविमोचितकमहृत्तिमाभवामरत्तरयात्रिति तस्मात्स्वापतेय ममत्वभावः पुन तस्या परिज्ञातो भवति तत्तेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते स्व क स्वकं भाण्डमनुगवेषयति न परकीयं भाण्डं मनुगवेषयति । श्रमणोपासकस्य भदन्त । कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य कश्चि ज्जाया

वनिता प्रशानकिय विकृम रतरब भपराधादिक उपमन विपुम भवोडं पमाटिक जेकने ते तदा भवति विद्यमान सारवि प्रधान स्वापतेय कश्चि से कृत उ पन्तीमने क्रमारसमान स्थाविक परिग्रहादिबर्नेविषे मम बचन कायाना करण करावणहार ते पञ्चखाणकी ते ममतभाव वली ते हि रण्यादि विषयने विषे के ममता परिणाम । पचखेपपरिणयमवइ । वली से अपरिज्ञात प्रत्याख्यानकुने पनमतिना भवस्वाख्यानपणा वली ममत्वभाव न पचखतिएप वलावा । सेतेणट्ठेण गोयमा एवंवुच्चइ । ते तेणेअथ केगोतम । इमकह्य । सभवमणमवमइ । सामीअभाङ पनगवेषे । भापरायगभडमनग वेसइ । पारकाभाइ पनमवेषेनही । समणोवासगस्सणभंते सामाइयकडस्समणोवासए । श्रमणोपासकनी हेभगवन् । सामायक कीधाछते श्रमण उपा श्रयनेविषे । अच्छमाणस्सकेइजायंचरेज्जा । बेठाथी कोइएक पुरुष ते भावकनी जाया भार्या सेवे । सेणभंतेकिंजायंचरइ अजायंचरइ । ते पुरुष हेभगवन् मूं ते भावकनी स्त्रीने सेवे अथवा स्त्री नही तेहने सेवे इनिप्रश्न उत्तर । गोयमा जायंचरइ नोअजायंचरइ । हेगौतम स्त्रीने सेवे पणि स्त्री नही ते मत सेवे नही । तस्सणंभंतेतेहिंसीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाणपोसहोववासेहिं जाया अजाया भवइ । तेहने हेभगवन् तिणे शिक्षाव्रत अणुव्रतादिकरी गोतम

प्रत्याख्यातो भवति यनुमते रमत्यास्यातस्वात् ममस्वनावस्य यामुमतिरूपस्या विति ॥ केश्चार्य परेज्ञति ॥ कथि दुपपति रित्यथ जाया जाया चरत सवत ॥ सुवहति ॥ स्नुपा पुत्रजायां ॥ पज्ञयपवेति ॥ प्रेमैव प्रीतिरेव बन्धन तत्पुन ॥ स ॥ तस्य श्रावुस्य प्रव्यवच्छिन्न भवति

रमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ? हंता भवइ। सेकेण खाइण अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाय चरइ नोअजायं चरइ ? गोयमा ! तस्सण एवं भवइ नो मे माया णोमेपिया णो मे भाया णामे भइनी नोमे भज्जा नोमे पुत्ता नोमे धूया नोमे सुण्हा पेज्जबंधणे पुणसे अवोच्छिन्ने भवइ सेतेण

चरति (सचेत) स भदन्त! किं जाया चर त्यजायां चरति ? गौ० । जाया चरति माऽजाया चरति । तस्य भदन्त! तैश्शीलव्रतगुणविरमणप्रत्या ख्यानपौषधोपवासैः साजाया ऽजाया भवति ? हन्त भवति । तत्केन पुन रर्थेन भदन्त । एव मुच्यते जाया चरति ना जायां चरति ? गौत म । तस्यैव भवति नोमे माता नोमपिता नोमेभ्राता नोमभगिनी नोमेभार्या नोमपुत्रो नोमेपुत्री नोमेस्नुषा प्रेमबन्धन पुनस्तस्या व्यवच्छि

त गवन्त राग द्विषो विरति प्रत्याख्यान पापवापवास तिवेशरोने यासिरा यौवे तिवारे ते भार्या यभार्यावे रतिप्रर न उतर । हताभवर । कांचीत म रुस । मेके वधारमयह बमते एववुचर । ते विसे प्रसिद्ध यवें हेभमवन् रमवश्च ते आरपवप ते यावक्नो । जायचरर पा यजायचरर । ज्यो सेवे पवि त्योभयो ते म सेवे रतिप्ररन उतर । गायमा तम्मएवमवर । हेगोतम ते सामायिक बोधावे लेप यावचे तिवारे सामायिकमांहि ते यावकना यच पि वजगा पभिप्रायवे तेहने मनपरिणाम रमहवे । पामेमाता पामेपिता पामेमगिनी पामेभज्जा पामेपता पामेधूया पामेसज्जा । नवी माहरी मा ता नवी माहग पिता नवी माहगी बहिन नवी माहरी भार्या नवी माहरी पुत्र बेटो नवी माहरी बेटी नवी माहरी बेटानी भार्या । पेज्जबंधणेपु नमे यवाच्छिन्न भवर सेतेणट्ठेण गायमा जायचरर । प्रेमरूपिये प्रीति तेहीज बंधन नवी ते यावकनो पदमा मधवेयो नवी पनुमतिनेच प मत्याख्यानमयो प्रेमानुबधने पनुमतिरूपपणावको तेवे यर्व हेगौतम यावत् नवी पजायाप्रते सेवे । समणोवासमस्सणभतेपुव्वामेवथूलए पाणाइवाए पप

ममुमते रमत्यारूयातस्वात प्रेमानुयम्भसवा नुमतिरूपस्वा विति ॥ समणोवासयस्सवति ॥ तृतीयापस्वा स्यव्या श्रमणोपासकने त्यथ स
मत्थमात्रवियत्तयाया पद्याय ॥ पुव्वामयति ॥ प्राक्कालमव सम्यक्त्वप्रतिपत्तिसमनतरमवेत्यथः ॥ श्रपचक्खाएत्ति ॥ नमत्यारूयातो भवति तदा यश
विरतिपरिणामस्वा आतत्वा गतय ॥ मवति ॥ समणमवापासम पद्या स्प्राणातिपातविरतिकाल ॥ पचाइक्खमाणत्ति ॥ प्रत्याचक्षाण प्राणाति
पात मिति गम्यत किं करोतीति प्रश्नो यावनान्तरतु ॥ अपचक्खाए ॥ इत्यस्यस्थाने " पचक्खाएसि „ पचाइक्खमाण ॥ इत्यस्यस्थाने " पच
क्खाबेमाणेत्ति „ दृश्यते तत्रच प्रत्याख्यात स्वयमेव प्रत्याख्यापयंश्च गुरुणा इतुकर्या प्राणातिपातप्रत्याख्यानं गुरुणा स्वान याद्दय कित्यथ इति ॥
तीतमित्यादि ॥ तीत मतीतकालकृतं प्राणातिपात प्रतिक्रामति ततो निन्दाद्वारेण निवतत इत्यथ ॥ पडुपन्नति ॥ प्रत्युत्पन्न वर्तमानकालीन

ठेण गोयमा । जाव नो श्रजाय चरइ । समणोवासगस्सण भंत ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए
भवइ सेण भंत ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ? गोयमा ! तीय पडिक्कमइ पडुपन्नसंवरेइ अणागय
पच्चक्खाइ । तीय पडिक्कममाणे किं तिविहं तिविहेण पडिक्कमइ १ । तिविहं दुविहेण पडिक्कमइ २ । ति

ग्र जयति तत्रमार्गेन गौ० । याव स्त्रा मजाया चरति ॥ श्रमणोपासकस्य भदन्त । पूवमेव स्थूलक प्राणातिपात प्रत्याख्यातो भवति स भ० ।
पश्चात्प्रत्याचक्षाणः किं करोति ? गौ० । तीत प्रतिक्रामति प्रत्युत्पन्नं संवृणोति अनागतं प्रत्याख्याति । तीत प्रतिक्रामन्कि त्रिविधत्रिविधे

मसाापभवद । पद्माविमति ववोवार्में है एतमे समणापासके च सास्वासवारे, हैममवन् पूर्वकाल सम्यक्त्व पडिवज्ज्या पमन्तरेण यूम प्राणातिपात पच
पराम्भो पविना स्यविरति परिणामता नत्राणपनांवी निमारपवो । सवभते पच्छा पचारस्नमाणेकिंकरेद । ते श्रमणोपासक हममवन् पछे प्राणाति
पात विरतिकाममावे पमशतायका प्राणातिपात प्रतें आंपोने सूकरे इतिप्रश्न उत्तर । गायमा तीयपडिक्कमइ । हेगौतम पतीतकालकृत प्राणा
तिपात प्रतें निन्दावेंकरी निवर्ते । पडुप्पन्नसंवरेइ । वत्तमानकालीन प्राणातिपातप्रतें संवरे न करे इत्यथ । अणागयपच्चक्खाइ । आगामिकालविषय प्रा

प्राणातिपात संवृणोति नकरोतीत्यर्थ   अनागतं त्रिविधस्कालविषय प्रत्याख्याति   न करिष्यामी त्यादि प्रतिक्रामीत ॥ तिविह तिविहेण मित्या

विह एगविहेण पडिक्कमइ ३ । दुविह तिविहेण पडिक्कमइ ४ । दुविह दुविहेण पडिक्कमइ ५ । दुविह एगविहेण पडिक्कमइ ६ । एगविह तिविहेण पडिक्कमइ ७ । एगविह दुविहेण पडिक्कमइ ८ । एगविह एगविहेण पडिक्कमइ ९ ? गोयमा ! तिविह तिविहेण पडिक्कमइ तिविहघा दुविहेण पडिक्कमइ तचव

न प्रतिक्रामति १ त्रिविध द्विविधेनप्रतिक्रामति २ त्रिविधमेकविधेन प्रतिक्रामति ३ द्विविधत्रिविधेनप्रतिक्रामति ४ द्विविधद्विविधेन प्रतिक्रामति ५ द्विविधमेकविधेन प्रतिक्रामति ६ एकविध त्रिविधेन प्रतिक्रामति ७ एकविध द्विविधेन प्रतिक्रामति ८ एकविधमेकविधेन प्रतिक्रामति ९० गौतम ! त्रिविधत्रिविधेन प्रतिक्रामति १ त्रिविध द्विविधेन प्रतिक्रामति २ तदय यावदेकविध मेकविधेन प्रतिक्रामति ॥ त्रि

णातिपातप्रत न करण् एसो प्रतिज्ञाकरे । तीतपडिक्कममाणेवि तिविह तिविहेण पडिक्कमइ । अतीतकालकृत प्राणातिपात पडिक्कमताथका प्र विवि धि त्रिप्रकार करण करावण अनुमतिभेदथकी प्राणातिपात सागपते एसाकहो त्रिविध ते मन वचन कायाथका करवेकरी निन्दवेकरी विरमे १ । तिवि ह दुविहेण पडिक्कमइ २ । त्रिविध करणादिभेदथकी मनवचन एक २ वर्जीने वेहकरी विरमे २ । तिविह एगविहेण पडिक्कमइ ३ । त्रिविध करणा दि भेदथकी एकविधे मनवचनकाय एकतर्से करीने विरमे ३ । दुविह तिविहेण पडिक्कमइ ४ । द्विविधकरण आदिदेई अनेरा सोय यागरूप त्रिविधमन प्र मुख करवेकरी विरमे ४ । दुविह दुविहेण पडिक्कमइ ५ । द्विविधकरण आदिदेई अनुमतरूप त्रययाग मनप्रमुख अनेरे दायकरवेकरी विरमे ५ । दुवि ह एगविहेण पडिक्कमइ ६ । द्विविध करणआदि अनुमत दायरूपयाग एकविध मनप्रमुख अनेरे दायकरवेकरी विरमे ६ । एगविह तिविहेणपडिक्कम इ ७ । एकविध करणआदि अनेरा एकरूपयाग मनप्रमुख तीनकरवेकरी विरमे ७ । एकविहदुविहेण पडिक्कमइ ८ । एकविध करणआदि अनेरो एक रूपयाग दुविधि मनप्रमुख अनेरे दायकरवेकरी विरमे ८ । एगविहएगविहेण पडिक्कमइ ९ । एकविध करणआदि अनेरा एकरूपयाग एक मनप्रमुख अ

दि ॥ इदन नवविकल्पा सत्र गाथा–तिन्नितियातिन्निदुया तिन्निमएक्काएयतिजोगेसु ॥ तिदुएक्क २ तिदुएक्कचेवकरणाइ ॥ १ ॥ एतेषु च विकल्पे प्रकारश्च विकल्पा लभ्यन्ते भाइय–एकोतितिवियातियगा दोमेवगासइयतिन्निमवनयय ॥ भगनवगस्सएव भगायगूयपक्कार्सं ॥ १ ॥ स्थापना तत्र ॥ सि विहतिविहेनति ॥ त्रिविध त्रिप्रकार करणकारणानुमतिभेदात् प्राणातिपातयोग मिति गम्यते त्रिविधेन मनोवचनकायलक्षणेन करणेन प्रतिक्रा मति ततोनिम्मन विरमति ॥ तिविहं दुविहेणति ॥ त्रिविध करणादिभेदात् द्विविधेन करणेन मन प्रभृतीनां मेकतरवर्जितद्वयेन ॥ तिविहं एगविहेणति ॥ त्रिविध तस्यैव एकविधेन मन प्रभृतीनां एकतमेन करणेनेति ॥ दुविहं तिविहेणति ॥ द्विविध कृतादीनां मन्यतमद्वयरूप योगं त्रि विधेन मनःप्रभृतिकरणेन एवं मन्यपि ॥ तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे इत्यादि ॥ नकरोति स्वयं विधया त्वतीतकाले प्राणातिपातं मनसाऽपि ॥ इताइ पन मया तदाशी मवत इत्यव मनुध्यामास् तथा न नैवकारयति मनसैव यथा वा ॥ अनुमतं यदसौ परय नपातितं इति चिन्तनात्,

जाय एगविहं एगविहेण पडिक्कमइ। तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १। तिविहं दुविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा वयसा २। अहवा नकरेइ नकारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा कायसा ३। अहवा नकरेइ ३ वयसा

विधं त्रिविधेन प्रतिक्रमन् नकरोति नकारयति कुर्वन्त (कारयन्तं) नानुजानाति मनसा वचसा कायेन १। त्रिविधद्विविधेन प्रतिक्रम मन

म्हेवरखेवरो विरमे इतिप्रश्न उत्तर ८। गायमा तिविह तिविहेण पडिक्कमइ। हेगोतम त्रिविध त्रिविध विरमे १। तिविहंवा दुविहेण पडिक्कमइ २। वयरा त्रिविध द्विविध विरमे २ विम पूर्वेवत्। तयेवजावएगविहंवा एगविहेणं पडिक्कमइ। तिमज यावत् एकविध २ विरमे ८। तिविहंतिविहे ण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंतनाणुजाणइ। त्रिविधत्रिविधेकरी पडिक्कमतो विरमतोथको पाते नकरे प्राणातिपातप्रते मनेकरी वाय क ह्यो त्रिपमे तिणदिन एतइस्यानथी इसा ध्यानकी तथा नकरावे मनेकरी येमे युज नबोवो एम मनेपापसे इयाध्यानमकी इसा चिन्तनकी तथा उत्पय

तथा कुवन्तं यिद्घाम मुपलक्षत्या स्वार्यर्से वा समनुजानन्तवा पर भात्मानेवा प्राणातिपात नानुजानाति नामगोदयसि गनसैव वचानुस

कायसा ४ । तिविहं एगविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ ३ मणसा ५ । अहवा नकरेइ ३ वयसा ६ । अहवा नकरेइ ३ कायसा ७ । दुविहं तिविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा कायसा ८ । अ

रोति नकारयति कुर्वन्त मानुजानाति मनसा वचसा २। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्तं मानुजानाति मनसा कायेन ३। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा कायेन ४। त्रिविध मकविधेन प्रतिक्राम नकरोति नकारयति कुर्वन्त मानुजानाति मनसा ५। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्तं नानुजानाति वचसा ६। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त मानुजानाति कायेन ७। द्विविध त्रिविधन

वचपनावका वरावतान मनमाटेनकी मनेकरीने वचने मनकरवेमरी तेकमा मनमाटम वका तम न करे न करावे मनकरताने मनमाटेनकी वचनेक री तथाविध वचन मनसनवकी दम नकरे नकरावे करताने मनमाटेनकी कायायेकरी तथाविध मर्गविकार करवनकी इसी यथासम्भाय नसेवा। मनसा वचसा कायसा १। न करे मनेकरा न करावे वचनकरी मनमाटेनकी कायायेकरा २ ए मथम मनसरवानकी वसुविवचाभोभयनोयकी। तिविह दुविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ न कारवेइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा २। त्रिविध विविध पडिक्कमता थका न करे पाते न करावे पने नापासे करता पनेरामते भला न जाणे समकरी वचनेकरी २। भथवानकरेइ न कारवेइ। अथवा न करे न करावे। करतनाणुजाणइ। करताप्रते भला न जाणे। मनसा कायसा २। मनेकरी कायायेकरी ३। अथवा न करेइ न कारवेइ करतनाणुजाणइ वयसा कायसा ४। अथवा न करे न करावे करताप्रते भला न जाणे वचनकरी कायायेकरी ४। तिविह एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ न कारवेइ करतनाणुजाणइ मणसा ५। त्रिविध एकविध पडिक्कमताथका न करे न करावे करताप्रते भला न जाणे मनेकरी ५। अहवानकरेइ ३ वयसा ६। अथवा न करे न करावे करताप्रते भला न जाणे वचनेकरी ६। अहवा न करेइ ३ कायसा ७। अथवा न करे न करावे करताप्रते भला न जाणे कायायेकरी ७। दुविह तिविहेण पडिक्कम

रयन तदनमोन्नात मय नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा तथाविधवचनमयत्तनात् मन नकरोति नकारयति कुर्वंत नानुजाना
ति कायेन तथाविधाङ्गविकारकरणादिति नवट यथासङ्ख्यायो नकरोति मनसा नकारयति वचसा नानुजानाति कायेन त्यवसथको नुसरको
या वचनविषयाधीनतया स्ववस्थायानां धत्यमावविकल्पायोगा यति मव त्रिविध त्रिविधेने त्यत्र विकल्पे एकएव विकल्प सादन्येषु पुन द्वितीय
तृतीयचतुर्थपु षयपयः पञ्चमषष्ठयो नवमय सप्तमेश्रयो ऽष्टमनवमयो नयनवेति एव सर्वं प्रयोजनयम्बावात् एव मिथ मतीतकाल माश्रित्य कृता भ
रनादियोजना यथचेव मया ऽतीतकाले मकाप्रवृतिना कृतं कारित मनुज्ञातस्या घथ क्रमय नकरोति नकारयति मया नानुजानाति तत्निद्मेन तद
ममाम्बमनियेपत मातो मिवर्तत इत्यथ सम्भिन्नतस्यासावकि तदनुमोदनानिवृत्तेः कृताधि रसौ क्रियमाणादि रिव स्यादिति वर्तमानकाल स्वाश्रि
त्य सुगमव नविष्यत्कालापेक्षया त्वेव मसौ नकरोति मनसा त हनिष्यामी त्यस्य चिन्तनात् नकारयति मनसैव तमहं घातयिष्यामी त्यस्य चि

हया नकरेइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ९ । ग्रहवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ मणसा
वयसा कायसा १० । दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा ११ । ग्रहवा नक

प्रतिक्राम यकरोति नकारयति मनसा वचसा कायेन ८ । अथवा नकरोति कुर्वन्तं नानुजानाति मनसा वचसा कायेन ९ । अथवा नकारयति
कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा कायेन १० । द्विविधं द्विविधेन प्रतिक्राम न्नकरोति नकारयति मनसा वचसा ११ । अथवा नकरोति न

मान नकरे नकारवे मनसा वचसा कायसा ८। द्विविध त्रिविध पडिक्कमतायका नकरे न करावे मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ८। अथवानकर
इ करत नानुजाणे मनसा वचसा कायसा ९। अथवा न करे करताप्रते भलमाजाणेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ९। अथवानकारवेइ करता
नत्राणइ मनसा वयसा कायसा १०। अथवा न करावे करताप्रते भलमाजाणेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी १। दुविह दुविहेण पडिक्कममा
णे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा ११। द्विविध द्विविध पडिक्कमतायका न करे न करावे मनेकरी वचनकरी ११। अथवानकरेइ न कारवेइ मणसा

मागाग नामुजानाति मनसा माविम वष मनुमुत्य इयकरवात् सम वाचा कायेमच तयो सयाविषयो करवा दिति अथवैव मेपा जयिष्य स्काल मम प्रवृतिना करिष्यमाव कारयिष्यमाव मनुमस्यमानवा वर्ष क्रमव नकराति नकारयति नथानुजानाति ततो निवृत्ति मभ्युपगच्छती

रेइ नकारयेइ मणसा कायसा १२। अहवा नकरेइ नकारवेइ वयसा कायसा १३। अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा १४। अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ मणसा कायसा १५। अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ वयसा कायसा १६। अहवा नकारयेइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा १७। अहवा नकारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा कायसा १८। अहवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ वयसा कायसा १९।

कारयति मनसा कायम १२। अथवा नकरोति नकारयति वचसा कायम १३। अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा १४। अथवा नकरोति कुर्वन्तं नानुजानाति मनसा कायन १५। अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा कायन १६। अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा १७। अथवा नकारयति कुर्वन्तं नानुजानाति मनसा कायन १८। अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वच

कायसा १२। अथवा न करे न करावे मनेकरी कायायेंकरी १२। अथवानकरेइ नकारवेइ वयसा कायसा १३। अथवा करेनही न करावे वचनेकरी कायायेंकरी १३। अथवा नकरेइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा १४। अथवा न करे करतापतें अनमोदेनही मनेकरी वचनेकरी १४। अथवानकरे इकरतनाणुजाणइ मणसा कायसा १५। अथवा न करे करतापतें अनमोदेनही मनेकरी कायायेंकरी १५। अथवानकरेइकरत नाणुजाणइ वयसा का यसा १६। अथवा न करे करताने अनमोदेनही वचनेकरी कायायेंकरी १६। अथवानकारवेइकरतनाणुजाणइ मणसा वयसा १७। अथवा न करावे करतापतें अनमोदेनही मनेकरी वचनेकरी १७। अथवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ मणसा कायसा १८। अथवा न करावे करतापतें अनमोदेनही मनेकरी कायायेंकरी १८। अथवानकारवेइकरत नाणुजाणइ वयसा कायसा १९। अथवा न करावे करतापतें अनुमोदेनही वचनेकरी कायायेंकरी १९।

अथ गणना मौनं मनसा ... अधिक ... नयति इत्थ त्रिविध त्रिविधेन ति विकल्प मात्रिक्या ... एकोनपञ्चाशत् भेद–नकरेह
... निरिमा ... भग विगत ... पडिक्कमामि ॥ १ ॥ भेदनवतिगिरिदा तिविहतिविहेण ... ॥ तन
... गुणनिमदासिनवतिगमपमि ॥ ... तिविधतिविधेनका ... ॥ ३ ॥ इत्थ ॥

गंथिह पडिक्कमिउं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा २० । अहवा नकरेइ नकारवेइ वयसा २१ । अहवा नकरेइ नकारवेइ कायसा २२ । अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ मणसा २३ । अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ वयसा २४ । अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ कायसा २५ । अहवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ मणसा २६ । अहवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ वयसा २७ । अहवा नकारवेइ करत ना

मा कायेन १९ । द्विविधत्रिविधेन प्रतिक्रम नकरोति नकारयति मनसा २० । अथवा नकरोति नकारयति वचसा २१ । नकरोति नकारय ति कायेन २२ । अथवा नकरोति कुर्वन्तं नानुजानाति मनसा २३ । अथवा नकरोति कुर्वन्तं नानुजानाति वचसा २४ । अथवा नकरोति कु र्वन्तं नानुजानाति कायेन २५ । अथवा नकारयति कुर्वन्तं नानुजानाति मनसा २६ । अथवा नकारयति कुर्वन्तं नानुजानाति वचसा २७ ।

... पडिक्कममाण नकरेइ नकारवेइ मणसा २० । द्विविध त्रिविध पडिक्कमतायका न करे न करावे मनेकरी २० । अथवा नकरेइ न का रवेइ वयसा २१ । अथवा न करे न करावे वचनेकरी २१ । अथवा नकरेइ नकारवेइ कायसा २२ । अथवा न करे न करावे कायायेकरी २२ । अथवा न करेइ करंतनाणुजाणइ मणसा २३ । अथवा न करे करताप्रते भलोमाहेनही मनेकरी २३ । अथवानकरेइकरंतनाणुजाणइ वयसा २४ । अथवा न करे करताप्रते भलोमाहेनही वचनेकरी २४ । अथवानकरेइकरंतनाणुजाणइकायसा २५ । अथवा न करे करताप्रते भलोमाहेनही कायायेकरी २५ । अथवा नकारवेइकरंतनाणुजाणइ मणसा २६ । अथवा न करावे करताप्रते भलोमाहेनही मनेकरी २६ । अथवानकारवेइकरंतनाणुजाणइ वयसा २७ । अथवा

मयिसपमित्ति ॥ स्वविषय यथानुमति रक्षि ॥ सामक्षेत्रत्ति ॥ सागान्येवा मविशये प्रत्यास्यानेशति ॥ मवत्यहोत्ति ॥ विशेषे स्वयनूरमयमलधि

गुजाणइ कायसा २८ । एगविह तिविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा २९ । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा कायसा ३० । अहवा करत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ३१ । एक्कविह दुविहेण पडिक्कममाणे नकरइ मणसा वयसा ३२ । अहवा नकरेइ मणसा कायसा ३३ । अहवा नकरेइ वयसा कायसा ३४ । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा ३५ । अहवा नकारवेइ मणसा कायसा ३६ । अ

अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति कायेन २८ । एकविध त्रिविधेन प्रतिक्रम नकरोति मनसा वचसा कायेन २९ । अथवा नकारयति मनसा वचसा कायेन ३० । अथवा कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा कायेन ३१ । एकविधं द्विविधम प्रतिक्रम नकरोति मनसा वचसा ३२ । अथवा नकरोति मनसा कायेन ३३ । अथवा नकरोति वचसा कायन ३४ । अथवा नकारयति मनसा वचसा ३५ । अथवा नकारयति म

न करावे करतामतें भला जाणे नहीं वचनेकरी २७ । अथवा नकारवेइकरत नाणुजाणइ कायसा २८ । अथवा न करावे करतामतें भलुजाणेनही कायायें करी २८ । एगविहतिविहेणपडिक्कमाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा २८ । एकविध त्रिविध पडिक्कमतायका न करे मनेकरी वचनेकरी कायायेक री २८ । अहवानकारवेइ मणसा वयसा कायसा २ । अथवा करावेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेंकरी २ । अहवाकरतनाणुजाणइमणसा वयसा कायसा ११ । अथवा करतामतें भला जाणेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेंकरी ११ । एगविहदुविहेणपडिक्कमाणेनकरेइ मणसा वयसा १२ । एकविध द्विविध पडिक्कमतायका न करे मनेकरी वचनेकरी १२ । अहवा नकरेइमणसा कायसा १३ । अथवा न करे मनकरी कायायेंकरी १३ । अहवानक रेइवयसा कायसा १४ । अथवा न करे वचनेकरी कायायेंकरी १४ । अहवानकारवेइमणसावयसा १५ । अथवा न करावे मनकरी वचनेकरी १५ । अ हवा नकारवेइ मणसाकायसा १६ । अथवा न कारवे मनेकरी कायायेंकरी १६ । अहवा नकारवेइवयसाकायसा १७ । अथवा न करावे वचनेकरी का

मरस्यादी ॥ पुत्ताइकतइगिमि तमेतमेमारसिपवस्स ॥ संपतिकेदगिवियो दिक्कासिमुहस्सतिविडपि ॥ १ ॥ यमाच त्रिविधं त्रिविधेन त्यजाते मपरिहारो हतौ तथा त्यत्रापि कार्यो यत्रानुमते रतुमवको सीति अथ कथ मनसा करणादि? उच्यते यथा वाक्कायधोरिति वाइय-भाव करपुत्रमवसा मरनकारामवमनुमइय ॥ अइयतनुजोमेहि करवाइतइनयमवसा ॥ १ ॥ तमईवत्तावदतनु करवाइंवच मइवमवकरव ॥ सावज्ज

हवा नकारवेइ वयसा कायसा ३७। अहवा करत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३८। अहवा करत नाणुजाणइ मणसा कायसा ३९ अहवा करत नाणुजाणइ वयसा कायसा ४०। एगविहं एगविहेण पडिक्कमाणे नकरेइ मणसा ४१। अहवा नकरेइ वयसा ४२। अहवा नकरेइ कायसा ४३। अहवा नकारवेइ मणसा ४४। अहवा नकारवेइ वयसा ४५। अहवा नकारवेइ कायसा ४६। अहवा करत नाणुजा

नसा कायेन ३६। अथवा नकारयति वचसा कायेन ३७। अथवा कुर्वत नानुजानाति मनसा वचसा ३८। अथवा कुर्वत नानुजानाति मनसा कायेन ३९। अथवा कुर्वंत नानुजानाति वचसा कायेन ४०। एकविधमेकविधेनप्रतिक्रामन्नकरोति मनसा ४१। अथवा नकरोति वचसा ४२। अथवा नकरोति कायेन ४३। अथवा नकारयति मनसा ४४। अथवा नकारयति वचसा ४५। अथवा नकारयति कायेन ४६। अथवा कुर्वंतं

कायेकरी १७। अथवा करत नाणुजाणइ मणसा वयसा १८। अथवा करतामते अनुमोदेनको मनेकरी वचनेकरी १८। अथवा करतनाणुजाणइ मणसा कायसा १९। अथवा करतामते अनमोदेनको मनेकरी कायाकेकरी २८। अथवा करतनाणुजाणइ वयसा कायसा ४। अथवा करतामते अनमोदेनको वचनेकरो कायाकेकरो ४। एगविहं एगविहेण पडिक्कमाणे नकरेइ मणसा ४१। एकविधि एकविधे पडिक्कमतायका न करे मनेकरी ४१। अथवा नकरेइ वयसा ४२। अथवा न करे वचनेकरी ४२। अथवा नकरेइ कायसा ४३। अथवा न करे कायाकेकरी ४३। अथवा नकारवेइ मणसा ४४। अथवा न करावे मनेकरी ४४। अथवा नकारवेइ वयसा ४५। अथवा न करावे वचनेकरी ४५। अथवा नकारवेइ कायसा ४६। अथवा न करावे कायाके

णइ मणसा ४७। च्छहया करत नाणुजाणइ वयसा ४८ । च्छहया करतं नाणुजाणइ कायसा ४९ । पडुप्पन्नं संवरेमाण कि तियिहेण संवरइ ? एय जहा पडिक्कमणेण एगूणवन्नं भंगा भणिया संवरमाणेणवि एगूणवन्नं

नामनुजानाति मनसा ४७ । अथवा कुर्वन्तं नानुजानाति वचसा ४८। अथवा कुर्वन्तं नानुजानाति कायेन ४९ । प्रत्युत्पन्नं संवृण्वन्किंत्रिविधंत्रिवि धेन संवृणोति एवं यथा प्रतिक्रमणे एकोनपञ्चाशद्भङ्गा भणिताः संवृण्वत्य प्येकोनपञ्चाशद्भङ्गा भणितव्याः । अनागतं प्रत्याचक्षाणः किंत्रिविधंत्रिवि धेन प्रत्याख्यात्येवं तत्रै येकोनपञ्चाशद्भङ्गा भणितव्या यावदथवा कुर्वन्तं नानुजानाति कायेन । श्रमणोपासकस्य भदन्त। पूर्वमेव स्थूलको मृषावा

रो ४६ । अथवा करतांनाऽनुजानाति मनसा ४७। अथवा करतांप्रते अनुमोदनको मनेकरी ४७। अथवाकरतनाऽनुजानाति वचसा ४८। अथवा करतांप्रते अनुमोदनको वचनेकरी ४८। अथवाकरतनाऽनुजानातिकायसा ४९। अथवा करतांप्रते अनुमोदनको कायेकरी ४९। पडुप्पन्नसंवरेमाण । वर्तमानका ल प्राणातिपातप्रते संवरतोथको । किंतिविहंतिविहेणंसंवरइ । इम तिविहं तिविहेणकरी संवरे इत्यादि, प्रश्नपूछा। एवंजहापडिक्कमणेण। इम जिम प्रतिक्रमणथाते । एगूणपन्नभंगाभणिया । उगुण पचास ४९ भंगा कह्या पाछलि। एवंसंवरेमाणेणविएगूणपन्नभंगाभाणियव्वा । इम संवरतोथकाने प णि गुणपचास भांगा कहवा । अणागयंपच्चक्खमाणे । आगामिकाले प्राणातिपात न करस्यूं एहवो प्रतिज्ञा करतोथको । किंति विहं तिविहेणं पच्चक्खाइ । इम तिविहं तिविहें पचखे इत्यादि ४९ प्रश्न पूछ्या उत्तर। एवंतेचेवएगूणपन्नभंगा भाणियव्वा । इम तिमहीज भंगा उगुण पचास कहवा ते मांहिला छेहला कहेछे—जावअहवाकरंतंनाणुजाणइकायसा ४९। यावत् अथवा करताप्रतें अनुमोदनको कायासे ४९ । समणो वासगस्सणं । श्रमणोपासकने हेभगवन् । पुव्वामेवथूलएमुसावाएअपच्चक्खाएभवइ। पहिलांहीज स्थूलमोटका मृषावाद प्रत्याख्यान हवे। सेणं भंतेपच्छापच्चाइक्खमाणे । ते हिवे पछे पचखतां हेभगवन् । पचखतां थकां कयाकाल आश्रीने स्यूं करे इतिप्रश्न उत्तर। एवंजहापाणाइवायस्ससीयालंभंगसयंभणि यं । इम जिम प्राणातिपातना एकसो सेंतालीस भंगा कह्या ४९ अतीतकाल ४९ वर्तमानकाले ४९ आगामिकालें एव १४७। तहामुसावायस्सविभाणिय

प्राणातिपातमपरागति ॥ २ ॥ कारावयपुमममना वितहकरडममनायज्ज ॥ वितेइयमपउष सुदुकयममहत्तीहति ॥ ३ ॥ एवम पञ्च सयूसल प्रमद महस्वारिंश दधिकस्य मङ्गसतस्य माषा प्रकृ्काना सहसतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि मवन्तीति यत् स्थविरा आजीविकैः श्रमणो पासकगत धत्ता पृष्टा गौतमत्रत भगवा स ताव दुरुक्त मयानन्तरोक्तशीला श्रमणोपासकाएव भवन्ति नपुन राजीविकोपासका आजीविकामा मृषित्येमा निमता यपीति दशपलाव ॥ मृषपलुत्यादि ॥ मते सलु मत मप परिदृश्यमाना निग्रन्थसस्का इस्यय ॥ सरिसगति ॥ पुहृमका प्राणा

नगा नाणियद्वा । श्रणागय पच्चरकमाणे कि तिविह तिविहेण पच्चरकाइ एव तंचेव नंगा एगूणपछा नाणि यद्वा । जाव श्रहवा करत नाणुजाणइ कायसा । समणोवासगस्सण नंते ! पुद्वामेव थूलगमुसावाए पच्च रकाए नवइ सेण नंते ! पच्छापच्चाइरकमाणे एव जहा पाणाइवायस्स सीयाल नंगसय नाणिय तहा मुसावायस्सवि नाणियद्वं, एव श्रदिणादाणस्सवि, एव थूलगस्स मेहुणस्सवि, परिग्गहस्स जाव क

दा प्रत्याख्यातो नवति म मदन्त । यथा प्रत्याख्याताय यथ यथा प्राणातिपातस्य सप्तचत्वारिंशदधिकशत भङ्गा भणिता सायां मृषावादस्यापि भणितव्या । एवमदत्तादानस्यापि । एव स्थूलकस्य मैथुनस्यापि । परिग्रहस्यापि यावत्कुर्वत नानुजानाति कायेन । एते खल्वीदृशाः श्रमणोपा

स । तिम मपाउदना पवि १४० भांगा प्रतीतकाले वर्तमानकाले प्रनागतकाले करो कहवा । एनहसमय पढिवादापस्यवि । एम सूक्ष्म पदत्तादान ना पवि १४० भांगा कहवा । एवपूनगस्थविमेहृणस्य । एम स्थूल मेथुनना पवि १४० भांगा कहवा । स्थूलगस्सपरिग्गहस्स । एम स्थूल परिग्रहना पवि १४० भांगा कहवा कहना भांगा कहेछे—आवकरतनाअनुवाद कायसा । यावत् करतामते अनुमोदेनहो कायायेकरो ते माजीविके स विरे भगवत श्री महावीरसाथ समीपें श्रमणोपासकनी पपेथाये पूछ्यो ते श्रीगौतमस्वामीयें श्रीमहावीरस्वामी कहे पछा तिवारेगो श्री यावत ना पवपाएना भांगा ०२१ कह्या पर पामनि एमहु कियेनी पमंतराल गौतमवित श्रमणोपासक श्रेयकुवे पर आजीविक उपासक नथी आजी

तिपातादि प्रतीतमतिक्रमवादिमत ॥ नोखलु त्ति ॥ नैव ॥ परिसगत्ति ॥ उक्तरूपा एकायोना सपरिग्रानात् ॥ आजीविश्रोवासयत्ति ॥ गोशालक शिष्यश्रावका यद्येतस्येवा यस्यविशेषत समयनाम आजीविकसमयास्य सदुपासकविशेषस्वरूपस्या गिधानपूर्वक आजीविकोपासकापचया य सावापमका तुल्कपयितु माह ॥ आजीविएत्यादि ॥ आजीविकसमयस्य गोशालकसिद्धान्तस्य ॥ अयमठत्ति ॥ इद मभिधेय ॥ अक्खीणपरिभोइणो सवसत्ति ॥ अक्षीण मक्षीणायुष्क ममासुक परिभुञ्जत इत्येव शीला अक्षीणपरिभागिना ऽपव न्मत्ययम्य सर्वाधकत्वादक्षीणपरिभोगा अमपयताहार ग्रागाकप एत्मप सवसत्त्वा अमपतसर्वप्राणिनो यद्यव ततः किमित्याह ॥ सकतत्यादि ॥ सेत्ति ॥ तत ॥ इतसि ॥ अस्या समुद्रादिना ऽन्यथे

रतं नाणुजाणइ कायसा, एए खलु परिसगा समणोयासगा भवति, नोखलु एरिसगा आजीवियोवासगा भवति, आजीविय समयस्सण अयमठे पण्णत्ते अक्खीणपडिभोइणो सव्वसत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता

सका भवति गोपस्वीकृभा आजीविकोपासका भवन्ति । आजीविकसमयस्य यमर्थः प्रथम सद्यया—अक्षीणपरिभोगिनः सर्वसत्वानि इत्या छित्त्वा

विकउपासकने गुणपणे आमे कहवे छे ते आवश इमा हमारा कहेछे—एवखलु एरिसगा समणोवासगाभवति आवखलु एरिसगा आजीवियोवासगाभवति । इत्यादि ए निये ये पूर्वे देखाड्या—तेह निपजना यावकने एरिसमति एवा प्राणातिपाताविरमणेविषे अतीत अक्रमादिकनके मनो नि वे एरिसमति एतरूप कया पयना पत्रावकनो गायालकमित्य श्रावक एतावता पवना भागामाना श्रावकनो, हिवे एहोज पयने विशेषयो सम वाभे यक आजीविक माम्रमा पयने तथा तेहमा उपायपने विशेषस्वरूपने नामपूर्वक आजीविकउपासकनो अपेक्षायें श्रमणोपासकनो उत्कृष्टपणा दे खाडता कहेछे—आजीविकसमयस्य यवमट्ठे प त । आजीविक मागामामा सिद्धांतना एहमयकहा ते कहेछे—अक्खीणपरिभाइयाअसमत्तोसेह ता केम। भेता सपिता विलंपिता उदवइता आहार आहारेइ । जेहना आयखो अयनषो हुया एहमा अप्रासअप्रति भागवे एहवा सत्तजीव अमयती प्राणियाकें एवा आहार परिभामनेविषे अप्रासुकने तेहने मू करो ते कहेछे—तेहने हंता तेलकुटादिके हरोने कारादिकें करो भेदीने सूलादिकें

श्राप प्राविशातं चित्वा ऽसिपुत्रिकादिना द्विधाकृत्वा जित्वा शूलादिना शिल्मं कृत्वा लुप्त्वा पक्षादिलोपनेन विलुप्य त्वचोविलोपनेना ऽपद्रा व्य विनाश्य आरमाहारयन्ति ॥ तत्यत्ति ॥ तत्र एव स्थित पक्षयतसत्वधर्मे हननादिदोषपरायण इत्यथः श्राजीविकसमयका पिकरणभूते द्वादशे ति विशेषानुष्ठानतया त्वरिगासता आनन्दादिश्रमणोपासकव दन्यथा यदव सा ॥ तासत्ति ॥ तालाभिधान एव एव तालप्रलवादयापि ॥ अरहंत दवयागत्ति ॥ गात्रासकस्यतरकस्यतया ऽहन्त्वात् ॥ पचफलपडिक्कतत्ति ॥ फलपचकाभिवृत्ता उदुम्बरादीनिव पञ्च पदानि पञ्चमीयुवपनान्तानि

यिलुपित्ता उद्दयइत्ता श्राहार माहारेंति, तत्थ खलु इमे दुवालसश्राजीवियोवासगा जवति तजहा—ताल ता लपलंबे उव्विहे संविहे श्रववेहे उदए नामुदए नमुदए श्रणुवालए संखवालए श्रयपुले कायरिए इच्चेए दु वालस श्राजीवियोवासगा श्ररहंतदेवयागा श्रम्मापिउसुस्सूसगा पंचफलपडिक्कंता त०—उउंबरेहिं वडेहिं

जित्वा लुप्त्वा विलुप्य पकुत्या आर माहारयन्ति । तत्र खलु मे द्वादशा आजीविकोपासका जवति तद्यथा—ताल तालप्रलंब उद्विध संविधो वविध उदको नामुदको नमुदको नुपालकः शंखपालका अयपुलः कातरिक इत्यते द्वादशा आजीविकोपासका अर्हद्देवताका मातृपितृशुश्रूष का पंचफलप्रतिक्रान्ता तद्यथा—उदुम्बरैः वटैः बदरैः सतरैः प्लक्षैः पलाक्षुसफलकदमूलविवर्जका अनिलांछितैः (अकुहितवृषभैः) अनासाजितैः

यो पढादि पासवेयो विषयेवते विलुपो, अपह्ली आहारेयरे एवचा यवन भायासाना सतोकरे पसमतोजीव विभासी आहारकरवी । तत्थापु मदूशानमपाजीविमानामपादति तजहा । एइ पाओविक समणेविणे पविकरपभूत कारा विमेय अगुष्ठानवत पर्वाणको परिणाम्या आयकादि य मनापायकनोपरे ते मायाजामिद्दे पण्डा ता पणाढे ते नारेणा नामवाके—ताले तालपलंबे उव्विहे संविहे भववि उदए नामए नमुदए पणवा नए मणुयानए पवबसे वायरिए । ताल इसणामे १ तालपलंब २ उविह ३ संविह ४ पविविध ५ उदय ६ नामुदक७ नमदय ८ पनुपालक ९ शंखपाल १० अयपुल ११ कातरिक १२ । इतेतदुवालसपाजोवियावासगा । इम एड यारे पाओविक गायासागा मुख्यश्रावक कप्पा । मरिहंतदेवतागा । गायाा

प्रतिक्रान्तश्रुत्रानुसरणादिति ॥ भनित्र विएज्झिति ॥ भवपितकै ॥ पवक्कनिभेहिति ॥ पमसिसैः ॥ एएवितावपृवइच्छंतिति ॥ एतेपि ताव द्दिषि एपोम्पता विकला इत्यर्थ ॥ एवइच्छंति ॥ भमुनाप्रकारेण धाम्यन्ति धर्ममितिगम्य ॥ किमणपुणइत्यादि ॥ किं पुन य इमे श्रमणोपासका भर्व ति तनेच्छतीति गम्यम् इच्छत्येवेति विशिष्टतरदवगुरुप्रवचनसमाश्रितत्वा तया ॥ कम्मादाणापति ॥ कर्माणि ज्ञानावरणादीन्यादीयन्ते यै स्तानि

थोरेहि सतरेहिं पिलक्खूहि पउफूल्हसुणकदमूलयिवज्जगा अणिव्वलिएहि अणक्कनिभोहिं गोणेहिं तसपाण विप्पजिएहि वित्तेहि विति कप्पेमाणा विहरंति एएवि ताव एव इच्छंति कि मग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, तेसिणोकप्पंति इमाइ पञ्चरसकम्मादाणाइ सयकरेत्तएवा कारवेत्तएवा करतवा अन्न समणुजाणेत्तए

(भस्यूतमासिकैः) गोभि त्रसप्रायवर्जितै वित्तै वृत्ति कल्पमानाविहरंति । एतेपि तावदवमिच्छन्ति किं मङ्ग ! पुन ये इमे श्रमणोपासका भवं ति तेषा नो कल्पन्ते इमानि पञ्चदशकर्मादानानि स्वयं कर्तुं कारयितुं वा कुर्वत मन्य समनुज्ञातु तद्यथा—अङ्गारकर्म वनकर्म शकटकर्म भाटी

ज्ञाने चरित्तनो बलनाये भाइत्पयोवको । भव्याविउसमूहगा । माता पिताणो सुसूषामा करणहार । पवपवपालिका ॥ ते । पवकसना धावावको निवर्त्तावे ते कहेवे—उउवतरि बड़ेरि बारेरि सवरेरि पिलक्खूरि पतंग रहसप वसामूतविवम्मा । उद्म्बरथो बचनावसबको बारलोना फलवको थ वना पोपसभा पमणको सतरहपविश्लेपना पववको पिपीलसूतपनापन पवना पोपसगापत पीलासू रहसप पान्यमूभजातिना विवर्णीव टासपवार ज्ञावथ । परिवुंछिपरि पवमभिवेरि गावरि । पासो न करे हवन छेदैनवी भेद मावर्थीपि नवो हवभमनुवना वसलोए भरो । वउपावविवज्जिएहि वित्तरि विति पवप्पेमाथाविहरति एएवितावइच्छति । तथा वस प्राण विवर्ज्जित, वित्तेरि करिवे व्यापारेवरी हणि पाप्नो विवामते कल्पनावरतावथा विवरेहै ० मायासाना श्रावको करवो कहिये ए पवि तावत् विधिउवोपचारी विवस आपवा इच्छेषकारे बांछे धमप्रतें । किमगपयवेइमे समणोवास गाभवति । ए मैनइति आमवासनवे, वली पे एह समणोपासकुवे ते इच्छेनहो इतिमर्थ भने वांछे पवि विशिष्टतरदवगुरुप्रवचन समाश्रित पवाव

कर्मारामा न्यपया कर्मोविष ता म्यादामानिव कमरेतय इति विग्रहः ॥ इगालेत्यादि ॥ अङ्गारविषयं कर्माङ्गारकर्माङ्गाराको करणविक्रयस्वरूपमेव मग्निव्यापाररूप य दम्य दपीष्टकापाकादिक कर्म तदङ्गारकर्मोच्यते अङ्गारशब्दस्य तदन्योपलक्षणत्वात् ॥ वणकम्मेति ॥ वनविषय कर्म्म य मकर्म्म वनच्छेदनविक्रयरूप मेव बीजपेषणाद्यपि ॥ साडीकम्मेति ॥ शकटादीना घाटमपटनविक्रयादि ॥ भाडीकम्मत्ति ॥ भाटया भाटकेन कर्म्म ऽन्य दीयद्रव्याणां शकटादिभिः देशान्तरनयन गोयश्वादिसमर्पणवा भाटीकर्म्म ॥ फोडीकम्मेत्ति ॥ स्फोटि भूमेःस्फाटनं हलकुद्दालादिभिः सेव कर्म्म स्फोटीकर्म्म ॥ दन्तवाणिज्जेत्ति ॥ दन्ताना हस्ति विषाणाना मुपलक्षणत्वा दन्यषां चर्मचामरपूतिकशादीनां वाणिज्य क्रयविक्रयौ दन्तवाणिज्य ॥ स लक्खवाणिज्जेत्ति ॥ लाक्षाया आकरे ग्रहणतो विक्रय एतच्च त्रससंसक्तिनिमित्तत्वा न्यस्यापि तिलादे द्रव्यस्य य द्वाणिज्यं तस्योपलक्षण ॥ केसवाणि

त०—इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रसवाणि

कर्म स्फोटककर्म दन्तवाणिज्य लाक्षावाणिज्य केशवाणिज्य रसवाणिज्य विषवाणिज्य यन्त्रपीडनकर्म निर्लाञ्छनकर्म दवाग्निदापनिका सरद्रह

को। तेसिमाथपद। तइने न वन्ये। इमाइ पन्नरसकम्मादानाइ समनरेसहवा कारितएवा। एक वणमाण पमरे कमादानमेतु तवमतें पातैवरवा यथ षा करावणा। करतकापवमसमपकावेतएवा त । करता भमेरामते भद्रा मर्वांचे पतमे पन्नुमारैनतो ते कहेछे—१ गामथमे वणकमे साडोकमे मा डोकमे कोडोकमे। अङ्गारविषयकम अङ्गारनाकरव विक्रयस्वरूपे इम अग्निव्यापाररूप जे भनेरा पवि ८ ट पाकादिककम ते अङ्गारकम कहिये, २ वनविषयकर्म ते वनकम वनछेदन विक्रयरूप इम बीजपीषणादि पवि ३ शकटादिकवाहन घडावे वेचे इत्यादिक, ते साडीकम ४ भाडाकरी पारकाद्रव्य ने शकटादिकेकरी देशान्तरेलेईजावे वहन करे घरमनुष भाडेदेवा ते भाडीकम ५ भूमिनो फाडवो हल कुदालादिके करी तेफोडीकमतेफाडीकम ५। दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे। दन्त ते हाथी उपलक्षणथी एहनाथम चामर पूति केशादिकना जे वाणिज्य क्रय विक्रय ते दन्तवाणिज्य, ६ लाखना वेचवा एह त्रसप्रमुख निमित्तथी भनेरा पवि तिलादिद्रव्यनो वाणिज्य तेह उपलक्षणथी लेवा, ७ केशवन्तजीव गो

ज्जत्ति ॥ कस्य जीवानां गोमहिषीस्त्रीप्रभृतिकानां विक्रय ॥ रसवाणिज्जं ति ॥ मद्यादिरसविक्रय ॥ विसवाणिज्जे त्ति ॥ विषस्योपलक्षणत्वात् वाणिज्यस्यास्य नेमा वरीच ॥ जंतपीलणकम्मत्ति ॥ यन्त्रैस्तिलइक्ष्वादीनां यत्पीडनं तद्यन्त्रपीडनकर्म ॥ निल्लंछणकम्मत्ति ॥ निर्लाञ्छनमेव वा द्रुत करणं कर्म निलाञ्छनकर्म ॥ दवग्गिदावणयत्ति ॥ दवाग्नि दवस्य दापनं दानं प्रयोजकत्व मुपलक्षणत्वात् दानञ्च दवाग्निदापनं तद्य प्राकृत त्वात् " दयमिदाय वया ॥ सरदहतलायपरिसोसणयत्ति ॥ सरसः स्वयसम्भूतजलाशयविशेषस्य ह्रदस्य नद्यादिषु निम्नतरप्रदेशलक्षणस्य तडागस्य कृत्रि मजलाशयविशेषस्य परिशोषणं यत्त तथा तदेवप्राकृतत्वात् स्वार्थिकप्रत्यय " सरदहतलावपरिसोसणया ॥ असइपोसणयत्ति ॥ दास्या सतडाटीप्रभृता य मननक कुक्कुटमाजारादिक्षुद्रजीवपोषण मप्यसतीपोषण मिति ॥ एयंति ॥ इत्येवं प्रकारा एते निषन्यसस्का ॥ सुक्कति ॥ सुक्का धनिमद्गता

जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे निल्लंछणकम्मे दवग्गिदावणिया सरदहतलायपरिसोसणया असइपोसणया इच्चेए समणोवासगा सुक्का सुक्काभिजाइया भविया भवित्ता कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु

समागपरिज्ञायवता ऽसतीपोषवता इत्येतस्मश्रमणोपासका शुक्लाः शुक्लाभिजात्या भविका भूत्वा कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतयो

मदिरा सोमरस तेहना विक्रय ८ मद्यादिरसना विक्रय ९ विषना उपलक्षणथकी शस्त्रविक्रय पणि इत्यादि १ । जं पाड़वचय । सबकरी ने तिल प्रमु खना पीडवा ते यन्त्रपीडनकर्म ११ निल्लंछनकर्म दवग्गिदावणिया सरदहतलावसोसणया असइपोसणया । वृषभप्रमुखना वृषण छेदन करे ते निर्लाञ्छनकर्म १ दवनीवहि बलिमत्रजीवा १२ सर ते पालेअखुंवो जलाशयविशेष द्रह ते नद्यादिकनविषे नीचामपद सचय तेहने तलाव ते तलाव कृत्रिम जलाशय विशेष तेहने परिशोषण शिर्दो ते सरदह १३ दासीना पोषण ते भाडापहनामेकाणे तथा कुकड मांजारादिक क्षुद्रजीव पोषणकर्म १४ इतिदश । एवे ते समणोपासगा । इति एव प्रकार ए निषन्यसवधी श्रमणोपासक केहवा । सबा २ भिजाइया भविया भवित्ता कालमासे कालकिच्चा अन्नयरेसु दे वलोएसु देवता ए उपजनारा भवी । । गया छमस्थाभावथको तथिम ज पापथा ? मतानविषे गाढा इष्ट श्रमणो तथा कृतघ्न सदाचारना आरम्भक स

समतारिव फतमा मवारम्भिको त्रियानुयन्धाय ॥ सुकाभिमाद्यति ॥ शुक्लाभिजात्या शुक्लप्रधाना मनमार् देवतयो पपतारो भवन्तीत्युक्त मय स्थानव प्रश्न माह ॥ कइविहाण गित्यादि ॥ इत्यष्टमशते पञ्चमः ॥ ५ ॥ पञ्चम श्रमणोपासकाधिकार उक्त षष्ठे प्यसावेवो च्यत इत्यव मम्बद्धस्यास्ये दमूत्रं ॥ समणेत्यादि ॥ किंजमाइति किंफल भवती त्यथः ॥ एगंतसोत्ति ॥ एकान्तेन ॥ सेसि ॥ तस्य श्रमणोपासकस्य ॥

दयसाए उववज्जारो जयति। कइविहाण जते! देवलोगा प० ? गोयमा! चउव्विहा देवलोगा प०, त०— जयणवासी जाव वमाणिया देवा सेय जते जतेत्ति ॥ अठमसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ५ ॥ समणोवासगस्सण जते! तहारूव समणत्रा माहणत्रा फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइम साइमेणपडिला

पपतारा भवति। कतिविधा भदत! देवलोकाः प्रज्ञप्ता? गौतम! चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—भवनवासिनो यावद्वैमानिका देवा तदेव भदन्त प्रश्न ॥ इत्यष्टमशतस्य पञ्चम उद्देश ॥ ५ ॥ श्रमणोपासकस्य भदत! तथारूपं श्रमणं वा माहनं वा प्रासुकैषणीयेना शनपान

भाषार्थ ...तना ...तरीये पदार्थे रमो पलभत जाय सुधा प्रमाणमनिअवृत ने नामना ममवनेविषे नामकरीने पनेरा कार्पण देवताबनेविषे देवपणे उप जनहार हवे पमनारे भेदपणे नपजनहार हवे पहन् कर्ता ...वि देवमतिम भेदवो कहेछे—कइविहार्थमतेदेवमाभा प । केतलाभेदे हेभगवन्! देव कह्या ... उत्तर। गायमा चउव्विहा देवमामाय तं०। हेगौतम! चारभेदे देव तथा देवसायकथा ते कहेछे—भवनवासी जाव वेमाणिया। भवनप ती १ वाणव्यन्तर पद्यो वाणव्यन्तर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुमेकह्य ते मव सत्यछे अम्यवामछो। अट्ठमसयस्सपत मणाउद्देमा मम्मत्ता ८ ॥ ५ ॥ पूर्वे श्रमणोपासकना अधिकारकह्या छठे उद्देसे पणि तेहीज कहियेछे। समणोवासगस्सणंभंते तहा रूवं समणंवामाहणंवा फासुएसणिज्जेणं । श्रमणोपासक श्रावकनेविषे ए वाक्यालंकारे हेभगवन् तथारूप उपगमेकरी सहित श्रमणमते अथवा माहन एहवा ब्रह्मामते प्रासू अचित निर्जीव एषणीय बयालीस दूषणरहित एहवे। असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेमाणस्सकिंकज्जइ। असन अशादि

नचियमोति॥ नास्ति चैतत् मत्॥ स॥ तस्य पाप-कर्म क्रियते भवति अप्रासुकदाम इयेति॥ बहुतरियत्ति॥ पापकर्मापेक्षया॥ अप्पतराएत्ति॥ अल्प तर निर्जरापेक्षया ऽयमर्थो गुणवते पात्राया प्रासुकादिद्रव्यदाम चारित्रकायोपष्टम्भो जीवघातो व्यवहारत सचारित्रबाधाय भवति ततश्च चारित्रकायो पष्टम्भा निर्जराजीवघातादेव पाप-कर्म तत्र स्वहेतुसामर्थ्यात्पापापेक्षया बहुतरा निर्जरा निर्जरापेक्षया चाल्पतरं पाप भवति इह च विवक्षा म न्यत अससरणादिकारणत एवा प्रासुकादिदाने बहुतरानिर्जरा भवति भाऽकारणे यतउक्त—सपरखमिभसुद दोवद्दविणेयहतदिसयाबहिय॥ चाउर

जेमाणस्स किंकज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से निज्जराकज्जइ नत्थिय से पावेकम्मे कज्जइ । समणोवासग स्सण भंते ! तहारूवं समणवा माहणवा अफासुएण अणेसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभे माणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! बहुतरिया सेनिज्जरा कज्जइ अप्पतराए सेपावेकम्मे कज्जइ । सम

खादिमस्वादिमन प्रतिलाभयतः किं कृत भवति ? गौतम ! एकान्तेन तस्य निर्जरा कृता भवति नास्ति तस्य पाप कर्म कृत भवति। श्रमणोपा सकस्य भदन्त ! तथारूप श्रमण वा माहनं वा ऽप्रासुकेना ऽनेषणीयेना अशनपानखादिमस्वादिमन प्रतिलाभयतः किंकृत भवति? गौतम !

पाणी खादिम स्वादिम एचार आहारेकरी प्रतिलाभताने हेतायकाम प्र॰ फलहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगंतसोसेनिज्जराकज्जइ नत्थियसेपावेक म्मे कज्जइ समणोवासमणंभंते तहारूवसमणंवामाहणंवा। हेगौतम ! एकांति तेश्रमणोपासकने निर्जराकर्मना क्षयहेतु हुवे गडो पण के तेहने पापकम हुवे एतले साधने फासुकनिर्दोष तेहने कम निजराहुवे पने पापकम नहुवे अप्रासुकदानमनेकिवि जिम तेश्रमणोपरे किवे श्रीभगवन्त कहेछे—श्रमणोपासकने हेभगवन् ! तथारूप श्रमण माहनप्रते। अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण पाण खाव पडिलाभेमाणस्सकिंकज्जइ। अप्रासुक एतले सजीव सचित्त अनेष णीय दूषणसहित एहवे असन पान खादिम स्वादिमे करी प्रतिलाभताने किहरावतायकाने प्र॰ फलहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा बहुतराएसेनिज्जरा प अप्पतराएसेपावेकम्मेकज्जइ। हेगौतम ! पापकर्मनी अपेक्षायें घणो निर्जरा हुवे, निर्जरानी अपेक्षायें अल्पतर पापकर्म हुवे इहां ए भावार्थ गुणवन्तपात्रने

विठतेर्व तवेधाद्वियमसयरते ति॥१॥ ग्रन्वेस्याशु रफारवेपि गुणवस्यात्राया प्रासुकादिदाने परिणामवशा द्बहुतरानिर्जरा मयत्यल्पतरप पापकर्मेति निमित्तपकाथात् सूत्रस्य परिणामस्यब प्रमाणत्या दाह्व-परमरहस्यमिसीव समतगविपिक्रगकिरिमसाराव ॥ परिणामियपमाण निच्छयमवलम्बमा णाम ॥ १ ॥ यद्योप्यत सपरक्वमिग्रसुद्ध मित्यादिभा सुग्र दूयारपि दायग्रहीत्रा रक्षितायति तत् प्राइकस्य व्यवहारतः सयनाविराधना द्वायकस्यब सथ्यक्दृष्टान्तप्रायित्स्यम वा ददत गुनाम्प्यासुपतानिमित्तस्यात् शुभमप्रिभायु रस्यमहित सिवमया ग्रुनायुफतानिमित्त चाप्रासुकादिदानस्या स्यायु

णायासगस्सण ज्जत। तहाफ्व स्सजयग्गयिरयत्स्पडिहयपच्चखायपावकम्मे फासुएणवा स्रफासुएणवा एस

बहुतरतया तस्य निर्जरा कृता भवत्यल्पतरतया पाप कर्म कृत भवति । श्रमणोपासकस्य भदन्त । तथारूप मसयताविरतात्रसिद्धप्रत्या

नाज पग्रामकदानादि दोधी चारित्रमना उपरुम हवे अने आवघातपनाव ते व्यवहारयो चारित्रवाधाइवे तिवारपछी चारित्रकायापष्टम्भवकी निजराहवे अने जीव घातादिकवी पापकमहवे तिहां अपेतु सामथ्यवकी पापअपेचावें बहुतर निजराहवे अने निजरानी अपेचाय अल्पतर पापहवे, माधक पग्रामकमाने अल्पपाप निजरा घणी इमसूत्रे कह्यु इहां कारणे इमकहे असवरणादि कारणे इव अग्रामकदाने घणो निजराहवे पर कारणवि मानको यदुत—मवरवमिमसह दायकविशेषतर्दितमानहिये । भाजरटिकृतेव तपेरहिय असवरव ॥ १ ॥ वली कारणा इमकहे मकारणें पवि गुणवत पानकाले पाग नग्रासकादिक दोधी परिणामवशवकी घणी निजराहवे अतिचारा पापनमहव निविर्मेपपणावकी सूत्र अने परिणामना प्रमाणपणा थकी पाठव—पमरहस्समिसीव समतगविपक्वगकिरिविसाराव । परिणामियपमाण निच्छयमवलम्बमाणाण ॥१॥ ए कह्य सवरम्मिमसह, इत्यादिके पवर वेय दिवहार सवराहवे अतिनेजाणेहवे ते प्राहकम व्यवहारे सयमविराधनावकी अने दायकने शुभकहटान्त भावतपनेकरी पथवा अथत्पव पचेकरी देतो थकम अल्पप्राणधाला निमित्तपणावकी ते बांधे, गमधाउस्या पिण अल्प ते अशितजी वा ते शुभधाउणाभा निमित्तपणा अप्रासक ाने अल्पप्राउपाफल प्रतिपादकसूत्रनविषे पाछिलो अध्ययनेय वली इहां तहा ते केवली गम्यवे, हिवे बीजो सूत्रकहेवे—समणोवासगस्सणभंते तहारू

फलाफलप्रतिपादकसूत्र प्राक्प्रथित मथुन विम ताय त स्कयतिगस्यमिति सूतायसूत्रे घनअयपथिरयेत्यादिना घ ऽसुगया न्याग्रविद्वोपत्ता । च
फासुगणया अफासुएणव त्यादिमाम प्रासुकाऽप्रासुकाद दानस्य पापकर्मफलता निजराया अनावधो क्तो सयगोपष्टम्भस्यो मपत्रापि तुल्यत्वात् यच
मासुकादो जीवपातभावना प्रासुकादोष जीवघातसद्भावेन पिद्मय मात्र न विपक्षितः पापकर्मको निजराया अनायस्पैयव विपक्षितास्यादिति
सूत्रत्रयमापि पात्र मासायमेव यद्दानं तच्चिन्तित य स्तुन रनकम्पादान मौचित्यदानया स चिन्तित निजराया सत्रा मपेक्षणीयत्वा ददुक्त
म्मौचित्यपोरव मापनीयत्वादिति उक्तं च-मोक्षार्थमदाण तपइगसायिद्धीसमक्खाठ ॥ अणुकपादाणपुण जिणेहिनकयाविपडिसिद्धति ॥ १ ॥
दामाधिकारा देवमाह ॥ निग्गथपत्यादि ॥ इह पगङ पुनरय सस्यैव घटना निग्रन्थाप ममतादिविशेषणाय प्रासुकादिदाने गदपत रे

णिज्जगत्रा श्रणेसणिज्जेणवा श्रसणपाण जाय किं कज्जइ ? गोयमा ! एगतसो सेपाजे कम्मे कज्जइ नत्थि

ग्यातपापकर्माय प्रासुकतया ऽप्रासुकतया एषणीयतया ऽनेषणीयतया ऽशनपानखादिमस्वादिमेन प्रतिलाभयतः किं फलं भवति ? गो

वघमंग्रयपविरय पपडिहय पचक्खायपावकम्म फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असण पाण जावपडिलाभेमाणस्स । श्रमणोपासकने हेभ
गवन् । तथा रूप चारित्रवेशवाले रहित असयतो अविरतो अप्रतिहत पापकर्म जेणे हस्याडि गुणरहितपात्रने विशेषणवाला तेप्रते प्रासुक अथवा
अप्रासुक अथवा दूषणरहित अथवा अनेषणीय दूषणसहित एहवा अशन पान खादिम स्वादिम प्रकारेकरी यावत् प्रतिलाभतायका देतायका ते
श्रमणोपासकने सू फलहोवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगन्तसोसेपावेकम्मेकज्जइ । हे गौतम ! एकान्ते तेहने पापकर्मथावे । नत्थिसेकाविनिज्जराकज्जइ निश्चयेथकी नथी तेहने
कांइपणनिर्जरावडीथाय । अहीं तहने कांइ निजरानहि प्रतिगुण रहित पात्रने प्रासुक अप्रासुकादिक दान ते पापकर्मको पने निर्जराना अभावथकी
सामना चविचारयोग्य छेते—इहां ए प्रश्न वखाणे अर्थेकरी तेहनो पड ये घटनाकीधी निर्ग्रन्थ संयतादि विशेषणसहित तेपहेला जे प्रासुकादिकपात्र को
पोचवा प्रतिलाभतो एकान्तेकरी निजराज थाय निश्चय तथा प व्याख्यानकारे, अथवा पदपूरणार्थे सुहपतिवत एतल सुदसना घरप्रते विचरता जे

कामेन निर्जरा भवति निर्ग्रन्थः पुन गृहपतिकुलं गृहिगृहं ॥ पिण्डपातप्रतियाए पिण्डस्य पातो भोजनस्य पात्रे गृहस्थाभिपतन तत्र प्रति
या यानं बुद्धि पिण्डपातप्रतिज्ञा तया पिण्डस्य पातो मम पात्रे भवत्विति बुद्ध्येत्यर्थ ॥ अवगिमतेज्जत्ति ॥ शिष्यो ! गृहाधेद् पिण्डद्वय मित्यपि
दद्यादित्यर्थ सायम ॥ एगमित्यादि ॥ सेयत्ति ॥ सपुम निर्ग्रन्थः ॥ तति ॥ स्थविरपिण्ड ॥ थेरायसत्ति ॥ स्थविराः पुन तस्य निर्ग्रन्थस्य ॥ सि

से काइ निज्जरा कज्जइ । निग्गथंचण गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविठ केइदोहिं पिंडेहि उवनि
मतेज्जा एग आउसो अप्पणाभुंजाहि एग थेराण दलयाहि सेय तपडिगाहेज्जा थेराय से अणुगवेसियव्वा
सिया जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासेज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया नोचेवण अणुगवेसमाणे थेरे पासे

तम ! एकांतेन तस्य पापकर्म कृत भवति नास्ति तस्य काचिन्निर्जरा कृता भवति ॥ निग्गथंच गृहपतिकुलं पिंडपातप्रतिज्ञया ऽनुप्रविष्ट च
यि द्वाभ्यां पिंडाभ्या मुपनिमन्त्रयेत् एक मायुष्मन् । आत्मना (स्वयमित्यर्थः) भुक्ष्व एक स्थविराय देहि सच तं गृह्णीयात् स्थविराश्च तस्या
नुगवेषयितव्याः स्या यत्रैवा नुगवेषय न्स्थविर पश्येत् तत्रैवा नुप्रदातव्य स्या नोचैवा ऽनुगवेषय न्स्थविरं पश्ये तन्नात्मना भुंजीया न्ना

पात भाजन पात्रमविषे पडवाडवो पडवा तिहां प्रतिमा वदि ते पिण्डपातप्रतिज्ञा तिवारे पिण्डना पाडवा मोकरापात्रमेविषे वापा दसावृत्ति करो
रवाद । पनपवित्र बेदशाईपिसेहि अवनिमतेज्जा । पैठो वोइण्ड मदन्स ते साधु प्रते दोयपिण्डेवरी, पर्णासाधू ! ए दायपिण्ड पहिले सो ते टोयपि
षसाहि । एणयाउसा षप्पणाभंजाहि एमंवेरादरसमाहि । एवपिण्ड हे भाजवावन्त । पापपाते भामपते तथा एकपिण्ड पनेराद्रविर साधुने देज्यो ।
सेयतपडिगाहेज्जा थेरायसे अणगवेसियव्वासिया । सेवत्ति, तिवारे ते वसो जियन्नसाधु ते स्थविरपिण्ड प्रते पवोने स्थविर यसो ते साधने पनुमवे
यरा एतवे स्थविरगवेपका हवे । अजवापवमवेसमाचे थेरेपासेज्जा तत्थेवपणुप्पदातव्येसिया । के स्थानकगीविषे पनुमवेषणा करतवके स्पवकरतेवके
स्थविरयते देखे ते स्थानकनेविवेम ते पिण्ड ते स्थविरने पनुमदान करवो हुवे भापप हुवे दखवे । पोवेवच पनुगवेसमाचे थेरापासेज्जा । कदाचित्

र्यात ॥ स्तु प्रयच्छतीत्यर्थः ॥ दावएति ॥ दद्यात् स्थापयेद्वा अदत्तादानप्रसङ्गाद् गृहपतिनापि पिण्डो ऽसौ विवक्षितस्थविरेभ्यएव दत्तो नान्यस्मै इ ति ॥ एगतत्ति ॥ अनापातेऽसंलोके ॥ बहुफासुएत्ति ॥ अचित्तेत्ति ॥ अचित्ते भावेनतमात्रएव स्यात् अत आह ॥ बहुफासुएत्ति ॥ बहुधा प्रासुकं बहुप्रासुकं तत्र नव चाचिरकालकृते विस्तीर्णे दूरावगाढे त्रसप्राणबीजरहितेचेति संग्रहीतं द्रष्टव्यमिति ॥ सेयत्ति ॥ सच निग्र

ज्जा त नोअप्पणाभुंजेज्जा नोअण्णेसिंदावए एगंतमणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिले पडिलेहित्ता परि मज्जित्ता परिठवियव्वेसिया। निग्गंथंचणं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविठं केइतिहिं पिंडेहिं उ वनिमंतेज्जा एगं आउसो अप्पणाभुंजाहि दोथेराणं दलयाहि सेयते पडिगाहेज्जा थेराय अणुगवेसमाणे सिया तचेव जाव परिठवियव्वेसिया। एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा णवरं, एगं आउसो अप्पणा

न्थस्य दद्यात् (स्थापयेद्वा) एकान्ते ऽनापाते ऽचित्ते बहुप्रासुके स्थण्डिले प्रतिलिख्य (प्रमार्ज्य) प्रतिस्थापयितव्यं स्यात् ॥ निर्ग्रन्थस्य गृहपति कुलं पिण्डपातप्रतिज्ञया ऽनुप्रविष्टं कश्चित् त्रिभिः पिण्डैः उपनिमन्त्रयेत् एकमायुष्मन्! आत्मना भुंक्ष्व द्वौ स्थविराय दद्याः (दापयेः) सच तौ प्रतिगृह्णीयात् स्थविरौ च अनुगवेषयितव्यौ शेषं तदेव यावत् प्रतिस्थापयितव्यं स्यात् ॥ एवं यावद्दशभिः पिण्डैः उपनिमन्त्रयेत् अपरमेकमायुष्म

र्निर्ग्रन्थ गाथापतिकुलमें, आहारके वास्ते प्रवेश करते समय स्थविरके वास्ते देवेगा। तुमभी आपणाभोगवेजो वा अनेरा साधुने देइजो। ते पिण्डप्रते जो ते निर्ग्रन्थ पाय आ ने तथा पनेरा साधुने पणि न दीये अथवा न दिरावे अदत्तादान प्रसङ्गथकी एतले थापवों जेठा। ते स्थविर तेहनो निदेशो पाछो थानके न तथा ता निषेध करे ? ते कहेछे—एगतेअणावाएअचित्तेबहुफासुए थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिठवियव्वे सिया। जिहां कोई मनुष्यादिकनो आगमन वर्जित तथा अचेतन घणा प्रासुक तिहां स्थंडिले अवकाशरहित क्षेत्र विस्तीर्ण दूरावगाढ त्रसप्राण बी जरहित एवम्द अथवा आश्रितो एहवा ज स्थण्डिल बाह्यभूमि तेहनेविषे पडिलेहिने प्रमार्जीने ते पिण्ड परिठवयुं हुवे एतावता ते स्थानके सर्व ते पि

नुजाहि तव वराण न्याहि सयतचेन जाय परिठवियव्वेसिया। निग्गयचण गाहावइ कुल जाव केइ दोहि पडिग्गहहि उवनिमतज्जा एग आउसो भुपणा पडिभुजाहि एग थेराण दलयाहि सेयसपडिगाहेज्जा स

यामना नु स मत स्थविरस्या दद्याः शर्य तद्य याय स्मतिस्थापयितव्य स्यात्॥ निग्रन्थस्य गृहपतिकुल याव दनुप्रविष्ट कश्चि द्वाभ्या प्रतिग्रहा भ्या मयनिमत्र्य दृक मायसन् ! चा मना प्रतिभुक्ष्वे च स्थविराय दद्याः मध त प्रतिगृह्णीया तथैव याव आत्मना त प्रतिभुञ्जीया दात्मस्येव

स्स परिठवे तना अवेह —निमथयवयाकामकम्पिवरायपरिवाय। नियस्स वपुस व माक्कायकारे, गहस्समा घरनेविये पिण्डपातविये पता पचया अरिय। "अवयविइन तिविविवहिए उवनिमतज्जा पगपाउसा। पठा तिवारे भिक्खोएण घरस्से तोमे पिण्डेकरी उपनिमसवकरे पक्षामाधू। प तोनपि भ पहिय स्मा f मवयावरे प तामविवमाहे पवपिण्ड पता पाजमापत्र ! माधू तत्र। मध्यमाभुञ्जाहि दायेरायदमयाहि। पाप भोगवव्वो पाय स्थविरेने दृषा दिवे। ममतवठिमावेज्जा वेरायपक्वमदेम सेमतपेत्र आतपरिठुविमवेसिया। वमो ते नियस्समाध ते पिण्डपत्तोसे, से स्थविरमो ममु सेय मा ते यपकठ मे।मव मिम पुठिमापरे अवया यावत् पिण्ड परठवयाव्वे एतद्यामगे चचवो। पवंयावटसवि पिवेहि उवनिमतेज्जा। दस यावत् स्व स्थमाधू मत दमविण्डेवरो उवनिमतवाव्वरे पक्षोमाधू। पप दसपिण्ड मथा स्मावणे। पवरवगंघाउसा मध्यमाभुञ्जाहि नवथेराणं दसबाहि सेमतयत परिठुविरवेसिया। पतयाविमप ते दसपिण्डमाहि पवपिण्ड वे पाजमावत्र। तुस पाप भागवया, नवपिण्ड मव स्थविरामे देज्जा येयवावता सय विमव पुठिवोवरे अपणा भामम ते पिण्ड परठवे तामणे वचन ते परठवण् एवे वमो। निम्मर्थयममाहावर याव कोरथहि पडिग्गहेहि माउवनिमतो स्था पगपाउसा परज्ञायाभिभजाहि। निग्गममाधू गहपतिना घरनेविये पिण्डपात पुदिपैठा तिवारे भिक्खोएण घरस्से दायपक्षेकरी पक्षा साधू। प वाय पतव पतेंगठा स्मा निर्मतवाकर तेमानि एक पक्षा पात्रपावत्र तुस पाप आगवया यमे। पगतेरापदमयाहि। एक पक्षा बोजा स्थविरने देया तिवारे। सेरापउिघाषेया। ते पाधू ते पन्मापतें पडोने इत्यादि। तवेत्र आव तंना पायवायरिमुजेज्ञा नायमे सिंदावए सयतपेत्र। तिमणो

न्न म्ो स्थविरविकल्पे ॥ पडिमाडज्जति ॥ प्रतिगृह्णीयादिति निग्रन्थप्रस्तावाविद्यमान ॥ निमन्त्ययन्बमित्यादि ॥ इह यावत् पुनरथ तास्य घट नावेय-निगन्थ कायस्यिकपातप्रतिग्रया प्रविष्ट पिण्डादिनो पनिमन्त्रयत् तमथ निग्रन्थो पुन ॥ भक्तिवडायेत्ति ॥ करास्य करयस्य स्थान मा

हेय जाव न नोऽप्पणापरिभुंजेज्जा नो अण्णेसि दावए सेसतचेव जाव परिठवियव्वेसिया, एव जाव दसहि पडिग्गहेहि एव जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया एव गोच्छगरयहरणचोलपट्टगकम्बलट्ठीसंथारगवत्तव्वया भाणियव्वा जाव दसहि संथारएहि उवनिमंतेज्जा जाव परिठवियव्वे सिया। निग्गंथेणय गाहावइकुलं पिड

यात् शय सद्य याव स्मतिस्थापयितव्य स्या इत्यं याव द्वयपि प्रतिग्रहे शेष यथा पतिग्रहवक्तव्यता प्रविता एव गुच्छकरजोहरणचोलपट्टक कम्बलयष्टिसंस्तारकवक्तव्यता भवितव्या याव दशभिः संस्तारकै रुपनिमन्त्रय याव स्मतिस्थापयितव्य स्यात् ॥ निग्रन्थेनच गृहपतिकुलं पि

ज यावत् ते वोजा पढमा भामाव परिभायवेमणो बोआनें पवि म होये पदत्तावाम प्रसङ्गो मवसें वाग्रा जे साधू तेह भणोदेभा पविधनेराने न दे वा यावता मव तिमत्र जहवा तामगे । आयपरिठुविसवेसिवा । आमगे परिठवबा इजे । एवकावस्स पडिमवेटि । एम यावत् दश पडयेवरो उपमि मवण्णा वरे पब तुम्हे भागवण्णा मव धमेरा साधने देण्या इत्यादि यावत् पदवावे तामग वजवा । एवमपायडिमयवतव्ययाभणिया । एम विम पडि याता भामाराभो वजमता वओ पविवार विगेवें । एवगो॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰सबारमवतम्वामाभियव्वा । एम गुच्छो रवोहरम भाषा पनाटा पडिरव ना वस्त कांवमो लावटो हावदा मवारागा वस्त इत्याडिवगो पवि वतव्यता वजवी । आपटसवि संथारएहि उवनिमतेज्जा । यावत् कारे गहस्म निवन्नपतें दश संथारवैवरो उपनिमन्त्रणा वरे यथा साधू । ए दश संथारा सेजाव एव तुम्हे भागवण्णा नव धनेवासाधूने देज्यो इत्यादि। भायपरिठुविसवेसिया । यावत् परिठवबा इजे एतमानगे वजवा नियमना प्रस्तावमो कहेछे—इहां वपन एवनो घटना करेछे—निग्रंथपवमावावरम म पिडवाय पडियापवडिय । निग्रन्थमतें कारण मवसें पिण्डपात वृद्धि पैठाप्रतें । वयवरे भक्तिवराबे पडिसेयए तमाव एवमवह । पिडारिकरो उप

अथ कल्पस्थानं तद्विषयो ऽकल्पस्थानं मूलगुणादिप्रतिसेवारूपो ऽकार्यविशेषः ॥ तस्सखंति ॥ तस्य निग्रन्थस्य मुण्डातानुतापस्यै व जवति एवं प्रकार् मनो जवति ॥ एयस्सठाणस्सत्ति ॥ विजक्तिपरिणामा दतत्स्थान मनन्तरासेवित मालोचयामि स्थापनाचार्यनिवेदनेन प्रतिक्रमामि मिथ्यादुष्कृतदानेन निन्दामि आत्मसमक्ष स्वस्या कल्पस्थानसवा; कुत्सनम, गर्हे गुरुसमक्ष कुत्सनेन ॥ विउट्टामित्ति ॥ विश्रोटयामि तदनुबन्ध छिन नद्मि विशोधयामि प्रायश्चित्ताभ्युपगमम अकरणतया ऽकरणेन अभ्युत्तिष्ठ अभ्युत्थितो जवामीति ॥ अहारिहत्ति ॥ यथार्ह यथोचित मतव गीतार्थ

धायपडियाए पविट्ठेण अणायरे आकिञ्चठाणे पडिसेविए तस्सण एव जवइ इहेव तावअह एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि यिउट्टामि विसोहामि अकरणयाए अब्भुट्ठेमि अहारिहं पाय च्छित्त तवोकम्म पडिवज्जामि तओपच्छा थेराण अतिय आलोएस्सामि, जाय तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि

पिण्डपातप्रतिज्ञया प्रविष्टेना न्यतर् मकल्पस्थान सवित तस्यैव जवति इहैव ताव दह मतस्य स्थानस्या लोचयामि प्रतिक्रमामि निन्दामि ग र्हे विश्रोटयामि विशोधयामि अकरणतया भ्युत्तिष्ठामि यथार्ह प्रायश्चित्त तप कर्म प्रतिपद्ये तत पश्चा त्स्थविराणा मन्तिक मालोच यिष्यामि

निग्रन्थ गृहपति कुल जात पिण्डपात प्रतिज्ञा प्रविष्ट तिवारे एतो मन थयो आगमने कारण तेथना यान ते अकल्पस्थान वर्जिये नही ते अकल्पस्थान ते मूलगुणादि प्रतिषेधरूप पापविशेष ते प्रते आसवे तिवारे निग्रन्थने एहवे प्रकारे मन हुवे । इहेवताव अहएयस्सठाणस्स आलोएमिपडिक्कमामिनिंदामिगरिहामिविउट्टामिविसोहामि अकरणयाएअब्भुट्ठेमि । इहांज प्रथम ए पाप स्थानक अनन्तर सेव्यु ते पापरूप आलोच् मिथ्या दुष्कृत देईकरी पडिक्कमचा, निंदू आत्मा ए अकल्पस्थानने आत्मसाखे गुरुसाखे वार २ निंदू तेहना अनुबन्धछेदू प्राय श्चित्त लेई पापपंक धोऊं फेर पाप करीने अथवा एहा । अहारिहपायच्छित्ततवोकम्मपडिवज्जामि । यथायोग्य प्रायश्चित्त तपकर्मपणे पडिवज्जो ए व गीतार्थ पासेथी लेऊं अन्यथा न हुवे । तओपच्छा थेराणअतियआलोएस्सामि । तिवारपछी स्थविरनेसमीपे आलोयण लेउं । जावतवोकम्मपडिव

स्थविरा पुन रसुरा मिर्वाव स्यु यांतादिदोषा ततश्र
तायामेव प्रवति मान्यथा ॥ प्रतियति ॥ समीप गतइतिज्ञेय ॥ थेरायप्रमुहासियत्ति ॥ स्थविरा पुन रसुरा मिर्वाव स्यु यांतादिदोषा ततश्र तस्या लोचनादिपरिणामे सत्यपि मालोचनादि सम्पद्यत इत्यत प्रमयति ॥ सवसित्यादि ॥ आराहयत्ति ॥ मोक्षमार्गस्या राधकः शुद्धत्वर्थ प्रावस्य शुद्धत्वा द्भवति आलोचनापरिणतो सत्यां कथंचित्तदप्रासाव आराधकस्य मतश्च मरणमाश्रित्य–आलोयणापरिणओ सम्मसपठिठगुरु समासे ॥ अइमरइमतराविय तहाविसुद्धोत्तिआवाठत्ति ॥ १ ॥ स्थविरात्मत्रदन येन द्व अमुगसूत्रे द्वे कालगतसूत्रे इत्येव चत्वारि प्रसम्प्रासमूत्राणि

सेय सपठिए श्रसपत्ते थेराय पुद्यामेव श्रमुहा सिया सेण तन ! किं श्राराहए विराहए ? गोयमा ! श्रा राहए नोविराहए । सेय सपठिए श्रसपत्ते श्रप्पणाय पुद्यामेव श्रमुहेसिया सेण नंते ! किं श्राराहए वि

मात्र तपःकम प्रतिपद्ये । स च सम्प्रस्थितो सम्प्राप्त स्थविराय पूर्वमेवा मुका स्यु स्स भदन्त ! किं माराधकोविराधकः ? गौतम ! आरा धको नाविराधकः । स च सम्प्रस्थितो ऽसम्प्राप्त आत्मना पूर्वमवा मुकः स्या स्स भदन्त ! किमाराधको विराधक ? गौतम ! आराधको नो

स्विप्माभि । यावत् तपकमप्रतें पडिवजीस यावरसू । सेवसपठिए अ॰पत्तेथेरायअमहासिया । ते साधू प्रासारवा भवी पाचांपचि स्थविरने म पाम्यो स्थविर वपुन मपवचन रहितदुवे वातादिवमा दायवकी तिवारे तेहने आलोयणादि परिणाम छते पचि आलोयणादिक न सपचे एतलामाटे प्रश्न करेछे । सेवभतआराहए विराहए । ते साधू हेभगवन् ! आराधक अथवा विराधक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए नोविराहए । हेगौतम ! ते आ राधक मोक्षमार्गना आराधक इसवुं भावना शुद्धभावनो आलोयणा परिणामछतां कथंचितप्रकारे आलोयण अणपाम्यावको पचि आराधकपणो छे जिमकह्युं मरण आश्रयोने–आलोयणापरिणओ सम्मंसपठिआगुरुसमासे । अइमरणअतरेविय तहाविसद्धोत्तिआराहो ॥ १ ॥ पचि विराधकनथी मन गइपचावको तथा । सेवसपठिए असपत्ते अप्पणावपुव्वामेवअमुहेसिया । ते साधू आचारवा भवी स्थविरसमीपें आव पाम्याय थ॰ इस विचलो मार्गमांज्ञा स्थविरन अ पाम्या पहेलाज पहिलाज वातादिदोषथकी अवचन रहितदुवे एतले आलवा असमर्थहुवा । सेणंभतेआराहए विराहए ।

गण्य सपृता गच्छेत् गच्छेत् गत मैता म्हरी मिक्सपातार्थ गृहपतिकुले प्रविष्टस्य मर्व विचारजूम्भावा वष्टाव, ग्रामगगने ए वेत्र मेतानि पतु

राहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए। सेयसपडिए असपत्ते थेराय कालंकरेज्जा सेण भंते ! किं आरा हए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए । सेयसपडिए असपत्तेय अप्पणाय पुव्वामेव कालंकरेज्जा भंते । किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए । सेय सपडिए सपत्ते थेराय अमुहा

विराधकः । मथ सम्प्रस्थितो ऽसम्प्राप्त स्थविराश्च कालं कुर्यु स भदन्त । किमाराधको विराधकः ? गौतम । आराधको नोविराधकः । मथ सम्प्रस्थिता ऽसम्प्राप्त आत्मनाथ पूर्वमेव कालं कुर्यात् स भदन्त । किमाराधको विराधकः ? गौतम । आराधको नोविराधकः । मथ सम्प्रस्थितः सम्प्राप्तः स्थविराश्च मृताः स्यु स भदन्त । किमाराधको विराधकः ? गौतम ! आराधको नो विराधकः मथ सम्प्रस्थितः सम्प्राप्त

तद हेभगवन् म आराधक अथवा विराधक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए नोविराहए । हेगोतम ! आराधक कहिये पणि विराधकनथी भा वना आपणा । सेयसपडिए असपत्ते थेराय कालंकरेज्जा । जो ते साधु आचार्य अने स्थविरसमीपे आव आलोयण लेवा इम चिन्तवी मागवा आ स्थविरने न पाम्या पहेले ते आलोयणदायक स्थविर कालकरे । सेणंभंतेकिंआराहएविराहए । जो ते साधु हेभगवन् म आराधक अथवा विरा धक कहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए नोविराहए । हेगोतम जो ते साधु आराधकज हे पणि विराधक नथी कहिये भावना पूठिलीपरे कर वी । सेयसपडिए असपत्ते अप्पणायपुव्वामेवकालंकरेज्जा । जो ते साधु आलोयण लेवा इम चिन्तवी साधु आमतो आव्यो स्थविरने न पाम्यो एतले आ पणपे पहिलांज कालकरी मरण धर्म पामे । सेणंभंतेकिं आराहए विराहए । ते साधु हेभगवन् म आराधक कहिये अथवा विराधक कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए नोविराहए । हेगोतम आराधककहिये पणि विराधक न कहिये भावना पूठिलीपरे ए चार आलावा अणमासथकी थिवे ४ आलावा इमहीज स्थविरसमीपे साधु आवीयको कहेछे—सेय सपडिए सपत्ते थेराय अमुहासिया । जो ते साधु आव्या स्थविरप्रते पाम्या एतले स्थविर

सिया सेण जन! किं श्राराहए विराहए ? गोयमा ! श्राराहए नोविराहए । सेय संपठिए सपत्ते श्रप्पणाय एव सपत्तेणवि चत्तारि श्रालावगा जाणियव्वा, जहेव श्रसंपत्तेण निग्गंथेणय वहिया वियारभूमिवा विहार भूमिवा निक्खंतेण श्रन्नयरे श्रकिच्चठाणे पडिसेविए तस्सण एवं भवइ इहेव ताव श्रहं एव एत्थवि तेचेव श्रठ श्रालावगा जाणियव्वा जाव नोविराहए। निग्गंथेणय गामाणुगाम दूइज्जमाणेण श्रन्नयरे श्रकिच्चठाणे

आत्मनाच पूर्व मेवैव सम्प्राप्तेनापि चत्वार आलापका भणितव्या यथैवा सम्प्राप्तेन निग्रन्थेनच वहिस्ता विचारभूमिवा विहारभूमिवा निष्क्रान्तेना न्यतर मकृत्यस्थानं प्रतिसेवितं तस्यैव भवती इव ताव दह मेव मत्रापि त एवा ष्टा वालापका भणितव्या याव न्नोविराधकः । निग्रन्थेन

मुझे एवम थाव न सवे शिवे । सेभते विभाराधव विराधव। ते साधु स्यू आराधक कहिये अथवा विराधक कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए वा विराहए । हे गोतम आराधक कहिये पणि विराधकनथी भावना पूठिलोपरे कहवी भवना । सेअसंपठिए सपत्ते अप्पणाय एव सपत्तेवि चत्तारिआलावगा भाणिअव्वा । वली ते साधु चाल्या स्थविरपणें आव्या एतले पोतेज अथ थाव न सवे इत्यादि, इम सघाते स्थविरमुखयवन रहितथयो १ आपमुखवचन रहितथया २ स्थविर कालकरे ३ अथवा पोतेज कालकरे ४ इम चार आलापकथया, इम बेहुंमिली आठ आलापका हुवे । जहेवअस पत्तण निग्गंथेणवहिया वियारभूमिवा विहारभूमिवा निक्खतेणं अन्नयरे अकिच्चठाणे पडिसेविए । जिमतेज असंप्राप्तसघाते चार आलापा कह्या तिम निग्रंथ बाहिर विचारभूमिकहिये स्थंडिलभूमि विहारकहिये पासत्थावासभूमि ते प्रते नीकल्यापणाने अनेरा कारणक अकृत्यस्थानक मूलग अ भङ्गकारी अनाचारविशेष सेवे भोगवे । तस्सणएवंभवइ इहेवतावअहं एवं एत्थवितेचेव आलावगा भाणियव्वा । तेहने इमहुवे इहां पणि तिमहीज वि चार मूल्यादिकने असपात भेदेकरी आठआलापकथया इम विहारभूमिनेविषे पणि असंप्रासभेदेकरी आठआलापका इम सव २४ सूत्रकथया । जाव नोविराहए। तावत् विराधक नहो इहांवगे कहवा । निग्गंथेणय गामाणुगाम दूइज्जमाणेण अन्नयरे अकिच्चठाणेपडिसेविए तस्सण एवंभवइ । निग्रंथ

पडिसविए तस्स णं एय नयइ इहेव ताव एत्थवि तेचेव छुठ आलोवणा नाणियव्वा जाव नोविराहए । निग्गथीएय गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविठ्ठाए अण्णयरे अकिच्चठाणे पडिसेविए तीसेण एय नवइ इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि , तओपच्छा पवित्तणीए अंतिए आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि , साय सपठिया असंपत्ता पवित्तणीय अमुहा सिया साण

य ग्रामानुग्राम विहरता अन्यतर मकृत्यस्थान प्रतिसेवितं तस्यैव नवती हैव ताव दषा पिलेवेवाए वालपका भवितव्या याव ओविराधक: ॥ निग्र न्थ्याच गृहपतिकुल पिंडपातप्रतिज्ञयानुप्रविष्टया याव दन्यतर मकृत्यस्थान प्रतिसेवित तस्या एव नवती हैव ताव दह मेतस्य स्थानस्या लोचयामि याव तप कर्म प्रतिपद्ये तत पश्चात्प्रवर्तिन्या अन्तिके मालोचयिष्यामि याव त्प्रतिपत्स्ये सा च सम्प्रस्थिता ऽसम्प्राप्ता प्रवर्तिन्य यामुखास्स्यु सा च

एकगामथकी बीजगामजातां थका ते ग्राम मांपमें माया माटा ते ग्रामबहिये तिहा कोइएक अकृत्यस्थान मूलगुण भङ्गकारी अकार्यविशेष सेवे तडने इमकहे । इहेबताबदत्रविपयइपावाचमाआलिचणा । इहां पणि तेहीज लिबे पमजाण सगाम भेदेकरी पाठपालाना कडवा । यावत्अविराधक । या मत् ते साधू प्राराधकहिय पणि विराधक नहीं । निग्रन्थीनगाथापतिनाघरमविपनीअरपडिमाए प्रवेशपण्ठी । इम साधवीना पणि २४ सूत्रकहवा ते दे खाडेके–निगृन्थी पणि मातापतिकुलनेविषे पिण्ड पहबानेविषे पठी पछवी बुद्धि पैठो । अकिषट् सेपडिमेविए । अकृत्यस्थानक सेवे । तीसेणएवभवइ । तेहने इमकहे । इहेवताचपहण्यस्थानस्सपामोएमि । इहां पडिमांह्ज एहने आगलथे प्रत्यालम । यावतवाचम्प्रपडिवज्जामि । यावत् तपकम पडिवज्जं । तपावच्छापवित्तणीए अतिर्वं प्रामोएमामि । तिवारपछी मुख्यसाधवी तेहने समीपे प्रागाह सं । तावपडिवज्जिस्सामि । यावत् तप कम पडिवज्जम । मागमपहिया । इम विचलीते मायशामी असंपत्ता पवित्तणीए ग्रमहासिया । तिहां पहती नथी तिवार पहिलांज अल्पअबोधर साधवी वातादि हर्वेकरी मुखे बाम न सके । भावभतेकियाराधिया विराधिया । तिवारे ते साधवी हेममबत् । एवं प्राराधक कहिये पणा विराध

यिग्रतिमूगाबि मय मियन्यिकाया भपि बतुयिग्रसिमूत्राबीति यथा नालोचितएव कय माराधक इत्याशङ्का मुत्तरचाह ॥ सेकणमित्यादि ॥ त यमूपयात्ति ॥ मुषार्थ्या ॥ बिज्जमाबच्छिन्नति ॥ क्रियाकालनिष्ठाकालयो रजदन प्रतितत्र कायस्य निप्पत्त छिद्यमान छिन्न मित्युच्यत एव मसा

नते ! किं आराहिया विराहिया? गोयमा ! आराहिया णोविराहिया। साय सपठिया जहा णिग्गंथस्स तिण्णि गमा भणिया एव निग्गंथीएवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया नोविराहिया। सेकेणट्ठेण भंत ! एव वुच्चइ आराहए नोविराहए ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे एगमहं उण्णालोमवा गयलोमवा सणलोमवा कप्पासलोमवा तणसूयवा दुहावा तिहावा संखेज्जहावा छिंदित्ता अगणिकायंसि

भ०। किमाराधिका विराधिका गौ०। माराधिका नोविराधिका साच सम्प्रस्थिता यथा निग्रन्थस्य त्रयो गमा भणिता एव निग्रन्थ्या अपि त्रय आलापका भणितव्या याय दाराधिका नोविराधिका। अथ केनार्थेन भदन्त। एव मुच्यते आराधको नोविराधकः ? गौतम। स यथा नामक कश्चित्पुरुष एक मह दूर्णालोमवा गजलोमवा शणलोमवा कार्पासलोमवा तृणशूकवा द्विधावा त्रिधावा सङ्ख्येयधावा छित्वा ऽग्निकाये प्रक्षिपे

न कहिये। इतिमन्न उत्तर। भाखमा आराहिया नोविराहिया। हेगौतम। आराधक कहिय पणि विराधक न कहिये भावना पूछिवोपरे। साखसप हिवा। पछी ते पाछी इत्यादि। अजाविग्गमस्स तिन्निमामबिया। जिम निग्रन्थने तीन आलावा कह्या। एव नग्गबोणि तिन्निपामावमाभानियवा। इम निग्रन्थी ने पणि तीनपालावा कहवा इहाँ पणि पाठ बो २४ आलावा हुवे। जावआराहिया नोविराहिया। यावत् ते माधवी आराधक कहिये प णि विराधक न कहिये किये प्रथमालावो होज आराधक किमकुवे इम पामछायें कहे—सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ आराहए णो विराहए। ते किसे पर्वे हेभगवन्। इमकह्य ते आराधक पणि विराधकनही इतिमन्न उत्तर। गोयमा सेजहानामएकेइपुरिसे। हेगौतम। ते यथा दृष्टान्ते कारणक पवप यमतेव उष।मामवा मयमामवा सवमामवा कप्पासवामवा। एकमोटा ऊर्णामामयते अथवा गजलोममतें सणलोमयते अथवा कर्पासलोमयते। तथ

वासोचमापरिणती सत्या माराघनामवृत आराधकएवति ॥ प्रहयवति ॥ महत नव ॥ घोयंति ॥ प्रचालितं ॥ ततुग्मयति ॥ तम्बोद्भूतं सुरीवेमादे रुती

पक्खिवेज्जा सेणूण गोयमा ! छिज्जमाणे छिन्ने पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते दज्झमाणे दड्ढेत्ति वत्तव्वंसिया ? हंता जगव ! छिज्जमाणे छिन्ने जाव दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया, सेजहानामए केइपुरिसे वत्थं अहतं धोयंवा ततुग्गयंवा मंजिठ्ठदोणीए पक्खिवेज्जा सेणूण गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते रज्जमाणे रत्तेत्ति

रस नून गौतम ! छिद्यमान छिन्नं प्रक्षिप्यमाणं प्रक्षिप्तं दह्यमानं दग्ध मिति वक्तव्य स्यात् ? हंत भगवन् ! छिद्यमानं छिन्नं यावत् दग्ध मिति वक्तव्यं स्यात् । स यथानामकः कश्चित्पुरुषो वस्त्र महतवा धौतवा तन्त्रोद्गतवा माञ्जिष्ठद्रोण्या प्रक्षिपत् स नून गौतम । उत्क्षिप्यमाणं सुरिक्षत

मूलथा उखाया तिलाथा सवेलकाथा किडिग्ता । यथाप्रमतें वे प्रकारे तीन प्रकारे संख्यातप्रकारे छदीने । भगविकार्यंसपक्खिवेज्जा । भगमिकायनेविषे प्रचेपकरे यात्र । सेनूणमामा छिज्जमाण छिन्ने पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते दज्झमाणे दड्ढेत्तिवत्तव्वंसिया । ते निश्चे हेगोतम ! छेदमामांपृ ते छन् कहिये कि मा काम भने भिक्षावाने पश्चेंद्रो प्रतिवर्ते कार्यनिष्पत्तिको प्रथम करवामांपू ते प्रथम् कहिये बालवामांपू ते बाल्यू कहिये भावना पूठिसी परे कहवी एहवी पन्नवता हवे इतिप्रश्न उत्तर । हवाभगव । हां स्वामी ! छिज्जमाणेछिन्ने । छेदवामांथी ते छेद्या । जावदड्ढेत्तिवत्तव्वसिया । यावत् पमिकायनामांपू ते बाल्यू एहवा कहवाथवे । सेजहानामएकेइपुरिसेवत्थं । प्रथवा यथानाम इत्यादि कोइएक पुरुष वस्त्रप्रते । प्रहतवा धोतवा ततुग्ग तवा । तत्वाधानको उतरे नवो धावा तुरो वेमादिकवो उत्तोवमाण । मंजिट्ठदाणोए पक्खिवेज्जा । मजीठ रंगना वासणनेविषे घाले । सेणूण गोयमा उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते । ते निश्चे हेगोतम ! ते वस्त्र उपेक्षमामांथी ते उपेक्षा कहिये । पक्खिप्पमाणेपक्खित्ते । प्रचेपकरवामांथी ते प्रचेपकीधा कहिये । रज्ज माणेरत्तेत्तिवत्तव्वसिया । रंगवामांथी ते रंग्या इसी वक्तव्यता कहिये इसी भगवंत गोतमने पूछ्यु तिवारे गोतम कहे—हंताभगवंउक्खिप्पमाणेउक्खि त्त । हां भगवन्त ते वस्त्र उपेक्षवामांथी ते उपेक्षा कहिये । जाव रत्तेत्तिवत्तव्वसिया । यावत् रंगवामांथी ते वस्त्र रंग्या कहिये एतलावगे कहवा । से

चमाग्र ॥ मणिछदोवोधति ॥ माग्निप्रदागनाश्चने धाराघकय दीपय द्योप्यतहति दीपस्वरूप निरूपय नाह ॥ पदीवस्सेत्यादि ॥ ध्मायमाणस्य ति ॥ ध्मायतो ध्मायमानस्यवा ज्वलतइत्यथः ॥ पदीवेत्ति ॥ प्रदीपो दीपयष्ठ्यादिसमुदाय ॥ क्रियाइति ॥ ध्मायति ध्मायतेया ज्वलति ॥ ल हीति ॥ दीपयष्टिः ॥ वत्तीति ॥ दशा ॥ दीयचपएत्ति ॥ दीपस्थगनष ॥ जोइत्ति ॥ अग्निः ज्वलनप्रस्तावा दिवमाह ॥ अगारस्सणमित्यादि ॥

यत्तइसिया ? हता जगय ! ठरिकइमाणे उस्किते जाव रत्तेत्ति यत्तइसिया, सेतेणठेण गोयमा ! एवबुच्चइ घ्याराहए नोविराहए । पइवस्सण न्नत ! झियायमाणस्स कि पदीवेझियाइ लठीझियाइ वत्तीझियाइ तेल्ले झियाइ पदीवचपएझियाइ जोइझियाइ ? गो० ! नो पदीवेझियाइ जाव नोपदीवचपए झियाइ जोइझि

प्रक्षिप्यमाणं प्रक्षिप्त रज्यमान रक्त मिति वक्तव्य स्यात् ? हन्त भगवन् ! तक्षिप्यमाण मुक्षिप्त याव द्रक्तमिति वक्तव्य स्यात् तत्तमार्थेन गौतम ! एव मुच्यते धाराधको नोविराधकः । प्रदीपस्य भदन्त ! ध्मायमानस्य कि प्रदीपो ध्मायते यष्टि ध्मायते वर्ति ध्मायते तैल ध्मायत प्रदीपचम्पक ध्मायत ज्योति ध्मायते ? गौतम ! नोप्रदीपो ध्मायत याव नोप्रदीपचम्पक ध्मायते ज्योतिर्ध्मायते । अगारस्य भदन्त !

तेथड्डेथ गायमा एवमद धाराहय नाविराहय । तेतेवें पर्वे हेगोतम इमकह्य ते धाराधकवकिम पवि विराधक न कहिये भावना पूठिलोपरे कहवी । पदवणुबंभते झिवायमानप्र । धाराधकतेदोपमोपरे दीपे तेमाटे दीपसरूप निरूपन करताथको कहेळे—प्रदीपने हेभगवन् बळताने । किंपदवेंझि याइ । सं प्रदीप मध्यादिकनो समूह बळेछे । लठोझियाइ । अथवा दोवामोयिका बळेछे । वत्तीझियाइ तेलझियाइ । अथवा वाट बळेछे अथवा ते ल बळेछे । पदोवचपएझियाइ । अथवा दीवानो ढांकणा बळेछे । जातिझियाइ । अथवा अग्नि बळेछ इतिप्रश्न उत्तर । गायमा नोपदीवेझियाइ । हे गौतम नथी प्रदीप बळते । जावनापदीवचपएझियाइ । यावत् दोवानाढांकणा नथी बळे इत्यादि सघळेकथो । जाइझियाइ । ज्योति बळेछे । अगा रस्सणभंते झियायमाणस्सकिंपगारेझियाइ कुड्डाझियाइ । अगारने अगारकहिये कुटी घर ते हेभगवन् बळताथको स्यू छप्परघर बळछ भोति व

इच पागार कुटीगई ॥ कुल्लाति ॥ जितयः ॥ कडवति ॥ ग्रहिकाः ॥ पारवति ॥ यलहरयाधारभूते स्तूपे ॥ यलहरयति ॥ पारयपो रुपरिवर्ति तियगायतकाष्ठं मानइति य रमसिद्ध ॥ वसति ॥ यथा रिक्स्वराधारभूता ॥ मल्लति ॥ मल्ला कुड्यायद्रुमस्याकवा वलहरकामितानिवा थि स्वराधारभूतानि ऊर्ध्वायतानि काष्ठानि ॥ वग्गति ॥ वग्गा वल्लादिवल्पमभूता वटादित्वक ॥ क्तिरति ॥ किस्वराणि वंशादिमयानि च्छादनाधा रभूतानि किलिञ्चानि ॥ छायेति ॥ छादन दर्भादिमय पटलमिति इयच तेजसा अवममक्रियापरशरीराश्रयेति परशरीर मौदारिका द्याश्रित्य

याइ । ध्यगारस्सण भंते ! क्रियायमाणस्स कि ध्यगारे क्रियाइ कुल्लाक्रियाइ कडणाक्रियाइ धारणाक्रियाइ यलहरणे क्रियाइ वसाक्रियाइ मल्लाक्रियाइ वग्गाक्रियाइ ठित्तराक्रियाइ ठाणेक्रियाइ जोडक्रियाइ गोयमा ! नोध्यगारेक्रियाइ नोकुल्लाक्रियाइ जाव नोठाणाक्रियाइ जोडक्रियाइ । जीवेण भंते ! उरा

ध्मायमानस्य (ज्वलत) किं मगार ध्मायते कुड्य ध्मायते कट ध्मायते धारणा ध्मायते यलहरणं ध्मायते यशा ध्मायन्ते मल्ला ध्मायन्ते वस्त्राणि ध्मायन्ते किस्वराणि ध्मायन्ते छादनं ध्मायते ज्योतिर्ध्मायित ? गौतम ! नोध्मगार ध्मायते नोकुड्यध्मायते, यावज्जो छादन ध्मायते ज्योतिर्ध्मायित ॥ जीवो भदन्त ! औदारिकशरीरा एकक्रियः ? गौतम ! स्यात्त्रिक्रिय स्याच्चतुष्क्रियः स्यात्पञ्चक्रिय

सेके । कडवाभिमाइ धारवाभिमाइ । पाटो बबेके वमहरण भाधारभूत थूभो वमे । बमहरणाभिमाइ । वेलं थूनाने ऊपर भोलों सांबो मा बडा बसे मानबसे । वसाभिमाइ मल्लाभिमाइ बमाभिमाइ । किसर भाधारभूत ते बसे पुटो पबटभन बाथा ते पस मलनामो बगबधभूत त्वचा ते बसे । किलगाभिमाइ बाबेभिमाइ आतिभिमाइ । किलर बयादिमसकाठनाधारभूत ते किलिञ्च बसे काठन दर्भादिमय पटम छप्र इस्यम ते बसे पयनि बसे रतिपत्र उत्तर । गायमा वो पमारेभिजाइ मा पुडाभिमाइ । हेगौतम बाटो छप्पर घर बमेनबो भोत पनि बसेनबो । याव योवाणे भिमाइ । यावत् छादन पभादिमय पटल ते न बसे । जातिभिमाइ । ज्याति बहिन भग्नि ते बमे एच भग्निनो ज्वमनक्रिया परशरीराश्रयके तेमाटे

जीवस्य नारकादेश क्रिया भवन्तीत्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ ओरालियसरीराओत्ति ॥ औदारिकशरीरात् स्वकीय औदारिकशरीर माश्रित्य कतिक्रि या जीव इतिप्रश्नः उत्तरन्तु ॥ सियतिकिरियत्ति ॥ यदैको जीवो ऽन्यस्य पृथिव्यादेः सम्बन्धी दारिकशरीर माश्रित्य कायं व्यापारयति तदा त्रि क्रियः कायिक्या धिकरणिकी प्राद्वेषिकीनां भावा दतासाच परस्परेणा विनाभूतत्वा त्स्यात्त्रिक्रिय इत्युक्तं न पुनः स्यादेकक्रिय स्या द्विक्रिय इति अविनाभावश्च तासा मेवं अधिकृतक्रिया ह्यवीतरागस्यैव नतरस्य तथाविधकर्मबन्धहेतुत्वा दवीतरागकायस्य चाधिकरणत्वेन प्रद्वेषान्वि तत्वमेव कायक्रियासद्भावे इतरयो रवश्यंभाव, इतरभावेच कायिकीसद्भाव उक्तञ्च प्रज्ञापनाया मिहार्थे–जस्सणं जीवस्स काइया किरिया क ज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया नियमा कज्जइ जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ तस्सवि काइया किरिया नियमा कज्जइ इत्यादि तथा

लियसरीराउ कइ किरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पचकिरिए सिय अकिरिए।

परशरीर औदारिकादि आश्रयीने जीवने तथा नारकादिकने क्रिया केटली होय ते कहे छे—जीवेणमंते ओरालियसरीराओकइकिरिए गोयमा सिय तिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए। जीव हे भगवन् औदारिकशरीरथकी परकीयऔदारिकशरीरप्रते आश्रयीने केतलीक्रियालागे इतिप्रश्न उ त्तर हे गौतम ज्यारे एकजीव अन्य पृथिव्यादिकसम्बन्धी औदारिकशरीराश्रयीने कायव्यापारे, तिवारे तीन क्रियावन्त कहिये कायिकी १ अधिकरण की २ प्राद्वेषिकी ३ ए तीनभावथकी तेहने माहोमांहि अविनाभूतपणाथकी कदाचित् त्रिक्रिय हतायका पणि नहवे एकक्रिय द्विक्रिय इति अवि नाभाव पणि तेहमेज अधिकृतक्रिया अवीतरागनेजहुवे वीतरागने नहुवे तथाविध कर्मबन्ध हेतुपणाथकी अवीतरागकायने अधिकरण पणेकरी प्रद्वेषा न्वित पणेकरी कायक्रियाने सद्भाव बीजीक्रियाना अवश्यंभावथी अने बीजीक्रियानेभावे कायिकक्रियाना सद्भावथी प्रज्ञापनानेविषे पणि कह्युछे—जस्सणं जीवस्सकाइयाकिरियाकज्जइ तस्सअहिगरणियाकिरियानियमाकज्जइ जस्सअहिगरणियाकिरियाकज्जइ तस्सविकाइयाकिरियानियमाकज्जइ, इत्यादि तथा प्रद्वेषीतीनक्रियाने सद्भावे त्रागिली बेक्रिया भजनायेहुवे प०।३—जस्सणंजीवस्सकाइयाकिरियाकज्जइ, तस्सपारियावणियाकिरियासियकज्जइ, सि

ऽक्रियात्वमतावे उत्तरक्रियाद्वय भजनया नवति यदाह–जस्सणं जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ इत्यादि, ततश्च यदा कायव्यापारद्वारेण त्रिक्रियात्मयत्र वर्तते न तु परितापयति नचातिपातयति तदा त्रिक्रियएव्ये त्यतोपि स्या त्त्रिक्रिय इत्यत्र यदा तु परितापयति तदा चतुष्क्रिय आद्यक्रियात्रयस्य तथा वश्यस्त्रायात् यदात्वतिपातयति तदा पञ्चक्रिय आद्यक्रियाचतुष्कस्य तावश्यतावा दुक्तञ्च–जस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया नियमा कज्जइत्यादीति, अत एवाह ॥ सियचउकिरिए सियपंचकि रिएत्ति ॥ तथा ॥ सियअकिरिएत्ति ॥ वीतरागावस्था माश्रित्य तस्यांहि–वीतरागत्वा देव नसन्त्यधिकृतक्रिया इति ॥ नेरइयाण मित्यादि ॥ नारको यस्मा दौदारिकशरीरयन्त पृथिव्यादिक स्पृशति परितापयति विनाशयतिच तस्मा दौदारिकात् स्या त्त्रिक्रिय इत्यादि अक्रियत्वन्तु नतत्र त्वयो

नेरइएण भंते ! ओरालियसरीराओ कइ किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकि

स्यादक्रियः । नैरयिको भदन्त ! औदारिकशरीरा स्यात्त्रिक्रियः, स्यात्त्रिक्रियः स्याच्चतुष्क्रिय स्यात्पञ्चक्रिय । असुरकुमारो भ० । औदारि

यथाकजइ इत्यादि तिवारे जेहने कायव्यापारद्वारे करी पहिली तीनक्रिया वर्त्ते परितापे नही तथा अतिपातेनही तिवारे तीनक्रिया वाचवुं एतमाम टै कया सियतिकिरिए जिवारे परितापकरे तिवारे चारक्रिया हुवे पहिली तीनक्रियाना तिहां अवश्यभावथकी, जिवारे अतिपातकरे तिवा रे पञ्चक्रियाहवे पहिली चारक्रियामा अवश्यभावथी तेमाटे उक्तं च—जस्सपारियावणियाकिरियाकज्जइ, तस्सकाइयाकिरियानियमाकज्जइ, इत्यादि ए तमामाटेज कया सियचउकिरिए सियपंचकिरिएत्ति, तथा ,सियअकिरिएत्ति, कदाचित् अक्रियहुवे ते वीतराग अवस्थाएतें आश्रयीने ते वीतराग अ वस्थानेविषे वीतरागपणाथकी नहोवे ० क्रिया इति । नेरइयाणमित्यादिग्नियसरीराथा । नारकी हेभगवन् औदारिकशरीरथकी परजीवऔदारिक श रीरथाश्रयीने । कइकिरिए गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए । एतलोक्रियाहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम नारक जेभणी औदारिकशरीरवन्त पृ थिव्यादिकप्रते फरसे परितापे विनाशे, ते औदारिकशरीरथको तिवारे त्रिक्रिय इत्यादि जिवारे फरसे तिवारेत्रिक्रिय जिवारे परितापे तिवारे चउ

तरागयेन त्रि याका मयङ्यमाविस्या दिति ॥ प्रवचयति ॥ स्या त्यिक्रिय इत्यादि सर्वे ग्रसुरादिपदेषु वाच्य मित्यय ॥ मनुस्से जहा जीवेत्ति॥ जीवपद इत्र मनुष्यपदे ऽक्रियत्वमपि वाच्य मित्यथ जीवपद मनुष्यसिद्धापत्यैवा ऽक्रियत्वस्या ऽभीतस्या दिति ॥ उरालियसरीरेहिंतोत्ति ॥ औदारिकशरीरेभ्य इत्यत्र पृथ्व्यापत्रीय मपरो दण्डक एवमेतौ श्रीत्रस्ये कत्वेन द्वौदण्डका वेयम्य जीवपृत्थना परो द्वा वेव मौदारिकशरीरापत्तया

रिए। असुरकुमारेण भंते! उरालियसरीराउ कइकिरिए एवचेव जाव वेमाणिए णवर, मणुस्से जहा जीवे। जीवेणं भंते! उरालियसरीरेहितो कइकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए। नेरइएणं भंते! उरालियसरीरेहितो कइकिरिए? एव एसो जहा पढमो दण्डउ तहा इमोवि अपरिसेसो भाणियव्वो

कशरीरा त्कतिक्रियः? एव चेव याव द्वैमानिको नवर मनुष्यो यथा जीव। जीवो भदन्त! औदारिकशरीरभ्यः कतिक्रिय? गौतम! स्या त्त्रिक्रियो याव दक्रिय। नैरयिको भदन्त! औदारिकशरीरभ्यः कतिक्रिय? एव मप यथा प्रथमो दण्डक स्तथा यम प्यपरिशेषो भणितव्यो

किय त्रिवारे विभाग ,सियपंचकिरिए, पचक्रिय तथा पकिरिए ता ए नहुवे पयोतरागपवेंवरो क्रियामा पचम्यभावपणो तेमाटि कदा किवारे तणो किपानकाइवे किवारे चार क्रियावन्तइवे किवारे पचक्रियावन्तइवे। असुरकुमारेण भते ओरालियसरीराओ कइकिरिए एवचेव जाववेमाणिए णवरमण मेजहाजीवे। असुरकुमार हेभगवन्! औदारिकशरीरथको कतिक्रियइवे इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम इमजोज सियतिकिरिए, इत्यादि सव असुरादि पदने विषे कहवा एतमाविशेष मनुष्यनापदे कहवा जतसे अक्रिय पणिकहवा, जीवपदनेविषे ममय सिद्ध अपेक्षायेज अक्रियपणामाटे। जीवेणंभतेओरालिय सरीरेहिंतो कइकिरिए गोयमा सियतिकिरिए जाव अकिरिए। जीव हेभगवन्। औदारिकशरीरथको ए बहुवचने कहवो ए केतलोक्रियावन्त हुवे ए जीवादंडक इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम किवारे तीनक्रियावन्त इत्यादि यावत् कदाचित् अक्रियइवे एतमामगे कहवा। नेरइएणभते ओरालियसरीरेहिं तो कइकिरिए। नारको हेभगवन् औदारिक ए बहुवचन आयोकहवो ते केतलो क्रियावन्तहुवे। एवएसोजहापढमोदंडओ। इम एह जिम पहिलो द

जाव वेमाणिए, णवरं मणुस्से जहा जीवे। जीवाणं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया? गोयमा! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया। नेरइयाणं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया एवं एसोवि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, णवरं मणुस्सा जहा जीवा। जीवाणं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया? गोयमा! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि अकिरियावि। नेरइयाणं भंते!

यावद्वैमानिको नवरं मनुष्यो यथा जीवः। जीवा भदन्त! औदारिकशरीरात्कतिक्रियाः? गौतम! स्यात्त्रिक्रिया यावत्स्यादक्रियाः। नैरयिका भ०। औदारिकशरीरात्कतिक्रियाः? एवमयोपि यथा प्रथमो दण्डकस्तथा भणितव्यो यावद्वैमानिका नवरं मनुष्या यथा जीवाः। जीवा भ०। औदारिकशरीरेभ्यः कतिक्रियाः? गौतम! त्रिक्रिया अपि चतुष्क्रिया अपि पञ्चक्रिया अपि अक्रिया अपि। नैरयिका भ०। औदारिकशरीरेभ्यः

एव औदारिकशरीर एकवचनेकथा। तथास्माति अपरिमेषा जाव वेमानिक। तिम एक पणि औदारिकशरीर बहुवचने पणि समतो कहवा यावत् वैमानिकसमे कहवा। नवरमनुष्यजीवोवे। एतलाविशेष मनुष्यपद जीवपदनीपरे कहवा। जीवाभगवंत ओरालियसरीराओ कइकिरिया। इम जो घने एकवचने औदारिकशरीर एकलो तथा बहुलें वरदंडक कहवा, जिवे जीवने बहुलें औदारिकशरीरने एकलो दंडक कहेवे—घणांजीवने हेभगवन्! औ दारिकशरीरथकी केतलीक्रिया इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिया जाव सियअकिरिया। हेगौतम! त्रिणारे त्रिक्रिय यावत् त्रिणारे अक्रिय। नेरइ वाचभते औरालियसरीराओकइकिरिया। नारकी न बाबाआसवार, हेभगवन्! औदारिकशरीरथकी कतिक्रिय इति। एवएसोवि जहा पढमोदंडओ तहाभाणियव्वा। इम एहपणि जिम पहिला दंडकमा तिम जाणवा। जावेमाणिया। यावत् वैमानिकपर्यन्त कहवा। णवरं मणूसा जहा जीवा। एतलाविशेष मनुष्यपद जीवपदनी परे कहवा जीवन बहुलें तथा औदारिकशरीरने पणि बहुलें दंडक कहेंछे—जीवाणभंते ओरालियसरीरेहिंतो कइकि रिया। जीव घणां हेभगवन्! औदारिकशरीर बहुवचन थाको कतिक्रिय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिकिरियावि। हेगौतम! त्रिक्रिय पणिहुय। चउ

चत्वारो दण्डका इति ॥ जीवेनमित्यादि ॥ जीव परकीय वैक्रियशरीरमाश्रित्य कतिक्रियकश्चेत् स्या त्रिक्रिय इत्यादि' पञ्चक्रिय चेह नोच्यते

उरालियसरीरेहिंतो कइ किरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पञ्चकिरियावि एवं जाव वेमा णिया, णवरं मणुस्सा जहा जीवा। जीवेणं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गो० ! सियतिकिरिए सिय चउकिरिए सियअकिरिए । नेरइएणं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सिय

कतिक्रियाः ? गौतम ! त्रिक्रिया अपि चतुष्क्रिया अपि पञ्चक्रिया अ एवं यावद्वैमानिका नवरं मनुष्या यथा जीवाः । जीवो भ० ! वैक्रिय शरीरा त्कतिक्रियः ? गौ० ! स्यात्त्रिक्रियः स्यात् चतुष्क्रियः स्यादक्रियः । नैरयिको भ० ! वैक्रियशरीरा त्कतिक्रिय ? गौतम ! स्यात्त्रिक्रियः

किरियावि चउकिरियावि पञ्चकिरियावि । त्रणक्रिय पणि हुवे चारक्रिय पणि हुवे पञ्चक्रिय पणि हुवे भावमा पूठिलोपरे कहवो । नेरइयाणभंते ओरालिय शरीरकिआकइकिरिया । एतलामारको हेभगवन् ! औदारिकशरीर थको मनुष्यना आयुषोर्थे केतलोक्रियावंत होय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिकिरियावि । हेगौतम ! त्रिक्रिय पणि हुय । चउकिरियावि पंचकिरियावि । चउक्रिय पणि हुवे पञ्चक्रिय पणि हुवे । एवंजावत्वेमाणिया णवरं मणूसा जहाजीवा । इम यावत् वैमानिकपर्यन्त कहवा एतलाविशेष मनुष्यपद जीवपदनी परकहवा ए जोवने बहुले जीवा आश्रयवरती कहवा एतले औदारिकशरीरनी अपेक्षावे चार दण्डक हुवे, हिवे वैक्रियशरीरआश्रयी कहेछे—जीवेणंभंते वेउव्वियसरीराओकइकिरिए । जीव हेभगवन् ! परकीय वैक्रियशरीरआश्रयी केहवो केत लो क्रियावंत हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए । हेगौतम ! किवारे तीनक्रियावंत कदाचित् चारक्रियावंत हुवे इहां नियमथी अकिरिए, इहां न कहवा प्राणातिपातने वैक्रियशरीर थको करवा असमर्थपणाथी तेमाटे इहां अविरतिमात्रमा विवक्षितपणामाटे एतलामाटेज चउ थी पंचमकिरियानभणइत्ति । नारकी हेभगवन् ! वैक्रियशरीरथकी कतिक्रियावंत हुवे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए । हेगौतम ! किवारे त्रिक्रिय किवारे चउक्रिय । एवं जाववेमाणिए णवरं मणूसेजहाजीवे । इम यावत् वैमानिक लगे कहवा, एतलाविशेष मनुष्यपद जीवपदनी प

प्राणातिपातस्य वैक्रियशरीरेण कर्तुमशक्यत्वात् इविरतिमात्रस्य चैव विवक्षितत्वात् इत्यवसेयम् ॥ पञ्चमकिरिया न भण्णइत्ति एवं जहा वेउव्विय तहा आहारयपि तयगपि कम्मगपि भाणियव्वत्ति ॥ अनेना औदारिकादिशरीरत्रयं अप्याश्रित्य दण्डकचतुष्टयेन नैरयिकादिजीवानां त्रिक्रियस्य चतुष्क्रियस्य

चउकिरिए एवं जाव वेमाणिए, णवरं मणुस्से जहा जीवे, एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दण्डगा तहा भाणियव्वा, णवरं पञ्चमकिरिया न भण्णइ सेसं तंचेव एवं जहा वेउव्विय तहा आहारगपि तेयगपि कम्म गपि भाणियव्वं । एक्केक्के चत्तारि दण्डगा भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरि

स्या चतुष्क्रिय एव यावत् वैमानिको नवरं मनुष्यो यथा जीव एवं यथौदारिकशरीरेण चतुरो दण्डका भणिता तथा (वैक्रियशरीरस्यापि चतुरो दण्डका) भवितव्याः । नवरं पञ्चमी क्रिया न भण्यते शेषं तच्चैव यथा वैक्रियं तथा आहारकमपि तैजसमपि कार्मणमपि

रे कहवा । एवमाहारकादिशरीरैश्चत्वारि दण्डकाभणिया । इम जिम औदारिकशरीरसघाते चारदण्डक कह्या । तिहाँ वैउव्वियसरीरेणवि चत्तारिदंड गाभाणियव्वा नवरं पञ्चमकिरिया नभण्णइ । तिम वैक्रियशरीर सघाते पणि चारदण्डक कहवा जीव एकत्व वैक्रिय एकत्वें १ जीव एकत्व वैक्रिय बहुत्वें २ जीव बहुत्व वैक्रिय एकत्वें ३ जीव बहुत्व वैक्रिय बहुत्वें ४ इम चारदण्डक एतलाविशेष वैक्रियशरीर मार्या न मरे ते भणी पाँचक्रिया न । पञ्चमी क्रिया न भाखे ते न कहवी । सेसंतचेव । बाकी सर्व तिमज कहवो । एवंजहावेउव्वियतहाआहारमपि तेयगपि कम्मगपि भाणियव्व एक्केक्केचत्तारिदण्डगा भाणियव्वा । जाववेमाणियाणं । इम जिम वैक्रियकह्यो तिम आहारक पणि तैजस पणि कार्मण पणि जाणवा एतले आहारादिकशरीर तीनप्रत्ययी दण्डक चार चार करो नारकादिकजीवने त्रिक्रियपणुं चउक्रियपणुं पञ्चक्रियापणुं निवारवो, तेहने नारकाने अगम्यपणाथको ए तीनशरीरने विषे मरीने चार २ दण्डकजथा कहे कहवे नारको अथवा आहारकशरीर मनुष्यमांहे तो नारकीने ते सघाते तीनक्रिया चारक्रिया किमलागे तिहाँ उत्तर नारकीना पूर्वशरीरना जे हाडप्रमुख रह्या छे मनुष्यमां ते आहारकशरीर प्रते परितापे तेहनी अपेक्षायें तीन चारक्रिया लागे ते

चोक्त पञ्चक्रियस्त्वन निर्धारितं मारयितु मशक्यत्वा तस्येति अथ नारकस्या चोलोकयतित्वा दाहारकशरीरस्यच मनुष्यलोकवर्तित्वेन तत्क्रियाया मविषयत्वात् कथ माहारकशरीर माश्रित्य नारका स्यात्रिक्रियः स्या चतुष्क्रिय ? इत्यत्रो च्यते यावत्पूर्वशरीर मत्युत्सृष्ट जीवनिर्वर्तितपरिणाम मत्यजति तावत्पूर्वजायमप्रज्ञापनानयमतेन निवर्तकजीवस्यैवेति व्यपदिश्यत घृतघटन्यायेन त्यतो नारकपूर्वभवदेहो नारकस्यैव सदेशेनच मनुष्यलो कवर्तिना ऽस्थ्यादिरूपच यदाहारकशरीरं स्पृश्यते परिताप्यतेवा ; तदाहारकदेहा न्नारक स्त्रिक्रिय श्चतुष्क्रियोवा भवति कायिक्यादि इतर यो रवश्यंभावा त्पारितापनिक्याद्य प्राणातिपातक्रिययो र्वर्जनादिति एव मिहा न्यदपि विषयमवगन्तव्य यच्च तैजसकार्मणशरीरापेक्षया जीवानां परितापकत्वं तदौदारिका द्याश्रितत्वेन तयो रवसेय स्वरूपेण तयोः परितापयितु मशक्यत्वा दिति ॥ इत्यष्टमशते षष्ठः ॥ ६ ॥

षष्ठोद्देशके क्रियाव्यतिकर उक्त इति क्रियाप्रस्तावा त्सप्तमोद्देशके मद्दतक्रियानिमित्तको ऽन्ययूथिकविवादव्यतिकर उच्यते इत्येव संबद्धस्या स्येद मादि

या ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि सेव भंते२ त्ति ॥ अट्ठम सयस्स छठोउद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ६ ॥

भणितव्य मेकैकस्मिन् चत्वारो दण्डका भणितव्या याव द्वैमानिका प्र० । कार्मणशरीरेभ्यः कतिक्रियाः ? गौतम । त्रिक्रिया अपि चतुष्क्रिया अपि तदेवं भदन्त भदन्त ॥ इत्यष्टमशतस्य षष्ठोद्देश समाप्तः ॥ ८ ॥ ६ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समय राजगृहं नगरं

आश्री इम यावत् वैमानिक दण्डक कमे कहवा । कार्मणशरीरथकी कतिकिरिया । कार्मणशरीरथकी कइकिरिया हुवे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिकिरियावि चउकिरियावि । हे गौतम ! त्रिविध पणिहुवे चउविध पणिहुवे ते तेजस कार्मणशरीरनी अपेक्षायें आत्मा परितापकपणो कह्या त मेजे औदारिकशरीर आश्रितपणे करी जाणवा जीवा ते तेजकार्मणे करी परितापवा असमर्थपणाथको । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हेकह्या ते सत्यछे सत्यवाणछो । छट्ठमसयमाहे उद्देसा समत्ता । ए आठमा शतकनो छट्ठाउद्देसा अर्थथको पूरोथयो ॥ ६ ॥ पाछे क्रियाव्यतिकर कह्यो हवे अदत्तक्रियानो कारण अन्यतीर्थिकना विवाद विचार कहेछे – तदकालेण तेणसमएण । ते काळने विषे ते समयने विषे । रायगिहेनयरे वर्णवो ।

तेण कालेण तण समएण रायगिहे नयरे थगात्, गुणसिलए चेइए थणात्, जाय पुढवीसिलायट्टत्, तस्सण गुणसिल्यस्सण चेइयस्स छदूरसामते ग्रहवे ग्रसाउत्थिया परिवसति, तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे श्रादिगरे जाय समोसढे जाय परिसापडिगया, तेण कालेण तेण समएण समणस्स भग यत् महावीरस्स बहये श्रतेवासी थेरा भगवतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जहा निइयसए जाव जीवियासा

वगर: गुणशिलक चैत्य वणको याव पृथिवीशिलापट्टक तस्य गुणशिलकस्य चैत्यस्या दूरसामन्त बहवो न्ययूथिका परिवसन्ति त स्मिन्काल तस्मिन्समय श्रमणो भगवा महावीर श्रादिकरो याव समवसृतो याव परिषत् प्रतिगता तस्मिन्काल तस्मिन्समये श्रमणस्य भ गवतो महावीरस्य बहवो न्तवासिनः स्थविरा भगवन्तो जातिसम्पन्नाः कुलसम्पन्ना यथा द्वितीये शत याव जीविताशामरणभयविप्रमुक्ताः

राजगृह नगरमे थिषै बवन बहवा। गणसिलए चैरए बणणा। गुणशिलकनामे चैत्यप्रस्था वर्णन वाचवो। याव पृथ्वीसिलापट्टपा। यावत् पृथिवी शि लापट्टक तो लग बहवा। तस्सणगुणसिलकचैत्यस्स ग्रदूरसामते। तेह गुणशिलकनामा चैत्यने यथावतमे बेगला नही निकट नहो एतल्ने मध्यमे। बहव पन्यतीर्थिकापरिवसति। घणा ग्रन्यतीर्थिक वसवे। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। समणभगवमहावीरे आदिगरे साव समोसढे। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी ते केहवा पादिनाकरणहार यावत् समोसर्या। आवपरिसापडिगया। यावत् पर्षदापाछी वली साव मी पासे थी। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। समणस्सभगवग्रोमहावीरस्स। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना। बहवे अन्तेवासी स्थविरा। घणाशिष्य स्थविरभगवन्त ते केहवा। जातिसम्पन्ना कुलसम्पन्ना। जातिवन्त इत्यादि कुल पितापक्ष तेणे। जहाबितिणसए। जि म बीजा शतकनेविषे कह्या तिम कहवा। जाव जीवियामामरणभयविप्पमुक्का। यावत् जीवितव्यनी आशा मरणना भय से तेहथको विमुक्त रहितछे। समणस्सभगवग्रोमहावीरस्सग्रदूरसामते उड्ढंजाणू। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने वेगला नही ढूकडा नही जघाजानू ऊचाकिये ठोवण। ग्रहासि

मूर्ध ॥ गेवमित्यादि ॥ तत्र ॥ घम्माति ॥ धेमायो । तिविहंतिविहेणंति ॥ त्रिविधं करणादिकं योग माश्रित्य त्रिविधेन मनः प्रभृतिकरणेन ॥ भ

मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोठोवगया संज मेण तवसा अप्पाणं भावमाणा जाव विहरंति । तएणं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा गच्छंति उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुज्झेणं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजयअविरयअप्प डिहय जहा सत्तमसए बिइए उद्देसए जाव एगंतबालायावि भवह, तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य दूरसामन्ते मूर्धजानवो घोमुखरसा ध्यानकोष्ठोपगता संयमेन तपसा स्वाम भावयन्तो यावद् विहरन्ति । तदा त अन्ययूथिका यत्रैव स्थविरा भगवन्तः स्तत्रैवो पागच्छ न्त्युपागत्य तां स्थविरान् भगवत एव मवादिषु–यूयमार्याः । त्रिविधं त्रिविधेना स यताविरताप्रत्याख्यातपापकर्माणो यथा सप्तमशते द्वितीया इमको याव देकान्तबालायापि भवथ (तावद्वाच्यमितिशेष) तदा ते स्थविरा भग

र। मोथा मस्तकने घेहना। अधोमुखासनमण। ध्यानरूप कोठानेविषे पाम्या । संयमेवं तवसाअप्पाणभावेमाणा जाव विहरंति तएणंतेअण्णउत्थिया। पयमेंकरी तपेकरी आत्माने भावताथका यावत् विचरे तिवारे ते अन्ययूथिक परमती। अपेचवराभगवता। जिहां श्रीमहावीरस्वामीना स्थविर भगवन्त छे। तएणंतेथेराप्रति २ आ। तिहांआवे आवीने । तेथेरेभगवते एवंवयासी। ते स्थविर भगवन्तप्रत इम कहे। तुज्झेणंअज्जोतिविह। तुमे अहोआर्यो। त्रि प्र करण करावण अनुमतिरूप । तिविहेणंअसंजयाविरयपडिहय। योगप्रत्ययोने त्रिविध मन वचन कायायें करीने असंयतो अविरतो पच्च ख्या नथी पापकर्म जेणें । जहा सत्तमसएबितिएउद्देसए जाव एगंतबालायाविभवह। जिम सातमा शतकना बीजाउद्देशामेविषे यावत् एकान्त बाल अ मूढ थाओछो। तएणं ते थेराभगवंता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अन्यतीर्थि र एवंवयासी। ते अन्यतीर्थिकने इम कहे। केणकारणेणंअज्जो।

दिज्जमाणेऽदत्तमिति ॥ अन्नत्त सूत्रद्वये अमुमन्यय इत्यर्थः ॥ दिज्जमाणेऽप्रदिये इत्यादि ॥ दीयमानं भदन्त दीयमानस्य वर्तमानकालत्वात् हस्तस्थेत्यर्थः तो तत्कालवर्तितया दत्तमतीतत्वया दात्त्वस्य नियत्वा दीयमानं दत्तं न भवति दत्तमेव दत्त मिति व्यपदिश्यते एवं प्रतिगृह्यमाणादावपि तत्र दी

एय वयासी केण कारणेण अज्जो अम्हे तिविहं तिविहेण असंजयअविरय जाव एगंतबालायाविभवामो ? तएण ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एव वयासी—तुज्झेण अज्जो ! अदिन्नं गिण्हह अदिन्नं भुंजह अदिन्नं साइज्जह तएण ते तुज्झे अदिन्नं गेण्हमाणा अदिन्नं भुंजमाणा अदिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेण असंजयअविरय जाव एगंतबालायाविभवह । तएण ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एव वयासी

यत्न त्वा सम्यपूर्विका नव भवादिषु—कस्मात् कारणात् आर्याः ! वय त्रिविधं त्रिविधेना संयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तबाला आपि भवाम ? तदा ते अन्ययूथिका ता स्थविरान् भगवत एवं अवादिषु—यूयं आर्याः ! अदत्तं गृह्णीथ अदत्तं भुञ्जीथ अदत्तं स्वदध्वे तदा यूयं अदत्तं गृह्णन्तो ऽदत्तं भुञ्जन्तो ऽदत्तं स्वदन्त त्रिविधं त्रिविधेना संयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तबालाश्चापि भवथ । तदा ते स्थविरा भगवन्त ता म

[illegible] आर्यो । अमतिविध तिविधेन असंजयविरय । अने विविध त्रिविधेकरी असंयती अविरती । जावएकांतबालाअविभवामा । यावत् एकान्त बालक छाडई एम कह्या । तएवतेअन्नउत्थिया । तिवारे ते अन्यतीर्थिक । ते थेरभगवंते एववयासी । ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहै । तुज्झे तुमेणं अर्यो न दीधेलं [illegible] ग्रहो [illegible] । तुम्हे वे साधुओ तुमारे अहो आर्यो ! अदत्त गृही अदत्त भोगवो अदत्त आस्वादो तथा अदत्त [illegible] । तएण तुज्झे अदिन्नगेण्हमाणा अदिन्नभुंजमाणा । तिवारे तुम्हे अदत्त ग्रहतावका अदत्त भोगवता थका । अदिन्नसाइज्जमाणातिविह तिविहेण असंजयविरय । अदत्त आस्वादतावका [illegible] विविध त्रिविधेकरी असंयती अविरती । जावएगंतबालायाविभवह । यावत् एकान्त बालक मूर्ख थाओछो । तएणंतेथेरा भगवंता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अन्नउत्थिए एववयासी । ते अन्यतीर्थिक प्रते इम कहे । केणकारणेण

यमान दायकापेक्षया प्रतिगृह्यमाणं ग्राहकापेक्षया निसृज्यमानं क्षिप्यमाणं पात्रापेक्षयेति ॥ भवति ॥ भवसरे भयमभिप्रायो यदि दीयमान पा

केण कारणेण अज्जो ! अम्हे अदिण्णं गेण्हामो अदिण्णं भुंजामो अदिण्णं साइज्जामो ? तएणं अम्हे अदि
ण्णं गेण्हमाणा जाव अदिण्णं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबालायावि भवामो ? त
एणं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिण्णे पडिग्गाहिज्जमाणे
अपडिग्गहिए निसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थणं अंतरा

व्यपूथिका नय मयादिपः–कन कारणेना र्यो ! वय मदत्त गृह्णीमो ऽदत्त भुञ्ज्मो ऽदत्त स्वदामहे तदा वय मदत्तं गृह्णन्तो याव ददत्तं स्व
दन्त त्रिविधं त्रिविधेना मयतादिरत (असंयता) याव देकान्तबालारापि भवाम ? तदा ते ऽन्ययूथिका सा स्थविरान् भगवत एव मयादि
षु यूय मायाः ! दीयमान मदत्त प्रतिगृह्यमाण मप्रतिगृहीतं निसृज्यमान मनिसृष्ट यूय मार्याः ! दीयमान मदत्त प्रतिग्राहक मसम्प्राप्त मत्रा

पमा। किम कारने पश मार्यो ! पमे पदिमं गिवहामा पदिमसंखामा पदिमसादस्मामा। पमे पदत्त पवाद्दा पदत्त भागवाद्दा पदत्त पमसा
स्वाद्दा। तएपमे पदिमगिवहमाणा भावपदिमसादस्माणा। तिवारे पमे पदत्त ग्रहतापका यावत् पदत्त पास्वादता पका पयमा पनूमाद
ना पका। तिविध तिविधेप परमत्रय याव एगतबालायाविभवामा। पिविध पिविधेकरी पसयती यावत् एकान्त बालक मूस वापाद्दा। तएपते
पम्यउत्थिया त थेरभगवते एवबदामो। तिवारे ते पम्यतीथिक परमतो ते स्थविर भगवन्तपतें दम कहे। तुज्झेप पज्जादिज्जमापे पदिज्जे। तुम्हने पदत्त
यार्यो। देवामाया ते पदत्त कहिये त्यामाटे दीयमानने वर्तमानकाल पयायको दीधाने पतीतकाल मतिपपायको वर्तमान पने पतीतने पत्यन्त
भिन पर्यायको दवामांग त दीधु मदवे दीधु तेवीज दीधो कहिये दम। पडिमाहिज्जमाणे पपडिग्गहिए निसिरिज्जमाणे पणिसिट्ठे। प्रतिग्रहम न
ते जे मशामाय ते मोध न कहिये तिका दायमान ते दायकनो पपेक्षाये प्रतिपद्यमान ते पाहकनो पपेक्षाये पात्रमांहि घालवामांडं पणघात्यं न

म उपतिर म दूत जयति तदा तस्य दत्तम्य सत पात्रपतनलक्षणं गहणं फलं भवति यदातु त दीयमान मदत्त तदा पात्रपतनलक्षण ग्रहण मद

फेङ अयहरिज्जा गाहावइस्सण त जते । णोखलु त तुज्झे तएण तुज्झे अदिया गिएहह जाव अदिया साइज्जह तएण तुज्झे अदिया गिएहमाणा जाव एगतबाला यावि भवह । तएण ते थेरा भगवंतो त अणउत्थिए एव वयासी—णोखलु अज्जो अम्हे अदिया गिएहामो अदिया भुजामो अदिया साइज्जामो अम्हेण अज्जो ! दिया गिएहामो दिया भुजामो दिया साइज्जामो तएण अम्हे दिया गिएहमाणा दिया भुजमाणा दिया

मया काचि दपदर दुष्पते स त्र खलु त युष्माकं तदा यूय मदत्त गृह्णीथ याव दत्त स्वदध्व तदा यूय दत्त गृह्णतो याव देकान्तबाला यावि भवथ । तदा त स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका मेव मवादिषु—न खल्वार्याः । वय मदत्त गृह्णीमो ऽदत्त भुञ्जीमो ऽदत्त स्वदामहे वय मार्याः ! दत्त गृह्णीमो दत्त भुञ्जीमो दत्त स्वदामहे तदा वय दत्त गृह्णन्तो दत्त भुञ्जन्तो दत्त स्वदन्त स्त्रिविध त्रिविधेन सयतविरतप्रति

दिये यम्यक्ष्मा हम कहे । तुम्हे यम्यादिक्षमाय पडिग्गहग घसपत्त पतत मतरामेह पथयरेख्या गाहावइणथत गाथधुततुव्क । हमने पथाया र्थी । ते दश माथू ते थकत थदथाय हती ए थभिपाय ता वा थामे तकने थदस्ये थाकार सेवामाथी पथि पकथेपाथे थथू नवी हतोन थाथामका रे पथरातिथामे कोरव दथप थमता थनरा थपकरे भूके ता ते थाकार थदकनो परमको मिने ते थाकार तुम्हारो हभे कारवें तमे थदत्त थया ओ तिनिआरवे दोजता थन्तकडिये, ते तुमे थाथा एवभणो । तय तउमे पडिग्गहेकह आमयदिथसाइज्जह । तिवारे तुमे थदत्तथदाको थाथत पथमते थम्मादाता । तपर्ततुम्हेपम्पिमथकमाथा । तिवारे तमे थदस गृकतायथा । भावथगतथाथायायिभवह । यावत् एकान्त बालक सूध था पाथा । तएण त थेराभगवंता । तिवारे ते थविर भगवंत । ते थथउत्थिए एववयासी । ते थन्ययूथिक परमती प्रते हम थपे । णोखमथया । नथी मि पे पका पार्वो ! थम्हे पदिममिथहामो पडिभुंजामो पडिसाइज्जामो । थम्हे थदत्तपदार्थो थदत्त भोगवथा थदत्त थनुमोदावा । थम्हे थथवा । थ

गम्यति प्राप्तमिति, निग्रन्थोत्तरयापवेतु ॥ थम्हेणंगम्जी ॰ दिज्जमाणदिण्णे इत्यादि ॥ यदुक्तं तत्र क्रियाकालनिष्ठाकालयो रभेदा द्दीयमानत्वादे

साइज्जमाणा तिविहं तिविहेण संजयविरयपडिहय जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडियायावि भवामो । त एणं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंत एवं वयासी—केणकारणेण अज्जो ! तुज्झं दिज्ज गिण्हह जाव दिज्ज साइज्जह तएणं तुज्झे दिज्ज गिण्हमाणा जाव दिज्ज साइज्जमाणा एगंतपंडियायावि भवह ? तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एववयासी—अम्हेणं अज्जो ! दिज्जमाणे दिज्जे पडिग्गहेज्जमाणे पडिग्गहिए नि

इत (प्रभृति) यथा सप्तमे शते याव देकान्तपण्डिता श्चापि भवाम । तदा ते अन्ययूथिका स्तां स्थविरान् भगवत एव मवादिषुः—कम का रणमार्याः ! यूय दत्तं गृह्णीथ याव दृत्तं स्वदथ्य तदा यूय दत्त गृह्णन्तो याव देकान्तपण्डिता श्चापि भवथ ? तदानी त स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका मेव मवादिषु-वय मार्याः । दीयमान दत्तं प्रतिगृह्यमाणं प्रतिगृहीत निसृज्यमानं निसृष्ट वय मार्या । दीयमान प्रतिग

रहे यशा पार्यों ! दिज्जगिरहाता दिज्जभुञ्जाता । दीधा यहाछा दीधा भागवाछा । दिज्जमाइज्जाता । दीधा पनमाहाछा । तएणपरुहजिसगेपहता ना दिज्जभंत्रमाना दिज्जमाइज्जमाना । तिवारे भरुहे दीधा पहता यथा माधा भागवताथका दीधा भनभान्ता वथा । तिविहतिविहेण । त्रिविध त्रिविधकरी । सप्तम विरतपडिहत जहासत्तमसए जाव एगतपंडियायाविभवामा । सयतो विरता पचख्याछे पापकर्म जेने जिम सातम शतके कह्यु यावत् एकांत पण्डित थायाछा । तएणतअण्णउत्थिया । तिवारे ते अन्ययूथिक परमती । ते थेरे भगवंते एववयासी । ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहे । केणकारणेणअज्जा । किसे कारणे यशापार्यों ! तज्झदिज्जगिणह जावदिज्ज साइज्जह । तरहे दीधा यहाछा यावत् दीधा पनमाछाछा । तएणतज्झेदिज्ज गि ण्हमाणा । तिवारे तज्झे दीधा यहताथका । जावएगतपडियायाविभवह । यावत् एकांत पण्डित थायाछा । तएणतेथेराभगवंता । तिवारे ते स्थविर भ गवत । तेअणउत्थिए एववयासी । ते अन्ययूथक प्रते इम कहे ते निग्रन्थ उत्तर वाक्य कहेछे—अम्हणअज्जा दिज्जमाणदिण्णे । अम्हे यशापार्यों ! देवामां

मतादि समयमय मिति पय दीयमान मत्ता मित्यादे प्रयत्नतत्वा घूपमेवा संयतत्वादिगुणा दत्यावेदनाया स्पृष्टिका स्मति स्थविरा मा

निरिज्जमाण निमिठे श्रम्हेण श्रज्जो । ठिज्जमाण पञ्जिगहग श्रसपत्त एत्थण श्रुतरा केइ श्रवहरेज्जा श्रम्हेण त नोखलु गाहावइस्स तएण श्रम्हे दिस गिरहामो दिस भुजामो दिस साइज्जामो तएण श्रम्हे दिस गिरहमाणा जाय दिस माइज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय जाय एगतपण्डियायावि भवामो । तुज्झेण श्रज्जो । श्रप्पणाचेव तिविह तिविहेण श्रसजय जाय एगतबालायावि भवह , तएण ते श्रण

इवममम्यास मया मारा कवि रापकर दसाय त का यसु गुणपत ससतो यय दत्तं गह्नामा याय दत्त स्वदामहे ततो वय दत्त यसुन्तो याव दत्तं मारन्त त्रिविधं त्रिविधेन मयत (मन्नति) याव देकान्तपण्डिता यापि भवाम ॥ यूय माया। । यासमा पेव त्रिविधं त्रिविधना मयताविरत (प्रत्

या ते वाया स्या.दिव ज कम तिहो कियाकाम पने निहाकामना पभेवको दोयमामयमानि दोषापचा आचवा । पडिगाहेज्जमाणपडिग्गाहिए । पम इम बहशमांवा ते पचा कहिवे । भिमिरिज्जमाणेविमिट्टे । पावमाणे पपशमांया ते मण्यू कहिये । मम्यपयम्प्रातिज्जमाव पडिम्पहगपसपत्तं । यम न पशपायो । निामांवा पनि पड़वामतें वश्रामको पया । एवमपंतराकेद पपहरेज्जा । दशो पतमा विपासे कार्य पाराहिव पपहरेता ते भाकागं दिव । पडवमतं भागममाशपदप्प । पमारो पनि मशो मिययें ते भाकाराहिव गापापतिना । तपर्च पश्ये दिम्पनिपहामा दिपमजामा दिम्मारक्ता मा । तिपारे पमे दोषा कहोको वोषा मामवांछो दोषा पममाशांयो । तपपमपदिम्गिपहमाना । तिपारे पम दोषा पहतावका । आवदिपमारक्त मावा । पावत् वोषा भोपवतावका दोषा पममीशतायका । तिविशतिविधेमसंयय । विविध विविधेको संयतो । याव ध्यातपंडियाया विभवामा । याव त् पकाम पनिहत भावाहा । किवे देवामांशो ते पमूक श्याहिव तुमारो मतके तेमाटे तुमेदोव पमयतादि पूपव गुणवन्तका दशो कहवानिवाले पम्य गृहिव पर व्यदिर कोइ—तभ्भव पपवापेव तिविशतिविधें पमजय विरय जाव पगंतबालासाविभवह । तुमे पशंभावो ! पातेबोव निये वि

उत्थिया ते थेरे भगवंते एववयासी—केणकारणेण अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव एगंतबालयावि भवामो ? तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुज्झेणं अज्जो ! अदिन्नं गिण्हह ३, तए णं तुज्झे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबालयावि भवह । तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केणकारणेण अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गिण्हामो जाव एगंतबालयावि भवामो ? तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं

ति) यावद् एकान्तबाला अपि भवथ ततः ते अन्ययूथिका तान् स्थविरान् भगवत एवम् अवादिषुः—केन कारणेनार्याः ! वयं त्रिविधं त्रिविधेन यावद् एकान्तबाला अपि भवामः ? तदा ते स्थविरा भगवन्तः तानन्ययूथिकान् एवम् अवादिषुः—यूयम् आर्याः ! अदत्तं गृह्णीथ ३ । तदा यूयम् अदत्तं गृह्णन्तो यावद् एकान्तबाला अपि भवथ । ततः तेऽन्ययूथिकाः स्थविरान् भगवत एवम् अवादिषुः—केन कारणेन आर्याः ! वयम् अदत्तं गृह्णीमो यावत्

विध त्रिविधकरी असंयती अविरती यावत् एकान्त बालक भी हो। तब ते अन्यतीर्थिक स्थविर भगवन्त से एवं कहते भये। तिवार ते अन्य बर्म के ते स्थविर भगवन्त प्रते इम कहे। केणकारणेण आर्यो। किस कारण से अहो आर्यो ! अम्हे तिविधं तिविधेण जाव एगन्तबाला यावि भवामो। हम तीन विध तीन विध करी यावत् एकान्त बालक भी हैं। तब ते थेरा भगवन्त ते अण्णउत्थिए एववयासी। तिवारे ते स्थविर भगवन्त ते अन्यतीर्थी प्रते इम कहे। तुज्झे अज्जो अदिन्नं गेण्हह ३। तुमे अहो आर्यो। अदत्त ग्रहण अदत्तभोग और अदत्त अनुमोदन। तए णं तुज्झे। तिवारे तुमे। अदिन्नं गेण्हमाणा। अद त ग्रहतां थकां। जाव एगंतबालायावि भवह। यावत् एकान्त बालक भी हो। तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवन्ते एववयासी। तिवारे ते अन्ययूथिक ते स्थविर भगवन्त प्रते इम कहे। केणकारणेणं अज्जो। किस कारण से अहो आर्यो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो। हमे अदत्त ग्रहो। जाव एगंतबालायावि भवामो। यावत् एकान्त बालक भी हैं। तए णं ते थेरा भगवंतो। तिवारे ते स्थविर भगवन्त। ते अण्णउत्थिए एवंवयासी। ते अन्यतीर्थी प्रते इम कहे। तुम्भे अज्जो दिज्जमाणे अदिन्ने। तुमे आर्यो ! देवामांपा ते अन्नदीधा कहाँ। तर्पिणामगाणावदम्बर तथापुत तुम्भे। तिमवीज बावत् ते अथा

ययासी—तुज्झेण अज्जो ! दिज्जमाणे अदिण्णे तचेव जाव गाहावइस्सण त नोखलु त तुज्झे तएण तुज्झे अदिण्णं गिण्हह तंचेव जाव एगतबालायावि भवह। तएण ते अण्णउत्थिया थेरे भगवंत एवंवयासी—तुज्झेण अज्जो तिविहं तिविहेण अस्संजय जाव एगतबालायावि भवह । तएण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवंवयासी—केणकारणेण अम्हे तिविहं तिविहेण जाव एगतबालायावि भवामो ? तएण ते अण्णउत्थिया

एकान्तबाला चापि भवाम । तत स्त स्थविरा भगवन्त स्तान् अन्य यूथिका नेव मवादिषु यूय मार्याः । दीयमान मदत्त तदेव याव दृश्यते स्तान् ग्र गम् त य्यमाक तता यूय मन्ना गृह्णाय तदेव याव एकान्तबाला चापि भवथ । तदानीं से न्ययूथिका स्तान् स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—यूय मार्याः ! त्रिविध त्रिविधेना सयत (प्रभृति) याव एकान्तबाला चापि भवथ तत स्त स्थविरा भगवन्त स्तान् अन्ययूथिका मेव मवादिषुः—क्रम कारण नायाः ! वय त्रिविध त्रिविधेन याव एकान्तबाला चापि भवामः ? तदा त न्ययूथिका स्तान् स्थविरान् भगवत एव

तिवारे अन्ययूथिका स्थविरने वचन पतिमन्ती तिण वचादिक तम्हारा आमाट दियाकाशने दिधाकालभेद एतवाचको ते भेद भणी तेमाटे । तएणं तुम्हे अदिण्ण ग्रहो । तिवार तमे एकान्त बाल थया । तएणं तेमाट एमत बालवायाविभवह । तिमको अन्य वचन कहवा यावत् एकान्त बालक मूलचाचाला । तएण तेथविरा ते थर भगवते एवंवयासो । तिवारे ते अन्ययूथिक परमतो त स्थविर भगवन्तप्रते इम कहे । तुम्हे अस्यातिविध तिविधेण असंजत जाव एगत बालायाविभवह । तम्हे महापापी त्रिविध त्रिविधेकरी असंयत यावत् एकांत बालक मूढ थाया । तएणतेथेरा भगवंता । तिवारे ते स्थविरभगवंत । ते अन्यतीर्थिकने एवंवयासी । ते अन्यतीर्थिप्रते इमकहे । केणकारणेणअम्हा । किसकारणे महापापी । अम्हेतिविह तिविहेण । अमे त्रिविधत्रिविधेकरी । असंजतबालाबालाविभवामो । यावत् एकान्त बालक मूढथावाला । तएणतेअण्णउत्थिया थेरे भगवते एवंवयासी । तिवारे ते अन्ययूथिक स्थविर भगवंत प्रते इमकहे । तुम्हेणमज्जोरीयरीयमाणापुढविपिच्चेह अभिहणह । तुम महापापी । रीति कहिये गमन तेप्रते करताथका एतले मार्गे चालताथका प

डु-तुम्हेण मज्जो ! अथवा चव त्यादि ॥ रीयरीयमाणत्ति ॥ रीस समम रीयमाणा गच्छता गमन कुर्वाणा इत्यर्थ ॥ पुढविपच्चेइत्ति ॥ पृथिवी पाक्रामयत्यर्थ ॥ अभिहणइत्ति ॥ पादाभ्यां माभिमुख्येन हन्य ॥ वत्तइत्ति ॥ पादाभिघातेनैव वर्त्तयन्ति श्लक्ष्णता नयथ ॥ लेसेइत्ति ॥ श्लेषयथ भू म्यां मिश्रान् कुरुथ ॥ संघाएइत्ति ॥ संघातयथ संहतान् कुरुथ ॥ संघट्टेइत्ति ॥ संघट्टयथ स्पृशथ ॥ परितावइत्ति ॥ परितापयथ समन्तात् संताप कुरुथ ॥ किलामइत्ति ॥ क्लमयथ मारणान्तिकसमुद्घातं गमयथेत्यर्थः ॥ उवद्दवइत्ति ॥ उपद्रवयथ मारयथेत्यर्थ ॥ कायइत्ति ॥ काय

ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुज्झेणं अज्जो ! रीयरीयमाणा पुढवीं पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उवद्दवेह । तएणं तुज्झे पुढवीं पेच्चमाणा अभिहणमाणा जाव उवद्दवेमाणा ति विहं तिविहेणं असंजय अविरय जाव एगंतबालायावि भवह । तएणं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए

एवं वदिसु यूयं मायां ! रीत रीयन्तः पृथ्वी आक्रमथ हथ वर्त्तयथ श्लेषयथ संघातयथ संघट्टयथ परितापयथ क्लामयथो पद्रवयथ, ततो यूयं पृथ्वी आक्रमन्ता अभिघ्नन्तो याव उपद्रवयन्त त्रिविधं त्रिविधेना असंयताविरत (प्रवृत्ति) याव एकान्तबाला यावि भवथ । तत स्थे स्थवि

तमे पृथिवीमते पाक्रमाहा पगाकरो इत्याहा । मसेह हणेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवह । पगाकरो पहोंचा भूमिसेती सगाथीया एवम वाधावा परसावा परितापावा मारणान्तिकसमुद्घात कराहा माराहा । तएणंतमेपउविपिवमाणा अभिहणमाणा जावउवद्दवेमाणा । तिवारे तमे ए वपी पते पाक्रमतावका पगाकरो हणतायका यावत् मारतावका । तिविहतिविहेणअसंजय अविरय जाव एगतबालायाविभवह । त्रिविध त्रिविधेकरी अमयतो अविरतो यावत् एकान्त बालक मूर्ख आपहा । तएण ते थेरा भगवंता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अन्यउत्थिया एवंवयासी । ते अन्यतीर्थिकप्रतें इम कहे । आपणपणाअपणें रीय रीयमाणा पुढवीपिचमा अभिहणामो जाव उवद्दवेमा । नथी तिमे अम्हाचारी ! अमे मार्गे गमन करतावका पृथिवीमतें पाक्रमाहा पगाकरो हणाहा नथी यावत् माराहा नथी । अम्हेंअन्यना रोय रीयमाणा कायवा आसंवा रीयंवा पडुच देसदेसे

गरीरं मतीत्यो पारादिकायकाय मित्यथ ॥ योगंवत्ति ॥ योगं स्नानवैयावृत्यादिव्यापारं प्रतीत्य ॥ रियंवापकुव्वत्ति ॥ अर्त सत्य प्रतीत्या प्काया दिजीयमरणमलवं वयम मामित्येत्यथः ॥ देसं देसवं वयामोत्ति ॥ प्रभूतायाः पृथिव्या ये विवक्षितादेशा स्तै व्रजामो नायिशायेके यासमितिपरा यतत्यम मपतनदशापरिहारतो ऽप्यतमदशी व्रजाम इत्यथ ॥ एय पदस पदेसेण वयामो ॥ इत्यपि नवरं दशो भूमे मवत् उवह, मदणसु लघु

एवंवयासी नोखलु अज्जो ! अम्हे रियंरियमाणा पुढवीं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो अम्हेण अज्जो ! रीयरीयमाणा कायवा जोगवा रियंवा पडुच्च देसदेसेण वयामो पदेस पदेसेण वयामो तेण अम्हे देस देसेण वयमाणा पदेस पदेसेण वयमाणा नो पुढवीं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो तएण अम्हे

रा ममयना सा मम्ययूथिका नेय मवादिपु—नयसु वर्य रीयं रीयन्तः पृथ्वी माक्रमामो याव दुपद्रवामा वय मार्गाः । रीतं रीयन्तः कायंवा योगवा प्रतवा प्रतीत्य देशं देशेन व्रजामः प्रदेशं मदशेन व्रजाम सेम वयं दशं देशेम व्रजन्ता प्रदेश प्रदशम व्रजन्तो ना पृथ्वी माक्रमामो निहमो याव दुपम्वाम ततो वप मायाः । पृथ्वी ममाक्रमन्तो ऽनभिहन्यन्तो याव दनुपद्रवन्त त्रिविधं त्रिविधेन याव देकान्तपण्डिता

न वयामा पदेमपदेमव वयामा । यमे व वाव्यार्मकारे, भद्दोपायी ! मार्गं गमनवरतावका वासवत्ति वाम वहिये मरोर एतावता उच्चारादिक वा पवात्रो तवा, जायंवत्ति जोग वहिये स्नान वेयावृत्यादि व्यापार मात्रै तवा रिय वहिये सत मलवतें ते यं ? भप्याबादि जोव राखिना कपम मसपात्रो स्यर्ष पनो भूमिकामा जे विवक्षित देमवे तिहां वयासा वहिये पामांहो इर्यासमित तत्परवका सचेतनदेश परिहरी यचेतन देशे वावांहो स्ववहस प वनि दमज वहनो एतावाविशेष देयसे भूमिका माहजवह प्रदेश ते भूमिका माकासवह इति । तएर्ष पम्हेदेसदेसेणवयमाणापल्न पएसेव वयमाणा । तिवारे यमे देमपतें देमेंवारी तवा प्रदेशंवरी जातावका । नोपेचेमा पभिहणामा याव उदवेमा । नहो पृथिवीमतें भतिक्रमांहा पगोकरी न भाहत् मारांमवो । तएण यम्हपुढवींपपेचेमाणा । तिवारे यमे पृथिवी भन भाक्रमता यवा । पणभिहणमाणा जावमनुद्दवेमाणा । नहो पमोकरी इच

पुढवीं अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडियायावि भवामो। तुज्झेणं अज्जो ! अप्पणाचेव तिविहं तिविहेणं असंजय जाव बालायावि भवह। तएणं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंत एवंवयासी—केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं एगंतबालायावि भवामो ? तएणं तथेरा भगवंतो अन्नउत्थिए एवंवयासी—तुज्झेणं अज्जो ! रीयंरीयमाणा पुढवीं पेच्चेह जाव

बालापि भवामः। यूयं आर्याः ! आत्मना चैव त्रिविधं त्रिविधेन असंयताविरत (प्रभृति) यावद् एकान्तबाला अपि भवथ। ततः ते अन्ययूथिकाः स्थविरान् भगवतः एवं अवादिषुः—केन कारणेन आर्याः ! वयं त्रिविधं त्रिविधेन यावद् एकान्तबाला अपि भवामः ? ततः ते स्थविरा भगवन्तः तान् अन्ययूथिकान् एवं अवादिषुः—यूयं आर्याः ! रीतं रीयमाणाः पृथ्वीं आक्रमथ यावद् उपद्रवयथ ततो यूयं पृथ्वीं आक्रमन्तो यावद् उपद्रवन्त

थकां तायका यावत् नही मारतायका। तिविहंतिविहेणं जाव एगंतपंडियायाविभवामो। त्रिविध त्रिविधेकरी यावत् एकान्त पंडित अमे थायाछां त्रि व कारणथी अमारो परे एवाने मनन नथी एवा अभिप्राय थकी ते स्थविर ते अन्ययूथिकमते कहेछे—तुज्झेणंअज्जोअप्पणाचेवतिविहंतिविहेणं असंजय जाव एगंतबालायाविभवह। तुमे अहो आर्यो ! पोतेंज त्रिविध त्रिविधकरी असंयती यावत् एकांत बालक मूर्ख थावाछो। तएणं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवंवयासी। तिवारे ते अन्ययूथिक परमतो स्थविर भगवंतप्रते इम कहेछे—केणकारणेणंअज्जो। किसे कारणे अहो आर्यो ! अम्हेतिविहंतिविहेणं जावएगंतबालायाविभवामो। अमे त्रिविध त्रिविधेकरी यावत् एकांत बालक मूर्ख थायाछां। तएणं ते थेरा भगवंता ते अन्नउत्थिए एवंवयासी। तिवारे ते स्थविर भगवंत ते अन्ययूथिक मते इमकहे। तुज्झेणंअज्जो रीयं रीयमाणा पुढवींपेच्चेह जाव उद्दवेह। तमे अहो आर्यो ! मार्गे गमन करतायका जातायका इरिया पथिकीमते पृथ्वीने चांपाछो यावत् मारोछो उपद्रवो करो। तएणं तुज्झपुढवींपेच्चेमाणा। तिवारे तुमे पृथ्वीने आक्रमतायका। चांपता थकां। यावत् मारतायका। तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबालायाविभवह। त्रिविध त्रिविधेकरी यावत् एकांत बालक मूर्ख थायाछो। तएणं ते अन्न

तर मिति यथी च गुवयोगे नास्माक मिवेषां गमन मसी त्वजिमायत स्थविरा यूयमेव पृथिव्याक्रमवादितो ऽसयतत्वादिगुणा इति प्रतिपा

उग्रहुग्रह तएण तुज्के पुढवीं पेच्चेमाणा जाव उग्रहवेमाणा तिविह तिविहेण जाव एगतबालायावि नवह। तएण त श्रणउत्थिया थेरे नगवंत एववयासी—तुज्केण श्रज्जो। गममाणे श्रगए वीइक्कमिज्जमाणे श्रवी इक्कते रायगिह नगर सपाविउकामे श्रसपत्ते तएण ते थेरा नगयतो ते श्रणउत्थिए एव वयासी—नोखलु श्रज्जो। श्रम्हे गममाणे श्रगए विइक्कमिज्जमाणे श्रवीइक्कते रायगिह नगर जाव श्रसपत्ते। श्रम्हेण श्रज्जो।

त्रिविधं त्रिविधेन यावत् एकान्तबाला यापि भवथ तदा ते न्ययूथिका स्तान् स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—यूय मार्या। गच्छन्तो ऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर सम्प्राप्तुकामा असम्प्राप्ता ततः स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिषु—नखल्वार्या! वय गच्छन्तो ऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर याव दसम्प्राप्ता वय मार्याः। गच्छन्तो गता व्यतिक्रमन्तो व्यतिक्रान्ता राजगृह

[illegible] वर्तमान पवत्तामा। तिवारे अन्ययूथिक स्थविर भगवतप्रते इमकहे। तम्हे अपच्छा गममाणे अगते। तुम पत्ता नार्यो। आतावहा अवगया। वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कते। अतिक्रमतावहा अण तक्कम्या। रायगिहनगरसंपाविउकामअसपत्ते। राजग्रह नगरप्रते पामवानो वाच्छावे अणपाम्या। तएण तवेराभगवन्ता। तिवारे ते स्थविरभगवन्त। ते अन्यउत्थिय एववयासो नो खलु अज्जो। ते अन्यतीर्थीप्रते इम कहे नही निश्चे अहा आर्यो। अम्हे गममाणे अगते। अमे जातावहा अणगया। वीइक्कममाणे अवीइक्कते। अतिक्रमतावहा अणतिक्कम्या। रायगिहनयर जाव असपत्ते। राजग्रह नगर प्रते यावत् अणपाम्या। अम्हेणअज्जो गममाणेगए। अमे अहो आर्यो गमनकरतासाता ते गमनकीधा। वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कते। व्यतिक्रमतामाका ते अतिक्कम्या। रायगिहनयरं सपाविउकामे सपत्ते। राजग्रहनामा नगरप्रते पामवानो वाच्छावें सम्पाम्या अमा अमे। तम्हेअपच्छापण्णाचेव गममाणे तम अहा आर्यो पातेहात निश्चे जातासाता ते अणगया। वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कते। अतिक्रमतासाता ते अणतिक्कम्या। रायगिहनयर जाव अ

दनाया म्मपूयिका ग्मत्याउ ॥ तुझेवंगजोइत्यादि ॥ गइप्पवायति ॥ गतिः मोद्यते मरूप्यते यत्र तद्गतिप्रवाद गतत्रा प्रयुक्तेः क्रियाया प्रपातः प्रपतन सम्भवः प्रयागादि सर्वेषु वस्तम गतिप्रपात स्तत्प्रतिपादक मध्ययनं गतिप्रपात तत्मज्ञापितवन्तो गतिविचारप्रस्तावादिति अथ गतिप्र पातमेव मदतो जिधातु माउ ॥ कइविहेण मित्यादि ॥ पज्जोगगइत्ति ॥ इह गतिप्रपातजवमक्रम य द्गतिमदजवम त द्गतिघम्मस्वा त्मप्रपातस्य, ग तिजदमयमे गतिप्रपातजेदा एय भविता प्रवन्तीति न्याया दवसेय तत्र प्रयागस्य सत्यमन प्रभृतिकस्य पञ्चदशविधस्य गतिः प्रवृत्ति प्रयोगगति ॥

गममाणे गए वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते । तुज्झेणं अप्पणाच्चेव गम माणे अगए वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते । तएणं तेथेरा भगवंतो अण्णउत्थिए एवं पडिहणंति एवं पडिहणेत्ता गइप्पवायनामं अज्झयणं पण्णवइंसु, कइविहेणं भंते ! गइप्पवाए पण्णत्ते

नगर मम्प्राप्तकामा सम्प्राप्ताः । यूय मार्याः ! स्वय चैव गच्छन्तोऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर याव दसम्प्राप्ता इदानीं तेस्थविरा भगवन्त स्ता मन्यपूथिका नव प्रतिभ्नन्ति प्रतिहत्या गतिप्रवाद मामा ध्ययन प्रज्ञापितवन्त —कतिविधो भदन्त । गतिप्रवादः प्रज्ञप्तः

मपते । राजगृह नगर यावत् असम्प्राप्तवन्ता । तएवं तवेरा भगवता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । अन्यउत्थिक एवपडिहणति २ ना । अन्ययूथिक पर मतो मत इम प्रति हणे वोपे इम प्रति हणीने तिवि प्रस्तावे तिवे स्थविरे । गइप्पवायनाम अध्ययन पन्नवइसु । गतिप्रवाद नाम अध्ययन परुप्यो मति पकविये जिहां त गतिप्रवाद कहिये तत्प्रतिपादक अध्ययन कह्या । कइविहेणभंतेगइप्पवाए प । केतलेभेदे हेभगवन् । गतिप्रपात कह्या इतिप्रश्न उत्त र । गोयमा पंचविहेगइप्पवाए प तंजहा । हेगौतम पांचभेदे गतिप्रपात कह्यो ते कहेछे—प्रयोगगती ततगती बंधणछेयणगती उववायगती विहायग ती । इहां गतिप्रपात भेद प्रकरणे जिये के गतिभेद कह्या ते गति धर्मपणा थको प्रपातने तेमाटे गतिभेद कह्या प्रपातभेद जोजवाजाणवे इसान्यायथकी जोणवा तिहां प्रयाग के सत्यमन प्रभृति पनरे भेदे तेहनो गति कहिये प्रवत्ति ते प्रयागगति कहिये १ तत कहतां पाम नगरादिकने जाइवाने प्रवत्ति

ततगइत्ति ॥ ततस्य ग्रामनगरादिकं गन्तुं प्रवृत्तस्येम सता ग्रामस्येम तदन्तरालपथे वर्त्तमानतया प्रसारितक्रमतयाथ विस्तारं गतस्य गति स्तत गति स्ततगति या अप्रविभूतग्रामाद नगरादौ गतिः प्राकृतस्वन " ततगइ " मस्मिन स्थाने इतः सूत्रा दारभ्य प्रज्ञापनायां षोडशम प्रयोगपद " मे वितायगइ " एतत्सूत्र याव दाष्य मेतदेवाह ॥ यस्तोइत्यादि ॥ तद्य-बंधणच्छेयणगइ उववायगइ विहायगइ इत्यादि " तत्र बन्धनच्छेदनगति बन्धनस्य छमनः सम्प्रभत्सवा ध्वहन उजाव गति जीवस्य शरीरात् शरीरस्यवा । जीवा द्बन्धनच्छेदनगति उपपातगतिस्तु त्रिविधा क्षेत्रभवतो नवनदा तत्र नारकतिर्यङ्नरदेवसिद्धाना यत् स्वक्षेत्र उपपातायात्पादाय गमन सा क्षेत्रोपपातगति यीच नारकादीनामेव स्वभवे उपपातरूपा ग

1 गोयमा ! पचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तजहा पओगगइ ततगइ बंधणच्छेयणगइ उववायगइ विहायगइ

1 गौतम ! पञ्चविधो गतिप्रवादः प्रज्ञप्त तद्यथा-प्रयोगगति स्ततगति बन्धनच्छेदनगति उपपातगति विहायोगतिः इत आरभ्य प्रयोगपदं

पर्ने ते चप्रासप्रवेशरो ते ममराम मारगे वर्त्तमानपर्ने प्रसारित क्रमें करी विस्तारमतिनी गति ते ततगति मथवा तत कहिये मवधिभूत ग्रामादिक पत्नो नगरादिकने विषे गति ते ततगति २ इहां सूत्रमांहि पयोगगति पद लिखोने पछे लिख्यूछे ,एतावता स्वादिक, पदं पयोगगतो ततगतो ये स्थान इमविषे पन्नवणासूत्रादि पाठके ए सूत्रको पारम्भ पन्नवणाजिविषे सोलमा प्रयोगपद निरवशेष समस्त कहवा । वावसेत्तविहायगती । ए सूत्रने कहवा ते कहैछे— एतावतादि ते इम , बंधणच्छेयणगइ उववायगइ विहायगइ इत्यादि, तिहां बंधन कहियें कर्म पथवा सम्बन्ध तेहने छेदनेपभावे जे गति जीवन शरीरथी पथवा शरीरने जीवथकी ते बन्धन छेदन गति कहियें १ तथा उपपातगति तीनभेदे क्षेत्र १ भव २ नो भवभेदथकी २ तिहां ना रक तिर्यच मनुष्य देव सिद्धनाज पाताना क्षेत्रने विषे उपपात कहियें ऊपजिवा तेहने पर्ये गमनतिका क्षेत्रोपपातगति १ जे नारकादिकने जीव पा ताना भवनविषे उपपातरूपगति तिका भवोपपातगति २ जे सिद्ध तथा पुद्गलनो गमनमात्र ते भवोपपातगति २ विहायगति फरसता थाके इत्यादिक

तिः सा प्रयोपपातगति, यत्र छिन्नपुद्गलयो गमनमात्र सा नोभवोपपातगति विहायोगतिस्तु स्पृशद्गत्यादिका नेकविधेति ॥ सप्तमशते सप्तमः ॥ ७ ॥ अनन्तरोद्देशक स्थविरा उक्ता त्वन्यपूथिका प्रत्यनीका उक्ता अष्टमस्तु गुर्वादिप्रत्यनीका उच्यन्त इत्येव सम्बन्धस्या स्येद सूत्र ॥ रायगिहेत्यादि ॥ तत्र ॥ गुरूयति ॥ गुरून् तत्त्वोपदेशका प्रतीत्या श्रित्य प्रत्यनीकामिव प्रतिसैन्यमिव प्रतिकूलतया यते प्रत्यनीका तत्रा चार्योर्थव्याख्याता उपाध्यायः सूत्रदाता स्थविरस्तु जातिश्रुतपर्याये तत्र जात्या षष्टिवर्षजातः श्रुतस्थविरः समवायधरः, पर्यायस्थविरो विंशतिवर्षपर्याय एतत्प्रत्यनीकता चैव-जात्यादिभि अवर्ण विभसवहइनयायितवयार ॥ अहिर्जोभिद्दण्यई पगासवाइयणुलोमा ॥ १ ॥ अहवावि

एसो आरब्भ पत्तगपद निरवसेस नाणियव्वं जाव सेत्तविहायगई सेत्र भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसयस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ७ ॥ रायगिहे नयरे जाव एववयासी—गुरूण भंते! पडुच्च कइ पडिणीया पण्णत्ता? गोयमा! तओ पडिणीया पण्णत्ता तजहा—आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरप

निरवशेष जवितव्य याव स्वसाप्ता विहायोगति सावय भदन्त भदन्त ॥ इति अष्टम शते सप्तमः ८ ॥ ७ ॥ राजगृहे याव दय मयादीत्-गुरू प्रतीत्य प्र० । कतिप्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । त्रय प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—आचार्यप्रत्यनीक उपाध्यायप्रत्यनीकः

घनव प्रकारनी । सेर्भत २ त्ति । तइत्ति छैभगवम् । तुम्हक्कु ते सघसत्य पवि मक्षवा मह्यो । अट्ठमसयस्सत्तमभा उद्देसासम्पत्ता । ए आठमा शत कना सातमा उद्देशानो अर्थ लिख्यो ८ ॥ ७ ॥ पाछिल उद्देसे अन्यदर्शनी स्थविरमा प्रत्यनीक कह्या हवो गुरुमरणना प्रत्यनीक क हे छै—रायगिहे जाव एवंवयासी गुरुप्रभुने पडुच्च कइपडिणीया प । राजगृह नगरमांहे यावत् इम कहे गुरु कहिये तत्त्व उपदेशदाता ते प्रते आश्री केतला प्रत्यनीक कहिये प्रतिकूल शिष्य कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तओपडिणीया प त । हे गौतम तीन प्रत्यनीक कह्या ते कहे छै—आय रिय पडिणीए । आचार्य अर्थ व्याख्यानना करणहार तेहना प्रत्यनीक १ । उवज्झायपडिणीए । उपाध्याय सूत्रदाता तेहना प्रत्यनीक । थेरपडिणीए । जा

धव्मय त्रणमपरस्मर्द्दितिमर्वतु ॥ दमयिद्दयेयावधे कायम्बंसयंमकुव्वति ॥ २ ॥ गइणमित्यादि ॥ गति मानुपत्वादिका प्रतीत्य तत्रे इहलोकस्य प्र त्यनस्य मानुपत्यलक्षणपर्यायस्य प्रत्यनीक इन्द्रियार्थप्रतिकूलकारित्वात् पञ्चाग्नितपस्विव दिहलोकप्रत्यनीकः परो लोको जन्मान्तरं तत्प्रत्यनीक इन्द्रियार्थतत्परो द्विधा लोकप्रत्यनीकश्च चौर्यादिभि रिन्द्रियार्थसाधनपरः ॥ समूहणमित्यादि ॥ समूहं साधुसमुदायं प्रतीत्य तत्र कुलं चन्द्रादिक तत्समूहो गणः कौटिकादि सारसमूहः सङ्घः प्रत्यनीकता चैतेषा मवर्णवादादिभि रिति कुलादिलक्षणं चेद—एत्थकुलविकय एगायरियस्ससतइ

फिणीए । गइणं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया प० ? गोयमा ! तओ पडिणीया प० , तंजहा—इहलोगप डिणीए परलोगपडिणीए दुहलोगपडिणीए । समूहण्णं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया प० ? गोयमा ! तओ

स्थविरप्रत्यनीकः । गति प्रतीत्य कति प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता ? गौ० । त्रयः प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—इहलोकप्रत्यनीकः परलोकप्रत्यनीको द्वि धालोकप्रत्यनीकः । समूह प्रतीत्य प्र० । कतिप्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । त्रयः प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—कुलप्रत्यनीको गणप्रत्यनीक सङ्घ

ति गुणपर्यायवंरो, ते स्थविर ६ वरसमा श्रुत स्थविर समवायाङ्गमा धारक पराव स्थविर २ वरस चारित्रपर्यायवन्त एहमा प्रत्यनीक । सहयभते प डपसरपडिणीया प । मनुष्यपणा गारिवेर गति आश्रिवे हेभगवन् ! ते आश्रयो केतमा प्रत्यनीक निन्दक आदि इतिमग उत्तर । गोयमा तयापडिणी या प त । हेभौतम ! तीन प्रत्यनीक आदि ते कहिये—इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहलोगपडिणी० समूहणभते पडयअरपडिणीया पन्नता । इहलोक ते मनुष्य मनुष्यपण पर्यायना प्रत्यनीक इन्द्रियाव प्रतिकूलकारीपचाग्निसाधक तपस्वीगोपरे इहलोक प्रत्यनीक परलोक तथा गतर प्रत्यनीक इन्द्रियाव तत्परवादा परलोकनो अनमार्थे २ द्विधालोक प्रत्यनीक चोरीप्रमुखेकरी इन्द्रियार्थसाधक ते बेलोक प्रत्यनीक २ साधु समवा य ते आश्रयोने प्रत्यनीक केतलाप्रकारे कह्या इतिमग उत्तर । गो तयापडिणीया पं त कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीए । हेगौतम तीनप्रका रे कह्या तेकहेछै कुलतेचन्द्रादिक तेहनो समूह गण कोटिकादिक तेहनो समूह तेसंघ तेहनो प्रत्यनीकपणो अवर्ण वादादिके करी कुलादिकनो लक्षण

आर्द ॥ तिविहकुलाकमिशेपुच सावेक्खायंगणोहोइ ॥ १ ॥ सम्रोयिनाबर्दसव भरयगुणविभूसियाणसमवाचं । समुदाउपुव्वसंघो गणसमुदाउतिकाऊ र्ण ॥ २ ॥ अणुकम्पमित्यादि ॥ अनुकम्पा भक्तपानादिभि रुपष्टम्भ स्ता प्रतीत्य तत्र तपस्वी क्षपकः, ग्लानो रोगादिभि रसमर्थः शैक्षो ऽभिनव प्रव्रजित एत ह्यनुकम्पनीया भवन्ति तदकरणकारणाभ्यां च प्रत्यनीकतेति ॥ सुयमित्यादि ॥ श्रुतं सूत्रादि तत्र सूत्र व्याख्येय भाष्य तद्व्याख्यान

पडिणीया प०, तजहा—कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीए । अणुकंप पडुच्च भंते! कइ पडिणीया पुच्छा गोयमा तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए। सुयण्णं भंते! पडुच्च पुच्छा गोयमा! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए

प्रत्यनीकः । अनुकम्पा प्रतीत्य पृच्छा, गौ० । त्रय प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—तपस्विप्रत्यनीको ग्लानप्रत्यनीक शैक्षप्रत्यनीकः । श्रुत प्रतीत्य पृच्छा गौ० । त्रय प्रत्यनीकाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सूत्रप्रत्यनीको ऽर्थप्रत्यनीक स्तदुभयप्रत्यनीकः । भावं प्रतीत्य पृच्छा गौ० । त्रय प्रत्यनीकाः

अर्थहे—एक कुल विषेव एमायरिमस्स संतईनाव। तिवह ममाचभिया पुण सापेक्षाच मचाशार ॥ १ समाविमाच दसण चरच मप विभूसिमाच समचा ण । समताणा पचसधा गणसमदायातिमाजच ॥२॥ ०तीमनो प्रत्यनीक निरख १ । चवणपसमपुरखा गा तमापडिणीया प०त तवस्सिपडिणाए गिला नपडिणीए सेहपडिणीए। चमादिक करी उपष्टमतोच ते चमकपा तेमात्रो केनना प्रत्यनीक इतिप्रश्न च गौतम तीनप्रत्यनीक कह्मा तेकहेछे—तपसीने भत्तपानादि नदे १ ग्लानत रोगादिके करी चसमच थया तेहने औषधादि नदे २ गिण्यते नवदीक्षित तेहने भत्तपानादि नदे ३ एसघसाई श्रम कपनीच हुव ते चकरच चकारच तवे करी प्रत्यनीक पचो कहमा । समचमतेपडुचपुरखा गा तमापडिणीया प त सुमपडिणीए । सिवात हेभगवन् त पायतीमें चतना प्रत्यनीक कह्मा इतिप्रश्नहे गौतम तीन प्रत्यनीक कह्मा तेकहेछे— सूत्रते व्याख्येय तेहना प्रत्यनीक निरख १ । पत्यपडिणीए तदुभय प डिणीए भावसमतेपडुचपुरखा गा तमापडिणीया प त भावपडिणीए । अवते व्याख्यान निर्युक्त्यादि तेहनो प्रत्यनीक २ ते सूत्र अवतेज रूप तेहना प्रत्य

निपुणत्वात् नदुत्तय मेत द्वितयं तत्मत्यनीकताय-कायावयायतेविय तथैवपमायप्यमायाय ॥ मोक्षाविगारियार्थं बोहसजोवीर्हिकिकत्वं ॥ १ ॥ इत्यादि दूपवाद्राम ॥ भावमित्यादि ॥ भावः पर्याय सच जीवाजीवगत तत्र जीवस्य प्रशस्ता अप्रशस्ता तत्र प्रशस्तः क्षायिकादि एमग्रसो विवक्षो दयिकः क्षायिकादिपुन ज्ञानादिरूपो अतः भावत् ज्ञानादीन् प्रति प्रत्यनीक जीयः वितथप्रकपणतो दूषणतोया यथा-पायपसुत्तमियदूकोवाकावइप कीपकेवय ॥ किवावरणवत तावयविकावयवहासि ॥ १ एतेष प्रत्यनीका पपुनः करवना प्युत्थिता शुद्धि मवन्ति शुद्धिष व्यवहारा इति व्यवहार प्ररूपणायाह ॥ कइविहमित्यादि ॥ व्यवहरण व्यवहारो मुमुक्षुप्रवृत्तिनिवृत्तिरूप वस्तु तन्निमित्तत्वा ज्ञानविशेषोपि व्यवहार तत्र आगमस्त्वे

णायणा भंते । पच्छुत्र पुच्छा गोयमा । तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—णाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्त पडिणीए । कइविहेणं भंते ! ववहारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तंजहा आगमे सुए

प्रज्ञप्ता तद्यथा-ज्ञानप्रत्यनीको दर्शनप्रत्यनीक चारित्रप्रत्यनीकः ॥ कतिविधो भ० । व्यवहार प्रज्ञप्त ? गौ० । पञ्चविधो व्यवहारः प्रज्ञप्त स

भाव २ भावते पर्याय तेजोव पजोव गति तिका बोवनें प्रशस्त १ अप्रशस्त २ तिका प्रशस्तते क्षायिकादिक अप्रशस्त ते विवचायें करी औदयिकादि धर्म भाविकादिक गमो ज्ञानादि रूपके एतमाराई भावते ज्ञानादिक तेहनें प्रत्यनीक तेहनें विपरीत प्ररूपणा करी अथवा दूषण वखो यथा पायगमुत्तनियद बाधा भागर पनोव वेदय । किवा वरणेमत्तं दावन विवापावद्दति ॥ १ ॥ ते प्रात्यनीक प्रत्यनीक के भगवन् केतला भेदे कह्या इतिप्रश्न हे भातम ! तीनप्रकारे कह्या ते कहेछे—ज्ञानप्रत्यनीक ज्ञानमो पजव बाव भाषे १ । दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए कतिविधभंते ववहारे पण्णत्ते । दस प्रमना प्रत्यनीक प्रत्यना मयव वाववाने २ चारित्रना मयव पालवावें ३ ते प्रत्यनीक विपरीत करवेंकरो व्यवहारतवको मुहमतें वांछे पवि गुरु मा व्यवहारवको हवे तेमाटे व्यवहार प्ररूपणाभेद कहे कहेछे—केतलेभेदे हेभगवन् व्यवहार कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहे ववहारे प त । पांचप्रकारे व्यवहार कह्या ते कहेछे—तिहां व्यवहारिय जोवादिक इणे करोने ते व्यवहार साधुने प्रवृत्ति निवृत्तिरूप ते व्यवहार तेहनाकारण पणि

परिणियमो ऽर्यो भनने त्वागम फथममम पर्यायावपिपूवमतुद्दभको दसकनवकरूप सपा श्रुत शेष माचारप्रकल्पादि नवादिपूर्वान्त श्रुत
त्वे प्रतीन्द्रियार्थेषु विशिष्टज्ञानहतुत्वेन सातिशयत्वा दागमव्यपदेश कवलवदिति तथा आज्ञा यद्गीतायस्य पुरतो गूढार्थपदै देशान्तरस्थगी
तार्थनिवेदनाया तीचारासेवन मितरस्यापि तथैव शुद्धिदान तथा धारणा गीतार्थसंविग्नेन द्रव्याद्यपेक्षया यत्रापराधे यथा या विशुद्धिः कृता ता
मवधाय यदन्य सत्रैव तथैव तामेव प्रयुक्त इति वैयावृत्यकरादेर्वा गच्छोपग्रहकारिणो ऽशेषानुचितस्य प्रायश्चित्तपदानां प्रदर्शितानां धरण
मिति तथा जीतं द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिसेवानुवृत्त्या संहननधृत्यादिपरिहाणि मवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदान योवा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्त कार

आणा धारणा जीए, जहासे तत्थ आगमेसिया आगमेण ववहार पठवेज्जा, णोय से तत्थ आगमेसिया ज

जे प्राम निर्येष ते पणि ववहार कहिये तिहां पहिला आगमव्यवहार। आगमे सत। आगमस्ते कहिये जांणिये इणेंकरी पदार्थ ते आगम १ आज्ञा
२ ते सुत्र २। आज्ञा धारणा जाण। आदेसकरी दीजे ते आज्ञा ३ धारिये ते धारणा ४ जीतसर्व आचार ५ तिहां पहिला ज आगमव्यवहार ते केवल
ज्ञानी १ मनपर्यवज्ञानी २ अवधिज्ञानी ३ चउदह पूर्वधर ४ दस पूर्वधर ५ नव पूर्वधर ६ छ्हनो व्यवहार, ते छ प्रकारना तिहां पहिला केवलीना, पह
ज हतो पछिने आगमावना कहनो भवे बेरो तेहने अभावे मनपर्यवज्ञानी इम पाछिला पाछिलाने अभावे आगिला आगिला लेवा तिहां केवली प
मन आगम व्यवहारी समस्तपतिचार आपवेज सावे तेह पासे मया ते आगमव्यवहारी आलोयणहारने कहे तूं कहि समस्त पतिचार जाण ह
मा कहे हते ते जांणता आपणा आप मायायेकरी लोपने तिवारे तेहने प्रायश्चित्त न आपे पने एहवा कहे पनेरे ठाम जाय सोधकरि तवा जेहने चि
मायोने न कहे जांचि एहने कहो पणि पछि लोकटको तेह मनो न कहे इहां चउदह पूर्वधरने सत्यपि परोक्ष ज्ञानछे ता पणि उपयोग ठौ चे केवली
कहे तेतला ए पणि कहे इहां वार कहने आगमव्यवहारी जाणे ता तेहने कहिये समकने आलोयणा तिवारे प्रतिचार ते ...

पापने तेहने वार इम कहिये ते कहाकतो प पाणोवणे धर्मा गुणके सम्यग्पाराधना थाय पने पालोयणहारने उल्लास ऊ गुरु इमकहे वच्च तू य म भाग्यवंत इम मानवाला पापना पापाने हित भणी रहस्य प्रगट करेके ० वात मक्षा शाविकोके इम कहे त समस्तप्रकारे नि शल्य थवे के मुद मा वचिन पा ते इवितवचा वरे इम वरतो प्रावेवाने निर्वापकम पामि ९ । हिवे श्रुतव्यवहार कहे पापार प्रवक्ष निशीथ ते पादि लेइने इम इग्यारह पन नव पूवलगो यम पूव पवि श्रुतव्यवहारमांहि समग्रावचा तथा नथाहि पूवने पवि श्रुतपर्यो ता पवि पतीन्द्रिय पवनेविषे विशिष्टग्राम हेतुप लेवो मातिशय पर्यायनो पागमनविषे वथा केवलाशीपरे, हिवे श्रुतव्यवहारी वे थाय ते प्रगटपणे पामिनाना पभिप्राय जाणवा भणी विभिवार दूधवउ बराबे पवहारने कहें श्रुतव्यवहारी एकूडे मने पामाविक हिवा सांबेमने इसो जाणि न सबे तिवे पहिलोमारने कहें इमकहे सुभने मोद पारना वना तिवे से न साभ्मा वमो वशो ते वोलाबार वहे पद जडे मे हिवे कहा पराशमणो मनो वशो पोलोचार कहे निर्मायी सगसोचार १

नेमलाना वचा एहवा जाणी पानावचवा पने ग्लाटा वहे ता पडिमा तिविमे खाटरा प्रायश्चित्त देइ पछे पालोयवणे पाचाव्यवहार वेक पाचार मृगावता पामविशा वे तो मक्षा गीतार्थ अग्रावम पोवपर्या इत्तो विहार यम वर न सके पठमे देशान्तरे रह्या के मांहोमांहि मिलि न सके एक ते मोहि प्रायश्चित्त लेवा थाइ पने तेहवा गीतार्थ गीतार्थशिष्यना पभाव हतो पारणा कुशल पगीतार्थ पववा शिष्य तेहने सिद्धान्तरो आयार्ये गू ढाय पतिचार पालेवना पदवशो मोक्षा पाचार वसे मूके पने ते पाचार्य तेहना पपराध साम्भली द्रव्यादि ४ सप्रमन धृति बलादिक विचारो मा प तिहा आय पवशा तिम विध गीतार्थशिष्य तेहने कहो मूके तेहने पभावे पे पायाछे तेहनेज पतिचार विसाधिवणी मूके इम पाचारव्यवहार ३ । हिव धारणा व्यवहार कहेके—किणेर गीतार्थ सवेगोये पाचार्ये किणही एक मिथ्यादिक भणी कारण अपराधने विषे द्रव्यादि ४ जोइ जे विसह दोषोद्ङ्गे ते शिष्य मदनो दोषो शुद्धि मनमांहि धरोने किणही एकने तेहवे अपराधे तेतोज शुद्धियें ता इम देताने धारणाव्यवहार तिम बहुतपद धरप

यतः प्रायश्चित्तव्यवहारः प्रवर्त्तितो बहुभिः स्यै वानुवर्त्तित इति आगमादीनां व्यापारे उत्सर्गोपवादा वाह ॥ अथेत्यादि ॥ यमेति यथाप्रकारः श्रवणादीनां अन्यतमः ॥ से ॥ तस्य व्यवहर्त्तुः तदा तत्कालवर्त्ती व्यवहार तत्र तेषु पञ्चसु व्यवहारेषु मध्ये तस्मिन्त्र प्रायश्चित्तदानादिव्यवहार काले व्यवहर्त्तव्ये वा; यस्तुमि विषय आगमः केवलादिः स्यात्तदे तादृशेनेतिशय, आगमेन व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिक प्रस्थापयेत् प्रवर्त्तयेत् न शेषैः, आगमपि षड्विध केवलेना अन्यबोधत्वा तस्य, तदभावे मनःपर्यायण एवं प्रधानतराभावे इतरेणेति यथ ॥ णो ॥ नेय चशब्दो यदि शब्दार्थः ॥ से ॥ तस्य तदा; तत्र व्यवहर्त्तव्यादा आगमः स्यात् यथा यत्प्रकार ॥ से ॥ तस्य तत्र व्यवहर्त्तव्यादौ श्रुतं स्यात् तादृशेन श्रुतेन व्यवहा

हासे तत्य सुएसिया सुएण ववहार पठवेज्जा, णोयसे तत्य सुए सिया जहासे तत्य श्राणा सिया श्राणाए

यथा–आगमः श्रुत आज्ञा धारणा जीत । यथा तत्र गमः स्या द्वागमेन व्यवहार प्रस्थापये अथ तस्य तत्र गम स्या यथा तस्य तत्र श्रुत

रुप पवरा धारणा ते दस केर एक वेयावच्चो ववहार जिवारे पवि समस्तवेद श्रुत देखागे शाम्य नथी तिवारे तेहने आचार्य प्रसाद करी केत सापक प्रायश्चित्तना पद अवरोने तेहने कहे ते धरी अनेरा तेह ने पद मोकिलो आचार्य आपे ते धारणा ४ । हिवे जीतव्यवहार कहेछे—जिए अपराधे पूर्वसाधु मने तपे शुद्धिकरता तिए अपराध अपने हते साम्प्रतकाले इत्यादि ४ विनतो संयम छूति बलनो हानि जाणो ने योग्य तपनो प्र कार प्रायश्चित्त ये ते समय भाषायें जीतनीताव कहिये अथवा जे प्रायश्चित्त कोसे आचार्यने गच्छे पविषा आछो मूल थयो प्रवर्त्यो अने वळे अनेरे गीतार्थे ते मान्यापवे ते रूढजीत कहिये ए पांच व्यवहारमांहि प्रायमाने तिर्णे व्यवहारसहित गीतार्थ वाय ते वळे प्रायश्चित्त जोने पर अगीतार्थ वळे मतो दाप उपजे, हिवे आगमादिकने व्यापारवने विषे उक्त अपराध कहेछे—जहासेतत्थ आगमेसिया आगमेण ववहार पट्ठवेज्जा । यथा प्रका रे श्रवणादिकने अन्यतम ते व्यवहार अथवा तत्कालपण व्यवहार ते पञ्चव्यवहार माहें अथवा तत्वकहिये त प्रायश्चित्त दानादिव्यवहार कालने वि आगम कहिये केवलोऽभ्युप पूर्वे तो तेहवेज आगमे व्यवहार प्रायश्चित्त दानादिक मतें प्रस्थापे प्रवर्त्ते पवि ग्रेवेकरी प्रवर्त्तनथी आगम पवि छ प्रकारे

र्र प्रस्थापये दिति ॥ इच्चेण्हिं ॥ इत्यादिनिगमनं सामान्येन ॥ तथा जथा से ॥ इत्यादितु विशेषनिगमन मिति यतो व्यवहारं फल प्रवहारेणाप

ववहार पठवेज्जा गोयमे तत्थ ग्रागमे सिया जहासे तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहार पठवेज्जा, गोयम तत्थ धारणा सिया जहास तत्थ जीए सिया जीएण ववहार पठवेज्जा। इच्चेएहिं पचहिं ववहार पठवेज्जा, तंजहा—ग्रागमेण सुएण ग्राणाए धारणाए जीएण। जहा२ से ग्रागमे सुए ग्राणा धारणा जीए

स्या मूलम व्यवहारं प्रस्थापय मथ तस्य तत्र यतं स्या यथा तस्य तत्रा सा स्या द्वाययाव्यवहारं प्रस्थापय मथ तस्य तत्राज्ञा स्या यथा तस्य तत्र धारणा स्या धारणया व्यवहारं प्रस्थापये मथ तस्य तत्र धारणा स्या जीतेन व्यवहार प्रस्थापये दित्येतैः पञ्चभि व्यवहार प्रस्थापये तद्य

दे न सांहि केवलज्ञानम चउदस पूर्व नव पूर्वधरो विवाकज्ञा जोनि तमाटे तेहवाने प्रायश्चित्त सेवा तेहने पभावे मनपर्यवज्ञानी इस पाछिला पाछला ने पभावे पाछिला पाछिला मेवा प्रधान तरभे पभावे इतर लिवा। गोयमे तत्थ ग्रागमसिया जहा से तत्थ सुयसिया सुएणं ववहार पठवेज्जा ग्रागमे तस्सए०सिया। जहो जा ते ग्रागमववहार हुवे ता यथाप्रकारे तेहने तिहां सुतहुवे ता तेहने सुतेकरी व्यवहारप्रते प्रवर्त्ते सुत ते ग्राचार प्रकल्पनादि मन पूर्वताई ग्राधर जहो जा तिहां सुतववहार हवे ता। जहासे तत्थ ग्राणासिया ग्राणाए ववहार पठवेज्जा। जिम ते तिहां ग्राज्ञाहुवे ता तेहने ग्रा प्रा ववहारे जा प्रवर्त्ते प्रायश्चित्त मे। ग्रायसेतत्थ ग्राणासिया जहासे तत्थ धारणासिया। तेहनो ग्राज्ञाव्यवहार न हुवे जिम ते तिहां किवको गीता व किवतोने ग्रपराधना गुरुपेम ग्रालभाव ग्रावे प्रायश्चित्तदोषो ते धारणाहुवे। धारणाए ववहार पठवेज्जा ग्रायसे तत्थ धारणा सिया। तिवे धारण थे जहो व्यवहार प्रते प्रवर्त्ते यमो ते तिहां धारणा व्यवहार न हुवे। जहासे तत्थ जीएसिया। जिम तिहां पुरुष क्षेत्र विचारी प्रायश्चित्त दीजे से जीत करे। जीएण ववहार पठवेज्जा। ते जीत व्यवहारेकरी प्रवर्त्ते। इच्चेएहिं पचहिं ववहार पठवेज्जा ते। इत्यादिक पञ्चप्रकारे करी व्यवहारप्रते प्रवर्त्तिवे प्रस्थापे प्ररूपावे ते कहेछे—ग्रागमेणं१ सुएणं२ ग्राणाए३ धारणाए४ जीएणं५। ग्रागमेकरी सुतेकरी ग्राज्ञायेकरी धारणायेकरी तथा जीतेकरी५।

॥ मत्रिमित्यादि ॥ यथ कि वे जवमा । प्रहारका थाए प्रतिपादयंति वे श्रागमयलिका उक्तज्ञानविशेषयलवन्तः श्रमणा निर्ग्रन्थाः केवलिप्रभृत य: ॥ इहपति ॥ इत्यत्र इत्यमाव मथवा; इत्येत मिति उक्तरूप मत प्रत्यच पञ्चविध व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिरूप ॥ सम्मववहरमाणेत्ति ॥ सम्यग्यते व्यवहरन् प्रवत्तय मित्यथः ॥ कथंमम्मति ॥ सम्यक तदेव कथ मित्याह–यदा यदा यस्मि न्यस्मि मवसर यत्र यत्र प्रयोजने क्षेत्रेवा याप उचित स त मिति श्रप तदा तदा काले तस्मि स्तस्मि प्रयोजनादौ कथम्भूत मित्याह–मनिश्रितैः सर्वाशंसारहितै रुपाश्रिता श्रीकतो

तहा२ ववहार पठवेज्जा । मेकि माहु भंते ! श्रागमबलिया समणा णिग्गथा । इच्चेय पचविह ववहार जहा २ जहिं २ तहा २ तहिं २ श्रणिस्सिओवस्सिय सम्म ववहरमाणे समणेणिग्गथे श्राणाए श्रागहए भ

वा–मागमत श्रुतमा ज्ञया धारणया जीतन । यथा यथा तस्या गमः श्रुत माज्ञा धारणा जीतं स्या तथा तथा व्यवहार प्रस्थापयेत् । अथ कि माहु भन्त । भागमबलिकाः श्रमणा निर्ग्रन्था ? इत्यत पञ्चविध व्यवहार यदा यदा यत्र यत्र तदा २ तत्रतत्र निश्रितोपाश्रितं मध्य

जहा २ मे पागममुए भाणा धारणा जीए। जिमजिम तिहां भागमादि ५। तहा २ ववहार पठवेज्जा। तिम २ व्यवहार प्रस्थापे प्रवतावे। सेकि माहु भते। इनि व्यवहारतत पुरपने पम प्रग्रहारेजरो कहेछे—किय स्‌ भद्दत भहारक भाहु कहे। भागमवलिया समया निग्रथा इयत पचविह ववहार। भागमबलिक उत्कृष्टय ज्ञानवन्त समय निग्रन्थ केवलज्ञानमय, ० बचनाण भववा उक्तस्वरूप प्रत्यच पञ्चविध व्यवहार प्रायश्चित दानादि रूप सम्मववहरमाणेति, ए पद सघात सम्यक् व्यवहारता प्रवत्ता हवय जिन सम्यक्त्वो रीते ते जिम ते कहेछे—जहा २ जहि २ तहा २तहिं २ पनिस्सिपाश्रिय सम्म ववहारेमाणे समणे निग्गथे भाणाए भाराहए भवइ ज जे भवसरनविषे भथवा जे ज प्रयोजनविषे भथवा जे जे क्षेत्रनेविषे जे ज उचित याग्य ते ते प्रते ?तिवेष तथा तदा ? तत्थ ? २ प्रयोजनादिकने विषे कयवा ते कहेछे—भनिश्रित कहिये सव भाशंसारहित तिणे उपाश्रित कहिय भ पीकार भाषा ते भनिश्रितापाश्रित त प्रते भथवा निश्रितराग उपाश्रित द्वेष भयो राग द्वेष ते भनिश्रितापाश्रित सथवा पक्षपात रहि

ऽनिश्रितोपाश्रित स्त अथवा निश्रित शिष्यत्वादिप्रतिपन्न उपाश्रितश्च सम्म वैयावृत्यकरत्वादिना प्रत्यासन्नतर स्तौ अथवा निश्रित राग उ
पाश्रितश्च द्वेष स्त अथवा निश्रितश्च आहारादिलिप्सा उपाश्रितश्च शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा ते न स्तो यत्र त तथेति क्रियाविशेषणं सर्वथा
पक्षपातरहितत्वेन यथाव स्थितं इह पूर्वव्याख्या-रागोपशोकनिरसा भवस्थितदोषमभुतो ॥ व्यवहाराश्रयादा दाक्षीमकतुमसमिस्साठे ॥ १ ॥
मामायरिप्स्मनुया चोइउवस्सुकुन्मादीयंति ॥ आज्ञाया जिनोपदेशस्या राधको भवतीति क्त । आह एवंति गुरुवचनं गम्यमिति अन्यत्तु ॥ स
किमाह मत ! इत्याद्य व्याख्याति-अथ किमाह सदता । गमवलिका अमया नियन्त्या पञ्चविधव्यवहारस्य फल मितिशेष अयोत्तर माह ॥
इह च मित्यादि ॥ आज्ञाराधकश्च क्रम उपयति अजवा सद्भावतीति बन्धनिरूपण माह ॥ कइइत्यादि ॥ बध्यति ॥ दृव्यतो निगडादियन्धो भा
वतः कर्मणां इह प्रकमा त्कर्मबन्धोविवक्षितः ॥ इरियावहियबंधेयत्ति ॥ इर्या गमन तत्प्रधानः पन्था मार्ग इर्यापथ स्तत्रभव मैर्यापथिकं केवल

घइ । कइविहेणं भंते ! बंधे पणत्ते ? गोयमा ! दुविहे बंधे पणत्ते , तंजहा इरियावहियबंधेय संपराइय

व्यवहरन् श्रमणोनिर्ग्रन्थ आज्ञाया आराधको भवति ॥ कतिविधः भ० ! बन्धः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! द्विविधो बन्ध प्रज्ञप्तः तद्यथा-ईर्याप

त पर्ने वस्तु । अतिशय एतावता पञ्चविध व्यवहारप्रते जिवारे २ जेम प्रयाजनने विषे याग्य ते मते तिवारे २ ते ते प्रयाजननेविषे सम्यक पक्षपात रहित प
ण । मम श्रवहारमाचे समनोलाग्यवे आचाए पालाइए सहर सम्यक् प्रवर्तनाकरो श्रमण निर्ग्रन्थ आज्ञाना आराधककरे आज्ञानो आराधक कहने स्यापा
वे यहरा भगवन् केय तेमाट कहेछे—हारितिबंध पमते । केतलेप्रकारे हेभगवन् बन्धकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहे बंधे पणत्ते तंजहा । हे
गौतम द्रव्यथा निगडादिक भावथी कर्मबंध ते अहनाहे इहां प्रश्नथी कर्मबंधनो अधिकार लेवो ते कहेछे—बे प्रकार बंधकह्या ते कहेछे—इरियाव
हियबंधेयसंपराइय बंधेय । इर्यागमन तत्प्रधान पन्था कहिये मार्ग ते ईर्यापथ तेहनेविषे थयो ते ईर्यापथिक कहिये केवलयोग्य प्रत्ययकर्म तेहना जे
बध ते एम केवलीयनाबंध १ सप्तारभ्रमने हेतुभूतो ते सम्पराय कहिये कषाय तेहनेविषे थया साम्परायिककर्म तेहना जे बध ते साम्परायिकबंध कषा

योगप्रत्यय कम तस्यपो यन्थ सतथा सर्वे कस्य पेदनीयस्य ॥ सपराइयकधेयत्ति ॥ सम्परैसि ससार पयटति एभि रिति सम्परायाः कपाया स्ते
पु नयं साम्परायिक कम्म तस्य यो बन्धः स साम्परायिकबन्ध कपायप्रत्यय इत्यथः सचा वीतरागगुणस्थानकपु सर्वेष्विति ॥ णोनरएठे ॥ इत्या
वि मनुष्यस्यैव तद्बन्धो यस्मात्स्थादुपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिना मेव तद्बन्ध मिति ॥ पुव्वपडिवन्नए ॥ इत्यादि पूव प्राक्काले प्रतिपन्नमै

यधेय। इरियावहियाण नत। कम्म किं णेरइओ बधइ तिरिक्खजोणिओ बधइ तिरिक्खजोणिणी बधइ मणुस्सो
बधइ मणुस्सी बधइ देवो बधइ देवी बधइ ? गो० ! णो णेरइओ बधइ णो तिरिक्खजोणिओ बधइ णोतिरि
क्खजोणिणी बधइ णो देवो बधइ णोदेवीबधइ पुव्वपडिवन्नए पडुच्च मणुस्साय मणुस्सीओय बधंति , पडि

पित्तयच्य साम्परायिकबन्धय । ऐर्यापथिक प्र० । कर्म किंनैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति तिर्यग्योनिकी बध्नाति मनुष्यो बध्नाति
मनुष्यी बध्नाति देवो बध्नाति देवीबध्नाति ? गौतम ! नो नैरयिको बध्नाति नोतिर्यग्योनिको बध्नाति नो तिर्यग्योनिकी बध्नाति नोदेवो
बध्नाति नो देवी बध्नाति । पूर्वप्रतिपन्नकानाश्रित्य मनुष्या मनुष्य य बध्नन्ति । प्रतिपद्यमानकान् प्रतीत्य मनुष्योवा बध्नाति १ मनुषीवा

वपतव इमय ते वीतरागरहित मनमुपस्थानकमैविषे हवे । इरियावहियाकभंते बध किं नेरइया बधइ । ऐर्यापथिक र्क पाक्कामंबारे, हेभगवन् कम
र्य नारकी बांधे । तिरिक्खजोणियो बधइ २ तिरिक्खजोणिणीयाबधइ । तिर्यचयोनिक पुरुष बांधे तिर्यचयोनिकनी स्त्री बांधे ? । मणुस्सा बधइ मणु
स्सी बधइ । मनुष्य बांधे मनुष्यनी बांधे । देवा बंधइ देवी बधइ । देव बांधे देवीबांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो नेरइयाबंधइ । हेगौतम नारकी न बां
धे । णोतिरिक्खजोणिया बधइ णोतिरिक्खजोणिणी बधइ । नथी तिर्यचयोनिक पुरुष बांधे नथी तिर्यचयोनिकनी स्त्री बांधे २ । णोदेवोबधइ णो देवीब
धइ । देव न बांधे । देवी न बांधे ४ मनयनेज ए वन्धकबे ते कारणवला उपशान्तमोह १ क्षीणमोह २ सयोगी केवली ३ ए तीनने बन्ध एहना बधबे ।
पुव्वपडिवन्नयपडुच । पूर्वे ए इरियावही बन्ध पडिवज्या ते बन्धकपणा द्वितीयादिक समयवर्तीने ते सदा पामे पुरुष तथा स्त्री सर्वाले ते बेउ बन्धसदा

मार्गविकल्पस्य ये सो पयप्रतिपयका स्यात् सद्रूपकत्वद्वितीयादिसमयवर्त्तिन इत्यर्थ सोष सदैव यद्वा पुरुषा स्त्रियश्च सन्ति तमयेषां श्रेयसि
मा मद्यमाना दसउक्त-मणुस्सायमणुस्सीउयवघातिति ॥ पन्निवज्जमाणएति ॥ प्रतिपद्यमानका नपापयिकसमवन्धनप्रथमसमयवर्त्तिन इत्यर्थ
प्रथान्त विरहमभवा स्यन्त मनुष्यस्य स्त्रियाश्च यक्कयोगे एकत्वबहुत्वाभ्यां चत्वारो विकल्पा द्विकयोगे तथैव चत्वार एव मते सर्वे प्यष्टा
यतदगाए ॥ मणुस्साश ॥ इत्यादि एषाव पुरस्तादि त त म्रिगापघया मतु यदापघया तीमोपशान्तवेदत्वा द्य वेदापत्त स्त्रीत्वा ग्रपि

यज्जमाणए पढम्ने मणुस्सोवा ग्रयड मणुस्सीवा ग्रयड मणुस्सायवा ग्रयति मणुस्सीउयवा ग्रयति, ग्रहवा मणुस्सोय मणुस्सीय ग्रयड, ग्रहवा मणुस्साय मणुस्सीउय ग्रयति, ग्रहवा मणुस्साय मणुस्सीय ग्रयड, ग्र

घ्नाति २ मनष्यायवा घ्नन्ति ३ मनुष्य या वध्नन्ति ४ अथवा मनुष्यश्च मानुषीच बध्नाति ५ अथवा मनुष्यश्च मनुष्यश्च बध्नन्ति ६ अथवा मनुष्याय मानुषीच बध्नाति ७ अथवा मनष्याय मनुष्याय बध्नन्ति ८। तद्वदन्त। किं स्त्री बध्नाति पुरुषो बध्नाति नपुंसको बध्नाति, स्त्रियो

मशाइस मे ट बाध। मणघ। मणुस्सोघावयंघइ पडिवज्जमाणए पढम। पवो मनुष्य पवो मनष्यनो बांधे ए बेलापद बहुवचनेकरी कह्या वत्तमा
न पडिवज्जमाण पाम्यगेन ऐर्यावहि प्रथम समयवर्त्ती इत्यथ एहने विरहना सम्भवथको एक बेलायें मनष्य तथा स्त्रीने एकयोगे एकवचन बहुवचने
करी चार विकल्पहुवे। मणस्माशा वधइ मणुस्सीवावधइ। मनष्य एकवचने बांधे अथवा मनष्यनी एकवचने बांधे। मणुस्सायवा बधति मणुस्सीघायवा बं
धंति। अथवा मनष्य बहुवचने बांधे अथवा मनष्यनी बहुवचने बांधे ४ ए एकसयोगी भांगा ४ कह्या, हिवे द्विकसंयोगे तिमहीज चारभांगाहुवे ते दे
खाडेछ—ग्रहवामणस्साय मणुस्सीय बधइ। अथवा मनष्य एकवचने मनष्यनी एकवचने बांधे ए पहलोभांगो। ग्रहवामणस्साय मणुस्सीघाय बधति। अथ
वा मनष्य एकवचन मनष्यनी बहुवचने बांधे २ ए बीजोभांगो ॥। अहवामणुस्सायमणुस्सीय बधइ। अथवा मनुष्य बहुवचने मनुष्यनी एकवचने ३ ए

त्या इ ॥ त भंत किमित्यादि ॥ नोइत्थी ॥ इत्यादिनाच पदत्रयनिषेधेना वेदकः प्रश्नित उत्तरेतु पश्चो पदाना निषेध सप्तमपदोक्तस्तु व्यप गतवेद स्तायत पूर्वप्रतिपन्ना प्रतिपद्यमानकाव भवन्ति तत्र पूर्वप्रतिपन्नकाना विगतवेदाना सदावबुत्वनाया दाह ॥ पुव्वपडीत्यादि ॥ प्रतिपद्य

हया मणुस्साय मणुस्सीओय बधंति। त भंते। किइत्थी बधइ पुरिसो बधइ णपुसगो बधइ, इत्थीउ बधंति पुरिसा बधंति णपुसगा बधंति णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुसगो बधइ? गोयमा! णोइत्थी बधइ णोपुरिसो बधइ जाव णोणपुसगावधंति। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवग

बधन्ति पुरुषा बध्नन्ति नपुसका बध्नन्ति नो स्त्री नोपुरुषो नोनपुसको बध्नाति? गौतम! नो स्त्री बध्नाति नोपुरुषो बध्नाति याव नो नपु सका बध्नन्ति पूर्वप्रतिपन्नकान् प्रतीत्या पगतवेदा बध्नन्ति। प्रतिपद्यमानकान् प्रतीत्या पगतवेदोवा बध्नन्ति व्यपगतवेदावा बध्नन्ति यदि

मानाभावा। पडवामकस्माय मणम्ओवावबधति। पयथा मनम मनम्यवो ए वेत्र बहुवचन बहुवचने बांधे ए चोआभांगा ४। हिवे वेदनो अपेक्षायें व्याप्य ना प्रश्निकरा कहेछे—तमंतकित्थी बधइ पुरिसाबधइ णपुसगाबधइ। तस्यापति बध हेभगवन्! स्त्री बांधे पुरुष बांधे नपुंसक बांधे ए तीन एक वचने बहुवचने बहुव तथा। इत्थीओबधति पुरिसा बधति णपुसगाबधति। घणी स्त्रीयो बांधे घणा पुरुष बांधे घणा नपुसक बांधे ६ ए तीनपद बहुवच ने कह्या। पाइत्थो पा परिसा वा णपुसगा बधइ। नही स्त्री नही पुरुष नही नपुंसक ए तीनह पदने निषेधकरी अवेदक पूछ्यु एतले वेदरहित बांधे पतिप्रश्न उत्तर। नाइत्थी वा इत्थी बधइ वा परिसा बधइ जाव वा णपुसगा बधति पुव्वपडिवन्नएपडुच्च अवगयवेदा बधंति। हेगौतम। स्त्री न बां धे पुरुष न बांधे इम यावत् घणा नपुसक न बांधे एतले पहिला छ ए पदनानिषेध जाणवा घणे सातमा तो व्यपगतवेद कहिये तिहां पूर्व प्रतिपन्न तथा प्रतिपद्यमानक बृवे तिहां प्रतिपन्न ते नियतवेद तेहमा सदा बहुसमा भावको कहेछे—पूर्वप्रतिपन्न ते आश्री अपगतवेद बहुवचने बांधे प्रतिपद्य मान एतले पडिवजताअकाल तेहने सामायिकपर्यायको विरहने भावें करी एकादिकना समभावको विकल्प दीसहुवे एतलामाटे कहेछे—पडिवज्ज

मामकाना नु मामयिकत्याम् विरस्नाय मैकादिसमवात् विकस्पद्वय व्यतयवाद ॥ पत्निश्यमासेत्यादि ॥ ययगतवेदमये यावयिकवत्य माथित्य स्वाम्वादिनतनावापयथा विषम्पय याव ॥ अइइत्यादि ॥ स मते । तदा प्रदमत तदुा: यम्म ॥ इत्थीपच्चाकमेति ॥ भावमघामस्वा निर्देशास्य स्वीस्व पयारहतं नूनतो मात यमावदकमा मो स्त्रीपयारकृत यथ मम्या यपि इवैकयोग एकत्वबहुत्वाभ्यां पाङ्किस्याः द्विकयोगतु त्रिपु द्विक

यवेदोया यधइ, अवगयवेदाया यधति, जइ जत । अवगयवेदोया यधइ अवगयवेदाया यधति । त जन । कि इत्थीपच्छाकडो यधइ १ । पुरिसपच्छाकडो यधइ २ । णपुसगपच्छाकडो यधइ ३ । इत्थी पच्छाकडा यधति ४ । पुरिसपच्छाकडा यधति ५ । णपुसगपच्छाकडा यधति ६ । उदाहु इत्थीपच्छाक

२७ । यपगतवेदोवा यध्नाति अपगतवेदावा यध्नति तद्भदन्त । स्त्रीपयारकृतोवा वध्नाति पुरुषपयारकृतावा बध्नाति २ नपुसकपयारकृतो बध्नाति ३ स्त्रीपयारकृता बध्नन्ति ४ पुरुषपयारकृता बध्नति ५ नपुसकपयारकृता बध्नन्ति ६ । उताहो स्त्रीपयारकृतश्च पुरुषपयारकृतश्च

माथए यहय यवमय वेदाया मधद यवमयवेदाया मधति । पडिवजता भाम्रवामे यपगतवेद एकवचने बांधे १ घवया यपगतवेद बहुवचने बांधे २ यवश यपमतवेदशाज वैयावधिक वधपाम्रवोमे आपवा भाटिइ मूलभाव यवेचायें विकम्प करता कहेछे—अथमते भवगयवेदाबावध भवगयवेदा वा यंधति । ता हैभगवन् । भपमतवद एकवचने यवका भपगतवेद बहुवचने बांधे । तं मतेकिंइत्यो पच्छाकडा यधइ १ पुरिसपच्छाकडा यधइ २ नपुसग यरछाकडा यधइ ३ ते हेभगवन् । पवमा तेवम निदमने भाव प्रधानपर्यायको स्त्रीपणो पयारकृतभूतपणो मते गम्या जिके यवेदवंते जो पयात्कृत कहिये, इम योजना यवि यवचा इत्री एकयोगे यवल यहले करी ह विकल्पवे से देखाडेछे—प्रथमकारे ए एकवचने १ ए यपि एकवचने २ ए यपि एक वचने ३ इम भांगा भोनमया । इत्थीपच्छाकडायधति ४ पुरिसपच्छाकडायधंति ५ नपुंसगपच्छाकडायधति ६ । स्त्री पयात्कृत बांधे ए बहुवचने पुरुष पयात्कृत बांधे ए यपि बहुवचने नपुसक पयात्कृत बांधे ए यपि बहुवचने ३ ए तीन बहुवचने भांगा कह्या, जिमे विकल्पसामे भांमा कहेछे । उदाहु

पागप तयेय द्वादश त्रिभाग पुन स्तपैया ए। वेतेप सर्व पङ्विशति, सूत्रव घतर्जप्रप्टजङ्गमा प्रथमविकल्पादर्शता सर्वान्तिमषेति, मर्पेया पयिकक्रमयथन मय कालत्रयच विकल्पपत्ताइ ॥ त भत इत्यादि ॥ तदेयापयिक कम यन्धी वहुवाम् यभाति भस्यति पैस्पकोविकल्प एय

काय पुरिसपच्छाकडाय यधइ १ । उदाउ इत्थीपच्छाकडोय पुरिसपच्छाकडाय यधति २ । उदाउ इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडोय यधइ ३ । उदाउ इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय यधति ४ । उदाउ इत्थीपच्छाकडोय णपुसगपच्छाकडोय यधइ ५ उदाउ पुरिसपच्छाकडोय णपुसगपच्छाकडोय यधइ ६ ।

यध्नाति १ उताहो स्त्रीपयारकृताय पुरुषपयारकृताय भध्नन्ति २ उताहो स्त्रीपयारकृताय पुरुषपयारकृताय बध्नाति ३ उताहो स्त्रीपयारकृता य पुरुषपयारकृताय यध्नंति ४ उताहो स्त्रीपयारकृताय पुरुषपयारकृताय यध्नाति ५ उताहो पुरुषपयारकृताय नपुसकपयारकृताय बध्ना

इत्थी पच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बधइ । पचवा स्त्री पयारकृत पदव पयारकृत मांधे ए बेह पवि एकवचने ए द्विकसयोगे एकभांगा । उदाउ इत्थी पच्छाकडाय परिमपच्छाकडाय बधति । पचवा स्त्री पयारकृत एकवचने घने पदयपयारकृत ए बहुवचने ए द्विकसयाग बीजा भांगा २ । उदाउ इत्थी पच्छाकडाय परिम पच्छाकडायबधइ ३ । पचवा स्त्री पयारकृत ए बहुवचन घने पदव पयारकृत एकवचने ए द्विकसयोगे चोथाभांगा ३ । उदाउ इत्थी पच्छाकडाय पुरिम पच्छाकडाय बधति ४ । पचवा स्त्री पयारकृत ए बहुवचने घने पदव पयारकृत ए बहुवचने मांधे ए द्विकसयागे चोथा भांगा ४ ए चारभांगा स्त्री पदपसयाम पदल बहल कह्या इम स्त्री पने नपुंसक सू एकल बहुल चारभांगा कहवा तमांहि पहिला भांगा मूलमांहि कह्यावा । उदाउइत्थीपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय बधइ ४ । पचवा स्त्री पयारकृत एकवचने नपुसक पयारकृत एकवचने मांधे इम चारभांगा कहवा इम पदप पने नपुंसक सूं चारभांगा एकल बहुलें कहवा ते मांहि पहिलाभांगा देखाडे—उदाउपुरिसपच्छाकडाय ण पुंसग पच्छाकडाय बधइ ५ १२ । पचवा पुरुष पयारकृत एकवचने नपुंसक पयारकृत एकवचने मांधे इम एपवि चारभांगा कहवा एम द्विकसयागी भांगा

उग्गाऊ इत्थीपच्छाकडोय पुरिसपच्छाकडोय णपुंसगपच्छाकडोय बंधइ ८ । एवं एए छव्वीस भंगा जाव उदाऊ इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधति ? गोयमा ! इत्थीपच्छाकडोवि बंधइ पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ णपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ, इत्थीपच्छाकडावि बंधति पुरिसपच्छाकडावि

गम ६ उताहो स्त्री पश्चात्कृताय पुरुषपश्चात्कृताय नपुंसकपश्चात्कृताय बध्नाति ८ । एवं मेते षड्विंशतिभङ्गा याय उताहो स्त्रीपश्चात्कृताय पुरुषपश्चात्कृताय नपुंसकपश्चात्कृताय बध्नन्ति ? गौतम ! स्त्रीपश्चात्कृतोपि पुरुषपश्चात्कृतोपि नपुंसकपश्चात्कृतोपि बध्नाति स्त्रीपश्चात्कृता अपि पुरुषपश्चात्कृता अपि नपुंसकपश्चात्कृता अपि बध्नन्ति ६ अथवा स्त्रीपश्चात्कृताय पुरुषपश्चात्कृताय बध्नाति १२ । एवं मेते षड्विंश

---

१२ । [illegible] भंगा ८ याव तेमांहि पश्चिमाभंगा देखाडे—उताहो स्त्रीपश्चात्कृताय पुरिसपच्छाकडोय नपुंसगप च्छाकडे य बंधइ ८ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने पुरुष पश्चात्कृत एकवचने नपुंसक पश्चात्कृत ए पणि एकवचने बांधे ए त्रिकसंयोगीना पश्चिमा भा [illegible] एम ८ भांगा थया । एवं छव्वीसभंगा । एम ए छव्वीसभांगा सघला तेमांहि छेल्लोभांगो देखाडे—जावउदाउ इत्थीपच्छाकडाय पुरि सपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधति । यावत् अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचन पुरुष पश्चात्कृत ए पणि बहुवचने नपुंसक पश्चात्कृत ए पणि बहु वचने बांधे ए छव्वीसमाहे छेल्लोभांगा देखाड्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थीपच्छाकडोवि बंधइ पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ णपुंसगपच्छाकडोवि बंध इ । हे गौतम ! स्त्री पश्चात्कृत पणि बांधे ए एकवचने एकभांगो पुरुष पश्चात्कृत पणि बांधे ए पणि एकवचने नपुंसक पश्चात्कृत बांधे ए पणि एकवचने इ त्थीपच्छाकडावि बंधति । स्त्री पश्चात्कृत पणि बांधे ए बहुवचने भांगो चोथो ४ । पुरिसपच्छाकडावि बंधति । पुरुष पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने भांगो ५ नपुंसगपच्छाकडावि बंधति ६ । नपुंसक पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने एवं एकसंयोगी भांगा छ हुवे ६ । अथवा इत्थीपच्छाकडोय पुरिसप च्छाकडोय बंधइ १२ ८ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने पुरुषपश्चात्कृत एकवचने ए द्विकसंयोगी पश्चिमाभांगा एम ए द्विकसंयोगी बारेभांगा जाणवा

बंधति णपुंसगपच्छाकडाय बंधति ६ । अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बंधइ १२ । एवं एए छव्वीसं भंगा जाणियव्वा जाव अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधति । तं भंते ! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ । बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २ । बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ । बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४ । न बंधी बंधइ बंधिस्सइ ५ । न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ६ । न बंधी न बंधइ बंधि

ति भङ्गा भणितव्या याव अथवा स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च नपुंसकपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति । तद्भदन्त ! किं अबध्नात् बध्नाति भन्त्स्य ति १ । अबध्नात् बध्नाति न भन्त्स्यति २ । अबध्नात् न बध्नाति भन्त्स्यति ३ । अबध्नात् न बध्नाति न भन्त्स्यति ४ । न अबध्नात् बध्नाति भन्त्स्य

२१ । तथा त्रिकसंयोगे ८ भंगा थये । एम एते छब्बीसभंगा जाणवा । एम एक संयोगी छब्बीस भांगा थाय छे आठमा भांगा सौथी छेल्ला भांगा छे याव इ—अथवा स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुष पश्चात्कृतश्च नपुंसकपश्चात्कृताश्च बंधति । यावत् अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने पुरुष पश्चात्कृत एकव चने नपुंसक पश्चात्कृत ए पण बहुवचने ए छवीसमा भांगा देखाड्या । फिरे ऐर्यापथिक बंध ओने तीन कालोमांथी विकल्प करता कहे छे—तमनमिबंधो बंधइ बंधिस्सइ । ते ऐर्यापथिक कर्म हे भगवन् । भू. अतीतकाले बांध्युं वर्तमानकाले बांधे छे अनागतकाले बांधशे ए एक विकल्प १ । बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २ । तथा अतीतकाल बांध्यु वर्तमानकाले बांधे छे अनागतकाले न बांधशे २ । बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ । तथा अतीतकाले बांध्युं वर्तमानकाले न बांधे छे अनागतकाले बांधशे ए त्रीजा भांगा विकल्प ३ । बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४ । अतीतकाले बांध्युं वर्तमानकाले न बांधे छे अनागतकाले न बांधशे ए चोथा भांगा ४ । न बंधी बंधइ बंधिस्सइ । अतीतकाले न बांध्युं वर्तमानकाले बांधे छे अनागतकाले बांधशे ए पांचमा विकल्प ५ । न बंधी बंधइ न बंधि स्सइ ६ । अतीतकाले न बांध्युं वर्तमानकाले बांधे छे अनागतकाले न बांधशे ए छट्ठा भांगा ६ । न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ७ । अतीतकाले न बांध्युं वर्तमा नकाले न बांधे छे अनागतकाले बांधशे ए सातमा भांगो ७ । न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ८ । तथा अतीतकाले बांध्युं नहीं वर्तमानकाले न बांधे छे अनागत

मग्यविमम नद्गा मयान्व स्थापना उमरतु ॥ नयत्यादि ॥ प्रये पनेकप्रापदमाविश्रविमात्या पाकप ऐर्यापथिककमारुग्रहश प्रथाकप सं प्रतीत्य प रयका प्रथापप्र कायिन्नीत्र प्रथमयेकस्यिक सुयादि पूवजव उपशान्तमोहत्वस त्यैर्योपथिक कम बद्धवान् वतमानमवे चापशान्तमोहत्वे यभा ति चमागतच उपशान्तमादायस्याया प्रस्यतीति १। द्वितीयस्तु यः पूवस्मिन् प्रवे उपशान्तमोहत्व सध्यान् वतमानच चीवमोहत्व प्रासः स पूर्वं पद्धवान् वत्तमानच यप्नाति शैलसपवस्थाया पुन नप्रस्यतीति २। तृतीय पूवजन्मनि उपशान्तमोहत्व वद्धवान् तत्प्रतिपतितो मयप्नाति चमागतच उपशान्तमोहादायस्थाया प्रस्यतीति ३। चतुर्थस्तु शैलशी पूवकाल वद्धवान् शैलेश्याच नयप्नाति नच पुन प्रंस्यतीति ४। पञ्चमस्तु

स्सइ ७। नयधी नयधइ नयधिस्सइ ८। गोयमा ञ्चवागरिस पढुच्च ख्यत्येगइए यधी यधइ यधिस्सइ

ति ५। मवन्यान् यप्नाति मप्रस्यति ६। नयद्वुवान् मयप्नाति प्रस्यति ७। नवद्वुवान् नयप्नाति नप्रस्यति ८ ॥ गौतम। प्रथाकप म्प्र तीत्य प्रस्त्यको यद्धवान् वध्नाति प्रस्यति १। प्रस्त्यको यद्धवान् वध्नाति नप्रस्यति २। एव तदेव सव याव दस्त्येको नवद्धवान् नयप्ना

बामि न बांधस्ये ८ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा भवागरिस पडुच पत्यगइए बन्धो उगइ बधिस्सइ। हे गौतम। भवागरिसपडुचाम्यादि, भवघनेकन उपशमादि गुणो पाम को पावयतेऐर्यापथिक कम चपपट्टच ज्ञम पनेकमवमा इरियावहो वमना पशुमे मावपोय ते भवाकप जाणवा ते घाययीने कहेछे—कृपे एक कारसोर पञ्चिमभागे ते प्रवाहछे—पूवभवे उपशान्तमोहपणे वर्तो ऐर्यापथिकक्रम बांध्या वत्तमानभव वर्तो उपशान्तमोहपणे बांधिये भनागतभवन विषे उपशान्तमोहादावस्थायें बांधस्ये। पत्यगइए वधो बधइ न बधिस्सइ इत्यादिकमप्प जाव पत्यगइए न बधी न बंधइ न बधिस्सइ। बीजा कोइएक जीव पूवभवनविषे उपशान्तमोहपणा साधु वत्तमान भवनेविषे चीणमोहपणा पाम्या ते पूर्वे बांध्या वर्तो वत्तमाने बांधिये शैलेशी पवस्थानेविषे बांधस्ये २ त्रीजा कोइएकजीव पूवभवनेविषे उपशान्तमोहपणाये बांध्या तेहवो पड्या न बांधिये वली किवार उपशान्तमोहपणो पडिवजस्यें तिवारें बांधस्यें ३ चौथा कोइएकजीव गतमा पूवकालनेविषे बांध्या शैलेशीनेविषे न बांधे वली ते न बांधस्ये ४ पांचमा कोइएकजीव पव जन्मनेविषे उपशान्तमोहपणा न बांध स

पयग्मनि नापशान्तमाहाय लभ्यानिति नयतुवा नपुना लथमिति यभ्राति पुग रम्पयरकाले उपशान्तमाहाद्यवस्थायां प्रस्यतीति ५। पञ्चः पुन क्षीणमाहस्यां नमथ्यानिति नपूर्व बद्धवान पपुनात क्षीणमाहस्य लथमिति यभ्राति शैलेश्यवस्थाया पुन नमरस्यतीति ६। सप्तमः पुन भव्यस्य मांग यमादोकाल नयद्धवान् पपुनापि कपि लयभ्रासि कालान्तरतु प्रस्यतीति अष्टम स्त्वभव्यस्य सम प्रतीतएव॥ गहणागरिसमि त्यादि॥ णकस्मियय भव पयापथिककम्मपुद्गलाना ग्रहणरूपो य माकर्षो ऽसौ ग्रहणाकर्ष स प्रतीत्या स्यपकः कश्चि ज्जीवः प्रथमवैकल्पिक स माहि-उपशान्तमोहादि वर्येयापथिक कम्म वन्ना वभ्राति तदा तीतसमयापेक्षया बद्धवान् वत्तमानसमयापेक्षयाच बध्नाति अनागतसमयापेक्ष यातु प्रस्यतीति १। द्वितीयस्तु कवली सप्रतीतकाल बद्धवान् वत्तमानच बध्नाति शैलेश्यवस्थाया पुन नमरस्यतीति २। तृतीयस्तु उपशान्त

अत्थेगइए बंधी बंधइ नयधिस्सइ एव तचेव सव्व जाव अत्थेगइए नबंधी नबंधइ नबंधिस्सइ। गहणागरिस पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एव जाव अत्थेगइए नबंधी बंधइ बंधिस्सइ णोचेवणं नबंधी बंधइ

ति नमरस्यति। ग्रहणाकर्षं प्रतीत्य स्यपेको बद्धवान् बध्नाति प्रस्यति १। एव याव दस्यको नबद्धवान् बध्नाति प्रस्यति। नोचैव नबद्धवान्

मटम बांधि रघिमदे उपशान्तमाहपना माथा तेमाट न बांधसे वली आगामिकाले उपशान्तमोह भवस्थानेविषे बांधसे ५ छठा कारणकोय चोपमाह पना पाहि न बांधा एतलामाटे पूर्वे न बांधा हिव वत्तमानकाले चोपपना साथ तिवारेबांधिले पछे शैलेशी अवस्थाये न बांधस्ये ६ सातमा कारणक जीव ए माना भव्यजीवने ते पनादिकालमे विषे न बांध्यो वत्तमानकाल पणि कारणकाल न बांधले कालान्तरे नियता बांधस्ये ७ पाठमे भांगे अभव्यजीव ते मा प्रसिद्ध जोउछे। गहणागरिसपडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एव जाव अत्थेगइए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ ८। गहणागरिसमइत्यादि, एव भवनविषे जीव ईर्यापथिककर्म पुद्गलग्रहणरूप जे आकर्ष ते ग्रहणाकर्ष कहिये ते प्रते आश्रयीने, हे कारणजीव पहिला विकल्पे ते ईर्यापथिक—उप शान्तमोहादि तिवारे ईर्यापथिक कर्म बांधे तिवारे अतीतसमयनी अपेक्षाये बांधले अनागतसमयना अपेक्षाये बांधस्ये १ चौथे भांगे केवली

मोइरवे पधुर्वा सत्प्रतिपातितसु नबध्नाति पुन सत्रैव भवे उपशमश्रेणिमतिपन्नो नंरस्यतीति एवजवे चोपशमश्रेणी द्विः माप्यत एवेति ३। चतुर्थः पुनः सयोगित्वे बद्वाम शैलेश्यवस्थायां नबध्नाति नच नरस्यति ४। पञ्चमः पुन रायुष पूर्वभाग उपशान्तमोहत्वादि मसम्पमिति मबद्धवान् मधुना त सम्मिति बध्नाति तदनुपायाम्रव चैष्यत्समयतु पुन नंरस्यतीति ५। पष्ठस्तु मारस्येव तत्र मबद्धवान् बध्नाती स्यमयो रुपपद्यमानत्वेपि म नरस्यती स्यस्या नुपपद्यमानत्वा तथा मायुष्क पूर्वभागे उपशान्तमोहत्वादि मसम्पमिति मबद्धवा सान्नानसमयेच बध्नाति ततो नन्तरसमयेपुन नरस्यस्येव नतु नरस्यति समयमात्रस्य बन्धस्ये हाभावात् यस्तु माहोपशमानिपन्यस्य समयानन्तरमरणे नैर्यापथिककर्मबन्धः समयमात्रो भवति नासौ पष्ठविकल्पहेतु तादनन्तरैर्यापथिककर्मबन्धाभावस्य भवान्तरवर्तित्वात् मइकाकर्पसयेव मकान्तत्वात् यदि पुनः सयोगिचरमसमये

नयधिस्सह । घृत्येगहुए नबधी नबधह यधिस्सह । घृत्येगइए नवंधी नयंधइ नयधिस्सइ । ल न्नत ! कि

मध्नाति मनरस्यति मस्त्येको मबद्धवाम् नमध्नाति नरस्यति मस्त्येको मबद्धवाम् मबध्नाति ममरस्यति ॥ तद्भदन्त ! कि सादिक सपर्यवसित

पतोतकाल बांध्या वर्तमानकालनेविये बांधवे पडे मेंकेो भवस्यातें बांधो न बांधसें २ कोवा काइएकजीव उपशान्तमोहपर्णे बांध्या तेहको पकाबयो न बांधे बलो तिणिजीव भवे उपशमश्रेणीमते बांध्या बांधसें एक भवनविये उपशमश्रेणी बे वार पामियेजबें ३ चोवा कोइएकजीव मयागीपणे वांध्या वर्त्तमान शैलेशीपवस्थायें न बांधे भागे न बांधसें ४ पांचमा काइएकजीव भाउखाने पूर्वभागे उपशान्तमोहादि न पाम्या तेमाटे न वांध्या वर्त्तमान काले बांध तेमाटे बांधेछे ते भागनेज भागामिसमयनेविषे वली बांधसें ५ छट्ठमांगे काइएकजीव मयो, ते छट्ठाभांगानेविषे न बांध्यो बांधवे ए ठाणे उपशान्तवस्था यवि न बांधसें ए जीवभाव न उपबे ते देखाडेछे—पाउखाना पूर्वभागनेविषे उपशान्तमोहत्वादि न पाम्यं एतलामाटे न बांध्या ते माभसमयनेविषे बांधे तिवारपछी पनन्तर समयने विषे बांधसेज पणि इम नवी जे मबांधवी समयमात्रनो बन्धनो इहां प्रभावछै तेमाटे जे माहोपशम निपन ने समय पनन्तर मरणैकरी ऐर्यापथिक कर्मबन्ध समयमात्र हुवे पणि एकठा विकल्पनो हेतु नथी तदनन्तर ऐर्यापथिक कर्मबन्ध प्रभावने भ

प्राप्नोति ततोऽनन्तरं गमिष्यतीति विवक्ष्येत तदा यस्सयोगिचरमसमये मस्त्यातीति तद्रूपपूर्वकमेव स्या आयपपूर्वको तत्पूर्वसमयेषु तस्य पञ्चकस्य प्रथम द्वितीयपद भङ्ग स्या अपुनः षष्ठ इति ६ । सप्तमः पुन भव्यविषयस्या ऽष्टम स्त्वभव्यस्येति, एवच भवाकपाये प्रष्टासु भगकेषु ॥ यथो वाऽऽ यविस्सइ । इत्यत्र प्रथम भग उपशान्तमोहः। यधी बधइ नयविस्सइ । इत्यत्र द्वितीय क्षीणमोहः । वधी नबधइ यविस्सइ । इत्यत्र तृतीये उपशान्तमोहः । यधी नयधइ नयविस्सइ । इत्यत्र चतुर्थे शैलेशीगतः । नबधी बधइ बंधिस्सइ । इत्यत्र पञ्चमे उपशान्तमोहः । नबधी बधइ नबंधिस्सइ । इत्यत्र षष्ठे क्षीणमोहः । नबधी नबधइ बंधिस्सइ । इत्यत्र सप्तमे भव्यः । नबंधी नबधइ नबंधिस्सइ । इत्यत्राऽष्टम ऽभव्य । ग्रन्थान्तरे पुन रेते एव प्रथम उपशान्तमोहः क्षीणमोहोऽयोः द्वितीयस्तु केवली, तृतीय उपशान्तमोह, चतुर्थे शैलेशीगतः पञ्चमे उपशान्तमोहः क्षीण

भोगवतिपणाकनो भने पहिनाबधने इशे बन्धामाटेविचारे बन्धो मयोगीचरमसमयनि विषे बांधे तिवारपछी मननारेव बांधसे विवक्षा कीजे तिवारे जे मयोगी चरम समयेव थे त बंधक पवक्तव्याजरूवे पनिजे पबयत पूर्वक तेहनो पूर्वसमयनिविषे तेहना वधपर्णो माटे एम ना बीजाभांगा बीजरूपे पनिजामांगा न रूपे ६ मातमाभांगा भव्यविषयने ० पाठमा ना पमव्वनइ इशे भवाकपे पापीसमे विषे माठभांगाने विष बधी बधइ यविस्सइ ए प हिलाभांगानेविषे उपशांतमोह १ बधी बंधइ नबंधिस्सइ ए बीजाभांगानेविषे क्षीणमोह २ बंधी न बधइ बधिस्सइ ए बीजानेविषे उपशांतमोह ३ बधी न बंधइ न बधिस्सइ । ए चोथानेविषे शैलेशीगत ४ न बधी बधइ बधिस्सइ, ए पांचमाने उपशांतमोह ५ न बधी बधइ न बधिस्सइ, ए छट्ठाभांगानेविषे क्षीणमोह ६ न बंधी न बधइ बधिस्सइ, ए सातमाभांगा भव्य विषय ७ न बधी न बधइ नबधिस्सइ, ए पाठमा भांगानेविषे अभव्य ८ ग्रन्थान्तर पा मबीन बनो एहनेजविषे एतम सूत्र पाठ एजीज अवरसे, पर मबनो विशेष कहीने—पहिलेभागे उपशांतमोह अथवा क्षीणमोह १ बीजे केवली २ बो जे उपशांतमोह ३ चोथे शैलेशीगत ४ पांचमे उपशांतमोह अथवा क्षीणमोह ५ छठ्ठे सूक्ष्म ६ सातमे भव्य अथवा भावीमाक्षापगम अथवा भावी माच मप ७ पाठमे अभव्य ८। हिवे ऐर्यापथिक कर्मनोज निरूपण कहीये—तीमतनिसाविषे मपज्जवसियं बधइ सादियं मपज्जवसियं बधइ अणादि

मारामा पश्च गच ममने नव्यो नायिमीपिपशमी नाविमोहलपीवा ; बहुमी स्वभव्य इति मर्यापथिककर्मैव निरूपयन्नाह ॥ नमित्यादि ॥ नईयापथिक कम ॥ माइम मपज्जवमिय मित्यादि ॥ चतुर्भङ्गी तत्र चैर्यापथिककर्मणः प्रथमएव भङ्गः सत्यो स्पष्ट तद्समया द्विति ॥ नमित्यादि ॥ नईयापथिक कम ॥ समय दमति ॥ दशन भीयदशेन दृश कम्मदेशा बधातीत्यादि चतुर्भङ्गी तत्र मद्धोन कम्मको देशः सर्वथा । कम्म सर्वात्मना

नाइय मपज्जवसिय बधइ साइय अपज्जवसिय बधइ अणाइय सपज्जवसिय बधइ अणाइय अपज्जवसिय बधइ ? गोयमा साइय सपज्जवसियं बधइ णोसाइय अपज्जवसिय बधइ णोअणाइय सपज्जवसिय बधइ णोअणाइय अपज्जवसिय बधइ। त भत ! किं देसेण देस बधइ देसेण सव्व बधइ सव्वेण देस बधइ सव्वेण

बध्नाति सादिक सपर्यवसित बध्नाति अनादिक सपर्यवसितं बध्नाति अनादिक सपर्यवसित बध्नाति ? गौतम ! सादिक सपर्यवसित बध्नाति नो सादिक सपर्यवसित बध्नाति नो अनादिकं सपर्यवसित बध्नाति नो अनादिक सपर्यवसित बध्नाति । तद्भगवन्त ! किं देशेन

॥ सपज्जवसियं बधइ, अणादिय अपज्जवसिय बधइ । ते ऐर्यापथिक कम हे भगवन् ! स्यू ! सादिसपर्यवसित एतल सादिसांत भांगे बांधे १ अथवा सादि अपर्यवसित एतले सादि अनंत भांगे बांधे २ अथवा अनादि सपर्यवसित एतले अनादि सांतभांगे बांधे अथवा अनादि अपर्यवसित एतले अनादि अनंत भांगे बांधे ४ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सादिय सपज्जवसियं बधइ । हे गौतम सादि सांतभांगे बांधे ए पहिलाभांगानेविषय ऐर्यापथिककर्मना बन्धके बोलानेविषे तेहना अबन्धकको । बाकाज्य अपज्जवसिय बधइ । सादि अनंतभांगे ऐर्यापथिककर्मनो बन्धको नथी २ । णो अणादियं सपज्जवसियं बधइ णो अणादियं अपज्जवसियं बधइ । अनादि सांत भांगानेविषे पणि ऐर्यापथिक कर्मनाबन्ध नथी ३ तथा अनादि अनंतभांगानेविषे पणि ऐर्यापथिककर्मना बन्धको ४ समाप्तेतम पहनो—तमंते किं देसेणं देसबधइ । ते ऐर्यापथिककर्मं हे भगवन् ! स्यू जीवने देशेकरी कर्मना देशप्रते बांधे १ । देसेण सव्व बधइ । तथा जीवने देशेकरी सर्वतस बांधे २ । सव्वेणदेसंबधइ । तथा जीव सर्वेकरी कर्मना देशप्रते बांधे ३ । सव्वेण सव्व बधइ । सवजीवे

या कम्मको दशो बध्यते किंतर्हि सर्वात्मना सर्वमेव बध्यते तथास्वभावत्वा ज्जीवस्येति, अथ साम्परायिकबन्धनिरूपणायाह ॥ संपराइयमित्यादि ॥ किमरइज इत्यादयः सप्त प्रश्ना उत्तराणि च सर्वत्र एतच्च मनुष्यमनुष्यावर्जा अस्य साम्परायिकबन्धका सब सकषायत्वा न्मनुष्यमनुष्योस्तु

सव्वं बंधइ ? गोयमा णोदेसेण देसं बंधइ णोदेसेण सव्वं बंधइ णोसव्वेण देसं बंधइ सव्वेण सव्वं बंधइ । संपराइयाणं भंते ! किं णेरइए बंधइ तिरिक्खजोणिए बंधइ जाव देवी बंधइ ? गोयमा णेरइए बंधइ तिरिक्खजोणिएवि बंधइ तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ मणुस्सोवि बंधइ मणुस्सीवि बंधइ देवोवि बंधइ देवीवि

देशं बध्नाति देशेन सर्वं बध्नाति सर्वेण देशं बध्नाति सर्वेण सर्वं बध्नाति ? गौतम ! नोदेशेन देशं बध्नाति नोदेशेन सर्वं बध्नाति नो सर्वेण देशं बध्नाति सर्वेण सर्वं बध्नाति ॥ सांपरायिक भ० ! कर्म किं नैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति यावद् देवी बध्नाति ? गौतम ! नैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति तिर्यग्योनिक्यपि बध्नाति मनुष्योऽपि बध्नाति मनुष्यपि बध्नाति देवोऽपि बध्नाति देव्यपि

करी म कम बांधे ए भडभगो इतिमश्न उत्तर। गोयमा णोदेसेणदेसंबंधइ। हे गौतम ! जीवने देशेकरी कर्मनाअंशप्रते न बांधे। णोदेसेणसव्वं बंधइ। जीवने देशेकरी सर्वकर्म न बांधे २। णो सव्वेणदेसंबंधइ। सर्वजीवेकरी कर्मना देशप्रते न बांधे ३। सव्वेणसव्वं बंधइ। तास्युं ? सर्वआत्माएकरी सर्वकर्म प्रते बांधे जीवना तथाविध स्वभावथकी ४ ए इरियावहि बंधकह्यो, हिवे साम्परायिकबन्ध निरूपण करेछे—संपराइयाणमिति किंणेरइएबंधइ। साम्परायिककर्म हे भगवन् ! स्यूं ? नारकी बांधे। तिरिक्खजोणिया बंधइ जाव देवीबंधइ। तिर्यग्योनिक पशु बांधे इम तो सगो कहवो जावगे देवी बांधे ? पूछिवोपरे सातेई प्रश्न पूछ्या उत्तर। गोयमा णेरइया बंधइ। हेगौतम ! नारकी पणि बांधे। तिरिक्खजोणियावि बंधइ। तिर्यग्योनिक पुरुष पणि बांधे। तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ। तिर्यग्योनिकनी स्त्री पणि बांधे २। मणुस्सोविबंधइ मणुस्सीविबंधइ देवोविबंधइ देवीवि बंधइ। मनुष्य पणि बांधे मनुष्यनी स्त्री पणि बांधे, देव पणि बांधे देवी पणि बांधे ए सातमांहि मनुष्य मनुष्यणी टाली पञ्चसाम्परायिक कर्मनाबन्धक होयछे सकषायपणा

मकषायत्वमति साम्परायिकं वध्नीतो मधुम रम्यदति साम्परायिकबन्धमेव स्थपेक्षया निरूपयन्नाह ॥ त भंते ! कि इत्थी इत्यादि ॥ यत्र स्त्या
द्या विवक्षितैकत्वयुक्ताः यद् सयदा साम्परायिक बध्नाति अपगतवेदस्य कदाचित्कत्वस्य तस्य कादाचित्कत्वात् अतस्य स्त्यादय केवला बध्नन्त्यप
गतवेदसहिताय अतय यदा ऽपगतवेदसहिता बध्नन्ति तदोच्यते अथवा ते स्त्यादयो बध्नन्ति अपगतवेदस्य तस्यैकस्यापि सम्भवात् अथवै
तव स्त्यादयो बध्न स्त्य ऽपगतवेदाय तयो बहूनामपि सम्भवात् अपगतवेदस्य साम्परायिकबन्धको वेदत्रय उपशान्त क्षीणवा याव यथाख्यात
ममाप्राप्ति ताव प्राप्यतइति इदञ्च पूर्वप्रतिपन्नप्रतिपद्यमानकविवक्षा अकृता द्वयो रप्येकत्वबहुत्वयो र्भावेन निर्विशेषस्या तयाऽसऽपगतवेदत्वे

बंधइ, त भंते ! किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ तहेव जाव णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुंसगो बंधइ ? गो० इत्थीवि बंधइ पुरिसोवि बंधइ जाव णपुंसगावि बंधति, अहवेए य अवगयवेदो बंधइ अहवेए य अवगयवेयाय

बध्नाति । तद्भदन्त ! किं स्त्री बध्नाति पुरुषो बध्नाति तथैव याव नो स्त्री नोपुरुषो नो नपुंसको बध्नाति ? गौतम ! स्त्र्यपि बध्नाति पुरु
षोपि बध्नाति याव नपुंसका अपि बध्नन्ति अथवा अपगत वेदो बध्नाति अपगतवेदाश्च बध्नन्ति । यदि भदन्त ! अपगतवेदश्चा पगतवेदाश्च

बली पन मनक यो मकषायवन्धको साम्परायिककर्म बांधे पन मकषायवन्धो नबांधे इति विशेष, हिवे साम्परायिक बन्धकाज स्त्र्यादिकनो पयेस
ये करो निरूपन करवे—तंभंतेकि स्त्रीबधइ पुरिसा बंधइ तहेव जाव भास्त्री भा पुरिसा भा नपुंसभा बंधइ । ते साम्परायिककर्म प्रते हेभगवन् ! स्त्र
स्त्री बांधे पुरुष बांधे इत्यादि तीन एकवचन पद पूर्वे पूछा तिम पूछवा तथा नथी स्त्री नथी पुरुष नथी नपुंसक ते अपगतवेद ते बांधे ए ७ प्रश्न पूछा ।
उत्तर । भावमा स्त्रीविबधइ परिमाविबधइ जाव नपुंसगाविबंधति । हेगौतम ! स्त्री स्त्री पाविवेद तीन एकवचनेवलो तीन बहुवचने यावत् नपुंसकवको
बांधे ए ६ ए साम्परायिककर्म मनक्ष बांधे मन अपगतवेद विचारे वे बांधे तेहने कादाचित्कपणाथको तेहना एकादिना सम्भवथको एक पनि बांधे
घणाना सम्भवथको घणा पनि बांधे ते कहेछे—अहवेएयअवगयवेदा बंधइ अहवेएय अवगयवेयाय बधति । अपगतवेद एकवचने बांधे तथा अपगतवेद बहुवच

साम्परायिकबन्धोऽस्यकासीनस्व तत्र यो ऽपगतवदत्वं प्रतिपन्नपूर्वः साम्परायिक प्रभा स्यता यको नेकोवा स्या देव प्रतिपद्यमानको पीति थय साम्परायिककम्मबन्धन मेव कालत्रय विकल्पप आह ॥ त न्नते । कि मित्यादि ॥ इहच पूर्वोक्त प्रश्नेषु विकल्पे साद्या यस्तारएव सम वति नतर सीवामा साम्परायिककम्मबन्धस्या मादित्यन नवाम्बीत्यस्या मुपपद्यमानस्या तत्र प्रथम सवस्य सद्यारी यथाख्यातासम्प्राप्तोपशम

वधंति। जइ न्नत । श्रवगयवेदोय श्रवगयवेदाय वधति, त न्नत । कि इत्थीपच्छाकडो वधइ पुरिसपच्छा कडो वधइ एय जहेव इरियावहिया बन्धगस्स तहेव निरवसस जाय श्रहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसप च्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय वधति। त न्नते ! कि वधी वधइ वधिस्सइ १ । वंधी वधइ नवधिस्सइ २।

वध्नाति तद्भदन्त ! किं स्त्रीपश्चात्कृतो वध्नाति पुरुषपश्चात्कृतो वध्ना त्येव यथैवे र्यापथिकबन्धकस्य तथैव निरवशेषं भणितव्य याव दथवा स्त्रीपश्चात्कृताय पुरुषपश्चात्कृताय नपुंसकपश्चात्कृताय वध्नन्ति । तद्भदन्त किं बद्धवा न्बध्नाति भन्त्स्यति बद्धवान् बध्नाति नभन्त्स्यति बद्धवा

न बांधे । बाद्धमत वक्षमयदाय बकसमवेदाय बधति । या हेभगवन् । साम्परायिककर्म भपगतवद एकवचने बांधे पथवा भपगतवेद बहुवचने बांधे। तम तेबिारतापरकाबकाभवद परिमपच्छाबका बधद । तवनतें हेभगवन् । स्त्री पश्चात्कृत एकवचने बांधे परव पश्चात्कृत ए पपि एकवचने बांधे २ । एवअहेव इरियाबाहयार्बपगस्य तबद निरवसेसजाव । इस जिम पूर्वे ऐर्यापथिककम बन्धनां २६ भगा पूछा तबा घरर वचनका तिम इहां पणि साम्पर। यिककमना बंधनेंविषे पणि भांगा कहवा तेमांहिला छवीसमाभांगा कहेछे—घणांस्त्री पश्चात्कडाय परिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय वधति। घवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने पुरुष पश्चात्कृत ए पाण बहुवचन नपुंसकपश्चात्कृत ए पणि बहुवचन बांधे इम इहां पणि कहवा, हिवे साम्परायिक कर्म बन्धन काल तीनकाल करी विकल्पकरता कहेछे—तभंतेकिंबंधी बधइ बंधिस्सइ । ते हेभगवन् । एवं १ अतीतकाले बांध्या वर्त्तमानकाले बांधेछे भा गामिकाले बांधस्ये पथवा १ । बंधो बधद न बंधिस्सइ २ । अतीतकाले बांध्यो वर्त्तमानकाले बांधेछे भागामिकाले न बांधस्ये २ । बंधी नबंधइ बंधि

फ्वपक्रायमानः सवि पूर्वं बद्धवा न्वतमानकालेतु बध्ना त्यनागतकालापेक्षया भत्स्यति १। द्वितीयस्तु मोक्षयाग्यपूर्व मतीतकालापेक्षया बद्धवान् वतमानकालेतु बध्नाति प्राविमोक्षणापेक्षया भत्स्यति२। तृतीया पुन रुपशान्तमोहस्या ग्पूर्व बद्धवा नुपशान्तमोहत्वेन बध्नाति तस्मा च्युत पुन भत्स्यतीति ३। चतुर्थस्तु मोक्षया ग्पूर्व साम्परायिक कर्म बद्धवान् मोक्षगतु नबध्नाति नच भत्स्यतीति सांपरायिककर्मबन्ध भवा चित्याह ॥

बंधी नयघइ बंधिस्सइ ३। बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ४ ? गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १। अत्थेगइए बंधी नबंधइ बंधिस्सइ २। अत्थेगइए बंधी नबंधइ बंधिस्सइ ३। अत्थेगइए बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ४। तं भंते ! किं साइयसपज्जवसियं बंधइ पुच्छा तहेव ? गोयमा साइयवा सपज्जवसियं

न बध्नाति भत्स्यति ३ बद्धवा नबध्नाति नभत्स्यति ४ ? गौतम ! अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति भत्स्यति १ अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति नभत्स्यति २ अस्त्येको बद्धवान् नबध्नाति भत्स्यति ३ अस्त्येको बद्धवान् नबध्नाति नभत्स्यति ४। तद्भदन्त ! किं सादिकसपर्यवसितं बध्नाति

स्सइ १। अतीतकाले बान्ध्या वर्तमानकाल न बांधिवा आगामिकाले बान्धस्ये १। बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ। अतीतकालेबांध्या वर्तमानकाल न बान्ध अनागतकाले न बान्धस्ये ४ इहां पहील भांगे भव्य जिव पडिवा चार भांगे विकल्प नसभवे बोवनि साम्परायिक बन्धने अनादिपणे बहो अतीतका ल न बांध्या एहवा जाव नथी अतीतकाले जीवें साम्परायिककर्म बांध्याछे तेमाटे इतिभाव उत्तर। गायमा अत्येगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ। ते गौतम केतला एक जीव भवीत्यादि ए पहिले भांगे अनादि जीव संसारी यथाख्यात मश्रो पाम्या उपशम चपक पदमाने तेच पूर्व बांध्यू वर्तमान का ले बांध छे अनागत कालनी अपेक्षायें बांधस्ये। अत्येगइए बंधी बंधइ नबंधिस्सइ। केतला एक जीव बधो स्यादि बीजे भांगे मोक्ष जव बहो पहिला अतीतकाले बांध्य वर्तमान काले बांधे आगामिकाले मोक्ष जयनो अपेक्षायें नबांधस्ये। अत्येगइए बंधी नबंधइ बंधिस्सइ। ते केतला एक बधो ना ति जीव भांगे उपशान्त माह थया बहो पूर्वे बांध्यू वर्तमान काले उपशान्त माह मध्ये नबांधे आगामिकालें तेहथी पड्यो बांधस्ये। अत्येगइए बंधो

र्तमित्यादि ॥ माइर्यया सपज्जवसियं यंधइति ॥ उपशान्तमोहताया प्रच्युतः पुन रुपशान्तमोहता क्षीणमोहताया प्रतिपस्स्यमानः ॥ मसाइय या; सपज्जवसियं बंधइति ॥ चादित अपकायेन मिदं ॥ भवाइयया; अपज्जवसियं बंधइति ॥ एतथा भव्यापेक्ष ॥ णोचवक्ष साइय अपज्जव सियं बंधइति ॥ सादिसाम्परायिकबन्धोऽपि मोहोपशमात् च्युतस्यैव भवति तस्यचा वश्य मोहयापित्वा स्साम्परायिकबन्धस्य व्यवच्छेदसम्भव

बंधइ १ । श्रणाइयया सपज्जवसियं बंधइ । श्रणाइयया श्रपज्जवसियं बंधइ णोचेवणं साइयं श्रपज्जव सियं बंधइ । त भंते । किं देसेणं देसं बंधइ एवं जहेव इरियावहियबंधगस्स जाव सव्वेणं सव्वं बंधइ ।

पृच्छा तथैव गौ । सादिकवा सपर्यवसितं बध्नाति १ अनादिकवा सपर्यवसितं बध्नाति २ अनादिकवा ऽपर्यवसितं बध्नाति ३ नोचैव सादिक मपर्यवसितं बध्नाति ४ । तद्भदन्त ! किं देशेन देशं बध्नात्येवं यथैवै र्यापथिकबन्धकस्य याव त्सर्वेण सर्वं बध्नाति ॥ इति भदन्त । कर्म

निबंधर नबधिकार । हे गोतमा एक जीव मांह सब यको पूर्वं साम्परायिक कर्म बांध्, पणें माहमें मदें मवावें मवावस्यें । तभंते कि सादिके सपज्जव सेन गा सादियथा सपज्जवसिय बंधर । तिमच हे गोतम ! उपशांत मांह पवा दको पयो वसो उपशांत माह तथा चीण माह पण् पामस्ये ए भी गा तेहमें पूर्वे । पबवा । पणादियथा सपज्जवसियं बधइ । पणादि सांत बांधे भपवमो पपेचायें एभांगा जाणवा । मसवा । पणादियवा पपज्जवसि य बधर जाणवो मार्दं पपज्जवसिय बंधर । पणादि पनंत बांधे पभव्यनो भपेचायें ए भांगा जाणवा सादि सांपरायिक बंध मांह उपशमथको र । ते हेभगवन् ! स्यूं देशे करी कम्मों देश प्रते बांधें । एव जहेव इरियावहियबंधगस्स जाव सव्वेण सव्व बधइ । इम जिम जीव ऐर्या पथिक कर्म बंध कह्या तिम इहां पणि सव पाशार करी सव साम्परायिक कम बांधें पणरे तीन भांगे नवावें इत्यादि, पूर्वं कम वक्तव्यता कही छे, पणमे विषे जीव सय

नाम गमादि रूपपमान सम्परायिकप्रपयो स्वीति अनन्तरं कम्म वत्तव्यतो का ऽय कम्मस्वेय यथायोगं परीषहायतार निरूपयितुमिच्छुः कम्मप्रस्तो परीषहाय तावदाह ॥ कइण मित्यादि ॥ परीसहत्ति ॥ परीति समन्तात् स्वहेतुभि उदीरिता मार्गाच्यवननिर्जरार्थं साध्यादिभिः सह्यन्त इति परीषहा स्त च द्वाविंशति रिति ॥ दिगिंच्छत्ति ॥ बुभुक्षा सैव परीषह सयोग मर्मेषणीयभक्तपरिहारायथा मुमुक्षुणा परिषह्यमाण

कइण भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं०—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । कइण भंते ! परीसहा प० ? गोयमा ! बावीस परीसहा पण्णत्ता, तंजहा—दिगिंच्छापरीसहे

कतिभदन्त ! कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ता तद्यथा—ज्ञानावरणीयं यावत् अन्तरायिकं । कति भदन्त ! परीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्वाविंशतिः परीषहाः प्रज्ञप्ता तद्यथा—दिगिंच्छापरीषह पिपासापरीषहः यावत् दर्शनपरीषहः । एते प्र० । द्वाविंशतिःपरीषहाः कतिकर्म

प्रकृतो समवतार तेहभणी निरूपण करवा वाच्छता कहेछे—कर्मप्रकृति तथा परीसह पहिला कहेछे—आरंभते कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ । के तलो हभगवन् ! कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । भागमा अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ त । हेगौतम ! आठ कर्मप्रकृति कही ते देखाडेछे—णाणाव रणिज्ज जाव अंतराइयं आरभते परीसहा पं । ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आउखा ५ नाम ६ गोत्र ७ अन्तराय ८ ए आठ कर्मप्रकृति जाणवी पूर्वे कर्मप्रकृति कही, तेहने उदये जे परीसह आवे त कहेछे—कतथा हेभगवन् ! परीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बावीस परीसहा प त । हेगौतम ! बावीसपरीसह कह्या तिहां प्रथम कहिये समतपणो पोताने हेतुवे साधू भाविदेह, सहिये निर्जराने अर्थे उदी रित मार्गथकी अणपडवाने अर्थे ते परीसह कहिये ते कहेछे—दिगच्छा परिसहे । दिग सुधा तेहीज परीसह कहिये समस्तपण सेहवो ते किम तपने अर्थे तथा परिहारने अर्थे साधू जे सहवापणो सर्वो दिगच्छापरीसह अथवा निर्दोषआहार अणलाभते सचित्त प्रमुख आधाकर्मीक आहारनो इच्छा न करे ते दिगच्छापरीसह १ पिपासापरीसहे तपने अर्थे, तथा पाणीपरिहारने अर्थे साधु उपासहे पथ सम् उपासागे तोहो पणि काम् पाणी

त्वा "दिगिंछापरीसहेत्ति" एवं पिपासापरीषहोपि, नाव व्याख्यानसस्यास्थान मेव दृश्यं ॥ सीयपरीसहे उसिणपरीसहे ॥ शीतोष्णपरीषहौ यात पनार्यं शीतोष्णबाधाया मप्यग्निसेवाद्यकामाद्युत्पत्त्यपरिवर्जनातया मुमुक्षुणा तयोः परिषहमाणत्वा दय मुत्तरत्रापि ॥ दंसमसगपरीसहे ॥ दंशा मशकाश्च चतुरिन्द्रियविशेषा उपलक्षणत्वा द्यैया यूकामत्कुणमक्षिकादिपरिग्रहः परीषहता चैतेषा दंशव्यथा मुत्पादयत्स्वपि तेषामनिवारणजन्म द्वेषानायत्तः ॥ अचेलपरीसहे ॥ चेलाना वाससां अभावो ऽचेलं तच्च परीषहो ऽचेलतायां जीर्णाऽपूर्णमलिनादिचेलत्वे लज्जादैन्याकांक्षाद्यकरणेन परिषह्यमाणत्वा दिति ॥ अरइपरीसहे ॥ अरति र्मोहनीयजो मनोविकारः सा च परीषहः सम्यक्सहनन संयमादिति ॥ इत्थियापरीसहे ॥ स्त्रियाः परीषहश्च तन्निरपेक्षत्वं प्रज्ञावयमित्यथः ॥ चरियापरीसहे ॥ चर्या ग्रामनगरादिषु सञ्चरणं तत्परिषहणञ्च प्रतिबद्धतया तत्करणं ॥ निसीहियापरीसहे ॥ नैषेधिकी स्वाध्यायभूमिः शून्यागारादिरूपा तत्परिषहणञ्च तत्रोपसर्गे भ्रासः ॥ सेज्जापरीसहे ॥ शय्या वसति स्तत्परिषहणञ्च

पचसाभते सचित्तपाणी पीवानो वांछा न करे ते त्रपा परीसह, २ एम यावत् ग्रन्थकी एतला लखवा ते कहीछे—सीय प॰, सातें पीड्यो पणि न ठाणाने पण्यें पच्छेवडा नकरे ते सीतपरीसह ३, उसह प॰ उन्हे पीड्यावका उपणा टालवाने पंखें सामातिकल्प न करे साधू ४, दंस मांगे पणि श्वा, दंसमसग प॰, दंसामसा चउरिन्द्रीविशेष उपलक्षणथकी यूकामांकी मांकण ते व्यथा य सह देइ्यथा उपशावताथका पणि तेहने निवारे नही भय तथा द्वेषना अभावथकी ५ अचेलक प॰, चेल कहिये कपडा तेहनो अभाव ते अचेल ते सहवा ते जीर्ण मेलिभरया फाटी एसा कपडो पामने पामे देपो लाज दैन्य पाच्छादिकनो अणकरवा ते अचेल परीसह ६, अरति प॰, रति कहिये मोहनीयथको उपनो मनमाविकार तेहना निषेधकरी सहवाथको ७ इत्थिया प॰, स्त्रीना परीसह तेहनेविषे निरपेक्षपणो ब्रह्मचर्य पणो इत्यर्थ ८ चरिया प॰, चर्या ते ग्राम नगरादिकनेविषे चरवा तेहना परीसह ते प्रतिबद्धपणे करवा ९ निसीहिया प॰, नैषेधिकी कहिये स्वाध्यायभूमि शून्यागारादि रूप ते परीसह ते तिहां उपसर्ग उपना त्रास न पामे १० सेज्या प॰, शय्या कहिये वसति उपाश्रय ऊंचे नीचे सावद्ये मावद्ये सियाले ताढे उन्हाले उन्हे साधे शके समपहेग नांखे ते शय्यापरीसह ११, अ

तज्जन्यदु मारे कपथा ॥ अक्रोशपरीसहे वधपरीसहे ॥ आक्रोशो दुर्वचनं वधो यष्ट्यादिताडनं तत्परीषहणम्‌ क्षान्त्यवलम्बनं ॥ याचना परीसह ॥ याञ्चा लिंगम तत्परिषहणम्‌ तत्र मानवर्जनम ॥ अलाभपरीसहे ॥ अलाभ प्रतीत तत्परिषहणम्‌ तत्र दैन्याभावः ॥ रोगपरीसहे ॥ रोगो ज्वर तत्परिषहणम्‌ तत्पालामहर्षं चिकित्सावर्जनम ॥ तृणस्पर्शपरीसह ॥ तृणस्पर्श कुशादिस्पर्श तत्परिषहणम्‌ कादाचित्कतृणप्रहरे तत्स्पर्शम सुदुःखाधिसहन ॥ जल्लपरीसह ॥ जल्लो मल तत् परिषहणम्‌ देशतः सर्वतोवा स्नानोद्वर्तनादिवर्जनम ॥ सत्कारपुरस्कारपरीसहे ॥ सत्कारो वस्त्रादिपूजा पुरस्कारा राजादिकृताभ्युत्थानादि तत्परिषहणम्‌ तत्सद्भावे उत्कर्षवर्जनम तदभावे दैन्यवर्जनं तदनाकाङ्क्षेति ॥ प्रज्ञापरीसह ॥ प्रज्ञा मति ज्ञानविशेष तत्परिषहणम्‌ प्रज्ञाया अभाव उद्वेगाकरणं तद्भावे मदाकरण ॥ ज्ञानपरीसहे ॥ ज्ञान मत्यादि तत्परिषहणम्‌ तस्य

अज्ञान प पञ्चेन्द्रियमाज दशवणं करे निर्मदे मानिदोषे ताहो पण समसाहि आपणाथे ते पाआय परीसह १२ वध परीसहे, वधपरीसह कोइ दु ष्ट प्राणी मारतो म तथा पत्थर म तथा खड्गादिकेकरी मारे तोहो पणि खमा करे ते वध परीसह १३ याचना प , संघ मोच वसनविथे भिक्षा मा ग्या लाताबढा मनमे मानमाने मानकाडे ते याचना परीसह १४ अलाभ प , अतीवार अन्तराय कर्मने उदयेकरी सूजतु आहार न पामे तिवारे बोकाने पामता दलगो मनमा म्लान नधाय ते अलाभ परीसह १५ रोगपरीसहे, कर्मनेवसे राग मोव्हिक असेमकारे सहे परति न पावे सावद्य यो षध उपचारताओ वांछा न करे मवो ते रागपरीसह १६, तृणफास प , तृण सपयक वसे भूमिसर्श खरखरा हवे मन तृण दुस्पर्श तेहको खापना दुख ते मदे मन मेलो न करे १७ जल प , जलविषे मल जे शरीर ऊपर मलसायो ते सहवो ऊगवको तथा सवको तिहा देशयको ते स्नान सवदोत्त वर्तनं पोडीवमय ते जलश १८ सत्कार पुरिस्कार प सत्कार ते वस्त्रादिक पूजा पुरस्कार ते राजादिके कीधा उठवा तेहना परीसह तेहने सद्भावे पाताने उत्कर्ष नहीं तेहने अभावे भीमपणों नहीं तेहनो आकांक्षावोज मवो १९, प्रज्ञा प प्रज्ञा कहिये मतिज्ञानविशेष तेहनो परीसह प्रज्ञाने अ भावे उद्वेग न करे तेहने भावे मदाकार न करे २ ज्ञान प ज्ञान ते मत्यादिक तेहना परीसह ते विशिष्टने सद्भावे अहंकार न करे तेहने अभावे दीन

विशिष्टस्य सद्भाव मदवचन मनावेष दैन्यपरिवर्जनं प्रन्यान्तर त्वज्ञानपरीषह इतिपठ्यते ॥ दर्शनपरीसहे ॥ दर्शन सत्यश्रद्धान तत्परिषहणञ्च जिनाना जिनोक्तसूक्ष्मभावानांचा श्रद्धानवचन मिति ॥ कइसु कम्मपगडीसु समोयरतित्ति ॥ कतिषु कर्मप्रकतिषु विषये परीषहा समवतारं प्रज्ञ ती त्यर्थः ॥ पन्नापरीसहत्यादि ॥ प्रज्ञापरीषहो ज्ञानावरणे मतिज्ञानावरणरूप समवतरति प्रज्ञाया अभाव माश्रित्य तदभावस्य ज्ञानावरणोदय सम्भवत्वात यत्तु तदभावे दैन्यवजन तत्सद्भावेच मानवर्जन तचारित्रमोहनीयक्षयोपशमादे रिति एव ज्ञानपरीषहापि नवर मत्यादिज्ञाना

पिवासापरीसहे जाव दंसणपरीसहे । एएणं भंते ! बावीसपरीसहा कइकम्मपगडीसु समोयरंति ? गो० ! चउसुकम्मपगडीसु समोयरंति तं०—णाणावरणिज्जे वेयणिज्जे मोहणिज्जे अंतराइए। णाणावरणिज्जेणं भंते ! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गो० ! दोपरीसहा समोयरंति तं०—पन्नापरीसहे णाणपरीसहे । वेयणिज्जेणं

कतिषु समवतरन्ति ? गौतम ! चतुर्षु कर्मप्रकतिषु समवतरति तद्यथा–ज्ञानावरणीय वेदनीये मोहनीय अन्तरायिके । ज्ञानावरणीये भ० ! कर्मणि कतिपरीषहा समवतरन्ति ? गौतम ! द्वौ परीषहौ समवतरत तद्यथा–प्रज्ञापरीषहः ज्ञानपरीषहः । वेदनीये भ० ! कर्मणि कति

पर्वो वर्जे इहां मन्यान्तर अज्ञानपरीसह इसा कहीं २१—दर्शन प , दर्शन ते तत्व श्रद्धान परीसह देव गुरु धर्मनेविषे तथा सूक्ष्म निगोदआदि पुद्गल परावर्तादिकनेविषे संदेह नाणे २२ ए बावीस परीसह कह्या । एयणंभंते बावीसपरिसहा । ए० हेभगवन् ! बावीस परिसह । कइकम्मपगडीससमो यरंति । केतली कर्मप्रकृतिनेविषे समवतरें पामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउसुकम्मपगडीससमोयरंति तं । हेगौतम ! चार कर्मप्रकृतिनेविषे समवतरें तद्यथा ते कहीयें—णाणावरणिज्जे वेयणिज्जे मोहणिज्जे अंतराइए । ज्ञानावरणीयने विषे १ वेदनीयने विषे २ मोहनीयने विषे ३ अन्तरायने विषे ४ । णाणावरणिज्जेणंभंतेकम्मेकइपरीसहा समोयरंति । ज्ञानावरणीय हेभगवन् । कर्मनेविषे केतला परीसह समवतरे प्रश्न इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दो परी सहा समोयरंति तंजहा पन्नापरीसह णाणपरीसहे । हेगौतम ! दोय परीसह समवतरें ते कहीयें—प्रज्ञापरीसह मतिज्ञानावरणने विषे समवतरें

परवे यतरति " पचेत्यादि गाथा , पचेयमावपुव्वीति ॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकपरीषहा इत्यर्थं एतेपुच पीडैव वेदनीयोत्था तदपि सहमत् चारित्रमाहनीयक्षयोपशमादिमन्मव मपिमडनस्य चारित्ररूपत्वा दिति ॥ एगेदसणपरीसह समोयरइति ॥ यता दशन तत्वश्रद्धानरूप दशनमो हनीयस्य क्षयोपशमादौ सत्य तुदयेत भगवती त्यत सप दशनपरीषहः समवतरतीति ॥ अरइत्यादि ॥ गाथा , तत्रारतिपरीषहो ऽरतिमोहनी

न्ते । कइपरीसहा समोयरंति ? गो० ! एक्कारसपरीसहा समोयरंति, तंचेव आणुपुव्वी चरियासेज्जावज्जा एय । तणफासजल्लमेयय एक्कारसवेयणिज्जम्मि ॥ १ ॥ दंसणमोहणिज्जेण भंते ! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ । चरित्तमोहणिज्जेण भंते ! कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा !

परीषहाः समवतरन्ति ? गौतम ! एकादशपरीषहाः समवतरन्ति तद्यथा-पञ्चैवानुपूर्व्या चर्याशय्यावधवर्जाः । तृणस्पर्शोजल्लमलं एता वेदनीये ॥ १ ॥ दर्शनमोहनीये भ० ! कर्मणि कति परीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एको दर्शनपरीषहः समवतरति । चारित्रमोहनीय

तेहने पभावे हेभपना थका तेहने सद्भाव माने थका चारित्रमोहनीय क्षयोपशमादिकथकी अथवा इम प्रज्ञापरीसह पणि थवर मतिज्ञानेवि पे पराहे। वेदनियेभते कइपरीसहा समवतरति। वेदनीयकमने विषे हेभगवन्! केतला परीसह समवतर इतिप्रश्न । उत्तर। गोयमा एकारसप रीसहा समायरति त । हेगोतम! इग्यारे परीसह समवतरे ते कहेछे—पंचेव आणुपुव्वी चरियासेज्जावज्जेवरोगीय । तणफासजल्लमेयव एकारसवेय णिज्जंमि । १ । पचेव इत्यादि गाथा पंच अनुक्रमे ते कहा १ क्षुधा २ तृषा ३ सीत ४ उष्ण ५ दंशमशक ६ चर्या ७ शय्या ८ वध ९ रोग १० तृणस्पर्श ११ जल्ल मल ए इग्यारे परीसह तथा आपने ते वेदनीयथकी उपजे ते चरियासह्या ते चारित्रमोहनीय क्षयोपशमादिकथी उपजे चरियासहाने चारित्रप णावशी इग्यारह परीसह हे गोयमा। दंसणमोहणिज्जेणभंते कइ परीसहा समोयरति। दर्शन मोहनीयकमने विषे हेभगवन्! केतलापरीसह स मवतर इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगेदसणपरीसहे समोयरइ। हेगौतम! एक दर्शनपरीसह समाहे दर्शन ते तत्व श्रद्धानरूप ते दर्शनमोहनीयने क्षयो

ये तज्जन्यस्या दर्शनपरीषहो जुगुप्सामोहनीये सद्भावापेक्षया स्त्रीपरीषहः पुरुषवेदमोहे तदपेक्षयातु पुरुषपरीषहः स्त्रीवेदमोहे तत्वत स्त्याद्य जितापरूपत्वा तस्य, नैषधिकीपरीषहो भयमोहे उपसर्गभयापेक्षया याच्नापरीषहो मानमोहे तद्दुःकरत्वापेक्षया आक्रोशपरीषहः क्रोधमोहे क्रोधोत्पत्त्यपेक्षया सत्कारपुरस्कारपरीषहो मानमोहे मदोत्पत्त्यपेक्षया समवतरति सामान्यत स्तु सर्वे प्येत चारित्रमोहनीये समवतरन्तीति ॥ एगे अलाभपरीसहे समोयरइत्ति ॥ अलाभपरीषहः एवान्तराये समवतर त्यन्तराय च लाभान्तराय तदुदयएव लाभाभावात् तदविसंवाद

सत्तपरीसहा समोयरंति तजहा—अरईअचेलइत्थी निसीहियाजायणायअक्कोसे । सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोह मिसत्तेते ॥ १ ॥ अंतराइएण नंते! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ।

प्र० १ कमवि कति परीषहाः समवतरन्ति ? गौ० । सप्तपरीषहा समवतरन्ति तद्यथा—अरतीचाचेल स्त्री नैषेधिकीयाचनातथाक्रोशः । सत्कार पुरस्कारौ चारित्रमोहमवन्तिसप्तैते ॥ १ ॥ अंतरायिके प्र० । कमवि कति परीषहाः समवतरन्ति ? गौतम । एक अलाभपरीषहः समवतर

पयमा जिन जिवे हुवे पन तहन जद्रसे जहवे एतलामाटे जिहां दमनपरीसह अवतर । चरित्तमोहनिअभते कइपरीसहा समोयरति । चारित्रमोह मोहकमने विषे हेभगवन् । केतला परीसह समवतरे इविप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्त परीसहा समोयरति त । हेगोतम । सातपरीसह अवतरे ते कहे छे—अरती अचेलत्वो निसोहिया जायणा यक्कोसे । सकार परकारे चरित्तमोहंमि सत्तते । १ । अरतीत्यादि, तिहां अरतिपरीसह अरतिमोहनीयने विषे तेहवो उपनामाटे १ जुगुप्सामोहनीमनेविषे लाजनी अपेक्षायें २ इहां ए विशेष पुरुषनी अपेक्षायें स्त्री परीसह स्त्रीनी अपेक्षायें पुरुष परीसह तिहां स्त्रीपरीसह पुरुष वेदमोहनीयनेविषे स्त्री अपेक्षपणानो पुरुषपरीसह स्त्री वेदमोहनीयनेविषे पुरुष अपेक्षपणानो तत्सत्को स्त्र्यादिक अभि मापरूप पणानो तेहमें ३ नैषेधिकीपरीसह भयमोहनीयनेविषे अवतरे उपसर्ग भयनी अपेक्षायें ४ याचना परीसह मानमोहनीयनेविषे तेहना दुष्कर पणानी अपेक्षायें ५ आक्रोशपरीसह क्रोधमोहनीयनेविषे क्रोध उत्पत्तिनी अपेक्षायें ६ सत्कार पुरस्कार परीसह मोहनीयनेविषे अवतरे मद उत्पत्ति

चारित्रमोहनीयक्षयोपशम इति ॥ अथ प्रश्नस्थाना व्याश्रित्य परीषहान् विचारयन्नाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधबन्धकस्यायुर्वर्जसप्तकर्मबन्धकस्य ॥ जसमयं सीयपरीसहं मित्यादि ॥ यत्र समये शीतपरीषहं वेदयते न तत्रोष्णपरीषहं शीतोष्णयोः परस्परमत्यन्तविरोधेनैकदैकत्र सम्भवात् । अथ यद्यपि शीतोष्णयोः एकदैकत्र सम्भवः तथा व्याश्रित्य शीते तथाविधाग्निसन्निधौ युगपदेकस्य पुंस एकस्यां दिशि शीतमन्यस्यां चोष्ण

सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कइपरीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, वीसं पुण वेएइ । जंसमयं सीयपरीसहं वेएइ नो तंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ, जंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ नो तंसमयं सीयपरीसहं

ति । सप्तविधबन्धकस्य भदन्त ! कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्वाविंशतिःपरीषहाः प्रज्ञप्ताः विंशतिः पुनर्वेदयते, यस्मिन्समये शीतपरीषहं वेदयते नो तस्मिन्समये उष्णपरीषहं वेदयते । यस्मिन् समये उष्णपरीषहं वेदयते नो तस्मिन् समये शीतपरीषहं वेदयते । यस्मिन् समये

नो चर्यायां ० सामान्यचर्यायां च सातिरेकचारित्रमोहनीयमेवियं चर्यतरे । अंतरायपञ्चमतिकर्मणि अपरीसहा समोयरंति । भगवन् अलाभपरीसहः दर्शनमोहनीये समवतरति । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगे अलाभपरीसहे समोयरइ । हे गौतम एक अलाभपरीषहः अन्तरायकर्मणि समवतरति च लाभान्तराय तदनेनिये लाभः अलाभको तेहना परिणामथी ते चारित्रमोहनीय क्षयोपशम इति, हिवे बन्धस्थान आश्रयीने परीसह मतें विचारता कहेछे—सप्तविधबन्धकभगवन् कइपरीसहा पं । आयुकर्मवर्जीने सात विध कर्मबन्धकने हे भगवन् कितनापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ! बावीसपरीसहा पं वीसंपुणवेएइ । हे गौतम बावीस परीसह कह्या वली वीसपरीसहवेदे जंसमये ते कहेछे—जंसमयं सीयपरीसहंवेएइ नो तंसमयं उसिणपरीसहंवेएइ । जे समयनेविषे शीतपरीसह वेदे जंसमये ते समयनेविषे उष्णपरीसह वेदे जंसमये नहीं शीतउष्णने मांहोमांहि अत्यन्त विरोधिकरी एकठा न रहवे हिवे जो यदि शीत उष्णना एक वेलायें एकठो संभवहे अत्यन्त शीतकालें तथाविध अग्निसमीपे समकाले एक पुरुषने एकदिशि शीत बीजीदिशे उष्ण इम वली शीतउष्णपरीसहना यदि संभवहे तो यदि इस न कहवा जेमाटे इहां आश्रित शीतउष्ण आश्रय प

मित्यव द्वयोरपि शीतोष्णपरीषहयो रसि सम्भवः, नैतदेवं आसन्नशीतोष्णासमस्या इति कृतसूक्ष्मेक्षिकयाऽपि व्यतिकरस्तथा प्रायेण तपस्विनामसमा
का इति तथा ॥ जंसमयं चरियापरीसहं मित्यादि ॥ तत्र चर्या ग्रामादिषु सञ्चरणं नैषेधिकी च ग्रामादिषु प्रतिपन्नमासकल्पादेः स्वाध्यायादि
निमित्तं शय्यातो विविक्ततरोपाश्रये गत्वा निषदनं मेवंचा नयो विहारावस्थानरूपत्वेन परस्परविरोधान्नैकदा सम्भवः अथ नैषेधिकीवत्

वेएइ, जंसमयं चरियापरीसहं वेएइ नो तंसमयं निसीहिया परीसहं वेएइ जंसमयं निसीहियापरीसहं वेएइ नो तंसमयं चरियापरीसहं वेएइ। छव्विहबंधगस्स णं भंते! कइ परीसहा पण्णत्ता, गोयमा! बावीस परी

चर्यापरीषहं वेदयते नो तस्मिन्समये नैषेधिकीपरीषहं वेदयते यस्मिन्समये नैषेधिकीपरीषहं वेदयते नो तस्मिन्समये चर्यापरीषहं वेदयते।
षड्विधबन्धकस्य भ०। कति परीषहाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! द्वाविंशतिः परीषहाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-क्षुधापरीषहः पिपासापरीषहः शीतपरीष

थांयको ते परिषह सघने विषे पहवा एम न करवा ते प्राये अमत तपस्वीने न घटे। जसमय उष्णपरीसह वेदए ते तसमयं शीतपरीसह वेदए। जे समयनेविषे चर्यापरीसह अनुभवे ते समयनेविषे निषिध्यापरीसह अनुभवे नही। जसमय चरियापरीसहं वेदइ नो तसमयं निसीहियापरीसह वेदइ। जे समयनेविषे निषिध्यापरीसह वेदे ते समयनेविषे चर्यापरीसह न वेदे तिहां चर्या ते ग्रामादिकनेविषे संचरवो अने नैषेधिकी ग्रामादिकने विषे पडिवज्या मास कल्पादि निमित्ते शय्याथी विविक्ततर उपाश्रयनेविषे जाय बेसवो एहने विहार अवस्थान रूपपणे करी माहोमाहि विरो धपणो एकवेलाए संभव नथी ते माटे जम नैषेधिकीनोपरे शय्यापरीसह पणि चर्यापरीसह संघाते विरुद्ध तेहनो पणि एकवेलाए संभव नथी ते भणी एक वेलाए ओगणीस परीसह वेदे एहवो कह्यु जोइये तेहने एम कहिये ते कहुं तिम नथी जेमाटे ग्रामादिकनेविषे जावा मांडे उत्सुकपणे करी परिणामि श्रोअविश्राम भावनादि पर्ये प्रवर्त्तमानपणे करी तिवारे पणि विराधनतो तस्य विहारे कारण उपरम थको नियत्ती नथी ते परिणामे श्रोअविश्राम भावनादि पर्ये इत्वरशय्यानेविषे वर्त्तते तिवारे तेहनी पणि विराधनतो तस्य को वर्त्तवे समकाल पर्यायथी ते भावथी भावथकी थयो कारएक अर्थे ना एमजे ता तिम पडवा अभ्याययोगे करशे, जंसमयं चरियाप

पर्यंव नपुंसकवेदो उपशमकाले अनिवृत्तिबादरसम्परायो भवति तथा कस्यचिदभिप्रायेण त्वन्यातरमतेन दर्शनत्रयस्य उपशान्ते उपशान्ते स्त्री पथा मुपशान्ते एव स्यात् नपुंसकवदथा सौ तीमतो पशामयितु मुपक्रमते ततश्च नपुंसकवेदोपशमावसरे अनिवृत्तिबादरसम्परायस्य सतो दश नमोहस्य प्रदेशत उदयासित मतुततैव तत तत्प्रत्ययो दर्शनपरीषह सत्यासीति ततया द्वावपि प्रवर्तोति सूक्ष्मसम्परायस्यतु मोहसत्ताया मपि नपरीषहहेतुभूतः सूक्ष्मोपि मोहनीयोदयो सीति नमोहजन्यपरीषहसम्भव आह-मोहनिमित्ताभावेपि शायररागेपरीषहाविकेषु । किंचि यातुमसरागे मनुतिउवशामस्सवे ॥ १ ॥ भाषाय आह-सतगपरवलियज कसायरोजभावावससम्मि । मणिसमिपुरिस लगइतीदसकस्साविं ॥ २ ॥

नोतसमयं सीयपरीसहं वेएइ, जंसमय चरियापरीसह अएइ नोतसमय सेज्जा परीसह वेएइ, जसमय सज्जा

शय्यापरीषहं चैव वेदयते नो तस्मिन् समये चर्यापरीषहं वेदयते । एकविधबन्धकस्य प्र० । वीतरागछद्मस्थस्य कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ?

तेहने हम कहिवे जे कारणमको इगनवनम उपशमने अपरशोम नपुंसकवेद उपशम कालनेविषे अनिवृत्तबादर सम्परायहुवे, ते भाषाप्रमादि व्यति रिक्त अन्यान्तर मते करी दर्शन तीनने सत्भाग उपशान्तथयां पेच अनपशान्त थकाज हुवे, नपुंसकवेद पण तिवे उपशमाविवाने उपक्रम करे तिवा रे नपुंसकवेद उपशमने अवसरे निहत्तबादर सम्परायने छते दर्शनमोहनीयनो प्रदेशथको उदयछे पविनदो सत्तावेज तिवारे ते प्रत्ययदर्शनपरीसह तेहभणी तिवारे बाईस परीसह हुवे अने सूक्ष्मसम्परायने मोहनीयसत्तावको पविपरीसह हेतुभूत नवो सूक्ष्म पवि मोहनीयनो उदयछे पवि मोहज न्य परीसहना संभवको जे सूक्ष्मसम्परायने सूक्ष्मलोभ कोठोमा उदयछे ते परीसह हेतुभूत नथो साभहेतुकने परीसहना अभावथायथको अथवा कांई कदाचित् प्रकारे एआ हुवे तो तेहने अभ्यपने करी छतां विवचा न कोधी तेमाटे चउदे चौद परीसह आपज । बारसपवबेएइ । बारे सर्वो वेदे । जमस य सीयपरीसहं वेएइ नो तंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ । जे समये सीतपरीसह वेदे ते समये उष्णपरीसह न वेदे । ज समयं उसिणपरीसहं वेएइ नो तं समयं सीयपरीसह वेदइ । जे समयें उष्णपरीसह वेदे ते समयें सीतपरीसह न वेदे । ज समय चरियापरीसहं वेएइ नो तं समय सेज्जापरीसह वेएइ ।

सन्नरपममकर्म पञ्जुपमुद्दमोदछतउमठ । तसमनखिपानसुहुमे गतस्मसुहुमोन्तुविअ्ठे त्ति ॥ ३ ॥ यद्य सूक्ष्मसम्परायस्य सूक्ष्मलोभकिट्टिकाना मुद यौ मामौ परीषहेतु लोभस्तुकस्य परीषहस्या नमिधामा घटिष कापि कथचि दशौ स्या तदा तस्यश त्यमतास्पस्वेना वियक्षति ॥ एगविहबंध गम्मशि ॥ यन्नीययघकस्येत्यय कस्ततस्य स्यत घाड ॥ वीयरागछउमत्थस्सत्ति ॥ उपशान्तमोहस्य क्षीणमोहस्य च त्यथ ॥ एयथवत्यादि ॥ चतु

परीसहचेग्र वेएइ नोतंसमयं चरियापरीसह वएइ, एक्कविहबंधगस्सण भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कइपरीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहेव छव्विहबंधगस्स । एगविहबंधगस्सण भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कइपरीसहा प० गो० एक्कारसपरीसहा प०, नव पुण वेएइ, सेस जहा छव्विहबंधगस्स । अबंधगस्सण

गौतम ! यथ यथैव षड्विधबन्धकस्य । एकविधबन्धकस्य भ० ! सयोगिभवस्थकेवलिन कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एकादश परीषहाः प्रज्ञप्ता नव पुन र्वेदयते शेष यथा षड्विधबन्धकस्य । अबन्धकस्य भ० ! अयोगिभवस्थकेवलिनः कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! एकादश

तथा ज समय चर्यापरीसह वेदे तिन्हिसमये शय्यापरीसह न वेदे । ज समय सेज्जापरीसह वेदइ ते समय चरियापरीसह वएइ । जे समये शय्यापरीसह वदे ते समयें चर्यापरीसह न वेदे । एगविध बंधकभगवंते वीतराग छद्मस्थने कइपरीसहा प । एक वेदनीयना बंधकने त खुद तकहिये—उपशांतमोहने इग्यारम एतले एकविध बंधक हेभगवन् । वीतराग छद्मस्थने केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गौयमा एमज कहेव छव्विहबंधगस्स । हे गौतम । एमहीज जिम छविध बंधकने कह्या तिमकहवो एतले चउदे कह्या वली बारे वेदे शीत थके उष्ण वा थके शय्या एहने पाये वेदनायको । एगविहबंधगभगवंते सजोगि भवत्थ केवलिस्स कइ परीसहा प । एकविध बंधकने हेभगवन् । पणि केवलीने सजोगी भवस्थकेवली एतले तेरमे गुणस्था नकवर्तीने केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गौयमा एक्कारसपरीसहा पं । हेगौतम । वेदनीयसम्बन्धी इग्यारेपरीसह कह्या, नवपरीसह वली वेदे इतिभाव शेष ज विध बंधकपरे कहवा एतले शीत थके उष्ण अथवा थके चर्या मांहोमांहि विरोधीयको । अबंधगभगवंते अजोगि भवत्थकेवलिस्स

पर्यव नपुंसकवेदेन उपशमकाल ऽनिवृत्तिबादरसम्परायो भवति तथा वश्यकाद्विव्यतिरिक्तमन्यावस्मतेन दर्शनत्रयस्य वृत्तिभागे उपशान्ते तो यथा मुपशान्ते एव स्यात् नपुंसकवेदं वा सौ तेनसहो पशमयितु मुपक्रमते ततश्च नपुंसकवेदोपशमावसरे अनिवृत्तिबादरसम्परायस्य सतो दर्श नमोहस्य प्रदेशात उदयोस्ति नतु तैव, तत सारमस्यापो दर्शनपरीषह सस्यासीति ततया ह्यावपि भवन्तीति सूक्ष्मसम्परायस्यतु मोहसत्तामा मपि नप रतुभूतः सूक्ष्मोपि माहमीयोदयो स्तीति नमोहजन्यपरीषहसम्भव माश्रव–मोहनिमित्ताधारणपि मायररागेपरीषहाविरहसु । किंचि वासुम णवसामयमत्ते ॥ १ ॥ भावाय च्याह–सतगपरदशियज बवापरोअवधायसलम्मि । मण्णिमिपुरिसे सम्मततोहसयरसावि ॥ २ ॥

ीसहं वेएइ, जसमय चरियापरीसह अएइ नोतसमय सेज्जा परीसह वेएइ, जसमय सज्जा

तस्मिन् समये चर्यापरीषह वद्यते । एकविधबन्धकस्य भ० । बीतरागछद्मस्थस्य कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ?

मच उपशमने अपरहोय नपुंसकवेद उपशम कामनेविषे अनिवृत्तिबादर सम्परायहुवे, ते भावप्रकाशि म्यति भाम उपशान्तवर्ती मेव मनुपशान्त वर्तान हुवे, नपुंसकवेद पण तिवें उपशमाविवाने उपशम करे तिवा रायने तते दर्शनमोहनीयनो प्रदेशनो उदयके पणिमही सत्तामेज तिवारे ते प्रस्यदर्शनपरीसह मोहनीयसत्तावत्ती पणि परीसह हेतुभूत नही सूक्ष्म पणि मोहनीयना उदयके पणि मोहव उदयके ते परीसह हेतुभूत नही लाभहेतुवने परीसहना भववहवायनो अथवा कांई न कोधो तेमाटे चवदे होय परीसह अपज । बारसपवेदए । बारे वली वेदे । असम मय वेदे ते समये उष्णपरीसह न वेदे । ज समय उष्णपरीसह वेदए वो त मे । ज समय चरियापरीसह वेदए वो त समय सेज्यापरीसह वेदए ।

तन्नत्पयमभर्मं पळसमुइमोदसंतठमठ । तस्मनयियामसुडुमे गतस्ससुडुमोरज्ञविभ्रठ ति ॥ ३ ॥ यत्र सूक्ष्मसम्परायस्य सूक्ष्मलोभकिट्टिकाना मुद या नासौ परीषहहेतु सौभहगुकस्य परीषहस्या नभिधामा घदिच कापि कथचि इसी स्या तदा तस्यहा स्यमताल्पत्वेना विवक्षति ॥ एगविहबंध गम्मति ॥ यदनीयबंधकस्यत्यय। कस्यतस्य त्वत भाइ ॥ वीयरागछउमत्थस्सत्ति ॥ उपशान्तमोहस्य क्षीणमोहस्यच त्ययः ॥ एवषवत्यादि ॥ चत्

परीसहचेय वेएइ नोतसमयं चरियापरीसह वेएइ, एक्कविहबंधगस्सण भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कइपरी सहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहेव छव्विहबंधगस्स । एगविहबंधगस्सण भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कइपरीसहा प० गो० एक्कारसपरीसहा प०, नव पुण वेएइ, सेस जहा छव्विहबंधगस्स । अबंधगस्सण

गौतम । एवं यथैव षड्विधबन्धकस्य । एकविधबन्धकस्य भ० । सयोगिभवस्थकेवलिनः कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । एकादश परीषहाः प्रज्ञप्ता नव पुन र्वेद्यते शेषं यथा षड्विधबन्धकस्य । अबन्धकस्य भ० । अयोगिभवस्थकेवलिनः कतिपरीषहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । एकादश

तवार ज समय चर्यापरीसह वेदे तिणिसमये शय्यापरीसह न वेदे । ज समय सेज्यापरीसह वेदइ ता त समय चरियापरीसह वेदइ । जे समये शय्याप रीसह वेदे त समये चर्यापरीसह न वेदे । एकविध बंधगछद्मस्थभते वीतराग छद्मस्थ कइपरीसहा पं । एक वेदनीयना बंधकने त गुण ठाकहिये—उप शांतमोहने इग्यारमे तथा बारमे एकविध बंधक कहेभगवन् । वीतराग छद्मस्थने केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एमचेव जहेव छव्विहबंधगस्स । हे गौतम । एमहीज जिम छव्विध बंधकने कह्या तिमकहवो एतल चउदे कह्या पणी बारे वेदे शीत पने उष्णवया पने शय्या एवेजने चर्याये वेदनावणी । एगविहबंधगछद्मस्थभते सजोगि भवस्थ केवलिनकइ परीसहा पं । एकविध बंधकने हेभगवन् । यपि केवलाने सयोगी भवस्थकेवली एतले तेरमे गुणस्था नवर्तीन केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गायमा एकारसपरीसहा पं । हेगौतम । वेदनीयसम्बन्धी इग्यारेपरीसह कह्या, नवपरीसह वली वेदे श्वाउ मध के विध बंधकनोपरे कहवा एतले शीत पने उष्ण मरथा पने चर्यामे माहामाहि विराधीपणो । अबंधगछद्मस्थभते अजोगि भवस्थकेवलिस्स

पंचम

इस प्रकार द्वादश पुन वध्यती त्यथ शीतोष्णयो यथासम्भवेन पर्यायेण वेदनादिति सम्प्रति परीषहा उक्ता कोपुषोत्तपरीषह सद्वेलकस मू

त्ते । सजोगिभवत्थकेवलिस्स कइपरीसहा पण्णत्ता? गोयमा ! एक्कारसपरीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेएइ । जंसमयं सीयपरीसहं वेएइ नोतंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ, जंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ नोतंसमयं सीयपरीसहं वेएइ, जंसमयं चरियापरीसहं नोतंसमयं सेज्जापरीसहं, जंसमयं सेज्जापरीसहं नोतंसमयं चरियापरीसहं वेएइ जम्बुद्दीवेणं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति मज्झंतियमुहुत्तंसि

परीषहाः प्रज्ञप्ता नव पुन र्वेदयते । यस्मिन् समये शीतपरीषहं वेदयते नो तस्मिन् समये उष्णपरीषहं वेदयते यस्मि न्समये उष्णपरीषहं वेदयते नो तस्मिन् समये शीतपरीषहं वेदयते । यस्मिन् समये चर्यापरीषहं वेदयते नो तस्मि न्समये शय्यापरीषहं वेदयते यस्मिन् समये शय्या परीषहं वेदयते नो तस्मि न्समये चर्यापरीषहं वेदयते ॥ जम्बूद्वीपे भ० ! द्वीपे सूर्यौ उद्गमनमुहूर्ते दूरे च मूले च दृश्येते मध्यान्तिक

बावीसमा प । पणम्यकने केमगवन् ! पवि मवस्थक केवली ने वरमें गवम्यानकवर्तीने केतला परीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एकारसप रीसहा प मुपनवा । केवलीने । इग्यारे परीसह कह्या नव वली वेदे ते देखाडे छे—जसमयं सीयपरीसह वेएइ । जे समये शीतपरीसहने वेदे । ना तंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ । ते समयनेविषे उष्णपरीसह वेदे नहीं तथा । जसमयं उसिणपरीसहं वेएइ । जे समयनेविषे उष्णपरीसह वेदे । नातसमयं सीयपरीसह वएइ । ते समयनेविषे शीतपरीसह न वेदे । जसमय चरियापरीसह वेएइ । तथा जे समयनेविषे चर्यापरीसह वेदे । नोतंसमयं सेज्जापरी सह वेएइ । ते समयनेविषे शय्यापरीसह वेदे नही । जंसमयं सेज्जापरीसह वेएइ । तथा जे समयनेविषे शय्यापरीसह वेदे । नोतंसमयं चरियापरीसह वेएइ । ते समयनेविषे चर्यापरीसह वेदे नही पूर्वोक्त परीसह कह्या तेहनेविषे उष्णपरीसह कह्या तेहनो हेतु सूर्य एतलामाटे सूर्यवक्तव्यता निरूपण क रतां कहे छे—जम्बुद्दीवेणं सूरिया उग्गमण मुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति । जम्बूद्वीप हेभगवन् सूर्य उगमवाकालना मुहूर्तनेविषे सूर्यना पवि देखवावार

या इत्याः सूत्रव्याख्याता मिकपय माह ॥ जंबूद्दीवेत्यादि ॥ दूरेयमूलेयदीसतित्ति ॥ दूरेय ? द्रष्टुस्थानापेक्षया व्यवहित देशे मूले चासन्ने द्रष्टृप्रती त्यपेक्षया सूर्यो दृश्यत द्रष्टाहि स्वरूपतो बहुनि योजनसहस्रे व्यवहित मद्गमासमयाः सूर्यं पश्यति आसन्न पुन मन्यते सङ्गतसु विप्रकर्ष सत

मूलेय दूरेय दीसति श्रत्यमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति ? हंता गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उ ग्गमणमुहुत्तसि दूरेय तचेव जाव श्रत्यमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति। जंबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उग्ग

मुहूर्त मूलप दूरप दृश्यन्त अस्तमनमुहूर्ते दूरप मूलप दृश्यन्त ? हन्तगौतम । जम्बूद्वीप द्वीप सूर्या उद्गमनमुहूर्ते दूरेय मूलच दृश्यन्त त

ना व्यासवना अपेचाये व्यवहित देशनेविषे ना पनि ढूकडा देखनहारनो अपेचाये वेज सूर्य द सेहे—मध्यान्तिय मध्यास मूलेय दू ग दीसति। म ध्य भन्न विभाग आकाशना अथवा दिवसनो ते मध्यान्तिक कहिये ते ज महरतमे छे ते मध्यान्तिक महूर्त तेहनविषे ढूकडा देशनेविषे सूर्यके देखनहार ना व्यासवनो अपेचाये वगना देशमें देखनहार मतातनो अपेचाये वासे। अत्यमणमुहुत्तसि दूरेयमूलेय दीसति। आथमता मुहूर्तनेविषे पनि दूरवका ढूकडा वासे एतम मूर्य उगता तथा आथमता दूरथको ढूकडादीसे तथा मध्याह्नविषे ढूकडाथका वेज सूर्यदीसे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जम्बूदीव

? जाव अत्थमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति । तिमहीज ते मध्याह्नविषे ढूकडाथका पनि अलगा दासे अत्थमणमहुर्तनेविषे दूरथका पनि ढूकडा दो से। जंबूदीवेणभंते दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि । जंबूदीपनामा हेभगवन् द्वीपनविषे वेज सूर्य उदयकालना मुहूर्तनेविषे। मज्झन्तिय मुहुत्तसिय अत्थम णमुहुत्तसिय सव्वत्थसमाउच्चत्तेणं। मध्यान्तिक महूर्तनविषे दीपहरनेविषे तथा आथमन महूर्तनेविषे समभूतल पृथिवी अपेचाये सगसेमराजा छव पदे पूवे एतमे समधेसरोजा पाठसे याजन ऊंचपणे पूवे इतिप्रश्न उत्तर हंतागोयमा जंबूदीवेणं दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेणं। हांगौतम जम्बू पनामा द्वीपनविषे वेज सूर्य उगमन तथा मध्यान्तिक तथा आथमनमुहूर्तनविषे समभूतल पृथिवीनो अपेचाये सगसेसरोजो पाठसोयाजन ऊंचपणे छ

मपि नप्रतिपद्यत इति ॥ मज्झतियमुहुत्तसि मूलेय दूरय दीसतित्ति ॥ मध्यो मध्यमो न्तो विनागो गगमस्य दिवसस्यया मध्यान्त स यस्य मुहुत्त स्यास्ति समध्यान्तिकः सचासौ मुहूर्त्तवति मध्यान्तिकमुहूर्त्ते तत्र मूलेच भासन्नदश द्रष्टृस्थामापेक्षया दूरच व्यवहिते देश द्रष्टृप्रतीत्यपेक्षया सूर्यौ दृश्येते द्रष्टारि मध्याह्न उदयास्तसमदय्मापेक्षया सन्न रवि पश्यति यावनभ्रताष्टकमेव तदा तस्य व्यवहितत्वा न्मन्यत पुन उदयास्तसमयमतीत्य पत्तया दूरव्यवहित मिति ॥ सव्वत्यसमाउच्चत्तवति ॥ समभूतमापेक्षया सहस्रोस्य मष्टौ योजनशतानी तिकस्वा ॥ तसापविपारयति ॥ तेजसः

मणमुहुत्तसिय मज्झंतियमुहुत्तसिय अत्थमणमुहुत्तसिय सव्वत्यसमा उच्चत्तेण ? हंता गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेण । जइणं भंते ! जंबूद्दीवे दीव सूरिया उग्गमणमुहुत्तसिय मज्झतिय मुहुत्तसि अत्थमणमुहुत्तसि मूल जाव उच्चत्तेण । सेकेणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ जंबूद्दीवेण भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति जाव अत्थमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति ? गोयमा !

येव याव दशममनमुहूर्त्ते दूरच मूलच दृश्यन्त । जम्बूद्वीपे भ० । द्वीप सूर्यो उद्गमनमुहूर्त्ते मध्यान्तिकमुहूर्त्ते अस्तमनमुहूर्त्ते च सर्वत्र समा उच्चत्वेन ? हन्त गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीप सूर्यो उद्गमनमुहूर्त्ते याव उच्चत्वेन । यदि भ० । जम्बूद्वीपे द्वीप सूर्यो उद्गमनमुहूर्त्ते मध्यान्तिकास्तमनमुहूर्त्ते मूल याव उच्चत्वेन । अथ पुन भ० । कस्मादेव मुच्यत जम्बूद्वीपे द्वीप सूर्यो उद्गमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलच दृश्यन्त याव दस्तमनमुहूर्त्ते दूरच मूले

वे । जदणभंते जबूदीवे सूरिया उग्गमण मुहुत्तसि मज्झतिय मत्थमणमुहुत्तसि जाव उच्चत्तेण । जो म पाक्यासकारे, हे भगवन् जबूद्वीपनामा द्वीपमेंविषे बे सूर्य उगता मुहूर्त्तनेविषे मध्याह्नितकमुहूर्त्तनेविषे आथमणमुहूर्त्तने सघलामध्यो यावत् ऊचपणें छव । सेकेण आरगरूपकते पयस्ना । ता किस्से स्याति पमिइपवें हे भगवन् इमकह्य । जबूद्वीपविषेबेसूरिया उग्गमण मुहुत्तसि दूरेय मूलेय दासंति । जबूद्वीपनामा द्वीपमेंविष सूर्य उदयकालमा मुहूर्त्तनविषे दूरथका पणि दूकडा दीसे इम मध्याह्नविषे दूकडाथका पणि मलगा दीसे । अत्थमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति । यावत् आथमण मुहूर्त्ते

प्रतिघातेन दूरतरस्या तद्देशस्य तदमसरणन त्वष   लश्याप्रतिघातहि सुखदृश्यत्वेन दूरस्थोपि स्वरूपेण मूय ऽऽसन्नप्रतीति जनयति ॥ लेश्याभि तापवति ॥ तत्रशोभितापन मध्याह्ने प्रासन्नतरत्वा स्पूय लेश्या प्रतपति तेज प्रतापेन दुर्दृश्यत्वेन प्रत्यासन्नो प्यसौ दूरप्रतीति जनयतीति ॥

(ग्रथाग्र ५०००) लेस्सापडिघाएण उग्गमणमुहुत्तसिय दूरेय मूलेय दीसति, लेस्साभितावेण मज्झंतिय मुहुत्तसि मूलेय दूरेय दीसति लेसापडिघाएण अत्थमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति सेतेणट्ठेण गोयमा! एय वुच्चइ जंबूद्दीवेण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति जाव अत्थमण जाव दीसति।

च दृश्यते ? गौतम। [ग्रन्थाग्र ५०००] लेश्या प्रतिघातेमो द्गमनमुहूर्ते दूरेच मूलेच दृश्यते लेश्याभितापेन मध्यान्तिकमुहूर्ते मूलेच दूरेच दृश्यते लश्याप्रतिघातना स्तमनमुहूर्ते दूरेच मूलेच दृश्यते तत्तनार्थेन गौतम। एव मुच्यते जम्बूद्वीपे द्वीपे सूर्यो उद्गमनमुहूर्ते दूरेच मूलेच

विषे पलगायका पनि दूकडा दोसे इतिप्रश्न उत्तर मायमा य [५] लेश्यापडिघातेण उग्गमण महुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति। हेगौतम यथ ५ स च तवने प्रतिघाते करीमे पतिदूर पर्वाणो ते देमने तमाटे तेमना प्रसरच न हुवे तेहथी लश्या प्रतिघात थयां सर्वे देखवायोग्य पर्णे करी दूर रगायका पनि सूर्यस्वरूपे करी पासमप्रतीति उपजावे ढूकडा दीसवे इत्यथ। लेश्या भितावेण मज्झतिय मुहत्तसि मूलेय दूरेय दीसति। तेवने पभि ताप करिये प्रथमपर्णे मध्यदिवसे पति पासमपर्णावको सूय तेजेकरी प्रकाशे तपे ते तेवने प्रतापे दुःखें देखवायोग्य पर्णेकरी ढूकडावका पनिप्रत्ये दूर प्रतीतिप्रते उपजावेचे। लेस्सापडिघाएण अत्थमण मुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति। वलो तिमज तेजम प्रतिघातेकरी पाथमण मुहूर्तनेविषे दूरपका पनि ढूकडा दोसे। सतेणट्ठेण गोयमा एववुच्चइ। ते तेषे थथ हेगौतम इमकहु। जम्बूद्दीवेणदीवेसूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरेय मूलेय दीसति। जम्बूद्वीपनामा द्वीपनविषे बेउ सूर्य उगतावाखत मुहूर्तनविषे दूरथका पनि ढूकडा दोसे। जाव अत्थमण दीसत। यावत् आथमण मुहूर्तमेविषे दूरथका पनि ढूकडा दीसे एतला सगे कहवा वलीगौतम पूछेछे—जम्बूद्वीपेभंते दीवे सूरियाकि तोतखत गच्छति। जम्बूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे सूय ? पतीत चेत्र

[illegible] गच्छति ॥ पडुप्पन्नं [illegible] ॥ [illegible] गम्यमानं क्षेत्रं ॥ नोगम्यमानं [illegible] ॥ गमिष्यमाणं क्षेत्रं [illegible]
॥ [illegible] नाप्नोति ननु [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ पुच्छति ॥ गोयमा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] उज्जोवेंति [illegible] गोयमा ! [illegible] मासमानक्षेत्रं [illegible]

[illegible] णो । सूरिया किंतीयं खेत्तं गच्छन्ति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छन्ति, अणागयं खेत्तं गच्छन्ति ? गो० !
नो तीयं खेत्तं गच्छन्ति पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छन्ति नो अणागयं खेत्तं गच्छन्ति । जम्बूद्दीवे णं भंते ! सूरिया किं
तीयं खेत्तं उज्जोवेंति पडुप्पन्नं खेत्तं अणागयं खेत्तं उज्जोवेंति ? गोयमा ! नातीयं खेत्तं पडुप्पन्नं खेत्तं

[illegible] जम्बूद्वीपे भदन्त ! द्वौ सूर्यौ किमतीतं क्षेत्रं गच्छतः प्रत्युत्पन्नं क्षेत्रं गच्छतः अनागतं क्षेत्रं गच्छतः ?
गौतम ! [illegible] क्षेत्रं गच्छतः प्रत्युत्पन्नं क्षेत्रं गच्छतः नो अनागतं क्षेत्रं गच्छतः । जम्बूद्वीपे भदन्त ! सूर्यौ किमतीतं क्षेत्रं [illegible]
[illegible] क्षेत्रं [illegible] अनागतं क्षेत्रं [illegible] ? गौतम ! नातीतं क्षेत्रं प्रत्युत्पन्नं क्षेत्रं [illegible] नो अनागतं क्षेत्रं [illegible] ।

[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । वर्तमान क्षेत्रमें जाते हैं । [illegible]
[illegible] । [illegible] । अतीत क्षेत्र [illegible] अतीत क्षेत्र [illegible]
[illegible] । [illegible] । अनागत क्षेत्रमें [illegible] अनागत में [illegible]
[illegible] । [illegible] ? अतीत क्षेत्रमें [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] अनागत क्षेत्रमें [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible]

त्यादि, भन्ते ! कइदिसिं ओभासइ गोयमेत्येतदभामिति ॥ उज्जोयतित्ति ॥ उद्द्योतयत प्रत्ययं द्योतयत ॥ सर्वतित्ति ॥ तापयत उष्णरश्मित्वा त्तयोः ॥ भासंतित्ति ॥ भासयतः शोभयत इत्यथ उक्त मवार्थं शिष्यहिताय प्रकारान्तरणाह ॥ अनु इत्यादि ॥ किरिया कज्जइत्ति ॥ अवभासनादि का क्रिया क्रियते इत्यर्थः ॥ पुट्ठत्ति ॥ तेजसा स्पृष्टाम् स्पर्शनात् भासा स्पृष्टा ॥ एग जोयणसयं उड्ढं तवतित्ति ॥ स्वविमानस्यो परि योजनशतप्रमा

ओभासंति नो अपुट्ठं ओभासंति । त भंते ! किं पुठ्ठं ओभासंति किं अपुठ्ठं ओभासंति ? गोयमा ! पुठ्ठं ओभासंति नो अपुठ्ठं ओभासंति जाव नियमा छद्दिसिं । जम्बूद्दीवेणं भंते ! सूरिया कितीय खेत्तं उज्जोवेंति एवचेव जाव नियमा छद्दिसिं एवं तवेंति एवं भासेंति जाव नियमा छद्दिसिं । जम्बूद्दीवेणं भंते ! सूरिया

त भदन्त ! किं स्पृष्टं अवभासयन्ति अस्पृष्टं अवभासयन्ते ? गौतम ! स्पृष्टं अवभासयन्ते नो अस्पृष्टं अवभासयन्ते याव नियमात् षड्दिशं । जम्बूद्वीपे भ० ! द्वीपे सूर्यौ किं क्षेत्रं उद्योतयन्ति एवमेव याव नियमात् षड्दिशं । एवं तापयन्त एव भासयन्तो याव नियमात् षड्दिशं ।

भासे उद्योत करे । तापवन्त अवभासंति । अनावतवत प्रत पवि उद्योतकरे नहीं तो गौतम पूछेछे—तभंते किंपुट्ठ ओभासति अपुट्ठभाभासंति । ते भगवन् स ? तेजें करी स्पर्श्यो ते अवभासे किंवा अस्पर्श्यो अवभासे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुट्ठभाभासंति नोअपुट्ठभाभासति जाव नि यमा छद्दिसि । हेगौतम स्पर्श्यो अवभासे पणि अस्पर्श्यो अवभासे नहीं एवं यावत् अवश्यको एतलो कहवो, तंभंते किंओगाढभासति अणोगाढभासा मति गोयमा ! ओगाढं ओभासति नो अणोगाढं ओभासति त भंते किंतिदिसिं ओभासति, नियमथको छए दिसे अवभासे एतला सर्व कहवा । जम्बूद्दीवेण भंतेदोवे सूरिया कितीयखेत्त उज्जोवेति एवचेव नियमा छद्दिसि । जम्बूद्दीपमाहा हेभगवन् बापनविषे बेउ सय ए सतीतक्षेत्र प्रते प्रत्येक बेउ सूर्यकरा तकरे इतिप्रश्न उत्तर एम पूछिलो परे यावत् नियमथको छए दिशिने प्रतिवर्षे उद्योत करे एतला सर्व कहवा । एवंतवेति एवभासेति जाव नियमा छद्दिसि । एम बेउ मन तपेछे एम किरण प्रकाशको एम बेउ सूर्य भासेछे याछे यावत् नियमथको छए दिशिनेविषे एतलासगे कहवो कथा, तेणीत

तीते खेत्ते किरिया कज्जइ पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया० अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नोतीये खेत्ते किरिया कज्जइ पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ नोअणागए खेत्ते किरिया कज्जइ, से भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ नो अपुट्ठा कज्जइ जाव नियमा छद्दिसिं । जम्बूद्दीवेणं भंते ! सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवेंति केवइयं अहे तवेंति केवइयं खेत्तं तिरियं तवेंति ? गोयमा ! एगं

जम्बूद्वीप भ० । सूर्याभ्यां किमतीते क्षेत्रे क्रिया क्रियते प्रत्युत्पन्ने क्षेत्रे क्रिया क्रियते अनागते क्षेत्रे क्रिया क्रियते ? गौतम ! नैवा तीते क्षेत्रे क्रिया क्रियते प्रत्युत्पन्ने क्षेत्रे क्रिया क्रियते नैवा नागते क्षेत्रे क्रिया क्रियते । सा भगवन् किं स्पृष्टा क्रियते अस्पृष्टा क्रियते ? गौतम ! स्पृष्टा क्रियते ना ऽस्पृष्टा क्रियते यावन्नियमात् षड्दिशं । जम्बूद्वीप भ० । सूर्यौ कियन्मात्रं क्षेत्रं मूर्ध

अथ निश्चयनेकाजि प्रकारान्तरे कहेछे—जम्बूद्वीपने भंते दोय सूरियाने किती०खेत्ते किरियाकज्जइ । जम्बूद्वीपनामा हे भगवन् द्वीपनेविषे सूरजनी अ॰ अतीतक्षेत्रनेविषे अवभासनादिकक्रिया हुवे । पडुप्पन्नेखेत्ते किरियाकज्जइ । अथवा वर्तमानक्षेत्रनेविषे अवभासनादिक्रिया हुवे । अणागएखेत्ते किरियाकज्जइ । अथवा अनागत क्षेत्रनविषे अवभासनादिक्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नो तीएखेत्ते किरियाकज्जइ । हेगौतम ! अतीतक्षेत्रनेविषे अवभासनादिक्रिया हुवे नही । पडुप्पन्नेखेत्ते किरिया कज्जइ । वर्तमानक्षेत्रनेविषे अवभासनादिक्रिया हुवे । नो अणागएखेत्ते किरियाकज्जइ । अनागतक्षेत्रनेविषे पणि अवभासनादिक्रिया न हुवे । सा किंभंते पुट्ठाकज्जइ अपुट्ठाकज्जइ । तिका अ॰ हेभगवन् तेजकरी स्पर्श न हुवो जिका तिका स्पृष्टा कहिवे एतले स्पर्शवंती हुवे अथवा अस्पर्शवंती हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुट्ठाकज्जइ नोअपुट्ठाकज्जइ जाव नियमा छद्दिसि । हेगौतम स्पर्शकरे पणि अस्पर्शी न करे यावत् नियमवंती छ दिशि एतला लगेकहवा । जम्बूद्वीपनेभंते दोयसूरिया । जम्बूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे बेसूर्य । केवइयंखेत्त उड्ढंतवेंति । केतलू क्षेत्र ऊर्ध्व ऊंचा तपे तेजकरे । केवइयंखेत्त अहेतवेंति । केतलूक्षेत्र अध हेठा तपे तेजकरे । केवइयंखेत्त तिरियंतवेंति । केतलूक्षेत्र तो

नम्मेव तापयेत्स नायात् ॥ अष्टारमोयममयाह अधे तवंतिप्ति ॥ कय सूया दहासु योजनशतेपु भूतल भूतलाय योजनसहस्रे अधोलोकग्रामा भ यन्ति ताव याय दुग्रातमा विति ॥ सीयालीसमित्यादि ॥ एतच सर्वोत्कृष्टदिवस चक्षु स्पर्शापेक्षया ऽवसेय मिति अमन्तर सूर्यवक्तव्यतोक्ता

जोयणसय उड्ढ तवेंति अठारसजोयणसयाइ अहे तवेति सीयालीस जोयणसहस्साइ दोन्नियतेवठे जोय णसए एक्कवीसच सठिभाए जोयणस्स तिरिय तवेति । अतोण भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदियसूरि यगहणक्खत्तताराख्वा तेण भंते ! देवा किउड्ढोयवन्नगा जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेस जाव उक्कोसेण

तापयंति कियन्मात्र मध स्तापयन्ति कियन्मात्रं चर्म तिर्यग् तापयन्ति ? गौतम ! एक योजनशत मूर्द्ध तापयन्ति अष्टादश योजनशता न्य ध स्तापयन्ति सप्तचत्वारिंश योजनसहस्राणि द्विशतत्रिषष्टियोजनानि एकविंशतिः षष्टिभागान् योजनस्य तिर्य स्तापयन्ति । अन्त म० । मानुषोत्तरपर्वतस्य य चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपा स भदन्त ! देवा किमूर्ध्वोपपन्नका यथा जीवाभिगमे तथैव निरविशेष याव दुत्कृष्ट पण्

या तपे वेत्रवर इतिमन उत्तर । यायमा एयजोयणसवंउठतपेति । हे गौतम ! एकसो योजन ऊचा तेजकरे आंमाटे पातालविमानने ऊपर योज न एकसो प्रमाणनेज तापवनमा भावकओ । अढारस जोयणसयाइ अहेतवेति । अढारसे योजन नीचा तेजकरे ते किम सूयथकी आठसे योजन समभूत लथे पने समभूतलथकी सहस्रयोजन पधोलोक गाममे तिहांलगे उद्योत करे । सीयालजोयणसयाइ दोन्निय तेवठजोयणसएक्कवीस सठिभाए जोय णस्सतिरियंतवति । सैतालीससहस्र दायसे त्रेसठयोजन ४०२६३ अने साठ भाग्या योजनमा एकवीसभाग एतला तीर्छो तपे एकसय उत्कृष्ट दिवसने विषे चक्षुस्पर्शनो अपेक्षाय जाणवा अनन्तरे सूयवक्तव्यताकही हिवे सामान्यथकी ज्योतिषीनो वक्तव्यता कहेछे—अंताणंभंतेमाणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदि य सूरिय गहगण णक्खत्त ताराख्वा । अन्तोसमित्यादि मानुषोत्तर पर्वत भीतर जे चन्द्रादिक एतले मानुषोत्तर पर्वतमांहि जे चन्द्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराख्य ज्योतिषी वर्तेछे । तेणंभंतेदेवा किउड्ढोववन्नगा जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेस । तेह ज्योतिषी हे भगवन् देव ऊर्द्ध ऊ चा उप

ऽथ समान्यम ज्यातिष्कवक्तव्यता माह ॥ मतोव भते । इत्यादि जहाजीवाभिगमे तहेव निरवसेसंति ॥ तच चेदं सूत्र मेवं—कप्पोववन्नगा विमाणो ववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया गइरइया गइसमावन्नगा गोयमा ! तेण देवा नोउड्ढोववन्नगा नोकप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्न गा ॥ ज्योतिषचक्रचारेणोपलक्षितक्षेत्रोत्पन्ना इत्यर्थः ॥ नोचारठिइया ॥ इह चारो ज्योतिषा मवस्थानक्षेत्रं ॥ नो ॥ नैव चारे स्थिति रवस्थिति र्येषा स्ते तथा अतएव ॥ गइरइया ॥ अतएव ॥ गइसमावन्नगा इत्यादि ॥ किंयद्दूर मिदं वाच्य मित्याह ॥ जाव उक्कोसेणं छम्मासत्ति ॥ इदं चेव द्रष्टव्यं ॥ इंदठाणेणं भंते ! केवइयं कालं विरहिए उववाएणं गोयमा ! जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं छम्मासत्ति जहा जीवाभिगमत्ति ॥ इदम प्यत्र तत्र ॥ जेणंदि

छम्मासा । बहियाणं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जहा जीवाभिगमे जाव इंदठाणेणं भंते ! केवइयकाल विर

मासान् । बहि भ० । मानुषोत्तर पर्वतस्य यथा जीवाभिगमे याव दिन्द्रस्थानो भ० । कियत्काल विरहित उपपातेन ? गौतम ! जघन्य नेक

ना इत्यादि, यथा जिम जीवाभिगमउपांगनेविषे कह्यं तिम इहां पण समस्त कहवा तिहां सूत्र इम कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया गइरइया गइसमावन्नगा गोयमा तेणंदेवा णोउड्ढोववन्नगा, ऊर्ध्व ते उपजवानो कल्पातीत नथी विमाणोववन्नगा, विमानोत्पन्न छे चारोव वन्नगा ज्योतिषचक्र चरणे उपलक्षितक्षेत्रे उपना चारारहित्या, इहां चारते ज्योतिषीना अवस्थानक्षेत्र कहिये ते तिहां चारक्षेत्रनेविषे स्थिति नथी जेहनी एतलामाटेज गइरइया गतिनेविषे रति छे जेहनी एतलामाटेज गइसमावन्नगा, गतिने पाम्या इत्यादिक केतला लगे कहवां ते कहे छे—जाव उक्कोसेणं छम्मासा अतिदेशसमाप्तसूत्रस्य जहा जीवाभिगमे । यावत् उत्कृष्टा छम्मासा विरहकाल इहां इमकहवा इंदठाणेणं इत्यादि इन्द्रस्थान हेम गवन् केतलाकाल विरहउपपाते करी हुवे ? तिमज उत्तर हे गौतम जघन्ये एकसमय उत्कृष्टा छम्मासा ते मानुषोत्तर पर्वतथकी बाहिर यथा जिम जीवाभिगमे कह्युं तिम अहीं कहवा इम अ तदेवं इत्यादि तेणंभंतेदेवा किंउड्ढोववन्नगा इत्यादि प्रश्नसूत्र उत्तर गोयमा तेणंदेवा णोउड्ढोववन्नगा णोकप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया चारइरइया चारसमावन्नगा इ

मनूरियगइगवनवउततारारूवा तेवमते। दवा किं उम्होववक्षगेत्यादि प्रस्तसूत्र उतरतु गोयमा। तव देवा भोउम्होयवक्षगा मोकप्योयवक्षगा विमा योववक्षगा मोबारावयक्षगा चारठिइया मोगइरइया मानइसमावक्षमे त्यादीति ॥ इत्यष्टमशत उष्टमः ॥ ८ ॥ घष्टमोद्देशके ज्यो तिषा वक्ष्यतोका साथ वैस्रसिकाति वैस्रसिवं मायोगिकव मम्प प्रतिपिपादयिषु नवमोद्दशक माह तस्य चेद मादिसूत्र ॥ कइविहसामित्यादि ॥ यचेति ॥ मम्प पुद्गलादिविषयसम्बन्ध ॥ पठगवचेपति ॥ जीवप्रयोगकृतः ॥ वीससायचपत्ति ॥ स्वभावसम्पन्नः ॥ पयासतिन्याय मामित्याह ॥ वीस

हिए उववाएण ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा सेव भंते भंतेत्ति ॥ अठमसए अठमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ८ ॥ कइविहेण भंते ! बंधे प० ? गोयमा ! दुविहे बंधे प०, त० पओगबंधेय वीससाबंधेय । वीससाबंधेण भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा—साइय

समय मुत्कषत षण् मासाम् । तदेवं भदन्त भदन्त ॥ इत्यष्टम शते उष्टमो द्देशः ॥ ८ ॥ कतिविधो प्र० । बन्ध भदन्त ? गौतम ! द्विविधो बन्ध भदन्त तद्यथा—प्रयोगबन्धश्च विस्रसाबन्धश्च विस्रसाबन्धो प्र० । कतिविध भदन्त ? गौ० । द्विविध भदन्त तद्य

त्यादि, । यावत् ३ येवभते वेरइसकालसविरहिए उववाएण । यावत् इन्द्रस्थानकमा विरहकाल उपपात कथया । गोयमाजहन्नेण एकसमयउक्कोसेण छ मासा । हेगौतम ते जघन्य एकसमय उत्कृष्टको छम्मासको विरहकाल कह्या । सेवभतेभतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्या सव सत्यछे पम्हवा गयो । अठमसयस्सअठमपा उदेसा सम्मत्तो । ए आठमा शतकनो आठमा उद्देशा पर्थवो थिस्मा ८ ॥ ८ ॥ पाछिले उद्देशे ज्योतिषीनो पत यता कही ते सामाविकछे तेमाटे इहां विस्रसातया प्रयोगिकबन्ध कहेछे—कइविहेणभते बधे पं । कोतलेभेदे हेभगवन् बधकह्या, बधकरिये परस्प र विषयसम्बध इतिमन उत्तर । गोयमा दुविहेबंधेपन्नत्ते तंजहा । हेगौतम बेप्रकारे बधकह्या ते कहेछे—पओगबंधेय वीससाबधेय । जीव प्रयोगे जोडा जे बध ते प्रयोगबध १ स्वभावथको उपना ज बध ते विस्रसाबध कहिये २ वलीगौतम पूछेछे—वीससाबंधेणभते कइविहे प । वीस्रसाबध हेभगवन् ! के

उप समान्यम ज्यातिफयत्वयता माह ॥ मतीय भते ! इत्यादि जहाजीवाभिगमे तहेव निरवसेसति ॥ तत्र चेदं सूत्र मेव–कप्पोववन्नगा विमाणो ववन्नगा चाराववन्नगा चाराठिइया गइरइया गइसमावन्नगा गोयमा ! तत्थ इया माउल्लोववन्नगा मोकप्पोववन्नगा विमाणाववन्नगा चारोववन्न गा ॥ ज्योतिश्चक्रचरणापलक्षितक्षेत्रोत्पन्ना इत्यर्थः ॥ नाचारठिइया ॥ इह चारो ज्योतिषा मवस्थानक्षेत्र ॥ नो ॥ नैव चारे स्थिति रवस्थिति र्येषा ते तथा अतएव ॥ गइरइया ॥ अतएव ॥ गइसमावन्नगा इत्यादि ॥ कियद्दूर मिद वाच्य मित्याह ॥ जाव उक्कोसेण छम्मासत्ति ॥ इद चेव द्रष्टव्यं ॥ इदठाणव भते ! केवइय काल विरहिए उववाएण गोयमा ! जहन्नेण एकसमय उक्कोसेण छम्मासत्ति जहा जीवाभिगमत्ति ॥ इदम व्यव तत्र ॥ जनादि

छम्मासा । बहियाण भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जहा जीवाभिगमे जाव इंदठाणेण भंते ! केवइयकाल विर

मासान् । बहि भ० ! मानुषोत्तर पर्वतस्य यथा जीवाभिगमे याव दिन्द्रस्थानो भ० ! कियत्काल विरहित उपपातेन ? गौतम ! जघन्य मैक

ना इत्यादि यथा चिन्ह जीवाभिगमउपांगमेविषे कह्यं तिम इहां पाण समस्त कहवा तिहां सूत्र इम, कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चाराववन्नगा चारठिइया गइरइया गइसमावन्नगा गोयमा तेणदेवा नोउड्ढोववन्नगा, ऊ चा कल्पमांहे उपना नथी विमाणोववन्नगा, विमानमांहे चारोव वन्नगा ज्योतिश्चक्र चरण उपलक्षित क्षेत्रे उपना चारठिइया इहां चारते ज्योतिषीनो अवस्थानक्षेत्र कहिये ते तिहां चारक्षेत्रविषे अवस्थित नथी तेहमो एतलामाटेज गइरइया गतिनेविषे रति छे तेहनी एतलामाटेज गइसमावन्नगा, गतिने पाम्या इत्यादिक केतलो लगे कहवो ते कहेछे–जाव उक्कोसेणं छम्मासा विरहकाल इहां इमकहवा इदठाणेण इत्यादि, इन्द्रस्थान केतलाकाल विरहउपपातेकरी हवे इतिप्रश्न उत्तर गोतम जघन्ये एकसमय उत्कृष्टा छमासना ते मानुषोत्तर पर्वतथी बाहिर जहा जिम जीवाभिगमे कह्युं ते इम ज य इम सू त्र एम असाव बहूतताराह्वा, तेणमतेदेवा किउड्ढोववन्नगा इत्यादि प्रश्नसूत्र उत्तर गोयमा तेणदेवा नोउड्ढोव वन्नगा इत्यादि प्रश्न सूत्र उत्तर । गोयमा तणदेवा नोउड्ढोववन्नगा विमाणोववन्नगा चाराविववन्नगाचारठिइया नोगइरइया नोगइसमावन्नगा ॥

रयो देसबंधे ॥ नोसव्वबंधेति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशानां परस्परसंस्पर्शेन व्यवस्थितत्वात् देशबन्धएव नपुन सर्वबन्ध सर्वथैकस्य प्रदेशस्य प्र देशान्तरैः सर्वथा बन्धे व्याप्याव्यापकभावेन एकप्रदेशत्वमेव स्यात् नासंख्येयप्रदेशत्वमिति ॥ सव्वद्धंति ॥ सर्वाद्धां सर्वकाल ॥ साइयवीससाबंधेत्ति ॥ सादिको यो विस्रसा बन्धः स तथा ॥ बंधणपच्चइएत्ति ॥ बध्यते अनेनेति बन्धन विवक्षितस्निग्धतादिको गुणः सएव प्रत्ययो हेतु यत्र सतथा एव

सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे नोसव्वबंधे, एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेवि, आगासत्थि कायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेवि, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेणं भंते ! कालओकेवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं एवं अधम्मत्थिकाए एवं आगासत्थिकाए । साइयवीससाबंधेणं भंते ! कइविहे

स्ससायन्धावि एवं आकाशास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धोपि । धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धो भ० । कालतः कियच्चिरं भ वति ? गौतम ! सर्वाद्धा । एवं अधर्मास्तिकाय एवं आकाशास्तिकायसादिकविस्रसाबन्धो भ० । कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! त्रिविधः प्रज्ञ प्त तद्यथा-बन्धनप्रत्ययिकः भाजनप्रत्ययिकः परिणामप्रत्ययिकः । अथ किं तद्बन्धनप्रत्ययिको बन्धनप्रत्ययिको यत्परमाणुपुद्गलो द्विप्रदेशिक

स्तिकायनाप्रदेशाना मांहामांहि स्पर्श करी अवस्थित पणाथकी देशबंध होय पणि नही सर्वबंध तिहां एकप्रदेशना प्रदेशान्तर साथे अन्यान्य प्रवे र्श करी एकप्रदेशपणा होवे, पणि असंख्येयप्रदेशपणा नहवे तेमाटे देशबंध छे पर सर्वबंध नही । एवं अधर्मास्तिकाय अन्यमन्य अनादि वीससाबंध वि । इम धर्मास्तिकाय अन्यान्य अनादिविस्रसाबंध पणि कहवा । एवं आगासत्थिकाय अन्नमन्न अनाइयवीससाबंधेवि । इम आकाशास्तिकाय प णि अन्य अनादिविस्रसाबंध पणि कहवा । धर्मास्तिकाय अन्नमन्न अनाइयवीससाबंधेणंभंते कालथकी केतला । धर्मास्तिकाय अन्यान्य अनादिविस्रसाबंध काल थकी, हे भगवन् ! कालथकी केतलाकाल रहे इतिप्रश्न उत्तर । गौतमा सर्वद्ध । हे गौतम ! सर्वकाल रहे । एवं अधम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्ति काय पणि कहवा । एवं आगासत्थिकाए । इम आकाशास्तिकाय पणि कहवा । साइयवीससाबंधेणंभंते कइविहे प । पूर्वोक्तभेदमाहे सादिविस्रसा

मेत्यादि ॥ धर्मास्तिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेति ॥ धर्मास्तिकायस्या न्योन्य प्रदेशाना परस्परम योगादिको विस्रसा बन्धः सतथा एव सुत्तर गावि ॥ देसबंधेत्ति ॥ देशतो देशापेक्षया बन्धो देशबन्धः यथासंकलिकाकटिकानां ॥ सव्वबंधेत्ति ॥ सर्वतः सर्वात्मना बन्ध सर्वबन्धो यथा क्षीरनी

बीससाबंधे अणाइयवीससा बंधे । अणाइयवीससा बंधेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! तिविहे प०, तंजहा—धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे । धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेणं भंते ! किं देसबंधे

धा-भाग्यविस्रसायन्धश्च नादिकविस्रसाबन्धश्च । अनादिकविस्रसाबन्धो भदन्त । कतिविध प्रज्ञप्तः ? गौतम । त्रिविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धश्च धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धश्च आकाशास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धश्च । धर्मास्ति कायान्योन्यानादिकविस्रसा बन्धो भदन्त । किं देशबन्धः सर्वबन्धः ? गौतम । देशबन्धो नोसर्वबन्ध एव मधर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसा

समेभद कथा इतिप्रश्न उत्तर । गायमा दुविहे प० तं० साईयवीससाबंधेय अणाईयवीससा बंधेय । हेगौतम वेद्धभेदे कथा ते कहेछे—सादिकविस्रसाबंध अनादिकविस्रसाबंध २ । अणाईयवीससाबंधणंभंते कइविहे प० । अनादिविस्रसाबंध ते आकाशसमारे, हेभगवन्! केतलेभेदे कथा इतिप्रश्न उत्तर । गोय मा तिविहे प० तं० । हेगौतम तीनभेदे कथा ते कहेछे—धम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाईयवीससाबंधेय । धर्मास्तिकाय मांहोमांहि प्रदेशाना बंध ते अना दिविस्रसाबंध ते धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबंध १ अधम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाईयवीससाबंधे । इम अधर्मास्तिकाय अन्योन्यप्रदेशानो पर स्परे अनादिविस्रसा बंध २ । आगासत्थिकाय अन्नमन्नअणाईयवीससाबंधे । आकाशास्तिकायनो मांहोमांहि प्रदेशाना अनादिविस्रसा बंध ३ । ध म्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाईयवीससाबंधेणंभंते किंदेसबंधे सव्वबंधे । धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसा बंध ते आकाशसमारे हेभगवन् स्युं देशथी दे शनोदेशमाथे बंध जिम सांकलीकडीनो अथवासर्वथी बंध ते सर्वबंध जिम खीर नीरनो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधे नोसव्वबंधे । हेगौतम धर्मा

रूपो देशबन्ध इति ॥ नोसव्वबंधेत्ति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशानां परस्परसंस्पर्शेन व्यवस्थितत्वात् देशबन्ध एव न पुनः सर्वबन्धः तत्रैकैकस्य प्रदेशस्य प्र देशान्तरैः सर्वथा बन्धे व्याप्त्यात्मभावेन एकप्रदेशत्वमेव स्यात् नासंख्येयप्रदेशत्वमिति ॥ सव्वद्धंति ॥ सर्वाद्धां सर्वकालं ॥ साइयवीससाबंधेत्ति ॥ सादिको यो विस्रसा बन्धः स तथा ॥ बंधणपच्चइएत्ति ॥ बध्यत इति बन्धनं विवक्षितस्निग्धतादिको गुणः स एव प्रत्ययो हेतु यत्र स तथा एव

सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे नोसव्वबंधे, एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेवि, आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेवि, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेणं भंते ! कालओकेवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं एवं अधम्मत्थिकाए एवं आगासत्थिकाए । साइयवीससाबंधेणं भंते ! कइविहे

स्रसाबन्धोपि एव माकाशास्तिकायान्योन्यमादिकविस्रसाबन्धोपि । धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धो भ० । कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! सर्वाद्धा । एव मधर्मास्तिकाय एव माकाशास्तिकायसादिकविस्रसाबन्धो भ० । कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! त्रिविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा-बन्धनप्रत्ययिकः भाजनप्रत्ययिकः परिणामप्रत्ययिकः । अथ किं तद्बन्धनप्रत्ययिकः बन्धनप्रत्ययिको यत्परमाणुपुद्गलो द्विप्रदेशिक

स्तिकायनाप्रदेशोना मांहोमांहि स्पर्शे करी व्यवस्थित पणामाटे देशबन्धज छे पणि नथी सर्वबंध तिहां एकप्रदेशना प्रदेशान्तर साथे सर्वात्म प्रत मा करी एकप्रदेशपणुं होइ, पणि असंख्येयप्रदेशपणुं नहवे ते माटे देशबंधज छे पर सर्वबंध नथी । एवं अधम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधे वि । एम अधर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबंध पणि कहवा । एवं आगासत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधेवि । एम आकाशास्तिकाय प णांम अनादिविस्रसाबंध पणि कहवा । धम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधेणंभंते कालओकेवच्चिरं । धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबंधनं भगवन् ! कालथकी केतलाकाल रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वद्धं । हेगौतम सर्वकाल रहे । एवं अधम्मत्थिकाय । एम अधर्मास्ति काय पणि कहवा । एवं आगासत्थिकाय । एम आकाशास्तिकाय पणि कहवा । साइयवीससाबंधेणंभंते कइविहे प । पूर्वोक्तभेदमाहे सादिविस्रसा

नाजनप्रत्ययः परिणामप्रत्ययश्च नवरं भाजन माधार परिणामो रूपान्तरगमनं ॥ अथ परमाणुपोग्गलेत्यादौ, परमाणुपुद्गल परमाणुरेव ॥ ये मायनिद्धयाएत्ति ॥ विषमा मात्रा यस्याः सा विमात्रा सा चासौ स्निग्धता चेति विमात्रस्निग्धता तया एव मन्यदपि पदद्वयं इदमुक्तं भवति सम निद्धयाए बंधो मयोरसमगुणस्याएविनवोर । समायनिद्धलुक्ख तखेवबंधोत्तसभाव ॥ १ ॥ अयमर्थः समगुणस्निग्धस्य समगुणस्निग्धेन परमाण्वादि कादिना बन्धो न भवति समगुणरूक्षस्यापि समगुणरूक्षेण यदा पुन विषमा मात्रा तदा भवति बन्ध विषममात्रानिरूपणार्थं चोच्यते-निद्धस्सनि द्धेणदुयाहियेण लुक्खस्सलुक्खेणदुयाहियेण । निद्धस्सलुक्खेणउवेइबंधो जहण्णवज्जोविसमोसमोवेत्ति ॥ १ ॥ बंधणपच्चयत्ति ॥ बन्धनस्य बन्धस्य प्र

पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—बंधणपच्चइए भायणपच्चइए परिणामपच्चइए । से किंतं बंध णपच्चइए २ जण्णं परमाणुपोग्गला दुपएसिया तिपएसिया जाव दसपएसिया संखेज्जपएसिया असंखेज्जपए

त्रिप्रदेशिक (प्रभृति) याव दशप्रदेशिकसंख्येयप्रदेशिकासंख्येयप्रदेशिकानन्तप्रदेशिकानां स्कन्धानां विमात्रस्निग्धतया विमात्ररूक्षतया वि

बंधकहा ते केहवा ? केतला भेदे कह्या इति प्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहे पं तंजहा । हे गौतम । तीन भेदे कह्या ते कहे छे—बंधणपच्चइए भायणपच्चइए परिणामपच्चइए । बांधिवु इत्यादि ते बंधन कहिये विवक्षित स्निग्धतादि गुण तेहीज प्रत्यय हेतुवे जिहां १ भाजन आधारभूत ते प्रत्यय हेतुवे जिहां २ रूपान्तर गमन हेतुवे जिहां ३ । सेकिंतं बंधणपच्चइए २ ते कुण बन्धन प्रत्ययकहिये इतिप्रश्न बन्धनप्रत्यय ते कहिये । जण्णं परमाणुपोग्गला दुपएसिया ति पएसिया । जेह माठा कारे, परमाणुआ ते परमाणुवीज कह्यो बेप्रदेशिक त्रिप्रदेशिक । जाव दसपएसिया संखेज्जपएसिया असंखेज्जपएसिया । यावत् दशप्रदेशिक संख्यातप्रदेशिक असंख्यातप्रदेशिक । अणंतपएसियाणं खंधाणं वेमायनिद्धयाए वेमाय लुक्खयाए वेमायनिद्धलुक्खयाए । अनन्तप्रदेशिक खंधने विषममात्रा छे एहनेविषे ते विमात्रा कहिये ते एण स्निग्धता स्निग्धपणुंते विमात्रा स्निग्धता कहिये तेणेकरी एम विमात्ररूक्षता पणे विमात्र स्निग्ध रूक्षता ए पवि कहवा रत्ते ए भावार्थ समस्निग्धएकवा नथाएसमगुणस्याएवि नथाएवेमायनिद्धगुणत्वेन बंधोबधार्ध ए भद समगुणनि

स्पर्शो हेतु बन्धरूपविमात्रस्निग्धतादिलक्षणो बन्धमेववा विवक्षितस्नेहादिप्रत्ययो बन्धनप्रत्यय स्तेन, इह बन्धनप्रत्ययेनेति सामान्य विमात्रद्वि त्यतये त्यादयस्तु तद्भेदा इति ॥ असंखेज्जकालंति ॥ असङ्ख्येयो ऽसर्प्पिण्यवसर्प्पिणीरूप ॥ जुण्णसुरत्यादि ॥ तत्र जीर्णसुरायाः स्त्यानीभवनलक्षणो बन्धा जीर्णगुडस्य जीर्णतन्दुलानां च पिण्डीभवनलक्षणः ॥ पयोगबधंत्ति ॥ जीवव्यापारबन्धः स च जीवप्रदेशाना मौदारिकादिपुद्गलानांवा " अणाई

सिया छणतपएसियाण खधाणं वेमायनिद्धयाए वेमायलुक्खयाए वेमायनिद्धलुक्खयाए एव बधणपच्चइएण बधे समुप्पज्जइ। जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण असखेज्जकाल सेत्त बधणपच्चइए। सेकित भायणपच्चइए २ जण्ण जुण्णसुराजुण्णगुलाजुण्णतदुलाण भायणपच्चइएण बधे समुप्पज्जइ जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखे

मात्रस्निग्धरूक्षतया बन्धनप्रत्ययिको बन्धः समुत्पद्यते जघन्यमेक समय मुत्कृषतो ऽसङ्ख्येय काल ॥ समासो बन्धनप्रत्ययिकः ॥ अथ किं तद्भाज नप्रत्ययिको भाजनप्रत्ययिको य ज्जीर्णसुराजीर्णगुडजीर्णतन्दुलानां च भाजनप्रत्ययिको बधः समुत्पद्यते, जघन्येनान्तर्मुहूर्त मुत्कृषत सङ्ख्येय

ज्य जे परमाणु तथा द्वयणुकादिक ते सघाते बन्धनहुवे तथा सममव कहने पणि समगुणरूक्ष जे परमाणू तथा द्वयणुकादिक ते सघाते बधनहुवे तो कि वारे विषममात्राहुवे तिवारे बन्धहुवे विषममात्रा निरूपवनेपणं कहेहे—निद्धस्सनिद्धेण दुयाहिएण लुक्खस्सलुक्खेणदुयाहिएण निद्धस्सलुक्खेणउवेइबधो जहण्णवज्जोविसमोसमोवा। बंधणपच्चइएणंबंधेसमुप्पज्जइ जहण्णेणएक्कसमय उक्कोसेणअसंखेज्जंकाल। बन्धन जे प्रत्ययकहियेहेत उसरूप विमात्र स्निग्धतादि बन्धन पचा बन्धनहोय विवक्षित स्नेहादिमत्सय हेतु तिणेकरी बंध ऊपजे ते जघन्य एकसमय उत्कृष्टको असंख्येय उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीरूप काल लगे रहे। सेत्तंबधणपच्चइए सेकितभायणपच्चइए भा २। पात्र ए बधनप्रत्यय कह्या, किणे ऊते भाजनप्रत्यय कहिये इतिप्रश्न भाजनप्रत्यय ते कहिये भा जनकहिये आधार ते प्रत्ययहेत ते भाजनप्रत्यय। जण्णंजुण्णसुराजुण्णगुलाजुण्णतदुलाणं भायणपच्चइए बंधे समुप्पज्जइ। जेथं आधारसंधारे, जूनी सुराने ठामे आधारथी त सधन बन्ध, जूना गुलने तथा जूना तदुलने पिण्डीभवनलक्षण बन्ध ते भाजनप्रत्यय तिणेकरी ते बन्ध ऊपजे ते। जघन्यपणो

मर्येत्यादयो, द्वितीयवर्ज्जा स्त्रयो भङ्गा तत्र प्रथमभङ्गोदाहरणायाह ॥ तत्थवं जसे इत्यादि ॥ यस्य किल जीवस्य ऽसंख्येयप्रदेशात्मका ह्यौ य मध्य प्रदेशा तथा अनादिरपर्यवसितो बन्धः यदापि सार्द्ध व्याप्य तिष्ठति जीव सदा च्यमी तथैवेति अन्येषां पुन जीवप्रदेशाना विपरिवर्त्तमानत्वा त्रा स्त्वनादिरपर्यवसितो बन्ध एतया मुपपन्न चत्वार एव मेते द्वौ एव तावत्समुदायतो एाना बन्ध उक्तो ऽथ ते प्रत्येकना स्वप्रदेशान सह या

ज्जकाल सेत्त जायणपच्चइए । सेकित परिणामपच्चइए २ जण्णं अब्भाणं अब्भरुक्खाणं जहा तइयसए जाव अमोहाणं परिणामपच्चइएणं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्त परिणामपच्चइए सत्त साइए वीससा बंधे ॥ सेकित पओगबंधे २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए वा ।

कास । समासो भाजनप्रत्ययिकः । अथ किं तत्परिणामप्रत्ययिको ? २ यदभ्राणां मेघानामभ्रवृक्षाणां यथा तृतीयशते याव दमोघानां परिणामप्रत्य यिको बन्धः समुत्पद्यते जघन्य मेकं समय मुत्कर्षत षण्मासाम् । समासः सादिकविस्रसाबन्धः ॥ समासो विस्रसाबन्धः ॥ अथ किं तत्प्रयोग

मत्त उक्कोसेण सत्तमकाल । तत्थ्रो धम्मसुहम्म परमाणुको संखाताकालमने रहै । सेत्तनायणपच्चए । ते भाजनप्रत्यय कहिये । सेकितपरिणामपच्चइ ए २ । किसे स् ते परिणामप्रत्यय इतिप्रश्न उत्तर ते परिणामप्रत्यय कहिये । जण्णमब्भाणं अब्भरुक्खाणं जहातइयसए जाव अमोहाणं । जे ए बादलाकना रे संध्याकाल तथा अभ्र बादल परिणाम इत्यपरिणाम जिम तीजा शतकनेविषे कह्या' यावत् अमाघादिप्रिसाक्तइं । परिणामपच्चइएणंबंधेसमुप्प ज्जइ० सेत्त साईयवीससाबंधे सेत्त वीससाबंधे । ते परिणाम प्रत्यय कह्या, एतले सादिविस्रसा बंध कह्या । एतले विस्रसा बंध कह्या । सेकितप ओगबंधे २ तिविहे पण्णत्ते तंजहा अणाइएवाअपज्जवसिए० साइएवाअपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए । तेहां प्रयोगबंध कहीये जीव व्यापारबंध ते जीव प्रदेशनो अथवा औदारिक पुद्गल नो इतिप्रश्न हे गौतम । प्रयोग तीनभेदे कह्यो ते कहेछे अनादिक तिहां अनादि अपर्यवसित ए भांगा कहीं

वतो परस्परेण बन्धो भवति तद्ग्रहणार्थं ॥ तत्थवि मित्यादि ॥ तत्रापि त ग्रहासु जीवप्रदेशेषु मध्ये अयाया अयाया मकैकेन सह मादिरप पवसिता सम्प सत्यादि–पूर्वोक्तप्रकारया वस्थिताना महाना सुपरितमप्रतरस्य य:कश्चि द्विवक्षित सास्य द्वौ पार्श्ववर्त्तिना वकशा चोमसी स्यस च य: सम्यप्यन्त क्षप स्यवा उपरितन तयथा मस्तना मसम्बप्यस्ते व्यवस्थितस्वा दव मपसाममतरापेक्षयापीति चूर्णिकार व्याख्या, टीकाकारव्या स्यातु दुरवगमत्वा त्परिहृतति ॥ सवाव साइयत्ति ॥ शेपाया मध्यमाष्टाभ्यो ऽन्यया सादि विपरिवर्त्तमानत्वा इतेन प्रथमभङ्ग उदाहृत च

साइएवा अपज्जवसिए, साइएवा सपज्जवसिए। तत्थणजेसेअणाइए अपज्जवसिए सेण अठएह जीवमज्झ प्पएसाण तत्थविण तिराह २ अणाइए अपज्जवसिए सेसाण साइए तत्थणजेसेसाइए अपज्जवसिए सेणसि

बन्ध: ? प्रयोगबन्ध त्रिविध: प्रज्ञप्त तद्यथा–अनादिकोवापर्यवसित: सादिकोवापर्यवसित: सादिकोवासपर्यवसित: । तत्र य: सो अनादिकोप र्यवसित: सोऽष्टानां जीवमध्यप्रदेशानां तत्रापि तयाथा त्रयाणां अनादिको पर्यवसित शेपाणा सादिक: । तत्र य: सादिको पर्यवसित: स सिद्धा

में मेप तीन भाग बचया तिहां अनादि ए पहिला भांगा १ सादि एवा सादि अनत एबोवो भांगा २ सादि सांत ए चौथा भांगो ४ तिहां प्रथम भंग उदाहरण ते पर्वे कहेवे । तत्थ जेसे अणाइए अपज्जवसिए सेण अठ्ठण्ह जीवमज्झप्पदेसाणं । तिहांप आकाशांतकारे जेते अनादि अपर्यवसित ते कहे आकाशांतकारे प जीव मध्यस्थ प्रदेशिक जो आठ वे मध्य प्रदेश तेहनो अनादि अनत बंध छे जिवारे पणि लोकव्यापीमें रहे तिवारें पणि ए बंध तिम जीव रहेवे बची बीजा जीव प्रदेशो ने विपरि वर्तमान पणा थकी अथोके अनादि अपर्यवसित बंध तेहनो आपना ए वामे उपरि बीजा चारि एम एहआठ प्रदेश एम पहिला अतुल्य थको आठभी बंध बाह्य किंमि तेहमें विवे एकेक पासे प्रदेश ययाते बेतला भी परस्पर बंध हुवे ते देखाडतो कहेछ । तत्थविणं तिण्ह तिपर्द अनादिए अपज्जवसिए सेसाणं सादिए तत्थणं जेसादिए अपज्जवसिए तेण सिद्धाणं । तथापि तिहां पणि तेह आठ जो प्रदेश में विवे मध्ये तीन तीन में एकक सघात अनादि अपर्यवसित बन्धवे ते देखाडवे—पूर्वोक्तप्रकारेकरी रह्या आठप्रदेशमने उपरितन प्रतरनो जे

…पवर्जा सर्वो प्रभृ सव प्रथमजक्तोवारस्यापाह ॥ तत्पव जस इत्यादि ॥ यस्य किल जीवस्या ऽसंख्येयप्रदेशकस्या ही य मध्ये
…तो क्वचा यद्यपि लोकं व्याप्य तिष्ठति जीव तत्र यमो तथैवेति अन्येषा पुन जीवप्रदेशामा विपरिवर्तमानस्या
…मध्ये चत्वार एव मती ही एव तावत्समुदायतो हाना यथ उक्तो ऽप त वर्कैकना सप्रदेशन सह या

…णामपज्जवाए २ जस्स अण्णाण अण्णरुक्काण जहा तदसमए जाव
…एक्कसमय उक्कोसेण छम्मासा । सेस परिणामपज्जवाए
तजहा — अणाइएया अपज्जवसिएवा ।

…णाते याय इमोयामा परिणामप्रत्य
…ण्य ॥ यय कि तत्प्रयोग

…मामपचार

…रि भ्रमयमित इत्यतु द्वितीयोभङ्ग इह नवनव त्वनादिमप्रदाना महानो जीवप्रदेशाना मपरिणममानेन …
…त तिति यथ तृतीयो भङ्ग उदाह्रियते ॥ तत्र जे साइयत्यादि ॥ सिद्धामा सादिरपर्यवसिता जीवप्रदेशाश्च, …
…स्याना सिद्धत्वविलक्षणात्वा दिति यथ चतुर्थभङ्ग प्रकृत माह ॥ तत्र जे साइयत्यादि ॥ सामान्य …
…रति रित धामायनानि रुपादीनि ते वण्ण फुसादीमा मामापनमप्य ॥ परिणामवर्पति …

दोण्ण तत्थण जेसे साइए सपज्जवसिए सेण चउब्विहे प०

…ना । सम य व धादिव स्सपयवसित व चतुविध प्रथम …
…र्ण विलक्षणप्रदेश तेषमा शायपाआवली …
…पयोकी इम ययपत यतमोपरे… एव …
…वे उदाहरन देवार्था …
…मबे …

नस्य करणं तद्रूपो यो बन्धः स तथा ॥ सरीरबंधेत्ति ॥ समुद्घाते सति यो विस्तारितसङ्कोचितजीवप्रदेशसम्बन्धविशेषवशात् तैजसादिशरीरप्रदे शानां सम्बन्धविशेषः स शरीरबन्धः शरीरिबन्धइत्यन्ये, तत्र शरीरिणः समुद्घात विक्षिप्तजीवप्रदेशानां सङ्कोचने यो बंध स शरीरिबंध इति ॥ सरी रप्पओगबंधेत्ति ॥ शरीरस्यौदारिकादे र्यः प्रयोगात् वीर्यान्तरायक्षयोपशमादिजनितव्यापारेण बन्ध सत्पुद्गलोपादान शरीररूपस्यवा प्रयोगस्य यो बन्ध स शरीरप्रयोगबन्धः ॥ तणभारायत्ति ॥ तृणभारा तृणभारका तया ॥ वत्तेत्यादि ॥ वेत्रलता जलवंशक ॥ वागत्ति ॥ वल्को वरत्रा चर्ममयी रज्जुः सनादिमयी वल्ली त्रपुष्यादिका कुशा निर्मूलदर्भा दर्भास्तु समूला आदिग्रहात् चीवरादिग्रह ॥ सेसबन्धयेति ॥ अथवा अपत्रव्यय

सरीरप्पओगबंधे । सेकिंत आलावणबंधे २ जण्णं तणभाराणवा कट्ठभाराणवा पत्तभाराणवा पलालभाराण वा वेल्लभाराणवा वेत्तलया वागवरत्तरज्जुवल्लिकुसदब्भमादिएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेण अंतोमु हुत्तं उक्कोसेण संखेज्जं कालं । सेत्तं आलावणबंधे । सेकिंत अल्लियावणबंधे २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—

नबन्धो २ । य तृणभाराणाया काष्ठभाराणाया ; पत्रभाराणाया ; पलालभाराणाया वल्लीभाराणाया ; वेत्रलतावल्कवरत्रारज्जुवल्लीकुशदर्भा दिभि रालापनबन्धः समुत्पद्यते जघन्येनान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षत संख्येय कालं ॥ समाप्त आलापनबन्धः ॥ अथ किं तदालीकापनबन्धो २ चतुर्वि

रायना वड्डभारायना । जेम कोइ माणस घास, लाकडांना भाराने बांधिवे कट्ठनाभारा बांधिवे । पत्तभारायना पलालभारायना वेल्लभारायना वेत्तलया । पानडाना भारा बांधिवे पत्रना पलालना भारा पयषा वल्लनता तेहना भारा वेलनता जलवंशक्षा । वागवरत्तरज्जुवलि वस दर्भमादिएहिं । वागत्ति वल्क वरत्त चर्ममय नाडी रज्ज सनादिमयो त्रपुष्यादिका वास मूल दर्भ दर्भ ते समूल आदि शब्दवको चीवरादिकना या ।जनरला इत्यादिक न् । आलावणबंध समुप्पज्जइ । आलापनबंध उपजे । जघन्येन अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्षेण संख्यातकाल । ते अपन्ययको अन्तर्मुहूर्त्त कालस्थ उत्कृष्टा संख्यातकाल रहे । सेत्तआलावणबंधे । ते आलावन बंध कहिवो । सेकिंतअल्लियावणबंधे । ते कु अल्लियावनबंध ए किसे इतिप्रश्न । अल्लियावणबंध चउव्विहे प० त० । अल्लियावणबंध च्यारभेदे कह्या

मादि मपपवसित इत्यर्थं तु द्वितीयोभङ्गः इह नसम्भव त्वनादिसम्बद्धाना महानां जीवप्रदेशाना मपरिवर्त्तमानत्वेन बन्धस्य मपर्यवसितत्वानुप पत्त रिति अथ तृतीयो भङ्ग उदाह्रियते ॥ तत्थणं जेसे साइएत्यादि ॥ सिद्धाना सादिरपर्यवसितो जीवप्रदेशबन्धः शैलेश्यवस्थाया मस्यापिसम्र स्थानां सिद्धत्वविचलनाभावा दिति, अथ चतुर्थभङ्ग मेदत आह ॥ तत्थण जेसे साइएत्यादि ॥ आलावणबन्धेत्ति ॥ आलाप्यते आलीन क्रियते एभि रिति आलापनानि रज्ज्वादीनि तै र्बन्ध स्तृणादीना मालापनबन्धः ॥ अल्लियावणबन्धेत्ति ॥ अल्लियावण द्रव्यस्य द्रव्यान्तरेण सहादिना आली

तत्थणं जेसे साइए सपज्जवसिए सेणं चउव्विहे प०, तं०—आलावणबन्धे अल्लियावणबन्धे सरीरबन्धे

ना। तत्र यः स सादिक स्सपर्यवसितः स चतुर्विधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा–आलापनबन्धो ऽल्लिकापनबन्धः शारीरप्रयोगबन्धः। अथ कि तदालाप

थाई विवक्षामध्य तेहमा हाबपाम्बवर्त्ती एक अधावर्त्ती ए तोमसघाते संघवाले मेय एक उपरितन तोन मोषसापह समाते सबध नथोते मवहित पर्यायओ रम बदलन मतरमोषपेषायें पवि मेषावधादिएति मप वे मध्यम पहवको बोथा तेहने सादिपरिवर्त्तमान पर्यायको एतसे पविसेमा गे उदाहरण देखावा १ बोजामांया पमादि सान्त ते इहां न षमवे पमादि सम्बद्ध पाठओज प्रदेशने अपरिवर्त्तमान पदेवरो बंधने सपर्यवसित ए तमिह ते सादि अपर्यवसित जीवप्रदेश बंधने शैलेशी पवरायें जिम सामाप्रदेश तेहने सिद्धपणानिविषे पवि चलवाना अभावथको १ चौथोभांगो मेद थो कहिये—तत्थणं जेसे साइए सपज्जवसिए सेणं चउव्विहे प तं०। तिहां जे ते सादि अपर्यवसि ते सादि सपर्यवसित भांगो ते चारप्रकारेकह्यो, ते कहिये— । आलावणबंध बंधकरो पकठामिलणो ते अल्लियावणबंध २ समुद्घातेकरी विखेरा जीवप्रदेशना एकठामेलवा ते शरीरबंध ३ औदारिकशरीरे करी जे पुद्गलनो बंधवो पे अल्लियावणबंधे शरीरबंधे शरीरप्पओगबंधे। पुद्गलविशेषेकरी मांचामांचि आलीन जिम्याकरीये जिम सीरडोवे तृणादि बांधिये १ एक द्रव्यने द्रव्यान्तरे एकठाकरिवा ते शरीरपर्योगबंध ४ तेविर्त्तपालावणबंधे आखा १। ते प्रभु ते आलावणबंध कहिये इतिप्रश्न उत्तर आलावणबंध ते कहिये। संघतणआ

तगरासीणवा कठरासीणवा पत्तरासीणवा तुसरासीणवा भुसरासीणवा गोमयरासीणवा अवगररासीणवा उच्चएण बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण संखेज्जकालं। सेत्त उच्चयबंधे। सेकित समुच्चयबंधे समुच्चयबंधे जन्नं अगडतडागनदीदहवाविपुक्खरिणीदीहियाणं गुंजालियाणं सराणं सरपंतियाणं बिलपंतियाणं देवकुलसभापव्वथूभखाइयाणं परिहाणं पागारट्टालगचरियदारगोपुरतोरणाणं पासायघरसरणलेण

सद्ध्येय काल ॥ समासः सप्तायस्य ॥ अथ किं तदुच्चयबन्धः २ यत्तृणराशीनांवा काष्ठराशीनांवा पत्रराशीनांवा तुषराशीनांवा भुसराशीनां वा गोमयराशीनांवा अवकरराशीनांवा उच्चयेन बन्धः समुत्पद्यते जघन्येनान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतः सङ्ख्येय कालः ॥ समासः उच्चयस्य ॥ अथ किंतत् समुच्चयबन्धः २ यः इवटतडागनदीह्रदवापीपुष्करिणीदीर्घिकाणां गुञ्जालिकानां सरसां सरःपङ्क्तीनां बिलपङ्क्तीनां देवकुलसभाप्रपास्तूपखाति

ते स्यूं उच्चयबंध कहिये उच्चयबंध ते कहिये। तृणनारासोथवा काष्ठरासोथवा पत्ररासोथवा तुसरासोथवा। जेम जाजानाकारे, तृणनोराशि काष्ठनो राशि पत्रनो राशि अथवा तुसनो राशि। भुसरासोथवा। अथवा छाणनो राशि। गामयरासोथवा अवगररासोथवा। अथवा मोखरनो राशि कचरानो राशि। उच्चएणबधे समुप्पज्जइ। जेणे पिण्डे करी बंध ऊपजे ते उच्चयबन्ध कहिये। जहण्णेणअन्तमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जकाल। ते जघन्यथको अन्तर्मुहूर्त मर्यादे उत्कृष्टथको संख्यातोकाल रहे। सेत्तउच्चयबंधे। ते उच्चयबंध कह्या। सेकित समुच्चयबधे समुच्चयबधे। जिहां स्यूं ? ते समुच्चयबंध कहिये। अगड तडाग नदी द्रह वावि। समुच्चयबंध ते अगडतलाव नदी द्रह वावी। पुक्खरिणी दीहियाण गंजालियाण सराणं। पुष्करणी दीर्घिका गंजालिका सर। सरपंतियाणं बिलपंतियाण। सरपंति बिलपंति। देवकुलसभापव्वथूभ खाइयाण परिहाणपागारट्टालग चरिय। देवकुलसभा परब धूभ खाइ प्राकार गढ कोट अट्टालग कांगुरा चरी। दार गोपुर तोरणाण। द्वार गोपुर तोरण। पासायघर सरणलेण पावणाण।

द्वयोः मध्यमेन तद्रूपो यो बन्धः स तथा ॥ उच्चयबंधेत्ति ॥ उच्चय ऊर्ध्वं चयनं राशीकरणं तद्रूपो यस्य उच्चयबन्धः ॥ समुच्चयबंधेत्ति ॥ संगत उच्च यापचया विशिष्टतरउच्चयः समुच्चयः स एव बन्धः समुच्चयबन्धः ॥ साहणणाबंधेत्ति ॥ संहनन मवयवानां मिलनं तद्रूपो यो बन्धः स संहननबन्धः दीपत्वादि च प्राकृतशैलीप्रभव मिति ॥ कुट्टिमाणत्ति ॥ मणिभूमिकानां ॥ छुहाचिक्खल्लश्लेषादी ॥ सिलेसत्ति ॥ श्लेषो वज्रलेप ॥ लक्खत्ति ॥ लाक्षा ॥ महुसित्थत्ति ॥ मदन मादिग्रहणात् गुग्गुलराललक्खादिग्रहः ॥ धन्नरासीयत्ति ॥ धान्यराशीनां ॥ उच्चयेत्ति ॥ उच्चयेन ॥ भगवत

लेसणाबंधे उच्चयबंधे समुच्चयबंधे साहणणाबंधे । सेकित लेसणाबंधे २ जण्ण कुड्डाण कुट्टिमाण खंभाण पासायाण कट्ठाण चम्माण घडाण पडाण कडाण छुहाचिक्खिल्लसिलेसलक्खमहुसित्थमाइएहिं लेसणएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जंकाल । सेत्त लेसणाबंधे । सेकित उच्चयबंधे२ जण्ण

प्रज्ञप्तः तद्यथा–श्लेषणाबन्धः उच्चयबन्धः समुच्चयबन्धः संहननबन्धः । अथ किं तत् श्लेषणाबन्धः २ यत् कुड्यानां कुट्टिमानां स्तम्भानां प्रासादानां काष्ठानां चर्मणां घटानां पटानां कटानां सुधाचिक्खिल्लश्लेषलाक्षामधुसिक्थादिकैः श्लेषणैः बन्धः समुत्पद्यते जघन्येन अन्तर्मुहूर्तम् उत्कर्षतः

त बंधे–श्लेषणाबंधे उच्चयबंधे समुच्चयबंधे साहणणाबंधे । तिहां श्लेषणाबंध चूनादिक तेणे करी दृढपणा संबंध ते श्लेषबंध १ जे धान्यादिक विशेष एकठा करिये तद्रूप जे बंध ते उच्चयबंध २ सम्यक्प्रकारे ऊंचो राशिना करवा तद्रूप जे बंध ते समुच्चयबंध ३ घणा अवयवना संघातन एकठो करवो ते रूप जे बंध ते संहननबंध ४ । सेकित लेसणाबंधे तेस २ । ते कुण श्लेषणाबंध कहिये श्लेषणाबंध ते कहिये । जणं जे कुड्डाण भीत कुट्टिमाण फरस पासायाण महेल कट्ठाण कठडानां चर्मणां घडानां पटानां कडानां । जेम काष्ठादिकनि, भीत भूमिका खंभा प्रासादनी काठनी चमनी घडना पटनी कडना । जेना चिकणा सिलेस मधु म इनि लाक्षा आदिकें लेसणाबंधे समुत्पज्जइ । चूनानी तेल चाटि अथवा गूगल राल चाटिकनी एकठा करवा ते लीमा कृष्णसिता बंध उपजे । जघन्येन अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यातोकाल । सेत्तं लेसणाबंधे । ते श्लेषणाबंध कह्यो । से कितं उच्चयबंधे उच्चयबंधे

मपुगणी ॥ गुणति ॥ पुर्वं गामयिपयमभिदं द्विपन्नममार्थं यद्दिकोपक्षाचित मस्पाम ॥ गिमिति ॥ इस्तिमउपरि कोष्ठरं यन्मानप गिसतीय ॥ यिचिति ॥ पाळपम्राय ॥ मीयति ॥ शिथिका कूटाकारया प्यादिसम्पानविमप: ॥ मद्रमाचियति ॥ पुरुपममायअम्यानयिशेप: ॥ सोविति ॥ मचकाविपचनताञ्नं ॥ लोहकटाहत्ति ॥ प्राजनविशेपस्य ॥ कडुच्छुयत्ति ॥ परिवपग्रमाजन मासनदायनस्तम्भाः प्रतीता ॥ पकति ॥ मुम्मयमा जन ॥ मतति ॥ ममत्र प्राजनविमप: ॥ उयगरपत्ति ॥ मानाप्रकार तदन्योपकरणमिति ॥ पुग्वप्पओगपच्चइयत्ति ॥ पूयः प्राक्तालासेवितः प्रयोगो

यिविसीयसढमाणियलोहीलोहकडाहकडुच्छुयआसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे ए यं णेणं समुप्पज्जइ, जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं देससाहणणाबंधे। सेकिंत सव्वसाहणणाबंधे २ सणं खीरोदगमाईणं। सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे ॥ सेत्तं आलियावणबंधे ॥ सेकिंत सरीरबंधे २ दुवि

यिविशिथिकास्यन्दमानिकालोहीलोहकटाहकडुच्छिकामनशयनस्तम्भभाण्डामत्रोपकरणादीनां देशसंहननबन्ध एवम्मेव समुत्पद्यते जघन्येना न्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षतः सख्येयं कालं ॥ समाप्तो देशसंहननबन्धः ॥ अथ किं तत्सर्वसंहननबन्धः २ स क्षीरोदकादीनां समुत्पद्यते ॥ समाप्तः सर्वस

मस्ता[illegible] माडीनाइकडाइ कडछय पामण सयण खंभभंडमत्ता वगरणमाईण दससाहणणाबंधे एवमेव समुप्पज्जइ। जे सवाप्पासकारे, गवटगाडी र थ माडामाडो मुग मानरेग मसिह दायडाबयमान येल्लिआयेकरो उपगाभित भम्पानविशेप शाखोना सपरमा काबर भम्माको रयव अटलोपस्याडो पवसा पाडाना पलाप चिविकाकूटने पावारे पाच्छादित झम्पानविशेप माडो मव्वकाहि पधनविशेप काष्ठभाजनविशेप कवको कांबोया पायम गयप व्यवहरिय भंडत्ति माटोमा भाजन मत्तानि, पमथ भाजनविशेप मानाप्रकार तेहको बोजाउपकरण इत्यादिकने देश साहननबंध उपजे। ज रणेनं अंतामहूर्तं उत्कृष्टं सख्यकाल। ते सपरमनो पलमुपत रहे तेतलामाही सख्याता काल रहे। सेत्तदेससाहणणाबंधे। ते देश संहननबंध कहिये। से कतमसाहणणाबंध २। ते सर्व संहननबंध कहिये संसाहणणाजन्य ते कहिये। सतखारादगमादीप। तेह जं पाणासकारे, चो

सायमहइत्यादि॥ प्रायः प्राग्व्याख्यातमेव॥ देससाहणणाबंधेयत्ति॥ देशेन देशस्य संहननलक्षणो बन्धः सम्बन्धः शकटाङ्गादीनामिवेति देशसंह ननबन्धः॥ सव्वसाहणणाबंधेयत्ति॥ सर्वेण सर्वस्य संहननलक्षणो बन्ध सम्बन्ध क्षीरनीरादीनामिवेति सर्वसंहननबन्धः॥ जण्णं सगडरहेत्या दि॥ शकटादीनिच पदानि प्राग्व्याख्याता न्यपि विनेयहिताय पुन र्व्याख्यायन्ते तत्र॥ सगडत्ति॥ गन्त्री॥ रहत्ति॥ स्यन्दन॥ जाणत्ति॥ यानं

आवणाण सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहमाईणं छुहाचिक्खिल्लसिलेससमुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जकालं। सेत्तं समुच्चयबंधे। सेकिंतं साहणणाबंधे २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—देससाहणणाबंधेय सव्वसाहणणाबंधेय। सेकिंतं देससाहणणाबंधे २ जण्णं सगडरहजाणजुग्गगिल्लि

खातिका परिखा प्राकाराट्टालकचरिकाद्वारगोपुरतोरणानां प्रासादगृहशरणलयनापणानां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथादीनां सुधाचिक्खल्लश्लेषसमुच्चयेन बन्धः समुत्पद्यते जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतः संख्येय कालं॥ समाहः समुच्चयबन्धः॥ अथ किं तत् संहनन बन्धः २ संहननबन्धो द्विविधः प्रज्ञप्त तद्यथा—देशसंहननबन्धश्च सर्वसंहननबन्धश्च॥ अथ किं तद्देशसंहननबन्धः २ यच्छकटरथयानयुग्यगिल्लि

प्रासाद घर सरण लेण ए घरविशेष हाट श्रेणी। सिंघाडग त्रिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापहमादीक। सिंघाडाने आकारे त्रिवटा चोवटा चच्चरो गमो चतुर्मुख राजमार्ग प्रमुख एहना पद पूर्वविख्याते। छहाचिक्खिल्लसिलेससमुच्चयबंधसरूपथकी। जघन्य अंतोमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यातोकाल रहे। सेत्तंसमुच्चयबंधे। ते समुच्चय बंधकह्या। सेकिंतसाहणणाबंधे। ते स्युं साहणणा बंध। साहणणाबंधे दुविहे प० त० । साहणणाबंध बेभेदे कह्या ते कहेछे—देससाहणणाबंधेय सव्वस हणणाबंध। देशेकरी देशना संहननबंधन ते बंध कहिये सबंध देश ते गाडाप्रमुखनो परे १ सर्वेकरी सर्वना संहननबंधन बंधकहिये सर्वबंध खीर नीरादिकनापरे ते सर्वबंध। सेकिंतदेससाहणणाबंधे २। ते स्युं ते देश संहनन बंध ते कहिये। जण्णं सगड रह जाण जुग्ग गिल्लि थिल्लि सीय

मपगन्ती ॥ भ्रुगति ॥ पुर्व गोक्षयियप्रसिद्ध त्रिहस्तप्रमाण यन्त्रिकोपशाजित जम्पान ॥ गिल्लिति ॥ हस्तिनउपरि कोल्लरं यन्मानुष गिलतीव ॥ थिल्लिति ॥ मल्लप्रमाण ॥ सीयति ॥ शिविका कूटाकारका आदिसम्पानविशेषः ॥ सदमानियति ॥ पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषः ॥ लोहिति ॥ मलकआदिपचननाजन ॥ लोहकडाहेति ॥ भाजनविशेषप्य ॥ कटुच्छुयति ॥ परिवषयमाजन भाजनशयनसनाः प्रतीता ॥ भकाति ॥ मृन्मयमा जनं ॥ मतति ॥ ममत्रं भाजनविशेष ॥ उवगरणति ॥ नानाप्रकारं तद्न्योपकरणमिति ॥ पुष्पपट्टगपत्तरयति ॥ मूप प्राक्षासासेयितः प्रयोगो

गिल्लिसीयसन्दमाणियलोहीलोहकडाहकडुच्छुयआसणसयणखम्भभमत्तोवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे ए ...ज्जणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जकालं। सेत्तं देससाहणणाबंधे। सेकिंतं सव्वसाहणणा ...भाइणं। सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे॥ सेत्तं अल्लियावणबंधे॥ सेकिंतं सरीरबंधे २ दुवि

...न्द्रिकासमशयनस्तम्भभाजनामत्रोपकरणादीनां देससहननबन्ध सद्भवेव समुत्पद्यते। ...धस्येना ... तरसश सवमनबन्धः २ स क्षीरोदकादिवत् समुत्पद्यते ॥ समाप्त सर्वेषं

...बन्धे ... समुत्पन्न। ... मकारे, ...

...नायेन ... अपरका ... कोहर ... स्यात ...

... विशेष ... ...मविषय ... ...

... दिवाने देश ... बंधे। ...

... ...माक ...बंधे। ते देश ...

... ...मारोप। ... नामप्रकारे, ...

...रद्ग ...

संघातिनते उप ...

तवतिय। संघातपदप्य ...

...समम ...समम ...

...वचेंदरी समुपदनमे विदारित कोमप्रन

न पनह समपनदिये इवे पतत्कामाटे विशप ...। ५

जीवव्यापारो वेदनाकषायादिसमुद्घातरूपः प्रत्यय कारणं यत्र शरीरबन्धे सतथा सएव पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक ॥ पडुप्पन्नप्पओगपच्चइएयत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो प्राप्तपूर्वो वर्तमान इत्यर्थः प्रयोगः केवलिसमुद्घातलक्षणव्यापार प्रत्ययो यत्र सतथा सएव प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकः ॥ नेरइयाइणमित्यादि ॥ त त्थतत्थत्ति ॥ ग्रमन समुद्घातकारणेनावा वाउल्लमाइ ॥ तेसुतसुत्ति ॥ ग्रमन समुद्घातकारणाना वदनादीना वाउल्ल मुक्त ॥ समोहणमाणाणत्ति ॥ समुद्घमानानां समुद्घात शरीरा द्वहि जीवप्रदेशप्रक्षेपलक्षण गच्छता ॥ जीयप्पएसाणत्ति ॥ इह जीवप्रदेशाना मित्युक्तावपि शरीरबन्धाधिकारा

हे पण्णत्ते, तंजहा—पुव्वप्पओगपच्चइए पडुप्पन्नप्पओगपच्चइएय । सेकिंत पुव्वप्पओगपच्चइए २ जण्णं नेरइयाणं संसारत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ तत्थ तेसु तेसु कारणेसु समोहणमाणाणं जीवप्पएसाणं बंधे समुप्पज्जइ ।

त्ममबन्धः ॥ समासो ऽल्लिकापनबन्धः ॥ अथ किं तच्छरीरबन्धः ? शरीरबन्धो द्विविध प्रज्ञप्त तद्यथा—पूर्वप्रयोगप्रत्ययिकः प्रत्युत्पन्नप्रयोग प्रत्ययिकश्च ॥ अथ किंत त्पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक २ य नैरयिकाणां संसारस्थानां सर्वजीवानां तत्रतत्र तपुतेपु कारणपु समुद्घन्यमानानां जीवप्रदे

र नारयादि ... [illegible] । सेत्त ... [illegible] । ते मत संहननबन्ध कथो । सेत्तपलिवायबन्धे २ । से पलियायबन्धे ...
था । सकित सरीरबन्धे २ दुविहे प त । तेणं सरीरबन्ध कहिये सरीरबन्धना भेद कह्या ते कहे—पुव्वप्पयोग पच्चइए पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए
र । पूर्वकाल सेव्या वे प्रयोग जीवव्यापार वेदना कषायादि समुद्घातरूप ते जीवप्रत्यय कहिये कारणे तेणे बन्धविषे, अथ कहतां विशेषप्रदेश तेह
ना पाचालेना ते बन्धरचनाविशेष कह्या ते पूर्वप्रयोग प्रत्ययशरीरबन्ध कहिये प्रत्युत्पन्न कहतां जे पूर्वकाले अनुभव्यो पाम्यो नथी एतले वर्तमान
रूप ते शरीरनो बन्ध जोवेराप्रमाणना संवरिया प्रयोग केवल समुद्घातरूप व्यापार प्रत्यय जिहांछे ते पांचमे समये जाव ते प्रत्युत्पन्न प्रयोगप्रत्यय
शरीरबन्ध कहिये । सेकित पुव्वप्पओगपच्चइए २ । जं णं पूर्व प्रयोगप्रत्यय शरीरबन्ध ते कहिये । जननेरइयाण संसारत्थाण तत्थ २ तेसु २ कारणेसु स
मोहणमाणाणं जीवप्पएसाणं । जे ए नारकादिक, नारकीने संसारभवना सर्वजीवने तिहां २ इन्द्रियो समुद्घातकारण जेहमां वाउल्लमां इसे समुद्घा

तारस्था तथापत्रम इति न्यायन जीवप्रदेशाभिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानां मिति द्रष्टव्य शरीरत्रय प्रमाणंतु परो समुद्घातेन यिविष्पसंकोचि ताना मुपमजमीकतर्तेप्रमादिशरीरप्रदेशामा जीवप्रदेशानां भवेति ॥ वभत्ति ॥ मघो रचनाविशेषः ॥ जस केवलेत्यादि ॥ कपालिसमुद्घातम द गत १ कपाट २ मंथिकरणा ३ तरपूरम ४ लक्षम समुपहतस्य विस्तारितजीवप्रदेशस्य ततः समद्घाता त्प्रतिनियतमानस्य प्रदेशा स्संहरतः समु द्घातप्रतिनिवृत्तमानस्य वा पञ्चमादि प्रमरूप समयषु स्या दित्यतो विशषमाह ॥ चतरामघे वहमानस्स त्ति ॥ निवर्तनक्रियायां चतरे मध्ये वर्तिस्य

सर्वपुप्रप्पजगपच्चुत्तर । सेकिंत पञ्चुप्पन्नप्पओगपच्चइए२ जस्स केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स तओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अतरामंथे वहमाणस्स तेयाकम्माणं बंधे समुप्पज्जइ,

शानां यन्धः समुत्पद्यत ॥ समासः पूर्वप्रयोगप्रत्ययिकः ॥ अथ किंत प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकः २ य स्कय स्यारमिना अनगारस्य कवलिसमुद्घा तन समुद्धतस्य ततः समुद्घातात् प्रतिनियतमानस्य आरा मधि वतमानस्य तजस्कर्मणो यन्धः समुत्पद्यत किंकारण ? तदा तस्य प्रदेशा ए

तद्वारचना बांधबत्र कह्या एतम तिवो २ याद तो ते वारचनाविषे समघात शरीरथकी बाहिर जोवप्रदेश प्रक्षेपमात्र जाताने ,जीवप्रदेशाबति, हतो जी वप्रदेशने रमाक्रमा पवि शरीर मरक्ष्यपविकारथको आक्रमवेयाप्रित तैजसकार्मण शरीर प्रदेशने एकाकारता, शरोरबंध हवे पर्छ समुद्घातथको निवेरो संचारितने उपलजनो छत तैजसादिकशरीर प्रदेशना जीवप्रदेशना शोलबंध रचनाविशेष ते ऊपजे। सेतपुव्वपयोगपच्चइए। ते पूर्व प्रयोगप्रत्यय शरोर बंध कहिये। मंजिततपच्चप्पण प्पयोग पचइ० ? । किंवे हू ते प्रत्युत्पन्न प्रयोगप्रत्यय शरीरबंध कहिये, रस पर प्रयोगशरीर। जसकेवलनाणिस्स अणगारस्स अववमम त्याण समाइपमत पाममत्पायाओ पडिनियत्तमाणस । जेपरा अप्रमत्तारि अवस समुद्घातथको दंड १ कपाट२ मथान३ अन्तरपूरण४ समवेकर्ता समुपहतने विस्तारित आत्मप्रदेशना निवारपछी समुद्घातथको प्रतिनिवर्तमानने प्रथमपते संहरताने समघात प्रतिनियतमानपणा पंचमादि क समय समयनविषे हुवे एतावताटे विशेष कहिये। अंतरामधे वहमाणस तेयाकम्माणबंधेसमुप्पज्जइ किंकारण ताहे सेपएसाए गत्तोगयाभवंति । निवर्त

तस्य पञ्चमसमयवर्त्तिनो यद्यपि षष्ठादिसमयेषु तैजसादिशरीरसङ्घातः समुत्पद्यते तथा प्यभूतपूर्वतया पञ्चमसमय एवासौ भवति अयमेतु मू तपूर्वतयैवेति कृत्वा "अन्तरामपे वट्टमाणस्से तुम्भ मिति ॥ तेयाकम्माणं बन्धे समुप्पज्जइत्ति ॥ तैजसकार्मणयो शरीरयो बन्धः सङ्घातः समु त्पाद ॥ किंकारणंति ॥ कुतोहेतो रुच्यते ॥ ताहेत्ति ॥ तदा समुद्घातनिवृत्तिकाले ॥ सेत्ति ॥ तस्य केवलिनः प्रदेशा जीवप्रदेशा ॥ एगत्तीगयत्ति ॥ एकत्व गताः सङ्घातमापन्ना भवति तदनुवृत्ताच्च तैजसादिशरीरप्रदेशाना बन्ध समुत्पद्यत इति प्रकृत शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्ष ॥ तेयाकम्मा

किंकारण ताहे से पएसा एगत्तीगया भवति। सेत्तं पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए। सेत्तं सरीरबंधे। सेकिंतं सरीरप्प ओगबंधे? पंचविहे प० तंजहा—ओरालियसरीरप्पओगबंधे वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे आहारगसरीरप्पओगबंधे तेयासरीरप्पओगबंधे कम्मासरीरप्पओगबंधे। ओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते! कइविहे प० ? गोयमा!

कायगता भवन्ति ॥ समासः प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक ॥ समासः शरीरबन्धः ॥ अथ किं त शरीरप्रयोगबन्ध २ पञ्चविध प्रकार सादया—औ

मक्रिमाने अन्तरमध्ये रहेलाने पञ्चमसमयने विषे [illegible] यद्यपि छठ्ठादि समयनविषे तैजसादि शरीरसंघात उपजे तथापि अभूत पूर्वपणेकरी पंचमसमयनेविषेज एव ॥ प्रथमेविषे ता भूत पूर्वपणेकरी एम करीने, अंतरालमध्यवर्तमानना, इसो कह्युं तैजसकार्मण ए बेउ शरीरनोबंध ए संघात उपजे म् कारण प इतरको ते कहिये तदा तिवारे समुद्घात निवृत्तकालनेविषे ते केवलीना प्रदेश जीवप्रदेश एक पणापाम्या संघातपाम्या हवे ते पण्हुत्ते करी तैजसादिकशरीर प्रदेशानाबन्ध उपजे इहांयका शरीरबंध पक्षनेविषे तैयाकम्माणं 'तेयाकम्मसमुप्पन्नाति तैजसकार्मण आश्रयभूत पणा थको तैजसकार्मण शरीरप्रदेश तैजसबंधमात्र उपजे एसो प्रकार करतो। सेत्तंपडुप्पन्नप्पओगपच्चइए सेत्तंसरीरबंधे। से प्रत्यय प्रयोगप्रत्ययिक शरीर बंध क्या ते शरीरबंध क्या। से किंतं शरीरप्पओगबंधे २ पंचविहे प तंजहा। हिवे वः ते शरीरप्रयोग बंध ते हे ते औदारिकादिक तेहना जे प्र योग योगाकार प व्यापारादि अभि व्यापार तेहेकरी बंध पदगल ते पुद्गलोपादान शरीरक्रूप प्रयोगना जे बंध शरीरप्रयाग ते पांचभेदे कह्या ते

पंचविहे प०, तंजहा—एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे । एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०—पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो

दारिकशरीरप्रयोगबन्धो वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध आहारकशरीरप्रयोगबन्धः तैजसशरीरप्रयोगबन्धश्च कार्मणशरीरप्रयोगबन्धश्च ॥ औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो यावत् पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धश्च । एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध एवं एतेन अभिलापेन भेदो यथा अवगाहनासंस्थाने औदारिकशरीरस्य तथा भणितव्यो यावत् पर्याप्तकगर्भव्यु

अर्थ—देशबन्धसरीरप्पयोगबंध । औदारिकशरीर प्रयोगबंध १ वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध २ । आहारकसरीरप्पयोगबंधे । आहारकशरीर प्रयोगबंध ३ । तैजसशरीरप्पयोगबंधे । तेजसशरीर प्रयोगबंध ४ । कम्मासरीरप्पयोगबंधे ५ । ओरालियसरीरप्पयोगबंधेणंभंते कइविहे प । औदारिकशरीर प्रयोग बंध हे भगवन् ! कितने भेद कहा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहे प तं । हे गौतम ! पांचभेदे कह्या ते कहै है—एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधेय । एकेन्द्री औदारिकशरीरप्रयोग बंध १ । बेइंदिय ओरालियसरीरप्पयोगबंधेय । बेइन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध २ । तेइंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधेय । ते इन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ३ । चउरिंदिय ओरालियसरीरप्पयोगबंधे । चौरिन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ४ । पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे । पंचेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ५ । एगिंदिय ओरालियसरीरप्पयोगबंधेणंभंते कइविहे प । एकेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् ! केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहे प त । हे गौतम ! पांचभेदे कह्या ते कहै है—पुढवीकाइयएगिंदिय । पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध । एवंएएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे । इम इणे आलावेकरी भेद जिम अवगाहना संस्थानके

य एव मनुष्यायुरिति ॥ तैजसकार्मणनामयनन्तया तैजसकार्मणा शरीरिमद्या सपा यस्य स्वमुत्पद्यत इति व्याख्येयमिति ॥ वीरियसजोगसद्दव्य यावत्ति ॥ वीर्यं वीर्यान्तरायक्षयोपशमजाशक्ति योगा मनःप्रभृतय सह यांगे वर्तत इति सयोग सन्ति विद्यमानानि द्रव्याणि तथाविधपुद्गला य स्य जीवस्या सौ सद्द्रव्या वीर्यप्रधान सयोगो वीर्यसयोग सद्द्रव्यतेति विग्रह सद्भाव सत्ता तया वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया सवीर्यतया सयोगतया सद्द्रव्यतयाच जीवस्य तथा ॥ पमायपच्चयत्ति ॥ प्रमादप्रत्यया त्प्रमादलक्षणकारणा तथा ॥ कम्मचत्ति ॥ कर्म चैकेन्द्रियजात्यादिक मुदयवत्ति ॥ मायवत्ति ॥ योगञ्च काययोगादिक ॥ भवत्ति ॥ तिर्यग्भवादिक मनुष्यमान ॥ आउयवत्ति ॥ आयुष्क तिर्यगायुष्कायुरुदयवत्ति ॥ पडु

जाव पज्जत्तागसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे अपज्जत्तागसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्स जाव बंधे । ओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते । कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० । वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्तथा पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धश्च ॥ औदारिकशरीरप्रयो गबन्धो भदन्त । कस्य कर्मण उदयेन ? (भवतीतिशेषः) गौतम । वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया प्रमादप्रत्ययात् कर्म च योगञ्च भवञ्च आयुष्य प्रतीत्यौ

। प । पाराप्तिमरारम तहाभाविषयो । औदारिकशरीरना बन्ध तिम इहां पचि कहवा । जावपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय मनुष्य पंचिंदिय औरालिय सरीरप्पओग बंध । यावत् पर्याप्ता गर्भज मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध व कह्यो । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय मणुस जाव बंध । अपर्याप्ता गर्भज मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध । ओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्सकम्मस्सउदएण । औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध स भदन्त केहना कर्मने उदये हुवे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोग सद्दव्वयाए पमाद पच्चया कम्मं जोगं भवं पाउवे । वीर्यान्तरायना क्षयोपशमथी जे शक्ति योगे ते मनप्रमुख योगसहित वर्त्ते ते सयोग कहिये विद्यमान द्रव्य तथाविध पुद्गल जेह जीवने तेह सद्रव्य कहिये वीर्य प्रधान योग ते वीर्ययोग कहिये तेहोज के सद्रव्य तेहनाभाव तिणेकरी एतले सवीर्यपणे सयोगपणे सद्रव्यपणे जीव

यति ॥ प्रतीत्यामित्य ॥ उरालिएत्यादि ॥ औदारिकशरीरप्रयोगसम्पादक यन्नाम तदौदारिकशरीरप्रयोगनाम तस्य कर्मण उदये औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भवतीति अथ एतानिच वीर्यसयोगसद्द्रव्यतादीनि यदा औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मोदयस्य विशेषकतया व्याख्येयानि वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया इत्यनूतया यो विवक्षितकर्मोदय इत्यादिना प्रकारेण व्याख्यास्येते तदा औदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्य कारणानि तत्र च पक्षे यदौदारिकशरीरप्रयोगबन्धः कस्य कर्मण उदयेनेति पृष्टे यदन्यान्यपि कारणान्यभिधीयन्ते तद्विवक्षितकर्मोन्यो निश्चिता अथ सर्वकारिकारणा न्य

कम्मस्स जोगस्स जवस्स आउयस्स पडुच्च उरालियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं उरालियसरीरप्पओगबंधे।
एगिंदियउरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पुढविकाइयएगिंदिय उरालिय

दारिकशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदये औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (भवतीति) एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कस्य कर्मण उद

न तथा प्रमादप्रत्ययकं प्रमादरूपं कारणं तथा कर्म तु एकेन्द्रिय जात्यादिकं उदयवर्त्ति योग तु काययोगादिकं भव तु तिर्यग्भवादिकं आयुष्मान आयुष्कं तु तिर्यगायुष्कादिकं उदयवर्त्ति । एवमवगाह्य शरीरप्रयोगनामाए कम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पओगबंधे । अथ वीर्य न चौदारिकशरीर प्रयोग सम्पादकं यन्नाम तत् कर्मतदन्यैरिति चौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भवे इतीयन्, एवं सवीर्य सयोग सद्द्रव्यतादिकपदं औदारिकशरीर प्रयोगनाम कर्मोदयस्य विशेषणपदं व्याख्येयं एतस्मिंश्च पक्षे सवीर्यपदं सयोगपदं सद्द्रव्यपदं तथाविध औदारिकशरीर योग्यपुद्गलनिभावे तथा प्रमादप्रत्यय तथा कर्मतएकेन्द्रिय जात्यादिकं उदय वर्त्तते तु आयुष्मान आयु काययोगादिकं भव तिर्यग् भवादिकं आयुष्कं तिर्यगायुष्कादिकं तु आयुष्मान चौदारिकशरीर प्रयोगबन्ध उपपद्यते । एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते कम्मस्स उदएणं एवमेव । एकेन्द्रिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध ईभगवन् ! किमस्य कर्मण उदये स्यादितिप्रश्न उत्तर हे गौतम ! एवमेवेति ए सूत्रे अने पूर्व सूत्रयोगमा कह्यां ता पणि औदारिकशरीर प्रयोगनामा ए पदनी विषे एगिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए इसा कहवा विशेष देखता एकेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्धना अधिकारवाको इम आगे पणि जिवा

सरीरप्पओगबंधेवि एवंचेव, एवं जाव वणस्सइकाइया, एवं बेइंदिया, एवं तेइंदिया, एवंचउरिंदिया, तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते । कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवंचेव, मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया जाव आउयपडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं । मणुस्सपंचिंदि

यत? एवमेव पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो एवमेव एवं यावत् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो एवद्वीन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध एवत्रीन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध एवचतुरिन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (पीतिवाच्यम्) तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भवन्ति । कस्य कर्मण उदयेन? एवमेव ॥ मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भवन्ति । कस्य कर्मण उद

रो कहना । पुढवीकाय एगिंदियओरालियसरीरप्पओग एवमेव । पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोग पनि इसीतरे कहना । एवंजाव वनस्पतिकाया । इम यावत् वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्धसमे कहवो एवं बेइंदिया एवं तेइंदिया एवंचउरिंदिया । इम बेइन्द्रिय इम तेइन्द्रिय इम चउरिंद्रिय पनि कहना । तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणभंते कस्सकम्मस्स उदएणं एवचेव । तिर्यचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । किसा कर्मने उदयेकुवे इतिप्रश्न एवचेवत्ति, पूर्वसूत्र बत्व तिम इहां पनि कहना । मनुष्यपंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्सकम्मस्सउदएण । मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । किसाकर्मने उदयेकुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरिय सजोग सद्दव्वताए पमाद । हेगौतम । वीर्यसहित सद्द्रव्यपणेकरी तथा प्रमादप्रत्यय करी । जाव आउयंच पडुच्च मनुष्यपंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगनामाएकम्मस्स उदएणं मनुष्यपंचेंद्रिय औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्म । यावत् मनुष्य आयुकर्मप्रति अवलंबिने आश्रयीने मनुष्यपंचेंद्रिय

लियसरीरप्पओगनामाए ॥ इत्यत्रपदे ॥ एगिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए ॥ इत्ययं विशेषो दृश्य, एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्ये वाचि शतत्वा देव मुत्तरत्रापि वाच्यमिति ॥ देसबंधवि सव्वबंधविति ॥ तत्र यथा ऽपूपः स्नेहभृततसतापिकायां प्रक्षिप्त प्रथमसमये घृतादि गृह्णात्येव शेषेषु समयेषु गृह्णाति विसृजतिवा; एवं मय जीवो यदा प्राक्तनशरीरक विहायान्य गृह्णाति तदा प्रथमसमये उत्पत्तिस्थानगतान् शरीरप्रायोग्यपुद्गलान् गृह्णात्येव त्यय सर्वबन्ध ततो द्वितीयादिषु समयेषु तान् गृह्णाति विसृजतिचे त्येवच देशबन्ध तत एव मौदारिकस्य देशबन्धो ऽपि सर्व बन्धो प्यस्तीति ॥ सव्वबंध एकसमयाति ॥ अपूपदृष्टान्तेनैव तस्सवबन्धस्य एकसमयत्वा दिति ॥ देसबंधे इत्यादि ॥ तत्र यदा वायु मनुष्या

यओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे एवंचेव । एवं पुढविकाइया एवं जाव मणुस्स पंचि

मन ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया प्रमादप्रत्यया छ्याय शयस प्रतीत्य मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगनामः कर्मण उदयेन मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (भवतीति) औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! किं देशबन्धः सर्वबन्धो? गौतम ! देशबन्धोपि सर्वबन्धोपि ॥ एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! किं देशबन्धः सर्वबन्ध ? एवम्चेव ॥ एव पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धापि

भावार्थ—अहो भगवन् ! मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध क्या कर्मों के उदय से होता है ? अहो गौतम ! ... विशेषार्थ पूर्व बताया तैसे कहना । औदारिकशरीरप्रयोगबंधेणं भंते किं देसबंधे सव्वबंधे । औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध क्या देशबन्ध है अथवा सर्वबन्ध है ? अहो गौतम ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । हे गौतम देशबन्ध भी है सर्वबन्ध भी है जैसे तेल तपाये कडाये में पूवा डाला प्रथम समय में सब तेल खींचे पीछे शेष समय में खींचे और छोड़े तैसे ए जीव जिवारे पूर्व भवसम्बन्धी शरीर छोड़ी अन्य स्थान में जाय तिवारे प्रथम समय उत्पत्तिस्थान गत शरीर प्रायोग्य पुद्गल ग्रहे ए सर्वबन्ध, शेषसमये ग्रहे मूके ए देशबन्ध । एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते किं देसबंधे सव्वबंधे एवंचेव एवं पुढविकाइया । एकेंद्रिय

दिया। वैक्रियं सत्वा विहायच पुन रौदारिकस्य समय मेक सवबन्धं कृत्वा पुन स्तस्य देशबन्ध कुर्व न्नेकसमयानन्तर म्रियते तदा जघन्यत एकस मयं सर्वबन्धो ऽस्य भवतीति ॥ उत्कोसेण तिन्निपलिओवमाइं समयूणाति ॥ कथ यस्मा दौदारिकशरीरिणा त्रीणि पल्योपमा न्युत्कर्षतः स्थिति स्तेषु च प्रथमसमय सर्वबन्धक इति समयन्यूनानि त्रीणिपल्योपमा न्युत्कर्षत औदारिकशरीरिणा देशबन्धकालो भवति ॥ एगिंदियओरालियेत्यादि

दियओरालियसरीरप्पओगबन्धे णं भंते! किं देसबंधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबंधेवि सव्वबंधेवि। ओरालिय सरीरप्पओगबंधेणं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गो०! सव्वबंधेवि एक्कं समयं देसबंधेवि जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं समयऊणाइं। एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते! कालओ केव

एवं यावत् मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त। किं देशबन्धः सर्वबन्धो? गौतम। देशबन्धोऽपि सर्वबन्धोऽपि। औदारिकशरीरप्र योगबन्धो भदन्त। कालतः कियच्चिरं भवति? गौतम। सर्वबन्धो एकं समयं देशबन्धोऽपि जघन्येनैकं समयं मुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि

औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध भगवन् क्या देशबन्धरूप अथवा सर्वबन्धरूप है इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम पूर्व कहा तिसप्रकार इस पृथिवीकायिक पञ्चे न्द्रिय। ऐसेही यावत् मनुष्य पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध सर्वबन्ध। इस यावत् मनुष्य पञ्चेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् क्या देशबन्धरूप सर्वबन्धरूप है। गोयमा देसबंधेविसव्वबंधेवि। हे गौतम देशबन्ध भी होवे सर्वबन्ध भी होवे पूछिमो परे कहना। औदारिकशरीरप्रयोग बन्धकालतस्य कियच्चिरं। औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् कालथकी केतलाकाल रहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वबंधे एकसमयं देसबंधे। हे गौतम सर्वबन्ध एक समय पूर्वमाने इत्यादि करीनेज ते सर्वबन्धने प्रथमसमय पछी देशबन्धकालादि तिवारे विचारे मात्र जघन्य समय। उत्कृष्टेन सर्वबन्धने कोइक औदारिकशरीरना प्रथमसमय सर्वबन्ध करीने पछी तेहना देशबन्ध करतो प्रथमसमयने अन्तरे मरणपामी तेहने विचारे समय प्रथमसमय पछीनेज तिविपलिओपमाई समय ऊणाई। [illegible]

देसबंधे ॥ जहणणं एक्कसमयादि ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरी वैक्रिय गतः पुन रौदारिकप्रतिपत्तौ सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्धक एक समय भूत्वा मृत इत्यवमिति ॥ उक्कोसेणं बावीस मित्यादि ॥ एकेन्द्रियाणां मुत्कर्षतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि स्थिति स्तत्राद्यौ प्रथमसमये सर्वबन्धक शेष काल देशबन्धक इत्येवं समयोनानि द्वाविंशति वर्षसहस्रा ण्येकेन्द्रियाणा मुत्कर्षतो देशबन्धकाल इति ॥ पुढविकाइयेत्यादि ॥ देसबन्धे ॥ जहणणं

चिर होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कसमयं देसबंधे जहण्णेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं । पुढवीकाइयएगिंदियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कसमयं देसबंधे जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं

समयोनानि । एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? सर्वबन्ध एकं समयं देशबन्धो जघन्य मेकं समय मुत्कर्षतो द्वाविंशतिर्वर्षसहस्राणि समयोनानि । पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगपृच्छा गौतम ! सर्वबन्ध एकं समयं देशबन्धो जघन्यतः क्षुल्लक

होइलो नेम पर्याप्तमो उत्कृष्टी स्थितिके तेहनेविषे पहिले समये सर्वबन्धक हुए तेमाटे समय ऊन तीन पल्योपम उत्कृष्टा औदारिकशरीरीना देशबन्धकने । औदारिकशरीरप्रयोगबन्धमते कालथी केटलोकाल । एकेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् कालथकी केतलाकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सर्वबंधे एकसमय देसबंधे जघन्य एक समय उत्कृष्ट बावीसहजारवरस समयऊणा । हेगोतम सर्वबन्ध जघन्यथकी एकसमय तेहिज वायु औदारिकशरीरी वैक्रियमते गया वली औदारिक पडिवजता सर्वबन्धकथाने देशबन्धक एकसमय थइने मरणपाम्या, इम सर्व बन्धे एकसमय देशबन्धे पणि जघन्ये एकसमयहुवे उत्कृष्टथकी बावीसहजार वरसनी स्थितिके तिहां एक प्रथमसमये सर्व बन्धकथाय शेषकाल देशबन्ध क इम एकेन्द्रियने समय ऊणा बावीसहजारवरस एवं हुवे उत्कृष्टथकी देशबन्धकालकह्या । पृथ्वीकाय एगिंदिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्धमते कालथी केतलोकाल । पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् कालथकी केतलाकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सर्वबंधे एक समयं देसबंधे जघन्य क्षुल्लकभवग्रहणतिसमयऊणं । हेगोतम सर्वबन्ध एक समय तेहमोवृत्ति पूर्वोपरे जघन्य क्षुल्लक भवग्रहण तीनसमय ऊन जघ

पुव्वाण जवण्णमंतिसमयूणानि ॥ कथं औदारिकशरीरिणां क्षुल्लकभवग्रहणस्य जघन्यतो जीवितं तत्र गाथाभिर्निरूप्यते–दोन्निसयाइं नियमा छप्प
न्नाइं पमाणओ होंति ॥ आवलियपमाणेणं खुड्डागभवग्गहणमेयं ॥ १ ॥ पण्णट्ठिसहस्साइं पंचसयाइं तहय छत्तीसा । खुड्डागभवग्गहणा हवंति अंतोमु
हुत्तंमि ॥ २ ॥ सत्तरसभवग्गहणा खुड्डागा हुंति आणुपाणंमि ॥ तेरससयसयाइं पंचाणउयाइं उसासा ॥ ३ ॥ एकोनसप्तस्य (६५५३६) मुहूर्तगतक्षुल्लक
भवग्रहणराशेः सप्तत्रिंशच्छतत्रिसप्ततिसंख्येन (३७७३) मुहूर्तगतोच्छ्वासराशिना भागे हृते यल्लभ्यते तदेकस्मिन्नुच्छ्वासे क्षुल्लकभवग्रहणपरिमाणं भवति
तच्च सप्तदशाऽवशिष्टं स्तोकलवोच्छ्वासराशि भवतीति अयमभिप्रायो यथा सप्तानां त्रिभिः सप्तकैः सप्तभिश्च त्रिसप्तत्यधिकशतैः क्षुल्लकभवग्रहणं भव
ति तथा सप्तानां पञ्चनवत्यधिकानि त्रयोदशशतानि न्यूनानि च त्रयस्यापि क्षुल्लकभवग्रहणस्य तत्र भवतीति तत्र च पृथिवीकायिकः त्रिसमयं विग्रहेणा
गतः स तृतीयसमये सर्वबन्धकः समयं देशबन्धको भूत्वा क्षुल्लकभवग्रहणं मृतो मृतश्च साविग्रहेणागतो यदा सर्वबन्धक एव भवतीति एवं च यते वि

जघन्य अंतर कहिये तेहिज औदारिकशरीरीनां क्षुल्लक भवग्रहण जघन्यथकी जाणवां ते गाथाए करी कहियेछे—दोन्निसयाइं नियमा छप्पन्नाइं प
माणओ होति । आवलियपमाणेणं खुड्डागभवग्गहणमेयं ॥ १ ॥ पण्णट्ठिसहस्साइं पंचेवसयाइं तहयछत्तीसा । खुड्डागभवग्गहणा हवंति अंतोमुहुत्तेणं ॥ २ ॥
सत्तरसभवग्गहणा खुड्डागा हुंति आणपाणंमि । तेरससेवसयाइं पंचाणउयाइं ऊसासा ॥ ३ ॥ तिहां एक मुहूर्त [६५५३६] एकमुहूर्त गत क्षुल्लक भव
ग्रहण राशिने ३७७३ एक मुहूर्त मध्यना उच्छ्वास राशिकरी भागदीधा सतर भव थाय तेरसे पंचाणुं उच्छ्वासे ए अंकराशि हवे इहां ए अभिप्राय जे सत्तावीसे
उच्छ्वासे तिहत्तरे करी क्षुल्लकभवग्रहणपणे ते सत्तावीसे तेरसे पंचाणुं [११९५] उच्छ्वासे ए अंकराशिवडे इहां ए अभिप्राय जे सत्तावीसे [२० १]
तिहत्तरे क्षुल्लक भवग्रहण हुवे ते सत्ताव तेरसे पंचाणुं [११९५] अढारमाथी अधिक क्षुल्लकभवग्रहणनां तिहांथी तिहां पृथिवीकायिक त्रणसमय
विग्रहेकरी आव्यो ते त्रीजेसमय सर्वबंधक थयोतिवारे देशबंधकपणे क्षुल्लकभवग्रहण अभिप्रायो मूओ मुओ अविग्रहेकरी आव्यो तिवारे तिवारे सर्वबंध
कथोज एक रम ज विग्रहसमय तास क्षुल्लक कहिये । इत्यादिक बाकीय मायबंधारं बंधबंधार । पृथिवीकायिकनो बंधौदारिक कायवंधनं

ग्रहणमया स्वयं सेवन क्षुल्लकभवग्रहण मित्युच्यते ॥ उक्कोसेणं बावीस मित्यादि ॥ नाभिलमवति ॥ देसबधाश्चिनत्यीत्यादि ॥ पयमथ छमेश्चा वनस्पतिद्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां क्षुल्लक भवग्रहण त्रिसमयोन अपन्यतो दशबन्धो यस सर्वा वैक्रियशरीर नास्ति वैक्रियशरीरं हि सत्यमसमयो न पम्पत औदारिकदशबन्धः पूर्वोक्तयुक्त्या स्यादिति ॥ उक्कोसेणजाजस्समित्यादि ॥ तत्रापां वर्षसहस्राणि सप्तोत्कृष्टतः स्थितिः तेजसां अहोरात्राणि त्रीणि वनस्पतीनां वर्षसहस्राणि दश द्वीन्द्रियाणां द्वादशवर्षाणि त्रीन्द्रियाणां एकोनपञ्चाश दहोरात्राणि चतुरिन्द्रियाणां षण्मासा स्तत

हण तिसमयऊण उक्कोसेण बावीसवाससहस्साइं समयऊणाइं एवसव्वेसिं सव्वबंधो एक्कसमय देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीर तेसिं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहण तिसमयऊण उक्कोसेण जाजस्स उक्कोसिया ठिइ सा समयऊणा कायव्वा । जेसिंपुण अत्थि वेउव्वियसरीर तेसिं देसबंधे जहन्नेण एक्कसमय उक्कोसेण जाजस्सठिई

क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं उत्कृष्टतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि समयोनानि ॥ एवं सर्वेषां सर्वबन्धः एकसमयं देशबन्धो यषां नास्ति वैक्रियशरीरं तेषां जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं उत्कृष्टतो या यस्य उत्कृष्टा स्थितिः सा समयोना कर्त्तव्या येषां पुनः रस्ति वैक्रियशरीरं ते

सहमुनाके तिवां प्रथमसमय सर्वबन्धक शेषकाल देशबन्धक इम समय ऊणा २२ वर्ष पृथिवीकायना देशबन्ध कह्या तथा । एवसव्वेसिं सव्वबंधो एक समय देसबंधा । इम सघलेविषे सर्वबन्ध एकसमय प्रमाण देशबन्धा । जेसिंनत्थिवेउव्वियसरीर तेसिं अजहन्नेणखुड्डागभवग्गहणतिसमयऊण । एतलेउप तेज वनस्पती बेइन्द्री तेइन्द्री चौरिन्द्री क्षुल्लक भवग्रहण त्रिसमय ऊन जघन्यथी देशबन्ध कमाट जेहने वैक्रियशरीर नथी वैक्रियशरीर हती एकसमय जघन्य वली औदारिकनेंग सर्वबन्धकथी त्रुटि तिवारेंरो हुवे । उक्कोसेण जाजस्सउक्कोसियाठिई सासमयऊणाकायव्वा । उत्कृष्टपणो जेहनी उत्कृष्टो स्थिति ते समय ऊन जाणवी जथो सात सहस्र वर्ष ते अपनी तीन अहोरात्री वनस्पतीनी दश सहस्र वर्ष बेइन्द्रीनी बार वर्ष तेइन्द्रीनी उगुणपचास दिन चउरिन्द्रीनी छमास एतला सर्वबन्धसमय ऊनदेशबन्ध स्थिति उत्कृष्टी हुवे । जेसिंपुणअत्थिवेउव्वियसरीर तेसिं देसबंधो जहन्नेणएक्कसमय । जेहने वली

मृतां सवबन्धसमयोना उत्कृष्टतो देशबन्धस्थिति र्भवतीति ॥ खेसिपुवेत्यादि ॥ तेन वायव पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च एषां जघन्येन देशबन्ध एकसमय भावनाच मानिव ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ तत्र वायूनां त्रीणिवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः स्थितिः पञ्चेन्द्रियतिरश्चां मनुष्याणां च पल्याप मत्रय स्थिति सववन्धसमयोना उत्कृष्टतो देशबन्धस्थिति रेषां भवतीति यतिदर्शितो मनुष्याणां देशबन्धस्थितौ सबाधाया मध्यसिमसूत्रलेन माशादय तेषां तामाह ॥ जाव मणुस्साणमित्यादि ॥ तत्र औदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्य कालो ऽयमस्यैवान्तर निरूपयन्नाह ॥ ओरालियेत्यादि ॥ सवबन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं कथं त्रिसमयविग्रहेणौदारिकशरीरि ष्वागत स्तत्र द्वौसमयौ अनाहारक स्तृतीयसमये सर्व

सा ममयऊणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसबंधे जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं समय ऊणाइं । ओरालियसरीरप्पओगबंधंतरेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गो० ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डाग

सा एकसमयो जघन्य मेकं समय मुत्कृष्टतो या यस्य स्थितिः सा समयोना कर्तव्या, यावन्मनुष्याणां देशबन्धो जघन्ये नैकसमय मुत्कृष्टत स्त्रीणिपल्योपमानि समयोनानि ॥ औदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरं भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! सर्वबन्धान्तरं जघन्यतः क्षु

वैक्रियशरीर ते वायु पंचेंद्रिय तिर्यंचमनुष्य एहनेज जघन्ये देशबन्ध एकसमय ज्यारमा पृथ्वीपरे कह्यो । उक्कोसेणं बावीसाइं वाससहस्साइं १॥ । उत्कृष्टथी जे जेहनी स्थिति ते समये ऊणो कहवो तिहां वायुनी तीनसहस्रवर्ष उत्कृष्टोस्थिति पंचेंद्री तिर्यच मनुष्य ने पल्योपम तीन ए स्थिति सर्वबन्ध एकसमय ऊन उत्कृष्टदेश बन्धस्थिति तेहनेहुवे, यतिदेशथको मनुष्यनीस्थिति पामी ता पनि मतिसमूत्रपदेकरी साक्षातथकोज ते कहे छे—जावमणुस्साणं देसबंधे जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं समयऊणाइं । यावत् मनुष्य देशबन्धे जघन्यथको एकसमय उत्कृष्टथको तीन पल्योपम समयऊणा भावना पूर्वे कही ते जाणवो औदारिकशरीर प्रयोगबन्धना कालनो विषे तेहनेज अन्तरनिरूपणकरतो कहेछे—ओरालिय सरीरबंधंतरेणंभंते कालओकेवच्चिरंहोइ । औदारिकशरीर बन्धनाअन्तर हे भगवन् कालथको केतलाकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतरं जह

स्यकः पुद्गलप्रदेश स्थित्वा मृत औदारिकशरीरि वैयोत्पन्न सत्रप प्रथमसमये सवबंधक एवंच सवबन्धस्य २ कालतर पुद्गलजघो विग्रहगतिसमय
ग्रयोनः ॥ उक्कोसत्तमित्यादि ॥ उत्कृष्ट त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि पूर्वकोटिसमयाभ्यधिकानि सवबन्धान्तर भवतीति, कथ मनुष्यादि ग्रविग्रहे
णागत सत्रप प्रथमसमयमेव सवबन्धकाभूत्वा पूर्वकोटिच स्थित्वा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थिति नारकः सर्वार्थसिद्धकोवा भूत्वा त्रिसमयेन वि
ग्रहेणौ दारिकशरीरी सपन्न सत्रप विग्रहस्य द्वौसमया मनाहारक सृतीयच समये सवबन्धकणौ औदारिकशरीरस्यैवच श्री सी द्वावमाहारकसम व
यो रेकः पूर्वकोटीसवबंधसमयस्थाने चित्त तात च पूर्णा पूर्वकोटी जातैकच समया तिरिक्त एवच सवबधस्य २ चोत्कृष्ट मन्तर यथोक्तमानं भ
वतीति ॥ देसबंधंतरमित्यादि ॥ देशबन्धान्तरं जघन्यमेक समय, कथ देशबन्धको मृतः स अविग्रहेणैवो त्पन्न सत्रप प्रथमएव समय सवबन्ध
का द्वितीयादिषुच समयपु देशबन्धकः सपन्न सादत देशबंधस्य २ चान्तर जघन्यत एकः समयः सवबधसमयीति ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ उत्कृष्ट

नयग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेण तत्तीस सागरोवमाइ ठिइ पुव्वकोडिसमयाहियाइ देसबंधंतर जहण्णेण

मकमवधान्तरं त्रिसमयोन मुत्कर्षत त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमोस्थितिः पूर्वकोटिसमयाभ्यधिका, देशबन्धान्तरं जघन्ये नैकसमय मुत्कर्षेत त्रय

यं पुद्गलभवमवमंतिसमयऊण । हे गौतम ! सव बन्धान्तर जघन्यको पुद्गलभवग्रहण तोनसमयऊणा हुवे तेकिम ? वसमयें विग्रहेकरो औदारिक
शरीरोमेंविषे भावा तिहां वेसमय अनाहारक श्रीजासमयनविषे सवबन्धक पुद्गलभव एकोने मूवा औदारिकशरीरोनेविषेज उपना तिहां पहिले सम
यें सवबन्धक इम सवबध भने सवबन्धनोअन्तर पुद्गलभव विचालत समयतीन ऊणा जाणवा । उत्कासेण तेत्तीससागरोवमाइ पुव्वकोडिसमयाहिया
इ । उत्कृष्टको तेत्रीस सागरोपम पूर्वकोडो एकसमय अधिक सव बधान्तर जाणवो तेकिम कोइमनुष्यादिकभवे अविग्रहगतें भावो तिहां प्रथमसमयनेविषे
ज सवबंधक थइ, पूर्वकोडो एकोने सातमे नरक तथा सर्वार्थसिद्ध छाने भगो त्रिसमयमें विग्रह औदारिकशरीरसदा तिहां विग्रहना वेसमय अनाहा
रो त्रीजेसमये सवबन्धक थाय इम पत्रों अनाहारकना बेसमय तेत्रमाहिथको एकसमय पूर्वकोडो सवबन्ध समयस्थाने मालिये तिवारे पूर्वकोडो च

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयाधिकानि देशबन्धस्य देशबन्धस्यान्तरं भवति कथं देशबन्धको मृत उत्पन्नश्च त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमायुः सर्वार्थसिद्धादौ ततश्च्युत्वा त्रिसमयेन विग्रहेणौदारिकशरीरी सम्पन्नः तत्र च विग्रहस्य समयद्वये अनाहारकः तृतीये च समये सर्वबन्धकः ततो द्वितीयसमयेऽसौ देशबन्धक इत्येवमन्तरं देशबन्धस्य १ च यथोक्तं भवतीति औदारिकबन्धस्य सामान्यतोऽन्तरमुक्तम् अथ विशेषतस्तस्य तदाह ॥ एगिंदियेत्यादि ॥ एकेन्द्रियस्यौदारिकसर्वबन्धान्तरं जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं कथं त्रिसमयेन विग्रहेण पृथिव्यादिष्वागतस्तत्र च विग्रहस्य समयद्वयमनाहारकस्तृतीये च समये सर्वबन्धकः ततः क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं स्थित्वा मृत्वाऽविग्रहेण यदा पुनः सर्वबन्धक एव भवति

एक्कसमयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं । एगिंदियओरालियपुच्छा ? गो० ! सव्वबंधंतरं

त्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयाधिकानि ॥ एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम ! सर्वबन्धान्तरं जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसम

ई एकसमय यथा इम सर्वबन्ध अने देसबंधनो अन्तर तेत्रीस सागरोपम पूर्वकालीनो एकसमय अधिक होय । देसबंधंतर जघन्येन एकसमय । देसबन्धांतर जघन्ये एकसमय ते किम देसबन्ध वालुकाने अविग्रहगते अथवा तिवारे प्रथमसमय सर्वबंध थयो दूजेसमे देसबंधक ते भणी जघन्य एक समय । उत्कृष्ट तेत्रीससागरोपमाइं तिसमयाहियाइं एगिंदियओरालियपृच्छा । उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम तीनसमय अधिक तेकिम देसबन्धक मरीने सर्वार्थसिद्ध पांचमे अनुत्तर विमाने उपना तिहांथी मरी तीन समयनो विग्रह करी औदारिकशरीरी थया तिवारे दूजेसमये अनाहारी त्रीजेसमये सर्वबंध थया तिवारपछी देसबंधक इम तेत्रीस सागर तीनसमय अधिक उत्कृष्ट देसबंध अने देसबंधनो अन्तरकाल औदारिकबंधने सामान्यथी अन्तर कह्युं। हिवे विशेषथी तेहनो अन्तर कहे छे—एकेन्द्री औदारिकशरीरनो प्रश्न उत्तर । गौतम सर्वबंधंतर जघन्येन खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं । ते किम एकेन्द्रीने सर्वबंधनो अन्तर जघन्यथी क्षुल्लकभवने तीनसमय ऊण ते किम त्रिसमय विग्रहकरी पृथ्व्यादिकने विषे आव्यो तिवारे विग्रहना दूजेसमये अनाहारक तीजेसमये सर्वबंध तिवारे क्षुल्लक भवमध्ये तीनसमय ऊणरह्यो मुआ मरी अविग्रह तिवारे वली सर्वबंधक होइ तदा सर्वबंध अने सर्वबंध

तदा भवबंधयो यथोक्त मन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेवमित्यादि ॥ उत्कृष्टतः सर्वबन्धान्तरं द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि समयाधिकानि भवन्ति ' कथं म विग्रहेण पृथिवीकायिक ष्वागतः प्रथमसमये सर्वबन्धकः ततो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थित्वा समयोनानि विग्रहगत्या त्रिसमयया ऽन्येषु पृ थिव्यादिषु तत्र समयद्वय मनाहारको भूत्वा तृतीयसमये सर्वबंधकः सम्पन्नो ऽनाहारकसमयद्वयो स्तेनो द्वाविंशतिवर्षसहस्रेषु समयोनेषु विग्र सत्पूरणार्थं ततश्च द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि समय येक एकेन्द्रियाणां सर्वबन्धयो रुत्कृष्ट मन्तरं भवतीति ॥ देसबंधतरमित्यादि ॥ तत्र कोंद्रि औदारिकशरीरबन्धान्तरं जघन्य मेकसमय कथं देशबन्धको मृतः स चाविग्रहेण सर्वबन्धको भूत्वा एकस्मिन् समये पुन र्देशबन्धक एव जात एवं दे शबन्धयो र्जघन्यत एकः समयो ऽन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेणमन्तोमुहुत्तं ति ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरस्य देशबन्धकः सन् वैक्रिय गत सत वा

जहन्नेण खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधंतरं जहन्नेण

मोण मुत्कृष्टतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि समयाधिकानि, देशबन्धान्तरं जघन्ये नैकं समय मुत्कृष्टतोऽन्तर्मुहूर्तम् ॥ पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियी

ना जघन्य अन्तर हुवे । उत्कृष्टा बाबीस वाससहस्राइं समयाधिकाइं । उत्कृष्टथको सर्वबंधान्तर बावीससहस्रवर्ष समयाधिक हुवे तेकिम अविग्रहेकरी पृथिवीकायनेविषे आया पहिलाज समयनेविषे सर्वबंधक तिवारपछी बावीसहस्रवर्ष समय उणा रहीने विग्रहें ते तीजे समयें अन्य पृथिव्यादिकनेविषे उपना तिहां पहिला बेसमय अनाहारकपणें त्रीजे समयें सर्वबंधकहुवो तिवारे अनाहारकना बेसमय मांहिलो एकसमय ते बावीससहस्र समयो रहे तेहमांहि घालतांथकां पूरा बावीससहस्रवर्ष थया एकसमयरह्यो ते अधिक एकेंद्रियने सर्वबंध अने सर्वबंधनो उत्कृष्ट अन्तर हुवे । देसबंधतर जघ न्ये एकसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । तिहां एकेंद्रिय औदारिकदेश बंधान्तर जघन्ये एकसमय तेकिम देशबंधक मूओथको अविग्रहे सर्वबंधकपणे ए कसमये पछो देशबंधक होवहुवा एवं देशबंधक अने देशबंधकने जघन्यथको एकसमय अन्तरहुवे उत्कृष्टथको अन्तमुहूर्त ते किम वायु औदारिकशरीर ना देशबंधक थका वैक्रियगत थका तिहां अन्तर्मुहूर्त रहो, पछो औदारिकशरीरना सर्व बंधक थइने देशबंधक होवहुवो इम देशबंध अने दुसबंधमा उ

न्तर्मुहूर्तं स्थित्वा पुनः औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्धकश्च जातः, एवञ्च देशबन्धयोः उत्कर्षतो अन्तर्मुहूर्तं मन्तरमिति ॥ पुढविका इयत्यादि ॥ इयमत्रान्तरं अजघन्य एकसमयं उक्कोसेण तिन्निसमयत्ति ॥ कथं पृथिवीकायिको देशबन्धको मृतः स अविग्रहगत्या पृथिवीकायिके षुत्पन्नः एवं समयं सर्वबन्धको भूत्वा पुनः देशबन्धको जात एव मेकसमयो देशबन्धयो जघन्य मान्तरं तथा पृथिवीकायिको देशबन्धको मृतः सं त्रिसमयविग्रहेण तत्रैवोत्पन्नः तत्र च समयद्वयं मनाहारक स्तृतीयसमये सर्वबन्धको भूत्वा पुनः देशबन्धको जात एवञ्च त्रय समया उत्क र्षतो देशबन्धयो रन्तर मिति अप्कायादीनां बन्धान्तर मतिदिशन्नाह ॥ जहापुढविकाइयाण मित्यादि ॥ यत्रैव सर्वथा समतापरिहाराय

एकसमय उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । पुढवीकाइयएगिंदियपुच्छा सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणि यव्वं, देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं तिन्निसमया जहा पुढवीकाइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं

औदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम ! सर्वबन्धान्तरं यथैव एकेन्द्रियस्य तथैव भणितव्यम् देशबन्धान्तरं जघन्ये नैकं समयं, मुत्कर्षतः त्रीन्समयान् यथा पृथ्वीकायिकानां मेवं याव चतुरिन्द्रियाणाम् वायुकायवर्जानां मपरं सर्वबन्धान्तरं मुत्कर्षतो या यस्य स्थितिः सा स

मयाधिका मन्तरमन्तर्मुहूर्तं मन्तरं है । पृथ्वीकाय एकेन्द्रियपृच्छा । पृथ्वीकायिक एकेन्द्रियका प्रश्नका उत्तर । गौतमः सर्वबन्धान्तर जैसे एकेन्द्रिय का कहा वैसा ही जानना देशबन्धान्तर जघन्य एकसमय । हे गौतम ! सर्वबन्ध का सर्वबन्धान्तर जैसे एकेन्द्रियमें कहा तैसाही । पृथ्वीकायमें सर्वबन्ध मुत्कर्ष मायन्तर जानना देशबन्धान्तर जघन्य एकसमय तथाहि पृथ्वीकायिक देशबन्धक मृत्युवश अविग्रहगति पृथ्वीकायमें उत्पन्न होकर एकसमय सर्व बन्ध कर फिर देशबन्धक हुआ इस एकसमय देशबन्ध का देशबन्धका जघन्य अन्तर हुआ । उत्कर्षसे तीनसमय जहापुढविकाइयाणं एवं जाव चउरि न्द्रिय जानना । यथा पृथ्वीकायिक देशबन्धक मृत्युवश तीनसमय विग्रहगतिकरके तैसेही उत्पन्न तीनसमय अनाहारक होकर तीसरे समय सर्वबन्धक होकर देशबन्धक हुआ इस तीनसमय अन्तरको देशबन्ध और देशबन्धका अन्तर हुआ अप्कायादिकोंका बन्धान्तर अतिदेशसे कहते हैं—जिस

माष ॥ नयरमित्यादि ॥ एवंचा तिर्देशतो यन्नब्ध तद्दयते भप्कायिकानो जघन्य सवबन्धान्तर क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन मुत्कृष्टतु समयप्स हस्त्राणि समयाधिकानि देशबन्धान्तरमु जघन्य मक समय उत्कृष्टतु प्रयः समया एवं वायुवर्जाना तेज प्रभृतीनामपि, नवर मुत्कृष्ट सवबन्धा न्तरं स्वकीया स्थितिः समयाधिका वाच्या यथातिदिष्ट वायुकायिकवर्जाना नित्यमनातिदिष्टबन्धान्तरम्यो वायुबन्धान्तरस्य विलक्षणता सूचि तति वायुबन्धान्तरं प्रदर्शाह ॥ वायुकाइयाणमित्यादि ॥ तत्र वायुकायिकाना मुत्कर्षेण दशबन्धनन्तर मन्तमुहूर्त कथं वायु रौदारिकशरीरस्य देशबन्धक सन् वैक्रिय मन्तर्मुहूर्तं कृत्वा पुन रौदारिकसवबन्धसमनन्तर मौदारिकदशबन्ध यदा करोति तदा यथोक्त मन्तर भवतीति ॥ पर्याप्त

वाउकायवज्जाण णवर, सव्वबंधतर उक्कोसेण आजस्स ठिई सा समयाहिया कायव्वा, वाउकाइयाण सव्व बंधतरं जहण्णेण खुड्डागभवग्गहण तिसमयऊण उक्कोसेण तिण्णिवाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधतर

मयाधिका वक्तव्या ॥ वायुकायिकानां सवबन्धान्तरं जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन मुत्कर्षेत स्त्रीणिवर्षसहस्राणि समयाधिकानि देश

पृथिवीकायिकने कह्या इम यावत् चउरिंद्रीने वाउकाय वर्जीने कहवा, एतले सघला समता परिहरवाने पर्व कहेवै—सवरसम्बन्धतरं उक्कोसेण आ यस्स ठिइ वासमयाहियावाच्या । एतवाविमेष इम पतिदेशवो जे बाधा ते देखाड़े छे, अपकायिकने जघन्य सवान्तर खुड्डुक भवग्रहण त्रिसमय ऊन तथा उत्कृष्टा ता वाससहस्रवण समयाधिकदेश बन्धांतर जघन्य एकसमय पने उत्कृष्टता तीनसमय इम वायुवर्जीने तेजप्रमुखनो पनि एतवाप्ति मैय सर्वबन्धान्तर उत्कृष्टनो आपनो आपनो स्थिति समयाधिक काय कहवो, वाउकाय वर्जी तेमाटे वाउकायने भेदवो कहेवै—वाउकाइयाणंस व्वबंधतर जहण्णेण खुड्डागभवग्गहणंतिसमयऊणं तिण्णिवाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधतर जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं। तिहां वाउका यिकने सर्वबंधांतर जघन्य वरी खुड्डुकभवग्रहण तीनसमय ऊन उत्कृष्टथकी तीनसहस्रवर्ष समयअधिक देशबन्धांतर जघन्य एकसमय उत्कृष्टथको अत र्मुहूर्त तेहिज वायु औदारिकशरीरनो देशबन्धको वैक्रिय अंतमुहूर्त करी वली औदारिक सर्वथ समयानन्तर औदारिकदेशबन्ध जिवारे करे तिवा.रे

मामुहूर्तं स्थित्वा पुन रौदारिकशरीरस्य सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्धकएव जात, एवच देशबन्धयो रुत्कर्षतो ऽन्तर्मुहूर्त मन्तरमिति ॥ पुढविका इयत्यादि ॥ देसबंधंतर जहन्नेण एक्कसमय उक्कोसेण तिन्निसमयत्ति ॥ कथं पृथिवीकायिको देशबन्धको मृत स अविग्रहगत्या पृथिवीकायिके ष्वेवो त्पन्न एकं समयच सर्वबन्धको भूत्वा पुन देशबन्धको जात एव मेकसमययो र्देशबन्धयो र्जघन्य मान्तर तथा पृथिवीकायिको देशबन्धको मृतः सं त्रिसमयविग्रहेण तत्रैवोत्पन्न स्तत्र समयद्वय मनाहारक स्तृतीयसमये च सर्वबन्धको भूत्वा पुन र्देशबन्धको भूत एवच त्रय समया उत्क र्षतो देशबन्धयो रन्तर मिति अथाप्कायादीना मन्यान्तर मतिदिशन्नाह ॥ जहापुढविकाइयाण मित्यादि ॥ यत्रैवच सर्वथा समतापरिहाराय

एक्कसमय उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं । पुढवीकाइयएगिंदियपुच्छा सव्वबंधंतर जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणि यव्व, देसबंधंतर जहन्नेण एक्कसमय उक्कोसेण तिन्निसमया जहा पुढवीकाइयाण एव जाव चउरिंदियाणं

दारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम ! सर्वबन्धान्तरं यथै वैकेन्द्रियस्य तथैव भणितव्यम् देशबन्धान्तर जघन्ये नैक समय मुत्कर्षत स्त्रीविसमयानि यथा पृथ्वीकायिकाना मेव यावत् चतुरिन्द्रियाणाम् वायुकायवर्जाना मवर सर्वबन्धान्तर मुत्कर्षतो या यस्य स्थितिः सा स

समयको मन्तरमहूर्तक्षे भन्तरखे । पढविकाइय एगिंदियपुच्छा । पृथिवीकायिक एकेन्द्रियना प्रश्नको उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतर जहेव एगिंदिय ना तहेवभाणियव्वं देसबंधंतर जहन्नेणं एक्कसमय । हेगौतम ! सर्वबंध अने सर्वबंधनाअन्तर जेम एकेन्द्रियने कह्यो तिमज पृथिवीकायने सर्वबध सर्वबंध नाअन्तर जाणवा देशबंधान्तर जघन्ये एकसमय तेमज पृथिवीकायिक देशबंधक मूयाथका अविग्रहगते पृथिवीकायमांहिज उपनो ते एकसमय सर्व बंधक थई वलो देशबंधकथया एम एकसमय देशबंध अने देशबन्धना जघन्ये अन्तरहुआ । उक्कोसेण तिन्निसमया जहापुढविकाइयाण एवंजाव चउरि दियाण वाउकायवज्जाण । तथा पृथिवीकायिक देशबन्धक मूयाथका त्रिसमय विग्रहगतिकरी तेहमांहिज उपना तिहांसमय अणाहारी रह्योत्रीज समय सर्वबंधक थई वलो देशबन्धक थया एम तीनसमय उत्कृष्टो देशबन्ध अने देशबन्धना अन्तरहुवे अपूकायादिकनो बन्धान्तर अतिदेशथी कहेछे—जिम

माह ॥ नवरमित्यादि ॥ एवंचा तिदेशतो मसव्य तद्दयते अप्कायिकानां जघन्य सर्वबन्धान्तरं क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोन मुत्कृष्टतु समयाधि
कत्वादि समयाधिकानि देशबन्धान्तरन्तु जघन्य मेक समय उत्कृष्टतु त्रयः समयाः एवं वायुवर्जानां तेजःप्रभृतीनामपि नवरं मुत्कृष्टं सर्वबन्धा
न्तरं स्वकीया स्थितिः समयाधिका वाच्या यथातिदिष्ट वायुकायिकवर्जाना मित्यनेनातिदिष्टबन्धान्तरभ्यो वायुबन्धान्तरस्य विलक्षणता सूचि
तति वायुबन्धान्तर मदमाह ॥ वायुकाइयाणमित्यादि ॥ तत्र च वायुकायिकानां मुत्कर्षेण देशबन्धान्तर मन्तर्मुहूर्त्तं कथं वायु रौदारिकशरीरस्य
देशबन्धकः सन् वैक्रिय मन्तर्मुहूर्त्तं कृत्वा पुन रौदारिकसर्वबन्धसमनन्तरं मौदारिकदेशबन्धं यदा करोति तदा यथोक्त मन्तरं भवतीति ॥ पंचेंदि

वाउकाइयवज्जाणं णवरं, सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिई सा समयाहिया कायव्वा, वाउकाइयाणं सव्व
बंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधंतरं

यथाधिका कर्तव्या ॥ वायुकायिकानां सर्वबन्धान्तरं जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहणं त्रिसमयोनं मुत्कर्षेण कोटिपृथक्त्वादि समयाधिकानि देश

पृथिवीकायिकने कह्या एम यावत् चउरिंद्रीने वायुकाय वर्जीने कहवा इहांत सघला समता परिहरवाने अर्थे कहेछे—नवरं सव्वबंधंतर उक्कोसेण जा
जस्स ठिइ सा समयाहिया कायव्वा । एतावन्मात्र एम अतिदेशथी जे कह्या ते देखाडेछे, अप्कायिकने जघन्य बन्धान्तर खुल्लक भवग्रहण त्रिसमय
ऊन तथा उत्कृष्टा सात सहस्र वर्ष समयाधिक देश बन्धांतर जघन्य एकसमय अने उत्कृष्टा तीनसमय एम वायुवर्जीने तेजसप्रमुखनो पणि एतावन्मात्र
भेद सर्वबन्धान्तर उत्कृष्टो आपणो आपणो स्थिति समयाधिक कहवो, वाउकाय वर्जी तेमाटे वाउकायने भेदको कहेछे—वाउकाइयाणं स
व्वबंधंतर जहन्नेण खुड्डागभवग्गहणंतिसमयऊणं तिन्निवाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधंतर जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं । तिहां वाउका
यिकने सर्वबन्धांतर जघन्य करो खुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊन उत्कृष्टको तीनसहस्र वर्ष समयाधिक देशबन्धांतर जघन्य एकसमय उत्कृष्टको अंत
र्मुहूर्त्त तेविम वायु औदारिकशरीरना देशबन्धको वैक्रिय अंतर्मुहूर्त्त करी पछी औदारिक सर्वबंध समयानन्तर औदारिकदेशबंध जिवारे करे तिवारे

पेत्यादि ॥ तत्र मवबन्धान्तरं जघन्यं प्रावित मेव तत्कहंतु माव्यते पञ्चेन्द्रियतिय गविग्रहेको त्पस्य प्रथमएव समये सवबन्धक स्ततः सर्वपोना पूर्वकोटि जीवित्वा विग्रहगत्या त्रिसमयया तत्रैवोत्पन्न स्तत्र द्वा वनाहारकसमयौ तृतीयेच समये सर्वबन्धकः सम्पन्नो ऽनाहारकसमययो श्चैव समयः समयमायया पूर्वकोट्यां त्रिष सत्पूरणार्थं मेव स्वथित इत्येव यथोक्त मन्तरं भवतीति देशबन्धान्तरन्तु यथै केन्द्रियाणां तथैव जघन्य मेक समयः कथ दन्ययन्धको मृतः सर्वबन्धसमयानन्तरं देशबन्धको जात इत्येव मुत्कर्षेण त्वन्तर्मुहूर्त कथं औदारिकशरीरीदेशबन्धकस्सन् वै

जहण्णेण एक्कं समय उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियउरालियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेण खुड्डागभवग्गहणंतिसमयऊणं पुव्वकोडिसमयाहिया । देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा

बन्धान्तरं जघन्ये मेकं समय मुत्कर्षतो न्तर्मुहूर्तम् ॥ पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकौदारिकशरीरसर्वबन्धान्तरपृच्छा गौतम । जघन्येन क्षुल्लक भवग्रहणं त्रिसमयोनं मुत्कर्षतः पूर्वकोटीसमयाधिका देशबन्धान्तरं यथै केन्द्रियाणां तथा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मेव मनुष्याणामपि

पंचिंदियतिरिक्खजोणिय पाराधिय पुच्छा । पंचेंद्री तिर्यचयोनिक औदारिकना प्रश्नबोधा उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं पुव्वकोडिसमयाहिया । हेगौतम ! सर्वबन्धान्तर जघन्य क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊन उत्कृष्टो पूर्वकोडि समयाधिक उत्कृष्टनो भावना कहे—पंचेंद्रीतिर्यच अविग्रहगति उपना तिवारे पहिले समय सर्वबंधक तिवारपछि समयऊन पूर्वकोडी जीवने विग्रहगते त्रिसमयेकरी इ तेणेविषे उपना तिहां दोयसमय अनाहारक त्रीजेसमये सर्वबंधक अनाहारकना बेसमय मांहिलो एकसमय ते समयो न पूर्व कोडिमांहि घा ल्यो एकसमय उपरलो एतले पूर्वकोडि एकसमय अधिक अंतरहुवे । देसबंधंतर जहाएगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । देसबंधांतर जिम एकेंद्रियने कह्यो तिम पंचेंद्रिय तिर्यंचने कहवा तेहिज देशबंधक मरी सर्वबंध समयें २ अनन्तरे देशबन्धकहुवा इम तथा अन्तर्मुहूर्त अन्त मुहूर्त तेहिज औदारिकशरीरी देशबंधक थको वैक्रियपाम्यो तिहां अन्तर्मुहूर्त रहीने वली औदारिकशरीरी तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक थईने

न्निर्यं प्रतिपद्य सत्रामन्मुहूर्तं स्थित्वा पुन रौदारिकशरीरी जात सत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयादिषु देशबन्धक इत्येव देशबन्धयो रन्तमु हूर्त मन्तरमिति एव मनुष्याणा मपी त्येतदेवाह ॥ एवा पचिदिरत्यादि ॥ औदारिकबन्धान्तरं प्रकारान्त रेणाह ॥ जीवस्यादि ॥ एकेन्द्रियत्वे ॥ नोएगिंदियत्तति ॥ द्वीन्द्रियत्वादौ पुन रेकेन्द्रियत्वेछति यत्सर्वबन्धान्तरं तज्जघन्यत द्वे क्षुल्लक भवग्रहणे त्रिसमयोने, कथं एकेन्द्रिय स्त्रिसमयया विग्रहगत्योत्पन्न सत्र समयद्वय मनाहारको भूत्वा तृतीयसमये सर्वबन्ध कृत्वा तदून क्षुल्लकभवग्रहण जीवित्वा मृतो ऽनेकेन्द्रियेषु क्षुल्लकभवग्रहण

पचिंदियतिरिक्खजोणियाण, एवमणुस्साणवि निरवसेस भाणियव्व जाव उक्कोसेण अतोमुहुत्त। जीवस्सण भत। एगिंदियत्ते नोएगिंदियत्ते पुणरविएगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधतर कालओ केवच्चिर

मिविसर्प भवितव्य याव दुत्कर्षतो न्तमुहूर्तम् ॥ जीवस्य भदन्त। एकेन्द्रियत्वे नोएकेन्द्रियत्वे पुनर प्येकेन्द्रियत्वे एकेन्द्रियौदारिकशरीर प्रयोगबन्धान्तरं कालतः कियच्चिर भवति ? गौतम। सर्वबन्धान्तरं जघन्यन द्वे क्षुल्लके भवग्रहणे त्रिसमयोने, उत्कर्षतो द्वे सागरोपमसहस्रे

डि समयनजिवे तो सर्वबंधना एम देशबंध मने देशबंधना अन्तमहूर्त अन्तर इति। एवमणुस्साणविजाव पचिंदिय तिरिक्खजोणियाव ताविरवसेसभा णियव्व। एम मनुष्यने पणि जिम पंचेंद्री तिर्यंचयोनियाने कह्या तिम समस्त अधिकार कहवा। जाव उक्कोसेण अतोमुहुत्त। यावत् उत्कृष्टको अन्तर्मु हूर्त औदारिकबंधांतर प्रकारांतरे कहेछे—जीवस्सणभते एगिंदियत्ते णोएगिंदियत्ते पुणरविएगिंदियत्ते। जीवने हेभगवन्! एकेंद्रीपणाथी ते बेइंद्रि यादिपणा पामी वली एकेंद्रियपणे उपजे तिवारे। एगिंदियओरालियसरीरबंधतरकालओ केवच्चिरहोइ। एकेंद्रिय औदारिकशरीरबंध सर्वबंधने सर्व बंधथाते देशबंधथाने अंतरा कालथकी केतलाकालनहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वबंधतरजहन्नेणदोखुड्डागभवग्गहणाइ तिसमयऊणाइ। हेगौतम! जे सर्वबंधांतर ते जघन्य दो क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊण तेकिम एकेंद्री तीनसमयनी विग्रहगतें उपना तिहांसमय दोय अनाहारक रहने त्रीजेसम ये सर्वबंध करीने ते ऊण क्षुल्लकभव जीवीने मरणपाम्या पछे एकेंद्रिय ते दींद्रियादिक तेहनेविषे क्षुल्लकभव अनुपहोंच जीवीने मरणपाम्याथका पछिय

मेव जीवित्वा मृत स्तयविग्रहेण पुन रेकेन्द्रिये प्रेवोत्पद्य मवबन्धको जात एवमसवबन्धयी एक समयं आगमिति ॥ उक्कोसेण दोसागरोवमसहस्साइं मरजन्नयासमझहियाइंति ॥ कथ मविग्रह वैकन्द्रिय: समुत्पद्य तत्रव प्रथमसमय सवबन्धको भूत्वा द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि जीवित्वा मृत एकमपिकपु वात्यव तत्रव सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिकसागरोपमसहस्रद्वयरूपा मुल्कष्टप्रसकायिककायस्थिति मतिवाह्य एकेन्द्रिये प्रेवोत्पद्य सवबन्धको जात इत्यव मवबन्धयो यथोक्त मन्तर भवति सवबन्धसमयहीनैकेन्द्रियात्कृष्टमवस्थित त्रसकायिककायस्थितौ प्रतपदपि मङ्ख्यातस्थानाना सङ्ख्या तनेदत्येन सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिकत्वसाप्याहतत्वा दिति ॥ देसबंधतर जहन्नेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहियमिति ॥ कथ मेकन्द्रियो देशबन्धकः सन् स मृत्वा द्वीन्द्रियादिषु क्षुल्लकभवग्रहण मनुभूय विग्रहेण गत्या प्रथमसमय सर्वबन्धको भूत्वा द्वितीय देशबन्धको भव त्यवम देशबन्धान्तर क्षुल्लक

होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतर जहन्नेण दोखुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेण दोसागरोवमस हस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं, देसबंधंतर जहन्नेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहियं उक्कोसेण दोसागरो

सङ्ख्यात वर्षाभ्यधिक, देशबन्धान्तर जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहण समयाधिक मुत्कर्षतो द्वे सागरोपमसहस्रे सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिके। जीवस्य प्रदन्त।

प पर्चेन्द्रियनेरियेन अपवो भवबंधवया इस सवर्बंधक भने सवर्बंधवा पतर तीनसमय छम दोयखुड्डभवग्गहण मुवे। उक्कोसेण दोसागरोवमसहस्साइं स खमवासमभहियाइं। तत्कदयको दायमवम् सागरोपम मख्यातवर्षे पधिक तेजिम पथिवीकरो एकेन्द्रोपमे जपनी तिवो पश्चिमेसमये सबबंधक नर न वासीमवमवप योवोमे मरणपामोने बमकायनेविषे जपना तिवामिख्यातवय पधिक सागरोपम दोयसहस्रकूप बसकायिक कायस्थितिमत भागवो ने एकेन्द्रीनेविषेज उपजो सववधक थयो इम भवबंधक वेकने यवाइ पतरवे सर्वबंध समयहीन एकेन्द्रिय उत्कृष्ट भवस्थिति बसकायस्थितिनेविषे प्रसे पयोधा पनि संख्यातस्थानना संख्यातभेदवे तिवेकरी सख्यातवर्ष पधिकना विराधकरो। देसबंधंतर जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं समयाहियं। देशथ त्यांतर जघन्य भवभवग्रहण सागमन पधिक ते एकेन्द्रोदेसबंध थया मरीने वेइन्द्री पादिमांहि क्षुल्लकभव जीवीने वली एकेन्द्रीमांहि पविषे पा

यथा सर्वबन्धान्तरमपातिरिक्तं ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ सर्वबन्धान्तरभावनोक्तप्रकारेण भावनीय मिति अथ पृथिवीकायिकस्य बन्धान्तर चिन्तय न्ना
ह ॥ जीवस्सत्यादि ॥ सव्वबन्ध ॥ करणात् " तिसमयऊणाइति , इत्य ॥ उक्कोसेण अणंतं कालंति ॥ इह कालानन्तस्य वनस्पतिकायस्थितिकालापे
क्षया अनन्तकाल मित्यर्थं तदेवाह अणन्ताओ ॥ अणंताओइत्यादि ॥ अथ मध्यमाय स्थानान्तस्य कालस्य समय अवसर्पिण्युत्सर्पिणीसमये रपहियमाणे।

यममहस्माइ सखेज्जायासमज्जाहियाइ । जीवस्सण भंते ! पुढवीकाइयत्ते नोपुढवीकाइयत्ते पुणरवि पुढवीकाइयत्ते पुढवीकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतर कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतर जहन्नेण दोखुड्डागभवग्गहणाइ , एवचेव उक्कोसेण अणंत कालं अणंताओ उसप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ , खेत्तओ

पृथिवीकायिकत्व मा पृथिवीकायिकत्वे पुनरपि पृथिवीकायिकत्वे पृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तर कालतः कियच्चिर प्रज्ञ
प्तं ? गौतम ! सर्वबन्धान्तर जघन्यतो द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे एवमेव उत्कर्षतो अनन्तं कालं अनन्ता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः क्षेत्रतो अनन्ता

लोकाः ... [illegible] ... समय पश्चिमो आयवरो । उक्कोसेण ... [illegible]
... [illegible] ... पुढवीकाइयत्ते । ... [illegible] ... सामरोपम ... [illegible]
... [illegible] ... पृथिवीकायिक ... [illegible] ... चिन्तयन्तो कहेइ, ... [illegible] ... पृथिवीकायपयायको नस्रो पृथिवीकायपया सको
... [illegible] ... पृथिवीकायिकपवे ... [illegible] ... तिवारे। पुढविकाइयएगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधंतर ... [illegible]
... [illegible] ... औदारिकशरीर ... [illegible]
... [illegible]
... [illegible] ... कहेइ — पर्यंत

पुनम्ना चगमप्पिवपुगमप्पिस्सी नयमोति ॥ कासञ्जत्ति ॥ इदं कालापेक्षया मन्म ॥ खेत्तठत्ति ॥ चत्रापेक्षया पुन रिद ॥ मखतासोगति ॥ मयमप मम्मा ममजामम्स ममयपु माकाशामप्रन्शो रपाङ्गपमाप्प घ्रनन्तासोका प्रवन्ति चच तच कियन्त पुद्गलपरावत्ता प्रवन्तीत्यत माह ॥ चससख्ने त्वाञ्जि ॥ पुद्गमपरावत्तमवात्त मामान्पन पुन रिद-दशभिः कोटीकाटीभि रद्धापल्योपमाना मकसागरोपम दशभिः सागरोपमकोटी २भि रवसप्पि ण्णामप्पिन्पप्पय मत्र ता यवगप्पिस्पुमप्पिणो ऽनन्ताः पुद्गलपरावत्त, मत द्विशीपलक्षण स्विर्यैव वक्ष्यतीति पुद्गलपरावत्तामा मवा सङ्क्षासत्व नियमनायाह ॥ मावलिमित्यादि ॥ ममङ्ख्यातसमयसमुदायवावलिकति ॥ देसमयघतर मित्यादि ॥ नावमास्येयं पृथिवीकायिको दशमन्यक स न्मृत

अणतालोगा असखेज्जा पुग्गलपरियट्टा तेण पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असखेज्जइभागो, देसयघतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण अणत काल जाव आवलियाए असखेज्जइभागो, जहा

माका ममङ्ख्या पुद्गलपरावर्ता सच पुद्गलपरावत्ता मावलिकाया ममङ्ख्या भागा दशबन्धान्तर जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहण समयाधिक मुत्कर्षतो

बाभं चर्नताचा वग्मप्पिना पामप्पिणीभा कालपा गेत्तमो पचताभोगा । इवो प अभिप्राय तवा पनतकामना ममवर्नेविदे पवसप्पिणो उसप्पिणाने मयेवा पपहरताबका पनता पनमप्पिणो उसप्पिणो वाय, पच कालभोपपचामे मामकशा, चत्तपाति, येनवको पको एकमान खेत्तमा पनता भागमि इवो प भावाप ते कामना ममपर्नेविवे भोकाकाम प्रदेशेकरो पपहरताबका पनताशाक हाय, हिवे तिवा केतवापुद्गल परावत्त हुवे ते व कैडे—पमपेन्ना पारमनरोपिवा तेथं प ननमपरियहा । ममपेमति पुद्गलपरावत्तमपण मामान्ये वमो एक कम काडाकोडी पहा पल्यापमे एक माय रावम दम काडाकाडी मागरापमे एक पनमप्पिणो इमकाल एक उसप्पिणो ते पनमप्पिणो उसप्पिणो पनतो एकपुद्गल परावत्त हवे एकमावलिप नपन इवोज करवो पदमपरावत्तभाव पमव्यातपणा मिवमता कीदे—पावमियाए पमप्पमरभागो । पमप्यात ममममा ममुदाय ते पावमी कहिये तेमना पमव्यातमामाव इवो भावना इम । देसपघतर जघन्य पुण्डागभवग्गहण समयाहिय । पृथिवीकायिक देशबन्धक पका मरणपाम्यो पृथिवी

पृथिवीकायिकेषु क्षुल्लकभवग्रहणं जीवित्वा मृत स एव रत्नप्रभायां पृथिवीकायिके प्रयोत्पन्न स्तत्र च सर्वबन्धसमयानन्तरं देशबन्धको जात एवं च सर्वबन्धः समयेना विक मेक क्षुल्लकभवग्रहणं देशबन्धयो रन्तरमिति ॥ वणस्सइकाइयाणं दोन्निखुड्डाइं ति ॥ वनस्पतिकायिकानां जघन्यतः सर्वबन्धा न्तरं द्वे क्षुल्लके भवग्रहणे ॥ एवं चेयाति ॥ त्रयः त्रिसमयोने इति दृश्य मतद्भावनाच वनस्पतिकायिक स्त्रिसमयेन विग्रहेणोत्पन्न स्तत्र च विग्रहस्य समयद्वय मनाहारक स्तृतीयसमये सर्वबन्धकोभूत्वा क्षुल्लकभवं जीवित्वा पुनः पृथिव्यादिषु क्षुल्लकभवमेव स्थित्वा पुन रविग्रहेण वनस्पतिका यिक ष्वुत्पन्नः प्रथमसमये सर्वबन्धका सावित सर्वबन्धयो स्त्रिसमयोन द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे अन्तरं भवत इति ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ यथ

पुढयिकाइयाण, एवं वणस्सइकाइयवज्जाण जाव मणुस्साण वणस्सइकाइयाण दोखुड्डाइ एवचेव, उक्को सेण असंखेज्जकाल असंखेज्जाउ उसप्पिणीउस्सप्पिणीउ कालउ, खेत्तउ असंखेज्जा लोगा, एव देसबंधत

जघन्यं कालं यावत् दायस्तिकाया असङ्ख्यो जाभो यथा पृथिवीकायिकानां, एवं वनस्पतिकायिकवर्जाना यावन्मनुष्याणां वनस्पतिकायिकानां द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे एवमेव उत्कर्षतो ऽसङ्ख्येयं कालं असङ्ख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः कालतः क्षेत्रतो ऽसङ्ख्येया लोकाः । एवं देशबन्धान्तरमपि

वायनविषे यानभव जोवीने मृयावका यहो अविग्रहगति पृथिवीकायनेजविषे उपना तिहां सर्वबंध समयानंतर देशबंधक थयो इम सर्वबंधसमय अधि क यानभवग्रहण देशबंध अने देशबंध माहोमांहि अंतर जांणवा । वणसइ अंतवाज जाव यावलिकाए असंखेज्जइभागा जघन्य पढमिकाइयाणं । उ त्कृष्टथी अनंतानंत यावत् आवलिकाना असंख्यातमाभाग पतनाजगे पूर्वोपरे कहवा जिम पृथिवीकायिकने कह्यं । एवं वणस्सइकाइय वज्जाणं जाव मणुस्साणं वणस्सइकाइयाणं दोखुड्डाइं । इम यावत् वनस्पतीकायिक वर्जीने यावत् मनुष्यने कहवो, वनस्पतीकायिकने जघन्यथको सर्वबंधांतर दो क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन कोइ जीव त्रिसमय ऊन कहवा, ए भावना वनस्पतीकायिक त्रीसमयने विग्रहे उपना तिहां विग्रहना बेसमय अनाहारक त्रीजेसमये सर्वबंधक थइने क्षुल्लकजीवने पछी पृथिव्यादिकनेविषे क्षुल्लकभव जीवरहीने पछी विग्रहे वनस्पतीकायिकने विषे उपनो प्रथमस

पृथिव्यादिषु कायस्थितिकालः ॥ एवं देशबंधांतरमपीति ॥ यथा पृथिव्यादीनां देशबंधान्तरं जघन्य मेवं वनस्पतेरपि तत्र क्षुल्लकभवग्रहणं समया धिकं भावनाऽस्य पूर्ववत् ॥ उक्कोसेणं पुढविकालोत्ति ॥ उत्कर्षेण वनस्पते र्देशबन्धान्तरं पृथिवीकायस्थितिकालो ऽसङ्ख्यातावसर्पिण्यादिरूप इति एषामौदारिकदेशबन्धकादीनां मल्पत्वादिनिरूपणायाह ॥ एएसिणमित्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोकाः सर्वबन्धका यस्मा दुत्पत्तिसमय एव भावा द्ब न्धका विशेषाधिका यतो विग्रहगतौ सिद्धत्वादौ च ते भवंति तथ सर्वबन्धकापेक्षया विशेषाधिका देशबन्धका असङ्ख्यातगुणा देशबन्धकाल

रपि उक्कोसणं पुढविकालो। एएसिणं भंते! जीवाणं ओरालियसरीरदेसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य

स्यापतः पृथिवीकालो ॥ एतयो मध्ये। जीवानां औदारिकशरीरदेशबन्धकानां सर्वबन्धकानामबन्धकानाञ्च कतरे कतरे यावत् विशेषा

स्यैव महत्त्वात् एव इम सर्वत्र पने सर्वबन्धनो तो समय एक हीय क्षुल्लक भवग्रहण असंख्याता । उत्कृष्टपणे असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल थकी क्षेत्र थकी असंख्याता लोक नु बेदेशबन्धनंतरपणि। उत्कृष्टपणे असंख्याताकाल एह पृथिव्यादिकनेविषे कायस्थितिकाल आवलिका असंख्याती अव सर्पिणी उत्सर्पिणी आवलिका असंख्यातमाभाग इम जिम पृथिव्यादिकने देशबंधांतर जघन्यथकी इम वनस्पतीने पण ते क्षुल्लकभवग्रहण सम याधिकभावना पूर्वलीपरे। उ कालथ पढविकायो। उत्कृष्टो वनस्पतीने देशबंधांतर पृथिवीकाल एतले पृथिवीकाय कायस्थितिकाल असंख्याता अवसर्पि ण्य दिरूप इति हिवे औदारिकदेश बन्धकादिकना अल्प बहुत्वादि निरूपवाभणी कहे छे—एएसिणंभंते जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्व बंधगाणं अबंधगाणं कयरे २ जाव विसेसाहियावा। एहने हेभगवन्! जीवने औदारिकशरीरना देशबंधकने सर्वबंधकने अबंधकने कवण २ जीवो थाको माहि थोडाथकी बहुथकी सरीखा के विशेषाधिकछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवाजीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अबंधगा विसेसाहिया देसबंधगा असंखेज्जगुणा। हेगौतम! सर्वथी थोडा जीव औदारिकना देशबंधक तेहने उत्पत्तिसमयनेविषे भावथकी तेहथकी अबंधकविशेषाधिक छे माटे विग्रहगतिनेविषे तथा सिद्धपणानेविषे ते हुवे तिहां सर्वबंधकनी अपेक्षाये विशेषाधिक तेहथी देशबंधक असंख्यातगुणा देशबन्धकनाकालने अस

स्या ऽथक्कातगुणत्या वृतस्य सूत्रस्य साधना विशेषतो ये वक्ष्यामइति अथ वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धमभिरूपयन्नाह ॥ वेउव्विय त्यादि ॥ तत्र ॥ एगिंदियवउव्वियेत्यादि ॥ वायुकायिकापेक्ष सुत्त ॥ पंचिंदियत्यादि सु ॥ पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यदेवनारकापेक्ष मिति "वीरियत्यादी , यावत् कर

कयर २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा उरालियसरीरस्ससव्वबंधगा अबंधगा विसेसाहिया दसबंधगा असंखज्जगुणा । वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेण भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय । जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय

धिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका अबन्धका विशेषाधिका देशबन्धका असंख्येयगुणा । वैक्रियशरीरप्रयोग बन्धो भ० ! कतिविध प्रज्ञप्तो ? गौतम ! द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—एकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च । य द्येकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धः किंवायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो ऽवायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्चैव मनेना भिला

भावार्थ—अब वैक्रियशरीर प्रयोगबंध निरूपण करते हैं—अहो भगवन् ! वैक्रियशरीर प्रयोगबंध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय । एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध ते वायुकायकी अपेक्षासे और पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध ते तिर्यंच मनुष्य देव नारकीकी अपेक्षासे बंध । जइ एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । जो एकेंद्रि वैक्रियशरीर प्रयोगबंध है । किं वाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । तो क्या वायुकाय एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध होवे अथवा । अवाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । यहां सेनाउकायिक एतले पृथिव्यादिक ते एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध हुवे । एवं एणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेओ तहा भाणियव्वो । इम इणे पाठावेथी जिम पन

यान् " पमायपाया रुम्मस आगव मवचति ., ग्रहण्य ॥ लद्धिंवत्ति ॥ वैक्रियवरलब्धिवा । प्रतीत्य एतक वायुपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्या नपेस्योक्त

एयं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव प्पओगबंधे य । वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा लद्धिं वा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पओगं

एव यथा अवगाहनासंस्थाने वैक्रियशरीरभेद उक्तो भणितव्यो यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च । वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कस्य कर्मण उदयेन ? गौ० ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया यावत् आयुष्कं वा लब्धिं वा प्रतीत्य वैक्रियशरीरप्रयोगनामकर्मण उदयेन वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धः । वायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगपृच्छा ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया एवमेव यावत् लब्धिं प्रतीत्य वायुकायिकशरीरप्रयोगना

मावना अस्यानेन यथ वैक्रियशरीर भेदकथा तिम इहां पणि कहवा । यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरोपपातीय कल्पातीय वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबंध । यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध च वली । अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैक्रियशरीरप्रयोगबंधमते कथकथकसपदपणं । अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध वैक्रियशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयेकरी हवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउखं वा लद्धिं वा पडुच्च वैक्रियशरीरप्रयोगबंध । हेगौतम ! वीर्यसहित सद्द्रव्यपणे करी यावत् ग्रहणको , प्रमादपणो कर्म योग भव ए कहवा आयुष्यवा लब्धिवा, वैक्रियकरण लब्धि प्रत्यये पडुच्च वाउपंचेन्द्रिय तिर्यञ्चमनुष्य सपेक्षने कह्या तिर्यञ्चरो यावत्करावि सूत्रेलिये भवि मे

तेन वायुकायादिभूतेषु लब्धिं वैक्रियशरीरबन्धस्य प्रत्ययतया वक्ष्यति नारकदेवभूतेषु पुन स्ता न्विहाय वीर्यसयोगसद्द्रव्यतादीन् प्रत्ययतया वक्ष्य तीति ॥ मनुष्ये बहवस्स पञ्च समयति ॥ कथ वैक्रियशरीरि मृत्पद्यमानो लब्धितोवा तत्कुर्वन् समयमेकं सवन्धको भवती स्येव मेक समयं स

बंधे। वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगपुच्छा ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए एवचेव जाव लद्धिं पडुच्च जाव वाउकाइयएगिंदियसरीरप्पओगबंधे। रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं पडुच्च रयणप्पभापुढवि जाव बंधे, जाव अहे सत्तमाए। तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीर पुच्छा ? गोयमा ! वीरिय० जहा वाउ

बं० कस्य कर्मण उदयेन वायुकायिकशरीरप्रयोगबन्धः। रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कस्य कर्मण उदयेन गौ० ! वी र्यसयोगसद्द्रव्यतया याव दायुष्कं वा प्रतीत्य रत्नप्रभापृथिवीपञ्चेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) याव द्बन्धो एवं याव दधः सप्तमाया। तिर्यग्योनि कपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरपृच्छा गौ० ! वीर्य (प्रभृति) यथा वायुकायिकानां। मनुष्यपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगपृच्छा एवचैव। असुरकुमा रभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) याव द्बन्धो यथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां। एवं याव स्तनितकुमाराः। एवं वानव्यन्तरा

क्रियशरीरबन्धने प्रश्नयत्नेंकरो इमा वक्ष्यते तथा नारकदेव मूलनेविषे यको सन्धिप्रत्यये कांशीने वीर्यसयोग सद्द्रव्यादिपदे इमा वक्ष्यसे। वाउकाइ य एगिंदियसरीरपच्छा। वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीरना प्रश्नयोंषा उत्तर। गोयमा वीरियसजोगसद्दव्वयाए एवचेव जावलद्धिपडुच्च। हे गौतम ! वीर्यवाण सद्द्रव्यपणेंकरो इमहीज यावत् लब्धिमतें आश्रयोन। वाउकाइय एगिंदिय वेउव्विय जाव बंधे। वायुकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोग बन्ध हुवे। रयणप्पभापुढवी नेरइय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्स कम्मस्स उदएणं। रत्नप्रभा पृथिवी नारक पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयो गबन्ध हे भगवन्। किसा कर्मने उदयेंकरी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वीरियसजोग सद्दव्वयाए। हे गौतम वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणेंकरी। जाव आउयवा

बन्ध इति ॥ उक्तमेव दर्शयति ॥ अथ औदारिकशरीरी वैक्रियतां प्रतिपद्यमानः सर्वबन्धको भूत्वा मृतः पुन नारकत्व देवत्वया यदा

आउयाण, मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगपुच्छा। एवंचेव असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्विय जाव बंधे। जहा रयणप्पभापुढविणेरइयाणं एवं जाव थणियकुमारा, एवं वाणमंतरा एवं जोइसिया, एवं सोहम्मकप्पोवयगा वेमाणिया एवं जाव अच्चुयगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणिया णेयव्वा। अणुत्तरोववाइय कप्पातीयवेमाणिया एवंचेव। वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणं भंते! किं देसबंधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबंधेवि

एवं ज्योतिष्का एवं सौधर्मकल्पोपगता वैमानिका। एवं यावत् अच्युतग्रैवेयककल्पातीतवैमानिका ज्ञातव्या अनुत्तरोपपातिककल्पातीत वैमानिका एवमेव। वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ०। किं देशबन्धः सर्वबन्धः? गौ०। देशबन्धोऽपि सर्वबन्धोऽपि। वायुकायिकैकेन्द्रिया एवमेव। रत्नप्रभा पृथ्वीनैरयिका एवं यावत् अनुत्तरोपपातिका। वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ०। कालतः कियच्चिरम्भवति? गौतम! सर्वबन्धो जघन्ये नैक समय मरकथना हु समय देशबन्धो जघन्य नैक समय मुत्कृष्टत स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि समयन्यूनानि। वायुकायैकेन्द्रियवैक्रियपृच्छा गौ०।

एवम। यावत् पर्याप्त पर्याप्त। रत्नप्रभापृथ्वी वैक्रिय जाव बन्धे। रत्नप्रभा पृथिवी नारक पञ्चेन्द्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध। एवं यावत् अधःसप्तमी। एवं यावत् भौम सप्तमापृथिवी नमे वक्तव्या। तिरिक्खजोणियपंचिंदिय वेउव्वियसरीरपृच्छा। तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगब न्ध किमाहकम नहोवेत्ते इति प्रश्न। गोयमा। अस्थि कस्सायतकारयाण मणुस्सपंचिंदियसरीर एवमेव। चैमोत्मा पोयसचाग सहदमपमे बारो जि म आसकायिक कथा निमकदश मनुष्य पञ्चेन्द्रिय वैक्रियशरीर इत्यादि इतच वक्तव्या। असुरकुमारभवनवासिदेवपंचिंदिय वेउव्विय जावबंधे। असुर कुमार भावनवासी देवपञ्चेन्द्रिय वैक्रिय यावत् बन्ध। सक्कारत्नप्पभापढवि नेरइया। जिम रत्नप्रभा पृथिवी नारकने कह्या तिमकहवा। एवंजावथणिय कुमारा एवंवाणमंतरा एवंजोइसिया। एम यावत् स्तनितकुमार सगै कहवा इम वाणव्यन्तर पणि कहवा इम ज्योतिषी पणि कहवा। एवंसोहम्मकप्पा

प्राप्नोति तदा प्रथमसमये वैक्रियस्य सर्वबन्धक एवेति कृत्वा वैक्रियशरीरस्य सर्वबन्ध उत्कृष्टतः समयद्वयमिति ॥ देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयंति ॥ कथं औदारिकशरीरी वैक्रियतां प्रतिपद्यमानः प्रथमसमये सर्वबन्धको भवति द्वितीयसमये देशबन्धको भूत्वा मृत इत्येवं देशबन्धको जघन्यत एकसमयमिति ॥ उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइंति ॥ कथं देवेषु नारकेषु चोत्कृष्टस्थितिषु उत्पद्यमानः प्रथमसमये सर्वबन्धको वैक्रियशरीरस्य ततःपरं देशबन्धकः स च सर्वबन्धसमयन्यूनानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कृष्टतो देशबन्धक इति ॥ वाउकाइयेत्यादि, दसबंधे जहन्नेणं एकसम

सव्वबंधे। वाउकाइयएगिंदिय एवं चेव। रयणप्पभापुढविनेरइया एवं जाव अणुत्तरोववाइया। वेउव्विय सरीरप्पओगबंधेणं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! सव्वबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दोसमया, देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं। वाउकाइयएगिंदियवेउव्विय

सर्वबन्धं एकं समयं देशबन्धो जघन्येनैकं समयं मुत्कृष्टतो ऽन्तर्मुहूर्तम् ॥ रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपृच्छा गौ०! सर्वबन्धं एकं समयं देशब

कल्पातीतवैमानिका। इह सौधर्मे कल्पे च वैमानिक पश्चि वक्तव्या। एवं कल्पोपपन्नगवैमानिकाः कल्पातीतवैमानिका एवं। इह यावत् अच्युतकल्पे वैमानि कदेवेषु वक्तव्या ग्रैवेयककल्पातीत वैमानिक पश्चि इहैव वक्तव्या। अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिका एवमेव। अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमा निक पश्चि इहैव वक्तव्या। वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते किं देसबंधे सव्वबंधे। वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् किं देशबन्ध हुवे अथवा सर्वबन्ध हुवे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा देसबंधे वि सव्वबंधे वि। हे गौतम देशबन्ध पणि हुवे सर्वबन्ध पणि हुवे पूर्वोक्त इहांति जाणवा। वाउकाइय एगिंदिया एवमेव। वा युकायिक एकेंद्रिय इत्यादि, इहां वक्तव्या। रयणप्पभापुढवी नेरइया एवमेव। रत्नप्रभा पृथिवी नारकी इत्यादि, इहां वक्तव्या। जाव अणुत्तरोववाइ य वेउव्वियसरीर इत्यादि अथ भंते कालओ केवच्चिरं। यावत् अनुत्तरोपपातिक देव इत्यादि इहां जे वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध कालथी केतलो का ल रहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वबंधे जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं दोसमया। हे गौतम सर्वबन्धनो अन्तर्गे एकसमय तेहिज वैक्रियशरीरने वि

यं ति ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरीसन् वैक्रियंगत सतः प्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयसमये देशबन्धकोमृत्वा मृत इत्येव जघन्य मेको देशबन्ध समयः ॥ उत्कोसेणं अंतोमुहुत्तंति ॥ वैक्रियशरीरेण समय पर्याप्तमुहूर्तमात्र मास्ते ततो स्यपतो देशबन्धोन्तमुहूर्त लब्धिवैक्रियशारीरिणो जीवतो स्त मुहूर्ता त्परतो नवैक्रियशरीरावस्थान मस्ति पुन रौदारिकशरीरस्या वश्यप्रतिपत्ते रिति ॥ रयणप्पभत्यादि दसवर्ष सहस्रेण दसवाससहस्सा इति ॥ कथं त्रिसमयविग्रहेण रत्नप्रभाया जघन्यस्थिति नारकः समुत्पन्न स्तत्र समयद्वय मनाहारक स्तृतीयेच समये सर्वबन्धक स्ततो देशबन्धका

पुच्छा ? गो० ! सव्वबंधे एक्कं समयं देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं देसबंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तिसमयऊणाइं , उक्को

स्तो जघन्येन दशवर्षसहस्राणि त्रिसमयोना न्युत्कर्षतः सागरोपमं समयोनं एवं याव दथ सप्तमाया नवर देशबन्धे यस्य या जघन्या स्थि तिः सा त्रिसमयोना कर्तव्या याव दुत्कृष्टा समयोना । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मनुष्याणाञ्च यथा वायुकायिकाना असुरकुमारनागकुमा

वे जघन्यता पवन लब्धिवो करतोथका एकसमय सर्वबन्धकपणे इम एक एकसमय सर्वबन्ध करयो, उत्कृष्टा अंतमुहूर्त तेजिम औदारिकशरीरी वैक्रियपणो परिणमतायका सर्वबन्धकरीने मरणपामो मारको तथा देवपणा जिवारे पामे तिवारे प्रथमसमये वैक्रियनो सर्वबन्धकपणे इमकरीने वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक उत्कृष्टपणो एकसमय बंधो । देशबंधे जघन्येनं एकसमयं उत्कृष्टेनं तेत्तीससागरोवमाइं समयऊणाइं । इमपणे जघन्यपणो एकसमय तेजिम औदारिकशरीरी वैक्रियपणो परिणमतो प्रथमसमये सर्वबन्धक हुवे बीजेसमये देशबंधककर मरणपाम्यो इम देशबन्ध जघन्यपणो एकसमय उत्कृष्टपणो तेत्तीससागर समयऊणा तेजिम देवनेविषे अथवा नारकीनेविषे उत्कृष्टस्थितिनेविषे उपजताथको प्रथमसमये सर्वबन्धक वैक्रिय शरीरना तिवारपछी देशबन्धक तिवारेकरी सर्वबन्धक समयकरी ऊन तेत्तीससागरोपम उत्कृष्टपणो देशबन्धक जाणवा। वाउक्काइयएगिंदियपुच्छा। वाउ काइय एगिंदिय वैक्रिय इत्यादि, प्रश्नकीधा उत्तर। गोयमा सव्वबंधे एकसमयं देसबंधे जहन्नेणं एकसमयं। हेगोतम सर्वबन्धक एकसमय देशबन्ध ज

वैक्रियस्य सद्य मात्रसमयत्रयन्यूनं अपवस्त्रत्रयं जघन्यतो देशबन्धः ॥ उत्कर्षेण सागरोपमं समयूनमिति ॥ अथ भविग्रहेण रत्नप्रभाया मरकष्टस्थि ति नारका समुत्पन्न तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको वैक्रियशरीरस्य ततः परं देशबन्धक स्तेन सर्वबन्धसमयेनोनं सागरोपम मुत्कर्षतो देशबन्धइति प्रत्र सप्तत्र सर्वबन्धः समय देशबन्धश्च जघन्या विग्रहसमयत्रयन्यूना त्रिंश २ जघन्यास्थितिप्रमाणा वाच्यः सर्वबन्धसमयन्यूनोत्कृष्टस्थितिप्रमाण श्चो त्कृष्टश्चायम्च इत्येतदाह ॥ एवं जामत्यादि ॥ पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणां वैक्रियसर्वबन्ध एक समयं देशबन्धस्तु जघन्यत एक समय मुत्कर्षेण त्वन्त

सेण सागरोवम समयूण। एवं जाव अहे सत्तमाए णवरं देसबंधे जस्स जा जहन्निया ठिई सा तिसमयऊ

णा कायव्वा जाव अणुत्तरोववातियाणं यथा नैरयिकाणां नवरं यस्य या स्थिति स्सा भणितव्या याव दनुत्तरोपपातिकानां सर्वबन्ध एक समयं,

मन्न एकसमय तेहिज वाउ जीवनि वैक्रियशरीरमा वैक्रियनो मत्रा तिवारे पहिलसमये सर्वबन्धक बीजसमये देशबन्धक थई मरणपाम्या एम जघन्य दे शबन्धक एकसमय। उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त। उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त वैक्रियशरीरना तिवारे अन्तर्मुहूर्त रही तिवारे उत्कृष्टबन्ध अन्तर्मुहूर्तलगि वैक्रियश रीरी थाकतांथका अन्तर्मुहूर्तथी उपर वैक्रियशरीरनेविषे पवसाग नथी ओदारिकशरीरना भवग्रहे प्रतिपत्ति हुवे। रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा। र त्नप्रभा पृथिवी नारको इत्यादि प्रश्नोका उत्तर। गोयमा सव्वबंधे एकसमयं देसबंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तिसमय ऊणाइं उक्कोसेणं सागरोवम समयऊणं। हे गौतम सर्वबन्धे एकसमय देशबन्धे जघन्ये दशसहस्रवर्ष तीनसमय ऊणा तेजिम तीनसमयविग्रहेकरी रत्नप्रभानेविषे जघन्यस्थिति नारक पणा तिवारे सूचिसमये अनाहारक बीजसमये सर्वबन्धक तिवारपछे देशबन्धक वैक्रियना तिवारे एम पहिला तीनसमय ऊन जाणवा उत्कृष्टथका सागरोपम समयऊणा तेजिम अविग्रहे रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे उत्कृष्टस्थिति नारकपणा तिवारे पहिलेसमये वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक तिवारपछी देश बन्धक तिवेकरी सर्वबन्धकसमय ऊण सागरोपम उत्कृष्टथी देशबन्धक इति एम सगळे सर्वबन्धक एकसमय देशबन्धक जघन्य विग्रहसमय तीन ऊन पोतानी जघन्यस्थितिप्रमाण कहवा, सर्वबन्धसमय ऊण उत्कृष्टस्थिति प्रमाण उत्कृष्ट देशबन्धरूपे एहज कहेछे—एवंजाव अहेसत्तमाए। एम यावत् छेठे

मुहूर्त समयूना तिरश्चाम् ॥ पंचिंदियेत्यादि ॥ पञ्च-प्रतमुहूर्तमनए सुत्रोक्तवतारितिरियमणुएसु ॥ देवेसुपढमासो उक्कोसविग्गहकालोत्ति ॥ १ ॥
वचनसामर्थ्यो दन्तमुहूर्तचतुष्टय तथा देसबन्ध तसुच्यत तम्मतान्तर मित्यवसेय मिति उक्तो वक्रियशरीरप्रयोगबन्धस्य कालो ऽथ तस्यैवान्तर
निरूपय नाह ॥ वेउव्वियेत्यादि सव्वबन्धन्तर जहन्नेण एक समयंति ॥ कथ मौदारिकशरीरी वैक्रियं गत प्रथमसमय सर्वबन्धको द्वितीय देशब

णा कायट्ठा जाव उक्कोसा समयऊणा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणमणुस्साणय जहा वाउक्काइयाण, असुर कुमारनागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाण जहा नेरइयाण, णवर जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणु त्तरोववाइयाण सव्वबंधे एक्कं समय देसबंधे जहन्नेण एक्कतीससागरोवमाइं तिसमयऊणाइं। उक्कोसेण तेत्ती

समबन्धो जघन्य मेकत्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयोनानि उत्कृष्टत त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि समयोनानि । वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तर

सातसौपृथिवी मगे करणा । णवर देसबधे जस्स जा जहन्निया ठिइ सा तिसमयऊणा कायव्वा । एतस्माद्विशेष देशबन्धेविधे जघन्य स्थिति
त्रिसमयऊन करे । जा उक्कोसिया सासमयऊणा कायव्वा । यावत् उत्कृष्टी स्थिति समय ऊन करवो। पंचेंद्रियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साणय
जहा वाउकाइयाण । पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिक मनुष्य ए बेउने जिम वाउकायिकने कह्या तिम कहवा, वैक्रिय सर्वबन्ध एकसमय देसबन्धना जघन्यको ए
कसमय उत्कृष्टको अन्तर्मुहूर्त जे -अन्तमुहूर्तमणुए सुत्तवत्तारितिरियमणुयेसु । देवेसुपढमासो उक्कोसविग्गहकालोत्ति ॥ १ ॥ वचन सामर्थ्यको अन्त
मुहूर्त चार तेहने देसबन्ध हुआ केहियेतिमतान्तरे हुआ जाणवा तिहां अन्तर्मुहूर्त अन्तर्मुहूर्तकाय । असुरकुमार नागकुमार जाव अनुत्तरोववाइयाण। अ
सुरकुमार नागकुमार आदिदेइ यावत् अनुत्तरोपपातिकने । जहानेरइयाण णवर जस्स जा ठिइभाणियव्वा । जिम नारकीने कह्या तिम कहवा एतलो
विशेष जेहनो जिवाल्थिति तिहा कहवो । जावअणुत्तरोववाइयाण सव्वबधे एक समय । यावत् अनुत्तरोपपातिकने सर्वबन्ध एकसमय । देसबंधेजहन्नेणं
एकतीससागरोवमाइं तिसमयऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं समयऊणाइं । देसबध जघन्यो एकत्रीस सागरोपम तीन समय ऊणा उत्कृष्टको

रपको भूत्वा मृतो द्वयेषु नारकपुवा वैक्रियशरीरि प्रविपद्ये बोत्पद्यमानः प्रथमसमय सर्वबन्धक इत्येव मेकः समय सर्वबन्धान्तर मिति ॥ उ त्कामेव भवत कालति ॥ अथ औदारिकशरीरी वैक्रिय गतो वैक्रियशरीरिपुवा द्वयादिषु समुत्पन्नः सच प्रथमसमय सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्ध म कृत्वा मृत सत पर अनन्तकाल औदारिकशरीरिषु वनस्पत्यादिष स्थित्वा (८०००) वैक्रियशरीरयस्तु स्तम्भ सतत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको जात एवम् सर्वबन्धयो यथोक्त मन्तर भवतीति ॥ एवं देशबन्धतर पिति ॥ जघन्ये मेकं समय मुत्कृष्टता ऽनन्तकाल मित्यथ भावनावास्य पू र्वोक्तानुसारेणेति ॥ वाउकाइयस्यादि ॥ सव्वबंधतर जघन्न अन्तोमुहुत्तति ॥ अथ वायु रौदारिकशरीरी वैक्रियशक्तिमापन्न सतत्र प्रथमसमय स

स सागरोवमाइ समयऊणाइं, वेउव्वियसरीरप्पओगबंधतरेण भंते ! कालओ केवचिर होइ ? गो० ! सव्वबंधतर जहणेण एक्क समय उक्कोसेण अणत काल अणताओ जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो एव देसबंधतर

प्र० ! कालतः कियचिरम्भवति ? गौतम ! सर्वबन्धान्तर जघन्य मेक समय मुत्कृष्टतोऽनन्त काल अनन्ता याव दावलिकाया असङ्ख्येयो भा

तेत्रीसमागरोपम समय ऊणा एकनो भावना सर्वगारवाओ पर कहवो वैक्रियशरीर प्रयोगबंधना कालकह्यो, हिवे तेहनाज अन्तरमतें निरूपणकरतो थको — वउव्वियसरीरप्पयोगबंधतरेणं भंते कालथी केतलो होय । वैक्रियशरीर प्रयोगबंधान्तर हेभगवन् कालथी केतलाकालनुं होयतिवारे उत्तर । गोय मा सर्वबंधान्तर जघन्य एकसमय उत्कृष्ट । हेगौतम सर्वबंधान्तर जघन्ये एक समय ते किम औदारिकशरीरी वैक्रिय मतें गया पहिलेसमये सर्वबंध अ बीजेसमये देशबंध करिने मरणपामी देवमेंविषे तथा नारकीमेंविषे वैक्रियशरीरमेंविषे सविग्रहेकरी उपजता पहिलेसमय सर्वबंध इम एकसमय सर्वबंधान्तरहुवे उत्कृष्टथको । अनन्तकाल अनन्ता काल आवलिकाए असंखेज्जइभागा । अनन्ताकाल ते किम औदारिकशरीरी वैक्रियमतें अथवा वैक्रिय शरीरीमेंविषे अथवा देवादिकमेंविषे उपना ते प्रथमसमय सर्वबंधकथई इणभवकरी मरणपाम्या तिवारपछी अनन्तकाल औदारिकशरीरी वनस्पत्या दिकमेंविषे रही वैक्रियशरीरवन्तमेंविषे उपना तिहां पहिलेसमये सर्वबंधकहुआ इम बंधे सर्वबंध अन्तरहुवे । एवंदेशबंधतरपि । इम देशबंधान्तर

बन्धको भूत्वा मृतः पुनः वायुरेव जातः तस्य चापर्याप्तकस्य वैक्रियशक्ति नास्ति ततोऽन्तर्मुहूर्तमात्रेण सो पर्याप्तको भूत्वा वैक्रियशरीर मा रभते तत्र चासौ प्रथमसमये सर्वबन्धको जातः इत्येवं सर्वबन्धान्तरं अन्तर्मुहूर्त्तमिति ॥ उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ति ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरी वैक्रियं गतः तत्प्रथमसमये सर्वबन्धकः ततो देशबन्धको भूत्वा मृतः ततःपरं औदारिकशरीरिषु वायुषु पल्योपमासंख्येयभाग म तिवाह्य वश्यं वैक्रियं करोति तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धः एवं च सर्वबन्धयोर्यथोक्तमन्तरं भवतीति ॥ एवं देसबन्धंतरं पि त्ति ॥ अस्य भावना

पि । वाउकाइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स

म । एवं देशबन्धान्तरमपि । वायुकायिकवैक्रियशरीरपृच्छा गौ० । सर्वबन्धान्तरं जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयो भाग

पणि जघन्य एकसमय उत्कृष्टथको अनन्तोकाल । वाउकाइय वउव्वियसरीरपुच्छा । वाउकायिक वैक्रियशरीर इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्व बधंतर जहन्न अंतोमुहूत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग । हेगौतम सर्वबंधान्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त तेकिम वायु औदारिकशरीरी वैक्रिय पा म्या तिहां प्रथमसमय सर्वबन्धक मरणपाम्या वली वायुकाय हुवे तव अपर्याप्तावस्थायें अन्तर्मुहूर्त्तलगे वैक्रियशक्ति नथाय पछे पर्याप्तावस्थायें वैक्रिय शरीर मांडे तिवारे पहिलेसमयें सर्वबंधक हुआ इम ए सर्वबन्धान्तर अन्तर्मुहूर्त, वाउ औदारिकशरीरी वैक्रियप्रते गया तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक तिवा रपछे देशबंधक मरणपाम्या तिवारपछी औदारिकशरीरी वायुमांहि पल्योपम असंख्यातभाग रही अवश्य वैक्रियकरे तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक इम येव सर्वबंधन यथोक्त अन्तरथया । एवंदेसबंधंतरंपि । इम देशबंधान्तर पणि कहवा भावना पूर्विका परे करवा । तिरिक्खजोणियपंचिंदिय वेउ व्वियसरीरप्पओग बंधंतरपुच्छा । तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगसर्वबंध अन्तरकेतला प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमु हुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी पुहुत्तं । हेगौतम । सर्वबन्धान्तरे जघन्य अन्तर्मुहूर्त तेकिम पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक वैक्रियपाम्या तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक ति वारपछे देशबंधक अन्तर्मुहूर्त्तमात्र तिवारपछे औदारिकना सर्वबंधकने समय देशबंधक हुयो वली वली इसी अपनी वैक्रिय करवं वली वैक्रियकरतां

प्राग्निवति ॥ तिरिक्खेत्यादि ॥ सव्वबंधंतरं जहन्नं अंतोमुहुत्तंति ॥ कथं पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको वैक्रियं गतः सन् प्रथमसमये सर्वबन्धकः सन् ततः परं देशबन्धको अन्तर्मुहूर्तमात्रं तत औदारिकस्य सर्वबन्धको भूत्वा समयं देशबन्धको जातः पुनरपि मनुष्य मुत्पन्ना वैक्रियं करोमीति पुनर्वैक्रियं कुर्वतः प्रथमसमये सर्वबन्ध एवञ्च सर्वबन्धयो यथोक्तमन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तंति ॥ कथं पूर्वकोट्यायुः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको वैक्रियं गतः सन् प्रथमसमये सर्वबन्धकः सन् देशबन्धको भूत्वा कालान्तरे मृतः पूर्वकोट्यायुःपञ्चेन्द्रियतिर्यक्ष्वेवोत्पन्नः पूर्वजन्मना सह सप्ताष्टौ वारान् ततः सप्तमे अष्टमे वा, भवे वैक्रियं गतः सन् प्रथमसमये सर्वबन्धं कृत्वा देशबन्धं करोति एवं सर्वबन्धयोरुत्कृष्टं यथो

क्तमन्तरं भवतीति । एवं देसबंधंतरंपि । तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधंतरपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं । एवं देसबंधंतरंपि । एवं मणूसस्सवि ।

एवं देशबन्धान्तरमपि । तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौ० । सर्वबन्धान्तरं जघन्यतो अन्तर्मुहूर्त्तमुत्कृष्टतः पूर्वकोटिपृथक्त्वं । एवं मनुष्यस्यापि । जीवस्य भदन्त ? वायुकायिकस्य नोवायुकायिकत्वे पुनरपि वायुकायिकस्य वायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रिय

पहिलेसमये सर्वबंध इम बंध सर्वबंधने अंतर पतरवे तिर्यंच पंचेंद्री पूर्वकोडी आउखामां थको वैक्रिय करे तिहां पहिलेसमये सर्वबंध तिवार पछे देशबंधक कालांतरे मरणपामी पूर्वकोडी आउखे पंचेंद्रीतिर्यंचनेविषे उपना पूर्वजन्म सहू सात आठवार पूर्वकोडी वर्षमान जन्मलेई सात मे तथा आठमेभवे वैक्रियकरे तिहां पहिलेसमये सर्वबंधकरी देशबंध करे इम बर्जे सर्वबंधनां अंतर पूर्वकोडीपृथक्त्व ने अंतर हुवे । एवं देशबंधंतरपि । इम देशबंधांतर पणि कहवो पणि भावना अंगुल ने असंख्यातमो भाग प्रमाणपरें कहवी । एवं मनुष्यसवि । इम मनुष्यने पणि कहवा । जीवस्सणंभंते वाउ कायको । जीवने वैक्रियसरीर बंधांतरजीवप्र कायांतर करी चिंतवता कहेछे—जीवने हेभगवन् । वाउकायपणा पामो । नोवाउकायपणे पचरवि वाउकायते वाउकायएगिदियपणा । नहीं ते पाडकायिक एतले पृथ्व्यादिकने पवतरी वली वाउकायपणा पामे ते वाउकाय सक एकेंद्रिय वैक्रिय इत्यादि प्रश्ननो उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतरं जह

स्य मन्तरं भवतीति ॥ एवं देशबंधंतरं पिति ॥ भावनाचास्य सर्वबन्धान्तरोक्तभावनानुसारेण कर्त्तव्येति वैक्रियशरीरबन्धान्तरमेव प्रकारान्तरेण विभाग आह ॥ जीवस्सत्यादि ॥ सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तंति ॥ कथं वायुर्वैक्रियशरीरं प्रतिपन्न स्तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको भूत्वा मृतस्ततः पृथिवीकायिकेषूत्पन्न स्तत्रापि क्षुल्लकभवमात्रं स्थित्वा पुनर्वायुर्जात स्तत्रापि कतिपयान् क्षुल्लकभवान् स्थित्वा वैक्रियं गत स्तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको जात स्तदेवं वैक्रियस्य २ सर्वबन्धयोरन्तरं यद्यपि क्षुल्लकभवा स्तेन बहवो व्यन्तर्मुहूर्त्तमन्तर्मुहूर्त्ते बहूनां क्षुल्लकभवानां प्रतिपादितत्वा त्ततश्च सर्वबन्धान्तरं यथोक्तं भवतीति ॥ उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालोत्ति ॥ कथं वायुर्वैक्रियशरीरी भवन् मृतो वनस्पत्यादिष्वनन्तं कालं स्थित्वा वैक्रियशरीरं पुनर्यदा लप्स्यते तदा यथोक्तमन्तरं भविष्यतीति ॥ एवं देसबंधंतरं पित्ति ॥ भावनाचास्य प्रागुक्तानु

जीवस्सणं भंते ! वाउकाइयत्ते नोवाउकाइयत्ते पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं । उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो । एवं देसबंधंतरंपि ।

पृच्छा गौ० ! सर्वबन्धान्तरं जघन्य मान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतो मनन्त काल वनस्पतिकाल एवं देशबन्धान्तरमपि । जीवस्य भं० ! रत्नप्रभापृथिवी

नम भंतामहंत । हेगौतम ! सर्वबंधांतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त तेजिम वायु वैक्रियशरीर पडिवज्या तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक हूं मूओ तिवारपछी पृथिवीकायिकनेविषे ऊपनो तिहां पणि क्षुल्लकभवमात्र रह्यो । वली वाउकाय तिहां पणि कतलाएक क्षुल्लकभव रहीने वैक्रियपणें गयो तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक थया तिहां वैक्रियना बेउ सर्वबंधनाअन्तर यद्यपि क्षुल्लकभव ते पणि अन्तर्मुहूर्त्तनेविषे घणा क्षुल्लकभव कह्याछे तेमाटे सर्वबंधांतर यथोक्तहुवे । उ त्कृष्टो अनंतकाल वनस्पतिकाल । एवं देशबंधांतरपि । उत्कृष्टो अनंताकाल तेजिम वाउ वैक्रियशरीरी थई मूओ वनस्पत्यादिकनेविषे अनंताकाल रहीने वैक्रियशरीर वली जिवारे पामस्यें तिवारे यथोक्त अन्तरहुस्ये इम देशबंधांतर पणि कहवा । जीवस्य भंते रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकनो रत्नप्रभापृथ्वी पृच्छा । गौतमने हेभगवन् ! रत्नप्रभापृथिवी नारकीपणा थकी मरी रत्नप्रभा पृथिवीपणा एतले रत्नप्रभादिकथी बीजे स्थानके अन्तरो थको रत्नप्रभा

मारवति रत्नप्रभासूत्रे ॥ सद्बंधंतर मित्यादि ॥ यत इष्यते रत्नप्रभानारको दशवर्षसहस्रस्थितिक उत्पत्तौ सर्वबन्धक सात उद्धृतस्तु गर्भजपञ्चेन्द्रि
य अन्तर्मुहूर्त स्थित्वा रत्नप्रभायां पुनरप्युत्पन्न स्तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धक इत्येवं सूत्रोक्त जघन्य मन्तरं सर्वबन्धयो रिति यद्यपि यद्यपि प्रथ
मात्पत्तौ त्रिसमयविग्रहेण त्पद्यते तदापि न दशवर्षसहस्राणि त्रिसमयन्यूनानि भवन्ति अन्तर्मुहूर्तस्य मध्या त्समयत्रयस्य तत्र प्रक्षेपा च्च त
त्प्रक्षेप प्यन्तर्मुहूर्तस्यापात तस्या नकमेदत्वा दिति ॥ उत्कर्षेण वनस्पतिकालोऽस्ति ॥ कथं रत्नप्रभा नारक उत्पत्तौ सर्वबन्धक सन् उद्धृतश्च न
न्तकाल वनस्पत्यादिषु स्थित्वा पुन स्तत्रैवो त्पद्यमानः सर्वबन्ध इत्येव मुत्कृष्ट मन्तर मिति ॥ देशबन्धंतर जघन्येन मन्तोमुहूर्तमिति ॥ कथं रत्नप्रभा

जीवस्सणं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते णोरयणप्पभापुढविपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतर जहण्णेण दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण वणस्सइकालो, देसबंधंतर जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्को

नैरयिकत्वे नारप्रभापृथिवी (त्यादि) पृच्छा गौतम ! सर्वबन्धान्तरं जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्ताधिकानि उत्कर्षतो वनस्पति कालो देशबन्धान्तरं जघन्ये नान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतो नन्त काल वनस्पतिकाल एव याव देव सप्तमायां नवरं या यस्य स्थितिर्जघन्यका सा

पृथिवी पणि उपजे इत्यादि प्रश्नबोधा उत्तर । गौतमा सर्वबंधंतर जघन्य दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं । हे गौतम ! सर्वबंधांतर जघन्ये दसहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक तेहिज रत्नप्रभा नारक दशहजारवर्ष स्थितिक उत्पत्तिनेविषे सर्वबंधक तिवारपछी नीसरी गर्भज पंचेंद्रियनेविषे अंत मुहूर्त रहीने रत्नप्रभामेविषे वली उपजा तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक इम सूत्रोक्त जघन्य अन्तरसर्वबंध पण सर्वबंधनेविषे वली एह विचारे पणि प हिलो उत्पत्तिनेविषे त्रिसमये विग्रहे करी उपजे ता पणि दशहजारवर्ष तीनसमय ऊन नहवे ते समयने प्रक्षेप पणि अन्तर्मुहूर्तपणानो व्याघात थवो माटे अन्तर्मुहूर्तना अनेकभेद पणामाटे उत्कृष्टो अनन्तो तेहिज रत्नप्रभा नारक उपजावतो सर्वबंधक तिवारपछी नीसरी अनन्तकाल वनस्पत्यादि कनेविषे रही वली तिहां उपजता थका सर्वबंधक । उक्कोसेण वणस्सइकालो । इम उत्कृष्टो अन्तर वनस्पतीकाल । देसबंधंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्त ।

नारको देशान्वक स्सम् मृतो उत्समुहूर्तांयु पञ्चन्द्रियतिर्यक्षयो त्पद्य मृत्वा रत्नप्रभानारकतयो त्पद्य तत्र द्वितीयसमये देशावन्च दस्यास जघन्य द्ममवपस्यान्तरमिति ॥ उक्कोसेवमित्यादि ॥ भावना प्रागुक्तानुसारेणेति ... सङ्क्षेपाय माह ॥ एवमावत्यादि ॥ द्वितीयादिपृथिवीषु जघन्या स्थितिः क्रमशेवं त्रीणि सप्त दश सप्तदश द्वाविंशतिश्च सागरोपमाणीति पञ्चन्द्रियत्यादि ॥ जदा वायुकाययावति ॥ जघन्य मान्तर्मुहूर्त मरुहतः पुन रनन्त काल मित्यर्थो असुरकुमारादयस्तु सहस्रारान्ता दमा उत्पत्तिसमय सवबध कृत्वा स्वकीयाच जघन्यस्थिति मनुपाल्य पञ्चन्द्रियतिर्यक्षु जघन्ये नान्तर्मुहूर्तायुष्कत्वेन समुत्पद्य मृत्वा च तत्रैव सर्वबन्धका जाता एवं च सया वैक्रियस्य

सण ष्णणत काल यणस्सइकालो एव जाय छट्ठे सत्तमाए णयर जा जस्स ठिइ जहन्निया सा सव्वबंधतर जहण्णेण अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेस तहेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्साणय जहा वाउक्काइ

सर्वबन्धान्तर जघन्येना न्तर्मुहूर्ताधिका कर्तव्या शेषं तथैव । पञ्चन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मनुष्याणाञ्च यथा वायुकायिकानां असुरकुमार (प्र

देशबधांतर जघन्ये अन्तर्मुहूर्त तेहिम रत्नप्रभा नारक देशबंधक मरा मूवा अन्तर्मुहूर्तायु पंचेंद्रिय तिर्यचमें उपजो मरोने रत्नप्रभामें नारकपणे उपना तिहां प्रथमसमये सर्वबंधक हम जघन्य देशबंधांतर छे। उत्कृष्ट अनन्तकाल वनस्पतिकाल एवं जाव छठे सातमाए। उत्कृष्टपणे अनंतोकाल वन स्पतीकाल छट्ठा भावना पृथ्वीमाहे रत्नप्रभादि नारक वैक्रियशरीर बधांतर प्रतिदेशबंको कहेवे – स्पष्टार्थं रत्न यावत् नीचे सातमी नरक पृथिवी तमे कहवा। नवर जा जस्सटिई जघन्यवाला सर्वबंधतर जघन्येन अंतर्मुहूर्त अधिक करवा शेषतथैव। एतदर्थविशेष जे जेहनी स्थिति जघन्ये अनुक्रमे १ ३ ७ १ १० २२ सागरोपम ए बोलो पृथिवी माहिला जघन्यस्थिति करी तिहा सर्वबंधांतरनेविषे जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिको क रो मिषबाकता तिमज कहवा । पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणियमनुष्याणय जहावाउकाइयाणं। पंचेंद्री तिर्यचयोनिक अने मनुष्य जिम वाउकायिक कह्या तिम कहवा एतले जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टपणे अनंतोकाल रहवा। असुरकुमार नागकुमार जाव सहस्रारदेवाण ०९दि णहारयणप्पभाण णवर स

जघन्य सवधपान्तर जघन्या तत्स्थिति रन्तर्मुहूर्ताधिका वक्तव्या उत्कृष्ट त्वनन्त काल यथा रत्नप्रभानारकाणा मित्येतद्द्वाय स्मर्त ॥ असुरकु मारन्यादि ॥ तत्र जघन्यस्थिति रसुरकुमारादीना मन्तराणाच दशवर्षसहस्राणि ज्योतिष्काणा पल्योपमाष्टभाग सौधर्मादिषु "पलिय महिय दोसागरमादिमाभसदसयवाइसस्यादि, आनतसूत्रे ॥ सवयधतर मित्यादि ॥ एतस्य भावना आनतकल्पीयो देव उत्पन्नो सवयभक सष्टादशसागरोपमाणि तत्र स्थित्वा तत च्युतो वर्षपृथक्त्व मनुष्येषु स्थित्वा पुन स्तत्रोत्पन्न प्रथमसमय वाशो सवधन्यक इत्येव सवधान्यान्तर जघन्य मष्टाद

याण, असुरकुमार नागकुमार जाव सहस्सार देवाण, एएसि जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाण नवर स बंधतर जस्स जा ठिई जहन्निया सा अंतामुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसतचेव । जीवस्सण भंते ! आणय देवत्ते नोआणयदेवत्तेपुच्छा गो० । सबंधतर जहन्नेण अठारससागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण

धति) याव सहस्रारदेवाना मतया यथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणा नवर सवधान्तरया यस्य स्थिति जघन्या सा न्तर्मुहूर्ताधिका क र्त्तव्या शेष तथैव । जीवस्य भ० । आनतदेवत्व नो आनतदेवत्वे (इत्यादि) पृच्छा गौतम । सवधान्तर जघन्ये नाष्टादशसागरोपमाणि

वर्षपृथक्तव भर्व्य का वर्षपृथाहिं अंतामुहुत्त मब्भहिया कायव्वा । असुरकुमार थाविरेइ यावत् सहस्रार पर्यन्त देव उत्पत्तिसमयनेविषे स बंधकरोने पामानो जघन्यस्थिति मते मनुष्याहोने पचेंद्रिय तिर्यञ्चनेविषे जघन्य अंतर्मुहूर्त आयुष्यपणेंकरी उपजी मरोने तिर्यञ्चनेविषेज सवध हुवे इम तेहने वे क्रियना जघन्य सवधान्तर जघन्य तेहनो स्थिति भर मुहूर्त अधिकाणवो उत्कृष्टो अनन्तकाल जिम रत्नप्रभा नारकने कहीत देवाणो वी हे—तिहा जघन्यस्थिति असुरकुमारने तथा व्यन्तरने दशसहस्रवर्ष ज्योतिषीने पल्योपमनो आठमोभाग सौधर्मादिकनेविषे ता पलियपाहियदोसा रमा दिसायतटमवडम । इत्यादि । सेसतचेव । बाकता तिमज कहवा । जीवस्सभंते आनतदेवत्ते नोआनतदेवत्तेपृच्छा । जीवने हेभगवन् । आनत देव पणे मरी आनत देवपणे वली आनतदेवपणे इत्यादि प्रश्नोथा उत्तर । गोयमा सबंधतर जहन्नेण अट्ठारससागरोवमाइ वासपुहत्त मब्भहियाइ । हे

स्र सागरोपमाणि वपपृथक्त्वाधिकानीति उत्कृष्ट त्वनन्त काल कथं सदैव सत्सा च्युतो मतं काल वनस्पत्यादिपु स्थित्वा पुम सत्रैवो त्पद्य प्र थमसमय वासो मवबन्धक इत्यवमिति ॥ देसबन्धतर जहन्नेण वासपुहुत्तति ॥ कथं सएव दशबन्धकः स च्युतो वपपृथक्त्व समुप्यत्व मनुभूय पुम स्तत्रैव गत सास्य सवब धान्तर दशबन्ध स्थैव सूत्रोक्त मन्तर भवति इह च यद्यपि सववन्धसमयाधिक वपपृथक्त्व भवति तथापि तस्य वप पृथक्त्वा दनयान्तरस्वविवक्षया न भेदेन मवमभिति एवं प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकसूत्राण्यपि अथ सनत्कुमारादिसहस्रारान्ता देवा जघन्यतो नव दिनायुष्कत्व धानताद्यच्युतान्तासु नवमासायुष्कत्व समुत्पद्यन्त इति जीवसमासेऽभिधीयत ततश्च जघन्य तासर्वबन्धान्तर ततदधिकतत्वधम्य

झणत काल वणस्सइकालो , देसबंधतर जहन्नेण वासपुहत्त उक्कोसेण झणत काल वणस्सइकालो एव जा
य झच्चुए नवर जस्स जा ठिइ सा सव्वबंधतर जहन्नेण वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा सेस तहेव । गेवेज्ज

वपपृथक्त्वाधिका मुत्कर्षता नन्त काल वनस्पतिकालः दशबन्धान्तरं जघन्येन वपपृथक्त्व मुत्कर्षतो नन्तकाल वनस्पतिकाल एव याव दच्यु
त नवर यस्य या स्थिति सा सवबन्धान्तरे जघन्यतो वपपृथक्त्वाधिका कतव्या शेष तथैव । ग्रैवेयककल्पातीतपृच्छा गो० । सवबन्धान्तर जघ

गौतम । जघन्यो भावना धानतदेवलोकविषे देवपणे उपजतावन्धा सववन्ध ते अठारे सागरोपम तिहां रहीने तिहांथकी चव्या चवीने वप पृथक्त्व मनुष्यभवविषे रही चवी तिहांज उपना प्रथमसमयविषे एह सवबन्ध इम सवबन्धान्तर जघन्ये अठारे सागरोपम वर्ष पृथक्त्व अधिक । उत्कृष्ट घ नतकाल वनस्पतिकाल देसबन्धतर जघन्येन वासपृथक्त्व । उत्कृष्टथकी धनन्तकाल ते किम तेहीज देव तिहांथकी चवीने अनन्तकाल वनस्पत्यादिकविषे रही चवी तिहांज उपना प्रथमसमये एह सर्वबन्ध बेहना अन्तर चाववा, देसबन्धान्तर जघन्ये वर्ष पृथक्त्व तेहीज देवबन्धक चवी चवी वर्ष पृथक्त्व मनु ष्यपणे मागवी चवी तिहांज गया तेहने सवबन्ध अन्तरे देसबन्ध इम सूत्रना अन्तर जाणवै । उत्कृष्ट अनन्तकाल वनस्पतिकालो एवं जाव अच्चुए नवर जस्स जा ठिई सा सव्वबंधतर जहन्नेण वासपुहत्त मब्भहिया कायव्वा सेसं तहेव । उत्कृष्टथकी अनन्तकाल वनस्पतिकाल पूर्ववत् इम यावत् आरण य

स्थितिरूप माप्नोति सत्यमेतत् केवल मतान्तरमेवेद मिति अनुत्तरविमानसूत्रे ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ उत्कृष्ट सर्वबन्धान्तर देशबन्धान्तरच स
ङ्ख्यातानि सागरोपमाणि यतो मानन्तकाल मनुत्तरविमानच्युत संसरति तानिच जीवसमासमतेन द्विषष्ठ्यशीति अथ वैक्रियशरीरदेशबन्धका

कप्पातीयपुच्छा गा० ! सव्वबंधतर जहन्नेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं उक्कोसे० अणं
त कालं वणस्सइकालो, देसबंधतर जहन्नेण वासपुहत्तं उक्कोसेण वणस्सइकालो । जीवस्सणं भंते ! अ
णुत्तरोववाइयपुच्छा गो० ! सव्वबंधतर जहन्नेण एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सं

न्यम द्वाविंशतिसागरोपमाणि वर्षपृथक्त्वाभ्यधिकानि उत्कर्षतो मनन्तकाल वनस्पतिकालो देशबन्धान्तर जघन्यतो वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षतो
वनस्पतिकालो । जीवस्य भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकपृच्छा गौ० ! सर्वबन्धान्तर जघन्यत एकत्रिंशत्सागरोपमाणि वर्षपृथक्त्वाधिका न्युत्कर्षतः

जुन सूत्र पर्यन्त जाणवा एतलाविशेष जाणवो जिहां स्थिति तिहां सर्वबंधांतरे जघन्यथकी वर्षपृथक्त्व अधिको जाणवो वासना सर्व पूठिलीपरे जाणवी तिम
ज जाणवा । ग्रैविज्ञकल्पातीतपृच्छा । ग्रैवेयक कल्पातीतनो प्रश्नजीधो उत्तर । भाखमा सर्वबंधतर जघन्य बावीस सागरोपमाइ वासपृथक्त्व अधिक
याइ । हेगौतम । सर्वबंधांतर जघन्ये बावीससागरोपम वर्ष पृथक्त्व अधिक जाणवो । उत्कृष्ट अनंतकाल वनस्पतिकाल । उत्कृष्टथकी अनंता काल
अनस्तीकाल जाणवा । देशबंधतर जघन्येव वासपृथक्त्व । देशबंधान्तर जघन्ये वर्ष पृथक्त्व । उत्कृष्टथ वनस्पतिकाल । उत्कृष्टथकी वनस्पतीकाल एतले
अनंताकाल जाणवा हिवे अनुत्तरविमाननो प्रश्नकरेछे—जीवभगवंभते अनुत्तरोववाइय पृच्छा । जीव हेभगवन् ! अनुत्तरविमाननो कल्पनो तेहनो प्रश्न
कीधो उत्तर । भाखमा सर्वबंधतर जघन्येण एकतीससागरोपमाइ वासपृथक्त्व अब्भहियाइ । हेगौतम । सर्वबंधांतर जघन्ये एकतीस सागरोपम वर्ष पृ
थक्त्व अधिक जाणवा । उक्कोसेणं संखेज्जाइ सागरोवमाइ । उत्कृष्टथकी संख्याता सागरोपम जाणवा । देसबंधतर जहन्नेण वासपृहत्त । देशबंधांतर ज
घन्ये वर्ष पृथक्त्व । उक्कोसेणं संखेज्जाइ सागरोवमाइ । उत्कृष्टथकी संख्यातासागरोपम, हिवे वैक्रियशरीर देशबंधादिकना अल्प बहुत्व कहेछे—ए

दीना मल्पत्वादि मिरूपवायाह ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सवसोका वैक्रियसवबन्धका सास्कालस्या स्पस्वात देशबन्धका घसङ्खातगुणा सास्काल स्य तदपक्षमा असङ्खेयगुणत्वा दबन्धका रसमनन्तगुणाः सिद्धाना वनस्पत्यादीनाञ्च तदपेक्षया अनन्तगुणत्वा दिति यथा हारकशरीरप्रयागबन्ध मभिधित्याह ॥ माहारत्यादि ॥ एगागारेति ॥ एकप्रकारो मौदारिकादिवन्धव देकन्द्रियाद्यनकप्रकार इत्यथ ॥ सद्वथे एक समर्थति ॥ मायस

खेज्जाइ सागरोवमाइ, देसबधतर जहन्नेण वासपुहत्त उक्कोसे० सखेज्जाइ सागरोवमाइ। एतेसिण भंते! जीवाण वेउव्वियसरीरस्स देसबधगाण सव्वबधगाण अबधगाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा? गो०! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबधगा, देसबधगा असखेज्जगुणा, अबधगा अणतगुणा।

सङ्ख्यानि सागरोपमाणि दशबन्धान्तर जघन्यतो वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षतः सङ्ख्यानि सागरोपमाणि। एतेषा भ०। जीवाना वैक्रियशरीरस्य देश बधकाना सर्वबधकानां अबन्धकानाञ्च कतर कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा? गौतम! सर्वस्तोका जीवा वैक्रियशरीरस्य सर्वबधका देशबंध का असङ्ख्येयगुणा अबधका अनन्तगुणा। आहारकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त! कतिविध प्रज्ञप्तो? गौ०। एकाकार प्रज्ञप्त। यद्येका

पसिबभते जीवाण वउ व्वसरीरस्स देसबधगाण सव्वबध गाण। एहने भगवन्! जीवने वैक्रियशरीर देशबधकने सर्वबधकने। अबधगाणय कयरे २ हिंता जाव विसेसाहियावा। अबधकने मांहोमांहि कुण २ थकी यावत् विशेषाधिक हवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवा वेउव्वियसरीरस्स सव्व बधगा देसबधगा असखेज्जगुणा। हेगौतम। सर्वथकी थोडा वैक्रियशरीरना सर्वबधक वेदनाकाल थोडामाटे तेहथकी देशबंधकथाय असख्यातगुणा ते हना कालने तेहनी अपेक्षासें असख्यगुण पणामाटे। अबधगा अनतगुणा। तेहथी अबधक अनंतगुणा सिद्ध ने वनस्पत्यादिकने तेहनी अपेक्षासें अनंत गणामाटे। आहारकशरीरप्रयोग बंधभंते कतिविहे प०। हिवे आहारकशरीर प्रयोगबंध अधिकार कहेछे—आहारकशरीर प्रयोगबंध हेभगवन्! के तलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगागारे प०। हेगौतम। एक आकारे कह्या। जइ एगागारे प०। जो एक आकारे कह्या। किमणुस्साहारग

]

आहारगसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे पं० ? गो० ! एगागारे पं० । जइ एगागारे पं० । किं मणुस्साहा
रगसरीरप्पओगबंधे अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे ? गो० ! मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नो अमणुस्सा
हारगसरीरप्पओगबंधे एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिप
ज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नोअणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहा

कारः प्रज्ञप्तः किं मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबन्धो ऽमनुष्याहारकशरीरप्रयोगबन्धः ? गौतम ! मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबन्धो नो अमनुष्याहारक
शरीरप्रयोगबन्धः एवं एतेन अभिलापेन यथा अवगाहनासंस्थाने यावत् ऋद्धिप्राप्तप्रमत्तसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिगगर्भव्युत्क्रान्तिक
मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबन्धो नो ऽनृद्धिप्राप्तप्रमत्तसंयत (प्रभृति) यावत् आहारकशरीरप्रयोगबन्धः । आहारकशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कस्य

शरीरप्रयोग बंध अमनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंध । तो क्या मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंध हुवे अथवा मनुष्यवर्जी पंचेन्द्रियादिक ते अमनुष्याहा
रकशरीर प्रयोगबंध हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे । हे गौतम ! मनुष्याहारकशरीर प्रयोगबंध हुवे नहि । आहारकश
रीर प्रयोगबंध । मनुष्यवर्जी अनेराने आहारकशरीर प्रयोगबंध हुवे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे । एम इणे आलावेकरी
जिम अवगाहना संस्थानने विषे कह्या । जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउय । यावत् आहारक लब्धि प्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि
पर्याप्त संख्यात वर्षायुष । कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नो अणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहारगसरीरप्पओगबंधे । कर्मभूमिक
गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्याहारकशरीर प्रयोगबंध हुवे पणि लब्धि न पामी एहवा प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक यावत् मनुष्याहारकशरीर प्रयोगबंध
हुवे । आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते कस्स कम्मस्स उदएणं । आहारकशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् ! किसा कर्मने उदये हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वी
रियसजोग सद्दव्वयाए । हे गौतम ! वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणे करी । जाव लद्धिं पडुच्च । यावत् आहारक लब्धिमंत आश्रयीने । आहारगसरीरप्पओगणामा

मयपय दबमज्यमावात् ॥ दसबंधे जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तंति ॥ कथं जघन्यतः उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तमात्र मेवा हारकशरीरी न

रगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव लद्धिं वा पडुच्च आहारगसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पओगबंधे । आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गो० ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोय० ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आहारग

कर्मण उदयेन ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया यावल्लब्धिं प्रतीत्य आहारकशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन आहारकशरीरप्रयोगबन्धः । आहारकशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! किं देशबन्धः सर्वबन्धो ? गौ० ! देशबन्धोऽपि सर्वबन्धोऽपि । आहारकशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौ० ! सर्वबन्ध एकं समयं देशबन्धो जघन्यं अान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतो ऽप्यन्तर्मुहूर्तम् । आहारकशरीरप्रयोगबन्धान्तरं भ० ! कालतः किय

एकस्य कर्मस्य उदय । आहारकशरीर प्रयोगनाम कर्म उदये करीने । आहारकशरीरप्रयोगबंधे । आहारकशरीर प्रयोगबंध थवे । आहारकशरीर प्रयोगबंधेणं भंते किं देसबंधे सव्वबंधे । आहारकशरीर प्रयोगबंध देशबंध छे ! सर्वबंध छे ? ते पूछवे हे तेने उत्तर । गोयमा देसबंधवि सव्वबंधवि । हे गौतम ! देशबंध पणिहवे सर्वबंध पणिहवे । आहारगसरीरप्पओगबंधेणंभंते कालओकेवचिरंहोइ । आहारकशरीर प्रयोग बंध देशबंध । कालथकी केतलाकाल हवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे एकसमयं देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । हे गौतम ! आहारकशरीर प्रयोग बंध एकसमय तेहिज पहिलेसमय सर्वबंधना भावथकी देशबंध जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो पणि अंतर्मुहूर्त ते किम जघन्यथकी तथा उत्कृष्ट थकी अन्तर्मुहूर्तमात्र होय आहारकशरीरक्षे उपरांत औदारिकशरीरनो ग्रहण पडववे तिवारे अंतर्मुहूर्तनेविषे प्रथमसमये सर्वबंधक उत्तर काले देशबंध, हिव आहारकशरीर प्रयोगबंधना आंतर निरूपवाने अर्थे कहेवे—आहारगसरीरप्पओगबंधंतरेणंभंते कालओकेवचिरंहोइ । आहारक

वति यरत औदारिकशरीरस्या काय यदवा तवरा त्तर्मुहूर्ते आद्यसमये सवबन्ध उत्तरकालच देशबन्धदति अथाहारकशरीरप्रयोगबंधस्यै का लरमिरूपणायाह ॥ आहारत्यादि ॥ सव्वबंधतर जबन्य मतोमुहुत्तति ॥ कथ मनुष्य आहारकशरीर प्रतिपन्न तत्प्रथमसमयच सर्वबन्धक सातो ऽन्तमुहूर्तमात्र स्थित्वा औदारिकशरीर गत तत्रा प्यन्तमुहूर्त स्थित पुनरपि तस्य समुत्पन्नाहारकशरीरकरणकारण मुत्पन्न तत पुन रप्याहार कशरीर गृह्णाति तत्रच प्रथमसमये सवबन्धक एवं त्वच सवबन्धान्तर मन्तमुहूर्त द्वयोर प्यन्तर्मुहूर्तयो रकत्वविवक्षा दिति ॥ उत्कोसेण अवतं

सरीरप्पओगबंधतरेणंभंते ! कालओ केवचिरं होइ गो० । सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं

चिरं भवति ? गौ० । सवबधान्तर मन्तमुहूर्त मुत्कर्षतो नन्त काल मनन्ता उत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिण्य कालत अनन्तो मन्ता लोका अपार्द्ध पुद्ग

शरीरप्रयोगबन्धान्तर हेभगवन् ! कालथको कितलाकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोतमा स सवबंतरजघन्यथकी। हेगोतम । सवबधांतर जघन्ये अ न्तर्मुहूर्त ते किम मनुष्य आहारकशरीर पडिवज्या ते पहिलेसमये सवबन्धक तिवारपछी अतर्मुहूर्तमात्र रहीने औदारिकशरीरे गया तिहाँ पिण अ न्तमुहूर्त रह्या वली तेहज समर्थादिके आहारकशरीर करवाना कारण उपना तिवारे वली आहारकशरीर करै तिहाँ पहिलेसमये सर्वबन्ध होय ए म सवबन्धान्तर अन्तमुहूर्त बेहुने पिण अन्तमुहूर्तने एकपणे विवक्षावी। उत्कृष्टे अनंतकाल। उत्कृष्टो अनन्तकाल तेमाटे अनन्तकालथकी आहा रकशरीर पामे ते कालनो अनन्तपणो देखाडिवावो कहिहे—अनन्ता जे अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणी कालथा क्षेत्रथा अनन्तालोक अथवा आवत परिवइ देसूण । अनन्तोत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालथकी क्षेत्रथकी अनन्तालोक एतलो व्याख्यान पूर्ववतोपरे कथा, पुद्गलपरावर्त्तनो परिमाण कहे । के मावा कर्मादिकनो नमाले अपार्द्ध कहिये अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त भागअसरूपने पिण देवे कहो । एवदेसबधतरपि । इम देशबन्धान्तर पिण जघन्ये अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टथकी अर्द्धपुद्गल देसूण किंवे आहारकशरीर देशबन्धकादिकनो अल्प बहुत्व कहिहे—एएसिणभंते जीवाण आहारगसरीरस्स देसबंधगाण सव्वब धगाण अबंधगाण कयरे २ जिता जाव विसेसाहियावा । एहने हेभगवन् । जीवने आहारकशरीरना देशबन्धकने सर्वबन्धकने अबन्धकने मांहोमांहि

कार्लेति ॥ अथ यतो ऽनन्तकाला दाहारकशरीर पुन लभत इति कालानन्त्यमेव विशेषेणाह ॥ अणताउ उस्सप्पिणीउ ओसप्पिणीउ कालउ खे
त्तउ अणतालोगत्ति ॥ एतत् व्याख्यान प्राग्वत् अथ तत्र पुद्गलपरावर्तपरिमाण कियन्ती स्यादि ॥ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणति ॥ अपार्द्धं अप
गमाद्र मद्दमात्र मित्यर्थ पुद्गलपरावर्त्त मामुक्तस्वरूप अपाद्दम व्यक्तम पूर्व स्यादत आह ॥ दशोनमिति ॥ एव दशबधतर पिति ॥ अयम्ये ना
न्त महत मुख्यतः पुन रपार्द्धपुद्गलपरावर्त्त दशोन मावनात् पर्यालामुमारयति यथा हारकशरीरदशबधकादीना मल्पत्वादिनिरूपणाया
इ ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सवस्तोका आहारकस्य सर्वबन्धका स्त स्सवबन्धकालस्या ल्पत्वा तुभ्य यका: सङ्ख्यातगुणा साहुबन्धकालस्य बहुत्वा द

काल अणताउ उस्सप्पिणीउस्सप्पिणीउ कालउ , खेत्तउ अणता लोगा अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण । एव
देसबधतरपि । एएसिण भते ! जीवाण आहारगसरीरस्स देसबधगाण सव्वबधगाण अबधगाणय कयरे २
हितो जाव विसेसाहियावा ? गो० । सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबधगा देशबधगा सखेज्जा

सपरावर्त्तं दशोन मप दशबधान्तरमपि । एतपा भदन्त ! जीवाना माहारकशरीरस्य दशबधकाना सर्वबधकाना मबधकानाञ्च कतर कतरे
भ्यो यावत् विशेषाधिकावा ? गौतम ! सवस्तोका जीवा आहारकशरीरस्य सर्वबधका दशबधका: सङ्ख्यगुणा अबधका अनन्तगुणा । तजः

कायबधको यावत् विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गौतमा सर्वस्तोकाजीवा आहारगशरीरना सर्वबंधगा देसबधगा सखेज्ज गु
णा । हे गौतम ! सर्वथोडाजीव आहारकशरीरना सर्वबंधक ते सर्वबन्धकाल अल्पपणाथको तेहथी देशबन्धक सङ्ख्यातगुणा देशबन्धक काल ना बहु
पणाथको तथा असङ्ख्यातमपि ला मनुष्ये मन्यना सङ्ख्यातपणा माटे तेहथी । अबधगा अणतगुणा । अबन्धक अनन्तगुणा आहारकशरीर मनुष्यमाहे प
वि वार एक साधने हुवे सिद्ध पण ययुक्ते सर्व अबन्धक तिवारे तथा सिद्ध वनस्पत्यादिकना अनन्तपणाथको अनन्तगुणा हिवे तैजसशरीर प्रयोगबन्ध
आश्रयी कहे छे—तेजासरीरप्पयोगबधेण भते कइविहे प । तैजसशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् ! केतलाभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गौतमा पचविहे प त ।

सङ्ख्यातगुणास्तु न भवन्ति यतो मनुष्या अपि सङ्ख्याता किंपुनः आहारकशरीरदेशबन्धका अबन्धका स्त्वनन्तगुणा आहारकशरीरं हि मनुष्याणां तत्रापि संयतानां तेषामपि कस्यचित्कदाचिदेव भवतीति शेषपदानि तु सुगमान्यतो न लिखितानि अबन्धका सततं सिद्धवनस्पत्यादीनां अनन्तगुणत्वात् वग

गुणा अबंधगा अणंतगुणा । तेयासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे प० ? गो० ! पंचविहे प०, तं०—एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे बेइंदियतेयासरीरप्पओगबंधे जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे । एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्त

शरीरप्रयोगबन्धो भ० । कतिविधः प्रज्ञप्तो ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धः यावत् पञ्चेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धः । एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कतिविधः प्रज्ञप्तः एवं एतेन अभिलापेन भेदो यथा अवगाहनासंस्थाने यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धः अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (अवगाहित) यावत् द्वयम् । से

न गौतम पांच भेद कहा ते कहे है—एकेन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध १ । बेइन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध २ । जाव पंचेन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध । हे भगवन् एकेन्द्रिय तेजससरीर प्रयोगबन्ध । एकेन्द्रिय ते तेजससरीर प्रयोगबन्ध १ । बेइन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध । बेइन्द्रिय तेजससरीर प्रयोगबन्ध २ । जाव पंचेन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध । एम यावत् पंचेन्द्रिय तेजससरीर प्रयोगबन्ध । एकेन्द्रिय तेजासरीरप्रयोगबन्ध भगवन् कतिप्रकार । एकेन्द्रिय तेजससरीर प्रयोगबन्ध भगवन् केतलेभेदे कह्या । एवं एणे अभिलावे भेद जहा अवगाहना संठाणे । एम इहाँ पाठ कहवो भद न्ति म यावत् सम्भावने विषे आहारकसरीरना भेद कह्या तिम कहवा । जावपज्जत्तासर्वार्थसिद्ध अणुत्तरोववाइयकप्पातीतवैमानिकदेवपंचे सिद्धतेजासरीरप्रयोगबन्ध । यावत् पर्याप्ता सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेन्द्रिय तेजससरीरप्रयोगबन्ध ॥ १ ॥ अपज्जत्तासव्व ट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीत । अपर्याप्ता सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियतेजससरीरप्रयोगबन्ध ॥ २ ॥ तेयासरीरप्पओग

मगुया सहति अथ तैजसशरीरप्रयोगबन्ध मधिकृत्याह ॥ तेयेत्यादि ॥ णोसव्वबन्धत्ति ॥ तैजसशरीरस्या नादित्वा न सर्वबन्धोस्ति तस्य प्रथमतः पुद्गलोपादानरूपत्वा दिति ॥ अणाइएवा अपज्जवसिए त्यादि ॥ तत्राय तैजसशरीरबन्धो नादि रपर्यवसिता अभव्याना अनादि सपर्यवसित

रीययाइय जाव बंधेय । तेयासरीरप्पओगबंधेणं भंते! कस्सकम्मस्स उदएण? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वया ए जाव आउयंच पडुच्च तेयासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएण तेयासरीरप्पओगबंधे । तेयासरीरप्पओग बंधेण भंते! किं देसबंधे सव्वबंध? गो० ! देसबंधे णोसव्वबंधे । तेयासरीरप्पओगबंधेण भंते! कालओ केव चिरहोइ? गो० ! दुविहे प० तंजहा—अणाइएवाअपज्जवसिए अणाइएवासपज्जवसिए । तेयासरीरप्पओग

तैजसशरीरप्रयोगबन्धान्तर प्र० । कस्य कर्मण उदयेन ? गौतम । वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया याव दायुष्क प्रतीत्य तैजसशरीरप्रयोगनाम्न कर्मस्यो द यन तैजसशरीरप्रयोगबन्धः । तैजसशरीरप्रयोगबन्धः भ० । किं देशबन्ध सर्वबन्ध ? गौतम । देशबन्धो नो सर्वबन्ध । तैजसशरीरप्रयोगबन्धो प्र० । कालतः कियच्चिर भवति ? गौतम । द्विविध प्रज्ञप्त तद्यथा–अनादिकोवा अपर्यवसितो अनादिकोवा सपर्यवसितः । तैजसशरीरप्रयो

बन्ध भंतेकस्यकर्मउदयेन । तेजसशरीरप्रयोगबन्ध हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयेंहुवे इतिप्रश्न । गा० वीरियसजोगसद्दव्वयाए जावआउयपडुच्च । हेगौ तम वीर्यसयोगसद्द्रव्यपणेकरी यावत् आयुषा आश्रयीने । तेयासरीरप्पओगणामाएकम्मस्सउदएण । तेजसशरीर प्रयोगबन्धनामकर्मने उदयेंकरी । तेया सरीरप्पओगबंधे । तेजसशरीर प्रयोगबन्धहुवे । तेयासरीरप्पओगबंधेणंभंतेकिंदेसबंधेसव्वबंधे । तेजसशरीरप्रयोगबन्ध हेभगवन्! स्यूं देशबंधहुवे अथवा स र्वबंधहुवे इति प्रश्न । गा० देसबंधे णोसव्वबंधे । तेयासरीरप्पओगबंधणंभंतेकालओकेवचिरहोइ गो० दुविहे प० त० । हेगौतम देशबंधहुवे पणि सर्वबंध न हुवे तैजसशरीरना अनादिपणाथकी सर्वबंध तिवारें सर्वबन्धनेअभावथी न प्रश्नापाताम अपर्यवसितो तैजसशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् ! कालथी केतलोकाल रहे इतिप्रश्न । हे गौतम बेप्रकारे कह्यो ते कहेछे—अणाइएवाअपज्जवसिए । अनादि अनन्त एह तैजसशरीर अभव्यने हुवे तथा । अणाइएवासपज्जवसिए ।

सु मध्याना मिति अथ तैजसशरीरप्रयोगबन्धस्यैवां तरनिरूपणायाह ॥ तेयेत्यादि ॥ अनादयस्सेत्यादि ॥ यस्मा त्संसारस्थो जीव तैजसशरीर बन्धनद्वयरूपेणापि सदा अविनिर्मुक्तएव भवति तस्मा दुभयरूपस्या प्यस्य नास्त्यन्तर मिति अथ तैजसशरीरदेशबन्धकाबन्धकानां मल्पत्वादिनि रूपणायाह ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोका तैजसशरीरस्य बन्धका सिद्धानामथ तदबन्धकत्वात् दृशबन्धका स्त्वमन्तगुणा सद्भावबन्धकानां

यधतरेण भंते ! कालओ केवचिर होइ ? गो० ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अतर , अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अतरं । एएसिणं भंते ! जीवाण तेयासरीरस्स देसबधगाण अबधगाणय कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबधगा देसबधगा अणतगुणा ।

गर्बधातर भ० । कालत कियच्चिर भवति ? गौतम ! अनादिकस्या पर्यवसितस्य नास्त्यन्तर मनादिकस्य सपर्यवसितस्य नास्त्यन्तरम् । एतषा भ० । जीवाना तैजसशरीरस्य देशबन्धकाना मबन्धकानाञ्च कतर कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा तैजसशरीरस्य

अनादिसात पण्मा अभवनेहुव । अशरीरीपणानो बारयामाटे । तयासरीरस्य प्रयोगबधनरेबमतेकालसभावेनविरहोय गो अणाइयस्सअपज्जवसियस्सनत्थि अतर । तैजसशरीर प्रयोगबधातर केमभवन् । कालथी केटलाकालसुधी, इतिप्रश्न हे गौतम अनादि अनत तैजसशरीर प्रयोगबधना अतरनथी कीमाटे ससारस्थ जीव तैजसशरीर प्रयोगबधकारी सदव अनमुकाया होजहवे एअअभव्याश्रयी कह्यो तथा । अणाइयस्ससपज्जवसियस्सनत्थिअतर । अनादि सात ए भव्याश्रयी नै पनि तैजसशरीरप्रयोगबधना मोक्षजावा अतरनथी कामाटे अगर तो तेजे भवी पामिव अने एहना विरहपणा पछी सिद्ध थायमाटनथी वली भवमि ते म टे अतर नथी हिव तैजसशरीर देशबधकादिकना अल्प बहुत कहेछे—एएसिणभते जीवाण तयासरीरस्स देसबधगाण अबधगाणय कयरे २ हिता । एहने केमभवन् जीवन तैजसशरीर देशबधकने अबधकने मांहोमाहि ओछाअधिका थोडावे घणाकुवे बराबरकुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गो यमा सव्वत्थोवाजीवा तयासरीरस्स अबधगा देसबधगा अणतगुणा । हेगौतम ! सर्वथीथोडाजीव तैजसशरीरना अबधक सिद्धजाणवा तेहना अबधक पणो

मकममगारियां सिद्धो ऽननमयस्या दिति अथ कामगशरीरप्रयोगबन्ध मधिकृत्याह ॥ कम्मासरीरेत्यादि ॥ नाणपडिणीययाएत्ति ॥ ज्ञान स्य श्रुताद स्य तदा ज्ञानवतांवा या प्रत्यनीकता सामान्येन प्रतिकूलता सा तया तया ॥ नाणनिण्हवणयाएत्ति ॥ ज्ञानस्य श्रुतस्य श्रुतगुरूणां वा या निह्नवना ऽपलपनं सा तया तया ॥ नाणंतरायएत्ति ॥ ज्ञानस्य श्रुतस्या न्तराय स्तद्ग्रहणादौ विघ्नो यः स तया तेन ॥ नाणप्पओसेणंति ॥

कम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे । नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए नाणनिण्हवणयाए नाणंतराएणं नाणप्पदोसेणं णाणच्चा

यथका दशयरका धनमगुणा ४ । कामकशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कतिविध प्रज्ञप्तो ? गौतम ! अष्टविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा–ज्ञानावरणीयकामक शरीरप्रयोगबन्धो याव दन्तरायिककामकशरीरप्रयोगबन्धः । ज्ञानावरणीयकामकशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कस्य कर्मण उदयेन ? गौतम ! ज्ञान प्रत्यनीकतया ज्ञाननिह्नवतया ज्ञानान्तरायेण ज्ञानप्रद्वेषेण ज्ञानात्याशातनया ज्ञानविसंवादनयोगेन ज्ञानावरणीयकामकशरीरप्रयोगनाम्न क

म टे तेइ ॥ ज्यमवक पनतगवा वेयबध मकल संसारी जीवके ते सिवायो पनतगणके तेमांटे, हिवे कामकशरीर प्रयोगबंध आश्रीने कहेछे । प्र कामशरीरप्पओगबंधणंते कइविहे प । कामकशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठविहे पं त । हे गौतम आठ भेदे कह्योछे—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओग बंधे जाव अंतराइय कम्मासरीरप्पओग बंधे । ज्ञानावरणीय कामकशरीर प्रयोगबंध १ दर्शना वरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आउखा ५ नाम ६ गोत्र ७ यावत् अन्तराय कामकशरीर प्रयोगबन्ध । नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणंभंते क म्मस्स उदएणं । ज्ञानावरणीय कामकशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् किसा कर्मने उदयेंकरी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नाणपडिणीययाए नाणनिण्ह वणयाए । हेगौतम ज्ञान ते श्रुतादि अथवा अभेदथकी ज्ञानवन्त तेहनीज प्रत्यनीकता सामान्ये प्रतिकूलपणो ते ज्ञानप्रत्यनीकता तेणेंकरी

ज्ञाने श्रुतादौ ज्ञानवत्सु वा यः प्रद्वेषो ऽप्रीतिः स तथा तेन ॥ नाणच्चासायणाएत्ति ॥ ज्ञानस्य ज्ञानिनां वा या आशातना हीलना सा तथा त या ॥ नाणविसंवायणाजोगेणंति ॥ ज्ञानस्य ज्ञानिनां वा विसंवादनयोगो व्यभिचारदर्शनाय व्यापारो यः स तथा तेन एतानि च बाह्यानि कार णानि ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरबन्ध ऽप्यान्तरं कारणं माह ॥ नाणावरणिज्जमित्यादि ॥ ज्ञानावरणीयहेतुत्वेन ज्ञानावरणीयलक्षणं यत्कार्मणश रीरप्रयोगनाम त तथा तस्य कर्मण उदयेनेति ॥ दंसणपडिणीययाएत्ति ॥ इह दर्शनं चक्षुर्दर्शनादि ॥ तिव्वदंसणमोहणिज्जयाएत्ति ॥ तीव्रमिथ्या

सायणाए नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जक म्मासरीरप्पओगबंधे । दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए एवं जहा नाणावरणिज्जं, नवरं दंसणनामघेयव्वं । जाव दंसणविसंवायणाजोगेणं द

मणं उदयेन ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धः । दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कस्य कर्मण उदयेन ? गौ० । दर्शनप्रत्यनीक तया एवं यथा ज्ञानावरणीयं नवरं दर्शननामगृहीतव्यं यावत् दर्शनविसंवादनयोगेन दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन याव

ज्ञानस्य ज्ञानिनां वा श्रवणतः प्रत्यनीकत्वं वा प्रयोजनं तथा च गच्छन्तो इत्यर्थः तिर्यञ्चो । ज्ञानान्तरायस्य ज्ञानप्रदानस्य । सूत्रतो अन्तरायं पा ठे ते पठतो विघ्नकरे तिर्यञ्चो युतादिषु विषयेषु तथा ज्ञानवत्सु प्रद्वेषकरे तिर्यञ्चो । ज्ञानासातनायाः । ज्ञानतो तथा ज्ञानवन्तो हीलनां कर णो तिर्यञ्चो । ज्ञानविसंवादनायामेव । ज्ञान तथा ज्ञानवन्तं व्यभिचारं देखाइवो तिर्यञ्चो । ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मणः उद० च । ज्ञानावरणीय हेतुपणेकरी ज्ञानावरणीय नवमं तं कार्मणशरीर प्रयोगनाम कर्मने उदयेकरी । ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबंधे । ज्ञानावरणी य कार्मणशरीर प्रयोगबंध एवं । दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंध भंते कस्सकम्मस्स उदएणं । दर्शनावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् कि साकर्मने उदयेकरी दर्शनी हां दर्शन ते चक्षुदर्शनादिक । गोयमा दंसणपडिणीययाए । हे गौतम दर्शनने प्रतिकूलपणे करी । एवं जहा णाणावरणिज्ज

नणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं जाव प्पओगबंधे। सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओग पुच्छा। गोयमा! पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्ज जाव बंधे। असायावेयणिज्जपुच्छा? गोयमा! परदुक्खणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दुस्समा उ

रणप्रयोगबन्धः। सातवेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भ०। कस्य कर्मण उदयेन? गो०। प्राणानुकम्पतया भूतानुकम्पतया एवं यथा सप्तमशते दुःषमोद्देशके यावत् अपरितापनतया सातवेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन सातवेदनीय (प्रभृति) यावद्बन्धः। असातवेदनीयपृच्छा गौतम! परदुःखनतया परशोचनतया यथा सप्तमशते दुःषमोद्देशके यावत् परितापनतया असातवेदनीयकार्मण (प्रभृति) यावत्

बन्ध होता है। इस ही प्रकार ज्ञानावरणीय कहा तिम दर्शनावरणीय कहना परन्तु विशेष ज्ञाननाम कहा तिहां दर्शननाम कहना। यावत् दर्शनविसंवादयोग करके। यावत् इतना तथा दर्शनावरणीय अतिचार दिखाइवा तिसेंकरी एतलामसे कहना। दर्शनावरणीयकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं जाव प्पओगबंधे। दर्शनावरणीय हेतुसेंकरी दर्शनावरणीयबन्ध ज कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेह कर्मने उदयेंकरी दर्शनावरणीय कार्मणश रीर प्रयोगबन्ध होय। सायावेयणिज्ज कम्मासरीरप्पओगबंधे भंते कस्स कम्मस्स उदएणं। साताबेदनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध! हे भगवन्! किसा कर्मने उ दयें करी होय उत्तर। गोयमा पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए। हे गौतम! प्राणीनी अनुकम्पा दयायें करी भूतनी अनुकम्पा दयायेंकरी। एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए। इम जिम सातमा शतकमा दुःषमा उद्देशाने विषे। जाव अपरियावणयाए। यावत् प्राणीभूतजीवने अपरितापने करवा तिसें करी। सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्ज जाव बंधे। सातावेदनीय हेतुपणेंकरी सातावेदनीयबन्ध जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेहकर्मने उदयेंकरी सातावेदनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे। असातावेयणिज्ज पुच्छा। असातावेदनीयना प्रश्ननो उत्तर। गोयमा प

त्वतये त्यय ॥ तिव्रचरित्तमोहणिज्जयाएत्ति ॥ कषायव्यतिरिक्त नोकषायलक्षण मिह चारित्रमोहनीय ग्राह्य तीव्रक्रोधतये त्यादिना कषायचारित्रमोहनीयस्य प्रागुक्तत्वा दिति ॥ महारम्भयाएत्ति ॥ अपरिमितकृष्याद्यारम्भतयत्यर्थः ॥ महापरिग्गहयाएत्ति ॥ अपरिमाणपरिग्रहतया ॥ कुणि

हेसए जाव परितावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा जाव प्पओगबंधे । मोहणिज्जकम्मासरीरपुच्छा ? गो० ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोहयाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओग जाव प्पओगबंधे । णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! पुच्छा गोय

रप्रयोगबन्धः । मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धपृच्छा गौतम ! तीव्रक्रोधतया तीव्रमानतया तीव्रमायितया तीव्रलोभतया तीव्रदर्शनमोहनीयतया तीव्रचारित्रमोहनीयतया मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोग (प्रकृति) याव त्प्रयोगबन्ध । नैरयिकायुः कार्मणशरीरप्रयोगबन्धपृच्छा गौतम ! महा

[illegible] परमाधम्मा० । हेगौतम ! परम दुःखमादेवा तिर्यंचरो परमे साधमा उपजावणा तिर्यंचरो । महादुःखममना० दुःखमा उदेसए । जिम सात मानपमनेविषे दुःखमा उपजावविषे । जाव परितावणयाए । यावत् अनेरामे परतापने करवेकरी । असातावयविज्जकम्मा जावप्पओगबधे मोहणिज्ज कम्मासरीरपुच्छा । असाता वेदनीय हेतपणे करी असातावेदनीयमनय कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेह कर्मने उदयेकरी असातावेदनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे मोहनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्धनी प्रश्नबोधा उत्तर । गोयमा तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोहयाए । हेगोतम ! तीव्र क्रोधेकरी तीव्र मानेकरी तीव्र मायायेंकरी तीव्र लोभेकरी । तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए । तीव्र मिथ्यात्वमोहनीय पणेकरी तीव्रना कषायलक्षण चारित्रमोहनीयेंकरी इहां कषाय व्यतिरिक्तनो कषायलक्षण चारित्रमोहनीय अथवा तीव्र क्रोध तथा इत्यादिके करी कषाय चारित्रमोहनीयने पहिला कह्यामाटे । मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे जावप्पओगबंधे । मोहनीयपणे करी मोहनीयलक्षण कार्मणशरीर प्रयोगनाम ते कर्मने उदयेकरी मोहनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे । णेरइय उयकम्मासरीरप्पओगबंधेणंभंते पुच्छा । नरकायुष कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध

मा! महारंभयाए महापरिग्गहियाए पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं णेरइयाउयकम्मासरीर जाव पओगबंधे। तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा! माइल्लयाए नियडिल्लयाए अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा जाव पओगबंधे। मणुस्साउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा! पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए

रंभतया महापरिग्रहतया पञ्चेन्द्रियवधेन कुणपाहारेण नैरयिकायुःकार्मणशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन नैरयिकायुःकार्मणशरीर (प्रयो-
ति) यावद् बन्धः। तिर्यग्योनिकायुःकार्मणशरीरपृच्छा गौतम! मायावितया निकृतिमत्तया ऽलीकवचनेन कूटतुलाकूटमानेन तिर्यग्योनिका-
युःकार्मण (प्रकृति) यावत् प्रयोगबन्धः। मनुष्यायुःकार्मणशरीरपृच्छा गौ०। प्रकृतिभद्रतया प्रकृतिविनीततया सानुक्रोशतया ऽमत्सरिकतया

रा प्रश्न। इत्यादि प्रश्नबोधा उत्तर। गोयमा महारंभयाए महापरिग्गहयाए। हे गौतम अपरिमित कृष्यादि आरम्भ करी अपरिमाण परिग्रह करी। पंचेन्द्रियवहेण। पंचेन्द्रिय मारवेकरी। कुणिमाहारेणं। मांसादिक भोजन करवेकरी। णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं णेरइयाउयकम्मासरीर जावप्पओगबंधे। नरकायुष हेतुपणेकरी नरकायुष नाम जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेहकर्मने उदयेकरी नरकायुष का[र्मण]शरीर प्रयोगबंध हुवै। तिरिक्खजोणियाउय कम्मासरीरपुच्छा। तिर्यग्योनिक आयुष कार्मणशरीरनो प्रश्नबोधा उत्तर। गोयमा माइल्लयाए। हे गौतम परवंचन बुद्धिपणवेकरी माया ढांकवा निमित्त। नियडिल्लयाए। माया उपरे माया करवेकरी। अलियवयणेणं। असत्य वचने करी। कूडतुल कूडमाणेणं। कूड तोल कूड माप करवेकरी। तिरिक्खजोणियाउयकम्म जावप्पओगबंधे। तिर्यग्योनिकायुष कार्मण यावत् प्रयोगबंध हुवै। मणुस्साउयकम्मासरीर पुच्छा। मनुष्यायुष कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नबोधा उत्तर। गोयमा पगइभद्दयाए पगइविणीययाए। हे गौतम। स्वभावथकी भद्रक परने तापने अणकरवेकरी स्वभावेकरी विनीतपणो करवेकरी। साणुक्कोसयाए। अनुकम्पा सहितपणेकरी। अमच्छरियाए। परगुण असहि तेभा

मायावर्ति ॥ मायामाश्रित्य मायाम ... माहार्यति ॥ मांसमोजनगति ॥ मायावयारति ॥ परवञ्चनबुद्धियत्तया ॥ नियकिमयारति ॥ निकृति वंचनार्थ चेष्टा, मायाप्रच्छादनार्थं मायान्त रमित्यके अत्यादरकरणेन परवञ्चनमित्यन्य तद्द तया ॥ पगडमद्दुयारति ॥ स्वजावत परानुपतापितया ॥ साणुक्कोसयारति ॥ सानुकम्पतया ॥ अमच्छरियपयारति ॥ मत्सरिका परगुणानां असहना तद्भावनिषधो मत्सरिकता तया ॥ सुभनामकम्मेत्यादि ॥ इह सुभनाम देवगत्यादिक ॥ काय उज्जुययाए ॥ कायर्जुकतया परावञ्चनपरकायचेष्टया ॥ भावुज्जुययारति ॥ भावर्जुकतया परवञ्चनपरमन प्रवृत्त्यर्थः ॥ भासुज्जुययाएत्ति ॥

मणुस्साउयकम्मा जाव प्पओगबंधे। देवाउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! सरागसंजमेण संजमासंजमेण बाल तवोकम्मेण अकामणिज्जराए देवाउयकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे। सुभनामकम्मासरीरपुच्छा ? गोयमा ! काउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणाजोगेण सुभनामकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे असु

मनुष्यायु कामण (प्रभृति) यावत् प्रयोगबन्ध । देवायुःकार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! सरागसंयमेन संयमासंयमेन बालतपःकर्मणा अकामनिर्ज रया देवायु कार्मणशरीर (प्रभृति) यावत्प्रयोगबन्ध । शुभनामकार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! कायर्जुकतया भावर्जुकतया भाषर्जुकतया अविसं

वना निषेध तिर्थंकरो । मनुष्यायुकर्म का आवप्रयोगबंध । मनुष्यायु कार्मणशरीर प्रयोगबन्धबंध । देवायुकर्मासरीरपुच्छा । देवायुष कार्मणशरीर का प्रयोगबन्धना प्रश्न बोधा उत्तर । गौतमा सरागसंयमेन संयमासंयमेन । हे गौतम ! सराग चारित्र पालनेवाले देशविरतिवाले । बालतपो कर्मेण । पश्चात करनेवाले । अकामनिर्जराए । अकाम निर्जरा करो । देवायुकर्मासरीर आवप्रयोगबंध । देवायुष कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध यावत् बन्ध हुवे । शुभनामकर्मासरीरपुच्छा ॥ शुभनाम कर्म ते प्रयत्नाविक तेहना प्रश्नबोधा उत्तर । गौतमा काउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए । हे गौतम काया करके सरल करो तिर्थंकरो मनसे सरल करो वचनसे तिर्थंकरो भावसे सरल वर्तावो मायारहित वर्तनसे । अविसंवादना जोगेण । अ[illegible] विपरीत न करे तिर्थंकरो । शुभनामकर्मासरीर आवप्रयोगबंध असुभनामकर्मासरीर पुच्छा । असुभनाम कार्मणशरीर यावत् प्र

भावर्जुकतया नानाप्रवृत्त्यः ॥ अविसंवादनयोगेनेति ॥ विसंवादनमन्यथाप्रतिपादनं तद्रूपो योगो व्यापारस्तेन वा योगः सम्बन्धो विसंवादनयोगस्तत्प्रतिषेधोऽविसंवादनयोगः स चेह कायर्जुकादित्रय वर्त्तमानकालाश्रय अविसंवादनयोगस्त्वतीतवर्त्तमानलक्षणकालद्वयाश्रय इति ॥ अशुभनामकम्मेत्यादि ॥ इह च शुभनाम नरकगत्यादिकं ॥ कम्मासरीरप्पओगबंधेणमित्यादि कार्मणशरीरप्रयोगबन्धप्रकरणं तैजस

णामकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! कायउज्जुययाए जाव विसंवायणाजोगेण असुभणामकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे। उच्चागोयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जातिअमदेणं कुलअमदेणं बलअमदेणं रूवअमदेणं तवअमदेणं लाभअमदेणं सुयअमदेणं इस्सरियअमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे। णीयागोयक

दनयोगेन शुभनामकार्मणशरीर (प्रयोग) यावद्बन्धः। अशुभनामकार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! कायानृजुकतया यावद्विसंवादनयोगेन अशुभनामकार्मणशरीर (प्रयोग) यावद्बन्धः। उच्चैर्गोत्रकार्मणशरीरपृच्छा गौ०। जात्यमदेन कुलामदेन बलामदेन रूपामदेन तपोमदेन लाभामदेन श्रुतामद ऐश्वर्यामदेनो च्चैर्गोत्रकार्मणशरीर (प्रयोग) यावत्प्रयोगबन्धः। नीचैर्गोत्रकार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! जातिमदेन कुलमदेन ब

कार्मणशरीरे अशुभनाम कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नोत्तर इहाँ अशुभनाम ते नरकगत्यादिक। गोयमा कायअणुज्जुययाए। हे गौतम ! कायानी वक्रपणे करी। भाषाने वक्रपणे करी। यावविसंवादनाजोगेन। यावत् विपरीतपणे करेवेकरी। असुभणामकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे। अशुभनाम कार्मणशरीर यावत् प्रयोगबंध हुवे। उच्चागोयकम्मासरीरपुच्छा। उच्चैर्गोत्र कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नोत्तर उत्तर। गोयमा जातिअमदेणं। हे गौतम ! जातिनो मद न करे। कुलअमदेणं बलअमदेणं रूवअमदेणं तवअमदेणं लाभअमदेणं सुयअमदेणं इस्सरियअमदेणं। कुलनो मद न करे तिणेकरी बलनो मद न करे तिणेकरी रूपनो मद न करे तिणेकरी तपनो मद न करे तिणेकरी लाभनो मद न करे सुतज्ञाननो मद न करे तिणेकरी ठकुराईनो मद न करे तिणेकरी। उच्चागोयकम्मासरीर जावप्पओगबंधे। उच्चैर्गोत्र कार्मणशरीर यावत् प्रयोगबंध हुवे। णीयागोयकम्मासरीर पुच्छा। नीचैर्गोत्र कार्मणशरीर इत्या

म्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जातिमदेणं कुलमदेणं बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे । अंतराइयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगंतराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे णोसव्वबंधे । एवं जाव

समदेन यावत् ऐश्वर्यमदेन नीचैर्गोत्रकार्मणशरीर (प्रभृति) यावत्प्रयोगबन्धः। आन्तरायिककार्मणशरीरपृच्छा गौतम! दानान्तरायेण लाभान्तरायेण भोगान्तरायेण उपभोगान्तरायेण वीर्यान्तरायेण आन्तरायिककार्मणशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन आन्तरायिककार्मणशरीरप्रयोगबन्धः ॥ ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! किं देशबन्धः सर्वबन्धः ? गौतम ! देशबन्धो नोसर्वबन्धः एवं यावत् आन्तरायिकं । ज्ञानावरणीय

है प्रश्ननो उत्तर । गोयमा जातिमएणं कुलमएणं बलमएणं जाव इस्सरियमएणं । हे गौतम ! जातिने मदेकरी कुलने मदेकरी बलने मदेकरी याव त ऐश्वर्यने मदेकरी ऐश्वर्यमदेकरी । णीयागोयकम्मासरीर जावप्पओगबंधे । नीचैर्गोत्र कार्मणशरीर यावत् प्रयोगबंधहुवे । अंतराइयकम्मासरीरपुच्छा । अन्तराय कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्ननो उत्तर । गोयमा दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं । हे गौतम ! दाननो अन्तरायेकरी लाभनो अन्तरा येकरी भोगनो अन्तरायेकरी । उवभोगंतराएणं । उपभोगनो अन्तरायेकरी । वीरियंतराएणं । वीर्यनो अन्तरायेकरी । अंतराइयकम्मासरीरप्पओगणा माए कम्मस्स उदएणं । अन्तराय हेतुपणेकरी अन्तरायकर्मनुं जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम कर्मने उदयेकरी । अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे । अन्तराय कार्मणशरीर प्रयोगबंधहुवे । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे भंते किं देसबंधे सव्वबंधे । ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् ! स्यूं देशब न्धहुवे अथवा सर्वबंधहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधे णोसव्वबंधे । हे गौतम देशबंधहुवे पणि सर्वबंध न हुवे कार्मणशरीरना अनादिपणाथ की सर्वबंध नथी सर्वबंधने प्रथमबीज पुद्गलोपादान रूपपणाथकी । एवंजाव अंतराइय । इम यावत् अन्तराय कार्मणशरीर प्रयोगबंध पिण कहवा ।

श्रुतराइय । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा—अणाइए एवं जहेव तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव एवं जाव अंतराइयकम्मस्स । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधंतरेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्स एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव जाव अंतराइयस्स । एएसि णं भंते ! जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य

कामर्मणशरीरप्रयोगबन्धः प्र० । कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! द्विविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—अनादिक (अप्रवृत्ति) एवं यथैव तैजस संस्थिता तथैव च यावत् दान्तरायिककार्मणशरीरस्य । ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगस्य अन्तरं प्र० । कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! अनादिक स्यैवं यथा तैजसशरीरस्यान्तरं तथैव यावत् दान्तरायिकस्य । एतेषां प्र० ! जीवानां ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो देशबन्धकानां अबन्धकानां च

ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धभंते कालथी केटलो काल होय ? ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् कालथी केटलो काल रहे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा द्विविध प्र० । हे गौतम बे भेद कह्या ते कहे छे—अनादिक एवं जेवी तेजस संचिट्ठणा कहेल । अनादि अनंत अभव्यने १ अनादि सांत भव्यने २ एम जेम तेजसशरीरनी संचिट्ठणा कही तेम कर्म एनी पण कहेवी । एवं यावत् अंतरायकर्मनुं । एम यावत् अंतराय कर्मशरीर प्रयोगबंध लगे कहेवो । ज्ञानावरणीयकर्मासरीरप्रयोगबंधंतरेणंभंतेकालओकेवच्चिरंहोइ । ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंधांतर हे भगवन् । कालथी केटलो काल होय । अ० अणाइयस्स एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव जाव अंतराइयस्स । हे गौतम । अनादि अपर्यवसित नुं अंतर नथी । अभव्य आश्रयीने कह्यो १ तथा अनादि सांतनुं पण अंतर नथी भव्य आश्रयीने कह्यो एम जेम तेजस शरीरनो अंतर तेम इहां पण कहेवुं यावत् अंतराय लगे । एएसि णं भंते जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य २ जाव अप्पा वा बहुया जहा तेयगस्स तहेव भाणियव्वं । एहने हे भगवन् ! जीवने ज्ञानावरणीय कर्मना देशबंधकने तथा अबंधकने मांहोमांहि कुण २ थकी विशेषाधिक तुल्य बहु

शरीरप्रयोगबन्धप्रकरणव यय, परन्तु विशेषो सा पुच्यते ॥ सम्यत्वोवा जीवा आउयरस कम्मस्स दसवपयासि ॥ सयसाकस्य मया मायुर्बन्धातुाया स्तावस्या दयबन्धातुायास्तु यत्तुगुणस्या सदबन्धका: सङ्गातगुणा मन्यसङ्कातगुणा सादमन्यका: कसा जोसा सादबन्धातुाया यसङ्कातजीयिता मासि त्या मसङ्गातगुणत्या ? पुच्यत इद ममन्तकायिका मासिस्यमूत्र तत्र चानन्तकायिका: सङ्गातजीविताशुष सपायुकस्या यन्धका साद्दमयपकन्य: सङ्गा तगवात्मव मवन्ति यद्ययन्धका: सिद्धादय सम्मध्य सिध्यन्त तथापि तत्र्य: सङ्गातगुणाश्रय ते सिद्धाद्ययन्धकामा मनंतामा मध्यममकायिकायुबन्ध कापसया ऽमन्तसागत्यादिति ननु यदा पुपी ऽबन्धका: सतो बन्धका भवन्ति तदा कथ न सयबंधसम्भव स्तया ? मुच्यत मङ्गायु: प्रकाति रसती

कयेरे कयर जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स एव आउयबन्धगा जाव अतराइय। आउयस्सपुच्छा गो० !

तर कतरन्मा याव दम्पायहुत्व यथा तैजसस्यैव मायुषजं याव दान्तरायिक । मायुष पृच्छा गौतम ! सवसोका जीया मायुष: कर्मको देश

बवत जिम तजसनों कह्यो तिम इहां पणि कहवा इम पाउवध कर्मनें। कावयतरायवं पाउवधपुच्छा । कावत् मतराय कर्म सगें कहवां जे इहां निमवकें त बवेवे पाजधा कमनों दयवध पने सव वधकनें मांदा माहि। गा सम्मत्वावा जीवा पाउय बन्ध पदेसवधगा पवधगा सखेज्जगुणा। वेम गवम्। बन्य २ कह्यो यावत् बिसवाधिव बुवे हवा प्रश्न जीवा वेगौतम! सवको वाका जोव पाव कमना वेगवधक पाउवा मंधकों वास वाका तेहथको पुवधकानन बहुगुण मकां कह्यो तेहनो पवधक सख्यात गवां इहां बार इव पूहवें पवधक पसंख्यात गुणां जिम न कमा ते पवधकासनो पसख्यात जाविक पते पावयोनें पसख्यातगुण पवां कह्यो ममय तिम व तीम २ पख्यापमनों देवमारको ३३ सागर ३३ सागरनों तां सभो ते पवंधक पसख्यात गवां को मधाह तिहां इम कहोनें एव पनतकाविक मतें पाययोनें सूवके तिहां पनतकाविक सख्यात जीवित जीवनें ते पाजपागा मबधक ते देख बधक कह्यो सख्यातगुणा जोज बुवे जा पवंधक विशाधिक तेमांहि चेपोयें तो पणि तेहथी संख्यातगुणा जोज ते मिशादि पवधक पनतमें पणि पनत वाविक पाजबधकनो पपेचायें पनत भागपतां कह्यो कह्यो वार कहस्ये बा पाजपतां पवधक वका मंधकवुवे तिवारें किमकहो तेहनें सवबधकना

मता ते भिद्यन्ते, औदारिकादिशरीरवहिरिति न भवबन्धसम्भव इति प्रकारान्तरेणौ दारिकादिचिन्तय माह ॥ वरसेत्यादि नोयघएत्ति ॥ नवो वबमये औदारिकवैक्रियपो वन्धो विग्रत इतिकत्वा नोबन्धक इति, एव आहारकस्यापि तैजसस्य पुन सदैवा विराहितत्वा इंधको देशबन्धन

नमुत्तोया जीवाओ आउयकम्मस्स देसबंधगा अबंधगा सव्वेऊगुणा। जस्सण भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे णं भंते। वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए अबंधए? गोयमा! णोबंधए अबंधए। आहारगसरीरस्स किं बंधए अबंधए? गोयमा! णोबंधए अबंधए। तेयासरीरस्स किं बंधए अबंधए? गोयमा! बंधए णोअबंधए। जइ

बन्धका अबन्धका अनन्तगुणा। यस्य भ० ! औदारिकशरीरस्य सर्वबन्ध तस्य भ० ! वैक्रियशरीरस्य किं बन्धको अबन्धकः ? गौतम ! नो बंधका अबन्धकः। आहारकशरीरस्य किं बंधको अबंधकः ? गौतम ! नोबन्धको अबंधकः। तैजसशरीरस्य किं बंधको अबन्धकः ? गौतम ! बंधको नाऽबन्धकः। यदि बन्धकः किंदेशबन्धकः सर्वबन्धको ? गौतम ! देशबंधको नैव सर्वबन्धकः। कार्मणशरीरस्य किं बन्धको अबन्धको यथैव

करता हता एम कहोवे नही आऊखानो बन्धतो बन्धनो नथति तिवे वांचोवे औदारिक शरीरनोपरे नही सर्वबन्धनी सभवति इवे प्रकारांतरे औदारि कादिक विचे छे—समभते आरालियशरीरनु सम बंधे। जेने हेभगवन् औदारिकशरीर सर्वबंधे हुवे। तेहमते वेउव्वियशरीरनु किं बंधए अबंध ए। तेह हेभगवन् वैक्रियशरीरना स्यूं बधक अथवा अबंधकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोबंधए अबंधए। हेगौतम सर्वबंधक नही पण अबंधक एक समे बवबन्धक औदारिक तेहमांहि वैक्रिय नहुवे। आहारगशरीरनु किं बंधए अबंधए। आहारकशरीरनो स्यूं बन्धक अथवा अबन्धक इतिप्रश्न उ त्तर। गोयमा णोबंधए अबंधए। हेगौतम एहनो पणि बंधकनही अबन्धक हुवे। तेयाशरीरनु किं बंधए अबंधए। तैजसशरीरनो स्यूं बन्धक अथवा अबन्धक इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। बंधए णो अबंधए। हेगौतम एह सदाकालपरिणामाटे बन्धकहुवे पणि नही अबन्धक। जइबंधए किंदेसबंधए सव्व बंधए। जो बन्धकहुवे तो स्यूं देशबन्धक हुवे अथवा सर्वबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा देसबंधए णोसव्वबंधए। हेगौतम देशबन्धक हुवे पणि स

सवबन्धमु नारस्येव तस्येति एवं कार्मणशरीरस्यापि वाच्यमिति एष औदारिकसम्बंध माश्रित्य शेषाणां बन्धचिन्तायां नमरदसक उक्तो

यधए कि देसर्यधए सव्वयधए ? गोयमा ! देसयधए णोसव्वयधए। कम्मासरीरस्स कि यधए ख्ययधए जहेव तयगस्स जाव देसयंधए णोसव्वयधए। जस्सण नत ! ओरालियसरीरस्स देसयधे सेण भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं यधए अयंधए ? गोयमा ! णोबधए अवधए एव जहेव सव्वयधेणं भणियं तहेव देसयधेणावि भाणि यव्व जाव कम्मगस्स । जस्सण भंत ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वयधे सेण भंते ! ओरालियसरीरस्स किं यधए

तैजसस्य याव देशबन्धको नोसर्वबन्धकः । यस्य भदन्त ! औदारिकशरीरस्य देशबन्धक स्स भदन्त ! वैक्रियशरीरस्य कि बन्धको अबन्धक ? गौतम ! नोबन्धको अबन्धक एवं यथैव सर्वबन्धन प्रथित स्तथैव देशबन्धकेनापि भणितव्यो याव स्कार्मणशरीरस्य । यस्य भ० ! वैक्रियशरीरस्य सर्वबंध स्स भदन्त ! औदारिकशरीरस्य कि बन्धको अबन्धक ? गौतम ! नोबन्धको अबन्धक । आहारकशरीरस्यैवमेव । तैज

सर्वबन्धक्षो दशम सर्वबन्धकता भमायको । कर्मासरीरस्य कि बंधए अबंधए । कार्मणशरीरस्य सं बन्धकुवे भवमा अबन्धकोभवे इतिप्रश्न उत्तर । जहे व तयगस्स । जिम तैजसशरीरस्य कह्यो तिम कहवा । जाव देसबंधए वा सव्वबंधए । यावत् देशबन्धक हुवे पवि सर्वबन्धक न हुवे एहवो पवि तेहना नभारयवो । जस्सणंभंते ओरालियसरीरस्स देसबंधे । जेहने हेभगवन् औदारिकशरीरको देशबन्धकहुवे । सेणभंते वेउव्वियसरीरस्स कि बंधए अबंधए । ते हभगवन् वैक्रियशरीरस्य सं बन्धकहुवे अबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो बंधए अबंधए । हेगौतम ! नहोबन्धक अबन्धक हुवे । एव जहेवस व्वबंधेण भणिय । इम जिमहीज सर्वबन्धसघाते कह्यो । तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं । तिमहीज देशबन्धसघाते पणि कहवा । जावकम्मगस्स । यावत् कार्मणशरीरना तां लगे कहवा, जिवे वैक्रिय सर्व बन्धन्नायदोमे शेषशरीरनाबन्ध चिन्तवेछे । जस्सणंभंते वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे । जेहने हेभगवन् ! वैक्रियशरीर ना सर्वबन्ध हुवे । सेणभंते ओरालियसरीरस्स किंबंधए अबंधए । तेह हेभगवन् ! औदारिकशरीरना सं बन्धकहुवे अथवा अबन्धकहुवे इ

पोग्गलिअस्सैव द्रव्यबन्धमाश्रित्याल्पमाह ॥ जस्सणमित्यादि ॥ अथ वैक्रियस्य सर्वबन्धमाश्रित्य शरीरान्तराणां बन्धविचारार्थं इदमाह जस्सन ॥ तेय

अबंधए ? गोयमा ! णोबंधए अबंधए । आहारगसरीरस्स एवचेव तेयगस्स कम्मगस्सय जहेव ओरालिएण सम भणिय तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधे णोसव्वबंधे । जस्सण भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे सेण भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गो० ! णोबंधए अबंधए एवं जहेव सव्वबंधेण भणियं तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स । जस्सण भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे सेण भंते ! ओरालियसरीरस्स

मशरीरस्य कार्मणशरीरस्य यथैवौदारिकशरीरेण समं भणित तथैव भणितव्यो (आलापक इतिशेषः) याव दृशबन्धो नोसर्वबन्धः । यस्य भ० । वैक्रियशरीरस्य देशबन्ध तस्य भ० । औदारिकशरीरस्य किं बन्धको अबन्धको ? गौतम । नोबन्धको अबन्धक एव यथैव सर्वबं धन समं भणित तथैव देशबन्धनापि भणितव्यो याव त्कार्मणशरीरस्य । यस्य भ० । आहारकशरीरस्य सर्वबंध स्स भवन्त । औदारिकशरीरस्य

तिप्रश्न उत्तर । मायमा वा बधए अबधए । हेगौतम । मनोपन्तव अवन्धकछवे । आहारगसरीरस्य एवमेव । आहारकशरीरना पणि इमज कहवो । तयमम कम्मगस्स कहर पाराक्षिपण समं भणिव तवेच भाणियव्वं । तेजस कार्मणनो जिमहीज औदारिकशरीर बन्धकने तेजसकार्मणनो देशबन्धक प णों कह्या तिमज वैक्रियशरीर सर्वबन्धकने पणि तैजसकार्मणनो कहवो । याव दृशबंधे वा सव्वबंधे । यावत् देशबन्धकछुवे पणि नही सर्वबन्धक इम कहवा इतिभाव । जस्सण भंते वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे । जेहने हेभगवन् वैक्रियशरीरनो देशबन्धछवे । सेणभंते ओरालियसरीरस्स किंबंधए अबंधए । ते हेभगवन् । औदारिकशरीरना स्युं बन्धकछुवे अथवा अबन्धकछुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोबंधए अबंधए । हेगौतम । नही बन्धक पतावता अबन्ध क छवे । एवंजहेव सव्वबंधेणं भणियं । इम जिमहीज सर्वबन्धसंघाते कह्यु । तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं । तिमज देशबन्धसाते पणि कहवा । जावकम्म गस्स । यावत् कार्मणनो । जस्सणंभंते आहारगसरीरस्स सव्वबंधे । जेहने हेभगवन् । आहारकशरीरनो सर्वबन्धछुवे । सेणभंते ओरालियसरीरस्स किं बंध

गस्स कम्मगस्स य जहवेत्यादि ॥ यथौ दारिकशरीरसर्वबन्धकस्य तैजसकार्मणयो र्देशबन्धकस्व मुक्त मेव वैक्रियशरीरसर्वबन्धकस्यापि तथा देशबन्धकस्य वाच्य मितिभावः। वैक्रियदेशबन्धपदवत्क आहारकस्य सर्वबन्धपदवत्को देशबन्धपदवत्कश्च सुगम एव तैजससर्वबन्धपदवत्केतु ॥ बंध

किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! णोबंधए अबंधए एव वेउव्वियस्सवि तेयगकम्माण जहेव ओरालिएण सम जाणिय तहेव भाणियव्व । जस्सण भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे सेण भंते ! ओरालियसरीरस्स एव जहा आहारगसरीरस्स सव्वबंधेण भणिय तहा देसबंधेणवि भाणियव्व जाव कम्मगस्स । जस्सण भंते ! तेयास

किं बंधको अबंधको ? गौतम ! नोबन्धको अबन्धक एव वैक्रियस्यापि तैजसकार्मणयो यथैवौ दारिकेण समं भणित तथैव भणितव्यो । यस्य भदन्त ! आहारकशरीरस्य देशबन्धक स्स भदन्त ! औदारिकशरीरस्य यथा आहारकशरीरस्य सर्वबन्धन समं भणित तथैव देशबन्धकेनापि भणितव्यो याव त्कार्मणशरीरस्य । यस्य भ० । तैजसशरीरस्य देशबन्ध स्स भदन्त ! औदारिकशरीरस्य किं बन्धको अबन्धकः ? गौतम ! बंध

ए अबंधए । तेह हेभगवन् ! औदारिकशरीरना सर्व बन्धक थका अबन्धक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो बंधए अबंधए । हेगौतम ! नथी बन्धक प ताथता अबन्धक । एवंवेउव्वियस्सवि । इम वैक्रियना पणि । तेयगकम्माण जहेव ओरालिएणं समं भणिय तहेव भाणियव्व । तैजसकार्मणने जिमऔद औदारिकशरीरसंघाते कह्या तिमहीज इहां पणि कहवा । जस्सणभंते आहारगसरीरस्स देसबंधे सेणभंते ओरालियसरीरस्स । जेहमें हेभगवन् ! आ हारकशरीरना देशबन्ध हुवे तेह हेभगवन् औदारिकशरीरना बन्धक थका अबन्धक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एवं जहा आहारगसरीरस्सस सव्वबंधेणं भणियं । हेगौतम इम जिम आहारकशरीरना सर्वबन्धसंघाते कह्युं । तहा देसबंधेणवि भाणियव्वं । तिम देशबन्धसंघाते पणि कहवो । जाव कम्मगस्स । यावत् कार्मणनो । जस्सणभंते तेयासरीरस्स देसबंधे सेणभंते ओरालियसरीरस्स किंबंधए अबंधए । जेहने हेभगवन् तैजसशरीरनो देशबन्धने तेह हेभगवन् औदारिकशरीरना सर्व बन्धक थका अबन्धक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बंधएवा अबंधएवा । हेगौतम तैजसशरीर देशबन्धक औ

पञा मर्वबन्धवति ॥ तेश्मदेशबन्धक औदारिकशरीरस्य बन्धकोवा स्या दबन्धकोवा, तत्र विग्रहे वर्तमानो ऽबन्धको ऽविग्रहस्थः पुन र्बन्ध कः मयशोत्पत्तिक्षेत्राप्तिप्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयादौतु देशबन्धक इति एव कार्मणशरीरदशबन्धदण्डकेपि वाच्यमिति अथौदारिकादि

रीरस्स देसबंधे सेणं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधएवा अबंधएवा । जइबंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधएवा सव्वबंधएवा । वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए एवचेव एव आहा रगस्सवि । कम्मगसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधए णोअबंधए । जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधए णोसव्वबंधए । जस्सणं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे सेणं भंते ! ओरालि

कोवा ऽबंधकोवा यदि बंधक किं देशबंधकः सर्वबंधकः ? गौतम ! देशबंधकोवा सर्वबंधकोवा । वैक्रियशरीरस्य किं बंधक एवमेव मा हारकस्यापि । कार्मणशरीरस्य किं बंधको ऽबंधक ? गौ० ! बंधको नोबंधकः । यदि बंधकः किं देशबंधकः सर्वबंधकः ? गौतम ! देशबंधको

दारिकशरीरना बन्धकहुवे अथवा अबन्धक हुवे विग्रहगतिविषे वर्त्तमान ते अबन्धक अने अविग्रहे रह्या थको बन्धक तेभोज उत्पत्तिक्षेत्र प्राप्त प्रथ मसमये सर्वबन्धक द्वितीयादिसमयनेविषे देशबन्धक । जइबंधए किं देसबंधए सव्वबंधए । जो बन्धक हो प्र० देशबन्धक अथवा सर्वबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधएवा सव्वबंधएवा । हेगौतम देशबन्धकहुवे अथवा सर्वबन्धक हुवे ते उत्पत्तिक्षेत्र प्राप्त प्रथम इत्यादि भावना पूर्वलिखी ते इहां कहवो । वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए एवंचेव । वैक्रियशरीरना प्र० बन्धकहुवे अथवा अबन्धक हुवे ए पणि इमज कहवो । एवआहारगस्सवि । इम आ हारकशरीरना पणि कहवा । कम्मगसरीरस्स किंबंधए अबंधए । कार्मणशरीरना प्र० बन्धकहुवे अथवा अबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बंधए णो अबंधए । हेगौतम बन्धकहुवे पणि अबन्धक न हुवे । जइबंधए किंदेसबंधए सव्वबंधए । जो बन्धकहुवे तो प्र० देशबन्धकहुवे अथवा सर्वबन्धकहुवे इ तिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधए णो सव्वबंधए । हेगौतम देशबन्धक हुवे पणि नथी सर्वबन्धक । जस्सणंभंते कम्मासरीरस्स देसबंधे । जेहने हे भगवान

शरीरदयपन्धकाद्दीमा मल्पत्वादिनिरूपणापाह ॥ एयनीत्यादि ॥ तत्र सवस्तोका आहारकशरीरस्य सर्वबन्धका यस्मा त्ते चतुर्दशपूर्वधरा सया

यसरीरस्स जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्सवि भाणियव्वा जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए णोमबंधए । एएसिणं भंते ! सव्वजीवाणं ओरालियवेउव्वियआहारगतेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सव्व बंधगाणं अबंधगाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स सव्व

मेव सवर्यपकः । यस्य भदन्त । कार्मणशरीरस्य दशबंध स्त भदन्त । औदारिकशरीरस्य यथा तैजसस्य वक्तव्यता भणिता तथा कार्मणस्यापि भणितव्या याव तैजसशरीरस्य याव दशबन्धको नोसर्वबन्धकः । एतपा भ० । सर्वजीवाना औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणशरीरकाणा दश बन्धकाना सवर्यपकाना मयधकानाश्च कतर कतरभ्यो याव विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा आहारकशरीरस्य सर्वबन्धका १ । स

भारे, हनमबम् कामबमरारमा देसबध हुवे । तेबमतेयारामियसरीरस । तेह हेभमयम् भोदारिकयरोरना बधक किया घबधक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहा तयमस्य वत्तव्यताभणिया तहा कममस्यवि भाणियव्वा । हेगोतम जिम तेजसयरोरनी वक्तव्यता कही तिम कामणयरीरनी पणि वक्त व्यता कहवी । जाव तेयासरीरस जाव देसबंधए नोसव्वबंधए । यावत् तेजसयरीरना यावत् देसबंधक हुवे नही सर्वबंधक । एएसिणभंते सव्वजीवाण ओरालिय वेउव्विय आहारय तेयाकम्मासरीराण देसबंधगाण सव्वबंधगाणं अबंधगाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा । एहने हेभगवन् सर्वजीवने औ दारिक वैक्रिय आहारक तैजसकामणयरीरने देसबंधकने सर्वबंधकने अबंधकने मांहोमांहि कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे बरोबरहुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा । हेगोतम सर्वथोडोजीव आहारकयरोरना सर्वबंधक जे कारणथो ते चउदे पूर्वधर तथाविध प्रयोजन अपने अवसरे तिवारे पणि सर्वबंध काल समय थोड़ा छप । तस्सचेव देसबंधगा संखेज्जगुणा २ । तेहीज आहारकयरीरना देसबंधक संख्या तगुणा देसबंधना काल घणा ते माटे २ तेहथी । वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३ । वैक्रियशरीरना सर्वबंधक असंख्यातगुणा तेहथी अस

विषमयोश्मयत्तएव प्रवन्ति सर्वबन्धकास्तु समयमेवेति, तस्यैव देशबन्धका सङ्ख्येयगुणा देशबन्धकालस्य बहुत्वात् वैक्रियशरीरस्य सर्वबन्धका असङ्ख्येयगुणा यथा तेभ्यो ऽसङ्ख्यातगुणत्वात् तस्यैव देशबन्धका असङ्ख्येयगुणाः सर्वबन्धाद्धापेक्षया देशबन्धाद्धाया असङ्ख्यातगुणत्वात्, अथवा सर्वबन्धकाः प्रतिपद्यमानका देशबन्धकास्तु पूर्वप्रतिपन्ना प्रतिपद्यमानकेभ्यश्च पूर्वप्रतिपन्नानां बहुत्वात् वैक्रियसर्वबन्धकेभ्यो देशबन्धका असङ्ख्येयगुणा तैजसकार्मणयो रबन्धका अनन्तगुणा यस्मात् सिद्धा स्तेच वैक्रियदेशबन्धकेभ्यो ऽनन्तगुणाएव वनस्पतिवर्जसर्वजीवेभ्यः सिद्धानामनन्तगुणत्वादिति औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका अनन्तगुणा स्तेच वनस्पतिप्रभृतीन् प्रतीत्य प्रत्येतव्या तस्यैवा ऽबन्धका विशेषाधिका एतेहि

धगा, तस्सचेव देसबंधगा सखेज्जगुणा २, वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३, तस्सचेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ४, तेयाकम्मगाण दोण्हवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५, ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ६, तस्सचेव अबंधगा विसेसाहिया ७, तस्सचेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ८, तेयाकम्म

स्यैव देशबन्धकाः सङ्ख्येयगुणाः २। वैक्रियशरीरस्य सर्वबन्धका असङ्ख्येयगुणाः ३। तस्यैव देशबन्धका असङ्ख्येयगुणाः ४। तैजसकार्मणशरीरयो र्द्वयो रपि तुल्या अबन्धका अनन्तगुणाः ५। औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका अनन्तगुणाः ६। तस्यैव अबन्धका विशेषाधिका ७। तस्य

ख्यातगुणामाटे ३ तेहवो। तस्सचेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ४। तेहीज वैक्रियशरीरना देशबंधक असंख्यातगुणा सर्वबंधकालथी अपेक्षायें देशबंधकाल असंख्यातगुणावे तमाटे अथवा सर्वबंध प्रतिपद्यमानक अने देशबंधपूर्वप्रतिपद्यमानकथी पूर्व प्रतिपन्ने बहुलपणो ४ तेहवो। तेयाकम्मगाणं दोण्हवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५। तैजसकार्मणना अबंधक सीझोमांहि तेह मरोसा अने वैक्रियना देशबंधकथी अनंतगुणा के कारणथी सिद्ध ते वैक्रियदेशबंधकथी अनंतगुणाहीज वनस्पती वर्जी सर्वजीवथको सिद्धने अनंतगुणामाटे। ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ६। तेहवको औदारिकशरीरना सर्वबंध अनंतगुणा तेह वनस्पती मते पामयोने जाणवा ६ तेहवो। तस्सचेव अबंधगाविसेसाहिया ७। ते औदारिक सर्वबंधकथी

विग्रहगतिकाः सिद्धादयश्च भवंति तत्रच सिद्धादीनां मत्यतास्पस्येमे ह्या विवक्षा विग्रहगतिकाश्च अस्यमावन्यायेन सवबन्धकेभ्यो सङ्ख्येयगुणा इति ते प्य शरयग्धका विशेषाधिकाइति तभ्योपत्री दारिकस्य देशबन्धका असङ्ख्यातगुणा विग्रहादापन्नया देशबन्धाद्धाया असङ्ख्यातगुणत्वा तैजसका मनया देशबन्धका विशेषाधिका यस्मा स्मर्वेपि ससारिण तैजसकार्मणयो देशबन्धका भवन्ति तत्रस य विग्रहगतिका औदारिकसवबन्धका ते क्रियान्तिबन्धकाश्च ते औदारिकदेशबन्धकेभ्यो ऽतिरिच्यमानइति त विशेषाधिका इति वैक्रियशरीरस्य बन्धका विशेषाधिका यस्मा वैक्रियस्य बन्धकाः प्रायो देवनारकाएव शेषास्तु तदबन्धकाः सिद्धाय तत्र सिद्धा तैजसादिदेशबन्धकेभ्यो ऽतिरिच्यन्त इति ते विशेषाधिका उक्ता आया एकशरीरेभ्या ऽबन्धका विशेषाधिका, यस्मा मनुष्याणा मवा हारकशरीरं वैक्रियत्तु तदन्ययामपि ततो वैक्रियबन्धकेभ्य आहारकबन्धकाना स्तो कत्वेन वैक्रियाबन्धकेभ्य आहारकाबन्धका विशेषाधिका इति, इए चेय स्थापना • इहा स्पष्टुस्ताधिकार वृद्धा गाथाभिः रेव प्रपञ्चितवन्तः–ठरा

गाणं देसबंधगा विसेसाहिया ९, वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया १०, आहारगसरीरस्स अब

धंप देशबंधका असङ्ख्येयगुणाः ८। तैजसकार्मणया देशबन्धका विशेषाधिकाः ९। वैक्रियशरीरस्या बन्धका विशेषाधिकाः १०। आहारक

अहम त विसेसाहिय एह विग्गहगति भविपस तथा सिद्धाविय दुवे तिही सिद्धाटिया पल्लत बन्धयकरो इहो विवखा न कोयी भने विग्गहगतिक बज्झमाण न्यायकरो भवपकको बहतरहे तेमाट सबबधको तेहथी अबंधक विशेषाधिक ७। ततस्पत्र देसबंधगा असङ्ख्यगुणा ८। तेहथी औदारिक ना भ्रमणक असंख्यातगुणा विग्गहगतिना कालथी देशबंधनाकाल असंख्यातगणोछे तेह भणी ८ तेह औदारिक देशबंधकथी। तैयाकम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया। तैजसकार्मणना देशबंधक विशेष थिक जेहकारणथकी समस्ताये संसारी तैजसकार्मणना देशबंधकछे तिहां जे विग्गहगतिक औदारि क सर्वबंधक तथा वैक्रियादिकबंधक ते औदारिक देशबंधकथकी अधिकाछे तेमाटे विशेषाधिक ८ तेहथी। वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ९। वैक्रियशरीरना अबंधक विशेषाधिक जेकारणथकी वैक्रियना बंधक प्राये देव नारकादिक शेष अपेक्षा तेहना अबंधक तथा सिद्धपण तिहां जे सिद्ध

सत्वबंधका ओवाबहुबयाविसेसहिया ततोपदेसबंधा असंखगुणियाकहनेया ॥ १ ॥ इन्मी दारिकसवबंधादीना मल्पत्वादिनाशनार्थं सवबंधादिस्व रूप ताव मुच्यते–पढमम्मिसव्वबंधो समयेसेसेसुदेसबंधो य । सिद्धाइयअबंधो पिम्मइगइयायचियाय ॥ २ ॥ इह ऋजुगत्याविग्रहगत्या चोत्पद्य मानानां जीवाना मुत्पत्तिक्षेत्रमासिप्रथमसमये सवबंधो भवति द्वितीयादिषु देशबंधः सिद्धादीना मित्यबादिशब्दा द्वैक्रियादिबंधकानाम्च जीवाना मौदारिकस्याबंध इति इह सिद्धादीना मबंधकत्वे प्यत्यन्तास्यत्वेना विवक्षा द्वैग्रहिकामव मतीत्य सर्वबंधकम्पो ऽबंधका विशेषाधिका यस्मा दत्येतदेवाह–इगदुगविग्गहियचिम पढुसमबियाअबंधगाअहिया । सिद्धाअबंतमाण भिसव्वबंधाउविसबति ॥ ३ ॥ आधारचाद्यपि सवबंधजाया रसवबंधका सिद्धेभ्यो ऽनन्तगुणा यतएव ततः सिद्धा सेषा मनन्तभागे वर्तते यदिच सिद्धायपि तेषा मनन्तभागे वर्तते तदा सुतरां वैक्रियबंध कादयः प्रतीयन्तएव तत सा स्त्विहाम एव सिद्धपदमबे हार्थीत मिति ३ । अथ सर्वबंधकानां मबंधकानांच समताऽभिधानपूर्वक मबंधकाना वि

• औदारिकस्य	वैक्रियस्य	आहारकस्य	तैजसस्य	कार्मणस्य
सवबंधका अनन्तगुणाः ६	सवबंधका असंख्यगुणा ३	सवबंधकाः सवस्तोकाः १	नसन्तिसर्वबंधकाः	नसन्तिसर्वबंधकाः
देशबंधका असंख्यगुणा ८	देशबन्धका असंख्येयगुणाः ४	देशबंधका संख्यगुणाः २	देशबंधका विशेषाधिका ८	देशबंधका विशेषाधिकाः ८
अबन्धका विशेषाधिकाः ७	अबन्धका विशेषाधिका १०	अबंधका विशेषाधिकाः ११	अबंधका अनन्तगुणाः ५	अबंधका अनन्तगुणाः ५

ते तैजसादि देशबंधकको अधिक अधिक तिणमाटे तेहथो १ । आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया । आहारकशरीरना अबन्धक विशेषाधि क तेमाटे आहारकशरीर मनबंधक हवे अने वैक्रिय तो तेहथी अनेराने अधिक तिवारे वैक्रियबंधकको आहारकबंधकने स्थानकेथकी वैक्रिय बंधकको आहारक बंधक विशेषाधिक थया । बंधते १ ति । तचति वेमबंध् तुलेजम् ते बंधको अबंधकानथी । आहारकस्य अबंधका अवेसा

सपापिकत्व मुपदसयितुमाह—तुभायतेगवका दुइस्संकागइनवेतिविहा । पढमाइसमयमपा सह्वीपायमहतु ॥ ४ ॥ तइयाइतइमनागो लसुहवी वाहसयुवमपाय । इइतिविहमवभा रासीतिमवमयमयहा ॥ ५ ॥ रासिच्यमाव्हते तुमावंचायसहवंपाय । सबावमावहपुप धमयपामुवमइऽन्न हिया ॥ ६ ॥ भववायतायां गती भवयस्यकायवा समनये नम त्येव मेक सेपा राशिः एकवक्रया य उत्पद्यन्त तेषा ये प्रथमे समये ते ऽवन्यका द्वितीयतु मववंपका इत्येव तेषा द्वितीयो राशिः सचैकवक्राभिधानद्वितीयगत्यो त्पद्यमानाना मद्भूतो भवतीति द्विवक्रयामत्या ये पुन रुत्पद्यन्ते ते भाद्य समयद्वय मवन्धका स्तृतीयेत सवन्धका प्रथम सवमन्धकाना तृतीयो राशिः सच द्विवक्राभिधानतृतीयगत्यो त्पद्यमानानां त्रिप्राय नूतो भवति तृतीयसमयमाश्रित्या तस्य एवच भय सबन्धकाना राशय भयएवका बन्धकानां समयत्रदम राशिभेदा दिति एवम्च ते राशि समावत स्तुल्या यद्यपि भवन्ति तथापि सङ्ख्यमाश्रो भिका मयन्यका भवन्ति तवेव—अपगसमयाते एमनिगोयमिकदिसिसेंति । दुसमयाति

पयरिमा तिसमइयासेसलोगाउं ॥ १ ॥ ये एकसामयिका ऋजुगत्योत्पद्यमानका इत्यर्थ ते एकस्मि न्निगोदे साधारणशरीरे लोकमध्यस्थिते यड्भ्यो दिग्भ्यो ऽमुमेस्या यागच्छन्ति ये पुन द्विसमयिका एकवक्रगत्यो त्पद्यमाना इत्यर्थः त भिमतरिका प्रतरत्रया दागच्छन्ति विदिशो वक्रका ग ममात् प्रतरत्र वत्यमाणस्वरूपः ये पुन त्रिसमयिका। समयत्रयेण वक्रद्वयेन चोत्पद्यमानका स शपलोकात् प्रतरत्रयातिरिक्तलोका दागच्छन्ती ति ॥ ७ ॥ प्रतरमरूपयायाह—तिरियायपचवडहिसि पयरमसख्यपएसयाहल्ल । उड्ढपुहावदहा हिबुतरायमायदोपयरा ॥ ८ ॥ लोकमध्यमतैकनिगो द मधिकृत्य तिर्यगायत यत्सपु विशु प्रतर प्रकल्प्यते असङ्ख्येयप्रदेशबाहल्यो विवक्षितनिगोदोत्पादकालोचितावगाहनाबाहल्य इत्यर्थ सामान्य याइल्याबेध ॥ तम्रति ॥ ऊर्ध्वाधोलोका न्तगतौ पूर्वापरायतो दक्षिणोत्तरायतश्चेति द्वौप्रतराविति अथापिकतमल्पबहुत्व मुच्यते—अतिपकरिया वक्कद्दिस एवियोभवतऽसखगुणा । सेसाविसयसगुणा सेताऽसखेज्जगुणियत्ता ॥ ९ ॥ य जीवा त्रिप्रतरिका एकवक्रया गत्यो त्पद्यन्त से य

न्द्रियभ्य प्रागत्या पञ्चन्यो द्विन्य आगतभ्यः सकाशा द्रव त्यसत्यगुणा ज्ञेया यपि ये त्रिसमयिकाः ज्ञेपलोका दागता से ऽप्यसख्येयगुणा भ
वंति कुतः यथामज्ञातगुणितत्या ग्रतः पद्रिकवेत्रा चिमतर् मसङ्ख्यगुण ततापि अपलोक इति ततः किमित्याह—एवविससमाहिया समयपास
मुपंचदिंतो । तिममद्यविगहपुव पहुवसुत्तइमहोइ ॥ १० ॥ वक्रद्वय माश्रित्य दसूत्रद्वयमित्यथ] पडसमयविग्गहेपुस संखेज्जुणाभयगाहोंति।
मधुमिंनिदरिसण दवगारासीहियाध्यामि ॥ ११ ॥ पडमाहारसहस्स दुसमयगादोविसखजमक्कक । तिसमइयापुवतिविपि रासीकोसीमयक्कका ॥
१२ ॥ प्रथमभत्रुगत्युत्पन्नमववप्रकराशिः सहस्रपरिकल्पित वैवस्यात्पत्वात् द्विसमयोत्पन्नाना द्वौराशी एकोऽन्यपकाना मन्य सवचपकाना
तौच प्रत्येक सतमानौ ततत्रस्य बहुतरत्वात्, ये पुन स्त्रिभिः समयै रुत्पन्नात तेषां त्रयो राशय तत्रथा द्वयोः समययो रवंचकरावी, तृतीयस्तु
मवर्यपकराशि रेव त्रयोपि प्रत्येक कोटामाना तत्प्रस्य वहुतमत्वा दिति तदेव राशित्रयेपि सवचकाः सहस्रं सव कोटीचैवं सवलोका

चवंचकाम मतं कोणीद्वयं चत्पत्र विसेपाधिका लहति एणसिज्ञहसमव मत्योवचयंकरज्जरासीव । एतोअसखगुणिया वाच्चणइदसयंपासे ॥ १३ ॥
पयोथमगनाणी पहइअत्तुपोववायम्मि । एगमिमोम्मिवं मयससेमुयिसएय ॥ १४ ॥ मतामुहुतमथ ठिइमिमोयावचंयियिविहिता । पञ्चहुतिनिगोया
तग्हार्पतोमुहुतेच ॥ १५ ॥ मननष गाथाद्वये मोङ्कतमाजमनात् विग्रहसमयसप्रयो तामुंहूतान्ते परिवत्तमाजयमाव निगोदस्थितिसमयमान मुत्तं
ततप तेसिठिइममपाव विमइममपाइयतिन्हभागे । एवतिजागसंते विम्माहियासेसजीवाव ॥ १६ ॥ सन्नवियपविम्महिया वसायअमससम्भागमि।
तथा मगगुणादे सवंपयावद्धंपमहितो ॥ १७ ॥ वेउव्वियमाहारग तेयाकम्माणपडियसिद्धाइ । इइविविसेसाकोव त्यतत्यततंमकोहामि ॥ १८ ॥ वे
उव्वियमवपा योयाजपञ्जमममयदवाइ । तरमवरमवपा असखगुणियाकइकवा ॥ १९ ॥ उच्यते—तेसिविपजेसमा तेसन्नेसव्वंपयमोतु । कोतिमव
पावंना तहुआमेयत्रीवात्रे ॥ २० ॥ चपमर्य —तपामेव वैक्रियचचकानां सवचपका मुक्ता य ज्ञेया स्ते सर्वे वैक्रियस्य देशबन्धका भवति चवच स

बन्धकाम् मुक्ते सर्वेण बन्धमित्यस्य निषेधनम् मुक्त अक्षेपा इत्यमेतत् वक्ष्यति। अबन्धकास्तु तस्या ऽनन्तगुणाः सन्ति तेभ्य के ये तद्वर्ग्या येकेषु सन्देशबन्धकाः अपजीवा से औदारिकादित्रयका देवादयश्च वैक्रियिका इति ॥ २० ॥ आहारसन्नयका जीवाद्योतिस्मिपबन्धादसका सख्येयगुणा वर्ण्याः सर्वजीवा बन्धका इत्याहारकाबन्धकस्वरूप मुक्त तथ पूर्वेभ्या ऽनन्तगुणा भवन्ति शेषायबन्धका तद्व्यासनवत ऽनन्तगुणा। एवकर्मगज्ञेया दश तद्युक्तसहस्रस्य ॥ २१ ॥ तद्व्यासद्वयिया बन्धकातद्वलितगुणा। जीवाबन्धकाते बन्धसमसारमुक्ता ॥ २२ ॥ तद्वर्ग्या आहारकबन्ध विनवरिनावतमाऽस्मि ॥ २३ ॥ तथा पुर्नोनात्व सब-जीवा आउयबन्धा सखज्जगुणा अबन्धयाओति। सेयाकम्मायस ब्रबन्धगामत्थिवाइता ॥ २४ ॥ सख्यातगुणा आयुष्कावबन्धकाइति यदुक्त तत्र प्रश्न आह-असखेज्जगुणाइम स्वकिमबन्धगानभवति। कम्हा असखभागो उद्वट्टएगसमयाण ॥ २५ ॥ अत्र मभिप्राय एको ऽसख्यभागो निगोदजीवानां सदोद्वर्तते सब बद्धायुषामव तदन्यथा मुहूर्तनानाभावात् तन्यवय ज्ञेया स ऽबद्धायुष साथ त

बन्धका ऽसङ्ख्यातगुणा एवे त्येत्र मसख्यातगुणा आयुष्काबन्धकाः स्यु रिति अबोच्यते-उव्वट्टएगसमएठ कालोउव्वट्टकाइजीवाय। बन्धकालोपु बया उत्तरसमयोमुहूर्ताठ ॥ २६ ॥ अयमभिप्रायो निगोदजीवभवकालापेक्षया तथा आयुर्बन्धकालः सङ्ख्यातभागवृत्ति रित्यबन्धकाः सख्यातगुणा एव एतदेव भाष्यते-जीवायठिइकाले आउयबन्धद्धाइएत्थ। एवङ्गागबन्ध स्सबन्धयासखजीवाय ॥ २७ ॥ निगोदजीवानां स्थितिकाल अन्तर्मुहूर्तमा नः सब कल्पनया समयसहस्र तत्रायुर्बन्धाद्धाया आयुर्बन्धकालमन्तर्मुहूर्तमानेनैव कल्पनया समयसहस्रलक्षणेन भाजितेयति यल्लब्धं कल्पनया शत रूपमेतावति भागे वर्तन्ते आयुर्बन्धकाः शेषजीवाना तदबन्धकाना मित्यर्थं अत्र किल सद्भावतया शत सख्येयतमो भागो ऽतोबन्धकेभ्यो ऽ बन्धकाः सख्येयगुणा भवन्तीति, एतदेव भाष्यते-असखेज्जइभागो ठिइकालस्साउबन्धकालोय। तम्हासखगुणासे अबन्धयाबन्धयहितो ॥ २८ ॥ सेति आयुषः) सयोगम्पाबहुय आहारगसद्धबन्धमायोवा। तस्सेवदेसबन्धा सखगुणातेयपुग्गला ॥ २९ ॥ ततोवेउव्वियस व्वबन्धगादरिसियासखगुणा। स

ममगारेयाइ उववज्जतगममयर्स ॥ ३० ॥ तस्सेवदेसयथा भवसमुवियाइवतिपुत्तुता । तेययकम्मार्बथा अंतगुवियायतेसिद्वा ॥ ३१ ॥ ततोउभयं तगुभा उरालमियसव्वबंधगाबौति । तस्सेयतस्सबंधा देसवथायपुत्तुता ॥ ३२ ॥ ततोतयणकम्मा बदेसर्वबंधाजवेविसेसहिया । तवेवोरालियद सवबगा वौतिमवगे ॥ ३३ ॥ जतस्समद्वयया भर्वबगाजयनेरइयदेवा । एगहिसाहियात पुवाइकेसव्वससारी ॥ ३४ ॥ वेउव्वियस्सततो भवपगासाहियावि सेमव । तववमेरइया इविरहियाविद्वसजुत्ता ॥ ३५ ॥ माहारगस्सततो भवपगासाहियाविससेव । तेपुवकेसवुवलिया भाहारमसाहियमोसु ॥ ३६ ॥ ममाप्ता यम्पः ॥ भष्टमशतनवमः ॥ ८ ॥ भमन्तरोद्देशके बंधादयो धर्मा उक्ता सात्र मुतशीलसम्पन्नाः पुरुषा विचा रयन्तीति श्रुतादिसम्पन्नपुरुषप्रशंसिपदार्थविचारवार्थो दशमो देशक सस्य चेद मादिसूत्रं ॥ रायगिहेत्यादि ॥ तत्रच ॥ एवखलु सील सेय सुय से य सुयं सील सर्व ॥ इत्येतस्य पूरुसमुदायस्य व्याख्या–एव लोकसिद्धन्यायेन खलु निश्चयेन इहा न्ययूथिकाः केचित् क्रियामात्रं देवा भीष्टार्थसिद्धि

धगा विसेसाहिया । सेव भंते भंतेत्ति ॥ अठमसयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ९ ॥
रायगिहे जाव एवयासी–अण्णउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवेंति–एवखलु सील सेय सुयसेय

शरीरस्या बंधकाविशेषाधिकाः ११ । तदेवं भदन्त । भदन्त । इति ॥ इत्यष्टमशते नवमोद्देशः समाप्तः ॥ ८ ॥ ८ ॥
राजगृहे नगरे याव इव मवादी–अन्ययूथिका भ० । एव माख्यान्ति याव देव प्ररूपयन्ति–एव खलु शीलं श्रेयः श्रुतं श्रेयः श्रुत शील श्रेयः,

ममत्ता ८ । प आठमा मतकनो नवमो उद्देसो पूरो थयो ८ ॥ ८ ॥ पाछिले उद्देशे बंधादि धर्मवा, फिर तेहमते श्रुतशील म म्पन्न पुरुष विचारे तेमाट श्रुतादि सम्पन्न पुरुषप्रशंसि पदार्थ विचारवाते दशमउद्देशक कहेछे–रायगिहेनयरे जाव एवंवयासी । राजगृह नगरने विषे यावत् इम कहे । अन्नउत्थियाणभंते एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवंपरूपोकसेय । अन्ययूथिक हे भगवन् इम कहे यावत् इम लोकप्रसिद्ध न्यायेन रो अनुसिवे इहां अन्ययूथिक कतोर्थी बाह्यक्रियामात्रकी धर्मावितार्थ सिद्धजाणेके ते कहेछे–ज्ञानेकरी कांई प्रयोजन नथी निश्चे पर्चाकरी

क्रियामात्रा देवा मोक्षार्थसिद्धिं निष्पन्ति नच किञ्चिदपि ज्ञानेन प्रयोजनं निर्वेष्टत्वा हृतादिकरणमयुक्ता वाचाशानादिपदाभवत् पठ्यतेच–क्रियैव फलदायकी मतामंत्रसहमतं । यतःस्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो मज्ञानात्सुखितोभवत् ॥ १ ॥ तथा–अज्ञासरोवदज्ञारवाही भारस्यभागीनतुचंदनस्य । एवंतुज्ञानीचरणेनहीनो ज्ञानस्यभागीनतुसगतेः ॥ १ ॥ अत स प्रकृपयन्ति शील श्रयः प्राणातिपातादिविरमणध्यानाध्ययनादिरूपा क्रियेव श्रेयो ऽतिशयेन प्रशस्यं प्राप्य पुरुषार्थसाधकत्वा श्रुयवाः समाश्रयणीयं पुरुषार्थावसेपायिना अन्यत्तु ज्ञानादवे प्रार्थसिद्धिं निष्पन्ति न क्रियातो ज्ञानविकलस्य क्रियायतोपि फलसिद्धदर्शना दृष्टीयतच–विज्ञप्तिः फलदापुंसा नक्रियाफलदामता । मिथ्याज्ञानात्प्रवृत्तस्य फलासंवाद दर्शनात् ॥ १ ॥ तथा–पठमनाणंतओदया एवंचिठ्ठइसव्वसंजए । अन्नाणीकिंकाही किं वानाहीछेयपावगं ॥ १ ॥ अत स प्रकृपयन्ति श्रुत श्रय श्रुत श्रुतज्ञानं तदुच श्रेया ऽतिशयस्य मामयणीय या । पुरुषार्थसिद्धिहेतुत्वात् मतु शीलमिति अन्यत्तु ज्ञानक्रियाभ्यां मन्यान्यनिरपेक्षाभ्यां फल निष्पन्ति ज्ञानं क्रियाविकल मेवोपसर्जनीभूतक्रियंवा फलाद क्रियापि ज्ञानविकला उपसर्जनीभूतज्ञानाया वा फलदमिति नाधो भर्यातच–किंचिद्द

पदार्थन करवाप्रवृत्तिनेविषे श्राचाश्रादि पदावनो परे प्रत —अज्ञासराचनभारवाही भारस्यभागीनतुचंदनस्य एवंज्ञानाचोरचरणेनहीनो ज्ञानस्यभागी नतुसुगतेः ॥ १ ॥ जिम रासभ चन्दनभारनो वहनहार ते भारनो भजनहारथाय पण चन्दनमय न थाय इम जिमे ज्ञानी चारित्रिंयारो होय ज्ञाननो भजनहार थवे पण सगतिनो भजनहारनथी एतलामाटे ते प्रकृपेछ मोक्ष ते श्रय प्राणातिपात विरमणध्यान अध्ययनादि रूपक्रिया तेहीज श्रेय म तिशयेंकरी श्रामवे पदयाथ साधकपणाथकी ते गेवयरणा पदयाथ शिवंयने वांछे तथा कोइएक कहे । सुयसेय । ज्ञानयकोज वांछितार्थ सिद्धथाय प ण क्रियाथकी नथी ज्ञानथकी विकलने क्रियावतने पण फलसिद्ध दर्शनथकी वाश्रतं—पठमनाणंतओदया एवंचिठ्ठइसव्वसंजए अन्नाणीकिंकाही किंवा नाहीछेयपावगं ॥ २ ॥ एतलामाटे ते प्रकृपेछे श्रुतश्रेय, श्रुत ते श्रुतज्ञान तेहीज श्रेयकारी अतिशयश्रय श्राश्रयवा साम्य पदयाथ सिद्धपणाथकी पण न थी शीलवतो क्रिया केटलाएक ज्ञान क्रिया वेश अन्योन्य निरपेक्षकरी फलदायी ज्ञान ते क्रिया विकलहीज उपसर्जनीभूत क्रियाफलयो क्रिया पणि

मर्वधाग क्रियिात्मशतपोमयं । घागमिव्यतिपत्याग्रे तत्पार्थतारमिप्मति ॥ १ ॥ यत एते प्रकुपयन्ति शतं श्रेयः तथा शीलं श्रेयः इयो रपि प्रत्येकं पुरुषस्य पवित्रतानियमत्वादिति अन्यतु व्याचक्ष्ते-शील एव साध न्युरव्यवृत्या तथा श्रुत एवः श्रुतमपि श्रेयो गौणवृत्या तदु पकारित्वा दित्यप प्रत्येकीय मतं । अन्यदीयमतस्तु श्रुत मय साध तथा शीलमपि श्रेयो गौणवृत्यातदुपकारित्वा दित्ययः । अय चाप इह सूत्र काकुपाठा मन्यते एतस्य प्रथमव्याख्यान अन्यपूर्विकमतस्य मिथ्यात्व पूर्वोक्तपक्षद्वयस्यापि फलसिद्धा वर्मगत्वा समुदायपक्षस्यैवच फल सिद्धिकारकत्वा दाह-नाणपयासयसो दृष्टतवोसञमोयगुत्तिकरो ॥ तिण्हंपिसमाजोगे मोक्खोजिणसासणेभणिओ ॥ १ ॥ तपःसंयमौच शीलमेव ॥ १ ॥ तथा संजोगसिद्धीपफलंवयंति नहुएगचक्केणरहोपयाइ ॥ अंधोयपंगूयवणेसमिच्चा ते संपउत्ता नगरंपविट्ठत्ति ॥ १ ॥ द्वितीयव्याख्यानपक्षेपि मिथ्या

सुय सील सेय, से कह मेय भंते ! एवं ? गोयमा ! जणं ते अन्नउत्थिया एवं माइक्खंति जाव जेत एवं

माहंसु मेत उ्दसु ! एवं ? गौतम । य तेऽन्ययूथिका एव माख्यान्ति याव य ते एव माथयु मिथ्या ते एव माचख्यु रव पुन गौतम । एव

प्राम (ि…भूत प्रामकये इतिभाव एवमामाट ते अर्थ—सपमोसमेय । श्रुतयप तथा शीलयत ए वेव मक्षेमपृक्तने पवित्रता नियमपर्या इयो येषा कारित्व इम कहिंति—शीलमेव ते सत्य हतंकरी तथा श्रुतयम श्रुत पवित्रेय गोणहितकारी तेतमे उपकारपणाबको एव मत इणी सूत्र मविषे काकपाठथी माथियें उत्तमे पहिले व्याख्याने अन्यपूर्वक मतने पणि मिथ्यापणा पूर्वोक्तपक्षद्वयने पणि फलसिद्धनेविषे अनंगपणाबको समुदायप क्षने फलसिद्ध कारकपणाबको पाढ्य—णाणपयासमंथा दृष्टतवोसजमोयगुत्तिकरो तिण्हंपिसमाजोगे मोक्खोजिणसासणेभणिओ ॥ १ तप संयम ए बेउ मोक्ष शील तथा—संजोगसिद्धीपफलंवयंति नहुएगचक्केणरहोपयाइ अंधोयपंगूयवणेसमिच्चा तेसंपउत्तानगरंपविट्ठत्ति ॥ १ ॥ बीजे व्याख्यानपक्षे पणि मिथ्यापणा कहावबको फलसिद्धिमार्गनाबको एकेकने प्रधानपणे फलसिद्धिकारी पक्षगतपणाबको इति । सेकहमेयंमतेएव । ते किम ऐमसमन् एव हम इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अवते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति । हेगौतम जेअन्यतो ते अन्यतीर्थी इम कहेछे—आगळेते एवमाख्यु मिथ्यातें एवमाहंसु

र्य संयोगतः फलसिद्धे दृष्टत्वा द्वयैकस्य प्रधानेतरविवक्षया यसङ्गतत्वा दिति अहं पुन गौतम ! एव माख्यामि याव रूपयामी त्यत्र श्रुत युक्तं शील श्रेय इत्य सायान् वाक्यभेदेनयो ऽथ कस्मा एव ? अत्रोच्यते ॥ एवमित्यादि ॥ एव वक्ष्यमाणन्यायेन ॥ पुरिसजायत्ति ॥ पुरुषप्रकाराः ॥ सीलव यसुयवति ॥ कोर्थः ॥ उवरए अविन्नायधम्मेत्ति ॥ उपरतो निवृत्तः स्वबुध्या पापात् अविज्ञातधम्मा भावतो नधिगतश्रुतज्ञानो

माइसु मिच्छा ते एव माइसु अह पुण गोयमा एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवखलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तंजहा—सीलसपन्ने नाम एगे नोसुयसपन्ने १। सुयसपन्ने नाम एगे नोसीलसपन्ने २। एगे सीलसपन्नेवि सुयसपन्नेवि ३। एगे नोसीलसपन्ने नोसुयसपन्ने ४। तत्थण जेसे पढमे पुरिसजाए

माख्यामि याव रूपयामि—एवं खलु मया चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—शीलसम्पन्नो नामैको नैव श्रुतसम्पन्नः १। श्रुतसम्पन्नो नामैको नैव शीलसम्पन्नः २। एकः शीलसम्पन्नोपि श्रुतसम्पन्नोपि ३। एको नैव शीलसम्पन्नो नैव श्रुतसम्पन्नः ४। तत्र य स प्रथम

पच्छुप मामा एवमाइक्खामि जावपरूवेमि एवखलुमए चत्तारिपुरिसजाया प त । य वत् जिके ते इसवाका पूर्वं कहे तेवे इम कहा कवो कहोत म इमकहे यावत् प्ररूपूं गुनयुत गौतमेम एतके मानसहित क्रियावांछितार्थ फलदायकपुत्रे एहवी वाक्य मेदेकरवा जिवे क्रिसेकारणे इम ते व इहे—इवे वच्चमाण स्वारेकरी जिवे मैं चारपुरुषना प्रकार कह्या ते कहेछे—सीलसपन्ने नामएगे नोसुयसपन्ने। तिहां एकपुरुष शीलकहतां क्रिया ते मतितहे पनि नही ज्ञानकरी सहित तथा एकपुरुष। सुयसपन्नेनामएगे नोसीलसपन्ने। श्रुतकहिये ज्ञान तिणे सम्पन्न क्रियासम्पन्न नही तथा। एगे सीलसपन्नेवि सुयसपन्नेवि। एक पुरुष क्रियायेंकरी पन सहितछे पने ज्ञानेकरी पनसहितछे तेवें। एगेनोसीलसपन्ने। तथा एकपुरुष क्रियायेंकरो प वि रहितछे पने। नासुयसपन्ने तत्थणजेसेपढमे पुरिसजाये। ज्ञानेकरी पनि रहितछे तिहां व व्याख्याकारे जे ते प्रथम पुरुषजात पहलप्रकार। सेण पुरिसेसीलव असुतवं। ते पुरुष शीलक्रियावंतछे पनि ज्ञानवंतनथी। उवरए अविनायधम्मे एसणं गोयमा। पापथी मुनि पापथी निवर्त्यो पनि धर्मना

ज्ञानतपस्वी स्वयः गीतार्थानिश्चितपदरतानरतो गीतार्थ इत्यन्ये ॥ देसाराहएत्ति ॥ देशं स्तोकं मत्रा मोक्षमार्गस्या राधयतीत्यर्थः सम्यग्बोध रहितत्वा त्क्रियापरत्वाच्चेति ॥ समाणव गुणप्रति ॥ क्रमः ॥ बहुवर्य दिखायधम्मेत्ति ॥ पापा इनियृत्ता ज्ञातधर्माय अविरतसम्यग्दृष्टि रित्ति भावः ॥ सव्वविराहएत्ति ॥ सर्वं स्तोक मत्रा ज्ञानादित्रयरूपस्य मोक्षमार्गस्य तृतीयभागरूप चारित्रं विराधयतीत्यर्थः प्राप्तस्य तस्या पालना द्भा प्रा ॥ सव्वाराहएत्ति ॥ सर्वं त्रिप्रकारमपि मोक्षमार्ग माराधयती त्यर्थ श्रुतशब्देन ज्ञानदर्शनयोः संगृहीतत्वा दत्र मिथ्यादृष्टि विज्ञातधर्मा

नेण पुरिस मीलव असुयव उवरए अविणायधम्मे एसण गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते १ । तत्थण जसे दोच्चे पुरिसजाए सेण पुरिसे असीलव सुतव अणुवरए विणायधम्मे एसण गोयमा ! मए

पुरुषजात स पुरुष शीलवा नश्रुतवा नुपरतो अविज्ञातधर्मा एष गौतम ! मया पुरुषो देशाराधक प्रज्ञप्त १ । तत्र यत द्वितीय पुरुषजात मपुरुषो अशीलवान् श्रुतवा ननुपरतो विज्ञातधर्मा एष गौ० ! मया पुरुषो देशविराधकः प्रज्ञप्तः २ । तत्र य त तृतीय पुरुषजात सपुरुषः

[illegible] सीलवान सुतवान ज्ञानतपस्वी इत्यत्र गीतार्थनिश्रा विना तपश्चरण निरत एवगौतम इत्यत्र एव गौतम । मएपुरिसे देसाराहए पण्णत्ते । से पुरुष स्तोक मात्र मोक्षमार्ग माराधकत्वा मया आराधित प्रज्ञप्तो यतश्चा क्रिया तत्परत्वो । तत्थणजेसे दोच्चेपुरिसजाएसेणं असीलवसुतवं । तिहा अ [illegible] गीतार्थ तस्मा तत्पर के नाद क्रियावंत नश्रो धर्मे ज्ञानवन्त ते वेदता । अणुवरएविणायधम्मे । पापो निवर्तनत्वो धर्मे एव [illegible] [illegible] पतित मात्रा दृष्टो इत्यर्थ । एसण गायमा पुरिसे देस विराहए । एव हे गौतम । से परुष पाप्त धर्मे ज्ञानादि त्रयरूप मोक्षमार्गो भोक्षा भाग [illegible] चारित्र विराधक प्राप्तस्य पालना मस्रो प्रज्ञा प्रज्ञापको । तत्थणं जेसेतच्चेपुरिस जाए सेण पुरिससीलवसुतव उवरए विणायधम्मे । तिहा [illegible] न बोधा पतत्वात ते परव क्रियावान धर्मे ज्ञानवन्त ज्ञानवान पापो निवर्तनं समन्वित श्रुतवत ज्ञात्वा ।एसण गायमा मएपुरिसेसव्वाराहए प । एव गौतम से परुष मया एवक ज्ञा सव तामप्रकार पवि मोक्षमार्ग माराधे श्रुतमध्दत्वा ज्ञानदर्शन येन संगृहीत प्रज्ञापको मन्ने मिथ्यादृष्टि वि

तथ्यतो नवतानि एतेन समुदितयो शीलश्रुतयोः श्रेयस्त्वमुक्त मिति ॥ सव्वाराहए इत्युक्त ॥ मया राधनामेव भेदत आह ॥ कतिविहाण मि त्यादि ॥ आराहणेति ॥ आराधना निरतिचारतया मुपासना सत्र ज्ञानं पञ्चप्रकारं श्रुतवा तस्या राधना कालाद्युपचारकरण दसन सम्यक्त

पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते २। तत्थण जेसे तच्चे पुरिसजाए सेण पुरिसे सीलवं सुतवं उवरए विण्णायधम्मे एसण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ३ । तत्थण जेसे चउत्थे पुरिसजाए सेण पुरिसे असी लव असुतव अणुवरए अविण्णायधम्मे एसण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते ४ । कइविहाण

शीलवान् श्रुतवा नुपरता विज्ञातधर्मा एष गौ० । मया पुरुषः सर्वाराधकः प्रज्ञप्तः ३ । तत्र य स चतुर्थ पुरुषजात स पुरुषो ऽशीलवा नश्रु तवा ननुपरता ऽविज्ञातधर्मा एष गौतम । मया पुरुषः सर्वविराधकः प्रज्ञप्तः ४ ॥ कतिविधा भ० । आराधना प्रज्ञप्ता ? गौतम । त्रिविधा आराधना प्रज्ञप्ता तद्यथा—ज्ञानाराधना दर्शनाराधना चरित्राराधना । ज्ञानाराधना भ० । कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । त्रिविधा प्रज्ञप्ता

ज्ञातधर्मतत्त्व कह्या इवे एतले समुदितशील श्रुतने विषे येवपणो कह्यो । तत्थणजेसेचउत्थेपुरिस जाव । तिहां च चाक्यालकारे, चोथो पुरुष जात । सेणपु रिसे असीलवं असुतवं अणुवरए अविण्णायधम्मे । तेप वाक्यालकारे, पुरुष क्रियावतनथी ज्ञानवंत पणि नथी पापकर्मथी निवर्त्यो नथी धर्मनो भजाण थयो नथी जाण्यो धर्म जेणे । एसणं गोयमा मए पुरिसे सव्वविराहए पं । एण वं वाक्यालकार हेगौतम ! में पुरुष सर्व विराधक मिथ्या दृष्टी कह्या ज्ञानदर्शन चारित्र तीनेरनो विराधक इसथ, पूर्वे सर्वाराधक इसो कह्या हवे आराधनानेज भेदथी कहेछे । कइविहाणंभंतेआराहणा पं । केतला भेदे हे भगवन् ! आराधना कही इति प्रश्न । गो तिविहा आराहणा पं त णाणाराहणा दंसणाराहणा । हेगौतम ! तीने प्रकारे आराधना कही निरती चारपणे उपासना ते कहेछे—ज्ञान पंचप्रकारे श्रुतज्ञान तेहनी आराधना कालादिक उपचार करण दर्शन सम्यक्त्व तेहनी आराधना निःशंकित पणो आचारपालवा । चरित्ताराहणा । चारित्र सामायिकादिक तेहनी आराधना निरती चारपणे समिति गुप्तिपालवा । णाणाराहणाणंभंतेकइ

नस्या राधना नि शंकितत्वादि तदाचारानुपालनं चारित्रं सामायिकादि तदाराधना निरतिचारता ॥ उक्कोसियत्ति ॥ उत्कर्षा ज्ञानाराधना ज्ञानकृत्यानुष्ठानेषु प्रकृष्टप्रयत्नता ॥ मज्झिमत्ति ॥ तेष्वेव मध्यमप्रयत्नता ॥ जहण्णत्ति ॥ तेष्वेवा ल्पतमप्रयत्नता एवं दर्शनाराधना चारित्राराधना चेति यथा त्वाराधनाभेदानामेव परस्परोपनिबंध मभिधातु माह ॥ जस्सणमित्यादि ॥ अजहण्णुक्कोसायत्ति ॥ जघन्या चासा वुत्कर्षा चोत्कृष्टा

न्नंत ! आराहणा पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तंजहा—नाणाराहणा १ दंसणाराहणा २ चरित्ताराहणा ३ नाणाराहणाणं भंते! कइविहा पण्णत्ता? तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—उक्कोसिया मज्झिमा जहण्णा। दंसणाराहणाणं भंते! कइविहा एवचेव तिविहावि। एवं चरित्ताराहणावि। जस्सणं भंते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया ना

तद्यथा-उत्कर्षा मध्यमा जघन्या। दर्शनाराधना प्र० । कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौतम! एवचैव त्रिविधापि। एवं चरित्राराधनापि। यस्य प्र०। उत्कर्षा ज्ञानाराधना तस्यो त्कर्षा दर्शनाराधना यस्यो त्कर्षा दर्शनाराधना तस्यो त्कर्षा ज्ञानाराधना? गौतम! यस्यो त्कर्षा ज्ञा

विधा थं। ज्ञान आराधना हे भगवन्! केतले प्रकारे कही ए तिप्रश्न। मो तिविहा प० त० उक्कोसिया। हे गौतम तीनप्रकारे कही ते कहे छे—उत्कृष्ट ज्ञ न आराधना ते कहवाय जे ज्ञान ज्ञान आचारनेविषे प्रकृष्ट प्रयत्न मात्र जघन। मज्झिमा जहण्णा। तेहनेविषेज मध्यमप्रयत्न जिम गाढो उद्यमनही तिम घणो ढीलो पणिनहीं जघन्य थोडोज उद्यम ते थयोड्यम। दंसणाराहणापमते एवंबचे तिविहावि। दर्शनाराधना हे भगवन् केतलेभेदेकही ए तिप्रश्न उत्तर गौतम एम जिम ज्ञान आराधना तीनभेदेकही तिम दर्शनाराधना पणि तीनभेदे कही। एवंचरित्ताराहणावि। एम चारित्रआराध ना पणि तीनभेदे कही ज्ञानआराधनाओपरे हिवे ए आराधना भेदनोज माहोमांहे उपनिबंधकहतो कहेछे—जस्सणंभंते उक्कोसियाणाणाराह ना। जेहने हेभगवन् उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे। तस्सउक्कोसिया दंसणाराहणा। तेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे तथा। जस्सउक्कोसियादंसणारा

मपन्यारकपा तत्रिपना दर्शनपन्यारकपा मध्यमेत्ययः उत्कृष्टज्ञानाराधनायतो प्राग्य हि दर्शनाराधने नयतो नपुन सतीया तथा स्वनायस्या स स्याति ॥ प्रथम पुरुषादि ॥ उत्कृष्टज्ञानाराधनायतोऽपि ज्ञान प्रति त्रिप्रकारस्यापि प्रयत्नस्य सम्भवात्सीति त्रिप्रकारापि तदाराधना भजनया भव तीति उत्कृष्टज्ञानचारित्राराधनासंयोगसूत्र तूतर यस्योत्कृष्टा ज्ञानाराधना तस्य चारित्राराधना उत्कृष्टा मध्यमाया स्यात् उत्कृष्टज्ञानाराधना वतादि चारित्रं प्रति माल्पतमप्रयत्ना स्या तस्यस्वभावतया तस्येति, उत्कृष्टचारित्राराधनायत सु ज्ञानप्रति प्रयत्नत्रयमपि भजनया स्यात्, एतदे

णाराहणा ? गोयमा जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसाग्रा अजहन्नुक्कोसाग्रा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसाग्रा जहण्णावा अजहण्णमणुक्कोसाग्रा । जस्सण भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्को

माराधना तस्य दर्शनाराधना त्कपाया ऽप्रयत्नात्कपाया, यस्य पन उत्कृपा दर्शनाराधना तस्य ज्ञानाराधनो त्कपाया जघन्याया ऽप्रयत्ना त्कपाया । यस्य प्र० । मत्कपा ज्ञानाराधना तस्या त्कपा चारित्राराधना यस्यो त्कपा चारित्राराधना तस्या त्कपा ज्ञानाराधना ? यथो

क्ता । अहम उत्कृष्ट दर्शनाराधना हवे । तस्य उक्कोसिया णाणाराहणा । तहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा । जेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे । तस्य उक्कोसिया दंसणाराहणा । तहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे । उक्कोसाया अजहन्नमणु क्कोसाया । उत्कृष्टपणे अथवा अनुत्कृष्ट ए बाना निपजवको पण पश्चात्कृष्टा मध्यमा इत्यर्थं उत्कृष्ट ज्ञानआराधनावन्तने निपे पडिलो ठाय दर्शन आराधनावन्ते पणि बाओ अथवा दर्शनआराधना न हुवे तेहना तथाविध स्वभावथको । जस्सपुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स णाणाराहणा उक्को सा अजहन्ना । जेहने वली उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे तेहने ज्ञानआराधना उत्कृष्ट हुवे अथवा जघन्य हुवे । अजहन्नमणुक्कोसाया । अथवा मध्यम हुवे उत्कृष्ट दर्शनआराधनावन्त ज्ञानबाबा तावत्प्रमादरत अथवा सम्भवे । जस्स णं भंते उक्कोसिया णाणाराहणा । जेहने हे भगवन् उत्कृष्ट ज्ञानआ

का निद्रात्र चार ॥ तत्रोत्कृष्टेतिपन्नाति ॥ तत्रोत्कृष्टज्ञानचारित्राराधनामयोगमूत्रेषु सर ॥ जस्सुक्कोसियाईसणाराहणे स्यादि ॥ यस्योत्कृष्टा दर्श नाराधना तस्य चारित्राराधना त्रिविधापि भजनया स्या दुत्कृष्टदर्शनाराधनावतोहि चारित्रप्रति प्रथमस्य त्रिविधस्या प्यधिकृष्टत्वा दिति उत्कृ

सिया नाणाराहणा ? जहा उक्कोसिया नाणाराहणाय दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराह णाय चरित्ताराहणाय भाणियव्वा । जस्सणं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा

त्कर्षा ज्ञानाराधनाच दर्शनाराधनाच भणिता तथा त्कृष्टा ज्ञानाराधनाच चरित्राराधनाच भणितव्या । यस्य भ० ! उत्कर्षा दर्शनाराधना तस्योत्कर्षा चरित्राराधना यस्या त्कर्षा चरित्राराधना तस्योत्कर्षा दर्शनाराधना ? गौतम ! यस्या त्कर्षा दर्शनाराधना तस्य चरित्राराधनो

राधना हुइ । तस्युक्कोसियाचरित्ताराहणा । तेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हवे । जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा । तथा जेहने उत्कृष्ट चारित्रआरा धना हवे । तस्सुक्कोसियानाणाराहणा । तेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सुक्कोसिया नाणाराहणा दंसणाराहणाय भ णिया । ज्ञे ० तेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हवे तेहने चारित्रआराधना उत्कृष्ट मध्यम अथवा जघन्य पणि उत्कृष्ट ज्ञानआराधनावंतने चारि त्रने पञ्चम प्रयत्न न हवे पणि जघन्यपण न हवे तेहना तथाविध स्वभावथकी । तहाउक्कोसिया नाणाराहणाचरित्ताराहणाय भाणियव्वा । तथा उत्कृष्टचारित्र आराधनावंतने ज्ञाननी प्रथम मार्गे जघन्य मध्यम उत्कृष्ट ए भजनाइ होय । जस्सणंभंते उक्कोसिया दंसणाराहणा । जेहने हे भग वन् उत्कृष्ट दर्शनआराधना हवे । तस्सुक्कोसियाचरित्ताराहणा । तेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हवे । जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा । जेहने उत्कृ ष्ट चारित्रआराधना हवे । तस्सुक्कोसियादंसणाराहणा । तेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा । हे गौतम जेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हवे । तस्सचरित्ताराहणा उक्कोसावा जहन्नावा अजहन्न मणुक्कोसावा । तेहने चारित्रआराधना उत्कृष्ट अ

सायाणु चारित्राराधनाया मुत्कटैव दर्शनाराधना प्रकृष्टचारित्रस्य प्रकृष्टश्रद्धानानुगतत्वादिति यथा राधनाभेदाना परस्परं संबंधनायाह ॥ उक्कोसियमित्यादि ॥ तयग्गहणेणं सिज्झति ॥ उत्कृष्टा ज्ञानाराधना माराध्य तेनैव भवग्रहणेन सिध्यति उत्कृष्टचारित्राराधनाया सद्भाव ॥ कप्पोवएसु वत्ति ॥ कल्पोपगेषु सौधर्मादिदेवलोकोपगेषु देवेषु मध्ये उपपद्यते मध्यमचारित्राराधनासद्भाव ॥ कप्पातीएसु वत्ति ॥ ग्रैवेयकादिदेवेषु उपपद्यते

तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसाया जहण्णाया अजहण्णमणुक्कोसावा, जस्सपुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दसणाराहणा नियम उक्कोसा। उक्कोसियण भंते ! नाणाराहण आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणाहिं सिज्झइ जाव अंतकरेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंतकरेइ, अत्थेगइए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंतकरेइ, अत्थेगइए कप्पोवएसुवा कप्पातीतएसुवा उववज्जइ, उक्कोसियाण

एकस्याः अपरस्या अजघन्योत्कृष्टायाः यस्य पुनरुत्कृष्टा चरित्राराधना तस्य दर्शनाराधना नियमादुत्कृष्टा ॥ उत्कृष्टा भदन्त ! ज्ञानाराधना माराध्य कतिभिः भवग्रहणैः सिध्यति यावत् अन्तं करोति ? गौतम ! अस्त्येकः कश्चित् तेनैव भवग्रहणेन सिध्यति यावत् अन्तं करोति, अस्त्येकः

भारे भवमाये हुवे उत्कृष्ट पथवा जघन्य पथवा मध्यम अनुत्कृष्ट पतले मध्यम जघन्य आराधना होते चारित्रनी त्रिविध प्रकारनी पणि भविक पनाथे तेमाटे। जघन्यअजघन्योत्कृष्टा चरित्राराधना नियमथी उत्कृष्टा। जेहने वली उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे तेहने दर्शन आराधना नियमथी उत्कृष्टीज हुवे पणि जघन्य मध्यम न हुवे प्रकृष्टचारित्र प्रकृष्टज्ञान अनुगतपणा थकी हिवे आराधनाभेदना परस्परयोगने प रूपे छे—उत्कृष्टी भगवंत ज्ञानाराधना आराधीने कतला भवग्रहणे सिज्झइ जाव अंतकरेइ। उत्कृष्टी हेभगवन् ज्ञानआराधनाप्रते आराधीने केतला भवग्रहण करी सीझे यावत् सर्वदुःखनो अंतकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अत्थेगइए तेणेवभवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतकरेइ। हेगौतम कोइ भाएक तिणेहीज भवग्रहणेकरी सीझे यावत् सर्वदुःखनो अंतकरे। अत्थेगइएकप्पोवएसुवा कप्पातीएसुवा उववज्जइ। केतलाएक सौधर्मादिक देवलो

मध्यमारहूचारित्राराधनासङ्गाव इति ॥ तथा जघ्नोसियंचे जते । दसणाराहण मित्यादी एवमेतत्ति करवा तेयेवभवगहणेवर्व सिच्छइ त्यादि द्
यं, मङ्गमिप्यादिष तस्यां स्या चारित्राराधनाया सप्तारकष्टाया मध्यमाया भावस्यादिति ॥ तथा उक्कोसियंचणत । चारित्ताराहण मित्यादि,
एवमेति करवा " तदयनवगदयवत मित्यादि दृश्य „ कवम तव कल्पगतम् कप्पातममनं त्वनिदित मितु तम वाच्य मुक्कष्टचारित्राराधना
वतः सौधर्मादिकमय प्रगमना प्राप्य पुन " कप्पगदम् कप्पातीतएमु उववजर्यति „ विङ्मिममकामाव तस्या गुतरसुरपु गमना वतदव तथापतोत्तु ॥
मवर्गमित्यादि ॥ मध्यमज्ञानाराधनामूष मध्यमस्य ज्ञानाराधनाया चविरतनयमूव निवायमव पुन करकृत्त मवश्य भावी त्यवसेय निवाधाव्य

जते । दसणाराहण श्राराहेत्ता कइहिं जयगहणेहिं एयचेव । उक्कोसियंच भंते । चरित्ताराहण श्राराहेत्ता
एयचेव णवर ग्रत्येगइए कप्पातीतएसु उववज्जइ । मज्झिमियण भंते । नाणाराहण श्राराहेत्ता कइहिं जय

यदि द्वितीयेन जवग्रहणेन सिध्यति याव दन्त करोति कम्स्यक. कदि कल्पोपगयुवा कस्यातीतकेषुवो पपद्यते । उत्कृष्टा ज० । दशनारा
धनय देवनेमांके जघन्य ज्ञानाराधना उत्कृष्ट यदि चारित्राराधना मध्यमने सद्भावे यथवा वमाताम त देवलोकादि देवनेदिने स्वपद्दे मध्यमारकृष्ट
चारित्राराधनाने मङ्गावे । मस्कुषाजिवाधमते दसणाराहण चाराहेत्ता कईहिं भवगहणेहिं सिज्झइ एयचेव । उत्कृष्ट देमगवम् दर्शनाराधनामते
चाराधोनि मतमा भवगहणेंकरी माभे इतिमध्य एवचेवति जिम ज्ञानाराधनायें कह्मा तिम कहवा । उक्कोसियांणभते चरित्ताराहण च राहेत्ता ए
मम । मत्कृष्ट देभगवम् चारित्राराधनापतें चाराधीने केतलभवे सोझे इमयोग एतमे तेवेवभवगहणेंहिं, इत्यादि कहवा, नवरपत्येगइएकप्पातीए
मउववज्जइ । एतमविशेषके कतम किं एवी पदयमएवव्यावमिमा इमा कह्मा ते इहां न कहवा उत्कृष्ट चारित्राराधनायें सौधर्मादि कल्पनेविष
चाराधा न इवे इहां विरतमनयमावें तेहन यनत्तरमृत्ये ममतव । मज्झिमयणमते नाणाराहणचाराहेत्ताकइहि भवगहणेहिंसिज्झइ जाव अंतकरेइ ।
ममय में राखवावकारे, दमवम् ज्ञानाराधनापतें चाराधीने केतमा भवगहणेकरी सोझे यावत् सर्वदुःखना यतकरे इतिमध्य प्रश्न । भावमा चरबेगद

यामुपयात इति ॥ दर्शयति ॥ अधिकृतमनुष्यभवापेक्षया द्वितीयेन मनुष्यभवेन ॥ तच्चं पुण भवग्गहणंति ॥ अधिकृतमनुष्यभवग्रहणापेक्षया तृतीयं मनुष्यभवग्रहणं ॥ मताय चारित्राराधना। सर्वत्रिता ज्ञानाद्याराधना इह विवक्षिता कथं अन्यथा जघन्यज्ञानाराधना माश्रित्य वक्ष्यति ॥ सत

ग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अन्तंकरेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अन्तंकरेइ, तच्चं पुण भवग्गहणं णाइक्कमइ । मज्झिमियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता एवचेव । एवं मज्झिमियं चारि त्ताराहणंपि । जहण्णियं णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अन्तंकरेइ

धना माराध्य कतिभि र्भवग्रहणैः सिध्यति ? एवं चेव । यस्तथा तदुक्त । चारित्राराधना माराध्यैवं च चैव । भवर मस्त्यकः कश्चि एतस्यातीतके पूपपद्यत । मध्यमां भदन्त ! ज्ञानाराधना माराध्य कतिभि र्भवग्रहणैः सिध्यति यावदन्तं करोति ? गौतम ! अस्त्येकः कश्चि द्वितीयेन भव ग्रहणेन सिध्यति यावदन्तं करोति तृतीयं पुन र्भवग्रहणं नातिक्रामति । मध्यमां भ० । दर्शनाराधना माराध्यैव चैव । एवं मध्यमां चारि

ए दावर्ण भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ तच्चंपुण भवग्गहणं णाइक्कमइ । हेगौतम केतलायक जाय भवग्रहणकरी मोक्षे तेविम मध्यमपणे आराध मायेकोइ वर्तमानभवनेविषे निश्चयने प्रभावे वधी उत्कृष्टपणो भवथी हुवे यद्यपि जाणवा निश्चये उत्कृष्टपणा विना उत्पत्ति न हुवे, दर्शावेछे, वर्त मानभव भवथी अपेक्षाये बीजेमनुष्य भवकरी वर्तमानभव भवग्रहण अपेक्षाये त्रीजेमनुष्य भवग्रहणे मोक्षे एतले बीजभवे मोक्षजाय इत्यर्थः । मज्झि मयं दंसणाराहणं आराहेत्ता एवचेव । मध्यम हेभगवन् दर्शनआराधना आराधीने केतला भवे मोक्षे इतिप्रश्न, एवचेवत्ति, जिम मध्यम ज्ञानारा धनाना भवकह्या तिम इहां पणिकहवा । एवंमज्झिमियं चरित्ताराहणंपि । इम मध्यमचारित्र आराधनानापण पिण कहवा । जहण्णियंणंभंते नाणारा हणं । जघन्यनं ज्ञानआराधनाप्रते । आराहेत्ताकइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जावअंतकरेइ । आराधीने केतले भवने ग्रहणेकरी मोक्षे जाय सर्वदुखना अंतकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइए तच्चं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ । हेगौतम । केतलाएक त्रीजेभवने ग्रहणे

हमरामस्तमाई पुष पाराक्रमरति ॥ पत चारित्राराधनाया पवेदं पस मुर्त्त पग्गह–पढमसत्तचरितेति ॥ मुतमम्पत्वादेशविरतिनया सयमहूया उक्ता, मत परवारापमारदितपामदशनारापना पमङ्गमविकामपि प्रवामि मत्यष्टमविकापवेति मनन्तरं जीयपरिणाम उक्तो ऽथ पुद्गलपरिणामानिपामाधाह ॥ कविहण मित्यादि ॥ पमपरिणामेति ॥ पत्पुद्गलो यर्णान्तरत्यागा द्वर्णान्तरं या स्पशो वर्णपरिणाम इत्यव मन्यत्रापि ॥

१ गोयमा ! ध्रत्येगइए तह्रेग जयग्गहणेण सिज्झइ जाव ध्रतकरेइ सत्तठभवग्गहणाइ पुण नाइक्कमइ । एय दंसणाराहणपि । एयंचरित्ताराहणपि । कइविहेण भते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तंजहा–वण्णपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे सठाणपरिणामे ।

पाराधमामपि । जपन्या म० । ज्ञानाराधना माराध्य कतिभि भवग्रहणैः सिध्यति याव दन्त करोति ? गौतम ! मस्त्येक कश्चि तृतीयन भवग्रहन सिध्यति याव दन्त करोति मसाष्टभवग्रहणान्पुन मातिक्रामति । एव दर्शनाराधना मपि । एव चरित्राराधना मपि ॥ कतिवि

बरा पाश्च यावत् मवइमना पंतकरे वत्तमानमनुष्य भवमोपपयायें पोजाभव बावना । सत्तइ भवमइणाइ पुणनाइक्कमइ । सात भववा पाठ भवपह णते बमो पतिक्रमे नवो ववसनवो । एवदंसणाराहणंपि एवचरित्ताराहणंपि । इस अपग्य दर्शनपाराधनाभो पवि पत कहवा इस चारित्राराधना भी पवि मन कहवा पनंतरे जोवपरिणाम कह्या, हिवे पुद्गलपरिणाम पभिधानमेकाजे कहैछे–करविहेण भते पामलपरिणामे पं । केतलेभेदे हेभग वन् ! पदलपरिणाम कह्या इतिप्रश्न उत्तर गोयमा पंचविहे पामलपरिणामे पं त । हेगोतम ! पांचभेदे पदलपरिणाम कह्या ते कहैछे–वर्णपरिणाम गंधपरिणाम रसपरिणामे फासपरिणामे संठाणपरिणामे। जे पुद्गल वर्णान्तर त्यागवको वर्णान्तरप्रते जाय ते वर्णपरिणाम इम गंधान्तर त्यागवको गंधान्तरे जाय ते गंधपरिणाम २ रसांतर त्यागवको रसांतरे जाय ते रसपरिणाम ३ स्पर्शान्तरत्यागवी स्पर्शान्तरपरिणामे जाय ते स्पर्शपरिणाम ४ । ते संस्थानत्यागवतो परसंस्थानान्तरे जाय ते संस्थानपरिणाम ५। वर्णपरिणामेणंभंते कइविहे पं । वर्णपरिणाम हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्त

परिमळलसंठाणपरिणामेति ॥ इह परिमंडलसंस्थानं वलयाकारं याव स्करणात् "वट्टसंठाणपरिणामे तंससंठाणपरिणामे चउरंससंठाणपरिणामेति

वण्णपरिणामेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—कालवण्णपरिणामे जाव सुक्किल्लवण्णपरिणामे, एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे । संठाणपरिणामेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आययसंठाणपरिणामे । एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसे किं दव्वं १, दव्वदेसे २, दव्वा

था प्र० । पुद्गलपरिणामः प्रज्ञप्तो ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—वर्णपरिणामो गन्धपरिणामो रसपरिणामः स्पर्शपरिणामः संस्थानपरिणामः । वर्णपरिणामो भ० ! कतिविधः प्रज्ञप्तो ? गौ० ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—कालवर्णपरिणामो याव शुक्लवर्णपरिणामः एवमेतेनाभिलापेन गन्धपरिणामो द्विविधो रसपरिणामः पञ्चविधः स्पर्शपरिणामो ऽष्टविधः । संस्थानपरिणामो भ० ! कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा—परिमण्डलसंस्थानपरिणामो याव आयतसंस्थानपरिणामः ॥ एको भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशः किं द्रव्य

र। गोयमा पंचविहे प० त० । हे गौतम ! पांचभेदे कह्या ते कहे छे,कालवर्णपरिणाम १ नील २ लोहित ३ हारिद्र ४ यावत् शुक्लवर्ण परिणाम ५। एवं एणे अ भिलापे गंधपरिणामे दुविहे । इम इणे आलावे करी गन्धपरिणाम बेहुभेदे कहवा । रसपरिणाम पंचविहे । रसपरिणाम तिक्तादि पंचभेदे कहवा। फासपरिणामे अट्ठविहे। स्पर्शपरिणाम शीतादि आठभेदे कहवा। संठाणपरिणामेणं भंते कइविहे प० । संस्थानपरिणाम हे भगवन् ! केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहे प० त० । हे गौतम पांचभेदे कह्या ते कहे छे—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आयतसंठाणपरिणामे। परिमंडलसंस्थान परिणाम ते वलयाकार कहवो यावत् करवाथी वट्टसंठाणपरिणामे चउरंससंठाणपरिणामे यावत् आयतसंस्थान परिणाम एतला कहवा पुद्गलना अधिकारथीज कहे छे—एगेभंते पोग्गलत्थिकायपएसे किं दव्वं दव्वदेसे इत्यादि दशदेसा। एक हे भगवन् ! एकादि पुद्गलास्ति तेहनेप्रदेश निरंश भाग ते परमा

दृव्य , पुद्गलास्तिकाय विद सार्ध॥ एम सते । पौग्गलत्थिकाए इत्यादि॥ पुद्गलास्तिकायस्य एकाणुकादिपुद्गलराशी प्रदेशो निरंशो यः पुद्गलास्ति कायप्रदेश परमाणुः द्रव्य गुणपर्यायपयोगि द्रव्यदेशो द्रव्याणव्य एव मकस्य बहुत्वाभ्यां प्रत्येक विकल्पा चत्वारो द्विकसंयोगा अपि चत्वार एव ति प्रश्न उत्तरन्तु स्यात् द्रव्य द्रव्यान्तरासम्बन्धेसति स्यात् द्रव्यदेशो द्रव्यान्तरसम्बन्धसति शेषविकल्पानान्तु प्रतिषेधः परमाणो रेकत्वेन बहु

छ ३, दव्वदेसा ४, उदाहु दव्वाय दव्वदेसेय ५, उदाहु दव्वंच दव्वदेसाय ६, उदाहु दव्वाइंच दव्वदेसेय ७, उदाहु दव्वाइंच दव्वदेसाय ८, ? गोयमा ! सियदव्वं, सियदव्वदेसे, नोदव्वाइं, नोदव्वदेसा, नोदव्वंच

१ द्रव्यदेशो २ द्रव्याणि ३ द्रव्यदेशाः ४ उताहो । द्रव्यं च द्रव्यदेशश्च ५ उताहो द्रव्यं च द्रव्यदेशाश्च ६ उताहो द्रव्याणि च द्रव्यदेशश्च ७ उताहो द्रव्याणि च द्रव्यदेशाश्च ८ ? गौतम । स्यात् द्रव्य १ स्यात् द्रव्यदेशो २ नोद्रव्याणि ३ नोद्रव्यदेशाः ४ नोद्रव्यं च द्रव्यदेशाश्च ५

न् एम च न् द्रव्य द्रव्य ते मन पर्यायमुक्त १ द्रव्यदेश कहिये द्रव्यना चवय २ एतलद्रव्य १ द्रव्यदेश २ ए एकसमा प्रायभेद तिम बहुवचनना प्रायभेद घणांद्रव्य ३ घणांद्रव्यना देश ३ एवंविकल्प ४ हम विकसयोगे पवि विकल्प ४ । उदाहु दव्वंच दव्वदेसेय । अथवा द्रव्य अने द्रव्यनादेश ५ ए पंचमा विक ल्प ५ । उदाहु दव्वंच दव्वदेसाय उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसेय । अथवा द्रव्य अने घणांद्रव्यनादेश ए छट्ठा विकल्प ६ अथवा बहुद्रव्य एकद्रव्यदेश ए सातमो विक ल्प ७ । उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसाय । अथवा घणांद्रव्य घणांद्रव्यनादेश ए आठमा विकल्प ८ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियदव्वं सियदव्वदेसे आठमा नोदव्वदेसा नोदव्वंच दव्वदेसेय । हे गौतम ! कदाचित् द्रव्य द्रव्यान्तरथको वेगलाहतो परिमाणरूप द्रव्यकहवाय १ कदाचित् द्रव्यदेश द्रव्यान्तर सं भिन्ना ते द्रव्यदेश कहवाय ए बे बे विकल्पहुवे शेषभांगा ६ ना प्रतिषेध करवा परमाणुना एक तिहां बहुत्व अने द्विकसंयोगनो अभावछे ते देखाडेछे घणांद्रव्यनथी ३ द्रव्यनादेश घणानथी ४ द्विकसंयोगे तथा द्रव्य द्रव्यनादेश नथी ५ । नोदव्वंच दव्वदेसा । द्रव्य तथा द्रव्यनाघणांदेश नथी ६ । नोद व्वाइं दव्वदेसेय । घणांद्रव्य अने द्रव्यना एकदेश ते पणिनथी ७ । नोदव्वाइं च दव्वदेसाय । घणांद्रव्य घणां द्रव्यनादेश पणिनथी ८ ए निषेध करवा ।

स्वस्य द्विकसंयोगस्या भावादिति ॥ दोभंते इत्यादि ॥ द्व्यणुकस्कन्धेषु मध्ये आद्याः पञ्च भवन्ति मध्येपा सत्र द्वौ प्रदेशौ स्यात् द्रव्यं कथं यदा तौ द्विप्रदेशिकस्कन्धतया परिणतौ तदा द्रव्यं यदा तु द्व्यणुकस्कन्धभावगतावेव तौ द्रव्यान्तरसम्बन्धमुपगतौ तदा द्रव्यदेशः २॥ यदा तु तौ द्वावपि प्रदेश ब्यवस्थितौ तदा द्रव्ये ३ ॥ यदा तु तावेव द्व्यणुकस्कन्धतां समापद्य द्रव्यान्तरेण सम्बन्धमुपगतौ तदा द्रव्यदेशौ ४॥ यदा पुन स्तयो रेकः केवलतया स्थितो द्वितीयश्च द्रव्यान्तरेण सम्बद्धः सतो द्रव्यञ्च द्रव्यदेशश्चेति पञ्चमः शेषविकल्पानान्तु प्रतिषेधो ऽसम्भवादिति ॥ तिण्णिभंते इत्यादि ॥ त्रिषु प्रदेशे

दव्वदेसेय, नोदव्वाइं दव्वदेसाय, नोदव्वाइं दव्वदेसेय, नोदव्वाइं दव्वदेसाय। दो भंते! पोग्गलत्थिकाय प्पएसा किंदव्वं दव्वदेसे पुच्छा? गोयमा! सियदव्वं, सियदव्वदेसे, सियदव्वाइं, सियदव्वदेसा, सिय दव्वंच दव्वदेसेय, नोदव्वंच दव्वदेसाय, सेसापडिसेहेयव्वा। तिण्णि भंते! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वं दव्वदेसे

नोद्रव्यञ्च द्रव्यदेशाय ६ नोद्रव्याणि च द्रव्यदेशश्च ७ नोद्रव्याणि च द्रव्यदेशाय ८ ॥ द्वौ भदन्त! पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ किं द्रव्यं १ द्रव्यदेशः २ पृच्छा ? गौतम! स्याद्द्रव्यं १ स्याद्द्रव्यदेशः २ स्याद्द्रव्ये ३ स्याद्द्रव्यदेशौ ४, स्याद्द्रव्यञ्च द्रव्यदेशश्च ५ नोद्रव्यञ्च द्रव्यदेशाश्च शेषा प्रतिषेधयितव्याः ॥ त्रयो भदन्त! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः किं द्रव्यं द्रव्यदेशः पृच्छा गौतम! स्याद्द्रव्यं १ स्याद्द्रव्यदेशः २ एवं सप्त भङ्गा

हाभतपोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वदव्वदेसे पुच्छा तहेव। हाव हेभगवन्! पुद्गलास्तिकायप्रदेश बे द्रव्यश्चादि, आठ विकल्प पूछवा इहां आठविकल्पमांहि पहिला पांचमा भांगाछे, शेष तीनविकल्पना प्रतिषेध करवा ते एणाछे—गोयमा सियदव्वं सियदव्वदेसे सियदव्वाइं सियदव्वदेसा। हेगौतम! कदाचित् द्रव्य जिवारे ते बेप्रदेश स्कन्धपणे परिणम्या तिवारे द्रव्य १ वली जिवारे ते द्व्यणुक स्कन्धभावे मयाकाल ते बेहु द्रव्यान्तर सम्बन्धपणे उपगतपणा तिवारे द्रव्यदेश २ जिवारे ते बेहु पविभेदकरी रह्या तिवारे ते बेहु द्रव्य इसो कहिये ३। सियदव्वयदव्वदेसेय चोदव्वयदव्वदेसाय सेसाप डिसेहेयव्वा। जिवारे तेहीज द्व्यणुक स्कन्धपणो पामवा द्रव्यान्तरे करी सम्बन्धपणे उपगतपणा तिवारे ते द्रव्य देशोपि इसो कहिये ४ वली जिवारे ते

ष्टमविकल्पवर्जाः सप्त विकल्पाः सम्भवन्ति तथाहि—यदा त्रयोऽपि त्रिप्रदेशिकस्कन्धतया परिणता तदा द्रव्यं १ यदा तु ते त्रिप्रदेशिकस्कन्धतया परिणता एव द्रव्यान्तरसम्बन्धमुपगता तदा द्रव्यदेशः २ यदा पुनस्ते त्रयोऽपि प्रदेशा व्यवस्थिता द्वौ वा द्व्यणुकीभूतौ एकस्तु केवल एव स्थित स्तदा "द्रव्याणि" ३ यदा तु ते त्रयोऽपि स्कन्धतामगता एव द्वौ वा द्व्यणुकीभूतौ एकस्तु केवल एव मित्येवं द्रव्यान्तरेण सम्बद्धा स्तदा "द्रव्यदेशा इति ४ यदा तु तेषां द्वौ द्व्यणुकतया परिणतौ एकश्च द्रव्यान्तरेण सम्बद्धोऽथवा एकः केवल एव स्थितो द्वौ तु द्व्यणुकतया परिणम्य द्रव्यान्तरेण सम्बद्धौ तदा "द्रव्यं च द्रव्यदेशश्चेति ५ यदा तु तयो रेकः केवल एव स्थितो द्वौ च प्रदेशौ द्रव्यान्तरेण सम्बद्धौ तदा "द्रव्यं च द्रव्यदेशाश्चेति ६ यदा

पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं १, सियदव्वदेसे २, एवं सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सियदव्वाइं य दव्वदेसे य

भणितव्या यावत्स्याद्द्रव्याणि च द्रव्यदेशश्च ७ नो द्रव्याणि च द्रव्यदेशाश्च ॥ चत्वारो भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशाः किं द्रव्यं १ द्रव्यदेशः २ पृच्छा

थेक भांगिमां एक स्कन्धपणे रह्या होय द्रव्यान्तर साथे संबंध तिवारे द्रव्य थने द्रव्यदेश १ शेष विकल्प होयना निषेधरूपी समजवानो। तिणि भंतेपोग्गलत्थिकायपएसा किंदव्वं दव्वदेसा पच्छा। हे भगवन्! पुद्गलास्तिकायप्रदेश ए द्रव्य इत्यादि भाठ प्रश्न पूछ्या उत्तर। गोयमा सियदव्व सियदव्वदेसे एवसत्तभंगाभाणियव्वा। गौतम! त्रणप्रदेशनेविषे एक भाठमा विकल्पवर्जीने शेष सातविकल्प संभवे ते देखाडे छे—जिवारे त्रणेय त्रिप्रदेशिक स्कन्धपणे परिणम्या तिवारे द्रव्य १ जिवारे त्रिप्रदेशिक स्कन्धपणे परिणतथका द्रव्यान्तर संबंधे उपगतथया तिवारे द्रव्यदेश २ जिवारे वली ते त्रणे भेदेकरी रह्या भथवा बेय द्व्यणुकभूत थने एक केवल एकलोज रह्या तिवारे द्रव्याणि, ३ जिवारे ते त्रणेय स्कन्धपणा प्रते भनागतथी ज भथवा बेय द्व्यणुकीभूत एकतो केवलोज द्रव्यान्तरसाथे संबंध तिवारे द्रव्यदेशा इति ४ जिवारे तेहमा बेय द्व्यणुकपणे परिणम्या थने एक द्रव्यान्तरसाथे संबंध भथवा एक केवलोज रह्या बेय द्व्यणुकपणे परिणमी द्रव्यान्तरसाथे संबद्धथया तिवारे द्रव्यचद्रव्यदेशेचति, ५ जिवारे तेहमा एक केवलोज रह्या दोयभेदेकरी द्रव्यान्तरसाथे संबद्धथया तिवारे द्रव्यचद्रव्यदेसाचति, ६ जिवारे वली तेहमा दोयभेदेकरी रह्या एक द्रव्यान्तरसाथ

पुन सपां द्वौ जेवेन स्थिता येकव द्रव्यान्तरेण सम्बद्ध सन्ग " दव्वाइं च दव्वदसेपत्ति ७ ॥ अष्टमविकल्पस्तु सत्त भयति, एतत्पत्र त्रिषु प्रदेशेषु बहुवचनाभावात् प्रदेशचतुष्टयादौ त्वष्टमोपि सम्भव त्वुभयत्रापि बहुवचनसद्भावा दिति अनन्तर परमाण्वादिवक्तव्यतोक्ता परमाण्वा श्रयव लोकाकाशप्रदेशावगाहिनो भवन्तीति तद्वक्तव्यता माह ॥ कवइयाण मित्यादि ॥ असंखेज्जत्ति ॥ यस्मा दसङ्ख्यप्रदेशिको लोक स्तस्मा त्तस्य प्रदेशा असङ्ख्येया एवेति प्रदेशाधिकारा देवद माह ॥ एगमेगस्सेत्यादि ॥ एकैकस्य जीवस्य तावन्त प्रदेशा यावन्तो लोकाकाशस्य कथं यस्मा

नोदव्वाइं च दव्वदेसाय । चत्तारि भंते । पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्व पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्व सियदव्व देसे अट्ठवि भंगा भाणियव्वा । जाव सियदव्वाइं च दव्वदेसाय जहा चत्तारि भणिया एव पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असंखेज्जा अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्व एवचेव जाव सियदव्वाइं च दव्वदेसाय ।

गौतम ! स्याद्द्रव्य स्याद्द्रव्यदेशो इत्यादि भङ्गा भणितव्या याव त्स्याद्द्रव्याणिच द्रव्यदेशाय यथा चत्वारो भङ्गा भणिता एव पञ्च षट् सप्त याव त्सङ्ख्या असङ्ख्येया । अनन्ता भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशा किंद्रव्य मव चैव याव त्स्याद्द्रव्याणिच द्रव्यदेशाय ॥ कति भदन्त ! लोकाकाश

सबद तिचार द्रव्यार चहान देसेवत्ति ७ । यावसियद्रव्यार च द्रव्यद्रमेव चाद्रव्याइंच द्रव्यदेसाय । यावत् आठमोविकल्प ता न सम्भवे केउ आगले तीन पदेशनेविषे बहुवचनना अभावथको अदेश चार आदिदेइने तेहनेविषे आठमाविकल्प पनि सम्भवे केउआगलानेविषे बहुवचनना सद्भावथको । चत्तारि भंते पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वपुच्छा । चार हेभगवन् ! पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्यू द्रव्य इत्यादि, आठविकल्पनो प्रश्न पूछ्या उत्तर । गोयमा सियदव्व सियदव्वदेसे अट्ठविभंगा भाणियव्वा । हेगौतम ! चिचार द्रव्यदेश २ इम आठेइ विकल्प इहां सम्भवे तेहनो भावना पूर्वोपरि करवो । जावसियदव्वा इंच दव्वदेसाय । यावत् कदाचित् घणाद्रव्य घणाद्रव्यनादेश ८ ए आठमाविकल्प जाणवा । जहाचत्तारिभणिया । जिम चारप्रदेशनेविषे आठविकल्पना सम्भववे कह्या । एव पंच छ सत्त जाव असंखेज्जा । इम पांच छ सात यावत् असंख्यातप्रदेशनेविषे आठइ विकल्प सम्भवे ते करवा । अणंताभंतेपोग्गल

ज्यौतः केवलिसमुद्घातकाले सर्वं लोकाकाशं व्याप्य वर्तिष्यते तस्मात् लोकाकाशप्रदेशप्रमाणः स इति जीवप्रदेशाश्च प्राय कर्मप्रकृतिभि रनुगता

केवइयाणं भंते ! लोयागासप्पएसा पण्णत्ता ? गो० ! असंखेज्जा लोयागासप्पएसा पण्णत्ता । एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवप्पएसा पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोयागासप्पएसा एगमेगस्स णं जीवस्स एवइया जीवप्पएसा प० । कइ णं भंते ! कम्मपगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ प०, तं०

प्रश्नाः प्रज्ञप्ता गौतम ! असंख्येया लोकाकाशप्रदेशाः प्रज्ञप्ताः । एकैकस्य भदन्त ! जीवस्य कति प्रदेशाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! यावन्तो लोका काशप्रदेशा एकैकस्य जीवस्य तावन्तो जीवप्रदेशाः प्रज्ञप्ताः । कतिविधा भदन्त ! कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः

नियामकपणुं कहेलुं छे । भगवान् हे भगवन् ! परमाणु आकाशप्रदेश ए द्रव्यादिक इत्यादि, पाठनी पूर्वा उत्तर हे गौतम ! एवयेकत्ति पूर्व किम प्रश्नादिकनेविषे पाठविकल्प कहा तेम इहां पणि कहवा, यावत् कदाचित् सप्रदेश घणा द्रव्यनी अपेक्षाए पाठनो विकल्प कहता परमाण्वादि दशस्था ते परमाण्वादिक आकाशना प्रदेशमात्रगाही छे तेमाटे लोकाकाश प्रमाणता कहीछे—केवइयाणंभंते लोगागासप्पदेसा प० । केतला हे भगवन् लाक आ प्रदेश कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जा लोगागासप्पएसा पं० । हे गौतम ! असंख्यात लोकाकाशप्रदेश कह्या ते कारणथकी असं ख्येयप्रदेशिक ते कारणे तेटलाप्रदेश असंख्याता कह्या प्रदेशना अधिकारथकी कहीछे—एगमेगस्सणंभंते जीवस्स केवइया जीवप्पएसा प० । एकेक हे भगवन् जीवना केतला जीवप्रदेश प्ररूप्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावइया लोगागासपएसा एगमेगस्स जीवस्सएवइया जीवप्पएसा प० । हे गौतम जे तला लोकाकाशना प्रदेश तेतला एकेकजीवना प्रदेश तेविषे जे कारणथकी जीव केवलसमुद्घात कालनेविषे सर्व लोकाकाश व्यापीने रहीछे तेमाटे लो काकाशप्रमाण एकेकजीवना तेतला जीवप्रदेश कह्या जीवप्रदेश प्राये कर्मप्रकृति करी अनुगतछे तेमाटे कर्मप्रकृति प्ररूपता कहीछे—कइणंभंतेकम्मपगडी ओ पण्णत्ताओ । केतली हे भगवन् ! कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तं० । हे गौतम ! आठकर्म

इति तद्गद्भयना मनिपातु माह ॥ कम्मेत्यादि ॥ अविभागपलिच्छेदेति ॥ परिच्छिद्यन्त इति परिच्छेदा अंशा स्तेच साविभागा अपि भव न्त्य तो विशेष्यते अविभागाश्च ते परिच्छेदाश्चे त्वविभागपरिच्छेदा निरंशा अंशा इत्यर्थः। तत्र ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो अनन्ता। कथं ज्ञानावरणी यं यावतो ज्ञानस्याविभागानंशा नावृणाति तावन्त एव तस्या विभागपरिच्छेदा दलिकापेक्षया; अनन्ततत्परमाणुरूपा ॥ अविभागपलिच्छेदेति

नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । नेरइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ । एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं । नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । नेरइयाणं भंते !

तद्यथा–ज्ञानावरणीयं यावदन्तरायिकं ॥ नैरयिकाणां भदन्त ! कति कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्टौ । एवं सर्वजीवानां अष्टौ कर्मप्रक तयः स्थापयितव्या याव द्वैमानिकानां । ज्ञानावरणीयस्य भदन्त ! कर्मणः कति अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । अनन्ता अविभागपरिच्छेदाः

कति कर्म ते कहिये—ज्ञानावरणीय जावत अंतराय । ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ इम यावत् अन्तरायकर्म अष्टमो । नेरइयाभगवन् कइकम्मपग डी। नारकीने हेभगवन् ! केतली कर्मनी प्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। हेगौतम ! आठ कर्मप्रकृति कही। एवंसव्वजीवाणं। इम सर्व जीवाने। अट्ठकम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ। आठ कर्मनी प्रकृति कहवी। जाववेमाणियाणं। यावत् वैमानिकलगे क हवा। नाणावरणिज्जस्सणंभंते कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता। ज्ञानावरणीयना हेभगवन् ! कर्मना केतला अविभाग पलिच्छेद कह्या, जी वना केवलज्ञान प्रमुख ज्ञान ना पलिच्छेद कहतां भाग अंश कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अणंता अविभाग पलिच्छेदा प । हेगौतम ! ज्ञानावर णीय कर्मने ज्ञानना अविभागपलिच्छेदा अनंते आवरे तेतलाहीज तेहना अविभाग पलिच्छेद अथवा दलिक अपेक्षायें अनंत तत्परमाणु रूप । नेर इयाणंभंते नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा प । नारकीने हेभगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मना केतला अविभागपलिच्छेद परमाणु

ति ॥ तत्परमाणुभिः ॥ आवेढियपरिवेढियत्ति ॥ आवेष्टितपरिवेष्टितो ऽत्यन्तं वेष्टित इत्यर्थः आवेष्ट्य परिवेष्टित इतिवा ॥ सियनोआवेढिय

नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता एवं सव्वजीवाणं । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्हवि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं अंतराइयस्स । एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवप्पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढियपरिवेढिए ? गोयमा ! सियआवेढियपरिवे

प्रज्ञप्ताः । नैरयिकाणां भदन्त ! ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः कति अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ता अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ता एवं सर्वजीवानां यावद् वैमानिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ता अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ता । एवं सर्वजीवानां । एवं यथा ज्ञानावरणीयस्याविभागपरिच्छेदा भणिता तथा एवा अपि कर्मप्रकृतीनां भणितव्या यावद् वैमानिकानां अन्तरायस्य । एकैकस्य भदन्त ! जीवस्यैकैको जीवप्रदेशो

ए णि व का य कदा र तिम व उत्तर । गायमा यणता अविभागपलिच्छेदा प० । हेगौतम अनन्ता अविभागपलिच्छेद कह्या भायमा पूठिओपरे । एवसव्व जीवाच । इम सव जीवने । वावमानियावपणा । यावत् वैमानिकना प्रश्नजीवा उत्तर । गायमा अणता अविभाग पलिच्छेदा प । हेगौतम अन ता अविभागपलिच्छेद कह्या । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदाभणिया । इम जिम ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपलिच्छेद कह्या । त था अट्ठविकम्मपगडीव भाणियव्वा । तिम आठेई कर्मप्रकृतिना कहवा । जाववेमाणियाण । यावत् वैमानिक लगे कहवा । अन्तराइयस्सएगमेगस्सणभ ते जीवस्स एगमगे जीवप्पदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय परिवेढिए । अन्तरायना पिण इमज कहवा एकेक भगवन् ! जीवना एकेक जीवप्रदेश ते ज्ञानावरणीय कर्मने केतले अविभागपलिच्छेदे परमाणुपरीने यासमस्तप्रकारे वेष्टित परिवेष्टित एहवे प

परियेन्रियति ॥ कथमिति प्रतीत्य तस्य जीवप्रानावरणत्वेन तत्प्रवशस्य प्रामावरणीयाविभागपरिच्छेदैः रावेष्टनपरिवेष्टमात्रावा विति ॥ मणूसस्स जहा जायस्सति ॥ स्यथावद्वियेत्यादि वाच्य मित्यर्थो मनुष्यापेक्षया स्यावेष्टितपरिवेष्टितत्वस्य तदितरस्यच सम्भवात् एव दर्शनावरणीयमोह

ढिए सिय नोष्मायेढियपरिवेढिए । जइ ष्मायेढियपरिवेढिए नियमा ष्मणतेहिं । एगमेगस्सण भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवप्पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं ष्मविभागपलिच्छेदेहिं ष्मायेढियपरिवेढिए ? गोयमा ! नियम ष्मणतेहिं जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर मणूसस्स जहा जीव

प्रानावरणीयस्य कर्मणः कतिभि रविभागपरिच्छेदैः रावेष्टितपरिवेष्टित ? गौतम ! स्या दावेष्टितपरिवेष्टितः स्या न्नो आवेष्टितपरिवेष्टितः । य द्यावेष्टितपरिवेष्टितो नियमा दनन्तैः । एकैकस्य भ० ! नैरयिकस्यै कैको जीवप्रदेशो ज्ञानावरणीयस्य कर्मण कतिभि रविभागपरिच्छेदै रा वेष्टितपरिवेष्टितः ? गौतम ! नियमा दनन्तैः, । यथा नैरयिकस्यै व याव द्वैमानिकस्य नवर मनुष्यस्य यथा जीवस्य । एकैकस्य भ० ! जीवस्यै

एक वहिंत इत्यादि, इतिप्रश्न । उत्तर भायमा सिय भावेढिय परिवेढिए । हे गौतम कदाचित् समस्तप्रकारे पतस्त वेष्टित भीढियाछे । सियभावेढिय परिवेढिए । कदाचित् समस्तप्रकारे भस्तव्यवेष्टित नहीं तेजिम केवलीमते भाव्ययोगे ते दाखने जीवप्रानावरणपर्याये तेखमाप्रदेशमे ज्ञानावरणीय अविभागपरिच्छेदरूपी भावइमना अभावकी । अप्रावेढिय परिवेढिए नियमा अनतेहिं । जो भस्य समस्तप्रकारे वेष्टितछे तो नियमथी भनन्ते अविभाग परिच्छेदे परमाणुथी भावेष्टितछे परिवेष्टितछे । एगमेगस्सणभंते नेरइयस्स । एकेकने हेभगवन् ! नारकीने । एगमेगेजीवप्पदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं भावेढिय परिवेढिए । एकेक जीवप्रदेशमे ज्ञानावरणीयकर्मना केतलेएके अविभागपरिच्छेदेकरी भावेष्टित परिवेष्टित छे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणतेहि । हे गौतम । नियमथकी अनन्ते करी । जहानेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स । जिम नारकीने कह्यो तिम यावत् वैमानिक लगे कहवा । नवरं मणूसस्स जहा जीवस्स । एतलोविशेष मनुष्यने जिम जीवने कह्या तिम कहवा । एगमेगस्सणभंते जीवस्स एगमेगे जी

मीयान्तरायग्रपि याच्यं वेदनीयायुष्कनामगोत्रेषु पुन स्त्रीपद एव प्रअना साध्या सिद्धापेक्षया मनुष्यपदतु मास्ती तत्र वेदनीयादीना ज्ञावा दित्वे तदेवाह ॥ नवरं वयणिज्जस्समित्यादि ॥ अथ ज्ञानावरणं प्रये सह चिन्त्यते ॥ जस्सणमित्यादि ॥ यस्य पुन वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सियमत्थिसिय

स्स । एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवप्पएसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं एवं जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं । नवरं वेयणिज्जस्स आउयस्स नामस्स गोयस्स गोयमा ! एएसि चउण्हवि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स

एको जीवप्रदेशो दर्शनावरणीयस्य कर्मणः कतिभि रव यथैव ज्ञानावरणीयस्य तथैव दण्डको भणितव्यो याव द्वैमानिकस्यैव याव दन्तराय स्य भणितव्य नवरं वेदनीयस्या युषो नाम्नो गोत्रस्य गौतम ! एतषा चतुर्णा मपि कर्मणां मनुष्यस्य यथा नैरयिकस्य तथा भणितव्य शेष तथैव ॥ यस्य भ० ! ज्ञानावरणीय तस्य दर्शनावरणीय यस्य दर्शनावरणीय तस्य ज्ञानावरणीयं ? गौतम ! यस्य ज्ञानावरणीय तस्य दर्शनाव

अपदेसे । एवेकने भगवन् जीवन एवेक जीवप्रदेश ते । दरिसणावरणिज्ज कर्मना केटलाएं । दर्शनावरणीयकर्मने कोतले अविभागपलिच्छेदे भावे टित परिवेष्टित छे इतिप्रश्न उत्तर । एवजेम णाणावरणिज्जस्स तेम दंडगा भाणियव्वा । इम जिमहीज ज्ञानावरणीयकर्म कह्यो तिमहीज दर्शन कह्या । जाव वेमाणियस्स एवजाव अन्तराइयस्स भाणियव्वा । यावत् वैमानिकलगे कह्या इम यावत् अन्तरायकर्मलगे कहवा । नवर वेदणिज्जमाउ अस्सना मस्सगोयस्स । एतला विशेष वेदनीय आयुषा नाम गोत्रने जीवप्रदेशविषे भजना कहवी सियआवेढिअपरिवेढिअ सिय णोआवेढिअपरिवेढिअ एसो भजना करवा सिद्धनी अपेक्षाये करी पणि मनुष्यपदनेविषे मनुष्य वेदनीय आयुषा नाम गोत्रना भावकर्म एतलामाटेज कहेले—वेदनीयआयु नाम गोत्र । एएसिचउ ण्हवि कम्माणं मणुस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्व सेसतहेव । ए चारेइ कर्मने मनुष्य ने जिम नारकीने कह्यो तिम कहवा शेष सर्व तिमहीज कहवा । हिव ज्ञानावरणादि कर्मसाते चिन्तवेछे—जस्स मते णाणावरणिज्जं तस्सदरिसणावरणिज्जं । जेहने हेभगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मछे तेहने दर्शना

नत्थिति ॥ अकेवलिनं केवलिनंच प्रतीत्य, अकेवलिनोहि वेदनीयं ज्ञानावरणीयं चास्ति, केवलिनस्तु वेदनीयमस्ति नतुज्ञानावरणीयमिति ॥ ज

तहा णाणियह सेसतचेव। जस्सण भंते! नाणावरणिज्ज तस्स दंसणावरणिज्जं जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं? गो०। जस्स नाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियम अत्थि। जस्स दंसणावरणिज्जं तस्सवि नाणावरणिज्जं नियम अत्थि १। जस्सण भंते! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं जस्स वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं? गोयमा! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियम अत्थि, जस्सपुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सियअत्थि सियनत्थि २। जस्सपुण भंते! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं जस्स मोहणिज्जं

दर्शनावरणीयं नियमा दस्ति यस्य दर्शनावरणीयं तस्यापि ज्ञानावरणीय नियमा दस्ति १। यस्य भ०। ज्ञानावरणीयं तस्य वेदनीयं यस्य वेदनीय तस्य ज्ञानावरणीय? गौतम! यस्य ज्ञानावरणीयं तस्य वेदनीय नियमा दस्ति यस्यपुन वेदनीय तस्य ज्ञानावरणीयं स्या दस्ति स्या न्नास्ति २।

परणीयकर्मछवे। जस्सदंसणावरणिज्जं तस्सणाणावरणिज्जं। तथा जेहने दर्शनावरणीयकर्मछवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्मछवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्स णाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमं अत्थि। हेगौतम! जेहने ज्ञानावरणीय कर्म हुवे तेहने दर्शनावरणीयकर्म निश्चयथकी हुवे। जस्सदंसणावरणिज्जं तस्सवि णाणावरणिज्जं नियम अत्थि। तथा जेहने दर्शनावरणीय कर्महुवे तेहने पणि ज्ञानावरणीयकर्म निश्चयथकी हुवे सहचारिपणाथकी वली गौतम पूछे—जस्सणभंते णाणावरणिज्जं तस्सवेयणिज्जं। जहने हेभगवन्! ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म हुवे तथा। जस्सवेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं। जेहने वेदनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सणाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमअत्थि। हे गौतम जेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथकी हुवे। जस्स पण वेयणिज्जं तस्सणाणावरणिज्जं सियअत्थि सियनत्थि। जेहने वली वेदनीयकर्महुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे तेविम अकेवलीने वेदनीय ज्ञानावरणीय दोनाछे केवलीने वेदनीयछे पर्ण ज्ञानावरणी

इस नाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्जं सियअत्थि सियनत्थित्ति ॥ अक्षपक क्षपकं च प्रतीत्य अक्षपकस्यहि ज्ञानावरणीय मोहनीय चास्ति क्षपक स्यतु मोहक्षये याव त्केवलज्ञान नोत्पद्यते ताव ज्ज्ञानावरणीय मस्ति नतु मोहनीय मिति एवञ्च यथा ज्ञानावरणीय वेदनीयेन सम मणित त

तस्स नाणावरणिज्ज ? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि सियनत्थि, जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ३ । जस्सण भंते ! नाणावरणिज्ज तस्स आउय एव जहा वेयणिज्जेण सम भणियं तहा आउएणवि सम भाणियव्वं, एव नामेणवि, एवगोएणवि सम, अंत

यस्य पुन भदन्त ! ज्ञानावरणीयं तस्य मोहनीयं यस्य मोहनीयं तस्य ज्ञानावरणीयं ? गौतम ! यस्य ज्ञानावरणीय तस्य मोहनीयं स्यादस्ति स्यान्नास्ति यस्यपुन मोहनीयं तस्य ज्ञानावरणीयं नियमा दस्ति ३ । यस्य भदन्त ! ज्ञानावरणीय तस्यायु रेव यथा वेदनीयेन सम भणित तथा युषापि सम भणितव्य, मेव नाम्नापि एव गोत्रेणापि सम अन्तरायेण यथा ज्ञानावरणीयेन सम तथैव नियमात् परस्पर (सर्व) भणित

व भगो तेम।८ यसो गौतम पहले—जस्सभते नाणावरणिज्ज तस्समोहणिज्ज । जेहने हेभगवन् ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने मोहनीयकर्म हुवे तथा। ज स्समोहणिज्ज तस्सनाणावरणिज्ज। जेहने मोहनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सनाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि। हेगौतम ! जेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने मोहनीयकर्म कदाचित् हुवे कदाचित् न हुवे ते किम अक्षपकने ज्ञानावरणीय प ने मोहनीय होवाले पने क्षपकने मोहनीय क्षयथया वाकरो केवलज्ञान न उपजे तांवगे ज्ञानावरणीय हुवे पने मोहनीय नथी। जस्सपुणमोहणिज्ज तस्सनाणावरणिज्ज नियमं अत्थि। जेहने वली मोहनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म निश्चयथी हुवे वलीगौतम पूछे—जस्सभते नाणावरणिज्ज तस्सआउयं। जेहने हेभगवन् ज्ञानावरणीयकर्म तेहने आयुकर्म हुवे तथा जेहने आयुकर्म तेहने ज्ञानावरणीयकर्म इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एवं जहा वेय णिज्जेणसमभणियं तहा आउएणविभाणियव्वं। हेगौतम! इम जिम ज्ञानावरणीय वेदनीयसघाते कह्यु तिम आयुकर्मसंघाते कहवो जेहने ज्ञानावरणीय हुवे

या पुषा माग्रा गोयकण सहा ध्येय मुत्तप्रकारेय मजमाया' भवे मैतेपु यायात्, यन्तरायेकव समं ग्रानावरकोयं तथा याच्यं यथा दसनावरणी यं मिनगन मिस्थ गतरेवाइ ॥ मव जथा वेयणिजव सम मित्यादि ॥ नियमापरोप्पर भाणियव्वाणित्ति ॥ कोयः ॥ जस्स नाणावरणिज्ज त स्स नियमा अंतराय जस्स अंतरायं तस्स नियमा नाणावरणिज्ज , मिस्यव समयोः परस्परं नियमो वाच्य इत्यर्थः । अथ दर्शनावरणं सीपैः

राइएणं जहा दसणावरणिज्जेण सम तहेव नियम परोप्पर भाणियव्वाणि । जस्सण भंते ! दसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं जस्स वेयणिज्जं तस्स दसणावरणिज्जं जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं सम भणियं तहा दसणावरणिज्जंपि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं सम भाणियव्वं जाव अंतराइएण । जस्सण भंते !

प्याः । यस्य प्रदन्त । दर्शनावरणीय तस्य वेदनीयं यस्य वेदनीयं तस्य दर्शनावरणीयं यथा ज्ञानावरणीय मुपरिमैः सप्तभिः कर्मभिः सम भणित तथा दर्शनावरणीय मप्युपरिमैः षड्भिः कर्मभिः सम भणितव्य यावद् आन्तरायिकेण । यस्य प्र० । वेदनीयं तस्य मोहनीयं यस्य मोहनीय तस्य वे

इमे भाणुणा । नियमवको पुर्वे तथा वेइय भावभो पुव तइमे ग्रानावरणीय किवारे पत्ते किवारे न पुवे । यव जामेवथि । इम गासबम्समाते पथि यव रा । एवं मायवथि सम अंतराइयं । इम गायबमसपाते पथि नइयो भनरायसयाते ग्रानावरणीय तिम नइयो । जहा दरिसणावरणिज्जेण सम । जिम दयनावरणीय भजना विना वाच्ये इतव । तहेव नियमं परोप्पर भाणियव्वाणि अस्तव भते दरिसणावरणिज्ज तस्सवेयणिज्ज । जेइने ग्रानावरणीय तेव मे नियमे भन्तरायवर्वे जेइने भन्तराय तेइमे ग्रानावरणीय नियमयको पुवे पथि भजना नहो, जिमे दर्शनावरणीय मेप ल वामसपाते निस्तवेने जेव मे वेमयवम् । दर्शनावरणीय वमछे तेइने वेदनीयवम पुवे तथा । जस्सवेयणिज्ज तस्सदरिसणावरणिज्ज । जइने वेदनीयवम पुवे तेहने दर्शनावरणी यवम पवे इतिमन्न उत्तर । गायमा जहानाणावरणिज्ज उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं सम भणियं । वेगोतम ! ए भाणाथा ग्रानावरणीयवमना भाणावा परोपा भाणावा जिम ग्रानावरणीय अपरला सातकम ते समाते वह्यु । तथा दरिसणावरणिज्ज पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं सम भाणियव्वं जाव

पञ्चभिः सह विकल्पनाद ॥ जस्सेत्यादि ॥ यस्य नमो प्राणावरणीयमस्तम एवेति ॥ जस्स ते ते । वेयणिज्जं मित्यादिमातु , वेदनीय श्रीये प
यति मह विकल्पे तत्र ॥ जस्स वयणिज्ज तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि सियनत्थित्ति ॥ अक्षीणमोह क्षीणमोहस्य प्रतीत्य अक्षीणमोहस्यहि वे
दनाय मोहनीयमस्ति क्षीणमोहस्यतु वेदनीय मस्ति नतु मोहनीय मिति ॥ एव मेयावि परोप्पर नियमत्ति ॥ कार्य्यः ? यस्य वेदनीयं तस्य

येयणिज्जं तस्स मोहणिज्ज जस्स मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज ? गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय श्रत्थि सियनत्थि । जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियम श्रत्थि । जस्सण न्नते । वेयणिज्ज तस्स श्राउय एय एयाणि परोप्पर नियम जहा श्राउएण सम एव नामेणवि गोएणवि सम न्नाणियव्वं ।

दनाय ? गौतम । यस्य वेदनीयं तस्य मोहनीय स्या दस्ति स्या न्नास्ति यस्य पुन मोहनीयं तस्य वेदनीय नियमा दस्ति । यस्य न्नदन्त । वे
दनाय तस्या यु एवमतानि परस्परं नियमा यथा युपा समं एव मामापि गोत्रमापि समं भवितव्यम् । यस्य न्नदन्त ! वेदनीय तस्यान्त

पवरायण। जिम वयमावरणीय पवि जपरिमा छ बमबधाते बवा सम बावत् पवरायसधाते पवि बहवा, जिम वेदमोयवम भेय पांच बमंस
बाते विनाहे। बतमभते वेववित्ता तरममाइबिम्म बरसमाइबिम्म तरम वेवविम्म । बेहने हेमगवन् ! वेवनीयवम हवे तेहने मोहनोय हवे बेहने
माहनोयहवे तेहने वेदमोयहवे इतिमप्र ब्रत्तर। गोयमा बरसवेवविम्म तरसमाइबिम्म सियपत्थि सियनत्थि। हेमीतम बेहने वेदनीयवमवे तेहने माह
नमावरंवविम्म विवम पत्रि माववमते वेवविम्म तरम पाठवं। तथा बेहने बमी मोहनीयकमहवे तेहने वेदनीयवम निवमवो हुवे, बेहने हेभगवन्
वेदमोयवम हुवे तेहने पायुवम हवे तथा बेहने भायुवमहवे तेहने वेदमोयवम हवे इतिमप्र। ब्रत्तर। गोयमा एव एवाणि परोप्पर नियम। हेगोतम ए
ब वह मांहामांहि निवमवो हुवे बतवे बेहने वेदमोयवमहुवे तेहने पायुकर्म निवमवो हुवे बेहने पायुवम तेहने वेदमोयवम निवमवो हवे ।

नियमा दायु यस्यायु तस्य नियमा वेदनीय मित्येव मेतेयाश्च इत्यर्थः, एव नामगोत्राभ्या अपि वाच्य, एतदेवाह ॥ जहा आउएणेत्यादि ॥

जस्सण भंते ! वेयणिज्ज तस्स अंतराइय पुच्छा गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स अंतराइयं सियअत्थि सियनत्थि । जस्स पुण अंतराइय तस्स वेयणिज्ज नियम अत्थि । जस्सण भंते ! मोहणिज्ज तस्स आउय जस्स आउय तस्स मोहणिज्ज ? गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउय नियम अत्थि, जस्स पुण आ

राय पृच्छा गौतम । यस्य वेदनीयं तस्यान्तराय स्यादस्ति स्या नास्ति यस्य पुन रन्तरायं तस्य वेदनीय नियमा दस्ति । यस्य भदन्त ! मोहनीयं तस्या यु यस्या यु तस्य मोहनीय ? गौतम ! यस्य मोहनीय तस्या यु नियमा दस्ति यस्यपुन रायु तस्य मोहनीय स्या दस्ति स्यात्

भावार्थ—जेम वेदनीयकर्म आउखासघाते कह्या एम नाम कर्मसंघाते तथा गोत्रकर्म साथे पण कहवा ए चारे मांहोमांहि सहचारी छे तेमाटे। जस्सणभंते वेयणिज्ज तस्स अंतराइय पुच्छा। जेहने हेभगवन् ! वेदनीयकर्म हुवे तेहने अन्तरायकर्म हवे तथा जेहने अन्तरायकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सवेयणिज्ज तस्सअंतराइय सियअत्थि सियनत्थि। हेगौतम ! जेहने वेदनी यकर्म हुवे तेहने अन्तरायकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे अकेवलीने वेदनीय अन्तराय बेहुंहुवे अने केवलीने वेदनीयकर्म छे अने अन्तरायकर्म नथी तेमाटे त था। जस्सपुणअंतराइय तस्स वेयणिज्ज नियमंअत्थि। जेहने वली अन्तरायकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथको हुवे इति, जिम वेदनीयकर्म अन्तरायकर्म चार भांगे कह्या—जस्सणभंते मोहणिज्ज तस्सआउय जस्सआउय तस्समोहणिज्ज । जेहने हेभगवन् ! मोहनीयकर्म हुवे तेहने आयुकर्म हुवे जेहने आयु कर्म तेहने मोहनीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्समोहणिज्ज तस्सआउयं नियम अत्थि । हेगौतम ! जेहने मोहनीयकर्म हुवे तेहने आयुकर्म निश्चयथको हुवे तथा। जस्सपुणआउय। जेहने वली आयुकर्म हुवे। तस्समोहणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि। तेहने मोहनीय किवारे हुवे किवारे न हुवे तजिम अक्षीणमोहनीयने आउखोमोहनीय बेहुंहुवे अने क्षीणमोहने आउखोहुवे अने मोहनीय न हुवे। एम नाम गोत्र अंतरायस भाखियव्व।इम

मन्तरायेषतु भजनया यतो वेदनीय मन्तरायंचा केवलिना मस्ति केवलिनात् वेदनीय मस्ति नत्वन्तराय मेतदेव दर्शयतोक्त ॥ वस्सयेयविर्थ तस्स मतरादयं सियमत्थि सियनत्थित्ति ॥ मथ मोहनीय मन्ये यसुनिः सह चिन्त्यते तत्र यस्य मोहनीयं तस्यायु नियमा दकेवलिन इव यस्य पुन रायु तस्य मोहनीय भजनया यतो क्षीणमोहस्या यु मोहनीय नास्ति क्षीणमोहस्य त्वायुरस्ति "एव नाम गोय मतराइयंच भाणियव्वति, ययमर्थः यस्य मोहनायं तस्य नाम गोत्र मतरायच नियमा दस्ति यस्य पुन नामादित्रयं तस्य मोहनीय स्या द स्यदक्षीणमोहस्यव स्या का

उय तस्स मोहणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि । एव नाम गोय अतराइयच भाणियव्व । जस्स पुण भंते ! आउय तस्स नाम पुच्छा । गोयमा ! दोवि परोप्पर नियम । एव गोत्तेणवि सम भाणियव्व । जस्स ण भंते !

यस्ति । एव नाममोत्रमन्तरायच्च भणितव्यम् । यस्य पुन भंदन्त ! आयु स्तस्य नाम पृच्छा गौतम ! द्वावपि परस्पर नियमा देव गोत्रेणा

नाम गाय अतराय आवथा केवल मोहनीयहुवे तेहने नाम गाय अंतराय ए ३ नियमवको हुवे तथा जहने नामादि तीनहुवे तेहने मोहनीय हुवे भ वथा न हवे यथोषमोहने हुवे क्षीणमोहने न हुवे, त्रिवे आयवा बोजा तीन सघाते चितवेछे—जस्सण भंते आउय तस्सनामपुच्छा । केहने हेभगवन्' वे आय ? जहने आयवा तेहने नाम हुवे रविात्र उत्तर । गोयमा दोविपरोप्परं नियम एव गोत्तेणवि सम भाणियव्व । हेगौतम दोनां माहोमांहि नको नियमे हु ने आय ? जहने आयवा तेहने नियमे नामहुवे जेहने नामहुवे तेहने नियमे आयवाहुवे इम गोत्रसघाते पणि जाणवो । जस्सणभते आउय तस्सभंत राय पुच्छा । जेहने हेभगवन् ! आउषा हुवे तेहने अंतराय इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सआउय तस्स अतराइय सियअत्थि सियनत्थि । हेगौत म' जहने आउषा तेहने अन्तराय विकारिवे हवे विकारिवे न हुवे ते पवेवलोने आउषा अन्तराय दामाहे केवलोने आउषाहे अन्तराय नथी । जस्सपुनअं तरायं तस्स आउय नियमयत्थि । जेहने वली अन्तरायछे तेहने आयुकर्म नियमवको हवे त्रिवे नामकम पनेरा दासकर्म सघाते चितवेछे । जस्मणंभंते नामतस्स गाय पुच्छा । जेहने हेभगवन् । नामकम हुवे तेहने आयकम हुव जहने गोत्र हुवे तेहने नाम हुवे इतिप्रश्न । गो दोविपरोप्परंनियम भाण

स्ति चौथमोहस्सवेति, अथायु रप्यै स्त्रिमिः सह चिन्त्यते ॥ जस्सणं भंते ! आउय मित्यादि दोविपरोप्परं नियमति ॥ बोऽयः ॥ जस्स आउयं तरस नियमा नाम जस्स नामं तस्स नियमा आउयं, इत्यर्थः ॥ एवं गोत्रेणापि ॥ जस्स आउयं तस्स अंतराइय सियअत्थि सियनत्थित्ति ॥ यस्यायु स्तस्यान्त राय स्या दस्त्य कवलिव स्याकास्ति अकेवलिवदिति ॥ जस्सण भंते ! नाम इत्यादिना नामाम्येन द्वयेन सह चिन्त्यते तत्र यस्स नाम तस्य निय

आउय तस्स अंतराइय पुच्छा । गोयमा ! जस्स आउय तस्स अंतराइय सियअत्थि सियनत्थि । जस्स पुण अंतराइय तस्स आउय नियम अत्थि। जस्सण भंते! नाम तस्स गोय जस्स गोय तस्स नाम। गो० ! जस्स नाम तस्स नियमा गोय जस्स गोअ तस्स नियमा नाम। जस्सण भंते ! नाम तस्स अंतराइय पुच्छा। गो० ! जस्स नाम तस्स अंतराइय सियअत्थि सियनत्थि। जस्स पुण अंतराइय तस्स नाम नि

पि सम भावितव्यम् । यस्य भदन्त ! आयु स्तस्या न्तराय पृच्छा गौतम ! यस्या यु स्तस्यान्तराय स्या दस्ति स्या न्नास्ति । यस्य पुन रन्तरा य तस्या यु र्नियमा दस्ति । यस्य भदन्त ! नाम तस्य गोत्रं यस्य गोत्र तस्य नाम पृच्छा गौतम ! यस्य नाम तस्य नियमा द्गोत्र यस्य गोत्रं तस्य नियमा न्नाम । यस्य भ० ! नाम तस्यान्तराय पृच्छा गौतम ! यस्यनाम तस्यान्तराय स्या दस्ति स्या न्नास्ति यस्यपुन रन्तराय तस्य

जस्सतेनामतस्सअंतरायपुच्छा। हे गौतम। दोना माहोमाहि नियमावो हुवे जेहने हे भगवन्। नाम तेहने अंतरायकर्म हुवे इत्यादि प्रश्न कीधा। मा जस्सनामतस्सअंतरायं सियअत्थिसियनत्थि। हेगौतम जेहने नाम तेहने अंतराय किवारे हुवे किवारे न हुवे तिहां पूर्वलोने हुवे अने केवलीने न हुवे। जस्सपुनअंतरायं तस्स नामनियम अत्थि । जेहने वली अंतरायकर्म हुवे तेहने नामकर्म नियमावो हुवे । जस्सणंभंतेनामं तस्सअंतराय पुच्छा। जेहने हेभगवन्। नामकर्म हुवे तेहने अंतराय इत्यादि प्रश्नकीधो। गो जस्सगोयतस्सअंतराइय। हेगौतम जेहने गोत्र कर्म हुवे तेहने अंतरायकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे ते अकेवलीने हामेहुवे केवलीने नामहुवे अने अन्तराय नथी। जस्सपुण अंतराइय तस्सपुण नाय नियम अ

मा द्वोर्ण यस्य गोत्रं तस्य नियमा नाम तथा यस्य नाम तस्या नरायं स्या दस्य केवलित्व रस्यावासित केवलितदिति। एवं गोत्रान्तरायको रपि भजना प्रावनीयेति मनन्तरं कर्मोक्तं तद पुद्गलात्मक मत लद्धिकारा दिदमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ पोग्गलीवत्ति ॥ पुद्गला गोत्रादिरूपा विद्य

यम श्रुत्थि । जस्सण भंते ! गोय तस्स श्रुतराइय पुच्छा । गो० ! जस्स गोय तस्स श्रुतराइय सियस्थि सियनस्थि । जस्स पुण श्रुतराइय तस्स गोय नियम श्रुत्थि ७ । जीवेण भंते ! किं पोग्गली पोग्गले? गो० ! जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । सेकेणठेण भंते ! एव वुच्चइ। जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि? गो० ! सेजहानामए छत्तेण छत्ती दण्डेण दण्डी घडेण घडी पडेण पडी करेण करी एवामेव गो० !

नाम नियमा दस्ति । ६ । यस्य भदन्त ! गोत्रं तस्या न्तरायं पृच्छा गौतम ! यस्य गोत्र तस्या न्तराय स्या दस्ति स्या नास्ति, यस्य पुन र न्तरायं तस्य गोत्र नियमा दस्ति ७ । जीवो भदन्त ! किं पुद्गली पुद्गल ? गौतम ! जीवः पुद्गल्यपि पुद्गलोपि । अथ केना र्थेन भदन्त ! एव मुच्यत जीवः पुद्गल्यपि पुद्गलोपि ? गौतम ! सयथानामकः (कश्चित्पुरुष इतिशेषः) छत्रेण छत्री, दण्डेन दण्डी घटेन घटी पटेन पटी क

ति । कहने वलो भगवानश्रमुखे तेहने यावकम नियमवन्तो हुवे भनन्तरे कम कह्या ते पुद्गलामकहै एतनामाटे पुद्गलाधिकार कहेहे—जीवेणं भंते विपाकनो पामने । जीव हेभगवन् प्र पुद्गलापेक्षावें अथवा जोवनीयपेक्षावें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवे पोग्गलोवि पाग्गलेवि । हेगातम जीव पदम जावादिकरूपहे तेहने पुद्गलो पविड़े जीव पदम एडवो सथा जीवहै तिवारे ते गोमनको पुद्गल हसो पवि कहिये सलोगौतम कहेहे—सेकेणठेण भंते एवबुच्चइ । तेसे धर्मे हेभगवन् इमकहे जीवेपोग्गलोवि पोग्गलेवि । जीव पुद्गलो पवि कहिये वने पुद्गल पवि कहिये। गोयमा सेजहानामए छत्ते व छत्ती । हेगौतम ते यथा दृष्टांते कोई सहुज पुरुष छत्रो कहिये । दंडेणं दंडी घडेणं घडो पडेणं पडी करेणं करी । हस्ते संयुक्त हस्ती कहिये वले मनुष्य हत्ती पटे संयुक्त पटी कहिये करें कहिये पुरुषो तिर्यंचपणे वद्दुन करी अथवा वाली । एवामेव । एणे दृष्टांते । गोयमा जीवेवि सोइंदिय चक्खिंदिय घा

जीवेवि सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली । जीवं पडुच्च पोग्गले । सेते णठेण गोयमा ! एववुच्चइ । जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । नेरइएण भंते ! किं पोग्गली पोग्गले एवचेव एवं जाव वेमाणिए नवरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ भाणियव्वाइं । सिद्धेण भंते ! किं पोग्गली पोग्गले ? गो० ! नोपोग्गली पोग्गले । सेकेणठेणं । गोयमा ! जीवं पडुच्च सेतेणठेण एवं वुच्चइ सिद्धे णोपो

रेव करी (इसी) एव मव गौतम । जीवोपि श्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शनेन्द्रियाणि प्रतीत्य पुद्गली, जीव प्रतीत्य पुद्गल स्तेना र्थेन गौतम । एव मुच्यते—जीवः पुद्गल्यपि पुद्गलोपि ॥ नैरयिको भदन्त । किं पुद्गली पुद्गलः ? एवचैव व याव द्वैमानिको नवरं यस्य याव न्ती न्द्रियाणि तस्य तावन्ति भणितव्यानि । सिद्धो भदन्त । किं पुद्गली पुद्गलः ? गौतम । नो पुद्गली पुद्गलः । अथ केनार्थेन ? गौतम । एव ? जी

चिंदिय जिभिंदिय फासिंदियाई पचास पाम्लो । हेगोतम जीव पांच श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय प्राणेन्द्रिय जिह्वेन्द्रिय स्पर्शनेन्द्रिय ए पांच इन्द्रियआश्रय सोम पदलो कहिये । जीवपदलपाम्ले । तथा जीवमते आश्रयोने पदल कहिये । सेतेणट्ठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगोतम इम कहिये । जीवे पा मलेवि पाम्लेति । जीव पुद्गलो पणि कहिये अने पदल पणि कहिये । नेरइयाण भंते किंपाम्लो पाम्ले एवचेव । नारकी हेभगवन् स्युं पुद्गलो कहिये अथवा पुद्गल कहिये, इमजीव पूर्वोक्त तिमज कहवा । एव जाव वेमाणिए । इम यावत् वैमानिकलगे कहवो । नवरंजस्स जइ दियाइं तस्सतइभाणि यव्वाइं । एतलोविशेष जेहने जेतली इन्द्रियहवे तेहने तेतलो इन्द्रिये पद्गलो कहिये । सिद्धेणभंते किं पोग्गलो पोग्गले । सिद्ध हेभगवन् स्युं पद्गलो कहि य अथवा पद्गल कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नोपाम्लो पोग्गले । हेगोतम सिद्ध पद्गलोनथी श्रोत्रेन्द्रियादिकना अभावथको अने पुद्गल कहिये । सेकेण ट्ठेणभंते एववुच्चइ जाव पाम्ले । ते स्ये अर्थे हेभगवन् इम कह्यु यावत् पद्गल कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवं पडुच्च सेतेणट्ठेण गोयमा एववुच

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

१७ ॥ समाप्तं चाष्टमशतम् ॥ ८ ॥ सद्गतपाडुतिमाविशुद्धमहसापाद्मप्रसादाग्निना तत्रासाधरमप्रशस्तिविधिना विघ्नेन्धनप्लोषतः । संपन्नेमपशांतिकर्मकरणेतेमादरमीतवाम् सिद्धिं शिल्पिवदेतदष्टमशतव्याख्यानसन्मदिरं ॥ १ ॥ ग्र० सं० ८४३८ ॥ ॥ ॥

व्याख्यातमष्टमशत मथ नवम मारभ्यते अस्य चाय मभिसम्बन्धो ऽष्टमशते विविधाः पदार्था उक्ता नवमपि तएव प्रक्यन्तरेणो च्यत इत्येवं सम्ब न्धस्या स्यो इदाक्षायमसूचिकय गाथा ॥ जम्बूद्वीवेइत्यादि ॥ तत्र ॥ जम्बूद्वीवेति ॥ जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषयः प्रथमोद्देशकः ॥ जोइसत्ति ॥ ज्योतिष्कवि

गलो पोग्गले । सेयजतेजते ! त्ति ॥ इति दसम सय ॥ १० ॥ सम्मत्त अठम सय ॥ ८ ॥

जम्बुद्दीवे १ जोइस २ अंतरदीवे ३० असोच्च ३१ गंगेये ३२ । कुण्डग्गामे ३३ पुरिसे ३४ नवममिसय

बं मतोस्य तेमार्यमेव मुच्यते सिद्धो मोपुद्गली पुद्गल सदेव भदन्त भदन्त । इति ॥ इत्यष्टमशते दशमोद्देशः ॥ ८ ॥ १० ॥ समाप्तं चाष्टमशतम् ॥ ८ ॥ व्याख्यामप्रज्ञप्तिसूत्रामरपरमरत्नाध्यासमायाग्रुवाद मोघवक्ताव्यनीमप्रवचनगुणकाराम चक्रगकाश्यपाम् । श्रीमरमस्यातसौवायवनरपतचन्द्राभिधैः सूरिवर्यैः रत्नाकरसेममूमीपतिधनपतिविश्वरसमस्मार्चनाभिः ॥ १ ॥ गुरूपदिष्टय स्यादो ऽष्टममापिशतमर्थः । कुवतापदविन्यासं मयाविश्राममूरिव ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

सूत्रम्बूज्योतिषा नरद्वीपामुत्वागांगेयाः । कुण्डग्रामःपुरुषो नवमेऽत्रशतेचतुस्त्रिंशत् ॥ १ ॥ उद्देशा इतिशेषः)तस्मिन्काले तस्मिन्समये मि

१ । केमोतम बोर पावकोने पुद्गल कहिये ते तेवे पर्ने केमोतम इमकहु । सिद्ध चापाममो पामने । सिद्ध पुद्गलो न कहिये भने पुद्गल कहिये । सेवमते भंतेति । तहत्ति केमगवन् एवतुम ते सर्वसमके चमवानजो । अष्टमसप दसमो उद्देसो समत्तो ॥ १० ॥ ए आठमाशतकनो एम मायरेमा पांचो पूराथया । समत्त अष्टमसय ८ । एतले आठमुं शतक पणि पूरो थयो ॥ ८ ॥ * * * * *

पाठमे शतके विविधपदार्थ कह्या हवे तेहीज प्रकारे कहे छे—जम्बूद्वीवे आरव । जंबूद्वीप वक्तव्यता विषय कहियोछे १ एम ज्योतिषीविषय बीजो